CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतवर्ष का इतिहास

97/84

State Museum
LUCKNOW

डा० ईश्वरीप्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतबर्ष का इतिहास

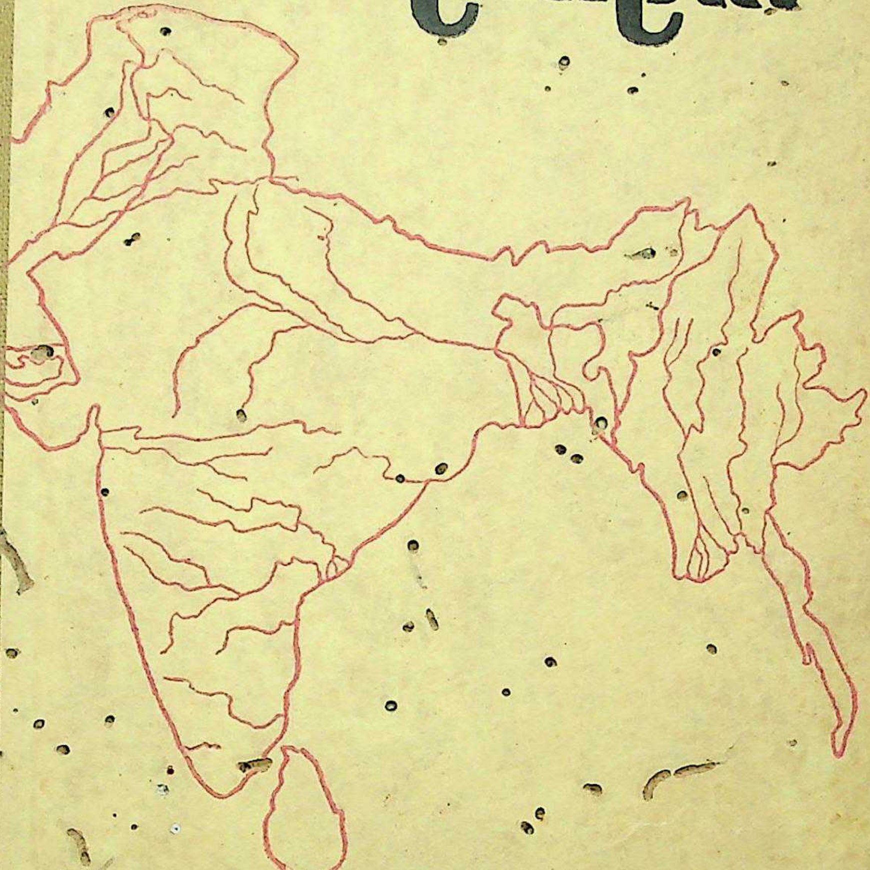

एक इतिहास प्रेमी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

954

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतवर्षका इतिहास

State Museum,
LUCKNOW.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

954

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतवर्षका इतिहास

लेखक

'एक इतिहास-प्रेमी'

बनारस

ज्ञानमण्डल लिमिटेड

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूल्य ८)

प्रथम संस्करण
द्वितीय संस्करण
तृतीय संस्करण संवत् १९९६
चतुर्थ संस्करण संवत् २००९

954

सर्वाधिकार प्रकाशकके अधीन

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस
मुद्रक—ओम् प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, बनारस ४१९०-०९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

[द्वितीय संस्करणका]

यह इतिहास किस दृष्टिसे लिखा गया है इसका अनुमान प्रारम्भके दो-चार प्रकरण पढ़नेसे ही किया जा सकता है। लेखकका कथन है कि 'इतिहास लिखनेमें साधारणतया राजाओंके वृत्तान्त और युद्धोंके वर्णन पाये जाते हैं', पर वास्तवमें जातिके इतिहासमें केवल इनका ही समावेश नहीं होता। उसी प्रकार 'यद्यपि जातिकी दशामें बाह्य आक्रमण अपना प्रभाव उत्पन्न करते हैं और जातिके इतिहासको कुछका कुछ बना देते हैं, परन्तु उनका ही इतिहास जातिका इतिहास नहीं। जातिके इतिहासको इनसे पृथक् खोजकर हमें निकालना होता है।' यदि कार्लाइलकी तरह यह कहा जाय कि किसी देश (या जाति) का इतिहास उन 'महान् पुरुषोंके जीवन-चरित्रोंका विवरणमात्र' है जिन्होंने उसकी रक्षा या समृद्धिका प्रयत्न किया तो इससे भी हमारा सन्तोष नहीं होता। जैसा कि एडमण्ड बर्क महाशयने अपने ११ फरवरी सन् १७८० वाले भाषणमें कहा था या जैसा कि विख्यात कवि आलफ्रेड टेनीसनने अपनी पुस्तक 'लाक्सले हाल' में लिखा है, 'पृथक् पृथक् व्यक्ति तो नष्ट हो जाते हैं, किन्तु जाति उनके बाद भी कायम रहती है।' अतः महानपुरुषोंका जीवन-वृत्तान्त इतिहासका प्रधान अंग होते हुए भी उसका एकमात्र लक्ष्य नहीं कहा जा सकता। वास्तवमें जातिका इतिहास उस तरंगका इतिहास है जो 'सदा जातिके अन्दर उठती रहती है। यह तरंग ही जातिका जीवन है। इसका स्थूल नाम सभ्यता है। इसी सभ्यताका इतिहास जातिका इतिहास है।' इन्हीं विचारोंसे प्रेरित होकर विद्वान् लेखकने इस पुस्तककी रचना की है। वे अपने प्रयत्नमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कहाँतक सफल हुए हैं, इसका निर्णय पाठक स्वयं कर लें। इसमें सन्देह नहीं कि इस मार्गका अनुसरण कर उन्होंने जो प्रशस्य कार्य किया है उसके लिए वे हमारे धन्यवादके पात्र हैं।

एक बात और है। जिस प्रकार इतिहास द्वारा किसी जाति या समाजको उन्नत अथवा अवनत करनेवाली घटनाओंके स्पष्ट दिग्दर्शनसे उपयोगी शिक्षा दी जा सकती है, उसी प्रकार इतिहास-लेखनकी प्रणाली-विशेषके कारण पढ़नेवालोंपर प्रतिकूल प्रभाव भी डाला जा सकता है। जहाँ इतिहासका अध्ययन 'अपने प्रभावसे जातीय जीवनको उत्पन्न कर सकता है', वहाँ वह 'उलटे प्रभावसे जातीय जीवनका विनाश भी कर सकता है। यदि इतिहास-लेखक किसी दूसरी जातिका हो जिसका आशय अपनी श्रेष्ठता स्थिर करना और उस जातिकी सत्ताको कम करना हो तो वह ऐसा इतिहास लिखता है जिससे उसका प्रयोजन सिद्ध हो।' 'जहाँ विजयी जातिके लेखक अपने गुणोंको बतलाकर अपने लिए स्तुति तथा अपने मनुष्योंमें उत्साहका भाव उत्पन्न करते हैं वहाँ वे पराजित जातिकी निर्बलताओं और अवगुणोंपर जोर देकर उसके हृदयसे देशभक्तिका भाव हटानेका प्रयत्न करते हैं।' भारतके सरकारी स्कूलों तथा कालेजोंमें इस देशके इतिहासकी जो पुस्तकें पढ़ायी जाती हैं उनमें हमारे प्राचीन या मध्यकालीन राजनीतिक एवं सामाजिक उत्कर्षका, हमारे पूर्वजोंके उच्च संस्कारों, विचारों या कार्योंका, अथवा उनकी योग्यताका बहुत कम उल्लेख रहता है। यह सत्य है कि जातिके दोषों या कमजोरियोंको छिपानेकी चेष्टा निन्द्य और हानिकारक है, किन्तु साथ ही उनपर अत्यधिक जोर देना, उन्हें बढ़ाकर प्रकट करना अथवा झूठमूठ ही गढ़ लेना भी उतना ही जघन्य और आपत्तिजनक है। यही विचार कर लेखकने प्रस्तुत पुस्तकमें अंग्रेजीके इतिहासों या उन्हींके ढंगपर लिखे गये हिन्दी इतिहासोंमें पाये जानेवाले इस दोषसे बचनेकी चेष्टा की है।

उपर्युक्त दोनों बातें ध्यानमें रखनेसे पुस्तककी अनेक विशेषताएँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समझमें आ जायँगी। जातीय दृष्टिसे लिखी जानेके ही कारण इसमें राजपूतों, मराठों तथा सिखोंके अभ्युत्थान और पतनका, अन्य पुस्तकोंकी अपेक्षा, अधिक विस्तृत वर्णन किया गया है। आक्रमण करनेवालों या शासकोंके युद्धों इत्यादिको विशेष महत्त्व न देनेके कारण ही पृष्ठ ६६ पर महमूदके सब आक्रमण नहीं दिये गये हैं। दास, खिलजी, तुगलक इत्यादि वंशोंके शासकों तथा बाबर, हुमायूँ, जहाँगीर इत्यादि बादशाहोंका वर्णन एक-एक दो-दो प्रस्तरोंमें ही समाप्त कर दिया गया है। अनेक गवर्नर-जेनरलोंके सम्बन्धमें भी यही कहा जा सकता है। किन्तु राजपूतोंके साथ अकबरके, मराठोंके साथ औरंगजेबके तथा मराठों और सिखोंके साथ अंग्रेजोंके संघर्षका, उसी प्रकार सन् १८५७ (सं० १९१४) के 'सिपाही-विद्रोह' का विशेष विवरण दिया गया है।

अन्तमें हम इतना और कह देना चाहते हैं कि लेखक द्वारा प्रयुक्त नामोंमें हमने यथासम्भव कोई परिवर्त्तन नहीं किया है। हाँ, कहीं-कहींपर कोष्ठमें उनके अन्य रूप अवश्य दे दिये हैं। लिखित पुस्तकमें प्रकरण-विभाग न था, अतः हमने समस्त पुस्तकको पाँच खण्डों और कुल ५३ प्रकरणोंमें बाँटनेका जो प्रयत्न किया है, सम्भव है उसमें कई त्रुटियाँ रह गयी हों, क्योंकि ऐसी अवस्थामें ठीक-ठीक विषय-विभाग करना और इस बातका ध्यान रखना कि एक प्रकरणका प्रतिपादित विषय दूसरे प्रकरणमें न आने पावे, बड़ा असुविधाजनक कार्य है। आशा है, इतिहासके मर्मज्ञ विद्वान् इन सब त्रुटियोंके लिए हमें क्षमा करेंगे।

—प्रकाशक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ संस्करणकी भूमिका

भारतवर्षके इतिहासका यह चतुर्थ संस्करण पाठकोंके सामने प्रस्तुत करते हुए हमें परम प्रसन्नता होती है। कतिपय सामान्य संशोधनोंके सिवा इसमें कई नये प्रकरण, विशेषकर प्रथम तथा षष्ठ खण्डमें, बढ़ा कर इसे बिलकुल अद्यावधिक (अपटुडेट) बनानेका प्रयत्न किया गया है। बढ़ायी हुई सामग्रीका मुख्य श्रेय काशी विद्यापीठके आचार्य श्री बीरबलसिंह जी को है। हम इसके लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। भारतीय गणतंत्रके संविधानकी संक्षिप्त रूप-रेखा भी हमने अन्तिम प्रकरणमें दे दी है।

—प्रकाशक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

(प्राचीन भारतवर्ष)

प्राक्कथन	... ...	
पहिला प्रकरण—इतिहासका उद्देश्य	...	१
दूसरा प्रकरण—मनुष्य और समाज	...	८
तीसरा प्रकरण—राज्यका विकास	...	१८
चौथा प्रकरण—जातिका इतिहास	...	२३
पाँचवाँ प्रकरण—प्रागैतिहासिक काल	...	२९
छठा प्रकरण—आर्य सभ्यताका आरम्भ	...	३५
सातवाँ प्रकरण—वैदिक काल	...	४२
आठवाँ प्रकरण—उपनिषदोंका काल	...	५१
नवाँ प्रकरण—दर्शनोंका काल	...	५५
दसवाँ प्रकरण—रामायण और महाभारत	...	५९
ग्यारहवाँ प्रकरण—महाजनपदोंका काल	...	६८
बारहवाँ प्रकरण—मौर्य-साम्राज्य और सिकन्दर	...	७३
तेरहवाँ प्रकरण—बौद्ध धर्मका प्रभाव	...	८०
चौदहवाँ प्रकरण—कुणाल और गुप्त-साम्राज्य	...	९३
पन्द्रहवाँ प्रकरण—बौद्ध धर्मकी अवनति	...	१०१
सोलहवाँ प्रकरण—चीनी यात्री	...	१०६
सत्रहवाँ प्रकरण—बाह्य आक्रमणके समय देशकी राजनीतिक अवस्था	...	११४
अठारहवाँ प्रकरण—इस्लामी लहरका मुकाबला	...	११९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उन्नीसवाँ प्रकरण—पश्चिमोत्तर सीमाके आक्रमण ... १२७
बीसवाँ प्रकरण—दिल्लीकी सल्तनत ... १३७
इक्कीसवाँ प्रकरण—धार्मिक पुनरुद्धार ... १४४
बाईसवाँ प्रकरण—मुसलमान ऐतिहासिक ...
तथा अन्वेषक ... १५०

द्वितीय खण्ड

(राजपूत तथा मुगल शासक)

पहिला प्रकरण—राजपूतोंकी सत्ताका प्रारम्भ ... १५७
दूसरा प्रकरण—समरसी और उनके उत्तराधिकारी ... १६२
तीसरा प्रकरण—मुगल बादशाह ... १७२
चौथा प्रकरण—राजपूतोंसे युद्ध ... १८१
पाँचवाँ प्रकरण—राणा प्रतापके पश्चात् ... १९०
छठा प्रकरण—मुगल साम्राज्यकी अवनति ... १९९
सातवाँ प्रकरण—हरिवर्षीय जातियोंका भारतमें आगमन २०६

तृतीय खण्ड

(मराठा-साम्राज्य)

पहिला प्रकरण—मराठोंकी जाग्रति ... २१३
दूसरा प्रकरण—छत्रपति शिवाजी ... २१८
तीसरा प्रकरण—सम्भाजी ... २३०
चौथा प्रकरण—शाहू ... २३५
पाँचवाँ प्रकरण—द्वितीय पेशवा बाजीराव ... २३९
छठा प्रकरण—तृतीय पेशवा बालाजी बाजीराव ... २४९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सातवाँ प्रकरण—चौथा पेशवा माधवराव ... २५७
आठवाँ प्रकरण—मैसूर राज्यका संक्षिप्त आरम्भिक वृत्तान्त ... २६७

चतुर्थ खण्ड

(सिख राज्यकी उन्नति)

पहिला प्रकरण—सिख सम्प्रदायकी स्थापना ... २७३
दूसरा प्रकरण—गुरु गोविन्दसिंह ... २८१
तीसरा प्रकरण—सिखोंकी राजनीतिक सत्ताका प्रारम्भ ... २८८
चौथा प्रकरण—महाराज रणजीतसिंह ... २९६

पंचम खण्ड (प्रथम भाग)

(अंग्रेजोंकी बल-वृद्धि)

पहिला प्रकरण—दक्षिणमें फ्रांसीसी और अंग्रेज ... ३१३
दूसरा प्रकरण—बंगालमें अंग्रेज ... ३१८
तीसरा प्रकरण—मीर कासिम ... ३३०
चौथा प्रकरण—मराठों तथा अंग्रेजोंका संग्राम ... ३४३
पाँचवाँ प्रकरण—पहिला गवर्नर-जेनरल ... ३५४
छठा प्रकरण—मराठा साम्राज्यका अन्त ... ३७७
सातवाँ प्रकरण—जार्ज बार्लोसे लार्ड हार्डिंज तक ... ३९४
आठवाँ प्रकरण—सिखोंका अंग्रेजोंसे युद्ध ... ४०३
नवाँ प्रकरण—सिखोंका अन्तिम प्रयत्न—पंजाबका पतन ४१८

पंचम खण्ड (द्वितीय भाग)

(अंग्रेजी शक्ति उन्नतिके शिखरपर)

पहिला प्रकरण—सिंहावलोकन ... ४३३
दूसरा प्रकरण—संवत् १९१४ वि० (सन् १८५७ ई०) का सिपाही-विद्रोह ... ४३९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण—विद्रोह दमन ... ४५७
चौथा प्रकरण—कम्पनीके राज्यकी समाप्ति ... ४६८
पाँचवाँ प्रकरण—ब्रिटिश साम्राज्य ... ४७१
छठा प्रकरण—वर्तमान भारतवर्ष ... ४७६
सातवाँ प्रकरण—पंजाब हत्याकाण्ड और असहयोग ...
आन्दोलन ... ४९१
आठवाँ प्रकरण—असहयोग आन्दोलनकी असफलता ... ४९८
नवाँ प्रकरण—साइमन कमीशनकी नियुक्ति और ...
देशव्यापी असन्तोष ... ५०६
दसवाँ प्रकरण—सत्याग्रह आन्दोलनका सूत्रपात ... ५१४
ग्यारहवाँ प्रकरण—सन् १९३२ ई० का स्वतन्त्रता ...
आन्दोलन ... ५२०
बारहवाँ प्रकरण—प्रान्तोंमें कांग्रेस सरकारोंकी स्थापना ... ५३०
तेरहवाँ प्रकरण—द्वितीय महायुद्धका आरम्भ ... ५३९

षष्ठ खण्ड

(स्वातन्त्र्य आन्दोलनकी सफलता)

पहिला प्रकरण—सन् १९४२ ई० का विराट् स्वातन्त्र्य...
आन्दोलन ... ५४९
दूसरा प्रकरण—ब्रिटिश सरकारसे समझौतेकी बातचीत ... ५५८
तीसरा प्रकरण—भारतका विभाजन ... ५६७
चौथा प्रकरण—भारतीय संविधान ... ५८०
कुछ प्रसिद्ध घटनाओंकी सूची ... ५८७
शासकोंकी सूची ... ५८९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र-सूची

१. वेदों के समयका भारत ... ... पृष्ठ ४२
२. रामायण और महाभारतके समयका भारत ,, ५९
३. अशोकका साम्राज्य ... ... ,, ८७
४. अकबरके समयका भारत ... ... ,, १७५
५. सम्राट् जहाँगीर ... ... ,, १७७
६. सम्राट् शाहजहाँ ... ... ,, १७८
७. मराठा संघराज्यका मानचित्र ... ... ,, ३४३
८. सन् १८५७ का भारत ... ... ,, ४३९
९ वर्त्तमान भारत ... ... ,, ५७५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथम खण्ड

प्राचीन भारतवर्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओ३म्

भारतवर्षका इतिहास

पहिला प्रकरण

इतिहासका उद्देश्य

परिस्थितिके प्रभावका ज्ञान कराना

इतिहासका सबसे प्रथम और प्रधान उद्देश्य यह है कि भूगोलका मानचित्र हमारे सामने लाकर यह बात स्पष्ट करे कि जो चित्र हम देख रहे हैं वह कैसे उत्पन्न हुआ है। हम देखते हैं कि समस्त पृथ्वी कई बड़े भागोंमें विभक्त है जिन्हें देश कहते हैं। इन सब देशोंमें विशेष लोगोंका निवास है। उन सबकी विशेष भाषाएँ हैं। उनकी सरकारें भी विशेष प्रकारकी हैं। संक्षेपतः हम कई प्रकारकी भिन्नताएँ और समानताएँ मानव-सृष्टिमें विद्यमान देखते हैं। इतिहासका काम है कि वह हमको वे सब वृत्तान्त बताकर स्पष्ट करे कि ये विभेद किस प्रकार प्रकट हुए। पंजाबमें आर्य, मुसलमान और सिख बसते हैं। आर्य कहाँसे आये, मुसलमान कहाँसे निकले और सिख कहाँसे उत्पन्न हुए? भारतमें अभी-अभीतक राजपूतोंकी रियासतें रही हैं। इनका प्रारम्भ कहाँ हुआ? वे केवल राजस्थानमें ही क्यों पायी जाती हैं? उनमें उदयपुरका स्थान क्यों ऊँचा समझा गया? मराठा रियासतें किस प्रकार बनीं? निज़ामकी रियासत आर्योंकी आबादीके मध्यमें कैसे बन सकी? बम्बई राज्यमें पारसी लोगोंकी विशेष आबादी क्यों है? ऐसे अगणित प्रश्न भारतीय वृत्तान्तोंका अध्ययन करनेवालेके मनमें उत्पन्न होते हैं। इनकी विधिपूर्वक व्याख्या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इतिहासके अध्ययनसे ही की जा सकती है। देशका इतिहास समस्त आधुनिक घटनाओंको एक नियमित क्रमके रूपमें हमारे सम्मुख उपस्थित करता है।

अतीत कालका प्रदर्शन

आधुनिक विज्ञानोन्नतिने स्थानोंकी दूरी सर्वथा कम कर दी है। जिन स्थानोंतक जानेमें वर्ष व्यतीत हुआ करते थे, वहाँ अब केवल कुछ दिनोंकी यात्रासे ही पहुँच सकते हैं। सहस्रों मीलपर बैठे हुए व्यक्तिके साथ हम घर बैठे बातें कर सकते हैं। जो घटनाएं इस समय संसारके दूसरे भागमें हो रही हैं, कुछ ही घण्टोंमें घर बैठे हमें उनका ज्ञान हो जाता है। जिस प्रकार विज्ञानने हमारे ऊपर यह बड़ा उपकार किया है उसी प्रकार इतिहासने हमारे साथ यह भलाई की है कि उसके कारण कालकी दूरी कट जाती है। पुरातन संसारकी समस्त घटनाएँ हमारे सामने इस प्रकार आ जाती हैं मानों हम उसी कालमें रहते हुए उन घटनाओंके वृत्तान्त सुन रहे हैं। महाभारत हमको इस देशके महायुद्धका चित्र दिखा देता है। रामायण अपने कालके गार्हस्थ्य जीवनका चित्र हमारे सामने ले आती है। असभ्य या जंगली मनुष्योंकी अवस्था देखनेसे ज्ञात होता है कि उनका कोई भूतकाल था ही नहीं। वे केवल वर्तमानमें ही रहते हैं और इसमें भी उनका दृष्टिकेन्द्र बहुत ही परिमित रहता है। इन लोगोंके जीवनमें सारा भूतकाल सर्वथा शून्यके समान रिक्त होता है।

उन्नति-अवनतिके कारण दिखलाना।

इतिहासकी सबसे बड़ी शिक्षा उन नियमोंका ज्ञान है जो मनुष्य-समाजकी उन्नति या अवनतिमें काम करते दिखाई देते हैं। व्यक्तिगत जीवन और जातीय जीवनमें एक बड़ा भारी भेद यह होता है कि व्यक्तिगत जीवन बहुधा घटनाओंके प्रभावमें आ जाता है, अतएव उसकी घटनाओंसे कोई विशेष नियम निकालना बड़ा कठिन होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
एक पुरुष अपना जीवन नियमविशेषमें चला रहा है, । सहसा उससे थोड़ी-सी भूल हो जाती है। वह मकानकी छतसे गिरकर लँगड़ा हो जाता है। उसीका सारा जीवन परिवर्तित हो जाता है। जातियोंके जीवनमें ऐसी घटनाएँ कम घटती हैं और घट जानेपर भी उनका प्रभाव ऐसा नहीं होता कि वे जातीय जीवनके प्रवाहको बदल दें।

आत्मसन्तोष भी इतिहासका उद्देश्य है

इसलिए जातीय जीवन प्रायः विशेष नियमोंके अनुसार बनता है। ये नियम ऐसे अटल हैं कि इनके प्रभावसे बच निकलना असम्भव-सी बात है। उदाहरणार्थ, युवावस्थाके आवेगमें जातियोंको भी अपनी शक्ति बढ़ानेका बड़ा विचार होता है। इस मदसे उन्मत्त जातियाँ राज्य स्थापित करना चाहती हैं। परिणाम यह होता है कि धनकी कामनासे धन बहुत एकत्र हो जाता है। धनके एकत्र हो जानेसे जातिमें विषयासक्ति और आलस्य आ जाता है और कष्ट उठानेका काम दूसरोंको समर्पित कर दिया जाता है। यही विषयासक्ति और अकर्मण्यता उस बड़ी जातिको उन्नति-पथसे गिरा देती है। इसी प्रकार कोई जाति आत्मिक शान्तिमें इतनी लीन हो जाती है कि उसको क्षात्रधर्मका विचार ही नहीं रहता, उसकी रक्षा करनेवालोंकी संख्या कम हो जाती है और वह ऐसी जातियोंका शिकार बन जाती है जो अभी जंगली अवस्थासे आगे नहीं बढ़ीं। उसका उच्च आदर्श ही उसके विनाशका कारण बन जाता है। इतिहासकी घटनाओंका अध्ययन करके हम वे नियम जान सकते हैं जो जातियोंको उन्नत-अवनत किया करते हैं।

आत्मसन्तोष भी इतिहास लिखनेका उद्देश्य हो सकता है। यदि इतिहासका लेखक उस जातिका है जिसका वह इतिहास लिख रहा है तो स्वभावतः उसकी इच्छा होती है कि मैं अपने पूर्वजोंके कार्योंके वर्णनसे अपनी जातिके अन्दर परमार्थता तथा त्यागशीलताका भाव उत्पन्न करूँ। इतिहास बालकोंके लिए और सर्वसाधारणके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लिए एक प्रकारका सम्मोहित (हिप्नोटाइज़) करनेवाला ज्ञान है। अपने प्रभावसे यह जातीय जीवनको उत्पन्न कर सकता है, किन्तु उलटे प्रभावसे जातीय जीवनका विनाश भी कर सकता है। इसलिए यदि इतिहास-लेखक किसी दूसरी जातिका हो, जिसका आशय अपनी श्रेष्ठता स्थिर करना और उस जातिकी सत्ताको कम करना हो, तो वह इस प्रकारका इतिहास लिखता है जिससे उसका प्रयोजन सिद्ध हो। इतिहासकी घटनाएँ एक ही होती हैं, फिर भी उनके वर्णन करनेकी विधि सीधा या उलटा प्रभाव उत्पन्न कर देती है।

इतिहासके बहुतसे लेखक जहाँ दूसरी पुस्तकोंसे घटनाओंकी नकल करते हैं वहाँ इस सिद्धान्तको न समझते हुए लेखनशैलीका भी अनुकरण कर बैठते हैं। वे नहीं समझते कि लिखनेमें विचारदृष्टि इतिहासके प्रयोजनको सर्वथा बदल देती है, और वह बालकके हाथमें उस तलवारके समान हो जाती है जिससे वह अपना ही गला काट लेता है।

आंतरिक-शक्तियोंका अध्ययन

जातिकी उन्नति या अवनति एवं जीवन या मृत्यु उस तरंग विशेषपर आश्रित है जो उसके अन्दर उठती है। यह तरंग उसका भाव या आत्मा है। इसके बन्द हो जानेसे वह जाति सूखकर मर जाती है। एक वृक्ष नदीतटपर खड़ा है। वह सुदृढ़ और हरा-भरा है, क्योंकि वह जलके समीप है। कालान्तरमें वह गिरकर सारेका सारा नदीमें जा पड़ता है और सड़ता जाता है। जो जल पहले उसका जीवन था वही अब विनाशक हो जाता है। कारण यह कि उसके मूलका नाश हो गया है और जल अब उसे नहीं बचा सकता।

इतिहास लिखनेमें साधारणतया राजाओंके वृत्तान्त और युद्धोंके वर्णन पाये जाते हैं। इसे भली भाँति समझ लेना आवश्यक है। जब कोई जाति या जातियाँ एकता-सूत्रमें बँधकर अपनी भलाईका प्रबन्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
करती है तो इस प्रकार वे साम्राज्यकी उत्पत्तिका कारण बन जाती हैं। यह साम्राज्य* समूहरूपमें जातिके शरीरके सदृश है। इसलिए साम्राज्यका वृत्तान्त उस जातिका इतिहास होता है। लेखकगण इसका ही वर्णन करते हैं। सरकार अथवा शासकदल इस साम्राज्यका शस्त्र है जो इसकी रक्षा करता है अथवा जिससे साम्राज्यकी उन्नति होती है।

इस शासन-प्रणालीके कई भिन्न-भिन्न रूप हो सकते हैं। राज्यका प्रबन्ध लोकनिर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा हो सकता है। उनकी ओरसे एक व्यक्ति भी राज्यका प्रबन्ध कर सकता है। यह व्यक्ति राजा कहलाता है। यदि कोई कुल उत्तराधिकारीके रूपमें इस प्रबन्धको अपने हाथमें ले लेता है तो वह राज्य एकतन्त्र राज्य (मॉनर्की) कहलाता है। ऐसे बादशाह साम्राज्यके सूत्रधार होते हैं। इसलिए उनका वृत्तान्त जातिकी उन्नति या अवनतिको प्रकट करता है। परन्तु परिस्थिति सर्वदा बदलती रहती है। यदि कोई बादशाह बाहरसे आकर राज्य हर लेता है तो उसकी सल्तनत विजित राष्ट्रके लाभके लिए नहीं होती। उसका आशय केवल यह होता है कि उस देशको दासताकी दशामें रखे। इसलिए बाह्य जातिके शासकोंका वृत्तान्त उस जातिका इतिहास नहीं होता। इतिहासका उद्देश्य जातिके अन्दर काम करनेवाली उन शक्तियोंका अध्ययन करना है जो जातीय जीवनकी द्योतक होती हैं।

---

* आजकल साम्राज्य एक जातिके अन्य जातिपर, अपने हितके लिए, शासनके अर्थमें प्रयुक्त होने लगा है। 'साम्राज्यवाद' शब्दमें साम्राज्यका यही आधुनिक अर्थ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा प्रकरण

मनुष्य और समाज

मनुष्यका पशुओंसे भेद

मनुष्यकी व्याख्या कई प्रकारसे की गयी है। एक तो यह है कि मनुष्य दो पैरोंसे चलनेवाला प्राणी है। दूसरी यह कि मनुष्य वार्तालाप करनेवाला जीव है। परन्तु इनसे बढ़कर ठीक-ठीक लक्षण यह है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अर्थात् उसे समाजमें रहनेकी आवश्यकता है। वार्तालाप करना भी एक सामाजिक आवश्यकता है। दूसरेके साथ मिल-जुलकर रहे बिना वार्तालाप होना सम्भव नहीं। समाजको दूर करके अकेले मनुष्यका विचार नहीं किया जा सकता। जब एक मनुष्यको अपराधके बदले दण्ड दिया जाता है तो उसका अर्थ यह है कि वह समाजसे वंचित किया जाता है। कारावासके दण्डमें सबसे कठोर दण्ड एकान्त कैद या 'कालकोठरी' है जिसका आशय यह है कि वह कारागृहके बन्दियोंसे भी वंचित रखा जाय।

हम समाजके ही परिणाम हैं

वर्तमान कालमें हमारे समस्त सम्बन्ध--हमारा शोक और आनन्द, हमारी सहानुभूति और प्रीति, हमारा त्याग और उपकार, संक्षेपतः हमारे सारे भाव--समाज द्वारा उत्पन्न होते हैं। इस समय जो कुछ हम हैं, जो कुछ हमारे विचार हैं, जो कुछ भाव हैं और जो कुछ हमारी कामनाएँ हैं--सब हमारे समाजसे उत्पन्न हुए हैं। जिस समाजमें हमने उत्पन्न होकर शिक्षा ग्रहण की है और अपने अनुभव प्राप्त किये हैं वह समाज एक बहुत प्राचीन कालके सामाजिक जीवनसे, जिसमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
साहित्य, कथाएँ और रीतियाँ इत्यादि सम्मिलित हैं, उत्पन्न हुआ है। यदि हम किसी निर्जन वनमें उत्पन्न हुए होते और वहाँ ही हमारा पालन-पोषण हुआ होता तो हम कदापि वह न होते जो हैं, क्योंकि मनुष्य केवल भावोंका संग्रह है और ये सब भाव समाजसे उत्पन्न होते हैं। समाज ही हमारी सत्ताका बनानेवाला है, इसलिए उसकी रक्षा करना और उसे आगे चलाना हमारा स्वाभाविक कर्तव्य है। जर्मन तत्त्वदर्शी "हेगल" कहता है "जबतक हम समाजमें रहते हैं, हमें समाजके बन्धनमें रहना होगा। यदि समाजसे सर्वथा स्वतन्त्र रहना चाहें तो हमारे लिए मार्ग खुला है कि हम समाजसे पृथक् होकर कहीं वनमें चले जायँ।"

पशुओंमें सामाजिकता

विशेष सीमातक सामाजिक होनेके उदाहरण पशुओंके अन्दर भी पाये जाते हैं। पक्षियोंमें कौवा इसका उदाहरण है। यदि एक कौवा पकड़ा जाय अथवा मार दिया जाय तो सैकड़ों कौवे उसके साथ सहानुभूतिके लिए एकत्र हो जाते हैं। मधुमक्षिका, चींटी तथा बड़े प्राणियोंमें हाथी, हरिण आदि सब एक होकर रहनेमें आनन्द और लाभ अनुभव करते हैं। कुत्ता दूसरी बातोंमें तो बहुत उन्नत है, परन्तु इस बातमें बहुत ही पीछे पड़ा हुआ है। वह एक प्रकारसे सबसे अधिक असामाजिक जीव है। वह अपने साथीको सुखमें देखकर प्रसन्न नहीं होता और सदा उसके साथ युद्ध करनेको उद्यत रहता है।

कुत्तेके सिवा अन्य सब पशुओंके अन्दर बहुधा एक प्रकारका सहयोग पाया जाता है। यह सहयोगका सिद्धान्त ही उनको सामाजिक बनाता है। सहस्रों मधुमक्षिकाएँ मिलकर अपने लिए मधुका छत्ता तैयार करती हैं। इस बड़े सुन्दर और कठिन कार्यके लिए वे सब अपने अपने कर्तव्यको भिन्न-भिन्न विभागोंमें विभक्त करती हैं। उनमेंसे एक तो रानी होती है जो सबपर शासन करती है, कुछ बच्चे उत्पन्न करनेका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
काम करती हैं, कुछ फूलोंसे मधु एकत्र करती हैं, कुछ शत्रुके साथ युद्ध करती हैं और कुछ सेवाका काम अपने ऊपर लेती हैं। चींटियोंकी भी ठीक यही दशा है। हाथी और हरिण बड़े-बड़े समुदायोंमें वनोंमें बिचरते हैं और अपनी भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ बनाकर अपने-अपने कर्तव्यका पालन करते हैं।

सामरिक सहयोग

मनुष्योंके सम्बन्धमें यह सहयोग दो प्रकारका है। मनुष्य जब अपनी आरम्भिक अवस्थामें फैलना आरम्भ करता है तब प्रायः ऐसी दशाओंमें समुदायोंकी उन्नति हुआ करती है। उन्हें शत्रुओंसे युद्ध करना पड़ता है और निकटवासियोंके साथ इस प्रकारके युद्ध करनेपर ही उनकी उन्नति अवलम्बित है। इस प्रकारके संग्राममें जिस प्रकारका सहयोग उत्पन्न होता है उसे सामरिक सहयोगका नाम देना चाहिये। मानवसमूहके अंगोंका लाभ और उन्नति इसीमें है कि वे प्रत्येक समय युद्ध करनेको तत्पर रहें, अपने अध्यक्षकी आज्ञाका पालन करते रहें और अपने व्यक्तिगत लाभको समुदायके लाभकी अपेक्षा गौण समझें। उनका सब काम रणक्रियाके सदृश चलता है। जिन समुदायोंमें यह सामरिक सहयोग अधिक दृढ़ होता है वे दूसरे समूहको पराजित करके अपनेमें मिला लेते हैं। साधारणतः इस सामरिक सहयोगकी नींवपर ही राजाओंका राज्य स्थापित होता है। इस प्रकार कई मानवसमूहोंके मिलनेसे जातियाँ बन गयी हैं। ऐसी जातियोंका सामरिक बल अतिशय शक्तिशाली होता है और उनका काम सदा दूसरोंपर आक्रमण करके अपने अधीन लाना रहा है।

गुप्त सहयोग

यदि कोई मानवजाति ऐसी दशामें हो जिसमें उसे समीपस्थ जातिके साथ युद्धका भय न हो तो उसको युद्ध नहीं करना पड़ता और न युद्धकी तैयारी करनी पड़ती है। उसके सदस्योंका परस्पर सहयोग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
स्वकीय लाभके लिए होता है। वे अपने कर्तव्योंको भिन्न-भिन्न कामोंमें विभक्त कर लेते हैं। वे अपना-अपना काम पूरा करके दूसरोंको सुखी देते हैं जिसके बदलेमें दूसरोंकी ओरसे उन्हें सुख मिलता है। एक पुरुष कृषिका काम करके धान्य उत्पन्न करता है, दूसरा लोहारका काम करके उसके लिए अस्त्र-शस्त्रोंका निर्माण करता है। इस प्रकारके सहयोगका आरम्भिक उद्देश्य लाभ और सुख है। पहिले प्रकारके सहयोगका लक्ष्य सारे परिवार अथवा जातिको सामुदायिक लाभ पहुँचाना है और इस सामुदायिक लाभके परिणाममें सदस्योंको भी सुख और लाभ प्राप्त होता है। पूर्वीय देशोंमें ऐसे देश हैं जिनमें सामाजिक उन्नतिका आधार दूसरे प्रकारका सहयोग है।

हरिवर्ष(यूरोप)की लगभग समस्त जातियाँ सामरिक सहयोगसे उन्नत हुई हैं, इसलिए उनमें सामरिक एकता और बल अधिक होता है। दूसरे प्रकारका सहयोग अत्युत्तम है, परन्तु वह तभी तक लाभदायक होता है जबतक अन्य जातियोंसे मुकाबला न पड़े। सामरिक सहयोगवाली जातियाँ अधिक संघटित होती हैं और वे अल्पसंघटित जातियोंपर राज्य करती हैं।

समाजकी उन्नति सामवायिक है

समाजकी समस्त उन्नति सामवायिक है जिसके अन्दर रहकर मनुष्य उन्नति करता है। समाजसे पृथक् अकेले पुरुषकी कोई सत्ता नहीं है और न वह अलग रहकर उन्नति ही कर सकता है। यह उन्नतिका क्रम सामवायिक दशामें एक वर्णसे दूसरे वर्णको पहुँचता चला आता है, इसी अर्थमें हमारी सब उन्नति समाजगत ही होती है। हमारी मस्तिष्क तथा विद्यासम्बन्धी उन्नति, शारीरिक तथा नैतिक, पारिवारिक तथा सांसारिक, सब प्रकारकी उन्नति समष्टिरूपमें हुई है। एक व्यक्ति उत्पन्न होता है, वह अपना काम करके अपना भाग समाजमें छोड़ जाता है। इस प्रकार सारा समाज भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कृतियोंसे बढ़ता है। प्रत्येक सत्ताका नाम चेतन पदार्थ है। वृक्ष भी एक चेतन पदार्थ (आर्गेनिज्म) है। विशेष प्रकारकी परिस्थितियोंसे यह चेतन पदार्थ (आर्गेनिज्म) उन्नति करता है और अपने अस्तित्वको दृढ़ करता है। दूसरी परिस्थितियोंमें आकर उसका अस्तित्व निर्बल हो जाता है। समाजका जीवन विशेष नियमोंका अनुसरण करता है। इतिहासके अध्ययनसे उन नियमोंका पता लगाया जाता है और उनसे राजनीतिक सिद्धान्त निश्चित किये जाते हैं।

विचार-विशेषकी सफलता

साधारणतः मनुष्यका जीवन भी किसी एक विचारके अधीन व्यतीत होता है। मनुष्य प्रायः पाशविक आवश्यकताओंसे ऊपर नहीं जा सकता। किन्तु जब कोई समाज उन्नत होता हुआ पाशविक आवश्यकताओं अर्थात् भूख और सन्तानकी कामनासे मुक्ति पाता है तब कोई-न-कोई अन्य विचार उसके अन्दर स्थान जमा लेता है। बहुतसे समुदायोंके अन्दर दूसरोंपर शासन करनेका विचार ही प्रबल हो जाता है। इसका बड़ा उदाहरण पुरातन कालमें रोम था। प्रस्तुत कालमें इंग्लैण्ड सबसे बढ़ा हुआ है। जापानमें एकमात्र विचार देशभक्तिका ही था। यही उनका धर्म और यही आचार था। अमरीकामें मानव-समानताका विचार राज्य करता है। आर्यावर्तका विचार सात्त्विक रहा है।

नियम अटल होते हैं

अटल नियम तो यह है कि प्रत्येक विचार समाजमें काम करता हुआ उसको एक सीमाकी ओर ले जाता है। एक पक्ष उन्नत हो जाता है, दूसरा पक्ष निर्बल हो जाता है। इसमें अधःपतन और नाशका बीज पाया जाता है। भारतवर्षमें परमार्थनिष्ठाका विचार प्रबल हो जानेसे यहाँकी जनताके अन्दर राजनीतिक कार्योंसे घृणा उत्पन्न हो गयी। परिणाम यह हुआ कि क्षत्रियोंकी संख्या अत्यल्प हो गयी और शेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जनता पौरुषहीन पुरुषोंका समूह बन गयी। परमार्थनिष्ठाके अनुचित प्रचारने देशका नाश कर डाला।

जब रोमने संसारमें अपना राज्य बढ़ाया तो रोमन लोग धनाढ्यताके शिखरपर जा पहुँचे। फलतः उनमें विषयासक्ति और आलस्यका प्रसार अधिक हो गया जिससे रोमन राज्यकी जड़ खोखली हो गयी। कोई विचार कैसा ही पवित्र और उत्तम क्यों न हो सीमान्तपर पहुँचकर वह नाशका कारण बन जाता है। प्रत्येक गुणमें भी अधःपतनका बीज विद्यमान रहता है। राज्यनिर्माता लोग इस अधःपतनको अपनी बुद्धिमत्ता और सावधानीसे स्थगित कर सकते हैं, परन्तु उससे सर्वदाके लिए बच नहीं सकते, जैसे कि मदिराके व्यसनमें फँसा हुआ मनुष्य अपने शरीरको खोखला होनेसे रोक नहीं सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण

राज्यका विकास

साधारणतः जातीयतामें ये पाँच बातें सम्मिलित हैं—(१) देश, (२) धर्म, (३) भाषा, (४) इतिहास और (५) राजनीतिक एकता। ये पाँचों अथवा इनमेंसे कुछके विद्यमान होनेसे जातीयता* बनती है। यह आवश्यक नहीं कि जातीयताके ये पाँचों चिह्न विद्यमान हों। ऐसा भी हो सकता है कि जहाँ इनमेंसे एक ही बलवान् रीतिपर विद्यमान हो वहाँ भी एक राष्ट्रीयताका सम्बन्ध उत्पन्न हो जाय।

भौगोलिक सीमा

प्रायः लोग हँसकर कह देते हैं कि भौगोलिक सीमा जातीयताका कारण कैसे बन सकती है। परन्तु यह बात सत्य है कि मनुष्यका अपने पर्वतों, नदियों, वृक्षों और फूलों आदिसे स्वाभाविक प्रेम होनेके कारण उसमें जातीयताका भाव उत्पन्न हो जाता है।

धर्मकी समानता

धर्मका विरोध जातिको खण्डित कर देता है, जैसा कि भारतवर्षमें आर्य और मुसलमान। कभी-कभी धर्म-विरोध होनेपर भी जातीयता बनी रहती है। जब सोलहवीं शताब्दीके अन्तमें स्पेनने इंग्लैण्डपर धार्मिक विरोधके कारण आक्रमण किया तो इंग्लैण्डके रोमन कैथोलिक चर्चके माननेवाले भी अपने सहधर्मी स्पेनके आक्रामकोंके विरुद्ध अपने

---

* यहाँ जिस अर्थमें 'जातीयता' शब्दका प्रयोग किया गया है उस अर्थमें अब 'राष्ट्रीयता' शब्दका किया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देशके रक्षणार्थ लड़ते रहे। धर्मका एक होना मुसलमानोंमें अति दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करता है, किन्तु हरिवर्ष (यूरोप) ईसाई होनेके अतिरिक्त कितनी ही भिन्न-भिन्न जातियोंमें विभक्त है।

भाषाका एक होना

जर्मनी और इंग्लैण्डके युद्धमें अमरीकाकी सहानुभूति स्वभावतः अंग्रेजोंके साथ थी। आयर्लैण्डके अन्दर जातीयताका नाश करनेके लिए आंग्लस्थानने वहाँकी भाषाका नाश करके आंग्लभाषाको उसके स्थानमें प्रचलित किया। जर्मनीने फ्रांसके कुछ ग्राम जीतकर वहाँसे फरांसीसी भाषाका अस्तित्व मिटानेकी चेष्टा की। इस सम्बन्धमें एक मनोरंजक घटनाका उल्लेख करना अनुचित न होगा। एक फरांसीसी कन्या किसी पाठशालामें पढ़ती थी। जर्मनीकी राज-महिषीने उस पाठशालाको देखा और वे उस कन्यापर बड़ी प्रसन्न हुईं। कन्याने उनसे प्रार्थना की कि 'हमारी पाठशालामें जर्मनके स्थानमें फरांसीसी भाषामें पढ़ाई हो', अस्तु। भाषाकी विभिन्नता होनेपर भी कहीं-कहीं जातीयता देखनेमें आती है। स्विट्ज़र्लैण्ड और आस्ट्रियामें भाषाएँ विभिन्न होनेपर भी एकजातीयता पायी जाती है।

प्राचीन इतिहासका एक होना

जातीयताका एक और भी चिह्न है। अपनी पुरातन जनोक्तियों और महात्माओंके साथ हमारा स्नेह हमारे रक्तमें पाया जाता है। जब हमारे किसी महापुरुषकी वीरता और साहसका वर्णन हमारे सामने किया जाता है तो हममेंसे प्रत्येकके हृदयमें एक प्रकारका आह्लाद उत्पन्न हो जाता है, हमारे हृदयोंमें एक ही प्रकारकी गति उत्पन्न हो जाती है। इस गतिका उत्पन्न होना ही जातीयताका भाव कहलाता है। जितनी प्रबल तरंग होगी उतनी ही दृढ़ जातीयता समझनी चाहिये। जिन जातियोंके प्राचीन इतिहासका कुछ सम्मान नहीं होता उनके अन्दर यह भाव काम नहीं करता। किसी जातिका भाव बलहीन करनेकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक यह विधि है कि उसका प्राचीन इतिहास न केवल उलट-पुलट दिया जाय, प्रत्युत सर्वथैव नष्ट कर दिया जाय। यदि आर्योंके अन्दर राम और कृष्ण दो नामोंकी प्रतिष्ठा न होती तो मुसलमानी आक्रमणके समय उनकी जातीयताकी समाप्ति हो गयी होती। जब यवनोंके आक्रमण हुए तो इन दो नामोंने देशके समस्त प्रान्तोंमें पुनरुत्थानकी शक्ति उत्पन्न की। उनका प्रेम और प्रतिष्ठा ही इस जातिकी जीवनशक्ति थी। आर्यजातिके लिए ये नाम आत्माका काम देते रहे। उनको निकाल देना जातिकी आत्मा निकालकर उसे निर्जीव बना देना है। उनके प्रेमने दैवी शक्ति बनकर स्थान-स्थानपर जातिकी रक्षाके लिए शक्ति उत्पन्न की, इससे उनकी पूजा ईश्वरके समान होने लगी।

राजनीतिक एकता

मनुष्यके शरीरमें जीवन-शक्ति होती है, जिसका काम शरीरके भीतरके उत्पन्न हुए विकारोंको ठीक करना और बाह्य आक्रामकोंसे उसकी रक्षा करना है। भिन्न-भिन्न रोग—हैजा, प्लेग आदिके कीटाणु हमपर आक्रमण करते हैं, हमारी जीवनशक्ति उनका सामना करती है। जिनकी शक्ति क्षीण होती है वे रोगादिमें फँसकर प्राणत्याग करते हैं। पर्याप्त शक्ति होनेपर रोगोंके आक्रमणोंका प्रभाव शरीरपर कुछ नहीं हो सकता। जातियोंके अन्दर राजा ही उनका 'बाहुबल' होता है। राजा ही जातीय शरीरके भीतरी विकारों और बाह्य आक्रामकोंसे उसकी रक्षा करता है। राज्य ही सब अंगोंकी दुर्बलताको दूर कर सकता है। उनके विद्यमान न रहनेपर वह जातिको बचाता है और काल व्यतीत हो जानेपर इन चिह्नों (अंगों) को पुनः उत्पन्न करता है। यदि यही न रहे तो जाति शनैः-शनैः दुर्बल होकर नाशको प्राप्त हो जाती है। सारांश यह कि जिस जातिमें अपना राज्य नहीं उसकी जातीयता मर गयी, क्योंकि उसके शरीरकी सारी शक्ति गिर गयी। स्वराज्य ही जातीय एकताको संसारमें प्रकट करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जातीय जीवनपर राज्यका प्रभाव

राज्य अपना होनेपर भी उसका अच्छा, बुरा अथवा स्वतन्त्र होना हमारे जातीय आचारपर बड़ा प्रभाव डालता है। हरबर्ट स्पेन्सरने इस बातकी अन्वेषणा की थी। उसने देखा कि सभ्य हरिवर्षीय (यूरोपियन) जातियोंमें कई ऐसी हैं जिनके आचार-विचार अधोगतिको प्राप्त हो गये हैं। उन्हें अधिक झूठ बोलनेकी आदत हो गयी है। कई जातियोंमें छल-कपट और नीचता पायी जाती है। इसके विपरीत, दूसरी जातियोंमें शुद्ध भाव, साहस, निर्भयता आदि गुण पाये जाते हैं। इसी प्रकार संसारके अवनत, असभ्य परिवारोंको देखनेसे उनमें कई उत्तम गुण देखे जाते हैं, और दूसरे इन गुणोंसे रहित पाये जाते हैं। फलतः, दुराचार और दौर्बल्य न तो सभ्य जातियोंके हिस्से पड़े हैं और न असभ्य जातियोंमें ही उनका होना आवश्यक है। इसपर स्पेन्सरके हृदयमें यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि फिर वह कौन-सी शक्ति है जो आचार बनाया करती है? बहुत ध्यान तथा विचारके पश्चात् वह इस परिणामपर पहुँचा कि जहां राज्यकी बागडोर किसी स्वेच्छाचारी राजा अथवा सरदारके हाथमें होती है वहाँके लोग झूठे और कपटी होते हैं और जहाँ स्वतन्त्र शासनप्रणोली होती है वहाँ उच्च कोटिके गुण प्रस्फुट होते हैं। जो लोग धर्म-प्रचार द्वारा लोगोंको सदाचार तथा पवित्रताकी शिक्षा देते हैं यदि वहाँकी सरकारका कार्यक्रम उनके विरुद्ध हो तो वे व्यर्थ ही पर्वतसे सिर टकराते हैं। यही बात हम पाठशालासे भी सीख सकते हैं। जहाँ गुरु अधिक दण्ड देते हैं वहाँके पढ़नेवाले प्रायः असत्यवादी, कपटी और भीरु होते हैं। यदि अध्यापक स्नेह करनेवाला हो तो बालक सत्यवादी और शूर बनते हैं।

आधिपत्यका आरम्भ कैसे हुआ

जिस जातिका कोई आधिपत्य नहीं उसकी कोई सत्ता नहीं, इसलिए आधिपत्यका समझना बड़ा आवश्यक है। पहला प्रश्न तो यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है कि आधिपत्यका आरम्भ कैसे हुआ ? स्पेन्सरका विचार है कि असभ्य दशामें परिवार भोजनान्वेषणके सिलसिलेमें परस्पर युद्ध किया करते हैं। उन युद्धोंमें जो व्यक्ति शौर्य दिखलाता है वह नेता बन जाता है। उसके लिए स्मारक बनाकर उसके विक्रमशाली कार्योंका सबको स्मरण दिलाया जाता है। धीरे-धीरे ऐसे पुरुष सरदार और राजा बन जाते हैं। कुलपतितन्त्र (पेट्रिआर्कल गवर्नमेण्ट) वह है जिसमें कुलपति कुलके सभी व्यक्तियोंपर शासन करता है। ज्यों-ज्यों कुल बढ़ता जाता है त्यों-त्यों वह परिवारका रूप धारण करता जाता है और कुलपति परिवारका अधिपति हो जाता है।

फ्रांसके दार्शनिक रूसोने सोशल कण्ट्रैक्ट(सामाजिक पण)का मत प्रचारित किया जिसमें उसने बताया कि मनुष्यकी आरम्भिक असभ्य अवस्था वर्तमान अवस्थासे अच्छी थी। अंग्रेज़ दार्शनिक हॉब्ज़ और लॉकका सिद्धान्त है कि प्रजा और राजा दोनों पक्ष एक दूसरेके प्रति प्रतिज्ञा-बद्ध रहते हैं। हॉब्ज़ तो यह कहता है कि प्रजा एक बार अपना शासन राजाके हाथमें देकर वापस नहीं ले सकती। लॉकका मत है कि राजा यदि अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण न करे तो प्रजा भी अपने दिये हुए अधिकार पुनः लौटा ले सकती है।

महाभारतका सिद्धान्त

कृतयुगके लोग सीधे थे। वे झूठ बोलना नहीं जानते थे। कोई किसीको पीड़ा नहीं देता था। ज्यों-ज्यों जन-संख्या बढ़ने लगी, त्यों त्यों लोगोंमें लोभ भी बढ़ने लगा। उनमें पारस्परिक झगड़े आरम्भ हुए। लोग अत्यन्त दुःखित होकर प्रजापतिके समीप गये और अपने दुःखकी वार्ता कह सुनायी। प्रजापतिने कहा, इसका एक ही उपाय है। वह यह है कि तुम लोग अपनेमेंसे ही एक राजा चुनो, उसकी आज्ञाका तुम पालन करो और वह तुम्हारी रक्षा करे। उसके खर्चके लिए तुम अपनी आयका एक नियमित भाग (षष्ठांश) उसको दिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
करो। इस प्रकार मनु पहला राजा बनाया गया। उसने नियम बनाये और दण्ड निश्चित किये। भीष्मपितामहने राज-निर्वाचनके सम्बन्धमें कहा है कि यदि राजा प्रजाकी रक्षा करने योग्य न हो तो बाँझ स्त्री या दूध न देनेवाली गौके समान समझकर उसे हटा देना चाहिये और जैसे तूफानके समयमें नाविकके उपयोगी न होनेपर कोई भी व्यक्ति नाविक-(कर्णधार) का काम कर सकता है, वैसे ही राजाके अनुपयोगी सिद्ध होनेपर कोई भी ब्राह्मण या शूद्र राजा बनाया जा सकता है।

यूनान व रोमके प्रजातन्त्र राज्य

एथेन्स, स्पार्टा आदि नगरोंके निवासी प्रायः एकत्र होकर अपने कार्योंका निर्णय किया करते थे। उन नगरोंका राज्य प्रजातन्त्र कहा जाता है जिनमें शासन सब लोगोंके हाथमें हो। वे अपना कार्य चलानेके लिए पदाधिकारियोंका निर्वाचन किया करते थे और उनको कालक्रमसे बदलते रहते थे। उन्होंने किसीको भी राजा न बनाया। उन नगरोंका राज्य नगरोंकी सीमासे अधिक विस्तृत न होता था और उन नगरोंमें भी यह विधि उसी अवस्थामें सफलता-पूर्वक चल सकती थी जब कि उनकी जन-संख्या आजकलके नगरोंके सदृश अधिक न होती थी। जन-संख्याके बहुत अधिक होनेसे लोगोंका एकत्र होना असम्भव हो जाता था।

रोमकी प्रजातत्र रियासतने जब दूसरेके साथ युद्ध करके विजयका कार्य आरम्भ किया तो युद्धोंमें विजयी सरदार शनैः-शनैः बलवान् होने लगे। फिर समय आया जब कि वे राजाधिराज बन गये। दूसरोंको अपनी अधीनतामें लानेसे प्रजातन्त्रका सारा भाव जाता रहा और जब दूसरोंको अपना दास बनाया तो वे स्वयं व्यसनों और विषयोपभोगमें पड़कर अधोगतिको प्राप्त हुए।

भारतवर्षमें छोटी-छोटी रियासतें

इधर जब भारतमें बुद्धने धर्मका प्रचार करना आरम्भ किया उस समय यहाँ कई सौ छोटी-छोटी रियासतें थीं। उनमें कई रियासतोंमें तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्ण प्रजातन्त्र प्रणाली प्रचलित थी। कई स्थानोंपर राजा भी राज्य करते थे। ये राजा कुछ वर्षों या आयुपर्यन्तके लिए चुने जाते थे। यदि कोई राजा अयोग्य होता था तो प्रजा उसको हटा देती थी। गौतम बुद्धका पिता भी इसी प्रकारका एक राजा था। ये प्रजातन्त्र रियासतें बहुधा नगरोंतक ही विस्तृत होती थीं। ग्राम और छोटे-छोटे नगर यद्यपि अपनी रक्षाके लिए किसी राजाके अधिकारको मान लेते थे तो भी वे अपने कार्यमें स्वतन्त्र होते थे। महाभारतमें प्रायः ऐसे राजाओंका वर्णन आता है जो अपने छोटे नगर अथवा ग्रामके स्वामी होते थे। जब ऐसे राजाके समीप कोई ऋषि धनकी विशेष मात्रा माँगने जाया करता था तो राजा स्पष्ट कह देता था कि मेरे पास तो इतना धन नहीं है। वह अपनी कन्या ऋषिको दे देता था जिसमें वह किसी और राजाको कन्या देकर आवश्यक धन प्राप्त कर ले। पाण्डव-भाइयोंने कौरवोंसे पृथक् एक नगर इन्द्रप्रस्थ बसाकर अपनी राजधानी पृथक् कर ली और वहाँ ही राजसूय यज्ञ किया। इस यज्ञके लिए विजय आदिकी कोई आवश्यकता न थी, परन्तु यज्ञ करनेवाले राजाका सबसे बढ़कर प्रतिष्ठित होना परमावश्यक था।

राजपूतोंकी फ्युडल विधि

इधर जब हम राजपूतोंके इतिहासकी ओर देखते हैं तो राजाके साथ कई सरदारोंको अपनी भूमिपर शासन करते हुए पाते हैं। ये ही सरदार एक प्रकारके शासक बन जाते थे। निर्वाचन करते और उसे सिंहासनपर बिठाते थे। आवश्यकता होनेपर अपने सैनिक साथ लेकर राजाकी सहायता करते थे। राजाका निर्वाचन प्रायः राजाके पुत्रों और समीपके सम्बन्धियोंमेंसे ही किया जाता था। राजाके अयोग्य होनेपर उसे सिंहासनपरसे उतार देते थे। हरिवर्षीय (यूरोपके) देशोंमें मध्यकालमें इसी प्रकारका राज्य था। ज्यों-ज्यों इन देशोंमें चर्च(धर्ममन्दिरों)-का प्रचार बढ़ता गया त्यों-त्यों राजाओंके हृदयमें भी यह विचार बढ़ता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गया कि हम ईश्वरीय आज्ञासे ही लोगोंपर शासन करते हैं। राजाओंकी इस शक्तिके विपरीत पहले-पहल इंग्लैण्डमें आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। एक संग्राम भी छिड़ गया जिसमें जनताका एक दल राजाके विरुद्ध लड़ता रहा। राजाकी पराजय हुई और उसे फाँसी दी गयी। सौ वर्ष पश्चात् फ्रांसमें इसी अभिप्रायसे बड़ा भारी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ और फ्रांसकी क्रान्ति हुई जिसमें न केवल राजा और उसके परिवारका, किन्तु बहुतसे धनाढ्य पुरुषोंका भी वध कर दिया गया। उस कालके उपरान्त हरिवर्ष (यूरोप) और अन्य पाश्चात्य देशोंमें दिन-प्रतिदिन लोगोंके निर्वाचित प्रतिनिधियोंका बल पार्लमेण्टमें बढ़ता गया और संघटनात्मक राज्यकी नींव पड़ी।

प्रतिनिधि सभा

जनता द्वारा नियमानुसार प्रतिनिधि-निर्वाचन इंग्लैण्डकी राज्य-व्यवस्थाका एक सुन्दर अंग है। इंग्लैण्डमें पहले समस्त सामाजिक कार्य बुद्धिमान् पुरुषोंकी सभा और लोगोंकी जमायतमें निश्चित हुआ करते थे। जब लोक-संख्या बढ़ गयी और युद्धमें प्रवृत्त होनेकी आवश्यकता पड़ी तो सामरिक नेता प्रचुर शक्ति प्राप्त करके राजा बन गये और वे अपने सरदारोंकी सभाकी बैठक करने लग गये। इंग्लैण्डमें सब प्रकारके अभि-योग निश्चित करनेके लिए 'ज्यूरी' (सभासद) लोगोंकी ओरसे चुने जाते थे। चुननेकी यही विधि धीरे-धीरे शासनमें प्रयुक्त होनेसे वर्तमान प्रतिनिधि-सभाकी उत्पत्ति हुई। तत्पश्चात् राजाके साथ प्रतिनिधि-सभा-की इस बातपर लड़ाई हुई कि लोगोंसे कर ग्रहण करनेका अधिकार राजाको है या प्रतिनिधि-सभाको। इस संग्राममें प्रतिनिधि-सभाकी जीत हुई। जब इंग्लैण्डने अपने अधिनिवेश अमरीकापर बिना वहाँ-वालोंकी इच्छाके कर लगाना चाहा तो उन्होंने कर देनेसे इन्कार कर दिया और कई वर्ष पर्यन्त युद्ध होता रहा जिसका परिणाम यह हुआ कि अमरीका स्वतन्त्र हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अमरीकाका प्रजातन्त्र

अमरीकाकी कतिपय रियासतोंने स्वतन्त्र होकर अपना एक संघटन स्थापित किया। धीरे-धीरे रियासतोंकी संख्या अधिक हो गयी और वे केन्द्रीय राष्ट्रसे पृथक् अपने-अपने लाभ देखने लगीं। उनमें परस्पर युद्ध छिड़ जानेका भय हुआ। इसकी प्रतिक्रिया यह निकाली गयी कि सरकारके अधिकारोंके दो विभाग करके आभ्यन्तरिक अधिकार रियासतोंके हाथमें दिये जायँ और बाह्य अधिकार जैसे सेना, युद्ध, सन्धि, डाक इत्यादि, केन्द्रीय राष्ट्रके हाथमें रखे जाँय। इसका नाम संघराज्य (फेडरल गवर्नमेण्ट) है। अमरीकाकी रियासतोंकी संख्या चालीससे ऊपर हो गयी और उनका एक प्रबल प्रजातन्त्र राज्य संघटित हो गया।

साम्यवाद

गत शताब्दीमें शर्मन देश (जर्मनी) के मार्क्स नामक एक पुरुषने साम्यवादका प्रचार किया। उसकी नींव इस सिद्धान्तपर पड़ी कि संसारमें अभीतक धनवान् पुरुष सब कुछ अपने ही प्रयोजनकी सिद्धिके लिए करते हैं। व्यापार उनके हाथमें है, शासन उनके हाथमें है, भूमि उनके हाथमें है, धर्ममन्दिर उनके हाथमें हैं, परन्तु श्रमिकोंका समुदाय जो सब कुछ उत्पन्न करता है, अपने परिश्रमके समुचित फलसे भी वंचित रखा जाता है। इस समुदायके लिए उचित है कि वह अपनी निद्राका त्याग करे एवं एक होकर अपने अधिकारोंको अपने हाथोंमें लावे। इस सिद्धान्तके प्रचारसे हरिवर्ष (यूरोप) के श्रमिकोंने कई चेष्टाएँ कीं, पर उनके हाथमें शक्ति न आ सकी। प्रथम महायुद्धका सबसे बड़ा परिणाम रूसका असाधारण परिवर्तन हुआ है जिसमें समग्र राजनीतिक शक्ति इस दलके हाथमें आ गयी है। संसारमें यह सबसे बड़े देशका प्रथम उदाहरण है जिसमें साम्यवादको क्रियात्मक रूप देनेका प्रयत्न किया गया हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा प्रकरण

जातिका इतिहास

जातिका जीवन एक शरीरीका जीवन है

जातिका इतिहास भी एक शरीरी(आर्गेनिज्म)के जीवनका इतिहास है। जातिकी उन्नति आरम्भिक अवस्थासे होती है। उन्नतिके अनन्तर स्वभावतः अधःपतन प्रारम्भ हो जाता है। आर्य पुरुष जिस तरह जीवनका पुनर्जन्म मानते हैं उसी प्रकार जातियोंका भी अधःपतनके अन्तमें नया जन्म हो सकता है। इस दशामें वे एक नया विचार लेकर संसारमें बढ़ना आरम्भ करती हैं। किसी जातिके इतिहासका अभिप्राय यह है कि उसकी उन्नति और अवनतिकी अवस्थाओं और कारणोंका समुचित अध्ययन कर उनसे उत्तम परिणाम निकाले जायँ।

इतिहास लिखनेका विचार

जिस तरह प्रत्येक पदार्थका अच्छा अथवा बुरा प्रयोग किया जा सकता है उसी प्रकार आजकल प्रायः जातिकी अवस्था भी विशेष रूपमें प्रकट की जाती है। अभिप्राय यह होता है कि उन अवस्थाओंसे जातीय उत्साह अथवा दूसरोंके प्रति घृणा उत्पन्न की जाय। अवस्थाओंका वर्णन अपने-अपने विचारानुसार किया जाता है। लेखक जिस पक्षको यथार्थ और न्याययुक्त समझता है उसके लिए पढ़नेवालोंके हृदयोंमें प्रशंसा उत्पन्न कर देता है। दूसरा लेखक उसके दूसरे पक्षका वर्णन कर पाठकोंके हृदयोंमें घृणा उत्पन्न करता है। भेड़ और भेड़ियेका विचार अपना अपना होता है। भेड़िया तो भेड़को मारकर खा जाना ही सर्वथा यथार्थ और उचित बतायेगा, किन्तु भेड़ इस कार्यको सरासर अन्याय ही कहेगी। दार्शनिक 'निटशे'ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही पहले, इस बातपर प्रकाश डाला। निटशे जब पाठशालामें पढ़ता था तभी उसे 'अधर्मका आरम्भ' शीर्षक एक प्रबन्ध लिखना पड़ा। उसने लिखा है कि "मैं चिरकालतक सोचता रहा और जब मुझे कोई और कारण दृष्टिगोचर न हुआ तो मैंने अधर्मका आरम्भ भी परमात्माके सिर मढ़ दिया।" तत्पश्चात् उसे एक प्रजातन्त्र नगरकी दशाका विवरण पढ़नेका अवसर प्राप्त हुआ। उस नगरमें दो पक्ष थे, एक धनी पुरुषोंका और दूसरा निर्धनोंका। दोनोंका परस्पर घोर विरोध जारी रहता था। जब धनाढ्योंकी विजय होती थी तो वे शौर्य, स्वल्पव्यय, नीचतासे घृणा, इत्यादि गुणोंको अच्छा कहते थे और दया, निर्धनता आदि गुणोंको घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। जब निर्धनोंकी शक्ति बढ़ गयी तो वे दया, निर्धनता आदिको ही श्रेष्ठतर ठहराने लगे। इस घटनासे निटशेको अपने प्रश्नका यह उत्तर मिल गया कि अच्छा अथवा बुरा केवल मनुष्यका अपना विचार है। इस प्रकार इतिहासके लिखनेमें लेखक अपने ही विचारसे प्रायः काम लेता है।

पराजित जातिका इतिहास

जब एक जाति किसी प्रकार दूसरी जातिकी अधीनता स्वीकार करती है तो विजयी जातिका लाभ इसीमें है कि पराजित जातिका इतिहास विशेष दृष्टिसे लिखा जाय। विजयी जातिके लेखक जहाँ अपने गुणोंको बतलाकर अपने लिए स्तुति तथा अपने मनुष्योंमें उत्साहका भाव उत्पन्न करते हैं वहाँ वे पराजित जातिकी निर्बलताओं और अवगुणोंपर जोर देकर उनके हृदयोंसे देश-भक्तिका भाव हटानेका प्रयत्न करते हैं। स्व-जातीय लोग अपना महत्त्व स्थिर रखनेके लिए मरने-मारनेपर तैयार किये जाते हैं, पर दूसरोंको छोटा दिखाकर उनको अपने आपसे घृणा करना सिखलाया जाता है। उनके नेत्रों तथा हृदयोंपर इस प्रकारका इन्द्रजाल डाला जाता है जिससे वे विजयी जातिमें सब प्रकारके गुण और अपनेमें सब अवगुण ही देख सकें। इस प्रकार उनका आत्मगौरव-भाव नष्ट हो जाता है और वे देश-भक्तिसे रहित हो जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतिहास द्वारा शिक्षादान

इतिहास द्वारा शिक्षा प्रदान करना भी लेखकके हाथमें है। किन साधनोंसे विजय प्राप्त हुई और किन साधनोंसे वह स्थिर रखी जा सकती है, इसका ज्ञान होना एक प्रकारकी शिक्षा है। दूसरे प्रकारकी शिक्षा यह मालूम करना है कि वे कौन-से कारण हैं जिनसे हम नीचे गिरे और किस तरह हम पुनः ऊपर उठ सकते हैं।

बाह्य आक्रमणोंकी रोगोंसे तुलना

जिस तरह मानव-देह बाह्य आक्रमणोंसे प्रभावित होती है उसी तरह जाति भी होती है। मानव-देहमें बाह्य आक्रमणसे पीड़ा आदि उत्पन्न हो सकती है या रोगोंके कीटाणु अन्दर प्रविष्ट होकर गड़बड़ उत्पन्न कर सकते हैं। इन सब बाह्य कारणोंका भी इतिहास होता है। पर प्रश्न यह है कि क्या केवल इनका ही इतिहास मानव-देहका इतिहास है? यद्यपि ये कारण मानव-देहके इतिहासमें परिवर्तन उत्पन्न कर देते हैं, पर यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि उनका इतिहास मानव-शरीरका इतिहास है। इसी प्रकार जातियोंकी दशामें बाह्य आक्रमण अपना प्रभाव उत्पन्न करते हैं और जातिके इतिहासको कुछका कुछ बना देते हैं, परन्तु उनका ही इतिहास जातिका इतिहास नहीं। जातिके इतिहासको उनसे पृथक् खोजकर हमें निकालना होता है।

जातिका इतिहास क्या है

जातिका इतिहास यों तो उन लोगोंके कार्योंका वृत्तान्त है जिन्होंने जातिके बनाने या बचानेमें भाग लिया, पर मनुष्योंके समूह तो आते और जाते हैं। जो आज जीवित हैं वे अर्द्ध शताब्दीके बाद जीवित न रहेंगे। फिर वह कौन-सी वस्तु है जो भिन्न-भिन्न मानव-समूहोंको एक बनाती है? वह एक तरंग है जो मनुष्योंके हृदयमें प्रवाहित होती है। मानव-श्रेणी इस तरंगको स्थिर रखती है और उसे आनेवाली संतानको अर्पित कर देती है। यह तरंग सदा जातिके अन्दर उठती रहती है—कभी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर चढ़ जाती है, कभी नीचे उतर आती है, कभी वेगसे चलती है और कभी अत्यन्त मन्द पड़ जाती है। कभी-कभी ऐसा भी प्रतीत होता है मानों यह बन्द हो गयी हो। इसी तरंगका इतिहास जातिका इतिहास है। यह तरंग ही जातिका जीवन है। इसका स्थूल नाम सभ्यता है। यही उसका धर्म है, इसीको कई बार धर्मका रूप दिया जाता है। इसके बन्द अथवा नष्ट हो जानेमें जातिका नाश हो जाता है। सभ्यता और सभा दोनों शब्द एक ही धातुसे निकले हैं। इनके अर्थ समाजके हैं। जातिकी सभ्यता ही समाजका जीवन है। इसी सभ्यताका इतिहास जातिका इतिहास है।

देशके नामकी व्युत्पत्ति

इस देशके तीन ओर तो समुद्र है और एक ओर सबसे ऊँचा गगनस्पर्शी पर्वत हिमालय है। उत्तर-पश्चिमकी ओरसे यहाँ आनेका एक मार्ग है जिसमें सिन्धु नदीको पार करना पड़ता है। मेरी समझमें चिरकालसे यह नदी इस ओरकी सीमाकी द्योतक रही है। इसी नदीने इस देश और जातिके नामपर अपना पर्याप्त प्रभाव डाला है। पहिले इस देशका नाम आर्यावर्त था और यहाँके रहनेवाले आर्य कहलाते थे। इतर देशनिवासी इस देशको हिन्दुस्तान या हिन्दु कहने लग गये। इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है। हिन्दुस्तान और हिन्दु शब्द 'सिन्धु' शब्दसे ही बने हैं। सिन्धुका अर्थ नदी है। ईरानी और यूनानी लोगोंने यहाँ पहुँचकर इस देश और इस जातिको इसी नामसे पुकारना आरम्भ किया, और 'स'को 'ह'में परिवर्तित कर 'हिन्दु' कहना आरम्भ किया। कालान्तरमें इसका रूप 'इन्दु' हो गया। इसीसे 'इण्डिया' शब्द भी निकला है। चीनी यात्री जो बड़ी श्रद्धासे कष्ट उठाकर इस पवित्र भूमिके दर्शनार्थ आते थे, 'हिन्दु' नामका उल्लेख बड़ी प्रतिष्ठा तथा प्रेमसे करते हैं। एकने इसका 'इन्दु' नाम होनेका कारण यह दिया है कि यह देश गुणोंमें चन्द्रमाके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समान है। जिस प्रकार सहस्रों तारे आकाशमें होते हुए भी तमको नष्ट नहीं कर सकते, चन्द्र ही उसे दूर करता है, उसी प्रकार इस देशने संसारको चन्द्रमाके सदृश प्रकाशित कर रखा है। विदेशी लोग हिन्दू शब्दको केवल भौगोलिक नाम समझते हैं।

गंगाकी भूमि

यह जाति, जिसको बाहरके लोग 'हिन्दू' कहते हैं, अपने आपको आर्य कहती थी। आर्य इस देशको आर्यावर्त कहा करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि गंगाकी भूमिपर आर्य जातिका प्रथम वास हुआ। इस देशमें गंगाकी भूमि सबसे अधिक फलप्रद और सुन्दर समझी जाती है। इस जातिकी जनोक्तियोंमें गंगा नदी सबसे प्रिय और पवित्र समझी गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य लोग इसके सौन्दर्यपर मुग्ध थे। इससे गंगास्नान अभीतक बड़ा भारी पुण्य समझा जाता है। भारतवर्षमें सबसे बड़ा तीर्थका स्थान वह समझा जाता है जहाँपर गंगा सबसे अधिक सुन्दर है। उत्तर आर्यावर्तके आर्योंमें एक बड़ी धार्मिक रीति, जो अबतक पायी जाती है, यह है कि मृतक शरीरका भस्म गंगाके जलमें बहाया जाता है। यह स्पष्टतः एक भ्रम-सा प्रतीत होता है, परन्तु मैं समझता हूँ कि इसका आरम्भ भी गंगाके प्रति प्रगाढ़ प्रेममें पाया जाता है। जब आर्य लोग गंगाकी भूमिसे निकलकर दूर-दूर निवास करने लगे तो वे मृत्युके समय अपनी अन्तिम इच्छा यही प्रकट करते थे कि यद्यपि हम गंगामें जाकर शरीर नहीं त्याग सकते तो भी हमारे उत्तराधिकारियोंका कर्तव्य है कि वे हमारे भस्मको वहाँतक पहुँचा दें। यही विचार धीरे-धीरे धार्मिक रीतिका रूप धारण करता गया।

साधारण ऐतिहासिक क्या कहते हैं

भारतवर्षके इतिहासके सम्बन्धमें साधारणतः यह कहा जाता है कि भारतवर्षके प्राचीन इतिहासका कुछ पता नहीं। मुसलमानोंके आक्रमणोंके समयसे ही यथाक्रम इतिहास मिलता है। पर यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कथन शुद्ध और आधार-युक्त नहीं है। मुसलमान ऐतिहासिकोंने अपने आक्रमणोंके समयके जो वर्णन दिये हैं वे निस्सन्देह उनकी अपनी उन्नति एवं विस्तारके वर्णन हैं, किन्तु उनका भारतवर्षके इतिहाससे इतना ही सम्बन्ध है जितना कि एक पीड़ा पहुँचानेवाले आक्रमणका मानवी देहकी उन्नतिसे हो सकता है। आक्रामकों या आक्रमणोंके वर्णन, और वे भी एक विशेष विचारदृष्टिसे वर्णित किये गये, भारतवर्षके प्रकृत इतिहासके अंग नहीं कहला सकते। मुसलमान और अंग्रेज ऐतिहासिकोंने अपने राज्य-विस्तारका इतिहास लिखा और उसे अपने देशका इतिहास समझकर उसका पठन-पाठन करनेका हमें निर्देश किया। वस्तुतः भारतवर्षका इस कालका इतिहास भी मिलना उतना ही कठिन है जितना कि प्राचीन कालका।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवाँ प्रकरण

प्रागैतिहासिक काल

भारतवर्षमें पहिले पहिल कौन-सी जातिके मनुष्य आकर बसे और उनका क्या इतिहास है, यह लिखना बड़ा कठिन है। ऐसी जातियोंका इतिहास मिलना कठिन है जिन्होंने अपने अस्तित्वका कोई प्रमाण नहीं छोड़ा है। अतः उनके सम्बन्धमें कुछ लिखा नहीं जा सकता। हम भारतवर्षके उन निवासियोंके सम्बन्धमें कुछ लिखनेका साहस कर सकते हैं जिन्होंने अपने अस्तित्वका कुछ चिह्न छोड़ा है। ये चिह्न कुछ इस तरहके औजार आदि हैं जिनका प्रयोग वे लोग अपने दैनिक जीवनमें करते थे। उन औजारोंकी परीक्षाके फलस्वरूप हम भारतवर्षके प्राचीनतम निवासियोंको दो भागोंमें बाँट सकते हैं—प्रथम पुरातन पाषाण-युग तथा द्वितीय नवीन पाषाण-युगके निवासी।

पुरातन पाषाण-युग

पुरातन पाषाण-युगके कुछ औजार आदि मिलते हैं जो भिन्न-भिन्न आकार और प्रकारके पत्थरके टुकड़े हैं जिनमें काष्ठ अथवा हड्डीकी बेंट लगी रहती थी। वे उनका प्रयोग जानवरोंका शिकार करनेके लिए अथवा काटने या छेद करनेके लिए या हथौड़ेकी तरह करते थे। इस तरहके औजार भारतवर्षके भिन्न-भिन्न भागोंमें पाये गये हैं। ये औजार बहुत सख्त पत्थरकी चट्टानके बने हुए थे।

इन औजारोंके सम्बन्धमें सूक्ष्म विचार करके हम उस समयके मनुष्योंके रहन-सहन आदिका कुछ अनुमान कर सकते हैं। यह स्पष्ट है कि वे लोग धातुका उपयोग नहीं जानते थे, अधिकतर लोगोंके रहनेका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई निश्चित स्थान नहीं था। सम्भव है, कुछ लोग पत्तियोंके झोपड़े बनाकर रहते हों। उन्हें शेर, हाथी, बाघ आदि जंगली जानवरोंका हमेशा भय बना रहता था। कृषिका उन्हें कोई ज्ञान नहीं था। वे लोग जानवरोंका मांस अथवा जंगली फल आदि खाकर जीवन व्यतीत करते थे। वे मिट्टीके बर्तन बनाना भी नहीं जानते थे और अग्निका प्रयोग भी उन्हें नहीं मालूम था। वे बिलकुल जंगली अवस्थामें थे और पशुओंसे उनके जीवनमें बहुत कम भिन्नता थी। विद्वानोंका ऐसा अनुमान है कि वे लोग उसी जातिके थे जिस जातिके आजकलके अण्डमान द्वीपके रहनेवाले हैं।

नवीन पाषाण-युग

मनुष्य धीरे-धीरे सभ्यताकी ओर अग्रसर होता रहा और सैकड़ों-हजारों वर्षोंमें भारतवर्षमें एक उच्चतर सभ्यताके-युगका प्रादुर्भाव हुआ जिसे हम नवीन पाषाण युग कह सकते हैं। इस युगके मनुष्य भी पत्थरके औजारोंका प्रयोग करते थे, पर इस युगके औजार अच्छे गढ़े हुए और सुन्दर आकारके हैं। प्राचीनतम पाषाण-युगके औजारोंसे सहजमें ही इनका भेद किया जा सकता है। इस युगके औजार प्रायः भारतवर्षके हर भागमें पाये जाते हैं। मद्रास प्रान्तके बिल्लारी जिलेमें इस तरहके औजारोंका एक कारखाना मिला है जिससे पता चलता है कि बननेकी अवस्थामें ये औजार किस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थितियोंसे गुजरते थे।

इस युगकी सभ्यता अधिक विकसित प्रतीत होती है। इस युगके मनुष्य खेती करते थे और अन्न तथा फल उत्पन्न करते थे। वे बैल और बकरी पालते थे और अग्निका उपयोग जानते थे। बाँस या लकड़ीको रगड़कर अग्नि उत्पन्न करते थे। हाथ या चाककी सहायतासे मिट्टीके बर्तन बनाते थे। वे लोग गुफाओंमें रहते थे और उनकी दीवालोंपर शिकार या नृत्यके चित्र बनाकर उनकी सुन्दरता बढ़ाते थे। उत्तरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और दक्षिणी भारतवर्षके कुछ स्थानोंमें ये चित्र आज भी विद्यमान हैं। वे अपने बर्तनोंपर भी चित्र बनाते थे। वे नाव भी बनाते थे और समुद्रमें यात्रा करते थे। वे रुई और ऊनका सूत बनाकर कपड़ा भी बुनते थे। वे अपने मुर्दोंको गाड़ते थे और उस युगकी कब्रें भारतवर्षके कुछ भागोंमें पायी गयी हैं। कभी-कभी वे मुर्दोंको बड़े सन्दूकमें रखकर गाड़ते थे। वे सन्दूक भी पाये गये हैं।

पाषाण-युगके पश्चात् धातुका युग प्रारम्भ होता है। इस युगकी सभ्यता और अधिक विकसित थी, परन्तु पाषाण-युगसे बहुत धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ। कहीं-कहींपर पाषाण और धातुके औजार एक साथ ही पाये जाते हैं और उनके आकार-प्रकार आदि भी बिलकुल एक-से हैं। धातुके प्रयोगके सम्बन्धमें सारे भारतमें समानता नहीं है। उत्तरी भारतमें पत्थरके बाद ताँबेका प्रयोग आरम्भ हुआ और भिन्न-भिन्न भागोंमें ताँबेके बने हुए भाले, तलवार, कुल्हाड़ियाँ आदि पायी जाती हैं और उसके सैकड़ों वर्ष बाद ताँबेके स्थानपर लोहेका प्रयोग प्रारम्भ हुआ। परन्तु दक्षिण भारतमें पत्थरके बाद लोहेका प्रयोग प्रारम्भ हो गया। वहाँपर बीचमें ताँबेके युगका पता नहीं चलता।

भारतवर्षमें ऋग्वेदका समय सबसे प्राचीन समय है जिसका कुछ लिखित प्रमाण मिलता है; पर यह निश्चय करना कठिन है कि इस समय ताँबेका युग था अथवा लौहका प्रयोग प्रारम्भ हो गया था। पर आजकल विद्वान् लोग साधारणतः यह बात मानते हैं कि जिस समय ऋग्वेदका प्रारम्भ होता है उस समय लौह-युग प्रारम्भ हो गया था।

प्राचीन नगरके अवशेष

पर इधर सिन्ध और पंजाबमें मोहेन जोदड़ो और हरप्पामें जो खुदाई हुई है उससे एक अति विकसित ताम्रयुगकी सभ्यताका पता चला है जिसे सिन्धकी घाटीकी सभ्यताका नाम दिया गया है। मोहेन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो दड़ोमें जो खुदाई हुई है उससे जमीनके अन्दर एक बहुत बड़े शहरका पता लगा है। यह शहर सात बार नष्ट-भ्रष्ट हुआ था। इस नगरका जो भग्नावशेष प्राप्त हुआ है उससे पता चलता है कि यह एक बहुत बड़ा नगर था। इस नगरमें दो कमरोंके छोटे-छोटे घरोंसे लेकर बहुत बड़े-बड़े भवन, जिनकी लम्बाई-चौड़ाई क्रमशः ९७ और ८५ फुट थी, विद्यमान हैं, जिनकी बाहरी दीवाल चार-पाँच फुट चौड़ी है। वे भवन खूब पकी हुई ईंटोंके बने हैं जो २०$\frac{1}{4}$ इंच लम्बी, १०$\frac{1}{4}$ इंच चौड़ी और ३$\frac{1}{2}$ इंच मोटी थी। बड़े भवन दो मंजिले थे और उनके फर्श तथा आँगन पक्के हैं और उनमें खिड़की-दरवाजे तथा सीढ़ियाँ हैं। हर एक भवनमें कुएँ, नालियाँ और स्नानागार हैं। रहनेके इन भवनोंके अतिरिक्त कुछ और बड़े-बड़े मकान हैं जिनमें बड़े-बड़े हाल हैं जिनमें एक ८० फुट वर्ग है। ये चाहे राजप्रसाद या मन्दिर या नगर-हाल थे। इस नगरमें एक बहुत बड़ा स्नानागार है जो १८० फुट लम्बा और १०८ फुट चौड़ा है, इसके बीच में ३९ फुट लम्बा, २३ फुट चौड़ा और ८ फुट गहरा तैरनेके लिए एक तालाब है जिसके चारों ओर कमरे हैं। तालाबके दोनों ओर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और बगलके कमरोंमें कुएँ हैं जिनसे तालाबमें पानी जाता था। पानी बाहर निकालनेके लिए ६ फुट चौड़ी पक्की नाली बनी हुई है। ये सब निर्माण कितने मजबूत हैं, इसका पता इसीसे चलता है कि आज पाँच हजार वर्षके बाद भी वे नष्ट नहीं हुए हैं।

नगरमें चौड़ी और सीधी सड़कें हैं और पानीके बहावके लिए नालियोंका प्रबन्ध है। इस भग्नावशेषको देखनेसे यह पता चलता है कि यह एक बहुत बड़ा और समृद्धिशाली नगर था और यहाँके निवासियोंको स्वच्छताकी सुविधाके साथ-साथ समृद्धि और सुख-सम्पत्तिके जीवनकी सब सुविधाएँ प्राप्त थीं।

रहन-सहन-सम्बन्धी जानकारी

खुदाईसे जो सामग्री मिली है उससे बहुत कुछ उस समयके लोगोंके रहन-सहन आदिका पता चलता है। गेहूँ उन लोगोंका मुख्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भोजन था, पर जौ और खजूरका भी वे प्रयोग करते थे। सूती और कभी-कभी ऊनी वस्त्र भी पहनते थे। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों ही सोने, चाँदी, हाथीदाँत, ताँबे आदिके आभूषण पहनते थे। मिट्टीके रँगे हुए बर्तन तथा कभी-कभी काँसे, ताँबे, चाँदी और चीनी मिट्टीके बर्तनोंका भी प्रयोग करते थे। कंघी, सूई, चाकू, छुरे आदि जो ताँबे, काँसे या हाथी-दाँतके बने थे, इस्तेमाल किये जाते थे। पत्थरके बाट भी मिले हैं और बच्चोंके खिलौने, जिनमें पहियेदार गाड़ी और कुर्सी भी मिली है, जिससे मालूम होता है कि ये चीजे वास्तविक जीवनमें उपयोग की जाती थीं। जानवरोंमें डीलवाले बैल, भैंसें, हाथी, ऊँट और भेड़ें पाली जाती थीं, कुत्ते भी रखे जाते थे, पर घोड़ेका कोई चिह्न नहीं मालूम होता। तरह-तरहकी मुद्राएँ भी पायी गयी हैं जिनपर जानवरोंकी तसवीरें बनी हुई हैं। पत्थरकी सुन्दर मूर्तियाँ भी मिली हैं जो सुन्दरतामें ग्रीसकी मूर्तियोंसे मुकाबला कर सकती हैं। इससे पता चलता है कि कलाकी पद्धति उन्नत थी। व्यापार केवल भारतके अन्दर ही नहीं बल्कि एशियाके और भागोंसे भी होता था जहाँसे टिन, ताँबा और कीमती पत्थर आदि आते थे।

कृषिमें गेहूँ, जौ और रुई पैदा की जाती थी। शिल्पकारोंमें कुम्हार, जुलाहे, लुहार, बढ़ई, सुनार, राज और जौहरी मुख्य थे। कुम्हारका चाक, पकाई हुई ईंट और धातुओंकी ढलाईसे पता चलता है कि शिल्पकलाकी काफी उन्नति थी।

देवी-पूजाका प्रचलन

मोहेन जो दड़ोमें जो वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं उनसे उस समयके मनुष्योंके धर्म तथा धार्मिक विश्वासका भी पता चलता है। देवीकी पूजा अधिक प्रचलित थी और देवीकी कितनी ही मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यद्यपि यह धर्म बादकी शक्तिपूजासे भिन्न था, परन्तु उससे बहुत कुछ मिलता-जुलता था। देवीके अतिरिक्त एक देवताकी पूजाका भी पता चलता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है जो बहुत कुछ शिवसे मिलता-जुलता है। एक मुद्राके ऊपर योगके आसनमें बैठे हुए शिवकी मूर्ति मिलती है। शिव महायोगी भी समझे जाते थे और जानवरोंके राजा अथवा पशुपति भी कहे जाते थे। शिवकी तीन आँखें और त्रिशूलके भी चिह्न मिलते हैं। इस तरहकी शिव और शक्तिकी पूजाके अतिरिक्त नाग और यक्ष तथा जानवर, पेड़ और पत्थरकी पूजाके भी चिह्न मिले हैं। इससे पता चलता है कि आजकलका हिन्दूधर्म जिसमें उपर्युक्त प्रकारकी पूजाएँ पायी जाती हैं बहुत कुछ सिन्धुघाटीकी सभ्यताके ऊपर आधारित है।

पर सिन्धुघाटीकी सभ्यता तथा वैदिककालकी सभ्यतामें बहुत अन्तर है। प्रथममें नगरजीवनकी प्रधानता थी द्वितीयमें ग्राम्य जीवन की। प्रथममें लोहे और उसके हथियारोंके प्रयोगकी जानकारी थी, दूसरेमें इसका अभाव था। दोनों सभ्यताओंके धार्मिक विश्वासोंमें भी बहुत अन्तर मिलता है। शिव और शक्तिकी पूजाका जो सिन्धुघाटीमें बहुत अधिक पाई जाती है, वैदिककालके अर्थोंमें बिलकुल अभाव था। वैदिककालमें लिंग तथा मूर्तिकी भी पूजा नहीं होती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठाँ प्रकरण

आर्यसभ्यताका आरम्भ

आर्यजाति

भाषाविज्ञान आदि विद्याओंसे इस बातका निर्णय हो चुका है कि इस पृथ्वीपर जितनी सभ्य जातियाँ पायी जाती हैं उनमें बहुतसी एक ही जातिसे निकली हैं। ईरानी, यूनानी, रोमन, जर्मन तथा रूस आदि सब जातियाँ इसके अन्तर्गत हैं। आर्यजातिसे निकली हुई जातियोंकी भाषाओंमें एक विशेष प्रकारकी समानता पायी जाती है। शब्दोंके रूपका आदिस्थान एक ही है, विशेष प्रयोगके समस्त शब्द और संख्याके शब्द भी एकसे ही हैं। इनके अतिरिक्त उन भाषाओंके व्याकरणकी रचना भी एकसी ही है। कर्त्ता, कर्म क्रिया, विभक्तियाँ आदि सबमें पायी जाती हैं। संस्कृत, लातीनी और यूनानीमें एकवचन, द्विवचन, और बहुवचन प्रायः एक समान पाये जाते हैं। यह क्यों ? इसलिए कि इन भाषाओंका आदिस्थान एक ही है। यदि ये भाषाएँ एक दूसरीके प्रभावके बिना बनी होतीं तो इतनी समानता कैसे हो सकती थी ? चीनी और ब्राह्मी भाषाओंमें किसी प्रकारका व्याकरण नहीं पाया जाता।

प्रारम्भिक निवास-स्थान

इससे प्रकट होता है कि एक काल था जब कि इन समस्त जातियोंके पूर्वज एक ही स्थानपर रहते और एक ही भाषा बोलते थे। उसी स्थान-पर मानवसृष्टिका आरम्भ हुआ। काल व्यतीत होनेपर जब लोक-संख्या बढ़ गयी तो इस जातिकी शाखाएँ निकल निकलकर भिन्न भिन्न दिशाओं-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की ओर चली गयीं और आगे बढ़कर जहाँ स्थान उत्तम देखा वहीं निवास करने लगीं।

जलवायुके परिवर्त्तनसे भाषाके शब्दोच्चारणमें भेद होता गया। परिस्थितियोंके विभिन्न होनेसे उनके रंगरूपमें भी अन्तर होता गया। यह आरम्भिक उत्पत्तिका स्थान कहाँ था ? इसपर कई भिन्न भिन्न मत है। एक मत तो यह है कि मध्य-एशियाके मैदानोंमें ही मनुष्यका प्रथम निवास था। दूसरा मत यह है कि पहले त्रिविष्टप (तिब्बत) में ही मनुष्यकी उत्पत्ति हुई। यह सिद्धान्त आर्यसमाजका है। तीसरा मत यह है कि भारतवर्ष ही आर्योंका आदि स्थान था। हमारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं कि वह स्थान कहाँ था। हमारा काम केवल यह बताना है कि आर्यजातिकी शाखाएँ एक ही स्थानसे निकली हैं। इसी प्रकार भाषाके सम्बन्धमें भी यह निश्चय नहीं किया जा सकता कि वह कौनसी भाषा थी जिसे आर्यजातिके पूर्वज बोला करते थे। केवल इतना ही ज्ञात हो सका है कि वह मूल भाषा वैदिक भाषाके साथ सबसे अधिक मिलती थी।

भाषा सभ्यताका बीज

सब प्रकारके ज्ञानका भाण्डार भाषा ही है। पहले भाषा बनती है, उसके उपरान्त उसमें ज्ञानका आरम्भ होता है। ज्ञानके धीरे धीरे बढ़नेसे सभ्यताका आरम्भ होता है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जब आर्य-जातिकी शाखाएँ विलग होने लगीं उस समय सभ्यताका आरम्भ हो चुका था। संख्यावाचक शब्द प्रयुक्त होने लगे थे। ईश्वरसम्बन्धी विचार भी उन्नत हो चुका था, क्योंकि भिन्न भिन्न आर्यजातियोंमें ईश्वरके लिए जो शब्द हैं वे 'दिव्' धातुसे निकलते हैं, जिसका अर्थ है चमकना ;—आँग्ल शब्द 'डिटी, डिवाइन', यूनानी 'थिओस' आदि इस बात के साक्षी हैं। कन्याके लिए आँग्ल शब्द 'डॉटर', फारसी 'दुखतर' और संस्कृत 'दुहितृ'में कैसी समानता पायी जाती है ? कृषिकी रीति भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रारम्भ हो चुकी थी और ये लोग गौओंको भी रखा करते थे और उनका दूध दुहा करते थे।

भाषाका आरम्भ

भाषाका आरम्भ कैसे हुआ, यह एक और प्रश्न है। धार्मिक सिद्धान्त माननेवाले तो इसका सरल उत्तर यह देते हैं कि भाषा भी परमात्माके यहाँसे बनकर प्रकट हुई। यह मान लेनेपर अधिक अन्वेषणकी आवश्यकता नहीं रहती। उसके विरुद्ध दूसरा मत यह है कि भाषा भी सीधे-सादे मानवशब्दोंसे विकास-सिद्धान्तके अनुसार उन्नति करके इस अवस्थातक पहुँची है। इस मतके अनुसार पहले-पहल मानवध्वनि पाशविक ध्वनिके समान थी। बहुत समय व्यतीत हो गया जब साधारण ध्वनियोंसे विशेष अर्थ रखनेवाले धातु बने। इन धातुओंका प्रयोग अनेक प्रकारके अर्थोंमें होने लगा। प्रत्येक प्रयोगके लिए धातुमें थोड़ी-थोड़ी स्वतन्त्रता आती गयी। इस प्रकार शब्दोंकी संख्या बहुत हो गयी। शब्दोंकी संख्या परिमित होनेके कारण पहले उनके कई प्रयोग होते थे। ज्यों-ज्यों शब्दोंकी संख्या बढ़ती गयी, प्रत्येक अर्थके लिए पृथक्-पृथक् शब्द निश्चित होते गये। भाषाकी उन्नतिके साथ-साथ जन-संख्या भी बढ़ती गयी। ऐसा प्रतीत होता है कि भाषा आरम्भिक दशामें ही थी जब इस जातिकी शाखाओंका इधर-उधर विस्तृत होना आरम्भ हो गया।

देव-पूजा

उस कालका प्राकृतिक धर्म देव-पूजा था। जो शाखाएँ ईरान और हरिवर्ष (यूरोप) के देशोंमें फैलीं वे स्वभावतः देवताओंकी पूजा अवश्य करती थीं। सेमिटिक धर्मोंने परमात्माकी एकताका विचित्र विचार जगत्में फैलाया और प्राचीन देवताओंकी पूजाके विरुद्ध ऐसे भाव फैलाये कि वे अत्यन्त द्वेषपूर्ण समझे जाने लगे। प्राचीन नाम 'पेगन' भी बुरा समझा जाता था। सत्य बात तो यह है कि इस विषयमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संसार कुपथके मार्गपर ही अग्रसर हुआ है। समय आयगा जब संसारको विदित होगा कि सेमिटिक परमात्माका विचार ऐसी अज्ञानताका है जो मिथ्या देव-पूजापर मढ़ी जाती है। देव-पूजा ही मनुष्यका प्राकृतिक और अज्ञानतासे स्फुट मार्ग है। प्राकृतिक अवस्थामें मनुष्य प्राकृतिक शक्तियों, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, पर्वत और नदियोंकी शक्ति और सुन्दरताको देखकर उनकी ही ओर आकर्षित हो सकते थे। उनके मस्तिष्कमें, जो झूठी शिक्षा से साफ था, कल्पित ईश्वरकी सत्ता और उसके देवदूतोंका विचार असम्भव था। जिन शक्तियोंको देखकर उनके हृदयमें आश्चर्य हुआ उन्होंने उनका ही गीत गाना आरम्भ किया। मनुष्यका हृदय स्वभावतः ऐसा ही अनुभव करता है। यही शक्तियाँ हैं जो ईश्वरकी शक्तिको प्रकट करती हैं। जबतक हरिवर्ष (यूरोप) में सेमिटिक परमात्माके चर्चकी विजय रही तबतक यह अन्धकारमें ही रहा। फिर प्राचीन दर्शनके पुनः प्रचारसे हरिवर्षमें नयी जाग्रति उत्पन्न हुई जिसे पुनरुत्थान (रीनेसाँ) कहते हैं। इससे वहाँ पुनः विद्याका प्रकाश फैलना आरम्भ हुआ।

प्राचीन आर्यावर्तका इतिहास

यह सर्वथा ठीक है कि आजकल इतिहासका जो अर्थ किया जाता है (अर्थात् दूसरोंके साथ मुकाबला तथा संग्रामोंका वर्णन इत्यादि) उस अर्थमें भारतवर्षका इतिहास नहीं पाया जाता। प्राचीन कालमें आर्यावर्त कभी इस प्रकारका एक देश न था जो दूसरोंसे युद्ध करके अपनी उन्नति करता। आर्योंकी उन्नतिकी अपनी विशेष परिपाटी थी। यह निश्चय करनेके पूर्व कि भारतवर्षका कोई इतिहास है या नहीं, हमें यह जानना चाहिये कि भारतवर्षके इतिहासकी कौनसी परिपाटी है। इस परिपाटीका निश्चय करके उसके अनुसार इतिहास लिखा जा सकता है। यह विचार आवश्यक नहीं कि प्रत्येक देश पहले अपने आपको एक प्रबल राजनीतिक राष्ट्र बना ले, फिर अपना बल दूसरोंपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जमानेका यत्न करें। भारतवर्षके इतिहासकी यह प्रणाली नहीं है, न इस जातिका कभी ऐसा आदर्श ही था। विशेष नगरोंमें या विशेष परिमित स्थानोंमें आर्य राजाओंकी राजधानियाँ अवश्य थीं, अधिक प्रतिष्ठित बननेके उद्देश्यसे उन राजाओंमें परस्पर युद्ध भी होता था, किन्तु उनको पराजित कर उनका राज्य अपने राज्यमें नहीं मिलाया गया और न कभी एक राजनीतिक साम्राज्य ही बनाया गया।

आर्य सभ्यताका लक्ष्य आध्यात्मिक

इस जातिकी सभ्यताका लक्ष्य अधिकतर आध्यात्मिक ही रहा है। राजा लोग त्यागी ब्राह्मणोंके अधीन थे। आरम्भिक कालके राजा ज्ञान-ध्यानमें ब्राह्मणोंसे बढ़ना चाहते थे। उनकी सभाएँ विशेषकर आध्यात्मिक विषयोंका निश्चय करनेके लिए ही हुआ करती थीं। उन्हें युद्धमें प्रवृत्त होनेकी इच्छा न थी, अतः हमारे पास युद्धोंके लेख विद्यमान नहीं जिनसे वर्तमान परिपाटीपर इतिहास लिखा जा सके। आर्यजातिके इतिहासकी विशेष रेखा यह है कि आरम्भमें तो अध्यात्मज्ञानकी तरंग उत्पन्न की गयी, तत्पश्चात् उस तरंगसे एक विशेष प्रकारका दर्शन उत्पन्न हुआ। उस अध्यात्मज्ञानके बिगड़ जानेसे ही इस जातिकी अधोगति हुई है। उसने अपना काम किया, देशमें दो तरंगें प्रवाहित हुईं। उनकी पारस्परिक टक्करका वृत्तान्त इस जातिके इतिहासका अत्यन्त मनोरंजक भाग है।

वर्ण-विभाग इस जातिका विशेष गुण था

आरम्भसे, वेदोंके कालसे ही, इस जातिके चार भाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—चले आते हैं। वेदमन्त्रोंमें इन चारों वर्णोंके अलग-अलग कर्तव्य बताये गये हैं। ब्राह्मणका धर्म विद्या पढ़ना, पढ़ाना और यज्ञ करना, कराना इत्यादि है। क्षत्रियका धर्म समाज तथा बलहीनोंकी रक्षा करना है। 'ब्राह्मण समाजका मुख है, क्षत्रिय बाहु, वैश्य पीठ और शूद्र पैर हैं'—इस उक्तिमें सामाजिक सेवाके भावका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहस्य भरा हुआ था। यह विभाग सहस्त्रों वर्षोंसे चला आता है। ब्राह्मणोंका वही स्थान है जो महाभारत-कालमें था। इसमें परिवर्तन होते रहे हैं। आजकल हजारों उपजातियाँ पायी जाती हैं। इन सब परिवर्तनोंकी उत्पत्तिका विवरण ही इस जातिका इतिहास है।

जातीय जीवनपर अध्यात्मज्ञानका प्रभाव

ब्राह्मणोंकी विजयका अर्थ यह था कि यथासम्भव क्षत्रिय राजा कभी विजय प्राप्त कर दूसरेका देश दबा न सकें। भिन्न-भिन्न राजाओंके राज्य साधारणतः नगरोंतक परिमित रहते थे इसलिए देशमें एकचित्त होकर काम करनेकी शक्ति कभी उत्पन्न न हुई और न कभी राजनीतिक एकता ही उत्पन्न हुई। जहाँ राजनीतिक एकता नहीं होती वहाँ एक दूसरेके, विशेषकर अपने समीपस्थके, विरुद्ध द्वेषकी अग्नि प्रतिदिन बढ़ती रहती है। यही द्वेष महाभारतके युद्धका कारण था। पिछले राजपूत राजाओंमें द्वेषकी मात्रा अधिक पायी जाती है। अध्यात्म-सम्बन्धी विजयके कारण राजाओंको अपनी इच्छा तथा बलको प्रयोगमें लानेका अवसर न मिला। अन्दर ही अन्दर जलते हुए वे अपने भाइयोंके साथ ही लड़नेको उद्यत रहते थे।

झूठा मद

इस जातिने उस कालमें विद्या और ज्ञानमें उन्नति की जब कि संसारकी अन्य जातियाँ असभ्यावस्थामें थीं। स्वभावतः इस जातिके अन्दर एक अभिमानसा उत्पन्न हो गया। वह किसी अन्य जातिको अपने समान पद न देती थी। दूसरोंको म्लेच्छ आदि शब्दसे सम्बोधित कर उनसे किसी प्रकारका सम्बन्ध स्थापित करना न चाहती थी। अभीतक आर्य लोग समझते हैं कि समुद्र पार होनेसे हमारा धर्म नष्ट हो जाता है। दूसरोंसे किसी प्रकारका सम्बन्ध न रहनेसे देशमें एक प्रकारका पार्थक्य उत्पन्न हो गया। इसने युद्धके भावको सर्वथा नष्ट कर दिया और जाति दिनानुदिन निर्बल होती गयी। जातिके अन्दर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वाभिमानका होना अच्छा है, परन्तु इसका अतिरेक वा झूठा अभिमान समाजको गिरा देता है।

जातियोंका प्रभाव

शनैः-शनैः जब वर्णव्यवस्थामें जन्मने कर्मका स्थान ले लिया तो जातिकी प्रथा आरम्भ हुई। देशमें शस्त्र उठाने और लड़ने-भिड़नेका बहुत कम काम पड़ता था, इसलिए क्षत्रियोंने भी अपना कर्म छोड़ दिया और वे दूसरे कामोंमें लग गये। कर्म करनेवाले क्षत्रियोंका केवल नाम ही रह गया। जब क्षत्रियोंने युद्धका धर्म छोड़ दिया तो उन्हें राजनीतिक कार्योंमें कोई रुचि न रही। न केवल देशके लिए लड़नेवालों-की संख्या न्यून हो गयी, प्रत्युत साधारण पुरुषोंके भी चित्त देशके प्रबन्धसे सर्वथा हट गये। उन्हें इस बातकी कुछ चिन्ता न रही कि हमारा राज्य किसके हाथमें जाता है। जिसके हाथमें बल था उसने आकर राजधानीपर अपना अधिकार जमा लिया और सब लोग बिना विचारे उसकी प्रजा बन गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवाँ प्रकरण

वैदिक काल

सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद

आर्यजातिके सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद हैं। आर्यजातिमें उनका मान यहाँतक है कि वे अन्तिम प्रमाण और ईश्वरीय ज्ञान माने गये हैं। वेद चार हैं—ऋक्, यजुः, साम और अथर्व। आर्योंका विश्वास है कि जो विद्याएँ इस देश अथवा अन्य देशोंमें विस्तृत हुई हैं वे सब वेदसे ही निकली हैं। यह बात सर्वमान्य है कि संसारके पुस्तकालयमें वेद ही सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। जिस समय आर्यजातिमें वेदकी सभ्यताकी व्याख्या तथा प्रचार हो रहा था उस समय प्रायः अधिकतर जगत् अन्धकारमें पड़ा हुआ था। मनुके शास्त्रमें वेदकी निन्दा करनेवाला नास्तिक ठहराया गया है। ऐसे भी दार्शनिक मत हैं जो ईश्वरपर विश्वास न रखते हुए भी वेदको सर्वमान्य मानते हैं। अखिल जातिके अन्दर वेदकी इतनी प्रतिष्ठा यह प्रकट करती है कि किस प्रकार एक जाति अपनी सभ्यताके आदिस्थानको प्राणोंसे भी अधिक प्रिय समझती है।

ब्राह्मणोंका पद

वेद ही ब्रह्म है, अतः ब्राह्मण वह है जो वेदको जानता हो। वेदकी रक्षा और पालन एक विशेष श्रेणीका काम रहा है। वह श्रेणी ब्राह्मणोंकी थी और सर्वोत्तम समझी जाती थी। आर्यजातिकी जातीयता और धर्म ब्राह्मणोंके आश्रयमें चला आया है। पूर्वकालीन आर्यधर्मको 'ब्राह्मणत्व' भी कहते हैं। शास्त्रमें कहा है कि यदि कोई ग्राम अग्निसे भस्मीभूत हो रहा हो तो सबसे पूर्व ब्राह्मणको बचानेकी चेष्टा करनी चाहिये,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
क्योंकि ब्राह्मणके न रहनेसे ज्ञान-दीपकके शान्त हो जानेका भय है। मनुस्मृतिमें कहा है कि यह निखिल संसार ब्राह्मणके लिए उत्पन्न किया गया है। ब्राह्मण सर्वोत्तम हैं, वे सबके स्वामी हैं। राजा लोग ब्राह्मणका इतना सत्कार करते थे कि एक अर्द्धनग्न ब्राह्मणके आगमनपर सम्पूर्ण राज-सभा उठ खड़ी होती थी।

इसका कारण क्या है

ब्राह्मणजाति समाजका शिखर इसलिए थी कि वह समाजकी उन्नतिका फल थी, उसकी विद्यमानता समाजके लिए अलंकार थी। जैसे बालुकाके ढेरोंमें सुवर्णके कण पाये जाते हैं उसी प्रकार समाजमें ब्राह्मण हैं। ऐसा क्यों था ? हमें ध्यानपूर्वक उस समयका निरूपण करना चाहिये जब कि ग्रन्थोंका प्रचार न था, जब कि उनका मुद्रण करनेके लिए कोई यन्त्रालय न था, यहाँतक कि लिखनेकी विद्याका भी विकास न हुआ था। मानवसमाजकी उस दशाका अनुमान हम केवल विचारसे ही कर सकते हैं। उस समयके ब्राह्मणोंके ही मस्तिष्कमें विद्याओंका भाण्डार था। उन्होंने वेदोंको भी अपने मस्तिष्कमें रखा था। वे बड़े यत्नसे योग्य शिष्यका अन्वेषण कर अपना विद्याकोष अर्पित करते थे। उनके लिए सरलता, तपस्या और त्याग इसलिए आवश्यक था कि वे वेदोंके ज्ञानकी सत्यताका अनुभव कर उन्हें स्मरण रखें और आगे फैलायें। सांसारिक विषयोंमें फँसे रहकर उनके लिए उस अन्धकारमयी अवस्थामें ज्ञानका दीपक प्रकाशित रख सकना सर्वथा असम्भव था। संसारके सब पदार्थोंपर उनका केवल इसलिए अधिकार था कि वे ऐसे मनुष्य थे जो उन अधिकारोंपर लात मारते थे और उनको घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।

वेदोंका आरम्भ

एक मत तो यह है कि मानवसृष्टिके आरम्भ होते ही ईश्वरने चार ऋषियों द्वारा वेदोंको प्रकट किया। दूसरे मतके अनुसार वेदोंकी सत्यता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरम्भिक ऋषियोंके मस्तिष्क तथा आत्मिक पवित्रतासे उत्पन्न हुई है। उनके विचारमें इसे एक धार्मिक घटना माननेकी आवश्यकता नहीं, परन्तु वेदके समस्त संसार और आर्यजातिके लिए मान्य होनेकी बड़ी प्रबल युक्ति यह है कि वह मनुष्यकी प्रथम ज्ञान-पुस्तक है। उसके आधारपर मनुष्यकी भावी उन्नति चलती है। उसको परे रख देना या भूल जाना उन महर्षियोंके प्रति अकृतज्ञता होगी जिन्होंने सत्यकी खोज कर मनुष्यको ज्ञानका मार्ग दिखाया। उस कालमें ये बातें आजकलके तार-रहित विद्युयन्त्र आदिके समान ही आश्चर्यजनक प्रतीत होती थीं।

वेदोंका काल

ईश्वरने सृष्टिके आदिमें वेदोंको चार ऋषियों द्वारा प्रकट किया, इस सिद्धान्तके अनुसार तो यह आवश्यक है कि वे एक ही कालमें ईश्वरकी ओरसे प्रकट हुए होंगे। इससे वेदोंका काल १,९६,०८,५३, ०२१ वर्ष पूर्व माना जाता है जो कि सृष्टिके प्रारम्भका समय है। दूसरे मतके अनुसार इसमें कुछ हर्ज नहीं यदि यह माना जाय कि वेदोंके अर्थ भिन्न-भिन्न कालोंमें ऋषियोंको प्रकट हुए। यदि मन्त्रोंको समझनेके लिए पश्चात् कालमें ऋषि हुए जो मन्त्रद्रष्टा कहलाये, तो यह समझमें नहीं आता कि क्यों वे ही मन्त्रोंके देखनेवाले न हो सकते थे? संक्षेपतः किसी पुस्तकका महत्त्व इसमें नहीं कि वह ईश्वरीय मानी जाय, प्रत्युत इसमें है कि उसे पढ़ने और सुननेसे उसकी पवित्रता और गौरव पढ़ने-वालेके हृदयमें अंकित हो जाय। वेदोंका महत्त्व इसमें है कि वेदान्त और सांख्य आदि दर्शनोंके कर्त्ता, जो ईश्वरके अस्तित्वको भी नहीं मानते थे, वेदोंको अपौरुषेय कहनेपर उद्यत थे।

वैदिक समाज

१. यह स्पष्ट है कि वैदिक कालमें मनुष्य आचार-व्यवहार आदिकी दृष्टिसे श्रेष्ठ और पवित्र थे। वह सत्ययुगका समय था जिस समय पापका लेशमात्र भी न था। कोई व्यक्ति अपने मनमें बुरा विचार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी न लाता था। व्यभिचार और अधःपतन जीवनकी आवश्यकताओं और झंझटोंके बढ़नेसे शनैः-शनैः उत्पन्न हुआ। जब हम उस कालकी तपश्चर्या और सरलताका वृत्तान्त पढ़ते हैं और अपनी दशासे तुलना करते हैं तो हमें दोनोंमें विचित्र विरोध दिखाई देता है। ब्रह्मचर्य आदिकी शिक्षाएँ हमें इतने दूरस्थ आदर्श प्रतीत होती हैं जिनका हमारे क्रियात्मक जीवनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लोकसंख्या बढ़नेसे आवश्यकताएँ बढ़ती हैं, उनसे विविध कामनाएँ उत्पन्न होती हैं। कामनाओंसे अधर्म और व्यभिचारका बीज उत्पन्न होता है जो समाजमें फैलता जाता है।

उस समयके लोगोंका जीवन बहुत सरल था। एक कुटुम्बके लोग एक घरमें रहते थे। घर प्रायः लकड़ीके बने होते थे। प्रत्येक घरमें एक अग्निशाला होती थी। घरके प्रधानको गृहपति कहते थे। पुत्रकी उत्पत्तिकी लोग बड़ी कामना करते थे और पुत्रीका उत्पन्न होना अच्छा नहीं समझा जाता था, पर पुत्री उत्पन्न हो जानेपर उसके साथ अच्छा व्यवहार होता था। उसकी शिक्षाका प्रबन्ध होता था। कई स्त्रियाँ वेदोंके मन्त्रोंकी रचनेवाली हुई हैं जैसे घोषा, अपाला और विशवारा आदि। स्त्रियोंके युवती होनेपर उनका विवाह होता था। एक पुरुष कई स्त्रियोंसे विवाह कर सकता था। यद्यपि कानूनकी दृष्टिसे स्त्रीका स्वतन्त्र व्यक्तित्व नहीं था, पर कुटुम्बमें स्त्रीका बड़ा सम्मान था। पत्नी सब धार्मिक कृत्योंमें पतिकी सहधर्मिणी थी और घरकी रानी होती थी। स्त्रियाँ सब उत्सवोंमें भाग लेती थीं, वे पर्देमें नहीं रहती थीं।

आर्य लोग अपनी वेषभूषापर अधिक ध्यान देते थे। वे सूती तथा ऊनी वस्त्र और मृगचर्म पहनते थे। उनकी पोशाकके तीन भाग होते थे, अन्दरके वस्त्रको नीवी कहते थे और एक वास अथवा परिधान तथा दूसरा अधिवास कहलाता था। उनके कपड़ोंपर सुनहला काम भी होता था। पुरुष और स्त्री दोनों सोनेके आभूषण जैसे हार, कुण्डल, केयूर आदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहनते थे। दोनों सिरपर पगड़ी भी बाँधते थे। पुरुष प्रायः केशोंका जूड़ा बनाते थे या काकपक्ष रखते थे और स्त्रियाँ वेणी बनाती थीं।

वैदिक राजनीति

यह कहना कि प्रारम्भिक वैदिक कालमें राजा पाये जाते हैं, बड़ा कठिन है। चिरकाल पर्यन्त समाजको किसी राजाकी आवश्यकता न थी, फिर भी वेदोंमें राजा शब्द आता है, पर वह साधारणतः इस अर्थमें कि परमात्मा ही हमारा एक राजा है। हम सब उसकी आज्ञाओंको मानें। परन्तु जब राज्य स्थापित हुए तो उनमें राजव्यवस्था प्रायः राजतन्त्रके आधारपर थी। राष्ट्रका प्रधान राजा कहलाता था जो साधारणतः वंश-परम्परासे होता था। ऋग्वेदमें पुरू और और त्रित्सु दो मुख्य जातियाँ मिलती हैं जिनके कुछ राजवंश राज्य करते थे, जिनमेंसे कुछके नाम ऋक्संहितामें पाये जाते हैं। राजा चुनावसे भी होते थे। यद्यपि ऋग्-वेदमें इनका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता पर अथर्ववेदमें प्रजा अथवा विशके द्वारा राजाके चुनावका जिक्र आता है। राज्याभिषेकके मन्त्रमें राज्यको सुदृढ़ और स्थिर होनेके लिए प्रजाकी स्वीकृति आवश्यक समझी गयी है। प्रजा राजाको वरण करती थी और राज्याभिषेकके समय राजा प्रतिज्ञा करता था और यदि वह प्रतिज्ञा तोड़ दे तो उसे निकाला जा सकता था।

उस समयके सामाजिक और राजनीतिक संगठनका आधार कुटुम्ब था। कुटुम्बके ऊपर ग्राम, विश और जन थे। इनका परस्पर क्या सम्बन्ध था, यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। कहीं-कहीं तो तीनों शब्द एक ही अर्थमें प्रयोग किये गये हैं। पर साधारणतः ग्राम विश और जनकी अपेक्षा छोटी इकाई थी और विश जनका अंग था।

राजाका मुख्य धर्म जाति और जातिकी भूमिकी रक्षा करना था। वह बाहरी शत्रुओंसे लड़ता था तथा प्रजाके आचरणपर दृष्टि रखनेके लिए भेदिया भी रखता था। पुरोहित राजाका मुख्य सहायक होता था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो धार्मिक कृत्य करता था और प्रजासे बलि प्राप्त करता था। सेनाका अध्यक्ष सेनानी कहलाता था जो राजाके प्रमुख सहचरोंमें होता था। सेनामें पैदल योद्धा और रथ होते थे। घोड़सवारोंका भी उल्लेख मिलता है, पर युद्धमें हाथीका प्रयोग नहीं होता था। योद्धा तीर-धनुषसे लड़ते थे और भाले, तलवार तथा परशुका भी प्रयोग करते थे।

यद्यपि राजा प्रजाका मालिक होता था, पर वह स्वेच्छाचारी नहीं होता था किन्तु प्रजाकी एक समिति होती थी जिसकी सहायतासे राजा कार्य करता था। इस समितिमें राजा और प्रजा दोनों उपस्थित रहते थे। एक और संस्था भी होती थी जिसे सभा कहते थे जिसमें प्रायः बड़े अथवा मुख्य लोग सम्मिलित होते थे। कुछ लोगोंका विचार है कि सभा गाँवकी मुख्य संस्था थी जिसमें गाँवके लोग सम्मिलित होते थे। समिति समूचे विशकी संस्था थी। उसमें प्रायः ग्रामणी, सूत, रथकार तथा कर्मार अवश्य सम्मिलित होते थे। उनका एक 'पति' या 'ईशान' होता था। राजा भी उसमें सम्मिलित होता था। राजाका वरण, निर्वासन तथा पुनर्वरण समिति करती थी। सभा समितिसे छोटी होती थी। बादको सभाका रूप न्यायालयका हो गया था। प्रत्येक ग्राममें भी सम्भवतः सभा होती थी जिसमें आवश्यक कार्योंके बाद विनोदकी भी बातें होती थीं। समितिके सदस्य राज्यके कर्ता-धर्ता होते थे, वे राजा भी कहलाते थे। कई राष्ट्र ऐसे भी थे जिनमें एक राजा न होता था। समितिके सदस्य मिलकर राज्य करते थे।

वेदमें पृथिवीसूक्त है जिसमें मातृ-भूमिका सौन्दर्य, उसके पर्वतों और नदियोंका वर्णन है। उसमें अपनी भूमिसे प्रेम करने तथा उसका सम्मान करनेका उपदेश दिया गया है। मन्त्रोंमें ऐसी प्रार्थनाएँ भी हैं कि हमारे घोड़े अधिक और बलयुक्त हों; हमारी गौओंकी वृद्धि हो जिसमें हमारा शरीर बलयुक्त और हम हृष्ट-पुष्ट हों; हम अपने शत्रुओंपर विजय प्राप्त कर सकें, इत्यादि। अच्छे शस्त्रोंसे अपने शत्रुओंको युद्ध करके जीतना धर्म समझा गया है। क्षत्रियोंके गुणोंकी बड़ी प्रशंसा की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयी है। मनुके धर्मशास्त्रमें इन सब सिद्धान्तोंका विस्तारपूर्वक वर्णन कर उनके अनुसार संक्षिप्त नियम दिये गये हैं।

सामाजिक व्यवस्था

एक वेदमन्त्रमें यह उपदेश है कि "हम सब परस्पर मिलें, परस्पर वार्तालाप करें, हम सबके विचार और मन एक-से हों।" यह मन्त्र उस नियमको बताता है जिसपर समाजकी समस्त भावी उन्नति आश्रित है। एक दूसरे मन्त्रमें कहा गया है कि ब्राह्मण सिरके समान हैं, क्षत्रिय बाहुके, वैश्य ऊरु वा जाँघके और शूद्र पाँवके समान हैं। इस मन्त्रके अनुसार समाज चार बड़े भागोंमें अर्थात् वर्णोंमें विभक्त है। शरीरके अवयवोंसे उपमा देकर वर्णोंके कर्तव्य निश्चित किये गये हैं। वेदमन्त्रोंमें जगत्‌के रचनेवाले ब्रह्मके अन्वेषणका बार-बार वर्णन आया है।

एक मन्त्रमें यह कहा गया है कि "वह ब्रह्म सत् एक ही है जिसे विद्वान् कई नामोंसे स्मरण करते हैं।" लोगोंको झूठसे प्रतिषेध और सत्य बोलनेकी आज्ञा है। व्रतधारण करने और उन्हें पूर्ण करनेका उपदेश है। ब्रह्मचर्य धारण करनेकी शिक्षा है। सूर्यके लाभोंका वर्णन है। दूसरी प्राकृतिक शक्तियोंके परस्पर सम्बन्धोंका वर्णन वार्तालापके रूपमें पाया जाता है। सबसे ऊँचे मन्त्र गायत्रीमें बुद्धिको बढ़ानेकी आज्ञा है। 'बुद्धि' ही उन्नतिका आधार है। सम्भव है, मानसिक संसारमें तत्कालीन विज्ञानकी कुछ विशेष सत्ता इस समय प्रतीत न हो, परन्तु देश-कालके अनुसार वर्तमान कालके आविष्कारोंसे उसकी सत्ता कहीं बढ़कर है।

साधारण दशा

महाभारतके शान्तिपर्वमें भीष्मपितामहसे यह प्रश्न किया गया कि राजा किस प्रकार बने। भीष्मने उत्तरमें कहा कि पहला काल सत्ययुगका था। उस समय कोई व्यक्ति झूठ न बोलता था; कोई चोरी न करता था; कोई किसीको दुःख न देता था। सन्तानोत्पत्तिको छोड़-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर कोई स्त्री-भोगकी इच्छा न रखता था। उस समय पापका लेशमात्र भी न था। उन पुरुषोंके लिए न किसी सरकारकी आवश्यकता थी, न किसी राजाकी, न दण्डकी। ज्यों ज्यों जन-संख्या बढ़ी, लोगोंकी आवश्यकताएँ बढ़ती गयीं और लोग दूसरोंके अधिकारोंमें हस्तक्षेप करने लगे, चोरी, झूठ आदि पाप आरम्भ हुए। तब लोग दुःखित होकर प्रजापतिके पास गये। प्रजापतिने कहा कि तुम अपने लिए कोई राजा बनाओ जो तुम्हारी रक्षा करे और अपराध तथा पाप करनेवालेको दण्ड दे। मनु सबसे पहला राजा बनाया गया। उसने लोगोंके लिए उन नियमोंकी रचना की जो उसके प्रसिद्ध धर्मशास्त्रमें पाये जाते हैं।

आर्थिक दशा

ऋग्वेद-कालके आर्य प्रायः गाँवोंमें रहते थे। 'नगर' शब्द ऋग्वेदमें नहीं पाया जाता। परन्तु पुर शब्दका प्रयोग मिलता है। पुर प्रायः बड़ी-बड़ी बस्तियाँ थीं और उनके निर्माणमें पत्थर और लोहेका प्रयोग किया जाता था। पर पुरके लिए 'शारदी' शब्दका भी प्रयोग किया गया है जिससे अनुमान होता है कि पुर केवल किले थे और उनका उपयोग रक्षाके लिए और विशेषतः शरद् ऋतुमें किया जाता था। गाँवका प्रधान ग्रामणी होता था जो ग्राम-सम्बन्धी शासनका कार्य करता था। ग्राममें एक व्राजपति होता था जिसके कर्तव्य प्रायः ग्रामणीसे मिलते-जुलते थे। गाँवके रहनेवालोंका मुख्य व्यवसाय कृषि था। साधारणतः नालियों और नहरोंके द्वारा सिंचाईका प्रबन्ध होता था। खादका भी वे लोग व्यवहार करते थे। धान और यव मुख्य अन्न थे जिन्हें वे उप-जाते थे। पशुपालन भी कृषिसे कम महत्त्वका नहीं था। गायोंका बड़ा सम्मान होता था और दूध एक मुख्य खाद्य-सामग्री था। गोप लोग पशुओंके झुण्ड नित्य चरागाहमें ले जाते थे। गायके अतिरिक्त बैल, घोड़े, कुत्ते, भेड़ तथा बकरी मुख्य पालतू जानवर थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यद्यपि वैदिक कालके लोग मुख्यतः कृषक तथा पशुपालक थे, परन्तु वे व्यापार तथा उद्योग-धन्धोंमें भी संलग्न थे। व्यापार साधारणतः पणि लोगोंके हाथमें था जो सम्भवतः अनार्य थे और जो अपनी कंजूसीके लिए प्रसिद्ध थे। यातायातके लिए रथ और गाड़ीका प्रयोग किया जाता था। जंगलको जलाकर रास्ता बनाया जाता था। इसीलिए अग्निदेवताको 'पथिकृत' भी कहते थे। ऋग्वेदके समयमें समुद्र-मार्गका उपयोग होता था या नहीं, इस सम्बन्धमें मतभेद है। परन्तु सौ पतवारवाले जहाजोंका उल्लेख हमें मिलता है और भुज्युके जहाज नष्ट होनेकी कथामें समुद्रका भी जिक्र आता है।

ऋग्वेदकालके उद्योग-धन्धोंमें लकड़ी, धातु, चमड़े, बुनाई तथा बर्तन बनानेके धन्धे मुख्य थे। लकड़ी तथा धातुके बारीक काम भी होते थे। हथियार, औजार तथा सोने आदिके आभूषण भी बनते थे। कला और विज्ञानकी भी उन्नति हुई थी। ऋक्संहितामें देवताओंकी स्तुतिमें उत्कृष्ट कविता है। ऋग्वेदकालके लोग लिखना जानते थे या नहीं, इस सम्बन्धमें सन्देह है। अष्टकर्णी गौका प्रयोग किया गया जिसका अर्थ है जिसके कानपर आठ लिखा था। पर कुछ विद्वान् इसका दूसरा अर्थ लगाते हैं। सिन्धु घाटीकी सभ्यतामें लिखनेकी कलाका पता चलता है, पर वैदिक कालका साहित्य प्रायः मौखिक ही होता था। शिल्पकलाकी उन्नति हुई थी। सहस्र स्तम्भवाले मकानोंका जिनमें सहस्र दरवाजे थे, उल्लेख मिलता है। पत्थरके बने मकानोंका भी जिक्र आता है। आयुर्वेदका भी विकास हुआ था और व्याधियोंको दूर करनेके लिए औषधियोंके अतिरिक्त मन्त्र-तन्त्रका भी प्रयोग किया जाता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आठवाँ प्रकरण

उपनिषदोंका काल

उपवेद और ब्राह्मण

कुछ कालके बाद वेदोंके आधारपर विद्याओंके भाण्डार चार उपवेद बनाये गये अर्थात् (१) आयुर्वेद जिसमें शरीर और उसके विकारोंका ज्ञान और चिकित्सा बतायी गयी है, (२) धनुर्वेद जिसमें शस्त्र बनाने और चलानेकी विद्या है, (३) गन्धर्ववेद अर्थात् रागविद्या और (४) अर्थवेद अर्थात् पदार्थोंका ज्ञान। इन उपवेदोंसे प्रकट होता है कि उस समयका समाज कितनी उच्च और उन्नत अवस्थामें था। उपवेदोंके साथ ही साथ वह काल आया जिसमें वेदोंको समझनेके लिए ब्राह्मण-ग्रन्थ लिखे गये।

उपनिषद् और आरण्यक

तत्पश्चात् उपनिषदोंका काल आया। इस कालमें समाजके नेता वे ऋषि थे जो वनोंमें रहते और ब्रह्म तथा आत्माके सम्बन्धमें विचार करते थे। ये ऋषि वनोंमें अपनी स्त्रियों तथा बालकों सहित रहते थे। वे न केवल जीवात्मा और परमात्माके गम्भीर विषयोंपर परस्पर विचार करते, बल्कि जो शिष्य उनसे अध्ययन करनेके लिए आते थे उनको भी ज्ञानका उपदेश देते थे। जिन विषयोंपर वे विचार किया करते थे वे उपनिषदोंमें दिये हुए हैं। उन विषयोंमें स्त्रियाँ भी भाग लेती थीं। संसारके गम्भीर रहस्योंके सम्बन्धके अनेक विचार उनके हृदयमें उठा करते थे। उन्हीं रहस्योंकी कुंजी वे ढूँढ़ा करते थे। ब्रह्माण्ड क्या है? आत्मा क्या है? आत्मा शरीर त्यागनेके उपरान्त कहाँ जाता है? ब्रह्म

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्या है ? वह कैसे जाना जा सकता है ? इस तरहके प्रश्न उनके मस्तिष्कमें आविर्भूत होते रहते थे।

सामाजिक उन्नति

इस कालमें सामाजिक जीवन पहलेका सा सरल न रहा। देशमें साधारणतः बड़े ग्राम या नगर नहीं पाये जाते थे, पर कहीं-कहीं नगर स्थापित होने लग गये थे जिनमें क्षत्रिय राजा राज्य करते थे। यद्यपि ये राजा क्षत्रिय वर्णके थे, परन्तु उपनिषदोंसे विदित होता है कि ये अपनी आत्मिक उन्नति तथा त्यागमें ब्राह्मण ऋषियोंके तुल्य होनेका अभिमान करते थे। वे कहते थे कि हमारा त्याग अधिक कठिन है, क्योंकि हम संसारसे भागते नहीं, बल्कि सांसारिक भोगोंमें भाग लेते हुए भी उनमें नहीं फँसते। वे अपनी प्रजाके सुखके लिए राज्य-सम्बन्धी सब कार्य करते थे और साथ ही जीवात्मा तथा परमात्माके चिन्तनमें भी लगे रहते थे।

राजाओंकी सभा

ये राजा अपने-अपने नगरोंमें सभाएँ करते थे, जिनमें ऋषि अपने-अपने आसनपर बैठे हुए एक दूसरेसे शास्त्रार्थ करते थे। इन सभाओंसे उस समयके सामाजिक और आत्मिक जीवनका चित्र अच्छी तरह प्रकट होता है। इन सभाओंमें आत्मा, परमात्मा तथा मुक्ति आदि गम्भीर प्रश्नोंपर विचार होता था। इन सभाओं और इन प्रश्नोंसे स्पष्टतः विदित होता है कि इस देशके महापुरुषोंकी रुचि किस ओर जा रही थी। वे सांसारिक उन्नतिकी ओर अधिक ध्यान नहीं देते थे। उनके मस्तिष्ककी सारी शक्ति आत्मिक ज्ञान प्राप्त करनेमें व्यय होती थी। राज्य करते हुए भी राजाओंका चित्त उसी ओर लगा रहता था।

मिथिलाके राजा जनक

मिथिलाका जनक-राजवंश विशेष करके इसीके लिए विख्यात था। उसकी राजसभाओंके सम्बन्धमें कई कथाएँ प्रसिद्ध हैं जिनसे उस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समयके समाजकी वास्तविक अवस्था प्रकट होती है। एक बार राजा जनकने एक सभा यह जाननेके लिए की कि क्या कोई ऐसा ज्ञानी है जो ऐसी विधि बताये जिससे क्षणभरमें ज्ञान हो जाय। सब दिशाओंसे ऋषि और ब्राह्मण आकर एकत्र हुए। इतनेमें अष्टावक्र नामक एक ऋषि आ उपस्थित हुए। अष्टावक्रके शरीरमें आठ कूबड़ थे। लोग उनके शरीरकी ओर देखकर हँस पड़े। अष्टावक्रने तत्काल कहा कि मैं तो भूलसे इधर आ गया। मैं समझता था कि यह ज्ञानियोंकी सभा है, परन्तु यह शूद्रोंकी सभा प्रतीत होती है, क्योंकि वे चर्मकी परीक्षा अच्छी तरह कर सकते हैं। चर्मसे अष्टावक्रका इशारा अपने शरीरकी रचनाकी ओर था।

राजनीतिक पक्ष

जहाँ ब्राह्मण और राजगण सब एक ही विषय अर्थात् आत्मिक ज्ञान प्राप्त करनेमें तत्पर हों वहाँ राजनीतिमें किसी प्रकारकी उन्नति होना अतिशय कठिन था। उस समय न तो कोई बड़ा राज्य दिखाई पड़ता था और न किसी एक राज्यका दूसरेसे युद्ध होता था, इसलिए न कोई राजनीति थी और न कोई राजनीतिक इतिहास। सम्भवतः देशकी जन-संख्या भी अधिक न थी। वर्तमान कालकी तरह उस समय इतिहास लिपिबद्ध करनेवाले नहीं पाये जाते थे। जातीय जीवनकी जो तरंग उस समय बह रही थी उसका अनुभव वर्णन करनेवाले ऐतिहासिक और ही प्रकारके होते हैं।

प्राचीन संसारपर वैदिक सभ्यताका प्रभाव

आजकलके पारसी या पुरातन ईरानियोंका धर्म-ग्रन्थ 'ज़न्द आवेस्ता' एक प्रकारसे वेदोंकी प्रतिकृति प्रतीत होता है। इसकी लेख-प्रणाली सर्वथा वैसी ही है। शब्द और नाम भी वैसे ही आते हैं। वेदोंके कई मन्त्रोंकी नकल इसमें मिलती है। इसके अतिरिक्त कई विद्वानोंने खोज करके यह प्रकाशित किया है कि होम करने, पवित्र अग्नि रखने और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यज्ञोपवीत डालनेकी रीतियाँ ईरानियों तथा भारतीय आर्योंकी प्रायः एकसी हैं।

मनुस्मृति संसारमें धर्मकी अति प्राचीन पुस्तक है। फ्रांसीसी चीफ जस्टिस जैकोलैटने अपनी पुस्तक "बाइबल इन् इण्डिया"में यह सिद्ध किया है कि 'तौरेत'के नियम और रीतियाँ सब मनुस्मृतिके नियमोंकी नकल हैं, क्योंकि यहूदियोंने उन नियमोंको मिस्रसे सीखा और मिस्रके लोगोंने जातिका विभाग और नियम सब मनुस्मृतियोंसे लिये हैं।

चाइल्डियाके पुरातन खण्डहरोंमें जो लेख मिले हैं वे ब्राह्मण-ग्रन्थोंकी रीतियोंसे सर्वथा मिलते हैं और उनके देवताओंके नाम वैदिक शब्दोंसे लिये गये हैं। ज्यों ज्यों प्राचीन संसारका अन्वेषण होता जायगा त्यों-त्यों इस बातपर प्रकाश पड़ता जायगा कि प्राचीन वैदिक कालकी सभ्यताका पुरातन संसारपर कितना प्रभाव पड़ा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवाँ प्रकरण

दर्शनोंका काल

दर्शनोंका आरम्भ

उपनिषदोंके कालमें ऋषि ध्यान और चिन्तनमें लगे रहते थे। उस कालमें ऋषियोंको संसार रहस्योंसे पूर्ण प्रतीत होता था। वे इन रहस्यों-की खोजमें दिन-रात निमग्न रहते थे और जिस किसी तरह वे इन रहस्योंको खोलना चाहते थे। दर्शनोंका काल इससे सर्वथा भिन्न था। दर्शन सत्ताके प्रश्नोंकी व्याख्या नहीं करते। उस समय समाज इतना बढ़ गया था कि उसमें दुःखका अस्तित्व बड़े वेगसे भासने लगा। दर्शनकार दुःखको देखकर व्याकुल हुए और उनके हृदयमें यही प्रश्न उत्पन्न होने लगा कि अधर्म और दुःख संसारमें क्यों हैं? क्या यह संसार केवल दुःखके लिए बनाया गया? इस दुःखके बन्धनसे मनुष्य किस प्रकार निवृत्त हो सकता है?

वेदांग और उपांग

उपनिषदोंके उपरान्त जिन छः बड़ी विद्याओंकी नींव डाली गयी वे ये हैं—ज्योतिष, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, शिक्षा और छन्द। इन छः विद्याओंको वेदांगकी पदवी दी गयी। इसके अनन्तर जो काल आया उसमें छः बड़े दर्शनोंकी नींव पड़ी जिनको उपांग कहते हैं। उनके नाम ये हैं—कपिलका सांख्यदर्शन, गौतमका न्यायदर्शन, कणादका वैशेषिक-दर्शन, पतञ्जलिका योगदर्शन, जैमिनिका पूर्वमीमांसादर्शन और व्यासका वेदान्तदर्शन। हमें स्मरण रखना चाहिये कि इस प्रकारके दार्शनिकोंकी संख्या बहुत अधिक थी। उपनिषदोंके ऋषियोंके पास कोई कोई जिज्ञासु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिष्य बनकर रहा करते थे। दर्शनकालके इन आचार्योंने अपने-अपने विशेष आश्रम बनाये जिनमें वे अपने विशेष सिद्धान्तकी शिक्षा दिया करते थे। बहुधा ये आश्रम चलते-फिरते मण्डल होते थे। आचार्य अपने शिष्योंके समूहको साथ लिये हुए स्थान-स्थानपर फिरते थे जिसमें वे दूसरोंके साथ शास्त्रार्थ करें, अपने लिए शिष्य एकत्र करें और अपने सिद्धान्तोंका उपदेश दें।

संसारके दुःखका कारण

जहाँतक दुःखका कारण ढूँढ़नेका सम्बन्ध है वहाँतक लगभग सबके सब दर्शन एक ही परिणामपर पहुँचते हैं, किन्तु उनके नाम भिन्न-भिन्न हैं और दुःख दूर करनेके वे भिन्न-भिन्न साधन बताते हैं। दुःखके कारणको वेदान्त मायाके नामसे पुकारता है। योग इसे अविद्या कहता है। सांख्य इसे अविवेक और न्याय अज्ञानके नामसे पुकारता है। इसके दूर करनेका उपाय ज्ञानकी प्राप्ति, योग द्वारा चित्तकी शुद्धि, आदि है। इन उपायोंसे दुःखका मूल काटा जा सकता है। इस कालतक आर्योंके सामाजिक जीवनका आदर्श दर्शनके द्वारा संसारमें ज्ञानकी वृद्धि करना था। तदनन्तर गौतम बुद्धने भी दर्शनोंकी शिक्षासे प्रभावित होकर अपने जीवनका आदर्श दुःखका निवारण करना ही ठहराया। वह राज-पुत्र था। उसने बड़ा भारी त्याग किया। उसके सिद्धान्तने संसारमें धर्मका रूप धारण किया।

भगवद्गीता

यद्यपि गीता एक पृथक् दर्शन नहीं है और न इसके उपदेष्टाने इसे वह पद दिया है, तथापि यह एक बड़ा दर्शन कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें सब दर्शनोंसे विभिन्न एक विस्तीर्ण सिद्धान्तका प्रचार किया गया है। इसका पद दर्शनसे न्यून नहीं है। गीताके कारण कृष्णका पद दार्शनिकोंके मध्यमें बहुत उच्च समझा जाता है। गीतामें भी दुःखका ही प्रश्न है। गीतामें कृष्णने इस विचित्र मतका प्रतिपादन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया है कि दुःखको दूर करनेका यत्न मत करो, किन्तु यह समझ लो कि दुःख और सुख दोनों एक ही वस्तु हैं। ज्ञानी वही है जिसकी दृष्टिमें उष्णता और शीतलता, दिन और रात्रि, सुख तथा दुःख एक ही हैं।

राजनीतिक अवस्था

इस कालमें भी आर्यजातिके जीवनकी तरंग वही आध्यात्मिक तथा मानसिक उन्नतिकी तरंग है। उसका चित्र हम दर्शनोंमें तथा उनकी व्याख्याओंमें पढ़ते हैं। उस समयतक आर्यजाति अपना विशेष रूप रखती थी और अपने आदर्शकी ओर बढ़ती जा रही थी। यही उसकी उन्नतिका काल था जिसमें इस जातिका वास्तविक आचार और संसारमें इसका मिशन (उद्देश्य) प्रकट होता था। उस समयतक देशमें कोई राजनीतिक संग्राम दृष्टिगोचर नहीं होता था और न जातिमें राजनीतिकी कोई आवश्यकता प्रतीत होती थी। इसलिए उस समयका भी कोई राजनीतिक इतिहास हमें नहीं प्राप्त है।

वेदांगों और उपांगोंका प्रभाव

दर्शनोंके सिद्धान्तोंका बड़ा गहरा प्रभाव यूनानपर पड़ा। पाइथागोरसने दर्शनोंके सिद्धान्त सीखकर अपने देशमें जाकर उनका प्रचार किया। लोग बहुधा कह देते हैं कि इस प्रकारका विचार आर्यसमाजियोंका रचा हुआ ढकोसला है। यदि वे दाराशिकोहकी सम्मति पढ़ें, जो उसने 'सिर्रे अकबर' की भूमिकामें प्रकट की है, तो उन्हें विदित होगा कि आर्यसमाजियोंका यह मत कितना ठीक था। वह लिखता है कि अफलातून (प्लेटो), जो यूनानके दार्शनिकोंका शिरोमणि था, व्यासके शिष्योंमेंसे किसी एकका शिष्य था। इससे व्यासके महत्त्वका अनुमान लगाया जा सकता है।

न केवल यूनानपर, किन्तु प्राचीन अरबके लोगोंपर और अरब द्वारा यूरोपपर इस देशकी विद्याओंका बड़ा प्रभाव पड़ा। अरबी जाति प्रथम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाति थी जिसने स्पेनपर विजय प्राप्त करके हरिवर्ष (यूरोप) में पहला विश्वविद्यालय स्थापित किया और विद्याओंका प्रचार किया। अरबी सौदागर सैकड़ों और हजारोंकी तादादमें हर साल भारतवर्ष आया करते थे और हमें इस बातका स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि वे सहस्रों पुस्तकें यहाँसे अपने देशको ले गये, जिनका अनुवाद अरबीमें किया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दसवाँ प्रकरण

रामायण और महाभारत

रामायण और महाभारतका काल

जब हम महाभारतके कालतक पहुँचते हैं तो हमें समयका कुछ पता लगता है, क्योंकि युधिष्ठिरके नामसे एक संवत् लोगोंमें प्रचलित है। इससे इतना पता हमको लगता है कि पाँच सहस्र वर्षके लगभग व्यतीत हुए कि कुरुक्षेत्रकी विशाल समरभूमिमें कौरवों और पाण्डवोंका घोर युद्ध हुआ। रामायणका काल महाभारतके कालसे पूर्वका है, क्योंकि रामायणमें महाभारतकी घटनाओं अथवा नामोंका कोई वर्णन नहीं पाया जाता। रामका काल कितना पहिले हुआ, यह कहना बड़ा कठिन है। रामका काल कदाचित् बहुत पहिलेका है, क्योंकि उस समयके समाजकी अवस्था महाभारतके समाजसे बहुत विभिन्न है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि रामायणके समयका समाज अत्युत्तम और पवित्र था। महाभारतके समयमें समाजका बहुत अधःपतन हो चुका था।

रामायण और महाभारतके समयकी तुलना

ऐसा प्रतीत होता है कि रामके समयमें आर्यजाति देशके भिन्न-भिन्न भागोंमें फैल रही थी और उसे पग-पगपर राक्षसोंसे युद्ध करना पड़ता था। रामायणका वृत्तान्त आरम्भ तथा अन्तमें राक्षसोंके साथ युद्धका वृत्तान्त है। महाभारतके कालमें इस देशके भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें बड़े-बड़े आर्य-राज्य स्थापित हो चुके थे और उनके अन्दर आभ्यन्तरिक युद्धका दोष वेगसे आरम्भ हो गया था। जहाँ रामायणमें केवल एक स्त्री कैकेयी पापकी कामना रखती हुई प्रतीत होती है और उसे छोड़कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोई ऐसा स्त्री-पुरुष दृष्टिगोचर नहीं होता जो उसका सहायक हो, जहाँ खास उसका पुत्र उसकी कामनापर धिक्कार देता है और जो राज्य वह उसके लिए प्राप्त करना चाहती थी उसपर लात मारता है, वहाँ महाभारतके समयमें दुर्योधन अपनी दुष्टतामें अकेला नहीं है। उसका पिता उसके साथ है। उसके भाई, सम्बन्धी, मित्र—दुःशासन, शकुनि, कर्ण आदि—हृदयमें वैसे ही द्वेषकी अग्निसे जलते हुए दिखाई देते हैं। रामायणमें कैकेयी समाजके श्वेत पटपर एक कलंकसी प्रतीत होती है। महाभारतमें समाज श्वेत तथा कृष्ण दो भागोंमें विभक्त प्रतीत होता है। रामायणमें लक्ष्मणसे उनकी माता कहती है कि तुम्हारे भाग्यसे राम वनको जा रहे हैं, क्योंकि तुम्हें उनकी सेवाका शुभ अवसर प्राप्त होगा। महाभारतमें भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा इत्यादि, जो सब प्रकारसे धर्मकी पवित्र मूर्तियाँ हैं, सब कुछ जानते हुए और मानते हुए भी, इस युद्धमें अन्यायके पक्षमें अपने प्राणोंका त्याग करते हैं।

रामका जीवन

विश्वामित्र ऋषि जंगलमें कुटिया बनाकर रहते थे। ऋषि लोग वनोंमें जाकर निवास करते थे। जंगलके रहनेवाले राक्षस उनका वहाँ बसना नहीं पसन्द करते थे। वे आकर उनके यज्ञमें विघ्न डालते थे। उनके हवनकुण्डोंमें अस्थियाँ डाल जाते थे। ऋषि राजा दशरथके पास यह कहनेके लिए आये कि आप अपना शूरवीर तथा योग्य पुत्र राक्षसोंसे युद्ध करनेके लिए भेजें। राम और लक्ष्मणने ऋषिके पास रहकर उनके आश्रमकी रक्षा की और उनसे शस्त्रोंकी क्रिया भी सीखी।

इतनेमें मिथिलापुरीमें जनककी पुत्री सीताका स्वयंवर हुआ। रामने स्वयंवरकी शर्तोंको पूर्ण करके सीताके साथ विवाह किया। दशरथ अयोध्या नगरीके राजा थे। सब अयोध्यावासियोंने कहा कि अब राम राज्य करनेके योग्य हैं, उन्हें युवराज बनाकर राज्यका काम उनको

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
अर्पण किया जाय। राजा प्रसन्नतापूर्वक तैयार हो गये। कैकेयीके चित्तमें यह कुबुद्धि उत्पन्न हुई कि रामके राजा हो जानेपर मेरी पदवी नीची हो जायेगी, इसलिए रामको वनवास दिलाकर अपने पुत्र भरतको राज्यका स्वामी बनाना चाहिये। राजा दशरथ अपनी पत्नीकी यह इच्छा जानकर बेसुध हो गये। पूछनेपर कैकेयीने रामको सब कारण बता दिया। वे राज-पाट त्यागकर वनको चल दिये। लक्ष्मण और सीता उनके साथ गये। रामने जंगलोंमें राक्षसोंसे युद्ध करके उनको पराजित किया। इस प्रकार रामने दक्षिणकी ओर जाते हुए सबसे बड़े राक्षस लंकाके राजा रावणसे युद्ध करके उसको भी पराजित किया और आर्यजातिकी पताका लंकामें फहरायी।

रामायण-कालकी सामाजिक अवस्था

रामायणके समयमें परिवारमें एक दूसरेके साथ पूर्ण स्नेह पाया जाता है। जैसा भ्रातृप्रेम लक्ष्मण और भरतने रामके लिए दर्शाया वैसा संसारमें अत्यल्प मिलता है। स्त्रीका धर्म और पति-प्रेम, जो सीताने रामके लिए दर्शाया, वह भारतकी देवियोंका सदासे आदर्श रहा है। रामका एकपत्नीव्रत प्रत्येक भारतवासीका आदर्श होना चाहिये। दशरथने जो स्नेह तथा त्याग रामके लिए किया उसका उदाहरण भी संसारमें कठिनतासे मिलता है। रामायणमें जो श्रवणकी कथा है उसमें पुत्रका अपने माता-पिताके लिए और माता-पिताका अपने पुत्रके लिए प्रेम विचित्र प्रकारका है। श्रवण अपने चक्षुहीन माता-पिताको बहँगीमें उठाये हुए यात्रा करता था। वह उनके लिए सरोवरसे जल लेने गया, दशरथने उसे मृग समझकर उसपर बाण चला दिया। राजा दशरथ यह दशा देखकर व्याकुल हो गये। जलका पात्र लेकर वह दोनों वृद्धोंके समीप गये। दशरथसे वृत्तान्त जानकर उन्होंने बिना जलपान किये पुत्रके वियोगमें प्राण त्याग दिये।

उस समय विवाहके लिए स्वयंवरकी प्रथा भी प्रचलित थी। कन्याको अपने लिए वर चुननेका पूर्ण अधिकार दिया जाता था। अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतिज्ञाका पालन करना प्राणोंसे अधिक प्रिय समझा जाता था—"रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्रान जाहु बरु बचनु न जाई।" अपने पिताकी आज्ञाका पालन इससे भी अधिक पवित्र धर्म समझा जाता था। भरत अपने ज्येष्ठ भ्राताका अधिकार भली भाँति समझते थे। वे प्रथम तो रामको लौटा लानेके लिए गये, जब राम न लौटे तो सिंहासनपर काष्ठकी पादुका रखकर उनके नामसे राज्यप्रबन्ध करने लगे।

लोगोंकी धार्मिक अवस्थाका अनुमान उन शपथोंसे लगाया जा सकता है जो भरतने कौशल्याके सम्मुख खायी थीं। भरतने यह शपथ खायी कि यदि रामको वनवास दिलानेमें मेरा हाथ हो तो मुझे वह पाप लगे जो उस राजाको लगता है जिसके राज्यमें व्यभिचारी हों, अथवा झूठ बोलनेवाले हों, अथवा जिसके राज्यमें सूर्यसे पीछे उठनेवाले पुरुष हों, इत्यादि। इस प्रकार जब भरत रामके पास गये तो रामने उनसे प्रश्न किये "क्या तुम्हारे राज्यमें नर-नारी सब सुखी हैं? कोई रोगी तो नहीं? वैश्य लोग कृषि तथा गोरक्षा करते हैं कि नहीं?" इत्यादि।

राजनीतिक अवस्था

रामायणके समयतक राज्य शक्तिसंचारकी कामनासे नहीं किया जाता था। राज्यका लोभ उस समय न था। राज्य करना केवल एक धर्म समझा जाता था। दशरथ राज्यका त्याग करनेपर उद्यत थे। राम राज्य छोड़नेपर बड़ा आनन्द प्रकट करते थे। भरतमें भी राज्यकी कोई कामना न थी।

राजमन्त्रियों और प्रजाको अधिकार था कि राजाके सम्मुख अपनी सम्मति प्रकट करे। राजाको उनकी सम्मतिपर चलना होता था। जब राम लंकाविजय करके सीताको लौटा लाये तो एक रातको वे लोगोंकी बातें सुननेके लिए निकले। उन्होंने एक धोबीको अपनी पत्नीसे क्रुद्ध होकर यह कहते हुए सुना कि "तुम हमारे घरसे बाहर निकल जाओ,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं राम नहीं हूँ जिन्होंने इतने दिनोंतक दूसरोंके पास रहनेपर भी सीताको वापिस ले लिया।" रामचन्द्रने इस बातको अपनेपर बड़ा भारी आक्षेप समझा और सीताको घरसे जंगलमें भेज दिया। इससे प्रकट होता है कि उस समय राजाओंके हृदयमें जनताकी सम्मतिका कितना आदर था।

इतिहासकी पहली बड़ी पुस्तक

महाभारत इतिहास, नीति और अनेक विद्याओंका भाण्डार है। अपने कालका यह एन्साइक्लोपीडिआ (विश्वकोष) है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस कालमें यह पुस्तक लिखी गयी उससे पहले ही समाज बड़ी उन्नति कर चुका था। देशके भिन्न भिन्न नगरों तथा बड़े-बड़े ग्रामोंमें बड़े और छोटे राज्य स्थापित हो चुके थे। इनमें कई स्थानोंपर बड़े-बड़े कुल राज्य कर चुके थे। हस्तिनापुरमें 'भरत'का कुल, जिसमें कालांतरमें कुरु और पाण्डु राजा हुए, बड़ा प्रसिद्ध था।

महाभारतमें इस कुलके राजाओंकी बड़ी लम्बी नामावली दी हुई है। उसमें जो राजा विख्यात हुए उनकी वीरताका वर्णन किया गया है। भरत, शान्तनु और दुष्यन्त आदि राजाओंका वृत्तान्त उसमें दिया हुआ है। उनके जीवनकी घटनाएँ तथा कथाएँ उसमें लिखी हैं, जिनमेंसे कई कथाएँ अत्युक्तिसे भरी हुई एवं असत्य भी प्रतीत होती हैं। वास्तविक बात तो यह है कि मूल महाभारत चौबीस सहस्र श्लोकोंमें लिखा गया था। तत्पश्चात् इसमें अन्य कई लेखकोंने जो चाहा सो भर दिया। ऐसे श्लोकोंका पुस्तकके विषयप्रकरणसे कोई सम्बन्ध नहीं है। वे पीछेसे प्रक्षिप्त किये गये हैं। इस मिलावट और अत्युक्तिके होते हुए भी, इसमें कोई सन्देह नहीं कि, इतिहास और नीतिकी यह अद्वितीय पुस्तक है।

महाभारतमें सामाजिक अवस्था

रामायणकी अपेक्षा महाभारतमें सामाजिक अवस्था बहुत निम्नावस्थाको प्राप्त हो चुकी थी। ब्राह्मण लोग यद्यपि अपनी निर्धनता तथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

त्यागके व्रतपर स्थिर थे, तथापि वे अधिक सांसारिक होते जाते थे। द्रोणाचार्य उस समयके आदर्श ब्राह्मण हैं। वे बड़े निर्धन थे। उनके अश्वत्थामा नामका एक ही पुत्र था। जब वह बालक था तो उसने एक बार अपने सहचरोंको दूध पीते देखा। उसको भी पीनेकी इच्छा हुई। पिताके पास कुछ न था कि वे उसे दूध पिला सकें। वह किसीसे माँगना भी न चाहता था। दूसरे बालकोंने आटा जलमें घोलकर अश्वत्थामाको पिला दिया। वह उसे दूध समझकर प्रसन्नतापूर्वक पीकर नाचने लगा। द्रोणाचार्यको अत्यन्त शोक हुआ और उन्होंने पंचालके राजा द्रुपदके पास जानेका निश्चय किया। राजा गुरुकुलमें उनका सहपाठी था। जब राजा मिला तो द्रोणने मित्र कहकर सम्बोधन किया। द्रुपदने कहा 'हे ब्राह्मण, तेरे जैसे निर्धन और राजामें भला क्या मित्रता हो सकती है? मुझे अपना मित्र मत कह।' द्रोणाचार्य शोकमें भरकर कौरवोंके यहाँ नौकर हो गये और राजकुमारोंको शस्त्रविद्या सिखाने लगे जिसमें वे द्रुपदसे अपने अपमानका बदला ले सकें।

आगे चलकर दुर्योधनकी करतूतोंको देखिये। वह सब कुछ अपने पिता तथा भाइयोंकी सम्मतिसे करता था। पाण्डवोंको विष देने या उन्हें जलाकर मरवा डालनेसे उसकी अथवा उसके पिताकी आत्माको कुछ भी दुःख नहीं पहुँचा। फिर युधिष्ठिरकी साधुशीलता तथा सरलतासे अनुचित लाभ उठाकर उसने कपटसे जुएके द्वारा पाण्डवोंका सब कुछ जीत लिया। इससे कौरवोंकी आत्माको कुछ भी पीड़ा नहीं पहुँची। सबसे बढ़कर बात तो यह है कि भीष्म आदि महापुरुष यह सब जानते हुए भी अधर्मके सहायक बने रहे, क्योंकि वे राजाका अन्न खाते थे। वस्तुतः उस समय समाजकी दशा अत्यन्त गिरी हुई थी।

राजनीतिक विचार

समाजके गिरनेका कारण उस कालकी नीति है। महाभारतकी नीति आधुनिक कालकी नीतिसे सर्वथा मिलती है। ऐसा भास होता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
है कि आधुनिक कालकी नीतिका आरम्भ महाभारतके कालसे हुआ है। महाभारतमें स्थल-स्थलपर शत्रुओंके साथ बर्ताव करने और उनसे मोक्ष प्राप्त करनेके नियम बताये हैं। उन्हीं नियमोंपर आजकल भी आचरण किया जाता है। उनका अभिप्राय यह है कि शत्रु शत्रु है; उसपर कभी विश्वास न करना चाहिये, उससे सदा बचते रहना चाहिये और सदा ऐसा अवसर देखते रहना चाहिये जब कि उसका सिर कुचला जा सके।

उस कालमें शत्रु कौन था? जिस मनुष्यके विरुद्ध अपने स्वार्थसे अथवा द्वेषसे शत्रुताकी अग्नि उत्पन्न हो गयी हो वही शत्रु समझा जाता था। उस समय एक प्रकारकी आत्मप्रशंसाकी कामना राजाओंके हृदयोंमें उत्पन्न हो गयी थी। सबसे बड़ा राजा वह समझा जाता था जो राजसूय यज्ञ करे और शेष राजा उसके यज्ञमें उपस्थित हों। यदि कोई राजा न आता तो वह यज्ञ पूर्ण न समझा जाता था। इसका अर्थ यह था कि वह अपने आपको बड़ा समझता था। यह एक प्रकारका सम्राह्वान था। प्रत्येक राजा बिना कारण एक दूसरेसे, अपने निकटस्थों तथा अपने भाइयोंसे इसलिए द्वेष करने लगा जिसमें उनका मान उससे न बढ़ जाय। यही द्वेषकी अग्नि थी जो दुर्योधनके हृदयमें धधक रही थी।

महाभारतकी नीतिके नियम

युधिष्ठिरने जब राज्य सँभाल लिया तो वे राजसूय यज्ञकी धुनमें लगे। एक दिन सभा लगी थी कि नारद ऋषि, जो सब विद्याओंमें निपुण थे, ऋषियोंको साथ लिये हुए आये। उन्होंने युधिष्ठिरको इस प्रकारका उपदेश किया—"आपका खजाना भरापूरा है या नहीं? आपका मन धर्ममें आनन्द लेता है या नहीं? आप अपने और शत्रुके बलका ध्यान रखते हैं या नहीं? आप कृषिकी वृद्धि, व्यापारकी वृद्धि, दुर्ग-निर्माण, पुल बनवाना, हाथियोंका पकड़ना, रत्नों और धातुओंकी खानोंसे कर लेना और निर्जन स्थानोंको बसाना—इन आठ कामोंमें उत्साह रखते हैं या नहीं? शत्रु, उदासीन तथा मित्रके साथ कैसा बर्ताव करना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चाहिये, यह जानते हैं या नहीं ? बड़ी नीतिवाले मन्त्रियों द्वारा अपने देशको सुरक्षित रखते हैं या नहीं ? सहस्रों मूर्खोंकी अपेक्षा एक पण्डित को ग्रहण करते हैं या नहीं ? कठोर दण्ड देकर प्रजाको भयभीत तो नहीं करते ? अपनी सेनाको नियमपूर्वक वेतन देते हैं या नहीं ? आपका सेनापति शूर, बुद्धिमान्, धैर्यवाला, पवित्र स्वभावका, कुलीन, अनुरागवाला और अपने कार्यमें चतुर है या नहीं ? आप भयभीत और शरणमें आये शत्रुके साथ पुत्रके समान बर्ताव करते हैं या नहीं ? आपका व्यय आपकी आयसे अधिक तो नहीं है ? आपके देशमें सरोवर तो अनेक हैं ? कृषिकार्य केवल वर्षाके आश्रित तो नहीं है ? आपका वेद, धन, शास्त्र तथा स्त्री सब सुफल हैं या नहीं ?" इत्यादि। ये समस्त नियम एक बड़े विस्तीर्ण समाजकी अवस्थामें पाये जाते हैं। महाभारतके कालकी सामाजिक तथा राजनीतिक अवस्था आनेमें बहुत समय लगा होगा।

युद्ध और विवाह

क्षत्रियोंकी युद्धप्रणालीमें द्वन्द्वयुद्ध बहुत हुआ करता था। सेनाके युद्धमें अकेले योद्धा क्षेत्रमें निकलकर युद्धका निर्णय कर लेते थे। जब कभी एक दूसरेके मध्यमें बड़ाईका प्रश्न होता था तो उसका निर्णय द्वन्द्वयुद्धसे हो जाता था। जरासन्ध कृष्णका बड़ा भयानक शत्रु था। उसने कई राजाओंको पकड़कर बन्दीगृहमें भेजा था। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञकी सफलताके लिए जरासन्धको जीतना आवश्यक था। कृष्ण, अर्जुन तथा भीम वहाँ चले गये और भीमने अकेले जरासन्धके साथ युद्ध कर उसका वध कर डाला। जब राजसूय यज्ञमें पूजाका समय आया तो भीष्मने भरी सभामें सबसे पहला पद कृष्णको देनेका विचार किया। शिशुपाल इसके विरुद्ध बोला। इस शास्त्रार्थका दृश्य महाभारतमें अत्यन्त मनोरंजक है। जब कोई और उपाय दृष्टिगोचर न हुआ तो कृष्णने शिशुपालसे द्वन्द्वयुद्ध करके सुदर्शन चक्रसे उसका गला काट डाला। विवाहकी उत्तम रीति तो स्वयंवरकी थी, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि गान्धर्व विवाहकी रीति भी बहुत प्रचलित थी। इस प्रकारके कितने ही विवाहों-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
का वर्णन महाभारतमें आता है। दुष्यन्त आखेट करता हुआ बहुत दूर वनमें एक ऋषिकी कुटियामें जा पहुँचता है। शकुन्तला नामकी अत्यन्त सुन्दर कन्या वहाँ खड़ी है। दोनों एक दूसरेको देखकर मोहित हो जाते हैं और विवाह कर लेते हैं। राजा चला आता है। पीछे भरत उत्पन्न होता है। वह युवावस्थाको प्राप्त होता है। शकुन्तला उसे लेकर दुष्यन्तकी सभामें उपस्थित होती है और दुष्यन्त कहता है—"मैं तुमको नहीं जानता।" शकुन्तलाके क्रोधका पारा चढ़ जाता है और वह एक प्रभावशाली वक्तृता देती है, जिसपर आकाशवाणी होती है कि शकुन्तला सच्ची है और भरत दुष्यन्तका पुत्र है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्यारहवाँ प्रकरण

महाजनपदोंका काल तथा मगध-राज्यका प्रारम्भ

वैदिक कालके कवियोंने भी सार्वभौम राज्यकी कल्पना की है और ऐसे राज्योंका वर्णन आता है जिन्होंने अनेक अन्य राज्योंको जीतकर अपने अधीन किया। पर इन राज्योंको वे अपने राज्यमें सम्मिलित नहीं करते थे, किन्तु अपना शासन स्वयं करनेके लिए उन्हें छोड़ देते थे। पर छठी शताब्दी (ई० पू०) से भारतवर्षके पूर्वी भागमें बड़े राज्योंका उदय प्रारम्भ होता है और उनमेंसे एकने धीरे-धीरे सब राज्योंको जीतकर एक बड़ा साम्राज्य स्थापित किया जो हिन्दूकुशसे मैसूरतक फैला हुआ था। यह मगध साम्राज्य था।

सोलह महाजनपद

परन्तु इसके पूर्व भारतवर्ष अनेक जनपदों तथा महाजनपदोंमें बँटा हुआ था। बौद्ध धर्मग्रन्थोंमें १६ महाजनपदोंका वर्णन आता है। प्रायः इनका वर्णन आठ जोड़ियोंके रूपमें किया जाता है (१) अंग-मगध, (२) काशी-कोशल, (३) वृज्जि-मल्ल, (४) चेदि-वत्स (५) कुरु-पंचाल, (६) मत्स्य-शूरसेन, (७) अश्मक-अवन्ति, (८) गान्धार-कम्बोज।

इन महाजनपदोंमें अंग सबसे पूर्वमें था। महाभारतमें भी अंग देशका उल्लेख आता है। कर्ण इस देशका राजा था। अंगकी राजधानी चम्पा नगरी थी जो आजकलका भागलपुर है। आजकलका दक्षिणी बिहार प्रान्त पटनासे गयातक मगध कहलाता था। इसकी राजधानी राजगृह थी। उस समय शिशुनाग-वंश इस देशके ऊपर राज्य करता था। काशी राज्यकी राजधानी वाराणसी (बनारस) थी जो उस समय भी शिल्प-व्यापार आदिके लिए प्रसिद्ध थी। कोशलकी राजधानी सयूंके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तटपर साकेत नगरीमें, जहाँपर आजकल अयोध्या स्थित है, थी। पर इस वंशकी एक शाखाकी राजधानी श्रावस्तीमें थी जो राप्ती नदीके तटपर स्थित थी जिसका भग्नावशेष सहेतमहेत गाँवमें अब भी पाया जाता है। कोशलमें इक्ष्वाकुवंशके राजा राज्य करते थे। महाकोशल तथा उनके पुत्र प्रसेनजित इस वंशके प्रसिद्ध राजा थे जिनमें प्रसेनजित बुद्धके समकालीन थे।

मल्ल तथा वृत्ति-राज्य

कोशलके पूरबमें मल्ल और वृत्ति-राज्य, ये दो गण-राज्य थे जहाँ पंचायती राज्य था। मल्लोंका मुख्य नगर कुशीनगर था जिसका अवशेष इस समय कसया है। प्राचीन समयके लिच्छवि तथा जातृक राज्य मिलकर वृत्ति-राज बना था। इसकी राजधानी वैसाली थी जिसका अवशेष मुजफ्फरपुर जिलेमें बसाढ़ ग्राममें है। वृत्तियोंमें कोई राजा नहीं होता था, पर वहाँ परिषद्‌के द्वारा राज्य होता था। ऐसी कथा है कि वृत्तियोंमें ७७०७ राजा होते थे जो एक परिषद्‌में बैठकर शासन-सम्बन्धी प्रश्नोंपर विचार करते थे। बुद्ध भगवान्‌ने वृत्तियोंकी शासन-व्यवस्थाकी बड़ी प्रशंसा की है। पर ये गणराज्य पड़ोसी बड़े राज्योंमें सम्मिलित कर लिये गये।

वत्स, चेदि, कुरु, पंचाल, गान्धार

वत्स देशमें काशीके पश्चिम इलाहाबादके समीपके प्रदेश सम्मिलित थे। इसकी राजधानी कोशाम्बी थी तथा चेदि-राज्य आजकलका बुन्देलखण्ड है। कुरु और पंचालके दो महाजनपद पश्चिम और उत्तर-में थे, किन्तु इनका विशेष महत्त्व नहीं था। गान्धारकी राजधानी तक्षशिलामें थी जो विद्याका एक प्रसिद्ध केन्द्र था और सारे भारतवर्षसे शिक्षा प्राप्त करनेके लिए विद्यार्थी वहाँ जाते थे। यह स्थान इस समय पाकिस्तानके रावलपिण्डी जिलेमें है। कश्मीर भी गान्धारमें शामिल था। इस समयका पामीर तथा बदख्शा कम्बोज कहलाता था। ये सब प्रदेश भारतवर्षमें सम्मिलित थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मत्स्य और शूरसेनका भी विशेष महत्त्व नहीं रह गया था। इन दोनों जनपदोंमें मथुरा, भरतपुर आदि सम्मिलित थे।

अवन्ति-राज्य

१६ महाजनपदोंमें चार अधिक शक्तिशाली हुए। अवन्ति, वत्स, कोशल और मगध। अवन्तिकी राजधानी उज्जैन थी जो व्यापारका एक बड़ा केन्द्र था। माहिष्मती नगर भी अवन्ति-राज्यका एक मुख्य नगर था। भरुकच्छ (भड़ोच) आदि पश्चिमके बन्दरगाहों तथा दक्षिण भारतका व्यापार-मार्ग उज्जयिनीमें मिलता था। यहाँसे एक रास्ता विदिशा (भेलसा) और कोशाम्बी होता काशी और श्रावस्तीको जाता था तथा दूसरा मथुरा आदि होता हुआ कुरु और गान्धारकी ओर जाता था।

चण्ड प्रद्योत महासेन अवन्तिके एक प्रसिद्ध राजा थे जिन्होंने आस-पासके राज्योंको जीतकर अपने राज्यका विस्तार किया। वत्सदेशके राजा उदयन भी बहुत प्रसिद्ध हुए जिन्होंने प्रद्योतकी लड़की वासवदत्ताको ले जाकर अपना विवाह किया। संस्कृतके प्रसिद्ध कवि भासका नाटक स्वप्नवासवदत्ता इसी घटनासे सम्बन्ध रखता है।

मगध-राज्य

मगधका राज्य प्राचीन वैदिक कालमें भी एक प्रसिद्ध राज्य था। छठी और पाँचवीं शताब्दी (ई० पू०)में इस देशमें शिशुनाग-वंशका राज्य था। पुराणोंके अनुसार शिशुनाग इस वंशके प्रथम संस्थापक थे। बिम्बिसार इस वंशके एक प्रसिद्ध राजा हुए जो भगवान् बुद्धके समकालीन थे। इनके पिताने १५ वर्षकी अवस्थामें इनका राज्याभिषेक कर दिया था। प्रारम्भसे ही ये बड़े शूर और पराक्रमी थे और इन्होंने अपने राज्यका बड़ा विस्तार किया। पहिले इनकी राजधानी गिरिव्रजमें थी जो चारों ओरसे पहाड़ियोंसे घिरा हुआ था। इनका राज्य पहाड़ियों और नदियोंसे घिरा होनेके कारण सुरक्षित था। जमीन अत्यन्त उपजाऊ थी। हिरण्यवाही (सोना ले जानेवाली) अथवा सोन नदी इस राज्यके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तर्गत बहती थी। सोन और गंगाके द्वारा व्यापार भी अधिक होता था। देश धन-धान्य-सम्पन्न था। बिम्बिसारने सबसे पहले अंग देशको जिसकी राजधानी भागलपुरके समीप चम्पा थी, जीतकर अपने राज्यमें मिलाया। कोशल और वैशालीके राजवंशोंके साथ विवाह-सम्बन्ध स्थापित करके काशी प्राप्त किया तथा बादमें वैशाली मगध-राज्यमें मिलाकर इसकी सीमा नैपालकी सीमासे मिला दी। बिम्बिसार एक कुशल शासक थे और उनके शासनकी बड़ी ख्याति थी। जैन धर्मके संस्थापक वर्द्धमान महावीर तथा बौद्ध धर्मके संस्थापक भगवान् बुद्ध इनके समकालीन थे और दोनोंने ही इनके राज्यमें अपने धर्मका प्रचार किया। ऐसी कथा है कि वृद्धावस्थामें इनके पुत्र अजातशत्रुने इनकी हत्या कर डाली। इनके ही समयमें राजगृहका नया नगर बसाकर राजधानी बनाया गया।

अजातशत्रु

बिम्बिसारकी मृत्युके पश्चात् अजातशत्रु जिनका नाम कुणिक भी था, मगधके राजा हुए; पर इन्हें अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। इनके मामा कोशलके राजा प्रसेनजित अपने बहनोई बिम्बिसार-की मृत्यु तथा उनके शोकमें अपनी बहिनकी मृत्युसे बड़े दुःखी हुए। उन्होंने पितृघातक अजातशत्रुके ऊपर आक्रमण किया। वैशालीके वृज्जि तथा कुशीनगरके मल्ल गणराज्योंने भी आक्रमणमें कोशलके राजाका साथ दिया। इसी समयमें वृज्जियोंके आक्रमण रोकनेके लिए सोन और गंगाके संगमपर पाटलिग्रामकी स्थापना हुई जो बादमें पाटलिपुत्र नामका बड़ा नगर बना। अपने पराक्रम तथा मन्त्रियोंके कौशलसे अजातशत्रुने अपने सब शत्रुओंको पराजित किया। वैशालीका राज्य मगध-राज्यमें सम्मिलित कर लिया गया। प्रसेनजितको भी हारकर वापस होना पड़ा। अजातशत्रु जैन और बौद्ध दोनों धर्मोंके समर्थक थे और भगवान् महावीर तथा भगवान् बुद्ध दोनोंकी मृत्यु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इनके शासनकालके प्रारम्भमें हुई। इन्हींके समयमें राजगृहमें बौद्ध धर्मकी एक परिषद् हुई।

पुराणोंके अनुसार अजातशत्रुके उत्तराधिकारी दर्शक और उदयी थे। दर्शकका उल्लेख भासके नाटक स्वप्नवासवदत्तामें भी आता है। उदयीके समयमें पाटलिपुत्रकी स्थापना हुई। उदयीके बाद मगध-राजाओंका निश्चित पता नहीं चलता। पुराणोंके अनुसार उसके उत्तराधिकारी नन्दिवर्धन और महानन्दी थे। महानन्दीने एक शूद्र स्त्रीसे विवाह किया जिससे महापद्मनन्द उत्पन्न हुए जो नन्दवंशके संस्थापक थे।

नन्दवंश

महापद्मनन्द और उनके नौ पुत्रोंने मगधमें पुराणोंके अनुसार १०० वर्षतक राज्य किया, पर बौद्ध ग्रन्थोंके अनुसार इनका राज्य २२ वर्ष था। नन्द राजाओंके पास बड़ी विशाल सेना थी जिसमें २ लाख पैदल, २० हजार घुड़सवार, दो हजार रथ तथा तीन हजार हाथी थे। इस वंशके प्रति असन्तोष बढ़ने लगा और तक्षशिलाके एक ब्राह्मण कौटिल्य अथवा चाणक्यकी सहायतासे चन्द्रगुप्त मौर्यने नन्दवंशका नाश किया और मगधमें मौर्य-साम्राज्यकी स्थापना की। इसी समयमें भारतकी पश्चिमी सीमापर यवनों(यूनानियों)का आक्रमण प्रारम्भ हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारहवाँ प्रकरण

मौर्य साम्राज्य तथा सिकन्दरका आक्रमण

यूनानियोंका भारतवर्षमें आगमन

विदेशी जातिके जो लोग सबसे पहले आर्यावर्तमें आये वे यूनानी लोग थे। यद्यपि उस समय यहाँ बौद्ध धर्म प्रचलित हो चुका था तो भी उसका अभी अधिक प्रसार नहीं हुआ था। प्राचीन सभ्यता अभी-तक विद्यमान थी, इसलिए उन लोगोंके अनुभव अधिकतर भारतवर्षके वैदिक-कालके अन्तिम भागके द्योतक हैं।

सिकन्दर

यद्यपि यूनानियोंको आर्यावर्तका नाम पहिलेसे ज्ञात था तथापि आर्यावर्तकी अवस्था उन लोगोंके लेखोंसे प्रकट हुई जो सिकन्दरके साथ आर्यावर्तमें आये थे। सिकन्दर विजय प्राप्त करता हुआ वि० पू० २७० (ई० पू० ३२७) में आर्यावर्तमें प्रविष्ट हुआ। अटकके समीप उसने सिन्धु नदीको पार किया और सबसे पहिले तक्षशिलाकी रियासतमें पहुँचा। तक्षशिला (रावलपिण्डीके समीप) बड़ा भारी धनाढ्य नगर था। यहाँपर एक विश्वविद्यालय भी था, जहाँ बीस सहस्रके लगभग विद्यार्थी भिन्न भिन्न विद्याएँ प्राप्त करते थे।

उस समय पंजाब कई छोटी छोटी रियासतोंमें विभक्त था जो एक दूसरेसे द्वेष करती थीं, और विदेशिय आक्रामकोंके साथ, बजाय इसके कि एकचित्त होकर उनसे युद्ध करें, मिलनेके लिए प्रत्येक समय तत्पर रहती थीं।

पोरससे युद्ध

पोरस नामक एक राजाने झेलम नदीपर बड़ी वीरतासे सिकन्दरके साथ युद्ध किया। रणक्षेत्रमें पोरसके हाथी पीछेकी ओर मुड़ पड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्होंने अपनी ही सेनाको कुचल डाला। पोरसका पुत्र युद्धमें मारा गया। पोरस स्वयं जख्मी होकर पकड़ा गया। सिकन्दरने पोरससे पूछा, "बताओ, अब तुम्हारे साथ क्या व्यवहार किया जाय ?" उत्तर मिला, "जो राजाओंके उपयुक्त हो।" अन्तको दोनोंमें मित्रता हो गयी। फिर संघालाके दो कुलोंने रावी नदीपर सिकन्दरके साथ युद्ध करनेका निश्चय किया। अपनी मित्रताको दृढ़ करनेके लिए उन्होंने परस्पर अपने पुत्र तथा पुत्रीका विवाह कर दिया। परन्तु वाहरे भारतवर्ष तेरा भाग्य ! ठीक युद्धके समय इस प्रश्नपर झगड़ा हो गया कि सेनापति किस कुलका हो। इससे सिकन्दरको आगे बढ़नेमें कोई कष्ट न हुआ।

व्यास नदीपर पहुँचकर सिकन्दरकी सेनाने आगे बढ़नेसे इनकार कर दिया। सिकन्दरको विवश होकर लौटना पड़ा। मुलतानमें घोर संग्राम हुआ जिसमें सिकन्दरको बहुत आघात लगे। वहाँसे सिन्धु नदीके द्वारा वह समुद्र तक पहुँचा और सेनाका एक भाग जहाजों द्वारा फ़ारसकी खाड़ीकी ओर चला गया। शेष सेना स्वयं साथ लेकर वह दक्षिण बलोचिस्तान होता हुआ फ़ारस पहुँचा। यद्यपि वह पंजाबका कोई भाग जीत न सका तो भी कई स्थानोंपर वह कुछ सेना पीछे छोड़ गया। दो वर्ष पश्चात् विक्रम पूर्व २६६ (ई० पू० ३२३) में उसका देहान्त हो गया।

चन्द्रगुप्त

इस कालमें भारतवर्षमें एक बड़ा साम्राज्य चन्द्रगुप्तके अधीन स्थापित हो गया। चन्द्रगुप्तका वंश मौर्यवंश कहलाता है। कुछ लेखकोंका मत है कि चन्द्रगुप्तकी माता अथवा मातामहीका नाम मूरा था जो शूद्र थी और नन्द राजाकी स्त्री थी। इसलिये इस वंशका नाम मौर्य वंश पड़ा। पर बौद्ध ग्रन्थोंके आधारपर दूसरे लेखकोंका मत है कि हिमालयके समीप पिप्पलीवनके गणतंत्रमें सूर्यवंशीय क्षत्रिय जो मोरिय कहलाते थे राज्य करते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य सम्भवतः इसी वंशके थे और मोरियका शुद्ध संस्कृत रूप मौर्य था। अतः ये मौर्य कहलाये। चन्द्रगुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिले सिकन्दरसे आकर इसलिए मिला जिसमें उसकी सेनाकी सहायतासे वह एक राज्यका स्वामी बन जावे। इस उपायमें वह सफल न हुआ। सिकन्दरसे चन्द्रगुप्तकी कुछ खरीखरी बातें हुईं और सिकन्दरने उसे मार डालनेकी आज्ञा दी। अतः वहाँसे उसे भागना पड़ा। फिर चन्द्रगुप्तने तक्षशिलाके एक ब्राह्मण विष्णु गुप्तकी, जिसे कौटिल्य अथवा चाणक्य भी कहते हैं, सहायतासे मगध देशकी राजधानी पाटलिपुत्र पहुँचकर नन्दवंशका नाश किया और मगधमें अपना राज्य स्थापित किया।

सिकन्दर तक्षशिलामें कुछ सेना और एक हाकिम छोड़ गया। उसके जानेपर भारतीयोंने यूनानी हाकिम और सेनाको मार डाला। जब सेल्यूकसने बख्तरिया (बैक्ट्रिया) में अपना अधिकार जमा लिया तो उसने पंजाबकी ओर मुख किया, किन्तु उधर उसे अब छोटे-छोटे राजाओंके बजाय चन्द्रगुप्तसे युद्ध करना पड़ा। उसने चन्द्रगुप्तसे हार खाकर उसके साथ मित्रता कर ली और उसके साथ अपनी कन्याका विवाह कर दिया। उसने पाँच सौ हाथी लेकर पंजाब, काबुल, हिरात, कन्धार तथा बलूचिस्तान उसके हाथ सौंप दिये। चन्द्रगुप्तके समयमें मौर्य साम्राज्यका विस्तार पश्चिममें मालवा तथा सौराष्ट्र और काबुल कन्धार तथा हिराततक था। दक्षिणमें वह मैसूरकी सरहद तक फैला था।

चन्द्रगुप्तके सम्बन्धमें जैनग्रन्थोंमें कथा है कि उसने जैनधर्म स्वीकार कर लिया था और अपने अन्तिम समयमें राज्य छोड़कर मैसूरमें श्रवण बेलगोलामें जाकर रहने लगा था। पर यूनानी प्रमाणोंके अनुसार वह बराबर यज्ञयागमें भाग लेता था और जानवरोंके शिकारमें उसकी बड़ी रुचि थी।

सेल्यूकसने अपना एक दूत मेगस्थनीज चन्द्रगुप्तके दरबारमें भेजा जो ई० पू० ३०६ से २९८ तक वहाँ रहा। उसने आर्यावर्त्तके उस समयके समाजका चित्र इस प्रकार खींचा है:—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेगास्थनीजका भारत-वर्णन

समाज अब चारके स्थानमें निम्नलिखित सात श्रेणियोंमें विभक्त हो चुका था—तत्ववित्, क्षत्रिय, राजाओंके सचिव, कृषक, ग्वाले, व्यवसायी और जासूस। ब्राह्मण लोग तत्ववेत्ता होते थे (उनके जीवनके भिन्न भिन्न भाग वर्णन किये गये हैं)। ब्राह्मणोंके साथ साथ श्रमण भी थे जो कदाचित् वानप्रस्थ और वनोंमें रहनेवाले ब्रह्मचारी रहे होंगे। जासूस लोग प्रायः बौद्ध धर्मके प्रचलित होनेपर लोगोंके आचारोंको देखनेवाले थे। उन्हींकी नकल ईसाई धर्मके 'बिशप' हैं। मेगास्थनीजने आर्यावर्तमें नमककी खानों, नदियोंके प्रवाहोंके परिवर्तनों तथा देशकी विशालता आदिका भी वृत्तान्त लिखा है। इसके अनन्तर भारतवर्षके लोगोंकी प्रशंसा करता हुआ मेगास्थनीज़ लिखता है कि आर्यावर्तमें दासत्वका नाममात्र भी नहीं, स्त्रियाँ अतिशय विशुद्धशीला हैं; मनुष्य बड़े शूर-वीर हैं; वीरतामें वे सब एशियायी जातियोंसे बढ़कर हैं; लोग अपने द्वारोंपर ताला कभी नहीं लगाते; कभी कोई आर्य झूठ बोलता हुआ नहीं सुना गया; वे गम्भीर, परिश्रमी, जमींदार और अच्छे व्यवसायी हैं; वे कभी राजसभाओंमें नहीं जाते और शान्तिसे अपने पूज्योंकी आज्ञाओंका पालन करते हैं।

राजा और उसकी शासनप्रणाली ठीक वैसी ही थी जैसी कि मनु महाराजने लिखी है। सचिवों और क्षत्रियोंकी दशा भी उसी प्रकारकी पायी जाती थी। समस्त देश ११८ राज्योंमें विभक्त था। उस समय उनमेंसे कईमें प्रजातंत्र शासन स्थापित था। चन्द्रगुप्त सबका अधिराज समझा जाता था। उसने ग्रामोंकी अवस्था भली भाँति वर्णन की है। प्रत्येक स्थानमें कृषक युद्धसेवासे अलग रखे जाते थे। खेती बहुत कुछ वर्षापर निर्भर थी। ब्राह्मण वर्षाके सम्बन्धमें भविष्यद्वाणी किया करते थे। मेगास्थनीज़ने आर्यावर्तके रंगों, वस्त्रों, वनस्पतियों तथा शाक आदिकी उत्पत्तिका भी वर्णन किया है।

यहाँ यह कह देना अनुपयुक्त न होगा कि यूनानी लोग गन्ने और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुईका पौधा देखकर बहुत विस्मित हुए थे। मेगास्थनीज़ने लिखा है कि एक ऐसा पौधा था जिसके रससे मधु उत्पन्न होता था और दूसरेके फलसे वस्त्र। बारहवीं शताब्दी पर्यन्त यूरोपवालोंको शक्करका ज्ञान न था। बारहवीं शताब्दीमें आर्यावर्तसे वहाँ शक्करका जाना आरम्भ हुआ। सोलहवीं शताब्दी पर्यन्त केवल औषधियोंमें इसका प्रयोग वहाँ होता रहा। जब पुर्तगालवालोंने भारतवर्षमें आना आरम्भ किया तो वे गन्नेका पौधा वेस्ट इंडीज़में ले गये और शक्करकी उत्पत्ति दूसरे देशोंमें होने लगी। गत सौ वर्षके अन्दर कलोंकी उन्नतिके कारण इतनी शक्कर उत्पन्न होने लगी कि भारतवर्ष वही शक्कर दूसरे देशोंसे भी मँगाने लगा था। अभी कुछ ही वर्ष पहले तक ठीक यही दशा रुईके वस्त्रोंकी भी थी।

एक घटना

सिकन्दर यहाँके ब्राह्मणोंकी योग्यतासे बड़ा प्रभावित हुआ। उसने अत्यन्त यत्न करनेके पश्चात् कालानूस नामक ब्राह्मणको अपने साथ चलनेके लिए राज़ी किया। उस ब्राह्मणके साथी उसे अन्ततक रोकते रहे। फारस पहुँचनेपर वह ज्वरग्रस्त हो गया। उसने निश्चय किया कि मैं अपने शरीरको अग्निको अर्पणकर प्राण त्याग दूँगा। सिकन्दरने यह बात सुनकर उसे बहुत समझाया कि ऐसा न करो। ब्राह्मणने उत्तर दिया कि मैं वृद्धावस्थाको पहुँच चुका हूँ, परन्तु अबतक कभी रोगग्रस्त नहीं हुआ। अब यह ज्वर प्रकट करता है कि मेरा शरीर आत्माके रहने योग्य नहीं रहा। उसने आग्रह किया कि मुझे ब्राह्मणकी सच्ची मृत्यु मरने दिया जाय। सिकन्दरने उसे असंख्य रत्न देकर बड़ी सजधजसे वहाँ तक पहुँचाया जहा उसकी चिता तैयार थी। वह ब्राह्मण गलेमें फूलोंके हार पहने वेदमंत्र गाता और रत्नोंको इधर उधर फेंकता हुआ चितापर चढ़ गया और शान्तिपूर्वक अग्निज्वालामें मिल गया। इस घटनासे प्रकट होता है कि उस समय भी मृत शरीरको जलानेकी रीति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राचीन आर्यपुरुषोंमें पायी जाती थी और अन्य आर्यजातिकी शाखाओंमें वैसी ही प्रचलित थी जैसी कि भारतके आर्योंके अन्दर।

चन्द्रगुप्त मौर्यकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार उसका उत्तराधिकारी हुआ जिसने २४ वर्षतक शासन किया। उसके समयमें भी मौर्य-साम्राज्यके विस्तारमें कोई कमी नहीं हुई। तक्षशिलामें एक विद्रोह हुआ जिसको उसने शान्त किया। उसका साम्राज्य उत्तर भारतके अतिरिक्त दक्षिणमें मैसूरके चीतलद्रुग जिलेतक फैला हुआ था। कलिंग देश (उड़ीसा) उस समय एक स्वतंत्र राज्य था। उसने यूनानी राजा अन्तिपाकसके साथ जो सेलेक्यूसका पुत्र था अच्छा सम्बन्ध रखा और उसके साथ बराबर पत्र-व्यवहार होता था।

उनके कई पुत्र और पुत्रियाँ थीं जिनमें अशोक तक्षशिला और उज्जैनका राज्यपाल रह चुका था। उनके बीमार होनेपर अशोक तुरन्त उज्जैनसे पाटलिपुत्र पहुँचे ओर अपने बड़े भाईको मारकर राज्याधिकार अपने हाथमें ले लिया। एक कथा यह भी है कि अशोकने अपने सौ भाइयोंको मरवा डाला। पर उसके एक शिलालेखसे पता चलता है कि वह अपने भाइयोंके स्त्री बच्चोंकी रक्षा करता था, इससे अपने भाइयोंको मार डालनेकी कथा असत्य मालूम होती है।

बिन्दुसारकी मृत्युके चार वर्ष बाद अशोकका राज्याभिषेक हुआ। इससे प्रतीत होता है कि राजगद्दीके सम्बन्धमें कुछ झगड़ा था। अशोकने (२७२-२३२ ई० पू०) ४० वर्ष राज्य किया और लगभग २७२ (ई० पू०) में उसकी मृत्यु हुई। शिलालेखोंमें अशोकका नाम देवानाम पिय पियदसी आता है जिसका अर्थ है देवोंके प्रिय और प्रियदर्शी।

अशोकके राज्यकालके प्रारम्भिक वर्षोंके सम्बन्धमें अधिक जानकारी नहीं है। तक्षशिलामें अशोकके समयमें भी एक बार फिर विद्रोह हुआ और उसे उसने शान्त किया। अपने शासन-कालके आठवें वर्षमें उसने कलिंग राज्यपर आक्रमण किया और उसे जीतकर, अपने राज्यमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिला लिया। अब मौर्य साम्राज्यमें दक्षिणके तामिल प्रदेशको छोड़कर, जिसमें पाण्ड्य, चोल, सत्यपुत्र और केरलपुत्र राज्य थे, सारा भारतवर्ष और अफगानिस्तान सम्मिलित था। कश्मीर और नेपालकी घाटियाँ तथा उत्तरी और पूर्वी बंगालतक मौर्य-साम्राज्य फैला हुआ था।

कलिंग युद्धके नरसंहारका अशोकके हृदयपर बड़ा प्रभाव पड़ा और उसे बड़ा दुःख और पश्चात्ताप हुआ। उसी समयसे वह युद्धसे विरत होकर धर्मके कार्यमें लग गया। अब धर्मकी विजयने देशकी विजयका स्थान लिया। अशोक पहिले देवताओं और ब्राह्मणोंका बड़ा भक्त था और शिवका उपासक था। पर कलिंग युद्धके पश्चात् वह बौद्धधर्मका उपासक हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तेरहवाँ प्रकरण

बौद्ध धर्मका प्रभाव

बौद्ध धर्मकी उत्पत्ति

आर्यावर्तमें सिकन्दरके आनेके दो शताब्दी पूर्व बौद्ध धर्मका प्रादुर्भाव हो चुका था, परन्तु इसका प्रचार बादको हुआ। उस समयसे लेकर मुसलमानोंके भारतवर्षमें आने तक समस्त देशका इतिहास प्रधानतया बौद्ध धर्मका इतिहास है। पहिले कुछ शताब्दियों तक इसकी उन्नति होती रही, फिर अवनति होने लगी। ब्राह्मणोंके साथ बौद्ध धर्म वालोंका बराबर संग्राम होता रहा। ये सहस्रवर्ष भारतवर्षके इतिहासमें बौद्ध धर्मके साथ समन्वित हैं।

सफलताके कारण

हम पहले लिख आये हैं कि बौद्ध धर्मसे पूर्व आर्यावर्तमें दर्शनके भिन्न-भिन्न मतोंका बहुत प्रचार था। प्रत्येक मत के आचार्य स्थान-स्थानपर अपने शिष्यों को साथ लिए हुए घूमते थे और अपने-अपने विचारोंका प्रचार करते थे। शाक्य मुनि गौतमने भी इसी विधिके अनुसार अपने सिद्धान्तोंका प्रचार आरम्भ किया। उन्होंने राजपुत्र होकर भी राज्य-त्याग कर धर्मका अन्वेषण किया। इसलिए उनके कुलके समस्त मनुष्य एकदम उनके सिद्धान्तोंकी ओर झुक पड़े। उस समय ब्राह्मणोंने शेष जनतापर इतना प्रभाव डाल रखा था कि उनके विरुद्ध एक सुदृढ़ विरोध उत्पन्न हो गया था। उस समय ऐसे लोगोंकी एक विशेष संख्या हो गयी थी जो किसी विशेष वर्णसे सम्बन्ध न रखते थे। ये लोग ब्राह्मणोंके अनुचित दबावसे स्वतन्त्र होना चाहते थे। ब्राह्मण लोग विद्याओंका अध्ययन त्यागकर अधिकतर यज्ञ आदि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रीतियोंपर जोर देते थे और उनके द्वारा ही लोगोंको मोक्षका मार्ग बतलाते थे। बुद्धने मनुष्य-समानतापर जोर दिया और प्रत्येक मनुष्यके कर्मोंको अच्छा बनाना ही धर्मका आदर्श बतलाया। इन कारणोंसे बुद्धको अपने सिद्धान्तोंके प्रचारमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई। महाराज अशोकने बौद्ध धर्मको अंगीकार किया। राजधर्म हो जाने पर इसकी विशेष उन्नति हुई। अब यह भारतवर्षसे बाहर अन्य देशोंमें भी फैलने लगा। इस प्रकार संसारमें एक नये धर्मकी नींव डाली गयी।

वैदिक कालमें धर्मका लक्ष्य केवल मनुष्यको जीवन व्यतीत करनेका सच्चा मार्ग बताना और आत्मिक उन्नतिके साधन सिखाना था। अब यद्यपि बौद्ध धर्मके प्रचारक केवल प्रेम और युक्तिसे अपने मतका प्रचार करते थे, तथापि धर्ममें इन दो नयी बातोंको बढ़ाकर एक नये धर्मकी नींव पड़नेसे मनुष्य-जातिके लिए एक अत्यन्त विचित्र परिणाम उत्पन्न हुआ।

ईसाई और इस्लामधर्मकी उत्पत्ति

बौद्ध धर्मके पश्चात् ईसाई धर्म उत्पन्न हुआ, जिसने अपनी प्रचार-प्रणालीमें प्रेमके साथ तलवार और दूसरे कई अनुचित साधन भी धारण कर लिये। मुसलमानोंने तो इसको शिखरतक पहुँचा दिया। इन सब बातोंका अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि इन दोनों धर्मोंका इतिहास, जो वस्तुतः आधुनिक यूरोपीय जातियोंका इतिहास है, अत्यन्त भयावने रूपमें दिखलाई पड़ता है। किसी विशेष व्यक्तिके नामपर, चाहे उसका पद कितना ही ऊँचा क्यों न हो, अनुयायी बनानेके लिए चल पड़ना हठकी नींव डालना है। इसका वास्तविक परिणाम यह होता है कि जबतक धर्मके साथ उचित अथवा अनुचित विधिसे अपने अनुयायियोंकी संख्या बढ़ानेका विचार लगा रहता है तबतक कभी भी धार्मिक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

महात्मा बुद्धका जीवन

कपिलवस्तुमें सूर्यवंशके राजा शुद्धोदनके यहाँ वि० पूर्व ५६५ (ई० पू० ६२२) में गौतम बुद्धका जन्म हुआ। बुद्धका पिता एक छोटीसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रियासतका चुना हुआ राजा था। बाल्यावस्थासे ही गौतम खेल-कूदमें बहुत कम मन लगाते थे। वे अपने महलके कोनेमें बैठे हुए बड़े गम्भीर विषयोंपर विचार किया करते थे। पिताने उनका ध्यान अपने कर्तव्योंकी ओर आकर्षित करनेके लिए एक सुन्दरीसे उनका विवाह कर दिया। कुछ समयके लिए गौतम सांसारिक वासनाओंमें लिप्त हो गये, परन्तु एक दिन नगरमें फिरते हुए उन्हें वृद्धावस्था, रोग तथा मृत्युके दृश्य दृष्टि-गोचर हुए जिससे फिर वे अपने पुराने विचारोंमें निमग्न हो गये। जब वे २९ वर्षके हुए तो उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इस भयसे कि अब मैं कदाचित् संसारमें सर्वथा फँस न जाऊँ, वे गृहत्याग करके विन्ध्याचल पर्वतकी ओर चले गये। एक रात्रिके प्रस्थानके अनन्तर उन्होंने अपना घोड़ा, रत्न और वस्त्र अपने पिताके पास भेज दिये और स्वयं भिक्षुकोंके वस्त्र धारण कर लिये। यह घटना गौतमके जीवनका महात्याग कहलाती है।

उन्होंने सबसे पूर्व राजगिरि (जिला पटना) में ब्राह्मण साधुओंके पास शिक्षा प्राप्त की। साधुओंने गौतमको बताया कि मुक्तिका मार्ग शरीर और इन्द्रियोंका संयम करनेसे मिलता है। इसपर गया प्रदेशके वनोंमें जाकर उन्होंने छः वर्षपर्यन्त तप और साधना की। उस समय पाँच शिष्य उनके साथ थे। बुद्धगयाका मन्दिर उसी स्थानपर है जहाँ वे तपस्या किया करते थे। तपस्यासे शान्ति तो नहीं हुई उलटे निरुत्साह बढ़ता गया। उनके हृदयमें यह संशय उत्पन्न होने लगा कि यह तप आदि मुक्तिके ठीक साधन हैं या नहीं? इस संशयसे उन्हें इतना दुःख हुआ कि वे मूर्च्छित होकर भूमिपर गिर पड़े। जब उन्हें सुध हुई तो उनका जीवन परिवर्तित हो गया। अब उन्हें यह निश्चय हो गया कि मुक्तिका मार्ग शरीरको कष्ट देनेमें नहीं, किन्तु मनुष्योंको सत्यका ज्ञान करानेमें है। उन्होंने तप आदि सब साधन त्याग दिये। इस परिवर्तनसे उनके पहिले पाँच शिष्य उन्हें छोड़कर चले गये। इस समय फिर उनके हृदयमें एक संग्राम आरम्भ हुआ कि क्या मैं अकेला ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्मार्गपर था और शेष सब विद्वान् कुमार्गपर थे ? यह वह संग्राम था जिसे बौद्ध पुस्तकोंने इस प्रकार वर्णन किया है कि पीपलके वृक्षके नीचे बैठे हुए मनुष्यके शत्रुने उसे बहकाया। अन्तमें इस संग्राममें बुद्धको विजय प्राप्त हुई और उन्हें वह प्रकाश मिला जिसका प्रचार बादको उन्होंने संसारभरमें किया। वह वृक्ष उस समयसे 'बोधितरु' अर्थात् प्रकाशका वृक्ष हो गया। उक्त प्रकाशसे गौतमकी आत्मा प्रकाशित हो गयी।

अब बुद्धका नया जन्म हुआ। दो मासके उपरान्त बुद्धने काशीके समीप अपनी शिक्षाका आरम्भ किया। उन्होंने शिष्योंको एकत्र करके शिक्षा देनेकी प्राचीन प्रणाली छोड़ दी और इसके स्थानपर साधारण पुरुषोंको उपदेश देना आरम्भ किया। उनके प्रथम शिष्य गृहस्थ पुरुष और स्त्रियाँ थीं। उनके पुराने पाँच शिष्य घूम-घामकर फिर उनसे आ मिले। तीन मासमें उनके ६० शिष्य हो गये। उन्होंने उनको आज्ञा दी कि "जाओ, इस नये धर्मका प्रचार करो"। स्वयं कुछ साधुओंको शिष्य बनाकर वे राजगिरि पहुँचे जहाँका राजा तथा प्रजा दोनों उनके अनुयायी बन गये।

महात्मा बुद्धका धर्मोपदेश

वे वर्षमें आठ मास इधर-उधर भ्रमण कर प्रचार करते थे और शेष चार मास एक स्थानपर रहते थे। स्त्री, पुरुष, निर्धन तथा धनवान् सब उनका उपदेश सुननेके लिए आते थे। उपदेशका तात्पर्य यह था कि मुक्ति और सुख त्यागसे तथा अपने मनको वशमें करनेसे प्राप्त होता है। मनुष्यको दुःख और पापसे बचाना ही सबसे बड़ा धर्म है। बुद्धने विशेष करके विहार तथा अवधमें अपने मतका प्रचार किया। गेरुए वस्त्र धारण किये, सिर मुड़ाये, हाथमें भिक्षापात्र लिये बुद्धका कपिलवस्तुमें द्वितीय बार भिक्षुककी दशामें प्रवेश करना एक हृदयद्रावी घटना थी। उनका उपदेश सुनकर उनकी स्त्री और पुत्र भी उनके शिष्य बन गये। बुद्धने ३६ वर्षकी अवस्थासे लेकर ८० वर्षकी अवस्थापर्यन्त प्रचार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। जब उन्होंने अपनी मृत्यु समीप देखी तो अपने शिष्योंको बुलाकर यह अन्तिम उपदेश किया—"अपने मनका प्रत्येक समय ध्यान रखो। जो धर्म और नियमोंका आचरण करेगा वह जीवनके समुद्रसे पार होकर दुःखसे छूट जायगा।" बुद्धकी अन्तिम रात्रि आनन्द नामक एक शिष्यको धैर्य दिलानेमें व्यतीत हुई। बुद्धके अन्तिम शब्द ये थे—"हे आनन्द, अपनी स्वतन्त्रताके लिए सर्वदा परिश्रम करते रहो।" देवरिया जिलेके कसिया नामक ग्राममें एक शाल वृक्षके तले भगवान् बुद्धने अपने प्राण त्यागे। बुद्धके जीवनके सम्बन्धमें भिन्न-भिन्न कथाएँ चीन तथा तिब्बत आदि देशोंमें लिखी हुई पायी जाती हैं जिनसे उनके राजनीतिक जीवन तथा प्रचारके मार्गमें आनेवाली कठिनाइयोंपर बहुत प्रकाश पड़ता है।

बौद्ध धर्मके सिद्धान्त

बौद्ध धर्मके सिद्धान्त ये थे—"संसार दुःखरूपी श्रृंखलामें जकड़ा हुआ है। बुद्ध परमात्माकी ओरसे संसारको दुःखसे छुड़ानेके लिए आये हैं। सब कुछ परिवर्तित हो जायगा, किन्तु 'धर्म' परिवर्तित न होगा। धर्मके सामने प्रत्येक व्यक्ति समान है और बिना किसी दूसरेकी सहायताके अपनी मुक्ति अर्थात् निर्वाण प्राप्त कर सकता है।" उन्होंने कर्मोंके सिद्धान्तपर बहुत जोर दिया है। मनुष्यकी प्रस्तुत अवस्था उसके पिछले कर्मोंका फल है और वर्तमान कर्मोंका फल भविष्य दशा होगी। बुद्धके विचारमें यह सिद्धान्त इतना मजबूत था कि ईश्वर भी उसमें कुछ हस्तक्षेप न कर सकता था। कर्मोंका सिद्धान्त सभी मनुष्योंके लिए सामान्य था। अहम्भाव तथा कामनाके दासत्वसे निकलनेपर मनुष्य परिपूर्ण हो सकता था और उनको सर्वथैव नष्ट कर देनेसे वह इस जीवनमें अर्हत् और पश्चात् निर्वाण-पदको प्राप्त कर सकता था। संसारका अस्तित्व और उसकी वर्तमान अवस्था कर्मोंके आधारपर ही बतलायी गयी है। कर्म बीजके समान हैं और वे ही संसारकी उत्पत्तिके कारण हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आरम्भमें ब्राह्मण लोग बुद्धके विरोधी न थे, किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकारके कई मत उस समय बड़े उत्साहसे अपने-अपने सिद्धान्तका प्रचार कर रहे थे। बुद्धका फैलता हुआ मत उन मतोंके माननेवालोंको भयानक नागके सदृश प्रतीत होता था। आरम्भमें बौद्ध मतवालोंको इन्हीं लोगोंके साथ शास्त्रार्थ और झगड़े करने पड़ते थे। बौद्ध धर्म लोगोंके आचार तथा विश्वासपर जोर देता था। समाजकी रीतियोंमें बुद्धने कोई परिवर्तन नहीं किया। बौद्ध तथा जैन लोगोंके विवाह और मृतसंस्कार सब आर्योंके समान होते रहे, इसलिए ब्राह्मणोंने कोई झगड़ा नहीं किया। जब बौद्ध धर्मकी कौंसिल (महासभा) में यह प्रश्न उठा तो उनके प्रधानने निर्णय कर दिया कि बौद्ध धर्मका काम लोगोंको अर्हत बनाना है। कोई मनुष्य 'अर्हत पद' तबतक प्राप्त नहीं कर सकता था जबतक वह संसारका पूर्णतया त्याग करके भिक्षुक न बन जाय। जबतक लोग सांसारिक हैं तबतक बौद्ध धर्मको इससे कोई प्रयोजन नहीं कि वे किन रीतियोंका अनुसरण करते हैं। रीतियाँ ही समाजको बाँधनेवाले सम्बन्ध हैं, इसलिए बौद्ध धर्मने किसी नयी सोसायटी या समाजकी नींव न डाली।

बुद्धको अपने कुल अर्थात् शाक्य लोगोंमें विशेष सफलता हुई। समस्त शाक्य लोगोंने बौद्ध मत धारण कर लिया। इस नये उत्साहका इतना प्रभाव हुआ कि उन्होंने यह निश्चय किया कि प्रत्येक गृहसे एक व्यक्ति भिक्षुक बनकर प्रचार करे। बुद्ध इस कार्यविधिसे प्रसन्न न थे। बौद्ध धर्मके प्रचलित होनेपर उन्हें विशेष कष्टका सामना करना पड़ा। उनका चचेरा भाई देवदत्त एक पक्षका नेता बन बैठा। अधिक तपके कारण उसने बुद्धसे बढ़कर अपने-आपको प्रकट किया। उसे इतनी सफलता हुई कि बुद्धको वृद्धावस्थामें नीचा देखना पड़ा। अन्तमें देवदत्तकी त्रुटियोंने ही उसे गिरा दिया।

ब्राह्मण अपनी शिक्षा केवल दो वर्णोंतक परिमित रखते थे, पर बुद्धकी शिक्षामें यह विशेषता थी कि उन्होंने अपने सिद्धान्तोंका प्रचार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निकृष्ट तथा उत्कृष्ट सब लोगोंमें किया। बुद्धकी शिक्षाका भाव न केवल भारतवर्ष, किन्तु समस्त संसारकी जातियोंतक फैल गया। बुद्धकी शिक्षा वास्तवमें प्राचीन आर्यशास्त्रोंकी ही शिक्षा थी। उनका धर्म केवल एक साधन बना जिससे आर्योंका सिद्धान्त और उनका धर्म, जिसे ब्राह्मणोंने कैद कर रखा था, संसारके भिन्न-भिन्न भागोंमें विस्तृत हुआ।

बुद्धने एक विशेष सम्प्रदाय स्थापित किया जिसका मुख्य अभिप्राय यह था कि उसके सदस्य बाहर जाकर अन्य जातियोंमें धर्मका प्रचार करें। उस सम्प्रदायका यह भी नियम था कि उसके सदस्य पाक्षिक सभा किया करें और अपने पापोंको उस सभाके सम्मुख स्वीकार करें।

बुद्धकी मृत्युके बाद

बुद्धकी मृत्युके उपरान्त उनके पाँच सौ शिष्य राजगिरिमें एकत्र हुए। वहाँ उन्होंने बुद्धकी शिक्षाको तीन बड़े-बड़े भागोंमें बाँटा—यथा (१) उपदेश, (२) साधन और (३) सिद्धान्त। बुद्धके सौ वर्ष बाद अर्थात् विक्रमपूर्व ३३०(ई० पू० ३८७)में द्वितीय कौंसिल हुई जिसमें सात सौ सदस्य कुछ विवादास्पद बातोंका निर्णय करनेके लिए एकत्र हुए। परिणाम यह हुआ कि उनकी दो पार्टियाँ हो गयीं और फिर झगड़ा बढ़ते-बढ़ते अट्ठारह भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय बन गये।

बौद्ध धर्मकी उन्नति

महाराज अशोकके कालमें बौद्ध धर्मकी खूब उन्नति हुई। जैसा कि पहले लिख आये हैं, अशोक चन्द्रगुप्तके पौत्र थे। चार वर्षतक अपने भाइयोंके साथ संग्राम आदि करके वि० पू० २१६ (ई० पू० २७३) में वे राजसिंहासनपर बैठे। उनका राज्य काबुलतक फैला हुआ था। वे बड़े प्रतापशाली सम्राट् हुए। कलिंग युद्धके पश्चात् उन्होंने बौद्ध धर्मकी शरण ली और नये धर्मके फैलानेमें कोई उपाय शेष न छोड़ा। निम्नलिखित पाँच भिन्न-भिन्न उपाय काममें लाये गये—(१) एक महासभा की गयी जिसके द्वारा उन्होंने बौद्ध धर्मका मन्तव्य ठीक-ठीक निश्चित किया, (२) इसके लिए उन्होंने राज्यका एक विशेष विभाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

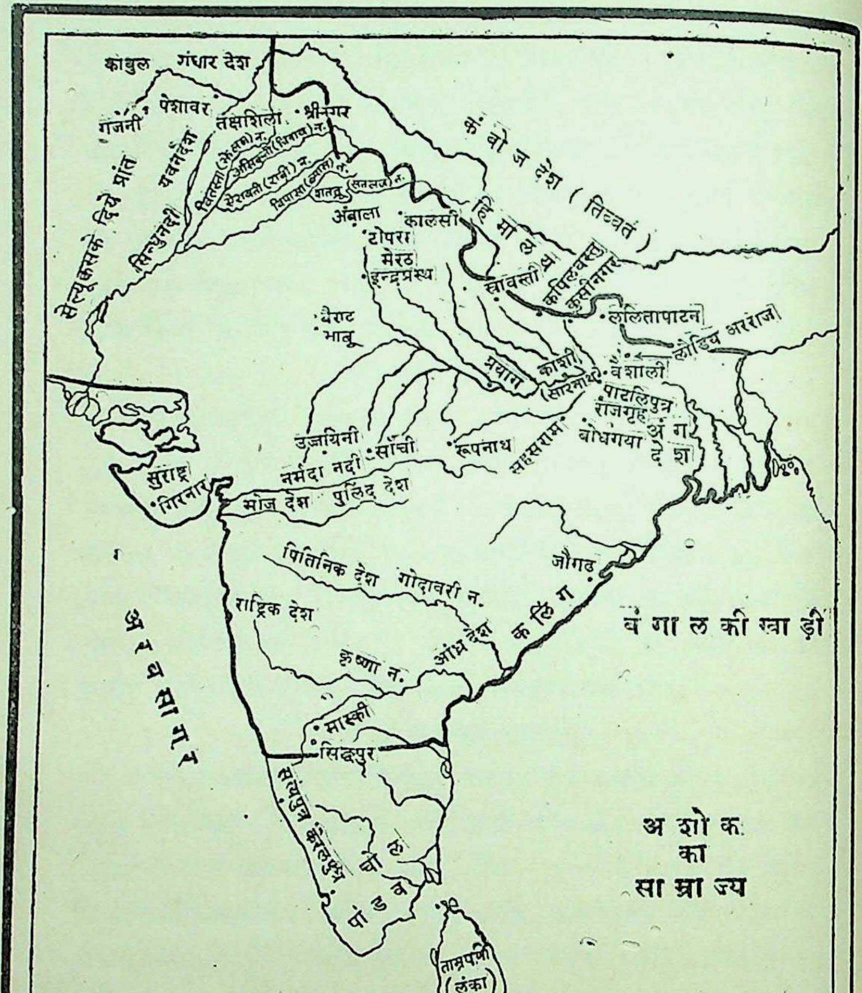

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नियत किया, (३) प्रचारके लिए स्थान-स्थानपर उपदेशक भेजे गये, (४) बौद्ध धर्मकी पुस्तकें ठीक करायीं और (५) स्थान-स्थानपर उन्होंने अपने सिद्धान्तोंके प्रचारके लिए स्तम्भ लगवाये।

महाराज अशोककी आज्ञासे तीसरी महासभा पटनेमें वि० पू० १८३ (ई० पू० २४०) में हुई। यह महासभा इसलिए की गयी कि कुछ भिक्षुकोंने कई ऐसे नये सिद्धान्तोंका प्रचार करना आरम्भ कर दिया था जो बौद्ध धर्मके विपरीत थे। उन सिद्धान्तोंको इस महासभाने अशुद्ध और धर्मके विरुद्ध बतलाया। एक सहस्र मनुष्य इस सभामें एकत्र हुए थे।

अशोकके आज्ञानुसार धर्मके नियम पत्थरके स्तम्भोंपर खुदवाये गये जो उत्तर-पश्चिममें यूसफजईतक, पश्चिममें काठियावाड़तक और पूर्वमें उड़ीसापर्यन्त खुदवाये हुए पाये जाते हैं। कथन है कि अशोकने ८४,००० स्तूप बनवाये। धर्म फैलाने और उसकी उन्नति देखनेके लिए एक विशेष मण्डल निश्चित किया गया जिसका अध्यक्ष 'धर्ममहामात्र' कहलाता था। उसका काम समस्त राज्यों तथा यवन, काम्बोज, गान्धार इत्यादि पश्चिमी सीमापर रहनेवाली जातियोंके बीच धर्मका प्रचार करना था। सड़कोंपर कूप खुदवाये गये और वृक्ष लगाये गये। सारे राज्यमें मनुष्यों तथा पशुओंके लिए आरोग्यशालाएँ स्थापित की गयीं। पुरुषों और स्त्रियोंके अन्दर शिक्षा फैलानेके लिए कर्मचारी नियुक्त किये गये। ऐसे ही नाना प्रकारके काम इस विभागके अधीन थे। कहा जाता है कि अशोकने बौद्ध धर्मका उपदेश करनेके लिए ६४०० उपदेशक नियुक्त किये थे। उन्होंने धर्मका प्रचार करना राज्यका कर्तव्य समझा, परन्तु धर्मप्रचारके साधन केवल उपदेश आदि थे। अशोकके शिलालेखों और स्तम्भ-लेखोंसे विदित होता है कि किस प्रकार उन्होंने समस्त संसारके सभ्य तथा असभ्य देशोंमें अपने उपदेशक भेजे। वे नीच तथा ऊँच, राजा तथा भिक्षुक सब प्रकारके मनुष्योंसे जाकर मिलते थे और सत्यशील बननेके लिए उन्हें शिक्षा देते थे। बौद्ध धर्ममें उच्च

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोटिकी सहनशक्तिका उपदेश दिया गया है। अभीतक बौद्ध धर्मकी यही विशेषता है। बुद्धके अनुयायी किसी अन्य धर्मवालेके साथ द्वेष नहीं करते। बौद्ध धर्मकी नींव दृढ़ करनेके लिए धर्मके सिद्धान्त एक पुस्तकके रूपमें लिखे गये। यह पुस्तक पाली भाषामें थी जो उस समय बिहारमें बोली जाती थी।

इस प्रकार बौद्ध मत राजधर्म बन गया। इसके प्रायः सब सिद्धान्त ब्राह्मणोंकी शिक्षासे लिये गये थे। परन्तु ब्राह्मण केवल अपनी कुटियोंमें रहनेवाले कतिपय शिष्योंको ही वे सब बातें सिखाते थे जिन्हें महात्मा बुद्धने अपने प्रचारके बलसे एक जीवित धर्ममें परिवर्तित कर दिया। बुद्धकी शिक्षामें ब्राह्मणोंका मान करना चार बड़े विधानोंमेंसे है। शेष तीन विधान माता-पिताकी आज्ञाका पालन करना, अपनी इन्द्रियोंको वशमें रखना और सब जीवोंके साथ प्रेम करना है। बुद्धकी शिक्षाने वर्णकी प्राचीन विधि तोड़ दी जिससे समाजके दो भाग हो गये—एक बौद्ध धर्मका अनुयायी, दूसरा उनका विरोधी। बौद्धधर्मानुयायियोंके भी दो भाग बन गये—एक सांसारिक, दूसरा भिक्षुक तथा भिक्षुकी यही विभाग ईसाई धर्मने बौद्ध धर्मकी नकलमें धारण किया। पर ईसाई धर्मके भिक्षुकों तथा भिक्षुकियोंकी विधियोंमें कुछ बुराइयाँ आ गयीं। हज़रत मुहम्मदने इस भागका त्याग करके मनुष्योंको केवल पहिले दो भागोंमें ही विभक्त रखा। उन्होंने धर्म फैलानेका काम विशेष अनुयायियोंके अधीन नहीं, बल्कि सब अनुयायियोंका समान कर्तव्य कर दिया। इसीका यह परिणाम है कि इस्लामके प्रत्येक अनुयायीमें धर्मके प्रचारका उत्साह अन्य धर्मोंकी अपेक्षा बहुत अधिक पाया जाता है।

आर्योंकी प्रकृति-पूजा

वैदिक कालके आर्य लोगोंकी विशेषता प्रकृतिकी पूजा थी। वे प्रकृतिके सौन्दर्यपर मुग्ध थे। निःशेष प्रकृतिको वे एक महती शक्ति अर्थात् ब्रह्मका आविर्भाव समझते थे, इसलिए प्रकृतिकी शक्तियोंका ध्यान करने और ब्रह्मकी समीपता प्राप्त करनेमें उन्हें आनन्द प्राप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होता था। पुरातन आर्यमन्दिरोंमें यूनानके सदृश आकाशकी शक्तियोंके चित्र बनाये जाते थे।

कर्मका सिद्धान्त

बौद्ध धर्मने कर्मके सिद्धान्तपर बहुत जोर दिया। उनके विचारमें कर्मोंका नियम नित्य और स्थिर है। जब मनुष्यके लिए कर्म ही सब कुछ हैं और कोई शक्ति उनके प्रभावको अन्यथा नहीं कर सकती तो किसी दूसरी शक्तिको बीचमें लानेकी आवश्यकता ही क्या है? यदि किसी मनुष्यके कर्म अच्छे हैं तो उसे सुख होगा। इसके विपरीत होने-पर दुःख होगा। इस आधारपर ईश्वरका ध्यान या देवताओंके लिए यज्ञ आदि करना व्यर्थ समझा गया। यद्यपि सामान्यतया यह ठीक प्रतीत हो, किन्तु प्रश्न यह है कि ईश्वरका ध्यान हमारे कर्मोंको अच्छा बनानेका सबसे बड़ा साधन हो सकता है या नहीं? बुद्धकी शिक्षा इस बातपर जोर न देकर कि हम ब्रह्मको सारे ब्रह्माण्डका पति समझकर उसपर विचार करते रहें, इस बातपर जोर देती थी कि हमें दूसरोंके साथ किस तरह बर्ताव करना चाहिये। इसलिए बौद्ध धर्मके अनुसार साधु पुरुषोंकी स्मृति स्थापित करना और उन्हींकी पूजा करना आवश्यक हुआ। इस-लिए उनके शेष चिह्नोंकी भी पूजा आरम्भ हो गयी और मन्दिरोंके स्थानपर धार्मिक मठ स्थापित हो गये। जहाँ भिक्षुक पुरुष तथा स्त्रियाँ अपनी-अपनी माला फेरती और घण्टियाँ बजाती थीं वहाँ महात्मा बुद्धके दाँत या किसी अन्य अस्थिपर बड़े-बड़े मन्दिर बनाये गये। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिये कि जहाँ ईसाई धर्मने यहूदियोंसे परमात्माका विचार और अन्य कई विचार लिये वहाँ क्रियात्मक जीवन और धार्मिक प्रबन्धका सब क्रम बौद्ध धर्मका अनुकरण था। बौद्ध धर्मके भिक्षुकों और प्राचीन संन्यासियोंमें बड़ा अन्तर था। पुरातन नियमके अनुसार मनुष्यजीवनके तीन आश्रमोंको पार करके ही संन्यासी बन सकता था, परन्तु बुद्धकी शिक्षाके अनुसार प्रत्येक मनुष्य किसी उम्रमें भिक्षुक बन सकता था। बुद्धने यह भी आज्ञा दे दी कि यदि कोई भिक्षुक अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर्तव्योंका पालन नहीं कर सकता तो गृहस्थ बन सकता है। जब फिर वह तैयार हो तो भिक्षुक बन सकता है। प्राचीन नियमानुसार एक बार संन्यासी होकर लौट आना असम्भव था।

बौद्ध धर्म कहाँ-कहाँ फैला

अशोकके राज्यमें बौद्ध धर्म दूर-दूर देशोंतक जा पहुँचा। अशोकके राज्य-कालमें जो बौद्ध महासभा हुई उसके दूसरे ही साल अशोकका छोटा भाई महेन्द्र भिक्षुक बनकर धर्मपताका लंकामें ले गया। उसके उपरान्त शीघ्र ही उसकी भगिनी संघमित्रा भी उस श्रेणीमें प्रविष्ट होकर और कुछ भिक्षुकियाँ साथ लेकर वहाँ जा पहुँची। पाँच सौ वर्ष पश्चात् लंकाके उपदेशकोंने ब्रह्माके लोगोंको अनुयायी बनाया। तदनन्तर स्याम, जावा, बाली और सुमात्रा द्वीपोंमें भारतवर्षके प्रचारक पहुँचे। उधर उत्तर-मध्यएशियासे होते हुए बौद्ध धर्मके प्रचारक चीनमें गये। पहली शताब्दीमें बौद्ध धर्म चीनमें अच्छी तरह प्रचलित हो गया। वहाँसे बौद्ध धर्म कोरियामें और कोरियासे छठी शताब्दीमें जापानमें फैला।

सम्राट् अशोककी मृत्युके पश्चात् उनके पुत्र कुणाल तथा उनके अन्य वंशज मौर्य साम्राज्यके उत्तराधिकारी हुए। पर थोड़े दिनोंके पश्चात् साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। इस वंशके अन्तिम राजा वृहद्रथसे उसके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्रने गद्दी छीन ली और वह शुंगवंशका संस्थापक हुआ।

मौर्य साम्राज्यके पतनके बाद सारे भारतवर्षमें अब कोई एकछत्र राज्य न रह गया। उत्तर-पश्चिमसे यवनोंका आक्रमण प्रारम्भ हुआ और गन्धार, शाकल तथा अन्य स्थानोंमें उनके राज्य स्थापित हो गये। दक्षिणके प्रान्त भी स्वतन्त्र हो गये। केवल मध्यदेश अर्थात् मगध और उसके आस-पासके प्रदेश शुंग वंशके अधीन रह गये।

शुंगवंश

शुंगवंशके राजा भारद्वाज गोत्रके ब्राह्मण थे। इस वंशके संस्थापक पुष्यमित्र, मौर्यवंशके अन्तिम सम्राट्के प्रधान सेनापति थे और सेनाके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामने ही उन्होंने सम्राट्को पदच्युत करके राजसत्ता अपने हाथमें ले ली। पुष्यमित्रके समयमें शुंगवंशका राज्य दक्षिणमें नर्मदा नदीतक था और पश्चिम तथा उत्तरमें जलन्धर और स्यालकोट तक। परन्तु तीसरी शताब्दी (ई० पू०) के अन्तमें उत्तर पश्चिमसे यवनोंका आक्रमण प्रारम्भ हुआ। सीरियाके राजा अण्टियाकस महान् काबुलकी घाटीतक पहुँच आये और वहाँके राजा सुभगसेनको हार खाकर पाँच सौ हाथी देना पड़ा। अण्टियाकसके पुत्र दमिलने भी आक्रमण किया और पञ्जाब तथा सिन्धकी घाटीपर अधिकार कर लिया। बादको एक यवन राजा मनेन्द्रने भी आक्रमण किया और उसे भी सफलता प्राप्त हुई। यवन लोग साकेत और मध्यापिकातक पहुँच गये थे और एक समयमें पाटलिपुत्रपर भी संकट उत्पन्न हो गया था, पर अग्निमित्रके पुत्र वसुमित्रने यवनोंको सिन्धु नदीके किनारे हराया और उन्हें पीछे हटना पड़ा। पुष्यमित्रने ३६ वर्षतक शासन किया और उसकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र अग्निमित्र उसका उत्तराधिकारी हुआ। कालिदासका प्रसिद्ध नाटक मालविकाग्निमित्र इसी अग्निमित्रसे सम्बन्ध रखता है।

कण्ववंश

अग्निमित्रके पश्चात् इस वंशका इतिहास अन्धकारमय है। बादको राजमन्त्री वासुदेवने राजसत्ता अपने हाथमें ले ली और उसने कण्ववंशके राज्य की स्थापना की। राज्यके एक कोनेमें शुंगवंशके राजा भी नाम-मात्रके लिए शासन करते रहे। पर सन् ३० (ई० पू०) के लगभग शुंग और कण्ववंश नष्ट हो गये और सतवाहन-वंशका उदय हुआ। जिस वंशके राजाने शुंग और कण्ववंशका अन्त किया उसे पुराणोंमें आन्ध्र कहते हैं। कृष्णा और गोदावरीके मुहानेके प्रदेशके तेलगू भाषा बोलनेवाले लोग आन्ध्र कहे जाते थे। परन्तु उस समयके लेखोंमें इस वंशका नाम सातवाहन मिलता है। इस वंशका संस्थापक शिमुक था, पर इस वंशकी ख्याति उसके पुत्र शातकर्णिके समयमें अधिक फैली। इसके पश्चात् शक और यवनोंके आक्रमणके कारण कुछ समयके लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस वंशका गौरव कम हो गया था, पर गौतमीपुत्र शातकर्णिने शक, यवन और पह्लवोंकी शक्तिको नष्ट कर अपना साम्राज्य मालवासे लेकर दक्षिण कर्नाटकतक फैलाया। उसका पुत्र वासिष्ठीपुत्र पुलुमयी गोदावरीके तटपर स्थित प्रतिष्ठान अथवा पैठनसे शासन करता था और दो अन्य बड़े नगर वैजयन्ती तथा अमरावती भी इस कालमें अधिक प्रसिद्ध हुए।

इस वंशके एक दूसरे राजा वासिष्ठीपुत्र शातकर्णिने शक क्षत्रप रुद्रदमनकी लड़कीसे विवाह किया। पर रुद्रदमनने उसके राज्यपर आक्रमण करके उसे पराजित किया। इस वंशके एक दूसरे राजा श्रीयज्ञ शातकर्णिके समयमें कुलकी गौरववृद्धि हुई, पर यह इस वंशका आखिरी बड़ा राजा था। उसकी मृत्युके पश्चात् राज्य कई टुकड़ोंमें बँट गया। उनमेंसे मुख्य आभीर और बकाटक तथा इक्ष्वाकु और शालंकायन वंश थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौदहवाँ प्रकरण

कुशान तथा गुप्त-साम्राज्य

मौर्य-साम्राज्यके पतनके बाद सीरिया और बैक्ट्रियासे यवनोंका आक्रमण अधिक बढ़ने लगा। सेल्यूकसका साम्राज्य अब बहुत कमजोर हो गया था और पार्थिया तथा बैक्ट्रिया के क्षत्रप विद्रोह करके स्वतन्त्र हो चुके थे। इन्हीं प्रदेशोंसे आकर यवनोंने पंजाबके ऊपर आक्रमण करना प्रारम्भ किया। बैक्ट्रियाके राजा दमिलने अफगानिस्तान, पंजाब तथा सिन्धको जीत लिया। उसका एक उत्तराधिकारी मनेन्द्र हुआ जो साकल अथवा श्यालकोटमें शासन करता था। उत्तर-पश्चिममें उनका राज्य बजावर तक फैला हुआ था जहाँ उसके नामके सिक्के प्राप्त हुए हैं। एक दूसरा यवन राजा तक्षशिलामें शासन करता था जिसने अपना राजदूत विदिशामें भेजा था। इन राजाओंने बौद्ध अथवा वैष्णव धर्मको स्वीकार कर लिया था। प्रथम शताब्दीतक अफगानिस्तान तथा सिन्ध आदिमें यवन राज्यका अन्त हो गया।

शकराज्य

यवनोंके पश्चात् मुख्यतः तीन विदेशी जातियोंने भारतकी उत्तरी-पश्चिमी सीमाके प्रदेशोंपर अधिकार किया। वे शक, पह्लव तथा कुशान जातियाँ थीं। शक लोग पहिले मध्य एशियामें रहते थे। वहाँ यूची अथवा कुशान जातियोंके आक्रमणसे त्रस्त होकर उन्हें दक्षिणकी ओर भागना पड़ा। वे लोग अफगानिस्तानके दक्षिणी भागमें आकर बस गये और उस प्रदेशका नाम शकस्थान पड़ा जिसे अब सिस्तान कहते हैं। धीरे-धीरे इन लोगोंने सिन्धकी घाटी तथा भारतके पश्चिमी भागमें अपना राज्यविस्तार किया। शक और पह्लव राजाओंका राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कई प्रदेशोंमें फैला हुआ था। इन प्रदेशोंके राज्यपाल क्षत्रप अथवा महाक्षत्रप कहे जाते थे। एक क्षत्रप वंश कपिशामें शासन करता था, दूसरा तक्षशिलामें, तीसरा मथुरामें, चौथा दक्षिणमें तथा पाँचवाँ उज्जैनमें।

उज्जैनके क्षत्रप रुद्रदमन बहुत प्रसिद्ध हुए। उन्होंने सन् १२० से १५० तक शासन किया। शतवाहन-वंशके राजाको उन्होंने अपनी बेटी ब्याह दी थी। पर फिर भी उसने उनके राज्यपर आक्रमण करके उन्हें पराजित किया। सम्भवतः उनका शासन कोंकन प्रान्तसे लेकर उत्तरमें सिन्ध और मालवातक फैला हुआ था। पर उनके उत्तराधिकारी कमजोर थे और आभीर राजाओंने उनके राज्यपर अधिकार कर लिया। जब चौथी शताब्दीमें गंगाके मैदानमें गुप्त-साम्राज्यका उदय हुआ तो समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्तने शक और आभीर दोनोंका राज्य नष्ट करके उसे अपने साम्राज्यमें मिला लिया।

कुशानवंशका राजा कनिष्क

उत्तर-पश्चिममें शक पह्लवोंके राज्यके ऊपर प्रथम शताब्दीमें विपत्ति आयी। उत्तरसे कुशान राजाओंने आक्रमण करके किजिन और काबुलको जीत लिया और सिन्धकी घाटीतक इनके राज्यका विस्तार हो गया। कुशानवंशका सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क हुआ। कुछ विद्वानोंके मतके अनुसार कनिष्क शक संवत्‌का, जिसका प्रारम्भ सन् ७८ ई० से होता है, संस्थापक कहा जाता है। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्यूनशांगके कथनानुसार कनिष्ककी राजधानी पुरुषपुर अथवा पेशावरमें थी। कनिष्कके समयके सिक्के बहुत विस्तृत क्षेत्रमें मिले हैं जिससे पता चलता है कि उसका साम्राज्य गान्धारसे लेकर अवध और बनारसतक फैला हुआ था। काश्मीर भी उसके राज्यमें सम्मिलित था और साकेत तथा पाटलिपुत्रके राजाओंसे भी उसका संघर्ष हुआ था। चीनसे भी उसका युद्ध हुआ था और तुर्किस्तानमें उसे आंशिक सफलता भी प्राप्त हुई थी।

कनिष्कने प्रायः २३ वर्षतक राज्य किया। उसकी ख्याति देश-विजयकी अपेक्षा बौद्ध धर्मके प्रचारके कारण अधिक हुई। पेशावर और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्य स्थानोंमें उसने कितने ही स्तूप, विहार तथा चैत्य बनवाये जिनकी सुन्दरताकी सराहना बहुत दिनों बादतक पाली लोग करते थे। बौद्ध धर्मके लिये उसने बड़े उत्साहसे कार्य किया। उसकी प्रेरणासे बौद्धधर्मकी चौथी संगीति (कौंसिल) श्रीनगरके पास काश्मीरमें हुई जिसमें बौद्ध-धर्मके मुख्य सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें विचार किया गया। उसकी राज-धानी विद्याका केन्द्र थी और उसके दर्बारमें संस्कृतके प्रसिद्ध कवि बुद्ध-चरितके रचयिता अश्वघोष तथा आयुर्वेदके आचार्य चरक रहते थे। अशोककी तरह कनिष्कने भी दूर-दूर देशोंमें बौद्ध धर्मका प्रचार करवाया। इसलिये उसका नाम तिब्बत, खोतान और मंगोलिया आदिमें बड़े आदर-से लिया जाता था। उसके सिक्कोंपर उसका नाम कनिष्क शाहानुशाह लिखा मिलता है जिससे मालूम होता है कि वह शाहोंका शाह था। वह अपनेको देवपुत्र भी कहता था।

कनिष्कके उत्तराधिकारी वसिष्क, हुविष्क तथा वासुदेव आदि थे जिनके शिलालेख अधिकतर मथुराके आस-पास मिले हैं। वासुदेवके सिक्कोंपर शिवकी मूर्ति अंकित मिलती है। पर धीरे-धीरे कुशान वंशका राज्य कमजोर पड़ने लगा और ईरानमें एक बड़ा साम्राज्य स्थापित होनेसे इस वंशका राज्य समाप्त हो गया।

गुप्त वंश

दक्षिणमें सातवाहन वंशके गौतमीपुत्र शातकर्णिने जिस तरह शक और यवनोंकी शक्तिका विध्वंस किया उसी प्रकार उत्तरमें गुप्तवंशके चन्द्रगुप्तने विदेशियोंकी शक्तिको नष्ट किया। सातवीं शताब्दीके एक इतिहासकारने लिखा है कि "शक राजा 'परकलत्रकामुक' अर्थात् दूसरोंकी पत्नीको चाहनेवाले थे। इन म्लेच्छ राजाओंके अत्याचारसे पृथ्वी त्रस्त थी और सारा देश मरुभूमि हो गया था। जिस तरह प्राचीन कालमें अत्याचारियों द्वारा पीड़ित होकर पृथ्वीने चन्द्रगुप्त मौर्यकी शरण ली उसी तरह इस समय पृथ्वीने एक दूसरे चन्द्रगुप्तकी शरण ली है।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्तवंशके तृतीय राजा थे, परन्तु इन्होंने ही सर्व-प्रथम महाराजाधिराजकी पदवी ग्रहण की। बिम्बिसारकी भाँति इन्होंने भी लिच्छवि वंशकी एक राजकुमारी कुमारदेवीसे विवाह करके अपने साम्राज्यका विस्तार किया। इनकी मृत्युके समय गुप्तसाम्राज्य इलाहाबाद, मगध और दक्षिणी बिहारमें फैला हुआ था। इनके समयमें मन्त्रिगण और राजवंशके सदस्योंकी एक परिषद् हुई जिसमें राजकुमार समुद्रगुप्त उत्तराधिकारी बनाये गये।

समुद्रगुप्त

समुद्रगुप्त इस वंशके सबसे प्रसिद्ध सम्राट् थे। इन्होंने सन् ३२० से सन् ३८० तक शासन किया। इनके समयमें लंकाके राजा मेघवर्माने बुद्धगयामें लंकाके यात्रियोंके लिए एक विहार बनवानेकी अनुमति प्राप्त करनेके हेतु एक दूतमण्डल भेजा था। समुद्रगुप्तके शासनके सम्बन्धमें इलाहाबादके एक शिलालेखसे जिसमें कवि हरिसेनकी लिखी प्रशस्ति खुदी है तथा मध्यप्रदेशमें एरनके एक शिलालेखसे पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है।

समुद्रगुप्तने प्रारम्भमें अहिछत्र (रुहेलखन्ड) तथा पद्मावती (मध्य भारत) पर जहाँ अच्युत तथा नागसेन शासन करते थे- आक्रमण किया तथा कोटवंशके एक राजाको बन्दी किया और पुष्पपुर अथवा पाटलिपुत्र-पर विजय प्राप्त की। आर्यावर्त्तके और भी कितने ही राजाओंको जैसे रुद्रदेव, मातिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मा, गणपति नाग आदिको उसने पराजित किया। इन राजाओंके सम्बन्धमें अधिक पता नहीं है। मातिल सम्भवतः बुलन्द शहर जिलेमें शासन करता था और गणपति नाग मध्यभारतके वेदनगर में।

समुद्रगुप्तने विन्ध्यप्रदेशके कितने ही राजाओंको अपना अनुचर बनाया और दक्षिण भारतपर आक्रमण कर उस प्रदेशके सब राजाओं-को पराजित करके फिर उन्हें उनका राज्य वापस कर दिया। इन राजाओंमें प्रमुख थे महानदीकी घाटीमें स्थित कोशलके राजा महेन्द्र,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाकान्तारके राजा व्याघ्रराज, गोदावरी जिलेमें स्थित पिष्ठपुर अथवा पीठपुरम्के राजा महेन्द्रगिरि। कोट्टूरके स्वामिदत्त, कांचीके पल्लवराज विष्णुगोप तथा गोदावरी और कृष्णाके बीचमें स्थित वेंगीके शालंकायन वंशके राजा हस्तिवर्मा। नेलोर जिलेके पल्लवके राजा उग्रसेन, विजगापट्टम जिलेमें देवराष्ट्रके राजा कुबेर तथा उत्तरी अरकाट जिलेके कुस्थलपुरके राजा धनंजय।

नर्वदाके दक्षिणके इन सब राज्योंको समुद्रगुप्तने अपने साम्राज्यमें नहीं मिलाया। प्रत्यक्ष शासनमें पहिलेके प्रान्तोंके अतिरिक्त उसने रुहेलखण्ड, गंगा और जमुनाका दोआब, पूर्वी मालवा तथा बंगालके कुछ जिलोंको सम्मिलित किया। जिन प्रदेशोंपर उसका प्रत्यक्ष शासन था उनके अतिरिक्त उसका आधिपत्य दूर-दूरके देशोंतक फैला हुआ था। उसके अधीनस्थ राज्योंमेंसे मुख्य ये थे—पूर्वी बंगालका समतट राज्य, आसामका देवक राज्य, कामरूप (पश्चिमी आसाम), नैपाल, कर्तृपुर (गढ़वाल तथा जलन्धर), पूर्वी तथा मध्य पंजाबकी अनेक जातियाँ, मालवा तथा पश्चिमी भारतके राज्य जिनमें मालवा, यौधेय, माद्रक, आभीर आदि थे। इनके अतिरिक्त कुशान-वंशके कुछ राजा, शकवंशीय तथा सिंहल द्वीपके राजाओंने भी गुप्त-सम्राट्को कर और भेंट देकर प्रसन्न करनेकी चेष्टा की। इस दिग्विजयके बाद उसने अश्वमेध यज्ञ भी किया।

सम्राट् समुद्रगुप्त केवल एक महान् विजेता ही नहीं थे, बल्कि वे विविध शास्त्रोंके पण्डित, कवि और संगीतमर्मज्ञ भी थे। उनके दर्बारमें प्रसिद्ध कवियों और विद्वानोंको प्रश्रय मिलता था। उन्होंने न केवल सारे आर्यावर्त्तकी राजनीतिक एकता स्थापित की और विदेशी आक्रमणकारियोंका विध्वंस किया, बल्कि उन्होंने प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, धर्म तथा कविता आदिकी भी उन्नति की।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

समुद्रगुप्तके उत्तराधिकारी उनके पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय हुए जो विक्रमादित्यके नामसे भी प्रसिद्ध हैं। उन्होंने सन् ३८० से ४१२ ई०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तक शासन किया। उन्होंने भी समुद्रगुप्तकी देशविजयकी नीतिको जारी रखा। चन्द्रगुप्तने मध्यप्रदेशके नागराज्यकी कन्या कुबेरनागासे अपना विवाह किया तथा दक्षिण प्रदेशके वकाटक राजा रुद्रसेनसे अपनी कन्याका विवाह करके इनसे मैत्री की। उसने अपने मन्त्री तथा सेनापतिके साथ पूर्वी मालवापर आक्रमण किया और पश्चिमी मालवा तथा काठियावाड़के शक राजाओंका विध्वंस किया। इसलिये उसे विक्रमादित्य शकारिकी उपाधि मिली। उसके दर्बारके नवरत्न जिनमें कालिदास तथा वराहमिहिर मुख्य हैं, प्रसिद्ध हैं। पर यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि कालिदास तथा वराहमिहिर आदि सब समकालीन थे।

चीनके प्रसिद्ध यात्री फाहियानने चन्द्रगुप्तके समयमें ही भारत-यात्रा की। वह पाटलिपुत्रके राजमहल तथा सदावर्त्त और औषधि-वितरणके भवनको देखकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने मध्यदेशके शासन तथा वहाँकी जनता और विशेषतः धनिकवर्गकी उदारताकी बड़ी प्रशंसा की है।

कुमारगुप्त

चन्द्रगुप्त द्वितीयके उत्तराधिकारी उनके पुत्र कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य थे। (शासनकाल सन् ४१५ से ४५५ ई०=४७२ से ५१२ वि०)। इनके समयमें भी गुप्त साम्राज्य पूर्ववत् उत्तरी बंगालसे काठियावाड़तक तथा हिमालयसे नर्वदातक फैला हुआ था। सम्भवतः इनका प्रभाव दक्षिणमें सतारा जिलेतक फैल गया था। इन्होंने भी अश्वमेध यज्ञ किया परन्तु इनके शासनकालके अन्तिम समयमें नर्वदातटके पुष्यमित्रोंसे संघर्ष हुआ। इनकी शक्ति इतनी बढ़ गयी थी कि साम्राज्यके एक राजकुमारको इनका मुकाबिला करते हुए जमीनपर रात बितानी पड़ी। अन्तमें कुमारगुप्तके उत्तराधिकारी स्कन्दगुप्तने इन्हें पराजित किया।

पर स्कन्दगुप्तको हूणोंका मुकाबिला करना पड़ा। उनके प्रारम्भिक आक्रमणोंको उसने रोक दिया और विजित प्रान्तोंको वापस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ले लिया। विदेशी आक्रमणकारियोंके विरुद्ध विजय प्राप्त करनेके उपलक्षमें उसने भी विक्रमादित्यकी उपाधि ग्रहण की। उसके पराक्रमका विवरण कथासरित्सागरमें मिलता है। वि० ५२४ (सन् ४६७ ई०)में उसके शासनका अन्त हुआ।

हूणोंका आक्रमण

स्कन्दगुप्तके बाद गुप्त-साम्राज्यका इतिहास बहुत कुछ अस्पष्ट है। उसके उत्तराधिकारी कुमारगुप्त (द्वितीय) बुद्धगुप्त, भानुगुप्त, नरसिंहगुप्त आदि हुए। सम्भवतः बुद्धगुप्त(४७६–४९५)के समयतक साम्राज्यकी एकता बनी रही, यद्यपि पश्चिमके कुछ प्रान्त साम्राज्यसे निकल गये थे। परन्तु बुद्धगुप्तके पश्चात् तोरमान तथा मिहिरकुलके नेतृत्वमें हूणोंने साम्राज्यके ऊपर आक्रमण किया और पूर्वी मालवामें एरनतकका प्रदेश जीत लिया। गुप्तवंशके बालादित्यने जो सम्भवतः भानुगुप्तका दूसरा नाम है, हूणोंको पराजित किया। पर हूणोंकी अन्तिम पराजय पश्चिमी मालवामें मण्डसोरके राजा यशोधर्मनके द्वारा सन् ५३३–३४ ई०के लगभग हुई जिसने उनके राज्यको छिन्न-भिन्न करके अपने राज्यका विस्तार किया। उत्तरी बंगालमें सन् ५४३–४४ (वि० ६००)के लगभग तक गुप्तवंशीय राजा राज्य करते रहे पर उनकी अवस्था बहुत क्षीण हो गयी थी।

पुष्यमित्रों तथा हूणोंके आक्रमणके कारण गुप्त साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। हूण जाति मध्य एशियाकी रहनेवाली एक वीर तथा जंगली जाति थी। उसने पश्चिममें रोमन साम्राज्य तथा पूर्वमें गुप्त साम्राज्यके ऊपर आक्रमण किया। प्रारम्भमें स्कन्दगुप्तने हूणोंको हराया पर स्कन्दगुप्तकी मृत्युके बाद हूणोंके नेता तोरमान तथा उसके पुत्र मिहिरकुलके पराक्रमके कारण उनके राज्यका विस्तार हुआ और अन्तमें मण्डसोरके राजा यशोधर्मनने हूणोंको पराजित कर मध्य भारतके उनके राज्यका अन्त किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यशोधर्मन

यशोधर्मन एक शैव राजा थे। मण्डसोरमें उनके शासनकालके सम्बन्धके लेख मिलते हैं जिनमें उस समयके निर्दयी तथा अत्याचारी राजाओंसे उनके द्वारा पृथ्वीका उद्धार करनेका वर्णन मिलता है। वे सम्राट् कहे जाते थे और उनके राज्यका विस्तार ब्रह्मपुत्रसे पूर्वीघाट तक तथा हिमालयसे पश्चिमी समुद्रतक वर्णन किया गया है। छठवीं शताब्दीके अन्तमें उत्तर भारतमें मौखरी तथा दक्षिणी भारतमें चालुक्य राज्य मुख्य थे। मौखरी राजा अपनी उत्पत्ति प्राचीन कालके अश्वपतिसे बतलाते थे। इस वंशका गौरव ईशान वर्माके समयमें अधिक बढ़ा जिसने महाराजाधिराजकी पदवी धारण की। उसके ५५४ ई० के एक लेखसे प्रकट होता है कि उसने आन्ध्र, गौड़ तथा शूलिक देशके राजाओंको पराजित किया था। आन्ध्र तथा शूलिक सम्भवतः दक्षिण प्रदेशके पूर्वी तथा पश्चिमी भाग थे और गौड़ पश्चिमी बंगाल था।

इस वंशमें तीन और प्रसिद्ध राजा हुए जिनमें अन्तिम ग्रहवर्मन थे जिनका विवाह थानेश्वरके राजा प्रभाकरवर्धनकी पुत्री तथा प्रसिद्ध सम्राट् हर्षकी बहिन राज्यश्रीसे हुआ था। मालवाके राजाने ग्रहवर्मन-को पराजित किया और उसकी स्त्री राज्यश्रीको कन्नौजमें कैद कर दिया। युद्धमें ग्रहवर्मनकी मृत्यु हो गयी। हर्षके बड़े भाई राज्यवर्धनने अपने बहनोईकी पराजयका बदला लिया। पर गौडके राजा शशांकने जो मालवाके राजाका मित्र था राज्यवर्धनको धोखा देकर उसका मित्र बनकर बिना अस्त्र-शस्त्रके अपने पास बुलाया और उनकी हत्या कर डाली। इस प्रकार कन्नौज तथा थानेश्वर दोनोंकी राजगद्दी खाली हुई। हर्ष दोनों देशोंके राजा हुए और उन्होंने कन्नौजको अपनी राजधानी बनाया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पन्द्रहवाँ प्रकरण

बौद्ध धर्मकी अवनति

शान्त धार्मिक संग्राम

जब अशोकके कालमें बौद्ध मत राजधर्म हो गया तो स्वभावतः ब्राह्मणोंको इससे भारी धक्का लगा। फिर भी बौद्ध धर्मके राजधर्म होनेसे ब्राह्मण निरुत्साह नहीं हुए। कुछ कालके लिए वे दब अवश्य गये पर विक्रमादित्यके राज्यमें उन्हें पुनः सिर उठानेका अवसर प्राप्त हुआ। अशोक और कनिष्क, इन दोनोंके नाम साधारण पुरुषोंको ज्ञात नहीं पर विक्रमादित्यका नाम प्रत्येक बालककी जिह्वापर है। इससे प्रकट होता है कि ब्राह्मणोंकी धार्मिक शक्ति उस समय कहाँतक बढ़ी हुई थी। उस समयसे लेकर सात आठ सौ वर्ष पर्यन्त दोनों धर्मोंमें संग्राम होता रहा। प्रत्येक ग्राम और नगरमें दोनों धर्मोंके अनुयायी एक दूसरे-के साथ साथ रहते थे। दोनों धर्मोंके मन्दिर स्थान-स्थानपर विद्यमान थे। उनका संग्राम शान्त था। अब उन्नतिके शिखरपर पहुँचे हुए बौद्ध धर्मकी अवनति आरम्भ हो गयी और ब्राह्मणोंका धर्म धीरे धीरे उन्नत होने लगा। यह सात आठ सौ वर्षोंका समय भारतवर्षके इतिहासमें शान्तिपूर्ण था। ऐसा प्रतीत होता है कि मुसलमानोंके आक्रमणोंतक भारतवर्षमें ऐसी कोई घटना नहीं हुई जो कथनीय हो। इन शताब्दियों-में कोई बड़ा नाम दृष्टिगोचर नहीं होता और न कोई सामाजिक अथवा विद्यासम्बन्धी उन्नति ही हुई। लगातार कई शताब्दियोंतक आर्यावर्तमें केवल यही शान्त संग्राम जारी रहा। ब्राह्मण-धर्म तथा बौद्ध धर्मके पारस्परिक संग्रामने भारतवासियोंकी कई शताब्दियाँ ले लीं और मानसिक उन्नतिके स्थानमें मानसिक अवनति उत्पन्न कर दी। इसका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कारण यह था कि उस समय समस्त देशमें विचारका एक ही विषय रह गया था कि किन साधनोंसे अन्य धर्मोंको नीचा दिखाया जाय। अतः उन्हें ऐसे ही उपाय सोचने और प्रचलित करनेका अधिक विचार होता था जिनसे वे साधारण लोगोंको अपनी ओर आकर्षित कर सकें।

मूर्ति-पूजाकी नींव

बौद्ध लोग बुद्धकी मूर्तिकी पूजा करने लगे थे। स्थान-स्थानपर बुद्धकी मूर्तियाँ स्थापित हो चुकी थीं। बौद्धोंके अतिरिक्त जैन मतके लोग अपने तीर्थंकरोंकी मूर्तियाँ सजा-सजाकर पूजते थे। ब्राह्मणोंने भी इन दोनोंसे आगे बढ़ जानेके लिए अपने वैदिक देवताओंकी भिन्न भिन्न मूर्तियाँ बनाकर स्थान-स्थानपर मन्दिर स्थापित कर दिये जिसमें लोग उनकी ओर ध्यान दें।

पुराण

धर्म फैलानेका दूसरा साधन भिन्न भिन्न पुस्तकोंकी कथा कहना था। उस समयतक जो शास्त्र संस्कृत भाषामें थे उनका प्रयोग तो केवल विशेष शिष्योंको नियमपूर्वक पढ़ानेमें ही होता था। उनका समझना साधारण पुरुषोंके लिए कठिन था। इसलिए बौद्धों और जैनियोंकी कथाओंसे बढ़-चढ़कर कथा सुननेके लिए पुराण रचे गये, जिसमें उनकी अत्युक्तिसे भरी हुई कथाएँ और आश्चर्यजनक बातें साधारण पुरुषोंके हृदयोंपर अधिक प्रभाव डाल सकें।

पुराणोंमें एक ईश्वरके तीन स्वरूप बताये गये—ब्रह्मा, शिव और विष्णु। इनके विषयमें विचित्र कथाएँ लिखकर पुराणोंकी संख्या तथा परिमाण बढ़ाया गया। उनसे यह स्पष्ट व्यक्त होता है कि उस कालके लेखकों और उनके श्रोताओंकी मानसिक तथा धार्मिक अवस्था अत्यन्त गिर चुकी थी।

बौद्ध मतकी पराजय

इन सब बातोंका प्रयोजन भली-भाँति सिद्ध हो गया। बौद्ध मत मूर्खोंके हाथ पड़ चुका था इसलिए ब्राह्मणोंने अपनी विद्वत्ता और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुरतासे बौद्धोंको स्पष्ट रूपसे पराजित कर दिया। बौद्ध धर्मने जो कुछ सीखा वह ब्राह्मण शास्त्रोंसे सीखा। बुद्धके सिद्धान्त सांख्य-शास्त्रके सिद्धान्तोंके सिवाय और कुछ नहीं हैं। ब्राह्मणोंके पास न केवल सांख्य-शास्त्र था प्रत्युत सांख्य-शास्त्र जैसे कई और शास्त्र भी थे। इसलिए, बुद्धकी शिक्षा विदेशोंमें तो सर्वथा नयी और पवित्र प्रतीत हुई पर ब्राह्मणोंके लिए उसमें कोई विशेष आकर्षण-शक्ति न थी।

दूसरी बात ब्राह्मणोंके पक्षमें यह थी कि बुद्धने वेदों और शास्त्रोंके साथ जातिके प्राचीन महत्त्वको भी त्याग दिया। पुरातन कालकी विद्या और सभ्यताका मानचित्र प्रत्येक आर्य-हृदयपर खींचा जा चुका था। प्राचीन ऋषियों और महात्माओंके नाम तथा राम-कृष्णके चरित्र लोगोंके हृदयोंसे एकदम हटा देना असम्भव था। साधारण मनुष्य विशेष पुरुषों और उनकी वीरताओंके इतने दास हो जाते हैं कि उन्हें इस दासत्वसे कोई युक्ति छुड़ा नहीं सकती।

यही सब बातें थीं जिन्होंने लोगोंका चित्त बौद्ध धर्मसे हटाकर ब्राह्मण-धर्मकी ओर फेर दिया। जब बौद्ध धर्ममें मन्तव्योंपर झगड़े होकर कई संप्रदाय हो गये तो आर्य-धर्म स्वभावतः इन संप्रदायोंसे स्वतंत्र रहा, क्योंकि आर्य-धर्म इस प्रकारका धर्म न था जिसका आधार विशेष विश्वासोंपर हो। ब्राह्मण लोग भिन्न-भिन्न विश्वासोंका सम्बन्ध दर्शनसे करते हैं। वे सब दर्शनोंके विचारोंको अपने अन्दर संयुक्त समझते थे। इस कारण उन्होंने आरम्भमें बौद्ध मतके सिद्धान्तोंकी एक शाखाका कथन किया, किन्तु जब बौद्ध मतने एक सिद्धान्तको स्वीकार करके शेष सबको पृथक् कर दिया तो उसके अन्दर आपसे आप भेद उत्पन्न हो गया। इसके साथ ही ब्राह्मणोंने बौद्ध धर्मको निगल जानेके लिए उसके प्रवर्तक महात्मा बुद्धको अपने दस बड़े अवतारोंमें शुमार कर लिया। जब बौद्ध धर्म निर्बल हो गया और ब्राह्मण-धर्म जोर पकड़ता गया तो ब्राह्मण अभिमानमें चूर हो गये। उस समय दो बड़ी लहरें बौद्ध धर्मके विरुद्ध उठीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहा जाता है कि ब्राह्मणोंने नास्तिकों और वेदकी निन्दा करनेवालोंसे दुःखित होकर आबू पर्वतपर बड़ा भारी यज्ञ किया। इस यज्ञकी समाप्तिपर राजपूतोंकी एक नयी जाति उत्पन्न हुई। उन्होंने वेदोंकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया। इन राजपूतोंको अग्निकुलके राजपूत कहते हैं। इसी कथनके आधारपर कोई सहस्र वर्ष पश्चात्, औरंगजेबके कालमें, पंजाबके गुरु गोविन्द सिंहने, जो पुराणोंके बड़े विद्वान् थे, नैना-देवी पर्वतपर इसी प्रकारका यज्ञ किया और एक नयी राजपूत जाति अर्थात् खालसा जाति उत्पन्न की।

कुमारिल भट्ट

दूसरी लहर विद्वान् ब्राह्मणोंकी थी, जिन्होंने स्थान-स्थानपर भ्रमण और शास्त्रार्थ करके भारतवर्षमें गिरते हुए बौद्ध धर्मको अन्तिम धक्का दिया। इस लहरके आरम्भ करनेवाले कुमारिल भट्ट विक्रमी संवत्की आठवीं शताब्दीमें हुए। कुमारिल भट्ट बालक ही थे जब वे एक दिन राजमहलके नीचेसे गुजरे। ऊपरसे उन्होंने राज-कन्याको संस्कृत श्लोकमें यह कहते सुना कि "क्या करूँ, किधर जाऊँ, वेदोंकी रक्षा करनेवाला कोई दिखाई नहीं देता।" कुमारिल भट्टने उत्तर दिया "हे देवि, शोक मत करो, अब कुमारिल भूमिपर विद्यमान है।"

कुमारिल बौद्ध धर्मका अध्ययन करनेके लिए शिष्य-रूपसे उनके मठमें प्रविष्ट हुए। ऐसी कथा है कि एक दिन बौद्ध लोग वेदोंका उपहास करने लगे। यह सुन कुमारिलके नेत्रोंमें अश्रुकण आ गये। उन्होंने उनके साथ शास्त्रार्थ आरम्भ किया। अन्तमें उन्होंने निश्चयपूर्वक यह कहा कि मैं पर्वतपरसे कूदनेको तैयार हूँ। यदि वेद सच्चे हैं तो मुझे कुछ न होगा। वे पर्वतसे कूद पड़े। गिरते समय उनके नेत्रमें चोट आयी तो उनके विरोधियोंने कहा कि तुम हार गये। उन्होंने उत्तर दिया कि यह पीड़ा इसलिए हुई है कि मैंने वेदके लिए 'यदि' शब्दका प्रयोग किया है, क्योंकि उससे संशय प्रकट होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमारिल भट्टने बौद्ध धर्मके विरुद्ध प्रचार करना आरम्भ किया। उन्होंने अद्वैत सिद्धान्तकी नींव रखी और दक्षिणमें लोगों और राजाओंको अद्वितीय ईश्वरकी पूजा करनेका उपदेश दिया। दक्षिणमें उन्हें एक ऐसा शिष्य मिला जिसका नाम संसारके दर्शनविज्ञानमें सदा स्थिर रहेगा। उन्होंने अपना काम उसीके सुपुर्द किया। कुमारिलने चावलकी भूसियोंकी चिता स्वयं बनाकर अपने आपको जीवित जला दिया। ऐसा करनेके पूर्व शंकराचार्यने उनसे इसका कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि मैंने यह बड़ा भारी पाप किया है कि बौद्धोंको गुरु बना कर धोखा दिया। उसका प्रायश्चित्त करनेके लिए मैं अपने आपको भस्मीभूत करता हूँ।

स्वामी शंकराचार्य

शंकराचार्य मलाबारमें उत्पन्न हुए थे। उन्होंने दक्षिण भारतवर्षसे चलकर सम्पूर्ण आर्यावर्तका दौरा किया। स्थान-स्थानपर उन्होंने संस्कृत-भाषामें बौद्ध लोगोंसे शास्त्रार्थ किये, जिनका वृत्तान्त शंकरदिग्विजय नामक पुस्तकमें अंकित किया गया है। शंकरने वेदान्तकी व्याख्या करके आर्यावर्तमें वेदान्तका नया मत सब तक पहुँचा दिया। युक्तिमें न केवल आर्यावर्तमें प्रत्युत संसारमें शंकरके समान कोई नहीं हुआ। प्रचार करते हुए वे काश्मीर तक पहुँचे। इतना बड़ा काम करके केवल ३२ वर्षकी अवस्थामें उन्होंने केदारनाथमें प्राण-त्याग किया। यह शंकरका ही काम था कि ब्राह्मणोंके धर्मको आर्यावर्तमें फिर विजय प्राप्त हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोलहवाँ प्रकरण

चीनी यात्री

बील नामक लेखक, जो चीनी यात्रियोंके जीवनवृत्तान्तों और उनके मार्गवृत्तान्तोंका बहुत बड़ा ज्ञाता है, लिखता है—"आजतक संसारके यात्रियोंमेंसे किसीने ऐसी श्रद्धा और भक्तिभावसे कभी इतनी दूरका और भयानक मार्ग तय नहीं किया, कभी इतने प्रेम और प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे अनुयायियोंने अपने धर्मके पवित्र चिह्नको देखनेकी इच्छा नहीं की, और कभी संसारके मानव-समूहने वन, पर्वत तथा समुद्रोंके मार्गमें इतनी कठिनाइयाँ नहीं उठायीं जितनी सरल किन्तु उत्साहपूर्ण चीनी यात्रियोंने अपने धर्मके प्रवर्त्तककी जन्मभूमि भारतवर्षके दर्शनार्थ उठायीं।"

फाहियान

फाहियान विक्रम संवत्की पाँचवीं शताब्दीमें अफगानिस्तान होता हुआ भारतवर्ष पहुँचा और गंगाकी भूमिसे भ्रमण करता हुआ बंगालकी खाड़ीतक आया। उसने देखा कि उस समय ब्राह्मण पुजारियोंका मान भी बौद्ध धर्मके भिक्षुकोंके समान ही होता था। बौद्ध-धर्मके मठोंके साथ-साथ आर्यदेवताओंके मन्दिर भी पाये जाते थे।

इतसिंग

छठीं शताब्दीके मध्यमें चीनसे दूसरा यात्री इतसिंग आया। उसने तत्कालीन भारतीय शिक्षा-प्रणालीपर विस्तारसे लिखा है। उससे पता चलता है कि उस कालमें शिक्षाका प्रबन्ध बौद्धोंके हाथमें था। वह लिखता है कि उस कालके आर्य भी अपने आपको हिन्दू कहना पसन्द न करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ह्यूनसांग

ह्यूनसांग सातवीं शताब्दीमें मध्यएशिया होता हुआ भारतवर्ष पहुँचा और पन्द्रह-सोलह वर्षोंतक इस देशमें फिरता रहा। भारतवर्षके सम्बन्धमें उसका स्पष्ट कथन है—"दोनों धर्म लोगोंको अपनी ओर आकर्षित करनेके लिए कटिबद्ध थे। ब्राह्मणोंका बल बढ़ने लग गया था।" जब वह पंजाब पहुँचा तो उसे अशोक और कनिष्कके स्मारक दृष्टिगोचर हुए। वहाँ शिव और पार्वतीके मन्दिर भी दिखाई दिये। समस्त पश्चिमोत्तर भारतवर्षमें बौद्ध धर्मके मठोंके पास ब्राह्मणोंके भिन्न-भिन्न संप्रदाओंके मन्दिर विद्यमान थे। अफ़गानिस्तानकी दस रियासतों-पर एक बौद्ध राजा राज्य करता था। पेशावरका बड़ा मठ, जिसे कनिष्कने तैयार किया था, खाली पड़ा था। लोग अभी बौद्ध धर्मसे नहीं हटे थे। काश्मीरमें पाँच सौ मठ और पाँच सहस्र भिक्षुक थे और उनकी शिक्षाके प्रभावसे लोग पक्के बौद्ध थे। उस भागमें, जहाँ आजकल जयपुरकी रियासत है, लोग बौद्ध धर्मसे सर्वथा विमुख हो चुके थे और परस्पर लड़ाई झगड़े करते थे।

शिलादित्य (हर्ष)

गंगा और यमुनाके बीचवाले प्रदेश तथा बिहारमें बौद्ध धर्म अभी उन्नतिपर था। गंगाके तटपर कन्नौजमें एक बड़ा भारी बौद्ध राजा राज्य करता था जिसका नाम शिलादित्य अथवा हर्ष था। उसका राज्य पंजाबसे वंगदेश और हिमालयसे नर्मदातक फैला हुआ था। उसके राज्यमें एक सौ मठ और दश सहस्र भिक्षुक रहते थे। उसका ज्येष्ठ भ्राता राज्यवर्धन जो पूर्व-भारतमें एक राजाके साथ युद्धमें मारा गया था, बौद्ध धर्मसे अत्यन्त घृणा करता था। कदाचित् इसी कारण शिलादित्य दोनों धर्मोंको समदृष्टिसे देखने लगा। उसके अधीन हिन्दू देवताओंके दो सौ मन्दिर खड़े गये।

हर्षवर्धन कन्नौज तथा थानेसर दोनों राज्योंके उत्तराधिकारी हुए। प्रारम्भमें उन्होंने राजपुत्र शिलादित्यकी उपाधि ग्रहण की। इनके वंशकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्पत्ति शैवधर्मावलम्बी प्रसिद्ध पुष्यभूतिसे हुई थी और यह वंश थानेसर(पूर्वी पंजाब)में शासन करता था। हर्षके पिता प्रभाकरवर्धनके समयमें इस वंशका महत्त्व अधिक बढ़ा। प्रभाकरवर्धनकी माता गुप्त-वंशकी एक राजकुमारी थी। इस प्रकार इस वंशका गुप्तवंशसे भी सम्बन्ध हुआ।

संवत् ६६३ (६०६ ई०)के लगभग हर्ष गद्दीपर बैठे। शासनकालके प्रारम्भमें उन्हें अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। उनकी बहिन राज्यश्री कैदसे निकलकर विन्ध्य-पर्वतकी ओर चली गयी थी। उसकी उन्हें खोज करनी थी और अपने बड़े भाई राज्यवर्धनकी मृत्युका बदला लेना था और कन्नौज तथा थानेसर दोनों राज्योंकी स्थिति दृढ़ करनी थी। उन्होंने कामरूप (आसाम)के राजा भास्कर वर्मासे मैत्री की ताकि वे गौड़ (बंगाल)के ऊपर पीछेसे आक्रमण करें और पूर्वी मालवाके गुप्त-वंशीय राजा माधवगुप्तसे मैत्री करके उसकी सहायतासे राज्यश्रीका छुटकारा किया। छः-सात वर्षतक हर्षको बराबर युद्ध करते रहना पड़ा। गौड़ देशका राजा शशांक उनका सबसे प्रबल शत्रु था। पर समीपके प्रदेशोंमें हर्षने अपना शासन दृढ़ कर लिया और सन् ६१२ ई० (संवत् ६६९)में उन्होंने पूर्णरूपसे राजाकी पदवी धारण की और अपनी सेनाका भी विस्तार किया जिसमें ६० हजार हाथी तथा एक लाख घोड़े थे।

चीनी यात्रियोंके लेखोंसे मालूम होता है कि सन् ६१८ और ६२७ ई०के बीचमें भारतवर्षमें बहुत उपद्रव हुए और शिलादित्यने देशके चारों ओर भिन्न-भिन्न प्रदेशोंके राजाओंको दण्ड दिया। दक्षिणमें नर्बदाके तटतक उनकी सेना बढ़ती गयी पर वहाँपर चालुक्यवंशके राजा पुलकेशिन द्वितीयने उन्हें रोका। हर्षने वल्लभिके राजाको पराजित किया और सन् ६४१ ई०के लगभग जिस समय चीनी यात्री ह्वेनशांग वल्लभि प्रदेशमें गये थे वहाँके राजा ध्रुवभट्टसे हर्षकी कन्याका विवाह हो गया था और मैत्री स्थापित हो गयी थी। सन् ६३७ ई०के लगभग गौड़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रदेशके राजा शशांकका भी देहान्त हो गया और हर्षके मित्र (आसाम) के राजा भास्कर वर्माने गौड़पर अधिकार कर लिया। सन् ६४१ ई० (६९८ वि०) लगभग हर्षने मगधका राज्य भी अपने अधीन कर लिया। अगले वर्ष चालुक्य वंशके राजा पुलकेशिनका भी देहान्त हो गया और हर्षने पंजाबके ऊपर आक्रमण किया। उस समयके साहित्यसे पता चलता है कि हर्षने तुषार शैलपर आक्रमण करके कर वसूल किया तथा काश्मीर और सिन्धके शासकोंको भी पराजित किया।

हर्षके साम्राज्यके विस्तारके सम्बन्धमें बहुत मतभेद है, पर पूर्वी पंजाबमें थानेसर, तथा गंगाके द्वाबामें कन्नौजके राज्य तथा अहिछत्र (रुहेलखण्ड) श्रावस्ती (अवध) और प्रयाग (इलाहाबाद) उनके साम्राज्यके अन्तर्गत निश्चित रूपसे थे। और चीनी यात्रियोंके लेखोंके अनुसार सन् ६४१ ई०के लगभग मगध और उड़ीसा भी साम्राज्यके अन्तर्गत आ चुके थे। जालंधरके राजा उदित तथा पूर्वी मालवाके राजा माधवगुप्त साम्राज्यके अधीनस्थ राज्य थे। सम्राट् हर्षकी सेनाने उत्तरी भारतका सारा प्रदेश जीत लिया था जिसका विस्तार उत्तरमें हिमालयसे दक्षिणमें नर्बदाके तटतक तथा पूर्वमें पंजाबसे लेकर पश्चिममें वल्लभि तक फैला हुआ था। इसके अतिरिक्त ब्रह्मपुत्रके उस पार नामरूपके राजा उनके मित्र थे और उनकी शक्तिसे डरते थे तथा कभी उनकी आज्ञाके विरुद्ध कार्य नहीं कर सकते थे। कश्मीर, वल्लभि तथा सिन्धके राज्य भी हर्षकी शक्तिका लोहा मानते थे।

सम्राट्की राजधानी कन्नौजमें भी जो गंगाके तटपर बसा हुआ था चीनके प्रसिद्ध यात्री ह्यूनसांगने हर्षके समयमें भारतका भ्रमण किया और उसने कन्नौजका सुन्दर वर्णन किया है। वहाँपर सुन्दर बगीचे तथा तालाब थे, दूर-दूर देशोंसे अप्राप्य वस्तुएँ लाकर वहाँ एकत्र की गयी थीं। वहाँके निवासी सम्पन्न थे और उनके पास अतुल धनराशि थी। वहाँके नागरिक शरीरसे सुन्दर थे तथा रेशमी वस्त्र पहनते थे और विद्या तथा कलाके प्रेमी थे। हर्षका चीनी यात्रीसे बड़ा घनिष्ट सम्पर्क था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिलादित्यको महाराज अशोकका अनुकरण करनेका बड़ा चाव था। उसने (सन् ६४१ ईसवी) में कन्नौजमें एक बड़ी सभा की जिसमें बौद्ध, जैन और ब्राह्मण सभी एकत्र हुए। उनके अतिरिक्त २१ छोटे-छोटे राजा भी उसमें विद्यमान थे। उस सभासे भी ऐसा प्रतीत होता है कि ब्राह्मण-धर्म बौद्ध-धर्मके साथ युद्धके लिए भली भाँति कटिबद्ध हो गया था, और बौद्ध-धर्म अपने भेदोंके कारण बलहीन हो रहा था। उस सभामें पहिले ब्राह्मणों और बौद्धोंके मध्य शास्त्रार्थ हुआ। फिर बौद्ध-धर्मके दो पक्षोंमें शास्त्रार्थ हुआ जिनको दक्षिण और उत्तर क्रम कहते हैं।

इस अवसरपर जो रीतियाँ हुईं उनसे भी दोनों धर्मोंकी मिलावट प्रकट होती है। सभाके प्रथम दिन बुद्धकी मूर्ति बड़े समारोहके साथ खड़ी की गयी। दूसरे दिन सूर्य देवताकी और तीसरे दिन शिवकी मूर्ति खड़ी की गयी।

शिलादित्यकी दानशीलता

शिलादित्य प्रति पाँचवें वर्ष राजकीय कोष दानमें बाँट दिया करता था। ह्यूनसांग लिखता है कि प्रयागमें जहाँ गंगा और यमुना मिलती हैं एक विस्तृत भूमिपर एक विराट सम्मेलन किया गया जिसमें पाँच लाख मनुष्य सम्मिलित हुए थे और वहाँपर निर्धन तथा धनवान् ७५ दिन तक भोजन करते थे। शिलादित्य अपने राजगृहसे सब धनसंपत्ति लाकर ब्राह्मणों और बौद्धोंके मध्य बिना पक्षपातके बाँट देता था। अन्तमें वह अपने राजकीय वस्त्र और आभरण भी उतारकर दूसरोंको दे देता था और स्वयं बुद्धके अनुकरणमें भिक्षुओंके वस्त्र धारण कर लेता था। इस रीतिसे बुद्धके महात्यागका अनुकरण किया जाता था।

नालन्दाका बड़ा मठ गयाके समीप एक बड़े ग्राममें था। वहाँ एक बड़ा विश्वविद्यालय था, जिसमें दश सहस्र भिक्षुक पढ़ते थे। सहस्रों ब्रह्मचारी अध्यात्मविद्या, दर्शन, धर्मशास्त्र, विज्ञान और विशेषकर आयुर्वेदका अध्ययन करते थे। इस मठका सब व्यय राज्यसे मिलता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। ब्राह्मण लोग उसपर अधिकार करने या उसे उखाड़ डालनेपर उद्यत थे।

ह्यूनसांगने उत्तर और दक्षिण भारतमें भी भ्रमण किया। उसने सर्वत्र दोनों धर्मोंको परस्पर मिलते हुए पाया। बुद्धगया नामक स्थान, जो बौद्धोंकी कहानियोंमें बड़ा पवित्र समझा जाता है, ब्राह्मणोंके अधिकारमें आ चुका था। आसाम बौद्ध धर्मके अन्दर नहीं आया था। समस्त उड़ीसा बौद्धधर्मावलम्बी था। सब जगह ब्राह्मण देवताओंके मन्दिर बौद्धमन्दिरोंसे पाँचगुना अधिक थे। सारे दक्षिणमें बौद्ध धर्म ब्राह्मणोंके बढ़ते हुए प्रवाहके विरुद्ध संग्राम कर रहा था।

ह्यूनसांगके अनन्तर अगली शताब्दीमें ब्राह्मण-धर्मने भारतवर्षमें बौद्ध-धर्मको पराजित किया। ग्यारहवीं शताब्दीमें केवल उड़ीसा और काश्मीरकी दो रियासतें बौद्ध धर्ममें रह गयीं। जब भारतवर्षकी ओर मुसलमानोंने अपना मुख किया तो आर्यावर्तके अंतर्भागसे बौद्ध धर्म लुप्त हो चुका था। केवल मगधमें पाल कुलके राजा बौद्धधर्मावलम्बी थे। पाल राजाओंका राज्य बख्त्यार खिलजीके आक्रमण तक कायम रहा।

इस प्रकार बौद्ध धर्म अपने गृहसे बहिष्कृत किया गया, परन्तु विदेशोंमें इसे बहुत अधिक सफलता प्राप्त हुई। विदेशोंमें इसकी विजय अत्यंत आश्चर्यजनक है। मनुष्यजातिका बहुत बड़ा भाग इस धर्मका अनुयायी है। तिब्बत, ब्रह्मा, स्याम, चीन, जापान इत्यादि देशोंमें उसका पर्याप्त बल है और संसारकी $\frac{1}{3}$ जनसंख्या अब भी बुद्धकी शिक्षाको मानती है। संसारके आधे मनुष्योंको इसने साहित्य और धर्म दिया है और शेष आधे मनुष्योंके विचारों तथा विश्वासोंपर भी बड़ा भारी प्रभाव डाला है।

बौद्ध धर्मका प्रभाव

यद्यपि आर्यावर्तमें बौद्ध धर्मका केवल चिह्न ही शेष रह गया है तथापि उसका प्रभाव आर्योंपर बहुत गहरा पड़ा है। बौद्ध धर्मके विरुद्ध ब्राह्मणोंकी जो संग्राम हुआ उसमें उन लोगोंने पूजाकी नयी नयी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विधियाँ चलायी और बड़ी अत्युक्तियोंसे भरा हुआ साहित्य उत्पन्न किया, परन्तु उसके प्रभावको वे पूरी तरहसे न दबा सके। आर्योंके आचारपर बौद्ध धर्मका सबसे बड़ा प्रभाव यह हुआ कि जातिकी जाति नरम भाववाली हो गयी। प्रत्येक दशामें सब प्राणियोंके जीवनका विचार रखना बौद्ध धर्मकी विशेषता थी। इस शिक्षाको शिखरपर ले जानेका यह परिणाम हुआ कि वीरता तथा उत्साहका भाव लोगोंके हृदयोंसे लुप्त हो गया, जैसा कि अब भी ब्रह्मा आदि देशोंकी आधुनिक अवस्थासे स्पष्ट है।

सामाजिक प्रभाव

ब्राह्मणोंके धर्मकी विजय हुई। उस समय यह देखा गया कि मेल मिलापके सिद्धान्तके स्थानपर विभाग तथा पार्थक्यका सिद्धांत बड़े वेगसे काम करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि समाजमें जात-पाँतकी पेचीदगियाँ पैदा हो गयीं जो अबतक पायी जाती हैं।

पहिले समाजका विभाग चार वर्णोंके आधारपर था, परन्तु जब यूनानी लोग आये उस समय चारके स्थानपर सात वर्ण हो गये थे। जब मध्यएशियाकी अन्य जातियोंका आगमन बढ़ा तो ये वर्ण और बढ़ने लगे। उधर जब ब्राह्मणोंने भिन्न-भिन्न देवताओंकी पूजाकी रीति प्रचलित की तो विशेष-विशेष देवताओंकी पूजा करनेवालोंका एक एक अलग समूह बन गया। इस प्रकार समाज भिन्न-भिन्न समूहोंमें विभक्त होकर छिन्न-भिन्न हो गया। जब एक बार विभागका रोग समाजमें प्रविष्ट हो गया तो साधारण मतभेदोंपर भी पृथक् पृथक् समूह बनने लगे। जब कोई व्यक्ति कुछ प्रसिद्ध हुआ तो उसकी संतान अपने आपको एक विशेष नामसे पुकारने लगी ताकि वह शेष समाजसे पहिचानी जा सके। जब एक स्थानके समूह किसी अन्य स्थानमें जाकर निवास करने लगे तो उन्होंने अपना एक पृथक् समूह बना लिया। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न व्यवसायोंने अपनी अपनी पृथक् पृथक् श्रेणी बनाकर विशेष नियम बनाना आरम्भ किया। जैसे आजकल पाश्चात्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देशोंमें व्यवसायी पुरुषोंके समाज सहस्रों और लाखोंकी संख्यामें संघटित हो रहे हैं उसी प्रकार इन लोगोंने परस्पर सहानुभूति तथा पारस्परिक सहायताके आधारपर जातियाँ बना लीं। इनके अलावा यवनोंके आक्रमणोंके समय और कई छोटी मोटी घटनाएँ उपस्थित हुईं जिनके कारण समाज सहस्रों छोटी छोटी श्रेणियोंमें विभक्त हो गया। ज्यों ज्यों ब्राह्मणोंकी उन्नति होती गयी त्यों त्यों नयी नयी जातियाँ भी बनती गयीं। पर इन जातियोंके परिपूर्ण होनेमें कई शताब्दियाँ और लगीं। मुसलमानोंके आक्रमणसे जातियोंके बननेमें और भी सहायता मिली। इस सहस्र वर्षके संग्राममें आर्योंने किसी बातमें कोई उन्नति नहीं की, बल्कि वैदिक कालमें अन्वेषण की हुई विद्याओंको भी भूल गये। उन्होंने अपनी सारी शक्ति दूसरे धर्मोंके विरोधमें व्यय कर दी। इसका भयानक फल यह हुआ कि जब इस संग्रामकी समाप्तिपर एक बड़ी धार्मिक तथा नैतिक शक्तिने आकर भारतवर्षको दबाना आरम्भ किया उस समय आर्यजाति इस संग्रामके प्रभावसे थककर बलहीन हो चुकी थी। उसके पास न तो राजनीतिक बल था जिससे वह मुसलमान आक्रामकोंके विरुद्ध युद्ध कर सकती और न बुद्धि तथा विद्या सम्बन्धी कोई बड़ा शस्त्र ही उसके पास था जो इस नये कष्टमें उसके काम आता। चक्रवर्ती महाराजोंका काल व्यतीत हो चुका था। देशमें छोटे छोटे राजा राज्य करते थे जिनमें परस्पर एकता न थी और न एकत्र होकर विदेशीय लोगोंके साथ युद्ध करनेका उत्साह ही विद्यमान था।

बौद्ध धर्मका प्रभाव आर्योंपर चाहे अच्छा हुआ हो अथवा बुरा, परन्तु एक बात स्मरण रख लेनी चाहिये कि प्रत्येक आर्य महात्मा बुद्धको राम और कृष्णके बाद अपने देशका सर्वश्रेष्ठ महात्मा समझता है और उन्हें प्रतिष्ठा तथा प्रेमकी दृष्टिसे देखता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सत्रहवाँ प्रकरण

बाह्य आक्रमणके समय देशकी राजनीतिक अवस्था

आक्रमण-काल

कई सौ वर्षपर्यन्त पश्चिमोत्तरसे यवनोंके आक्रमणोंका प्रवाह आर्यावर्तमें सतत रूपसे बहता रहा। ऐसा कहा जाता है कि इन आक्रमणोंके समयसे हमको इस देशका ठीक-ठीक इतिहास मिलता है। जहाँतक हम देखते हैं, यह काल इस देशमें एक प्रकारका तमोमय काल था जिसमें तूफानपर तूफान लगातार आते रहे। इस कालमें हमें इस जातिके सामाजिक व राजनीतिक जीवनका कुछ पता नहीं मिलता। आक्रमणोंके प्रवाहने जातीय जीवनको यदि सर्वथा नष्ट नहीं किया तो बन्द अवश्य कर दिया। जब जीवनका कोई चिह्न ही न था तो इतिहासका भला क्या अर्थ हो सकता है? जितने वृत्तान्त ऐतिहासिकोंने लिखे हैं वे विजयी पुरुषोंके जीते हुए स्थानोंके वर्णन हैं।

आक्रमणोंका प्रभाव

यदि आक्रामकोंके जीते हुए स्थानों तथा वीरताके वर्णनोंको अलग रख दें और जातीय जीवनपर विचारपूर्वक ध्यान दें तो विदित होता है कि इन आक्रमणोंने जातीय जीवनको नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। प्राचीन विद्याओंको बड़ा भारी धक्का लगा। विश्वविद्यालय सब नष्ट हो गये। विद्वान् पुरुष भयभीत होकर कहींसे कहीं चले गये। संस्कृत साहित्य लुप्त होने लगा। लोगोंने बड़ी कठिनाईसे पुस्तकोंको कहीं-कहीं छिपाकर बचा रखा। धर्म, भाषा तथा समाजपर इन आक्रमणोंका प्रभाव अत्यधिक पड़ा। एक नया धर्म आ जानेपर पुरातन धार्मिक विचारोंमें हलचल आरम्भ हो गयी। नयी भाषा प्रविष्ट होनेपर पुरातन भाषापर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नये शब्दोंकी छाप पड़ना आरम्भ हुआ। सामाजिक दृष्टिसे लोगोंके हृदयोंमें विदेशी लोगोंके लिए प्रबल घृणाका भाव उत्पन्न हो गया। उनके साथ भोजन आदि करना तो एक ओर रहा, उनका स्पर्श करना या स्पर्श किया हुआ भोजन ग्रहण करना भी पाप समझा जाने लगा। जातिका एक भाग आक्रामकोंके धर्ममें प्रविष्ट होकर अपनी जातिका वैरी बन गया। अपनी पारस्परिक रक्षा तथा सहायताके लिए लोगोंको नये-नये समूह बनाने पड़े, जिसके कारण जातियोंकी संख्या दिनपर दिन गणनातीत होती गयी।

जातिकी दयनीय दशा

जब हम देशकी तत्कालीन दशा देखते हैं तो हमें केवल दो विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। एक तो यह कि उस समय समस्त देशमें व्याकुलता छायी हुई थी। यद्यपि कई बार राजपूत राजाओंने बड़ी शूरतासे आक्रामकोंके साथ युद्ध करके उनको पराजित किया और उन्हें लौटा दिया किन्तु फिर भी एक विचित्र जातीय व्याकुलता उस समयके इतिहाससे प्रकट होती है। दूसरी यह कि देशमें एकताका अभाव था जिसका कष्टजनक दृश्य हमारे सामने उपस्थित होता है। विदेशी आक्रामक किसी एक राजाके दुर्गपर आक्रमण करता था, पर साथके दूसरे राजालोग शान्तिसे बैठे हुए उधरसे आँखें फेर लेते थे। वे यह नहीं समझ सकते थे कि जो शत्रु आज हमारे भाईको खा रहा है वह कल हमको भी निगल जायगा। विदेशी आक्रमणकारी सहस्रों मील देशके अन्दर भ्रमण करते थे। अपने तथा अपने घोड़ोंके लिए मार्गमें भोजन लेते जाते थे। उन्हें किसी प्रकारकी रुकावट नहीं होती थी। इस प्रकारकी अवस्थासे पता लगता है कि एक-एक सैनिक सैकड़ों पुरुषों तथा स्त्रियोंको दास बनाकर ले जाता था, कोई पूछता भी न था। पकड़े हुए कैदी भेड़ोंके समान साथ चल पड़ते थे। सहस्रोंका वध कर दिया जाता था और वे मृत्युसे बचनेके लिए कोई यत्न न करते थे। वे रोते थे, चिल्लाते थे, पर हाथ उठाना न जानते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसका कारण क्या था ?

यहाँके लोग राजनीतिसे सर्वथा अनभिज्ञ हो गये थे। उनकी दृष्टिमें राज्यकी कुछ सत्ता ही न थी। देशका राज्य देशके शारीरिक बलको प्रकट करता है। जिस देशमें राज्यका बल नहीं रहा, समझ लेना चाहिये कि उसका शारीरिक जीवन समाप्त हो गया।

हालमें जो महायुद्ध यूरोपमें हुआ उसमें इंग्लैण्डको अपनी सत्ताका भय होने लगा। उसका राज्य जीवित था। उसने क्या किया ? स्त्रियों, पुरुषों तथा बालकोंको उसने आवाज दी कि खड़े हो जाओ, प्राण बचानेका समय है, अपना-अपना कर्त्तव्य पालन करो। नवयुवकोंने विश्वविद्यालय छोड़ दिये, बालकोंने पाठशालाएँ छोड़ दीं, कोमल शरीर स्त्रियाँ तथा बालक कारखानोंमें काम करने लगे। राज्यने अपने हाथ बाहर फैलाये और दूसरे देशोंकी मित्रतासे लाभ उठाकर अपनी रक्षाका प्रबन्ध किया।

राजनीतिक अनभिज्ञता

इस देशमें न कोई राज्य था, न कोई राजनीति जानता था जिससे देशकी रक्षाकी कोई विधि निकलती। यह देखकर आश्चर्य होता है कि वह जाति, जिसमें महाभारत जैसी पुस्तकें लिखी जा सकती हैं, अज्ञानमें पड़कर राजनीतिसे किस प्रकार इतनी अनभिज्ञ हो गयी। जहाँ कहीं कोई आक्रामक आया उसने अपना राज्य स्थापित कर लिया; लोग शान्तिपूर्वक उसकी प्रजा बन गये। महाभारतमें एक स्थलपर नहीं बल्कि बारम्बार नीतिका वर्णन है। कुन्ती कृष्णके हाथ अपने पुत्रोंको सन्देश भेजती है और उसमें विदुलाका दृष्टान्त देकर राजनीतिका उपदेश करती है। शान्तिपर्वमें बिल्ली और चूहेकी कथाका* वर्णन कर नीतिके

---

* यह कथा दूसरी भाषाओंमें अनूदित पायी जाती है। चूहा अपने विवरसे बाहर निकला, उसने एक बिल्लीको जालमें फँसे हुए पाया। साथ ही उसकी दृष्टि उल्लूपर जा पड़ी जो वृक्षपर बैठा उसकी ओर दाँव लगा रहा था। पास ही थोड़ी दूरपर एक नकुल भी बैठा था। चूहेने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अगाध रहस्य बताये गये हैं। ऐसी अवस्थामें भय यह था कि यह जाति भी ब्रिटन लोगोंकी तरह समाप्त हो गयी होती। जिस प्रकार इंग्लैण्डके इतिहासमें ब्रिटन लोगोंका केवल नाममात्र आता है उसी प्रकार इस देशके इतिहासमें भी आर्योंका केवल नाम ही रह जाता। वर्त्तमान इंग्लिस्तानका इतिहास उसमें रहनेवाले ब्रिटन लोगोंका नहीं है बल्कि आंग्ल तथा सेक्सन इत्यादि आक्रमणकारियोंका इतिहास है। यदि हमारे साथ ऐसा हो गया होता तो इस समय हमारे विचार सर्वथा और ही होते। प्राचीन मिस्रके लोगोंके साथ ऐसा हुआ, उनकी सभ्यता और उनकी भाषाकी सत्ता मिट गयी। पुरातन ईरानके साथ भी ऐसा ही हुआ। केवल कुछ सहस्र पारसी नौकाओंमें बैठकर अपने धर्मकी रक्षाके लिए इस देशकी शरण आये। गुजरातके राजाने उन्हें इस प्रतिज्ञापर पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी कि वे गायको कदापि न मारेंगे।

भयसे रक्षा

आर्यधर्मने आर्यजातिको इस भयसे बचा लिया। राज्य धर्मकी रक्षाके लिए होता है, परन्तु कभी कभी धर्म ही राज्यकी रक्षाके लिए आ जाता है। यवनोंके आक्रमणोंकी प्रथम प्रतिक्रिया धार्मिक उद्धारसे हुई। धर्मका उद्धार दक्षिणसे आरम्भ हुआ और काशीमें आकर वह देशके समस्त भागोंमें प्रसरित हो गया। पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र तथा संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) में नया धार्मिक जीवन उत्पन्न हो गया। रामायणकी कथा समस्त भाषाओंमें लिखी गयी। राम और कृष्णकी

यह आवश्यक समझा कि अपने शत्रु बिल्लीसे भयके समय मित्रता कर लूँ। इसकी बात बिल्ली भी मान गयी। वह जाकर उसके जालको काटने लगा। इतनेमें उल्लू और नकुल चूहेको सुरक्षित जानकर चले गये। बिल्ली चाहती थी कि चूहा शीघ्र जाल काट दे, पर चूहा धीरे-धीरे काटता रहा। जब व्याध सिरपर आ पहुँचा तो चूहेने जालका अन्तिम भाग काट दिया। बिल्ली भयभीत होकर भाग गयी और चूहा अपने बिलमें चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भक्तिका प्रचार हुआ। एक शताब्दीसे अधिक कालतक धार्मिक प्रचार रहा। महाराष्ट्र और पंजाबमें उसने राजनीतिक रूप धारण किया। ऐसी गिरी हुई जातियोंमेंसे मराठा साम्राज्य और सिख साम्राज्यका उत्पन्न हो जाना एक बड़ा भारी चमत्कार था।

हमारे लिए अध्ययनका विषय केवल इतना ही है कि देशने किस प्रकार बौद्ध धर्मके प्रभावमें आकर महाभारतकी नीतिको सर्वथा स्मरणातीत कर दिया, किस प्रकार जाति अधमावस्थाको प्राप्त हुई और फिर किस प्रकार धर्मने उसकी रक्षा की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अठारहवाँ प्रकरण

इस्लामी लहरका मुकाबला

"दीने मुहम्मदीका बेबाक[1] बेड़ा[2],
न जेजोंमें[3] ठैरा न कुलजममें[4] अटका।
किये जिसने तै चलके सातों समुन्दर
वह डूबा दहानेमें गंगाके आखिर ॥"

मसीहका जीवन

बुद्धके छः सौ वर्ष अनन्तर एशियाई कोचकमें ईसा मसीहने अपने धर्मका प्रचार करना आरम्भ किया। मसीह यहूदियोंके यहाँ उत्पन्न हुए। यहूदी उनकी उत्पत्तिके समय रोमन लोगोंके अधीन थे और इस दासत्वमें उनकी दशा बहुत ही खराब थी। उन्हें कई प्रकारकी क्रूरता सहन करनी पड़ती थी। यहूदियोंका इतिहास उनके भ्रमणों और दुःखमय घटनाओंसे भरा हुआ है। इन भ्रमणों और घटनाओंका हाल यहूदियोंके ऐतिहासिकोंने तौरेतमें साफ साफ लिखा है। भूपतित जातियोंको सर्वदा एक ही ओरसे आशाकी झलक दिखाई पड़ती है। यहूदी भी इसी प्रकार प्रतीक्षामें रहते थे कि हमारा परमात्मा अवश्य हमें मुक्ति देनेवाला भेजेगा। इन बातोंका बहुत बड़ा प्रभाव ईसा मसीहपर बाल्यावस्थामें पड़ा। पन्द्रह वर्षपर्यन्त वे न मालूम कहाँ फिरते रहे। यहूदियोंमें एक किंवदन्ती चली आती थी कि उनको स्वतन्त्र करनेवाले मसीह उत्पन्न होंगे। ईसाने इस भविष्यवादके आधारपर लोगोंसे यह कहा कि मैं अपनी जातिको स्वतन्त्र करनेके लिए आया हूँ

---

(१) निर्भय (२) नौका (३) एक नदीका नाम (४) एक समुद्रका नाम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और मैं ही मसीह हूँ। उनके प्रचारका वास्तविक आशय राजनीतिक था और वे अपनी तथा अपने आसपासकी जातियोंको स्वतन्त्र करना चाहते थे। परन्तु जब उन जातियोंने यह बात मान लेना अस्वीकार किया तो उनका ध्यान लोगोंके कपट और नीचताकी ओर गया और उन्होंने अपने आपको परमात्माका पुत्र बताकर एक नये धर्मकी नींव डाली। रोमन सरकारने यहूदियोंकी सम्मतिसे उन्हें फांसी दे दी। तत्पश्चात् सेण्ट पालने धर्मको वास्तविक रूपमें फैलानेका यत्न किया। वह यहूदी माता और यूनानी पितासे पैदा हुआ था। सेण्ट पालने मसीहकी साधारण सत्य बातोंको लेकर यूरोपमें इस नये धर्मका प्रचार करना प्रारम्भ किया। यूनानसे रोममें उसकी चर्चा हुई। उस समय रोमकी धार्मिक अवस्था अत्यन्त गिरी हुई थी और गुलामोंकी दशा दयनीय थी। सबसे पूर्व ईसाई धर्मकी धार्मिक सचाइयोंका प्रभाव इन छोटे लोगोंपर हुआ और भिन्न-भिन्न कष्टोंको सहन करते हुए भी ये लोग ईसाई धर्ममें प्रविष्ट होते गये। जब सम्राट् कांस्टण्टाइनने एक युद्धके समय अपने सैनिकोंको ईसाई पाकर उस धर्मको अंगीकार किया तो ईसाई धर्म रोमका राजधर्म हो गया। रोमका राज्य समस्त यूरोपमें फैला हुआ था। रोम यूरोपकी असभ्य जातियोंमें अपना धर्म और सभ्यता फैला रहा था, अब वही काम ईसाई धर्म द्वारा होने लगा। रोमन सभ्यताके प्रभावमें फ्रांस, ब्रिटेन आदि देश ईसाई हो गये।

रोमसाम्राज्य मिस्रपर्यन्त विस्तृत था। ईसाई धर्म भी वहाँतक फैल गया। सम्भव है, जिस तरह कुछ यहूदी व्यापारके लिए दक्षिण भारतके तटपर आकर निवास करने लग गये थे, उसी तरह ईसाई धर्मके कुछ प्रचारक भारतवर्षमें भी आये हों, किन्तु वास्तवमें ईसाई धर्म भारतवर्षमें यूरोपीय जातियोंके आगमनके साथ आया, और इसके वृत्तान्तका सम्बन्ध भारतवर्षके वर्तमान कालके इतिहाससे है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस्लामी तरंग

जब ईसाई धर्म यूरोपमें फैल रहा था, उस समय अर्थात् मसीहसे कोई छः सौ वर्ष बाद अरबमें हजरत मुहम्मदने अपने धर्मकी नींव डाली। हजरत मुहम्मद ४२ वर्षकी अवस्थापर्यन्त व्यापार करते रहे। व्यापारके सम्बन्धसें इधर-उधर आने-जानेसे उन्हें यहूदी धर्मके अध्ययनका अवसर मिला और ईसाई धर्मके प्रचारका वृत्तान्त ज्ञात हुआ। अरबकी जनता उस समय सर्वथा असभ्य थी। लोग छोटे छोटे समूह बनाकर परस्पर लड़ते या युद्ध करते थे। हजरत मुहम्मदने देखा कि देशमें बहुत बड़ी सामग्री विद्यमान है और यदि उसे कोई मनुष्य किसी प्रकार काममें ला सके तो अरब एक बड़ी शक्तिके रूपमें परिणत हो सकता है। अपना निश्चय पूरा करनेके लिए उन्होंने धर्मको ही एकमात्र साधन समझा, और तत्काल एक धर्मकी नींव डालकर अरबकी समस्त जातियोंको एकत्र करना चाहा। निःसन्देह हजरतको आरम्भमें बहुत कष्ट सहने पड़े परन्तु अपने उत्साह, त्यागशीलता तथा योग्यताके कारण उन्हें बड़ी सफलता मिली और उस धर्मकी अग्निमें उन लोगोंके पुरातन द्वेष और झगड़े सब भस्मीभूत हो गये।

इस्लामकी विजयपताका

जब अरबके अन्दर इस्लामकी विजयपताका फहराने लगी तो इस्लामको सारे संसारमें फैलाकर समस्त देशोंको उसके चक्रमें लानेकी इच्छा उत्पन्न हुई। हजरतके उत्तराधिकारी बड़े पवित्र तथा निःस्वार्थ पुरुष थे। उनकी अध्यक्षतामें इस्लामकी सेनाएँ अरबसे निकलकर दो तरफ बढ़ने लगीं। इधर फारस, अफगानिस्तान और भारतवर्षकी ओर, उधर मिस्र, उत्तरीय अफ्रीका, स्पेन और फ्रांसकी ओर। फारस और मिस्र जो संसारके सबसे प्राचीन देशोंमेंसे हैं, उस नयी तरंगमें न ठहर सके। एक-दो युद्ध करके फारस और मिस्रने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। फारसके थोड़ेसे लोग, जिन्हें धर्म अत्यन्त प्रिय था, भागकर आर्यावर्तकी शरण आये। उनकी सन्तान बम्बईके प्रान्तमें विद्यमान है। फारसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनन्तर अफगानिस्तानने, जहाँ बौद्ध धर्म अवनतिकी ओर जा रहा था, बहुत शीघ्र इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। उधर स्पेनपर इस्लामकी सेनाओंने अधिकार कर लिया। स्पेनसे बढ़कर संवत् ७८९ (सन् ७३२ ईसवी) में पैरस नामक स्थानपर ईसाई और मुहम्मदी दोनों दल एकत्र हुए। स्पेनके परास्त हो जानेपर यूरोपकी ईसाई जातियोंमें भय उत्पन्न हो गया और उन्होंने सब शक्ति इस्लामके साथ युद्ध करनेके लिए एकत्र की। उस समय अरबके इस्लामियोंमें विभाग हो गये थे और सेनाओंमें दुर्बलता आ गयी थी। युद्धमें इस्लामी सेनाएँ पराजित होकर पीछे हट आयीं। इंग्लिस्तानके प्रसिद्ध ऐतिहासिक गिब्बनने लिखा है कि यदि इस संग्राममें इस्लामकी विजय हो जाती तो आज आक्सफर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालयोंमें मुसलमान प्रोफेसर कुरानपर विद्यार्थियोंको व्याख्यान देते होते। इस युद्धने यह निर्णय कर दिया कि यूरोपका धर्म ईसाई रहेगा, परन्तु फिर भी इस्लामने समस्त यूरोपमें विद्या तथा सभ्यता फैलानेका कार्य किया। स्पेनमें सात सौ वर्ष पर्यन्त मुसलमानोंका राज्य रहा। कार्डवदाका विश्वविद्यालय यूरोपमें प्रथम विश्वविद्यालय था जिसमें समस्त विद्याएँ—गणित, आयुर्वेद इत्यादि—पढ़ायी जाती थीं। यूरोपके अन्य विश्वविद्यालय उसके अनन्तर स्थापित हुए। स्पेनसे मुसलमान पिछले कालमें निकले। इसका वर्णन आगे आयेगा।

यहाँ हम इतना बतला देना चाहते हैं कि इस्लाम धर्मपर यह आक्षेप करना कि वह तलवारके बलसे संसारमें फैला, सर्वथा ठीक नहीं है, क्योंकि इस्लामके सिद्धान्त एक पृथक् वस्तु हैं और इस्लामकी राजनीतिक शक्तिका देशोंमें बढ़ना और बात है।

सिन्धपर इस्लामी आक्रमण

जब इस्लामी सेनाओंने फारसकी ओर प्रस्थान किया उसी समय सिन्धपर उनके आक्रमण आरम्भ हुए। पहिले दो-तीन आक्रमण तो केवल साधारण लूट-मारके तौरपर थे और उनका कुछ परिणाम न हुआ। अन्तको संवत् ७६८ (सन् ७११ ई०) में अबुल (मुहम्मद बीन ?)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कासिम सेना लेकर सिन्धपर चढ़ा। बड़ी वीरतासे आर्य राजपूतोंने अरबी सेनासे युद्ध किया। उसी समयसे हमें राजपूतोंकी असाधारण सांग्रामिक क्रिया-विधिपर शोक प्रकट करनेका अवसर मिलता है, क्योंकि इससे आर्योंकी पवित्रता सर्वदाके लिए लुप्त हो गयी।

राजपूतोंमें यह विचार बड़ी मजबूतीसे जम गया था कि रणभूमिमें मर जाना ही राजपूतका कर्तव्य है। इसी युद्धमें जब इस्लामी सेनाने एक दुर्गपर आक्रमण किया तो राजपूत मरनेके लिए तैयार हो गये। उन्होंने एक बड़ी भारी चिता तैयार कर ली जिसमें पहिले स्त्रियाँ और बालक भस्मीभूत हो गये, बादको पुरुषोंने स्नान करके और एक दूसरेसे नमस्कार-प्रणाम कहकर दुर्गका द्वार खोला और आक्रामकोंपर जा पड़े। इस तरह प्रत्येक मनुष्य कटकर मर गया। राजपूत स्त्रियोंकी वीरताकी एक विचित्र कथाका वर्णन भी इस युद्धमें मिलता है। सिन्धका बड़ा राजा दाहर जब रणक्षेत्रमें मारा गया तो उसकी दो कन्याएँ मुसलमान सेनापति कासिमके हाथ पड़ गयीं। उसने उनको उपहार-स्वरूप खलीफाके पास भेज दिया। उन कन्याओंके हृदयमें प्रत्यपकारकी अग्नि प्रज्वलित हो रही थी। जब वे खलीफाके पास पहुँचीं तो रोने लगीं। उनसे कारण पूछा गया तो उन्होंने बताया कि तुम्हारे सेनापतिने पहिले हमसे दुराचरण करके पीछे तुम्हारे पास भेजा है। खलीफाने आज्ञा दी कि कासिमका वध करके उसका शरीर भूसेसे भरकर वापस भेजा जाय। जब उन्होंने अपने पिताके घातकका शरीर देख लिया तो यथार्थ बात कह दी और स्वयं विष खाकर मृत्युका आलिंगन किया।

सिन्धकी विजय बहुत कुछ कासिमकी वीरताके कारण हुई। जब वह मारा गया तो सिन्ध शनैः-शनैः मुसलमानोंके हाथसे निकलने लगा और संवत् ८०७ (सन् ७५० ई०) में राजपूतोंने मुसलमानोंको निकालकर पुनः अपना अधिकार जमा लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतवर्षपर इस्लामी आक्रमण

भारतवर्षपर बड़े वेगका इस्लामी आक्रमण दो सौ वर्ष पश्चात् संवत् १०५७ (सन् १००० ई०) में प्रारम्भ हुआ। उस समयतक इस्लामने अफ़गानिस्तान आदि देशोंपर अधिकार करके अपने आपको भली भाँति दृढ़ कर लिया था। इतने विलम्बका कारण यह था कि भारतके उत्तर और दक्षिणमें उस समय आर्योंके दृढ़ राज्य स्थापित थे। पश्चिमोत्तरमें वीर राजपूतोंकी भिन्न-भिन्न जातियाँ राज्य करती थीं। उन सबोंमें कन्नौजका राज्य सबसे शक्तिशाली था। उन्होंने अपनी वीरताका प्रमाण सिन्धमें पूरी तरहसे दे दिया था। बिहारमें पाल-वंशका राज्य था। पश्चिममें मालवाका राज्य था, जहाँ विक्रमादित्यकी कथाएँ प्रत्येककी जिह्वापर थीं। भारतके दक्षिणमें तीन बड़े कुल राज्य करते थे—वीरकुल जिसकी राजधानी तलगाओंमें थी जो वर्तमान मैसूर राज्यमें है, चोलकुल जो पहिले कुम्भकोणम् और फिर तंजौरमें राज्य करता था और पाण्ड्यकुल जिसकी राजधानी मदुरामें थी जो दक्षिण भारतमें मथुराके नामपर बसायी गयी थी। यह राज्य विक्रमसे चार सौ वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था। इसके एक सौ सोलहवें राजाने मलिक काफूरके साथ युद्ध किया। इसके अनन्तर भिन्न-भिन्न आर्यकुल अठारहवीं शताब्दीपर्यन्त मदुरापर राज्य करते रहे।

विजयनगर राज्यकी स्थापना

दक्षिणमें सबसे बलवान् विजयनगरका राज्य बारहवीं शताब्दीमें स्थापित हुआ। इसकी राजधानीके खण्डहर तुंगभद्रा नदीपर बिलारी ज़िलेमें पाये जाते हैं। चार शताब्दियोंतक विजयनगरके राजा दक्षिणके मुसलमान राजाओंसे युद्ध करते रहे। इस रियासतमें वेद और शास्त्रोंको पुनः प्रचलित करनेवाले दो बड़े विद्वान् हुए हैं—एक माधवाचार्य और दूसरे सायणाचार्य। माधवाचार्य विजयनगरके राजाके मन्त्री थे। इन्होंने संस्कृत-पुस्तकोंके अनुवाद और प्रकाशनके लिए एक मण्डल बनाया था जिसमें बड़े बड़े पण्डित काम करते थे। सायणाचार्य सबके अनुवादोंकी

परीक्षा करते थे। इसी प्रकार उत्तर भारतमें ११वीं शताब्दीसे लेकर १६ वीं शताब्दीके अन्ततक हिन्दू राजा नित्य मुसलमान आक्रामकों और उनके उत्तराधिकारियोंसे युद्ध करते रहे। सत्य तो यह है कि अकबरके समय--संवत् १६१३ (सन् १५५६ ई०)--से पहिले उत्तर भारतके अन्दर मुसलमानोंका राज्य पूर्णतया स्थापित न हो सका। उसी समयके लगभग अर्थात् संवत् १६२२ (सन् १५६५ ई०) में तालीकोटके संग्रामके अनन्तर दक्षिण भारतकी विजयनगर रियासतकी समाप्ति हो गयी।

राजपूतोंने उत्तर भारतकी समभूमियोंको छोड़कर राजपूतानेमें जा अपनी रियासतें स्थापित कीं और उनमेंसे चित्तौड़ने मुगलोंका अधिकार पूर्णतया स्वीकार न किया। अकबरका शासनकाल व्यतीत हुए अभी सौ ही वर्ष हुए थे कि औरंगजेबके कालमें इधर राजपूतोंने सिर उठाना आरम्भ किया, उधर दक्षिण भारतमें मराठोंने अपने राज्यकी नींव डाल ली। उत्तरमें सिखोंकी राजनीतिक शक्तिका प्रसार आरम्भ हो गया। इन सबका वृत्तान्त अपने-अपने स्थलपर दिया जायगा। यहाँ हम केवल यह असत्य तथा आधार-रहित विचार दूर करना चाहते हैं कि आर्यावर्त सुगमतया मुसलमानोंका शिकार हुआ।

छः सौ वर्षव्यापी संग्राम

संवत् १०५७ (सन् १००० ई०) से लेकर संवत् १६१३ (सन् १५५६ ई०) तक अर्थात् छः सौ वर्षपर्यन्त आर्योंने मुसलमानोंसे युद्ध किया। आर्यों और मुसलमानोंके बीच युद्धका विचार उस समयतक दूर न हुआ जबतक अकबरने राजगद्दीपर बैठकर हिन्दू-मुसलमानोंका भेद-भाव दूर न किया। यदि औरंगजेबकी नीतिसे यह भेद-भाव पुनर्जीवित न होता तो आर्यावर्तके वर्तमान कालका इतिहास सर्वथा भिन्न होता। संवत् १०५७ (सन् १००० ई०) से लेकर शहाबुद्दीन गोरीके समय तक अर्थात् दो सौ वर्षपर्यन्त तो आक्रामक केवल आते और लूट-मार कर लौट जाते थे। तत्पश्चात् संवत् १२६३ (सन् १२०६ ई०) में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुलाम वंशने दिल्लीपर अधिकार कर लिया और उसके बाद चार सौ वर्ष-तक एकके पीछे दूसरे कई वंश दिल्लीके सिंहासनपर बैठते रहे। पर इससे यह न समझना चाहिये कि आर्यावर्तमें मुसलमानोंका राज्य स्थापित हो गया था। हाँ, यह बात सत्य है कि दिल्लीका सिंहासन जो प्राचीन कालसे भारतका सबसे बड़ा सिंहासन समझा जाता था, उनके अधिकारमें था। परन्तु दिल्ली नगरसे कुछ ही कोसोंकी दूरीपर किसीको यह ज्ञात भी न था कि दिल्लीमें कौन राज्य कर रहा है। स्थान-स्थानपर आर्योंकी छोटी-छोटी रियासतें अपना प्रबन्ध करती थीं और जहाँ रियासतें न थीं वहाँ छोटे-छोटे ग्राम अपना स्वतन्त्र प्रबन्ध करते थे। यदि कोई मुसल-मानी सेना आक्रमण कर देती थी तो वे रियासतें उसे कुछ रुपया कर्के रूपमें देकर अपना पीछा छुड़ा लेती थीं। इसी प्रकार बंगाल और दक्षिणके कई भागोंमें मुसलमान रियासतें भी स्थापित हो गयी थीं। परन्तु इन शताब्दियोंमें स्थान-स्थानपर आर्यों और मुसलमानोंका राज-नीतिक संग्राम पाया जाता है। दिल्लीका राजा यदि बलवान् होता था तो वह लूट-मारकर अधिक कर ले लेता था और यदि निर्बल होता था तो रियासतें स्वतन्त्र हो जाती थीं।

बौद्धों और आर्योंके धार्मिक संग्रामके अनन्तर छः शताब्दियाँ भारत-वर्षमें एक राजनीतिक संग्राममें व्यतीत हुईं। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यहाँ लिख दिया जाता है। छः शताब्दियाँ दो भागोंमें विभक्त की जा सकती हैं। पहिले भागमें दो सौ वर्षतक मुसलमान आक्रामक आते और लौट जाते रहे, दूसरे भागमें चार सौ वर्षतक मुसलमान आक्रमणकारी भारतवर्षमें घर बनाकर इधर-उधर आक्रमण करते रहे, पर पंजाबके सीमान्तपर पहली मुठभेड़ मुसलमानोंकी ओरसे नहीं, बल्कि आर्योंकी ओरसे हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्नीसवाँ प्रकरण

पश्चिमोत्तर सीमाके आक्रमण

गजनीपर जयपालका आक्रमण

संवत् १०३६ विक्रमी (सन् ९७९ ई०) में सीमान्तपर अफगानोंकी लूट-मारसे दुःखित होकर पंजाबके राजा जयपालने उनकी राजधानी गजनीपर आक्रमण किया। शरद् ऋतु आ गयी थी। पंजाबके राजपूत अफगानिस्तानके पर्वतोंके शीतसे परिचित न थे और न वे पर्याप्त यात्रा-सामग्री ही ले गये थे। इसलिए जान और मालकी बहुत हानि हुई और वे अफगानी सेनाके साथ युद्ध न कर सके। ५० हाथी और एक लाख रुपया सुबुक्तगीनको देना अंगीकार करके वे लौट आये।

सुबुक्तगीनका आक्रमण

यह लोकवाद है कि लौट आनेपर राजा जयपालको ब्राह्मण मन्त्रियोंने यह सम्मति दी कि म्लेच्छके साथ प्रतिज्ञापालन करना कोई धर्म नहीं है, अतएव उसे वह रुपया न भेजना चाहिये। दूसरी ओर क्षत्रिय मन्त्री यह सम्मति देते थे कि प्रतिज्ञा अवश्य पूरी करनी चाहिये। ब्राह्मणोंकी सम्मतिकी विजय हुई। अतः सुबुक्तगीनने पुनः पंजाबपर आक्रमण किया। राजा जयपालकी पराजय हुई और सुबुक्तगीन पेशावरमें अपना सैन्यावास निश्चित करके दस सहस्र सेना वहाँ छोड़कर लौट गया। इस प्रकार पर्वतीय मार्गोंके दोनों ओर अफगानोंका अधिकार हो गया। आर्योंके लिए इन मार्गोंको रोकना ही देशके लिए सबसे बड़ी रक्षा थी। पेशावरको अपने हाथसे खोकर उन्होंने अपनेको सर्वदाके लिए

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ़गानी आक्रमणोंका लक्ष्य बना लिया। सुबुक्तगीन मध्य एशियामें युद्ध करता रहा और संवत् १०५४ (सन् ९९७ ई०) में मर गया।

महमूद गजनवी

सुबुक्तगीनके स्थानपर उसका पुत्र महमूद १६ वर्षकी उम्रमें राजगद्दीपर बैठा। चार वर्ष तक तो वह खैबर दर्रेके उस ओर अपना राज्य दृढ़ करता रहा। पीछे उसने भारतवर्षपर आक्रमण करना अपने जीवनका लक्ष्य बना लिया। उसे आर्यावर्तसे लूट-मारके द्वारा रत्न आदि ले जाकर अपने राज्यको धनाढ्य करनेकी बड़ी लालसा थी। परन्तु साथ ही उसे यौवनावस्थामें इस्लामी उत्साह भी खूब था। वह आर्योंके देशको विजित करके यहाँ इस्लाम धर्म फैलाना चाहता था। खलीफाने उसका उत्साह देखकर उसे बड़ा भारी धार्मिक पद दिया। उसने भारतवर्षपर १७ आक्रमण किये जिनमेंसे १३ तो पंजाबको पराधीन करनेके आशयसे किये गये थे। एक आक्रमण काश्मीरपर हुआ जिसमें उसे बड़ी सफलता हुई और तीन आक्रमण कन्नौज, ग्वालियर और सोमनाथपर केवल लूट-मारके विचारसे किये गये थे।

पंजाबपर आक्रमण करके उसने जयपालको पराजित किया। जयपाल दो बार पराजित हो चुका था इसलिए राजपूतोंके नियमके अनुसार वह राज्य न कर सकता था। उसने सिंहासन अपने पुत्रको अर्पित किया और स्वयं शाही वस्त्र धारण किये हुए चितापर जलकर मर गया। पंजाबपर छठे आक्रमणमें जो संवत् १०६५ (सन् १००८ ई०) में हुआ, अवध और मालवाके राजाओंने भी राजा आनन्दपालकी सहायताके लिए सेनाएँ भेजीं। आर्यमहिलाओंने अपने भूषण उतारकर दे दिये। निर्धन स्त्रियोंने रुई कातना आरम्भ किया जिसमें युद्धमें वे अपने पतियोंकी सहायता कर सकें। महमूद इससे इतना घबड़ाया कि उसने पेशावर जाकर ही साँस ली। जो सेना पंजाबकी ओर भेजी गयी थी उसपर गखड़ राजपूत टूट पड़े और उन्होंने चार सहस्र अफ़ग़ानोंका वध कर डाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोमनाथपर आक्रमण

परन्तु महमूद हरएक आक्रमणमें देशके कुछ न कुछ भागपर अधिकार करता ही रहा। अन्तको पंजाबके पश्चिमी जिले उसके अधिकारमें आ गये। थानेश्वर और नगरकोटके मन्दिरोंसे बहुत-सा लूटका माल उसे प्राप्त हुआ। उसका १६ वाँ आक्रमण संवत् १०८२ (सन् १०२५ ई०) में गुजरातमें सोमनाथके मन्दिरपर हुआ। उसकी सेनाको कई बार पीछे हटना पड़ा। अपने साथियोंका दिल टूटता हुए देखकर उसने उनसे कहा—"कहाँ भागकर जाओगे, तुम्हारा घर तो हजारों मीलकी दूरीपर है, हिन्दू तुम्हें काट डालेंगे, अपमानकी मौतसे लड़कर मरना हजार गुना अच्छा है।" इससे उनकी हिम्मत बढ़ गयी और एक बार ही सबके सब मन्दिरपर टूट पड़े। राजपूत सेनामें सन्त्रास उत्पन्न हो गया और वे समुद्रमें नौका डालकर भाग खड़े हुए। मन्दिरमें शिवलिंगकी एक मूर्ति थी जिसको महमूदने धार्मिक उत्तेजनामें आकर तोड़ डाला। यह असत्य है कि उसमेंसे महमूदको बहुमूल्य रत्न प्राप्त हुए, क्योंकि वह मूर्ति पाषाणकी थी। महमूद मन्दिरके स्तम्भ उखाड़कर गजनी ले गया। उनमेंसे एक उसने मसजिदमें और एक अपने महलमें लगा दिया और दो मक्का-मदीनाको भेज दिये। जब महमूदकी सेना गजनीको लौट रही थी तो एक ब्राह्मणने सेनाको नष्ट कर देनेका निश्चय किया और महमूदका मार्गदर्शक बनकर उसे सिन्धके मरुस्थलमें ऐसी ओर ले गया जहाँसे निकलकर बचना असम्भव था। कुछ दूर जानेपर सैनिकोंको संशय उत्पन्न हो गया और उन्होंने मार्गदर्शकका वध कर डाला। समस्त सेना नष्ट होते-होते बची। गुरुवार, संवत् १०८७ के सौर १७ वैशाख (३० अप्रैल सन् १०३० ई०) को महमूदकी मृत्यु हो गयी।

इतनी दूरीके आक्रमणसे महमूदकी सेनाका बचकर लौट जाना यह बात प्रकट करता है कि आर्यावर्तके भिन्न-भिन्न राजाओंकी मिलकर युद्ध करनेकी शक्ति सर्वथा लुप्त हो चुकी थी। यहाँतक कि किसीको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतना विचार भी न आया कि मार्गमें मनुष्योंके भोजन तथा घोड़ोंके खानेकी सामग्रीको जलाकर सेनाको भूखसे ही नष्ट कर दे। इन आक्रमणोंका परिणाम यह हुआ कि पंजाबके पश्चिमी जिले गजनीके अधीन हो गये और चिरकालपर्यन्त इसी दशामें बने रहे।

गजनी और गोरके वंशोंमें सदा युद्ध हुआ करता था। एक समय गोरका शासक गजनीके सब भद्र पुरुषोंको कैद करके ले गया। उसने उनका वध करके उनके रक्तका प्रयोग गोरका दुर्ग बनानेमें किया।

गोर-वंश

संवत् १२०९ (सन् ११५२ ई०) में गजनीपर गोर-वंशका अधिकार हो गया। महमूदके कुलका अन्तिम बादशाह खुसरो पंजाबमें भाग आया। संवत् १२४३ (सन् ११८६ ई०) में शहाबुद्दीन गोरीने पंजाबका भाग भी उससे ले लिया और महमूदकी तरह भारतवर्षपर विजय प्राप्त करनेका निश्चय किया।

पंजाबके बाद अब उत्तर भारतको भी मुसलमान आक्रामकोंसे युद्ध करना पड़ा। उत्तर भारतमें उस समय राजपूतोंकी शक्तिशाली रियासतें स्थापित हो चुकी थीं जिनमें तीन बहुत अधिक विख्यात थीं—दिल्लीमें तोमर-वंशके राजा राज्य करते थे, अजमेरमें चौहान-वंश था और कन्नौजमें राठौरोंका राज्य था। इनके अतिरिक्त वंग देशमें सेन-वंशके राजा राज्य करते थे जिनकी राजधानी नदिया थी। इस कालमें उत्तर भारतमें विद्या तथा धनकी सब तरहसे उन्नति हो रही थी। काशी और नदिया विद्याके केन्द्रस्थान थे। सहस्रों विद्यार्थी इन स्थानोंमें अध्ययन करते थे।

धनके विचारसे कन्नौज सबसे बढ़कर था। कहा जाता है कि यह नगर इतना बड़ा था कि बीस मीलसे अधिक इसकी परिधि थी और नगरके अन्दर केवल पान बनाकर बेचनेवाले तम्बोलियोंकी दो सहस्र दूकानें थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वेषकी अग्नि भारतवर्षमें सदैव प्रज्वलित रही है। यह द्वेष इतना प्रबल था कि भारतकी भिन्न-भिन्न रियासतोंका विदेशी आक्रामकोंके विरुद्ध एक होना बिलकुल असम्भव था। यह रोग आर्यावर्तमें महाभारतके युद्धकालसे चला आता है। उसी समयसे कलियुगका भी प्रारम्भ होता है।

पृथ्वीराज

दिल्लीके राजा प्राचीन कालसे ही भारतके राजाओंमें महाराजाधिराज कहलाते चले आये हैं। परन्तु कन्नौजमें उस समय इतना ऐश्वर्य था कि कन्नौजका राठौर राजा अपने आपको 'महाराजाधिराज' पदके योग्य समझता था। दिल्लीका तोमर राजा अनंगपाल मृत्युके समय अपना राज्य अपने दौहित्र पृथ्वीराजको दे गया। पृथ्वीराज चौहान राजपूत था और अजमेरमें राज्य करता था। कन्नौजके राजा जयचन्दके हृदयमें पृथ्वीराजके विरुद्ध द्वेषकी अग्नि प्रज्वलित हुई। राजा जयचन्दने महाराजाधिराजका पद प्राप्त करनेके लिए अश्वमेध यज्ञ किया। उसके साथ ही उसकी कन्या संयुक्ताका स्वयंवर भी होनेवाला था।

इस यज्ञमें सब सेवकोंका काम छोटे-छोटे राजा लोग करते थे। पृथ्वीराज दरबानका काम करनेके लिए बुलाया गया था। पृथ्वीराजने आना स्वीकार नहीं किया। उसके स्थानपर उसकी पीतलकी मूर्ति बनाकर खड़ी की गयी। जयचन्दकी पुत्री पृथ्वीराजकी वीरताकी प्रशंसा सुनकर उसके साथ आन्तरिक प्रेम करने लगी थी। जब स्वयंवरका समय आया तो कन्याने सब राजाओंके आगेसे चलकर फूलोंका हार उस मूर्तिके गलेमें डाल दिया। ऐसा कहा जाता है कि पृथ्वीराजको यह सब समाचार विदित था, क्योंकि वह भेष बदले हुए वहाँ विद्यमान था।

ज्यों ही संयुक्ताने ऐसा किया, वह उसे अपने घोड़ेकी पीठपर चढ़ाकर वहाँसे बातकी बातमें गायब हो गया। बाहर उसकी सेना खड़ी थी। सेनाको साथ लिये हुए वह अपने घर दिल्ली आ पहुँचा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस अपमानसे जलकर जयचन्दने शहाबुद्दीनको बुलाया। दिल्ली-विजयके लिए विदेशी शक्तिको बुलाना बड़ी ही मूर्खता और अभाग्यकी बात थी। ऐसी मूर्खता लोग सदासे करते चले आये हैं जिसका फल उन्हें दुःखके साथ सहन करना पड़ा है।

थानेश्वरका युद्ध

शहाबुद्दीनने भारतपर पहिला आक्रमण संवत् १२४८ (सन् ११९१ ई०) में किया। थानेश्वरमें पृथ्वीराजने उसे पराजित किया। शहाबुद्दीन स्वयं आघातोंके प्रहारसे गिरनेको था कि उसे उसका एक अश्वारोही अपने घोड़ेकी पीठपर बिठाकर रणभूमिसे बाहर ले गया। राजपूतोंने चालीस मील-पर्यन्त शत्रुका पीछा किया। लौटकर शहाबुद्दीनने अपने सरदारोंके गलेमें यह प्रकट करनेके लिए तोबड़े बाँधे कि वे मनुष्य नहीं बल्कि गधे थे।

पृथ्वीराजकी राजसभाके प्रसिद्ध कवि चन्दने अपनी पुस्तक 'पृथ्वी-राज-रासो'में लिखा है कि शहाबुद्दीन कई बार पराजित हुआ। एक बार वह कैद कर लिया गया जहाँसे उसने बहुमूल्य भेंट देने और पृथ्वीराजसे दयाके लिए प्रार्थना करनेपर छुटकारा पाया। परन्तु राज-पूतोंको घरके संग्रामोंने नष्ट कर दिया। जब शहाबुद्दीन दो वर्ष बाद सेना लेकर आया तो पृथ्वीराजके साथ १०८ राजाओंके स्थानपर केवल ६४ राजा रह गये थे। परन्तु यह कोई बड़ी बात न थी। जब पानीपतके क्षेत्रमें दोनों सेनाएँ एकत्र हुईं तो पृथ्वीराजने अफगान सरदारको कहला भेजा कि प्राण बचाकर लौट जाओ नहीं तो इस बार तुम जीवित न बचोगे। गोरीने बड़ी नम्रतासे किन्तु छलकपटसे भरा हुआ उत्तर दिया कि मैं अपने बड़े भाईकी आज्ञासे आया हूँ और उसकी आज्ञाके बिना लौट नहीं सकता। यदि कुछ दिनोंका अवसर मिले तो मैं अपने भाईसे, जो बादशाह है, आज्ञा प्राप्त कर लूँ। राजपूत समय देकर स्वयं प्रमादी हो गये और दिन-रात बेफिक्रीमें बिताने लगे। एक रातको जब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजपूत बिलकुल बेखबर थे, शहाबुद्दीनने उनपर आक्रमण करके सेनाको भगा दिया और पृथ्वीराजको कैद कर लिया।*

इस प्रकार गोरीका दिल्लीपर अधिकार हो गया। दूसरे वर्ष उसने कन्नौजपर आक्रमण करके राजा जयचन्दको पराजित किया। जयचन्द मारा भी गया। वीर राजपूतोंने विदेशी राज्यके अधीन रहना अस्वीकार किया। वे अपने-अपने गृहोंको छोड़कर उस मरुस्थलमें जा बसे जो उनके नामसे राजपूताना कहलाता है। उन्होंने उस प्रान्तमें जाकर अपने पृथक्-पृथक् राज्य स्थापित किये।

गोरीका सेनापति बख्त्यार खिलजी संवत् १२५६ (सन् ११९९ ई०) में आगे बढ़ा और बिहारको लाँघता हुआ संवत् १२६० (सन्

*पृथ्वीराज-रासोमें इस घटनाका वर्णन इस प्रकार है—"पृथ्वीराजको शहाबुद्दीन कैद करके अपने साथ ले गया। उसके नेत्र निकालकर उसको एक छोटी एवं अँधेरी कोठरीमें कैद कर दिया। चन्द नामक एक श्रद्धालु राजपूत अपने स्वामीका अन्तिम समयतक साथ देनेके लिए वेष बदलकर यवनोंकी सेनामें प्रविष्ट हो गया। शहाबुद्दीनने गजनी पहुँचकर एक बड़ा भारी दरबार किया जिसमें बड़े-बड़े तीर-कमान और तलवार चलानेमें निपुण और सुप्रसिद्ध योद्धा बुलाये गये। वीर चन्दने इस अवसरको उत्तम समझा और उसी प्रकार वेष बदले हुए दरबारमें उपस्थित होकर अपनी कविता तथा वार्तालापकी विधिसे इस्लामी सेनापतिको मोहित कर लिया। वार्तालापमें उसने धनुर्विद्याकी आलोचना आरम्भ की जिसमें उसने संसारके समस्त प्रसिद्ध और अद्वितीय तीर चलानेवालोंका नाम उपस्थित करते हुए पृथ्वीराजको प्रधान पद दिया। उसने कहा कि इस समय वह चक्षुहीन तथा मृत्युशय्यापर है, किन्तु अब भी यदि वह इस दरबारमें बाणोंके चमत्कार दिखानेके लिए बुलाया जाय तो निश्चयपूर्वक वह सब तीर चलानेवालोंसे बाजी ले जायगा और उसका निशाना कदापि असफल न होगा। शहाबुद्दीनने तत्काल आज्ञा दी कि वह कैदी दरबार खासमें उपस्थित किया जाय। (अगले पृष्ठके नीचे)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२०३ ई०) में बंगाल जा पहुँचा। ब्राह्मण मन्त्री राजा लक्ष्मणसेनको नदियासे अपनी राजधानी किसी दूर स्थानमें बदलनेकी सम्मति देते रहे। राजा ८० वर्षका वृद्ध था। वह सोचता ही रह गया। इतनेमें आक्रमण करनेवाले सिरपर आ पहुँचे और जब राजा भोजन कर रहा था उसी समय राजभवनमें जा प्रविष्ट हुए। राजा एक पिछले द्वारसे भाग गया और पुरीमें जाकर आयुके शेष दिन पूजामें व्यतीत करने लगा।

पंजाबकी लड़ाकी जातियाँ अब भी पराधीन नहीं हुई थीं। संवत् १२६० (सन् १२०३ ई०) में गखड़ जातिने पर्वतोंसे निकलकर समूचे प्रान्तपर अधिकार कर लिया। इसके तीन वर्ष अनन्तर उनके एक समूह ने सिन्ध नदीको पार कर यवनोंकी सेनाको व्याकुल करके शाहबुद्दीनका वध कर डाला। शहाबुद्दीन उस समय अपने शिविरमें विश्राम कर रहा

(पिछले पृष्ठ से आगे)

चन्दने उस समय संस्कृतमें एक श्लोक पढ़ा जिसका अभिप्राय पृथ्वीराजको छोड़कर और किसीने न समझा। उसने पृथ्वीराजसे कहा कि 'यही समय शत्रुसे बदला लेनेका है; अब फिर ऐसा समय हाथ न आयेगा।'

[इस सम्बन्धमें एक सोरठा प्रचलित है जो इस प्रकार है
"अबकी चढ़ै कमान, को जाने फिर कब चढ़ै।
जन चूकै चौहान, याको मारै इक्क सर॥"]

शहाबुद्दीनने पृथ्वीराज और अन्य समस्त तीर चलानेवालोंको अपना-अपना चमत्कार दिखानेकी आज्ञा दी। वह स्वयं एक बड़े मीनारपर सबके चमत्कारोंकी परीक्षा करनेके लिए चढ़ गया। वह प्रत्येकको बारी-बारीसे आज्ञा देता था। ज्यों ही पृथ्वीराजकी बारी आयी उसने केवल उसके शब्दकी सहायतासे ऐसा तीर मारा कि शहाबुद्दीन सीधा भूमिपर गिर पड़ा और गिरते ही परलोकको सिधार गया। चन्द और पृथ्वीराज-को शत्रुओंने नाना प्रकारकी पीड़ाएँ तथा कष्ट दिये जिनसे उन दोनोंने अपने प्राण त्याग दिये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। उसकी मृत्युपर, उसके मन्त्री कुतुबुद्दीनने अपने आपको दिल्लीका बादशाह प्रसिद्ध किया। कुतुबुद्दीनने दासकी अवस्थासे उन्नति की थी। इसलिए वह और उसके अनन्तर आनेवाले शासक गुलाम-खान्दानके कहे जाते थे।

आर्योंकी राजनीतिक अवनतिके कारण

अब मुसलमान आक्रामकोंका विश्रामकाल आरम्भ होता है। यह देखकर विस्मय होता है कि किस प्रकार समस्त देशके अन्दर आर्योंका राज्य विद्यमान होनेपर भी एक छोटेसे आक्रामक-समूहका अधिकार दिल्ली-पर हो गया। दो बड़ी बातें हैं जिनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है। एक तो यह कि आर्य लोग शताब्दियोंसे अपने देशकी चहारदीवारीके अन्दर बन्द रहे। इससे शेष संसारसे उनका असहयोग-सा हो गया। किसी जातिकी शक्ति तथा उत्साह अन्य विदेशी जातियोंके साथ युद्ध करने और उनके हमलेसे बचनेके लिए सदा तत्पर रहनेसे बढ़ता है। आर्योंमें यह उत्साह इतना लुप्त हो चुका था कि उन्हें विदेशी जातियोंके नामसे भय लगता था। जब विदेशी लोगोंसे इस तरहका कोई सम्बन्ध नहीं होता तो समस्त शक्ति अपने ही अन्दर व्यय हो जाती है और एक होकर काम करनेकी शक्तिका विचारतक दूर हो जाता है। राजपूत राजा अपने भाइयोंसे इतना द्वेष करते थे कि अपनी रियासतोंको अन्य जातिके आक्र-मणसे बचानेके लिए एक होनेका विचारतक उनके हृदयमें नहीं पैदा हुआ।

अवनतिका दूसरा बड़ा कारण जाति-पाँतिकी खराबी थी। जब देश-पर आक्रमणोंका होना आरम्भ हुआ तो केवल राजपूतोंकी ही एक जाति थी जो लड़ना और देशकी रक्षा करना अपना कर्तव्य समझती थी। अन्य लोगोंको कुछ चिन्ता न थी कि कौन आता है, कौन जाता है। लुट-लुटाकर और रो-धोकर चुप हो जाते थे।

पंजाबके किसी भी आक्रमणसे यह प्रतीत नहीं होता कि साधारण जनताने अपने देशमें होनेवाले राज्य-परिवर्तनका अनुभव किया हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्भव है, इसका यह भी कारण हो कि ग्रामोंके रहनेवाले राजनीतिक कार्योंमें इतने स्वतन्त्र थे कि केन्द्रस्थ शासन(सेण्ट्रल गवर्नमेण्ट)के साथ उनका कुछ सम्बन्ध ही न था। इसलिए जब केन्द्रस्थ शासनकी बागडोर एकसे दूसरेके हाथमें चली जाती थी तो इससे उन्हें कुछ सरोकार न रहता था।

जब दिल्लीमें राजपूतोंके स्थानपर गुलाम खान्दानके बादशाह सिंहासनपर आ बैठे तब भी ग्रामोंके रहनेवाले अपनी प्राचीन रीतिपर स्थित थे। वे इस परिवर्तनका केवल उस समय ही अनुभव करते थे जब आक्रामकोंकी सेना उनके समीप आती थी। दूसरी ओर राजाओंकी यह दशा थी कि जब विदेशी सेना आक्रमण करती थी तो कुछ कर देकर उससे अपना छुटकारा कर लेते थे।

एक और कारण यह भी है कि चार शताब्दियोंतक केवल दिल्ली ही सारे आर्यावर्तकी राजधानी समझी जाती थी। जब कोई मुसलमान सरदार बादशाहको मारकर आप दिल्लीके सिंहासनपर बैठ जाता था तो वह अपने आपको समस्त देशका अधिराज कहने लगता था, और साधारण पुरुषोंकी दृष्टिमें दिल्लीकी गद्दीपर बैठ जाना ही उस पदको प्राप्त करनेका पर्याप्त उपाय था। इस प्रकार भारतवर्षका अधिराज बनना अत्यन्त सुगम कार्य हो गया। अतः हम देखते हैं कि उस कालमें कई मनचले आदमियोंने एक दूसरेके बाद अपने आपको दिल्लीका बादशाह प्रसिद्ध करके भिन्न-भिन्न कुलोंकी नींव डाली। इन कुलोंका भारतके लोगोंके इतिहाससे केवल इतना ही सम्बन्ध है कि पहिले तो आक्रामक गजनीकी ओरसे आते थे, अब इन आक्रामकोंने देशके अन्दर ही अपना एक ठिकाना निश्चित कर लिया और इधर-उधर आक्रमण करके लूट-मार जारी रखी। यदि उनके बीचमें कोई भद्र पुरुष उत्पन्न हो जाता था तो वह उस लूट-मारके रुपयेको किसी स्मारकके लिए लगा देता था। अफगानिस्तानसे भी लूटनेवाले कभी-कभी आते रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बीसवाँ प्रकरण

दिल्लीकी सल्तनत

गुलाम-वंश

गुलाम-वंशकी नींव कुतुबुद्दीनने डाली। यह वंश संवत् १३४७ (सन् १२९० ई०) तक रहा। इस वंशमें अल्तमश सबसे विख्यात हुआ है। इसने सिन्ध और बंगालके मुसलमान बादशाहोंको, जो स्वयं बादशाह बन बैठे थे, अपने अधीन किया। उसकी पुत्री रजिया उसके अनन्तर सिंहासनपर आरूढ़ हुई। एक हब्शी गुलामपर अधिक अनुग्रह करनेके कारण वह सिंहासनसे उतारकर मार डाली गयी।

संवत् १३०० (सन् १२४३ ई०) में मध्य एशियासे मुगलोंने आक्रमण करना आरम्भ किया। इधर पंजाबके गखड़ राजपूत और मेवाड़के पार्वत्य पुरुषोंने राजद्रोही होकर सारे उत्तर भारतको राजधानी-तक जीत लिया। उधर मालवा, राजपूताना और बुन्देलखण्डके आर्योंने न केवल अपने आपको स्वतन्त्र कर लिया, बल्कि वे यमुनाके दूसरे तटपर दिल्लीतक आ पहुचे। गुलाम वंशके गयासुद्दीन बलबनने अपना समय उनके विरुद्ध लड़ने और अपने प्रान्तके शासकोंको अपने अधीन करनेमें व्यय किया। उसने कई अफसरोंको बुलाकर उनका वध कर डाला। दिल्लीके दक्षिणमें मेवातके यादव राजपूत रहते थे। कहा जाता है कि उनकी स्वतन्त्रतासे कुपित होकर उसने उनपर आक्रमण किया और लगभग एक लाख राजपूतोंको मारकर उनकी जातिकी समाप्ति कर दी। बलबन संवत् १३४४ (सन् १२८७ ई०) में मर गया। उसका उत्तराधिकारी तीन वर्ष अनन्तर विषसे मारा गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खिलजी-वंश

संवत् १३४७ (सन् १२९० ई०) में जलालुद्दीन खिलजी नामक सरदारने दिल्लीपर अधिकार कर लिया और खिलजी-वंशकी नींव डाली। संवत् १३७७ (सन् १३२० ई०) तक दिल्लीपर उसका अधिकार रहा। जलालुद्दीनका भतीजा अलाउद्दीन पहिले तो मालवा और बुन्देल-खण्डके राजपूतोंके साथ युद्ध करता रहा, पर उधर बहुत सफलता न देखकर उसे दक्षिणपर आक्रमण करनेकी सूझी। वह केवल आठ सहस्र अश्वारोही साथ लेकर उधर चल पड़ा। मार्गमें उसने यह प्रसिद्ध किया कि हम अपने चचाके दरबारसे भागकर राजमहेन्द्रीके राजाके पास राजाश्रयके लिए जा रहे हैं। राजाओंने भागे हुएको आश्रय देना ही धर्म समझा और उसे किसीने न रोका, यहाँतक कि उसने महाराष्ट्रके आर्यराज्यकी राजधानी देवगढ़ (दौलताबाद)पर अकस्मात् आक्रमण किया। उसने प्रकट किया कि बादशाहकी सेना अभी पीछे आ रही है। राजपूत जरा भी तैयार न थे। लूटका बहुतसा माल लेकर वह लौट गया। उसने अपने वृद्ध चचाको लूटका माल विभक्त करनेके लिए बुलाया और उसके साथ आलिंगन करते समय उसे मार डाला। संवत् १३५२ (सन् १२९५ ई०) में उसने अपने आपको दिल्लीका बादशाह प्रसिद्ध किया।

उत्तर भारतमें पहिले उसने गुजरातपर आक्रमण करके उसे जीत लिया, पर कतिपय वर्षोंके अनन्तर वह पुनः स्वतत्र हो गया। वह जयपुरके राजपूतोंके साथ भी युद्ध करता रहा। संवत् १३६० (सन् १३०३ ई०) में उसने चित्तौड़पर आक्रमण किया। चित्तौड़की रानी सौन्दर्यमें अद्वितीय थी। उसकी लालसा अलाउद्दीनको उधर खींच लायी। चित्तौड़के राजपूत केशरिया बाना धारण किये हुए शत्रुपर टूट पड़े और एक-एक करके कट मरे। उधर रानी पद्मिनी अपनी तेरह सहस्र सखियोंके साथ चितापर बैठकर भस्मीभूत हो गयी। जो राजपूत बचे वे अर्वली-पर्वतपर चले गये। कुछ काल-उपरान्त लौटकर उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनः चित्तौड़ ले लिया। अलाउद्दीनको मध्य एशियाके मुगल आक्रामकोंके मुकाबलेमें पाँच बार जाना पड़ा। मुगल पराजित हुए, उनके सरदारोंको उसने हाथियोंसे पददलित करवाया और सैनिकोंका निर्दयतासे वध करवा डाला। उसके समयमें बहुतसे मुगलोंने मुसलमान होकर दिल्लीके पास रहना आरम्भ कर दिया था। उनकी संख्या बढ़ती गयी। अलाउद्दीन उनके बलसे इतना भयभीत हुआ कि एक समय उसने पन्द्रह सहस्र मुगलोंका वध कराके उनकी स्त्रियोंको दासी बनाकर बेच दिया।

चित्तौड़से अवकाश मिलनेपर उसने अपनी सेना मलिक काफूरके अधीन दक्षिणमें भेजी। संवत् १३६३ (सन् १३०६ ई०) में मलिक काफूरने देवगढ़के राजाको अधीन किया और बादमें महाराष्ट्र तथा करनाटकपर आक्रमण किया। अलाउद्दीन उस समय मारवाड़के राजपूतोंसे युद्ध कर रहा था।

उसने अपने भतीजोंके नेत्र निकलवाकर उन्हें मरवा डाला और अपने पुत्रको राजद्रोही होनेके कारण कैद कर दिया। वह संवत् १३७२ (सन् १३१५ ई०) में मर गया। उसके स्थानपर मुबारक राजगद्दीपर बैठा, परन्तु वास्तविक बल खुसरो खाँ नामक एक नीच जातिके आर्यके हाथमें था। उसने पहिले काफूरको मरवाया और फिर मुबारकका वध करके स्वयं सिंहासनपर बैठ गया। वह यद्यपि मुसलमान हो गया था, परन्तु हृदयसे वह आर्य था। उसने कदाचित् इस विधिसे दिल्लीमें आर्यराज्य स्थापित करनेका विचार किया हो। वह कुरानको अपने सिंहासनके नीचे रखकर बैठता था। उसने मसजिदोंमें आर्य-मूर्तियाँ स्थापित कर दीं, परन्तु कोई आर्य उसके साथ न मिला। संवत् १३७७ (सन् १३२० ई०) में मुसलमान सरदार विद्रोही हो गये। उन्होंने खुसरोका वध कर डाला।

तुगलक-वंश

गयासुद्दीन तुगलकने, जो तुर्की गुलाम था और बढ़ते-बढ़ते मुलतानका शासक हो गया था, दिल्लीपर अधिकार करके तुगलक-वंशकी नींव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाली। यह वंश संवत् १४७१ (सन् १४१४ ई०) तक कायम रहा। गयासुद्दीनने चार वर्षतक शासन किया। उसके बाद उसका पुत्र मुहम्मद तुगलक दिल्लीकी गद्दीपर बैठा। यह बड़ा हठी और पागल था। इसके पागलपनके कई उदाहरण हैं। मुगल लुटेरे बार-बार आते थे, उनको वह रुपया देकर लौटा देता था। एक बार उसने उत्साहित होकर फारसपर आक्रमण करनेके लिए असंख्य सैनिक भरती किये। जब उन्हें वेतन न मिला तो वे लूट-मार करनेपर कटिबद्ध हो गये। फिर, एक बार उसने एक लाख सिपाही चीनपर आक्रमण करनेके लिए भेजे। वे सबके सब हिमालय पर्वतमें नष्ट हो गये।

एक बार उसने दिल्लीके सब मनुष्योंको दिल्ली छोड़कर देवगढ़में जाकर बसनेकी आज्ञा दी। जब वे देवगढ़ पहुचे तो उसने उनको वापस लौट आनेके लिए कहा। लौटते ही उन्हें पुनः प्रस्थान करनेकी आज्ञा दी गयी। इस तरह दुर्भिक्ष तथा भूखसे सहस्रों मनुष्य मर गये। उसे आखेटका इतना शौक था कि एक बार उसने मनुष्योंका आखेट किया।

शेष समय वह अपने अफसरों तथा उन आर्योंको, जो बार-बार स्वतन्त्र हो जाते थे, दबानेमें व्यतीत करता था। उसने अपने भतीजेको विद्रोहके अपराधमें जीवित जला दिया। करनाटक और तेलंगानामें आर्य राजा स्वतन्त्र हो गये। उन्होंने मुसलमान सेनाको वहाँसे निकाल बाहर किया। जब वह दक्षिणके मुसलमान शासकको दबानेके लिए गया तो इधर मालवा, गुजरात और सिन्धके लोग विद्रोही हो गये।

उसका पुत्र फीरोज तुगलक संवत् १४०८ (सन् १३५२ ई०)के चैत्रमें सिंहासनपर बैठा। वह बहुत भद्र पुरुष था। उसने भारतमें पथिकाश्रम, तालाब, कुएँ, औषधालय, पुल और मसजिदें बनवायीं। यमुनाकी प्राचीन नहर उसीके समयकी है। उसका पुत्र महमूद संवत् १४४५ (सन् १३८८ ई०)में गद्दीपर बैठा। उस समय तुगलक-वंश बहुत निर्बल हो चुका था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तैमूरलंग

तैमूरके आक्रमणने संवत् १४५५ (सन् १३९८ ई०) में इसे बड़ा धक्का दिया। तैमूर अपनी मुगल सेना साथ लेकर दिल्ली पहुँचा। पाँच दिनतक कत्लेआम रहा। गलियोंमें इतने मृतक शरीर पड़े थे कि चलना कठिन हो गया। छठे दिन तैमूरने परमात्माको धन्यवाद देकर दिल्लीसे प्रस्थान किया। कहा जाता है कि वह ७० सहस्र कैदी साथ ले गया। मेरठके समीप किसी बातसे कुपित होकर उसने सबको मार डालनेकी आज्ञा दे दी और हिमालयके नीचेसे होता हुआ लौट गया। उसके चले जानेपर महमूद तुगलक गुजरातसे, जहाँ वह भागकर चला गया था, लौट आया और नाममात्रको ११ वर्ष शासन करके मर गया। उसीके साथ तुगलक-वंशकी समाप्ति हो गयी।

सैयद-वंश

इसके स्थानपर सैयद-वंश दिल्लीमें शासन करने लगा। इस वंशने संवत् १५०७० (सन् १४५० ई०) तक राज्य किया। इस वंशका उत्तराधिकारी पठानोंका लोदी-वंश हुआ जिसने संवत् १५८३ (सन् १५२६ ई०) तक राज्य किया। इन बादशाहोंका राज्य दिल्लीके आस-पास कुछ मीलोंतक ही परिमित था। आर्य राजा सब स्वतन्त्र थे और कई प्रान्तोंमें, जैसे बंगाल और गुजरातमें, मुसलमान शासक स्वतन्त्र बन बैठे थे। संवत् १३९७ (सन् १३४० ई०) में फकीरुद्दीन बंगालका बादशाह बन बैठा और गौरमें उसने अपनी राजधानी बना ली। गुजरात संवत् १४४८ (सन् १३९१ ई०) में स्वतन्त्र हो गया।

बाबर तैमूरके वंशका था। तातारके मुगल बहुत दिनोंसे भारतपर आक्रमण कर लूट-मार करते आये थे। अन्तको उन लोगोंने उसपर अपना अधिकार कर लिया।

दक्षिणकी राजनीतिक अवस्था

यहाँपर दक्षिणकी राजनीतिक अवस्थाका संक्षेपमें वर्णन करना भी आवश्यक है। जब अलाउद्दीनके सेनापतिने दक्षिणपर आक्रमण किया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था उसी समयसे मुसलमानी शासनके चिह्न वहाँ चले आते थे। कुछ कालतक लड़ाई-झगड़े होते रहे। उसके बाद जफर खाँ नामक एक अफगान दक्षिणका शासक बन बैठा। जब मुहम्मद तुगलक़ने उसके विरुद्ध सेना भेजी तो जफर खाँने उसको पराजित कर अपने आपको दक्षिणका बादशाह कहना शुरू किया। यह पुरुष पहिले एक ब्राह्मणका दास था। ब्राह्मण उसके प्रति बड़ा दयालु था और उसकी भावी उन्नतिकी सूचना उसने पहिले ही दे दी थी। इस कारणसे जफर खाँने अपने राज्यका नाम बहमनी (ब्राह्मणी) राज्य रखा। यह राज्य संवत् १४०४ (सन् १३४७ ई०) से संवत् १५८२ (सन् १५२५ ई०) तक रहा। इसकी राजधानी भिन्न-भिन्न कालमें कुलबर्गा, वारनगल और बिदर रही। यद्यपि इसके बादशाह विजयनगर और वारनगलके आर्य-राजाओंके साथ सहयोग करके दिल्लीके विरुद्ध लड़ते रहते, फिर भी यह राज्य दक्षिण भारतमें मुसलमानोंका बल प्रकट करता रहा। दक्षिणके बादशाहों तथा राजाओंकी सेनाओंमें आर्य और मुसलमान मिले-जुले भरती होते थे। जब बलहीन होकर यह राज्य टूटने लगा तो उसके स्थानपर नीचे लिखी हुई पाँच मुसलमानी रियासतें स्थापित हुईं।

आदिलशाही, जिसकी राजधानी बीजापुर थी, संवत् १५४६ (सन् १४८९ ई०) में स्थापित हुई। कुतुबशाही संवत् १५६७ (सन् १५१० ई०) में एक चतुर तुर्क द्वारा गोलकुण्डामें स्थापित की गयी। निजामशाही संवत् १५४७ (सन् १४९० ई०) में विजयनगरके एक ब्राह्मण द्वारा अहमदाबादमें स्थापित हुई। इमादशाही नामक रियासत एलिचपुरमें विजयनगरके एक आर्यने संवत् १५४१ (सन् १४८४ ई०) में स्थापित की। यह रियासत लगभग सौ वर्षके बाद अहमदनगरके साथ मिला ली गयी। बरीदशाही, जिसकी राजधानी बिदर थी, संवत् १५५० (सन् १४९३ ई०) के लगभग एक तुर्की गुलाम द्वारा स्थापित की गयी। ये रियासतें बहुत दिनोंतक परस्पर मिलकर विजयनगरकी बड़ी रियासतके विरुद्ध संग्राम करती रहीं और अन्तको जब विजयनगरमें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आभ्यन्तरिक विद्रोह आरम्भ हुआ तो संवत् १६२२ (सन् १५६५ ई०) में उन सबोंने मिलकर विजयनगरको तालीकोटके मैदानमें पराजित किया। उससे विजयनगर नष्ट हो गया, परन्तु विजयनगरके सरदार और नायक लोग अपने-अपने प्रान्तोंमें स्वतन्त्र राजा बन बैठे। मद्रास प्रान्तके पालीगर और वर्तमान मैसूर रियासतका राजकुल उनकी संतानों-मेंसे हैं। विजयनगर राजवंशके एक पुरुषने चन्द्रगिरिमें एक रियासत स्थापित की। उसने संवत् १६९६ (सन् १६३९ ई०) में मद्रासकी भूमि अंग्रेजोंको दी। विजयनगर कुलके एक पुरुषने अनागण्डीमें राज्य किया, जो अभी अभीतक निजाम हैदराबादको कर देता था। इसी प्रकार मंजराबादके कुलने मुगलोंके कालमें भी संवत् १८५६ (सन् १७९९ ई०) तक अपने आपको स्वतन्त्र राजा बनाये रखा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इक्कीसवाँ प्रकरण

धार्मिक पुनरुद्धार

राजनीतिक अस्थिरता

भारतमें इन शताब्दियोंके अन्दर राजनीतिक सत्ता गेंदके समान थी। जो उठता था वही उसे एक ही ठोकरमें अपने आगे कर लेता था। यही कारण है कि अत्यन्त क्षुद्र दासतक उठ-उठकर बादशाह बन गये और सारी राजनीतिक शक्ति उन लोगोंने अपने हाथमें कर ली। जो अफगान या विदेशी आक्रांमक यहाँ आये उनमें कोई विशेष योग्यता न थी। खुसरो आर्य था। वह दासकी दशासे उठा और उसने दिल्लीके सिंहासनपर अपना अधिकार कर लिया। गयासुद्दीन तुगलक भी दासत्वसे उठकर दिल्लीका बादशाह जा बना। दक्षिणकी रियासतोंके कई निर्माता आर्य थे, किन्तु बहमनी राज्यका प्रवर्तक एक नीच दास था। सर्वसाधारण आर्य ऐसे लोगोंको घृणाकी दृष्टिसे देखते रहे। उन्हें कभी यह विचार ही न आया कि राजनीतिक शक्ति हाथमें रखनेवाला संसारमें कुछ कर सकता है या नहीं। आर्य राजा ब्राह्मणोंसे इतने नीचे पदपर समझे जाते थे कि राज्यका काम ही नीचा समझा जाने लगा। जब आर्यावर्तके अन्दर बौद्ध धर्मका बल बढ़ा तो यह विचार और भी प्रबल हो गया। राजाओंकी दृष्टिमें भी राजनीतिक शक्तिका आदर्श कुछ न रहा। वे भी बुद्धके सदृश साधुओंका जीवन धारण करना बड़ा मानास्पद समझने लगे। जब राजनीतिक शक्ति अर्थात् राज्यका प्रभाव इतना घट गया तो यह उसका स्वाभाविक परिणाम था कि जिस समय विदेशके असभ्य पुरुषोंने राज्य सँभाल लिया उस समय देशमें कोई बड़ा क्षोभ या क्रोध उत्पन्न नहीं हुआ। इस अव्यवस्थित अवस्थामें जो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोई चतुर व्यक्ति उठा उसीने राज्य सँभाल लिया अर्थात् देशमें जो मस्तिष्कवाले व्यक्ति थे वे असावधान हो गये और समझने लगे—कोई राजा हो, हमें उससे क्या मतलब। केवल राजपूत ही आक्रामकोंसे युद्ध करना अपना कर्तव्य समझते थे और जहाँतक उनसे हो सका, उन्होंने शत्रुओंका मुकाबला भी किया। यह केवल उनके मुकाबलेका ही नतीजा था कि मुसलमानोंको भारतमें राजनीतिक अधिकार प्राप्त करनेमें इतनी शताब्दियाँ लगीं।

मुसलमानोंने राजनीतिक शक्तिका महत्त्व भली भाँति समझ लिया था, बल्कि इस्लाम धर्म तो राजनीतिक शक्तिके रूपमें ही संसारमें प्रकट हुआ था। जब मुसलमानोंने अपना बल स्थापित कर लिया और उसके अनन्तर जब वे इसका इस्लामके प्रचारके लिए प्रयोग करने लगे तब आर्य नेताओंके नेत्र खुले। जो उत्साह अबतक धर्मप्रचारमें लग रहा था वह परिवर्तित होकर राजनीतिक शक्तिके लिए एक शक्तिशाली भाव बन गया। मराठों और सिखोंके दो बड़े राज्य उस नयी बुद्धिमत्ताके परिणाम थे जो आर्योंने मुसलमानोंसे सीखी थी। उन्होंने मुगलोंको हटाकर भारतवर्षपर अधिकार कर लिया। उनमें यह बुद्धि बहुत देरके बाद आयी। उन शताब्दियोंमें, जब आर्यावर्तके शासनकी बागडोर कभी इसके और कभी उसके हाथमें आती-जाती रही, आर्यमस्तिष्क धार्मिक तथा आध्यात्मिक उत्थानमें लगा रहा। इस धार्मिक उत्थानके प्रवाहपर इस्लामके सिद्धान्तोंका निःसन्देह बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। इस्लामके साथ टक्कर खानेसे आर्योंके अन्दर भी पुनरुत्थानका उत्साह उत्पन्न हुआ। यह उत्थान दक्षिणसे आरम्भ हुआ, जहाँ शंकराचार्यने वेदान्तका प्रचार करनेके साथ-साथ शिवपूजापर भी जोर दिया था।

रामानुज

संवत् १२०७ (सन् ११५० ई०) के लगभग रामानुज नामक संस्कृतके एक बड़े विद्वान्ने विष्णुके नामसे ईश्वरकी पूजाका प्रचार आरम्भ किया। चोलाका राजा शिवका पुजारी था, उसने रामानुजको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने देशसे निकाल दिया। वहाँसे रामानुज मैसूर पहुँचे। वहाँके जैन राजाको रामानुजने अपना शिष्य बनाया। रामानुज सब जातिके लोगोंको अपना शिष्य बनाते थे। उन्होंने कोई सात सौ मठ स्थापित किये।

रामानन्द

रामानुजकी पाँचवीं पीढ़ीमें उनके शिष्य रामानन्द हुए। उन्होंने १४वीं शताब्दीमें अपना मत उत्तर भारतमें फैलाया। उनके कामका केन्द्रस्थान काशी था, परन्तु जहाँ-तहाँ भ्रमण कर उन्होंने विष्णुके नामका प्रचार किया। उन्होंने नीच जातियोंमें १२ शिष्य चुने। उनमेंसे एक मोची, एक नाई और सबसे बड़ा कबीर नामका एक जुलाहा था। इन शिष्योंका कर्तव्य था संसारका सब प्रकारसे त्याग कर भिक्षापर निर्वाह करते हुए प्रचार करना। रामानन्दने धर्मका सार्वजनिक प्रचार करना आरम्भ किया। उस समयसे आर्य भाषाकी भी उन्नति आरम्भ हुई।

कबीर

कबीरने संवत् १४३७ (सन् १३८० ई०) से संवत् १४७७ (सन् १४२० ई०) तक अपने मतका प्रचार किया। उन्होंने मूर्ति-पूजाके विरुद्ध आवाज उठायी और ब्राह्मणोंपर बहुत आक्षेप किये। वे आर्य और मुसलमान दोनोंकी त्रुटियोंको साफ-साफ कह देते थे। कबीरने सब मनुष्योंके समान अधिकारपर बहुत जोर दिया और संसारके सब झगड़ोंको माया बताकर मुक्तिका साधन श्रद्धा तथा ध्यानको बताया।

चैतन्य

कबीरके उपरान्त चैतन्य नामक एक बड़े महात्मा हुए। उन्होंने उड़ीसामें विष्णुभक्तिका प्रचार किया। वह नदियामें एक ब्राह्मणके घर संवत् १५४३ (सन् १४८६ ई०) में उत्पन्न हुए और उन्होंने १४ वर्षकी अवस्थामें संसार त्यागकर प्रचार करना आरम्भ किया। चैतन्यकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिक्षा यह थी कि सब जातियाँ एक हैं, ईश्वरके सामने आर्य, मुसलमान आदि एक हैं, दृढ़ भक्ति तथा श्रद्धा मुक्तिके लिए आवश्यक है। मुक्तिके लिए सबको यत्न करना चाहिये...इत्यादि। उड़ीसामें चैतन्यके मतका अधिक प्रचार है।

वल्लभ स्वामी

संवत् १५७७ (सन् १५२० ई०) में वल्लभ स्वामीने अपना एक मत निकाला। उन्होंने ध्यानके स्थानपर कृष्णलीलाको मुक्तिका साधन बताया। वल्लभ स्वामीका मत है कि संसारके आनन्द भोगनेसे ही मुक्ति मिलती है। इस धर्मके अनुयायी गुजरात और काठियावाड़में पाये जाते हैं।

गुरु नानक

संवत् १५२६ (सन् १४६९ ई०)में गुरु नानकने पंजाबमें उसी सिद्धान्तका प्रचार करना आरम्भ किया जिसे कबीरने पूरबमें फैलाया था। पंजाबपर उनकी शिक्षाका बहुत गम्भीर प्रभाव पड़ा। बाल्यावस्थासे ही उनकी रुचि वैराग्यकी ओर थी। कहते हैं, एक समय उनके पिताने बहुत कुछ रुपया देकर उन्हें कामके लिए भेजा। उन्होंने मार्गमें सब रुपया भिक्षुकोंको खिला दिया और खाली हाथ लौट आये। जब पिता कुपित होकर पूछने लगे, तो नानकने उत्तर दिया 'वह रुपया ऐसे काममें लगा दिया है जिसका फल बड़ा होगा।' गुरु नानकसे लेकर गुरु गोविन्दसिंहतक दस गुरु इस गद्दीपर बैठे। सबके सब दयालुता तथा पवित्रताकी मूर्ति थे। लगातार ऐसे दस धार्मिक नेताओंका होना और एकका दूसरेसे अधिक उपयोगी काम करना इतिहासमें कदाचित् ही कहीं दृष्टिगोचर हो।

दादूपन्थ

संवत् १६०१ (सन् १५४४ ई०) में अहमदाबादमें दादू नामक एक बड़े धर्मोद्धारक उत्पन्न हुए। उनके उपदेश पश्चिमोत्तर भारतमें बड़ी प्रतिष्ठाके साथ सुने जाते हैं। उनके बावन शिष्योंने उनके सिद्धान्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अजमेर और राजपूतानामें फैलाये। उनमेंसे बाबा गरीबदास, माधोदास आदिकी कविताएँ और भजन अभीतक पढ़े जाते हैं। उन्होंने दादूपन्थकी नींव डाली।

इन धार्मिक सुधारकोंके अतिरिक्त उस समय भारतवर्षके भिन्न भिन्न भागोंमें बड़े-बड़े प्रसिद्ध कवि हुए जो साधु और कवि दोनों थे। उनकी कविताओंने आर्योंमें धार्मिक उत्साह पुनर्जीवित किया और वे स्वयं भी इस नये जीवनके परिणाम थे।

मथुराके सूरदास, जिनकी पुस्तक सूरसागर है, बीजापुरके नाभाजी, जिनकी पुस्तक भक्तमाल है और केशवदास, जिनकी पुस्तक रामचन्द्रिका है, बड़े प्रसिद्ध धार्मिक कवि हुए। उनके पश्चात् उत्तर भारतमें सुप्रसिद्ध कवि तुलसीदास हुए जिनकी आर्य भाषामें लिखी हुई रामायणने उत्तर भारतमें जादूका-सा प्रभाव उत्पन्न किया। तुलसीकृत रामायण अभीतक आर्य भाषाकी सबसे मधुर और कविताकी अद्वितीय पुस्तक समझी जाती है।

महाराष्ट्रमें धार्मिक कविता नामदेवसे आरम्भ होती है जो १४वीं शताब्दीमें हुए। १६वीं शताब्दीके अन्तमें श्रीधर नामक बड़े कवि तथा विद्वान् हुए। उनके पीछे १७वीं शताब्दीमें तुकारामके हाथसे मराठी कविता ब्रह्मज्ञानकी सीमापर जा पहुँची। तुकारामने पहिले एक छोटीसी दूकान खोली। जब उसमें सफलता न हुई तो अपना जीवन भक्ति और प्रेमको अर्पित कर दिया। उस कालमें स्वामी रामदास नामक एक महात्मा हुए जो शिवाजीके गुरु थे। इनका वर्णन आगे आयगा।

दक्षिणमें ११वीं और १२वीं शताब्दीमें द्राविड़ भाषाके अन्दर जैनमतके अत्युत्तम कवि हुए, जिन्होंने ब्राह्मणोंकी आलोचना की और बड़ा सुन्दर साहित्य उत्पन्न किया। उनमेंसे कई कवि परिया जातिके थे। उन्होंने अपना नामतक पीछे नहीं छोड़ा। परन्तु उनके कालमें आर्योंका उत्साह बहुत बढ़ रहा था, क्योंकि उसी समय कुम्बारने द्राविड़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाषामें रामायण लिखी। तदनन्तर दक्षिणमें शिव और विष्णुकी भक्तिका प्रचार रहा और १७वीं शताब्दीमें एक धार्मिक सम्प्रदायकी तरंग उठी जो 'सित्र' कवियोंके नामसे विख्यात है। उनका सिद्धान्त यह था कि धर्मको प्राचीन ऋषियोंकी परिपाटीपर चलाना चाहिये और मध्यकालमें जो दोष उत्पन्न हो गये हैं उन्हें निकाल देना चाहिये।

इसी प्रकार तेलगू भाषामें रामायण और महाभारतके अत्युत्तम अनुवाद किये गये। बिहार में १४वीं शताब्दीमें तिर्हुतके राजा शिवसिंहके दरबारमें विद्यापति बड़े कवि हुए। उन्होंने और वीरभूमिके चण्डीदास ब्राह्मणने राधाकृष्णपर कविताएँ लिखीं।

चैतन्यकी तरंगके उपरान्त बंगालमें शिव और कालीकी भक्तिका प्रचार रहा। १६वीं शताब्दीमें नदियाके एक ब्राह्मण कृत्तिवासने रामायणका बंगलामें अनुवाद किया। इसी समय बर्दवानके मुकुन्दराम चक्रवर्तीने कविताएँ लिखीं जिनमें बंगालके अन्दर मुसलमानी क्रूरताका वर्णन किया गया है। १७वीं शताब्दीमें बर्दवानके एक और कवि काशीरामदासने महाभारतका अनुवाद किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाईसवाँ प्रकरण

मुसलमान ऐतिहासिक तथा अन्वेषक

अल्बरूनी

जब अल्बरूनी आर्यावर्तमें आया तो उसने देखा कि आर्यावर्तसे बौद्ध धर्म निकल चुका था। आर्यावर्त ही क्या, सम्पूर्ण मध्यएशिया, खुरासान, अफगानिस्तान और पश्चिमोत्तर भारतमें बौद्ध धर्मका चिह्न भी न रह गया था। अल्बरूनीको बौद्ध धर्मके सम्बन्धमें कुछ ज्ञान न था। आर्य विद्याके केन्द्रस्थान उस समय काश्मीर और काशी थे। वहाँ-तक अल्बरूनीकी पहुँच न हो सकी। उस समय आर्यावर्तमें विष्णु देवताका प्रचार बहुत था, पर काबुल और पंजाबके पालकुलके राजा शिवकी पूजा करते थे। अल्बरूनीने आर्योंकी दर्शन, ज्योतिष, गणित इत्यादि विद्याओंकी तुलना यूनानकी विद्याओंसे बड़ी निपुणताके साथ की है। वह आर्योंकी विशेषताओंका वर्णन करता हुआ आर्यों और मुसलमानोंके विरोधके निम्नलिखित कारण बतलाता है—

आर्यों और मुसलमानोंके विरोधके कारण

(१) आर्योंकी भाषा हमसे पृथक् है और उनकी संस्कृत भाषाका सीखना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि एक तो उसका व्याकरण आदि बहुत विस्तृत तथा जटिल है, दूसरे उसके दो भाग हैं, एक प्राकृत जो साधारण पुरुष बोलते हैं, दूसरा संस्कृत जो केवल विद्वान् पुरुष बोलते हैं। उनकी समस्त विद्याएँ उसी भाषामें हैं। उनके कई शब्दोंका उच्चारण हमसे नहीं हो सकता। तीसरी कठिनाई यह है कि नकल करनेवाले बड़े असावधान हैं। वे आर्य पुस्तकोंकी ठीक नकल करनेका परिश्रम तथा कष्ट सहन नहीं करते। उनकी असावधानीसे लेखककी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानसिक योग्यताके उत्तम परिणाम नष्ट हो जाते हैं। पुस्तक पहली या दूसरी नकलमें ही दोषोंसे भर जाती है और मूल ग्रन्थसे सर्वथा भिन्न हो जाती है, जिसको समझना गुरु और शिष्य दोनोंके लिए कठिन हो जाता है। इस असावधानीका यह भी परिणाम हुआ कि प्रायः लेखकोंको अपनी पुस्तक एक विशेष दृष्टिसे लिखनी पड़ी और उनमें कई शब्द ऐसे लिखे गये जिनकी आवश्यकता न थी। इसलिए वह और कठिन बन गयी।

(२) आर्यधर्म हमारे धर्मसे सर्वथा भिन्न है। आर्य लोग किसी ऐसे पदार्थको नहीं मानते जिसे हम मानते हैं। उनके आभ्यन्तरिक विरोध केवल दर्शन-सम्बन्धी विचारोंपर हैं। उनकी समस्त शक्ति दूसरोंके विरोधमें लगी हुई है। जिनसे उनका मतभेद है उनको वे म्लेच्छके नामसे पुकारते हैं और उनके साथ किसी प्रकारका सम्बन्ध, विवाह आदि नहीं करते; यहाँतक कि उनके साथ खाना, पीना और बैठना भी अनुचित समझते हैं, क्योंकि इससे वे भ्रष्ट हो जाते हैं। जो वस्तु किसी अन्यके जल इत्यादिसे स्पर्श कर जाय उसे वे अपवित्र समझते हैं और उस अपवित्र वस्तुको साफ करके भी प्रयोगमें लाना नहीं चाहते। जो कोई उनके धर्मका अनुयायी नहीं होता उसे वे अपने पास आने भी नहीं देते, इस कारण उनसे कोई सम्बन्ध करना असम्भव है।

(३) हमारे आचार और हमारी रीतियाँ उनसे इतनी भिन्न हैं कि वे हमारे नाम, वस्त्र और रीतियोंसे अपने बालकोंको भयभीत करते हैं और हमें असभ्य कहते हैं, क्योंकि हमारी क्रियाएँ उनके सर्वथा विरुद्ध हैं। परन्तु सच्ची बात यह है कि विदेशियोंसे घृणा करनेका विचार न केवल आर्योंमें और हम लोगोंमें ही पाया जाता है, किन्तु, यह भाव संसारकी समस्त जातियोंमें विद्यमान है।

(४) एक अन्य कारण, जिसने इस घृणाको और भी बढ़ा दिया, यह है कि पहले पहल खुरासान, फारस, मूसल, संक्षेपतः सीरियातक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समस्त देश बौद्ध धर्मके अनुयायी हो गये थे। बादशाह गुश्तास्प पारसी धर्मका इतना सहायक हुआ कि उसने सब बौद्धोंको अपने राज्यसे निकाल बाहर किया। वे लोग भारतवर्षकी शरण आये और दूसरोंके प्रति घृणा फैलाने लगे। फिर इस्लामकी बारी आयी। यवनोंने आर्यावर्तपर आक्रमण आरम्भ किये। महमूदके आक्रमणोंने तो इस घृणाकी नींदको और भी दृढ़ कर दिया। यही कारण है कि आर्योंकी विद्याएँ उन समस्त प्रान्तोंसे बाहर चली गयीं जिनको हमने विजित किया। वे ऐसे स्थानमें स्थापित की गयीं जहाँ हमारा हाथ नहीं पहुँच सकता; यथा काश्मीर, काशी आदि। इन स्थानोंमें विदेशियोंके विरुद्ध घृणाका यह भाव राजनीतिक तथा धार्मिक बुनियादपर कायम किया जाता है।

(५) आर्योंकी यह जातीय विशेषता बन गयी है और वे यह समझते हैं कि संसारमें हमारी जाति जैसी कोई जाति नहीं है, हमारे देश जैसा कोई देश नहीं है, हमारे राजाओंके समान कहीं राजा नहीं हैं, हमारी विद्याएँ जैसी कही विद्याएँ नहीं हैं और हमारे धर्म जैसा कोई धर्म नहीं है। वे लोग बड़े अभिमानी, स्वार्थी और प्रत्येक बातपर गर्व करनेवाले हैं। वे अपनी विद्याएँ अन्य जातिके लोगोंको भी सिखलाना नहीं चाहते, विदेशियोंकी तो बात ही क्या है। यदि कोई उनसे कहे कि खुरासान और फारसकी भी अपनी विद्याएँ हैं तो उन्हें विश्वास ही नहीं होता। यदि वे अपने देशके बाहर जायँ तो उनका यह विचार दूर हो जाय। उनकी अपेक्षा उनके पूर्वज कहीं अधिक उच्च हृदयके थे।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान् वराहमिहिरका कथन है कि यद्यपि यूनानी म्लेच्छ हैं, तो भी उनकी प्रतिष्ठा करनी चाहिये, क्योंकि वे विद्वान् हैं। उन विद्वानोंकी प्रतिष्ठा तो अत्यावश्यक है जिनमें विद्याके अतिरिक्त सरलता तथा पवित्रता भी पायी जाती हो।

तत्पश्चात् अलबरूनीने आर्योंके ईश्वर-विश्वासके सिद्धान्तका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। एक पृथक् अध्यायमें उसने जातियोंका वर्णन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया है। इसके बाद एक और अध्यायमें वह मूर्तिपूजाके आरम्भपर पर्यालोचन करते हुए लिखता है कि आर्य लोग प्रायः मूर्तियों या चित्रोंपर मुग्ध होते हैं। जिस तरह यदि हजरत मुहम्मद साहबका चित्र सम्मुख लाया जावे तो मुसलमान उसे चूमेंगे, बड़े मानसे उसको नमस्कार करेंगे, उसी प्रकार नीच पुरुषोंके लिए आर्य विद्वानोंने कई महापुरुषोंकी मूर्तियाँ बनाकर पुजवानेके लिए निश्चित कर दी हैं। भिन्न-भिन्न मन्दिरों तथा देवताओंका वर्णन करके उसने इस बातके बहुतसे प्रमाण भी उपस्थित किये हैं।

इब्न बतूता

इब्न बतूता नामक एक इस्लामी अन्वेषक मिस्रसे प्रस्थान कर भारतवर्षमें आया। उसने दिल्लीके सौन्दर्यका और तुगलक बादशाहोंके वृत्तान्तका बड़ी योग्यतासे वर्णन किया है। उसने मुहम्मद तुगलककी सनकसे भरी बातोंका भी वर्णन किया है। वह लिखता है कि दिल्लीमें कोई तीन मील लम्बा एक कृत्रिम सरोवर है जिसके तटोंपर बड़ी छायावाले वृक्ष हैं। निर्धन तथा धनी पुरुष दोनों वहाँ भ्रमणार्थ जाते हैं। उसने भारतके पश्चिमी तीर, विशेषकर मलाबार प्रान्तके वैभव तथा ऐश्वर्यका अच्छा चित्र खींचा है। उसने यह भी लिखा है कि दिल्लीसे कुछ ही मीलकी दूरीपर आर्य पुरुष बादशाहकी लेशमात्र भी परवा नहीं करते, सर्वथा स्वतन्त्र रहते हैं, और कभी अवसर पाते हैं तो वे शाही मनुष्योंको लूट लेते हैं।

एक और फारसी ऐतिहासिक नासिरुद्दीनने गुजरात(अनहिल-वाड़ा)के राजा निहालसिंहकी विचित्र कथाका वर्णन किया है। एक दिन राजा हाथीपर चढ़कर आखेटके लिए गया। मार्गमें उसकी दृष्टि एक सुन्दर कन्यापर पड़ी। उसने अपना हाथी उसकी ओर बढ़ाया, किन्तु तत्काल ही उसके हृदयमें विचार उत्पन्न हुआ कि राजा होकर मुझे ऐसा पाप न करना चाहिये। इस विचारके आते ही वह अपनी राजधानीको लौट गया और अपने ब्राह्मण मन्त्रियोंको बुलाकर अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुरे विचारका वर्णन कर दण्डका इच्छुक हुआ। ब्राह्मणोंने निश्चय किया कि राजाको चिता बनाकर जल जाना चाहिये। चिता तैयार की गयी। जब राजा उसपर चढ़ने लगा तो ब्राह्मणोंने आगे बढ़कर उसे रोक लिया और कहा—"बस, अब दण्ड मिल गया, क्योंकि तुमने पापका केवल विचार किया था, इसलिए उस अपवित्र विचारके बदले जो दुःख आवश्यक था वह तुम्हें मिल गया। विचारका सम्बन्ध शरीरसे नहीं, प्रत्युत मनसे है, इसलिए इस अपवित्र विचारके लिए दण्ड भी मनको ही मिलना चाहिये। शरीरको निर्दोष समझकर उसे दण्ड देनेकी आवश्यकता नहीं है। राजाको सदा सब कार्य धर्मानुसार करना चाहिये।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीय खण्ड

राजपूत तथा मुगल शासक

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिला प्रकरण

राजपूतोंकी सत्ताका प्रारम्भ

अब हम इतिहासके उस भागमें आ पहुँचे हैं जिसे वर्तमान कालके इतिहासका आरम्भ कह सकते हैं। इस कालसे इतिहासका ठीक तथा सिलसिलेवार पता लग सकता है।

मुगलराज्यका सूत्रपात

ईसवी सन्‌की १६वीं सदीमें मुगलोंके राज्यकी नींव दिल्लीमें डाली गयी। मुगलोंके राज्यके साथ भारतवर्षकी शासन-व्यवस्थामें परिवर्तन आरम्भ हुआ और उस कालसे पुनः भारतवर्षमें व्यवस्थित शासनका आरम्भ हुआ। यद्यपि मुगल भी मुसलमान थे, परन्तु जब उनके पहिले बादशाह बाबरने एक आक्रामककी नाईं भारतमें आकर दिल्लीपर विजय प्राप्त की उसी समय उसने भारतवासी बनना चाहा। बाबरने दिल्ली अपनी राजधानी बनायी और काबुलको अपने राज्यका एक प्रान्त बना दिया। जब मुगल बादशाहोंने भारतवर्षको स्वदेश समझ लिया तो उनके हृदयसे लूट-मारकी इच्छा दूर हो गयी। धर्ममें विभिन्नता होनेपर भी जब उन्होंने आर्योंको स्वदेशीय समझना आरम्भ किया तो आर्योंने भी उस नये वंशको अपना शासक स्वीकार कर लिया।

राजपूतोंकी रियासतें

धर्म एक न होनेके कारण राजपूत राजाओंको उन्हें बादशाह अंगीकार करनेमें बड़ी कठिनाई हुई। उत्तर भारतके राजपूत राजाओंने अपने राज्य-स्थानोंको छोड़ राजपूतानेमें जाकर रियासतें बनायीं, क्योंकि वे अपने आपको आर्योंका रक्षक समझते थे। उनमेंसे जयपुर शीघ्र ही मुसलमानोंके साथ मिल गया, किन्तु चित्तौड़के राजपूत निरन्तर युद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करते रहे। यदि कनिष्कके सदृश मुगल बौद्ध हो जाते अथवा आर्योंके साथ सर्वथैव मिल जाते तो मुगलोंका राज्य किसी प्रकार भी विदेशी राज्य न कहलाता। अकबरने जब इन धार्मिक विरोधोंको सर्वथा न्यून कर दिया तो आर्योंने अत्यन्त हर्षपूर्वक मुगलोंका शासन स्वकीय समझ लिया। उसी धार्मिक विरोधको जब औरंगजेबने बहुत बड़ा बना दिया तो आर्यजन उसे विदेशी राज्य समझकर उत्तर तथा दक्षिण, दोनों स्थानोंमें उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए और अपने राज्य स्थापित करने लगे।

आर्योंकी नयी राजनीतिक शक्ति उस नये धार्मिक जीवनका परिणाम थी जिसने उस कालके कुछ ही पूर्व देशमें नवजीवनका संचार कर दिया था। उसने देशके समग्र भागोंमें धार्मिक सुधारक तथा बड़े-बड़े धार्मिक कवि उत्पन्न किये।

यूरोपीय जातियोंका आगमन

जब मुगल लोग पश्चिमोत्तरकी ओरसे स्थलमार्ग द्वारा आक्रमणके लिए आ रहे थे उसी कालमें समुद्रकी ओरसे यूरोपीय जातियाँ, जो ईसाई धर्मको माननेवाली थीं, भारतवर्षमें व्यापारके लिए आने लगीं। जबतक दिल्लीमें मुगलोंका राज्य दृढ़ रहा, ये जातियाँ केवल व्यापारमें लगी रहीं। परन्तु जब औरंगजेबके कालमें आर्योंने उठकर मुगल राज्यको धक्का देना चाहा तो उन व्यापारी जातियोंमेंसे अंग्रेजोंने भी राजनीतिक बलके लिए हाथ-पाँव मारे, परन्तु सफलता न हुई। पीछे राजनीतिक उन्नतिके लिए उनमें तथा फ्रांसीसियोंमें परस्पर संग्राम हुआ।

इस संग्रामकी समाप्तिपर १८वीं शताब्दीमें जब मैदान अंग्रेजोंके हाथ रहा उस समय आर्योंने देशके अन्दर अपना अधिकार जमा लिया था, किन्तु भारतवर्षका सबसे धनाढ्य प्रान्त अंग्रेजोंके हाथ आ गया। उस कालसे उनके तथा आर्योंके मध्यमें भारतके राज्यके लिए युद्ध प्रारम्भ हुआ। पहिले चालीस वर्ष तो मराठोंके साथ संग्राम होता रहा, फिर सिखोंके साथ हुआ। अन्तमें देश उनके हाथ चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईसवी सन्‌की १९वीं शताब्दीके अन्तमें जो हलचल हुई वह इस भागको समाप्त करती है।

मुगलोंके साथ राजपूतोंकी मुठभेड़

इन सब भिन्न-भिन्न घटनाओंका वर्णन पृथक्-पृथक् अध्यायोंमें किया गया है। इस अध्यायमें मुगल साम्राज्यके साथ राजपूतोंकी मुठ-भेड़का जिक्र होगा। इस मुठभेड़में राजपूतोंके भीतर दो भिन्न-भिन्न पक्ष हो गये। राजपूतानेके कुछ राजाओंने मुगलोंके साथ युद्ध करना व्यर्थ समझा। उनमें सबसे बड़ी रियासत जयपुरकी थी। वहाँके राजाने देखा कि राजपूताना अकेला मुगलोंको आर्यावर्तसे नहीं निकाल सकता, इसलिए उन्होंने उनके साथ मित्रता तथा सम्बन्ध करके उन्हें अपनेमें मिला लेना चाहा। राजाने अपनी कन्याका विवाह अकबरसे कर दिया। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इस नीतिमें बड़ी सफलता हुई, और यदि शाहजहाँके उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह सिंहासनपर बैठ जाता तो सफलता पूरी हो जाती। जयपुर तथा जोधपुरके राजा उसके सहायक थे, क्योंकि वह धर्ममें प्रायः आर्य था। जयपुरका अनुकरण करके जोधपुरके राठौर राजाने अपनी कन्या जहाँगीरको विवाहमें दी। वास्तवमें यह कन्या रानीसे उत्पन्न न थी, एक दासीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी। यह घटना केवल इतना प्रकट करती है कि जोधपुर ऊपरसे जयपुरकी नीतिका सहायक हो गया, परन्तु हृदयमें राठौर इसे राजपूती शानके विपरीत समझते थे और चित्तौड़की नीतिके अनुयायी थे।

चित्तौड़की महत्ता

इस नीतिके विरुद्ध जो रियासत निरन्तर अड़ी रही वह चित्तौड़की रियासत थी। जिस प्रकार राजपूत-जाति आर्योंकी रक्षक थी उसी प्रकार राजपूतोंमें चित्तौड़के राजवंशने राजपूतोंकी मान-प्रतिष्ठा स्थिर रखी और मुगलोंसे मित्रताकी नीतिको अनुचित ठहराया। इसी चित्तौड़के राजपूतवंशजोंने समभूमियोंसे जाकर हिमालय पर्वतपर नेपालका सुप्रसिद्ध राज्य स्थापित किया। नेपालको मुगलोंने नहीं छेड़ा। अंग्रेजोंने

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी थोड़ासा युद्ध करके इसे स्वतन्त्र ही रहने दिया। नेपालके राजपूतोंने भारतवर्षके इतिहासमें बहुत कम भाग लिया है। सर्वथा सुरक्षित पर्वत-पर होनेसे वे अपने आपको भारतसे पृथक् ही समझने लग गये हैं।

यद्यपि प्राचीन कालसे महाराजाधिराजका पद दिल्लीके राजाओंके पास रहा है, परन्तु चित्तौड़के राजपूत भी अपने कुलको न्यून नहीं समझते थे। जब दिल्लीका सिंहासन मुसलमानोंके अधिकारमें हो गया तो उस समयसे चित्तौड़के राजाओंने अपने आपको आर्याधिपति मानना प्रारम्भ किया। केवल यही एक राज्य था जिसका विचार फिर दिल्लीमें आर्यराज्य स्थापित करनेका था, इसलिए इसका थोड़ा-सा वृत्तान्त देनेके लिए कुछ शताब्दियाँ पीछे जाना अनुचित न होगा।

राजपूतोंकी उत्पत्ति

राजपूत अपनी जातिका सम्बन्ध रामचन्द्रसे जोड़ते हैं और राजपूतोंके छत्तीस कुलोंमें इनका मान सबसे अधिक है। चित्तौड़के राणा "हिन्दू-सूर्य" कहलाते चले आये हैं। प्रसिद्ध अन्वेषक कर्नल टाड इस जातिका वर्णन करते हुए लिखता है—"कहाँ है संसारमें कोई जाति जिसने इतने तूफानों तथा आक्रमणोंके पश्चात् अपने धर्म, जाति और रीतियोंको सर्वथा साफ तथा पवित्र रखा हो? तुलना करो ब्रिटन लोगोंसे। पहिले वे रोमन लोगोंके दास हो गये, फिर क्रमशः सैक्सन, डेन तथा नार्मनके, और अन्तमें सब परस्पर मिल-जुल गये। केवल ये राजपूत ही हैं जो शताब्दियोंके कठोर आक्रमणोंके बाद आज भी उसी प्रकार पाये जाते हैं जैसे इनके पूर्वज थे।" रामके एक पुत्र लवने लवपुर (लाहौर) बसाया। उसी कुलसे कनकसेनने आकर सौराष्ट्रपर अधिकार किया। वह भी बड़ा नगर था और वहाँके रहनेवाले जैन धर्मावलम्बी थे।

उसी वंशके एक राजा शिलादित्यने सीथियन आक्रामकोंका मुकाबला किया जिसमें वह मारा गया। उसका बहुत छोटा बच्चा गोहा रह गया। गोहाने ईदरमें भीलोंसे राज्य छीन लिया और अपने नामसे गहलोत-वंशकी नींव डाली। उसकी सन्तानके आठ राजाओंने शासन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। भील लोगोंने राजद्रोही होकर सबका वध कर डाला, केवल एक बालक बापा शेष रह गया।

बापाका पराक्रम

बापाका बाल्यकाल इधर-उधर गड़रियोंके साथ व्यतीत हुआ। उसने अपने सहक्रीड़कोंको एकत्र करके उनको शपथ देकर अपनी सरदारी स्थापित की। जब सोलंकी राजाको इसका वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो बापा वहाँसे भी भाग गया। फिर उसने एक साधुकी सेवा की। साधुने उसे एक तलवार दी जो पत्थरको काट सकती थी। यह तलवार लेकर बापा चित्तौड़में आया। वहाँ मोरी-वंशके राजाने उसे अफसर बनाया। दूसरे सरदार द्वेषसे जलने लगे। परन्तु जब एक समय एक शत्रु चढ़ आया तो सबने राजाका साथ देनेसे इन्कार किया। बापाने जाकर शत्रुको परास्त किया। इस घटनासे वह इतना लोकप्रिय हो गया कि थोड़े ही दिनों पश्चात् चित्तौड़पर अधिकार कर वह 'हिन्दू-सूर्य'का पद ले सिंहासनपर बैठ गया। बापाने वृद्धावस्थामें जाकर खुरासानको जीता और, यह भी कहा जाता है कि, ईरान, असफहान, काश्मीर, कन्धार इत्यादिकी भी विजय की। इन देशोंमें उसने कई विवाह किये। उसके सब पुत्रोंने भिन्न-भिन्न राजपूत-वंशोंकी नींव डाली।

बापासे लेकर समरसीतक, जब कि शहाबुद्दीनने पृथ्वीराजको परास्त किया, चार शताब्दियाँ व्यतीत हो जाती हैं; उनमें सिवा एक मुसलमानी आक्रमणके, जो राणा खोमाके कालमें ९वीं शताब्दीमें हुआ, और कुछ वृत्तान्त नहीं मिलता। उस आक्रमणमें मुसलमान परास्त हुए और उनका सरदार कैद कर लिया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा प्रकरण

समरसी और उनके उत्तराधिकारी

रावल समरसी

रावल समरसी (समरसिंह) संवत् १२०६ (सन् ११४९ ई०) में उत्पन्न हुए। उनका विवाह पृथ्वीराजकी भगिनीसे हुआ। जब पृथ्वीराजको शहाबुद्दीनके साथ युद्धकी तैयारी करनी पड़ी तो उन्होंने लाहौरके राजा पोन्दरचन्दको दूत बनाकर समरसीके पास भेजा। उनके वस्त्र योगियोंके थे। उनके गलेमें कमलके बीजोंकी माला थी। समरसीने शहाबुद्दीनके साथ कई युद्ध किये। अन्तको शहाबुद्दीन हारकर लौट गया। कहा जाता है कि उसे अपनेको कैदसे छुड़ानेके लिए मूल्य भी देना पड़ा था।

दूसरी बार, जब कि कन्नौज, पटन (गुजरात) और धारके राजा तमाशा देख रहे थे, समरसी पुनः सहायताके लिए आ उपस्थित हुए। पृथ्वीराज तथा उनके मन्त्री सात मीलतक उनके सत्कारके लिए गये और उनके आनेपर दिल्लीमें नक्कारे तथा शादियाने बजाये गये। समरसी अपने स्थानपर अपने छोटे पुत्र कर्णको कर्ता-धर्ता बना आये थे, जिससे बड़े पुत्र अप्रसन्न हो गये। एक तो दक्षिणमें बेदरके हब्शी बादशाहके पास चला गया और दूसरा हिमालयके पर्वतोंमें नेपालकी रियासतपर अधिकार जमा बैठा।

युद्धमें समरसीका मान सबसे बढ़कर होता था। समस्त राजा तथा सरदार उनके तम्बूमें एकत्र होते और उनकी सम्मतिके अनुसार कार्य करते थे। इस युद्धमें उनका पद भीष्मपितामहके समान था। युद्धमें समरसी, उनका पुत्र कल्याण तथा उनके १२ सहस्र राजपूत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काम आये। उनकी रानी पृथा यह समाचार सुनकर चितापर चढ़कर भस्मीभूत हो गयी। अब आर्यावर्तमें युद्धकी लहर आ गयी। जब कभी अवकाश मिला, राजपूत उठे और अपने शत्रुओंको दबानेके लिए उद्यत हो गये। राजस्थानमें जगह-जगह खूनकी नदियाँ बहने लगीं।

रावल कर्णसी

कर्ण अभी छोटे थे। उनकी माता कर्मदेवी उनकी प्रतिनिधि हुई। कर्मदेवीने अपनी सेना एकत्र करके कुतुबुद्दीनका मुकाबला किया और अम्बरके पास उसे नीचा दिखाया। इस युद्धमें वह जख्मी भी हो गया। नौ और राजा रानीके साथ थे।

कर्ण संवत् १२४९ (सन् ११९२ ई०) में गद्दीपर बैठे। फिर संवत् १२५७ (सन् १२०० ई०) में राहप गद्दीपर बैठे। उन्होंने उस वंशका नाम शिशुदय रखा। अपना पद रावलसे राणा कर दिया। उन्होंने शमसुद्दीनके साथ नागौरमें युद्ध करके उसे पराजित किया। उनके उपरान्त पचास वर्षके भीतर नौ राजयुवक सिंहासनपर बैठे। उनमेंसे छःने रणक्षेत्रमें प्राण दिये। उनका काम गयाको मुसलमानोंसे बचाना था।

संवत् १३३१ (सन् १२७४ ई०) में राणा लखमसी (लक्ष्मण-सिंह) सिंहासनपर बैठे। उनके चाचा भीमसी (भीमसिंह) रक्षक थे। भीमसीकी ही स्त्री पद्मिनी थी जिसका वर्णन पहले हो चुका है।

राणा अजयसी

अलाउद्दीन प्रथम बार असफल होनेपर दूसरे वर्ष फिर चढ़ आया। राणाको एक स्वप्न हुआ जिसमें देवीने उनके पुत्रोंका बलिदान माँगा। शत्रुके मुकाबलेमें अरसी तथा दस राजयुवक क्रमशः सिंहासना-रूढ़ हुए और युद्धमें मारे गये। केवल अजयसी पिताकी आज्ञासे भागकर निकल गये और बचकर केलवाड़ामें जा पहुँचे। उनके ज्येष्ठ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भ्राता अरसीका एक पुत्र हमीर ही उनके वंशका एकमात्र जीवित चिह्न था।*

अजयसिंहका एक पर्वतीय ठाकुर मुंजाके साथ झगड़ा था। उनके दोनों पुत्र भीरु सिद्ध हुए। उन्होंने हमीरको बुला भेजा। हमीरने शत्रुका सिर काटकर चाचाके चरणोंमें रख दिया। अजयसीने हमीरको प्यार किया और मुंजाके रक्तसे उनके माथेपर तिलक लगा दिया। अजयसीका एक पुत्र तो वहीं मर गया, दूसरा सज्जनसी दक्षिणमें चला गया जिसकी सन्तानसे शिवाजीका होना बताया जाता है।

राणा हमीरसिंह

हमीरसिंह संवत् १३५७ (सन् १३०० ई०) में गद्दीपर बैठे और ६४ वर्षपर्यन्त राज्य करते रहे। उन्होंने चित्तौड़के इर्द-गिर्दका सारा प्रान्त नष्ट कर दिया। लोग भागकर पर्वतोंमें वास करने लगे। दुःखित होकर मालदेवने अपनी कन्याका विवाह हमीरसे करना चाहा। हमीरने स्वीकार कर लिया। बादमें उन्हें विदित हुआ कि वह कन्या बालविधवा है। जब कि मालदेव बाहर गया था, हमीरने (उस स्त्रीकी सहायतासे) चित्तौड़पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार पुनः सूर्यवंशका झण्डा चित्तौड़के दुर्गपर फहराने लगा। जब महमूद खिलजीने आक्रमण किया, तो संगोली नामक स्थानपर हमीरने उसे पराजित किया और तीन मासपर्यन्त कैदमें रखा। खिलजीने अजमेर, रणथम्भोर, नागोर और सोसापुर एवं पचास लाख रुपया और सौ हाथी देकर मुक्ति पायी।

* हमीरकी उत्पत्तिका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है। एक बार अरसी अपने साथियों सहित सूअरका आखेट कर रहे थे। सूअर एक मक्काके खेतमें घुस गया। खेतकी रक्षिका एक कन्या थी। उसने कहा कि मैं सूअरको बाहर निकाल दूँगी। उसने मक्काके पौधे हाथमें लेकर सूअरको हाँककर बाहर निकाल दिया। कन्याकी वीरतापर सब विस्मित हो गये। उस कन्याका एक कंकड़, जब वह पक्षियोंको उड़ा रही थी, एक घोड़ेको लगा। उसका एक अंग जखमी हो गया। जब वे लौट रहे थे तो उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मारवाड़, जयपुर, बूँदी, ग्वालियर, चन्देरी, सीकरी, काल्पी, आबू इत्यादिके राजाओंने चित्तौड़के राणाको अपना महाराजा स्वीकार किया। मेवाड़ उस कालमें बड़ा उन्नत हो गया। वहाँ बड़े-बड़े सरकारी भवन बनवाये गये।

राणा खेतसी

राणा खेतसी संवत् १४२१ (सन् १३६४ ई०) में सिंहासनपर बैठे। उनके राज्यकालमें कई प्रान्त मेवाड़के साथ मिलाये गये। उन्होंने दिल्लीके बादशाहपर बाकरोल नामक स्थानपर विजय प्राप्त की। एक युद्धमें वे मारे गये और उनके स्थानमें लाखाजी संवत् १४३९ (सन् १३८२ ई०) में सिंहासनारूढ़ हुए। उनके कालमें जोराके अन्दर टीन तथा चाँदीकी खानें प्रकट हुईं। उन्होंने एक समय मुहम्मदशाहका मुकाबला किया और एक बार शाही सेनाको पराजित किया। उनके कई सन्तानें थीं। उन्होंने अपना स्थान ज्येष्ठ पुत्र चोन्दा(चूड़ाजी)-को हटाकर कनिष्ठ पुत्र मोकलको दे दिया, जिससे पीछे बहुत झगड़े उत्पन्न हुए। राणा वृद्ध हो चुके थे। मारवाड़के राजा रणमल्लने अपनी कन्याका शगुन (फलदान) चोन्दाके लिए भेजा। जब नारियल लेकर दूत पहुँचे तो चोन्दाजी बाहर गये हुए थे। राणाने हँसीमें कहा 'यह

देखा कि वह सिरपर दूध और दोनों हाथोंमें भैंसके बच्चे उठाये जा रही है। एक सवारने उसके साथ उपहास किया। कन्याने एक बच्चा छोड़कर अश्वारूढ़को नीचे गिरा दिया। पता लगाने पर विदित हुआ कि वह एक राजपूत जमींदारकी कन्या है। दूसरे दिन अरसीने राजपूतको बुला भेजा। राजपूत आकर राणाके पास बैठ गया। अरसीने कहा कि तुम अपनी कन्याका विवाह मेरे साथ कर दो। राजपूतने साफ इन्कार कर दिया। उसने घर आकर अपनी स्त्रीको यह हाल कह सुनाया। स्त्रीने उसे वापिस भेज दिया कि अपनी अज्ञानताके कारण क्षमायाचना करो। निदान उस राजपूत कन्याका विवाह अरसीसे हो गया। उसीका पुत्र हमीर हुआ जो अपनी माताके गृहमें ही रहता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नारियल मेरे लिए तो नहीं है ?' चोन्दाजीने आकर नारियल लेनेसे इन्कार कर दिया। नारियलके वापस हो जानेमें मारवाड़का अपमान था, इससे राणाने स्वयं विवाह करना स्वीकार कर लिया, परन्तु चोन्दा-से यह प्रतिज्ञा करवायी कि इसी कन्याकी सन्तान गद्दीपर बैठेगी। चोन्दाने यह बात मान ली। उस विवाहसे मोकलजी उत्पन्न हुए। यह अभी पाँच वर्षके थे कि राणाने गयाकी पवित्र भूमिको मुसलमानोंके अधिकारसे छुड़ानेके लिए प्रयाण किया और वहीं मारे गये।

राणा मोकल

युद्धपर जानेसे पूर्व राणा अपने छोटे पुत्र मोकलको सिंहासनपर बिठा गये थे। चोन्दाजी राणाकी छोटी उम्रमें दरबारका सारा काम करते थे, परन्तु राणाकी माता उनसे वैर करती थी, जिससे चोन्दाजी दरबारको छोड़कर माण्डूकी रियासतमें चले गये। राणाकी माताने सर्वोत्तम स्थान तथा पद अपने सम्बन्धियोंको बुलाकर दे दिये। पीछे रानीकी आँखें खुलीं तो उसने सहायताके लिए चोन्दाजीको बुलाया। चोन्दाजी धोखा देकर दुर्गमें प्रविष्ट हुए। उन्होंने उन समस्त सम्ब-न्धियोंको निकाल दिया। रानीका भाई जोधा भागकर निकल गया। उसने जाकर वर्तमान जोधपुरकी नींव डाली और वह एक विशाल राज्यका प्रवर्तक हुआ।

राणा कुम्भाजी

मोकलजीने संवत् १४७५ (सन् १४१८ ई०) तक राज्य किया। उनके उपरान्त राणा कुम्भाजी सिंहासनपर बैठे। मालवा तथा गुज-रातके मुसलमान बादशाहोंने मिलकर मेवाड़पर आक्रमण किया। राणाने एक लाख अश्वारोही तथा पदाति लेकर युद्ध किया और दोनोंको परास्त किया। वे मालवाके बादशाह महमूद खिलजीको कैद करके लेते आये और छः मास उपरान्त उसे उपहार देकर छोड़ दिया। इस विजयके स्मरणार्थ चित्तौड़में एक बड़ी मीनार खड़ी की गयी जिसकी तैयारीमें दस वर्ष लगे। राणा कुम्भाने कई भवन बनवाये। वे अच्छे कवि थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनकी रानी मीराबाई मेड़ताके राठौरकी कन्या थी जो अपने प्रेम, भक्ति तथा रचनाओंके लिए विख्यात है।

राणा ऊदा

राणा कुम्भा पचास वर्ष राज्य करनेके उपरान्त संवत् १५२५ (सन् १४६८ ई०) में अपने पुत्र ऊदाके हाथ मारे गये जिसे 'हत्यारा' नाम दिया जाता है। सब राजा उससे बागी हो गये। वह लज्जामें डूबा रहता था। अन्तको उसने दिल्लीके बादशाहको कन्या देकर मित्रता करनेका विचार किया। ईश्वर चित्तौड़को इस अपमानसे बचाना चाहता था। जब वह दिल्लीमें दरबारसे उठा तो उसके ऊपर बिजली गिरी और वहीं उसका अन्त हो गया।

राणा रायमल

ऊदा(उदयसिंह)के पुत्र रायमल संवत् १५३० (सन् १४७३ ई०) में राजगद्दीपर बैठे। वह बड़े वीर थे। पहिले उन्होंने शाही सेनाको पराजित किया, पश्चात् मालवाके बादशाहोंसे युद्ध करते रहे। उन्हें अपने पुत्रोंके झगड़ोंसे बहुत दुःख हुआ। एक पुत्र जयमल तो दुराचारसे मारा गया। दूसरे दो पुत्रों—सांगा तथा पृथ्वीराज—के मध्यमें सदा विग्रह हो रहा। पृथ्वीराज अपने आपको बड़ा शूर-वीर मान गद्दीके योग्य समझता था। एक दिन सांगाने बात करते कहा कि यद्यपि बड़ा होनेसे अधिकार मेरा है, परन्तु मैं इसका निर्णय देवीपर छोड़ता हूँ। अन्तको वे मन्दिरमें पहुँचे और पूछा कि गद्दीका स्वामी कौन है। उत्तर मिला सांगा। इसपर पृथ्वीराजने तलवार खींच ली और उस कथनको अन्यथा करना चाहा।

राजपुत्र सांगाकी विपत्ति

राजपुत्र सांगाको पाँच जख्म लगे और आँखमें तीर लगा, किन्तु वे वहाँसे भागकर बच गये। उन्होंने भेष बदल लिया और बाहर गड़े-रियोंके साथ रहने लगे। एक दिन जमींदारने उन्हें यह कहकर निकाल दिया कि तुम्हें पशुओंके रखनेकी योग्यता नहीं। एक स्थानमें उन्हें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोटियाँ सेकनेका काम दिया गया तो एक बार उन्हें यह सुनना पड़ा कि पकानेकी अपेक्षा तुम्हें खानेका बहुत शौक है। यह हाल परमराके ठाकुरने सुना। उसने उन्हें ले जाकर अपनी कन्याके साथ उनका विवाह कर दिया।

राजपुत्र जयमल

पृथ्वीराजसे अप्रसन्न होकर पिताने उसे निकाल दिया। अब जयमल शेष रह गया। वह राव सुल्तानकी कन्या ताराबाईके साथ विवाह करना चाहता था। राव सुल्तानको पठानोंने निकाल दिया था। उसने कहा कि यदि जयमल मेरा राज्य मुझे लौटा दे तो विवाह कर दूँगा। जयमल इसके लिए तैयार हुआ, किन्तु जब युद्धसे पूर्व उसने कन्यासे मिलना चाहा तो कन्याके पिताने क्रोधमें उसे मार डाला। राणाने यह समाचार सुनकर कहा—"जयमलको ठीक दण्ड मिला, क्योंकि उसने एक दुःखित तथा पीड़ित व्यक्तिका अपमान करना चाहा था।"

चाचा और भतीजा

राणाने पृथ्वीराजको वापस बुलाया। राणाका भाई सूर्यमल भी गद्दीपर बैठनेका इच्छुक था। वह मालवा जा पहुँचा। उसने वहाँसे सेना लेकर आक्रमण किया। राणा युद्ध करने गये। पृथ्वीराज राणाकी सहायताको जा पहुँचा। संग्राममें सूर्यमल तथा पृथ्वीराज दोनों जख्मी हुए और अन्तको थककर हट गये। पृथ्वीराज अपने चाचाके पास गया जब कि शस्त्रवैद्य उसके जख्म सी रहा था। सूर्यमलने खड़ा होकर भतीजेका सत्कार किया, परन्तु उसके जख्मोंके बन्द टूट गये। पृथ्वीराजने पूछा—"चाचा, जख्म कैसे हैं?" सूर्यमलने कहा "तुम्हें देखनेके आनन्दसे सर्वथा अच्छे हो गये हैं।" बातें करते-करते पृथ्वीराजने खानेके लिए भोजन माँगा। भोजन करनेके उपरान्त पृथ्वीराज चला और कहता गया—"चाचा, कल हम युद्ध समाप्त करेंगे।" सूर्यमलने उत्तर दिया—"अच्छा पुत्र, शीघ्र आना।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृथ्वीराज तथा रायमल दोनों कुछ कालमें इन्तकाल कर गये और राजपुत्र सांगा लौटकर संवत् १५६५ (सन् १५०८ ई०) में गद्दीपर बैठा। सांगाके राज्यकालमें मेवाड़ उन्नतिके शिखरपर पहुँच गया। सांगाकी यह इच्छा थी कि मैं फिर दिल्लीमें राजपूती राज्य स्थापित करूँ। गृहसम्बन्धी झगड़ोंसे छुट्टी पानेपर वे अपना राज्य बढ़ानेकी धुनमें लगे। उन्होंने मालवा तथा दिल्लीके मुसलमान बादशाहके मुकाबलेमें अठारह युद्ध जीते। उनमेंसे दो अर्थात् बकरोल तथा घटोलीमें इब्राहीम लोदी स्वयं उनके मुकाबलेपर था। सारी शाही सेनाका वध हुआ और एक राजयुवक विजयके चिह्नस्वरूप चित्तौड़ लाया गया।

मारवाड़ तथा अम्बरके राजाओंने उनका आधिपत्य स्वीकार किया। ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, रासुन, काल्पी, चन्देरी, बूँदी, गकराव, रामपुरा तथा आबूके राजा उनको कर देने लगे। अखिल राजस्थान उनकी ओर देखने लगा और राजपूत उनकी पूजा करने लगे।

राणाका शरीर बड़ा दृढ़ था। कार्त्तिक, संवत् १५८४ (नवम्बर, सन् १५२७ ई०) में बाबरसे उनका युद्ध हुआ जिसका वर्णन आगे चलकर आयगा। मरते समय राणाके शरीरपर तलवार या भालेके सौसे अधिक जख्मोंके चिह्न विद्यमान थे। एक आँख अपने भाईके साथ युद्धमें नष्ट हुई थी। एक बाहु लोदीके साथ युद्धमें आहत हुई थी। उनका एक पैर एक और युद्धमें तोपके गोलेसे टूट गया था। वे इतने वीर तथा साहसी थे कि उन्होंने मालवाके बादशाह मुजफ्फरको उसकी राजधानीमें जाकर कैद कर लिया, रणथम्भोरका अजेय दुर्ग शाही सेनाका मुकाबला करके ले लिया।

राणा रत्न

संवत् १५८६ (सन् १५२९ ई०) में रत्नाजी (रत्नसिंह) सिंहासनपर बैठे। वे पिताके ही सदृश वीर थे। उन्होंने चित्तौड़ दुर्गके द्वार यह प्रकट करनेके लिए खुले रहनेकी आज्ञा दी कि इसके द्वार दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और माण्डू हैं। अभी वे नवयुवक ही थे कि उन्होंने अपने सम्बन्धी बूँदीके राजासे झगड़ा किया और दोनोंके प्राण चले गये।

राणा विक्रमाजीत

संवत् १५९१ (सन् १५३४ ई०) में विक्रमाजीत राजगद्दीपर बैठे। यद्यपि ये वीर थे, परन्तु इन्हें अपने कर्तव्योंका विचार न था। इन्होंने अपनी मूर्खतासे सारे सरदारोंको हटा दिया। चित्तौड़को निर्बल पाकर मालवाके वीर बहादुरशाहने बदला लेनेके विचारसे आक्रमण कर दिया। जब सहस्रों राजपूत युद्धमें मारे गये तो राणा सांगाकी रानीने अपने छोटे पुत्र उदयसिंहकी रक्षाके लिए हुमायूँसे प्रार्थना की। हुमायूँ देर करके पहुँचा। चित्तौड़की राजपूत स्त्रियोंने पुनः अपनी वीरताका परिचय दिया। सहस्रों जलकर भस्म हो गयीं। हुमायूँके आनेपर बहादुरशाह चित्तौड़को छोड़कर चला गया। इतनी हलचलके बाद भी विक्रमाजीत वैसेके वैसे ही रहे। एक दिन उन्होंने राजसभामें अजमेरके वृद्ध राजा कर्मचन्दको, जिसने सांगाको दुःखकालमें आश्रय दिया था, अपमानित किया। समस्त ठाकुर एकत्र हो गये। कानजी चन्दादत्त उनका नेता था। उसने विक्रमाजीतको गद्दीसे उतारकर पृथ्वीराजके खवास-पुत्र वनवीरको सिंहासनपर बिठाया।

वीर धात्री पन्ना

वनवीर पहिले तो सिंहासनसे इन्कार करता था, परन्तु जब गद्दीपर बैठ गया तो उसकी इच्छा हुई कि उदयसिंहको ही अपने मार्गसे हटा दूँ। उसने उदयसिंहका वध करनेका विचार कर लिया। उदयसिंहकी धात्री पन्नाको यह समाचार विदित हो गया। उसने कलेजेपर पत्थर रखकर उदयसिंहको बाँदीके सुपुर्द किया कि वह उसे बाहर ले जावे। दो मिनट पश्चात् घातक पहुँचा तो पन्नाने अपने पुत्रकी ओर इशारा कर दिया। अपनी आँखों अपने पुत्रका वध होते देखा, किन्तु उसने एक आहतक न ली। भारतकी वीर देवि, तुमने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने कर्तव्यका पालन कर वह अपूर्व दृष्टान्त इतिहासके सामने रखा है कि तुम्हारा नाम सर्वदा तथा सर्वत्र प्रतिष्ठासे लिया जायगा।

पन्ना सच्ची राजपूतनी थी। वह उदयसिंहको लेकर भीलोंकी सहायतासे डोंगरपुर होती हुई कमलमीर पहुँची और उन्हें वहाँके जैनशासक आशाशाहके सुपुर्द कर वापिस आयी। सात वर्ष व्यतीत हो गये। शनैः-शनैः यह समाचार फैल गया और राजपूत ठाकुर उदयसिंहके पास आने लगे। कोम्बूके दुर्गमें उन्हें तिलक लगाकर मेवाड़का राणा स्वीकार किया गया। दुर्गके राजपूत भी इन ठाकुरोंके साथ मिल गये।

राणा उदयसिंह

संवत् १५९७ (सन् १५४० ई०) में उदयसिंह राणा प्रसिद्ध हुए। वनवीर अपने परिवार सहित दक्षिणको चला गया। उदयसिंहमें कोई भी गुण न था। अतः उनके शासनसे मेवाड़को कोई विशेष लाभ या गौरव प्राप्त न हुआ। उसी वर्ष अमरकोटमें हुमायूँका पुत्र अकबर उत्पन्न हुआ जब कि हुमायूँ शेरशाहसे पराजित होकर भागा जा रहा था और अमरकोटके सोडा राजाने उसे अपने यहाँ आश्रय दिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण

मुगल बादशाह

तीन नयी शक्तियाँ

सोलहवीं शताब्दीमें भारतमें तीन नयी शक्तियोंका प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने इस देशके भावी इतिहासका चित्र परिवर्तित कर दिया। ये ऐसी बलवती थीं कि इनकी विद्यमानतासे यहाँके जातीय जीवनमें नया प्रकरण आरम्भ होता है और इस देशके इतिहासमें नवीन कालकी नींव रखी जाती है। उनमेंसे प्रथम शक्ति नूतन धार्मिक जीवनकी तरंग थी जो कि समस्त देशमें फैल गयी और जिसने कई स्थानोंमें स्पष्ट परिणाम उत्पन्न किये। दूसरी शक्ति पश्चिमोत्तरसे मुगल बाबरके आक्रमणके रूपमें उत्पन्न हुई थी। बाबरके ही वंशमें अकबर बादशाह हुआ जिसने भारतवर्षके राज्यका रूप परिवर्तित कर दिया। तीसरी शक्ति समुद्रके मार्गसे हरिवर्षीय (यूरोपीय) श्वेत जातियोंके भारतवर्षमें आनेसे उत्पन्न हुई जिनके आनेका उद्देश्य केवल व्यापारिक लाभ उठाना था।

मुसलमान शासक

यद्यपि शहाबुद्दीनके कालसे दिल्लीका सिंहासन मुसलमानोंके हाथमें चला गया, परन्तु उनके बाद शताब्दियोंतक कोई देशी राज्य स्थापित न हुआ। जब कोई व्यक्ति किसी बड़े नगरकी विजय कर लेता तो वह उस स्थानका बादशाह कहलाने लग जाता था। शहाबुद्दीन एक दासको दिल्लीका राज्य देकर चला गया था। उस दासकी सन्तान दिल्लीमें राज्य करती रही। उसके बाद खिलजी, तुगलक, सैयद-वंश दिल्लीके शासक रहे, परन्तु उनका शासन प्रायः दिल्लीके इर्द-गिर्द ही परिमित रहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब कभी उन्हें धनकी आवश्यकता होती थी तो किसी धनाढ्य राजापर आक्रमण कर देते थे और कोष लूटकर ले जाते थे। कभी-कभी तो वे केवल किसी सुन्दर स्त्रीकी प्राप्तिके निमित्त दूसरे प्रान्तपर आक्रमण कर देते थे। इन आक्रमणोंमें जहाँ एक ओर हमें पद्मिनी जैसी पवित्र मूर्तियोंके उदाहरण मिलते हैं वहाँ देवलदेवी तथा कमलादेवी जैसी गिरी हुई स्त्रियोंके उदाहरण भी दृष्टिगोचर होते हैं। गुजरातमें देवगढ़के राजाकी रानी सखियों सहित अलाउद्दीनकी सेनाके हाथमें पड़ गयीं। कुछ काल तो वह अपने आचरणपर स्थिर रही, जब गिरी तो ऐसी गिरी कि उसने अपनी पुत्री कमलादेवीको भी लानेके लिए आक्रमण कराये। अन्तको कमलादेवी भी पकड़ी गयी। खिलजी-वंशका अन्तिम राजा एक नीच जातिका आर्य युवक था जो दासावस्थामें ही मुसलमान हो गया था। उसने अपने स्वामीका वध करके कमलादेवीसे विवाह कर लिया और दिल्लीके सिंहसानपर बैठ गया। इस प्रकार जब किसी राजकर्मचारीको अवसर मिलता तो वह सिंहासनपर बैठकर अपना वंश चला देता। अन्तिम वंश लोदी-वंश था।

बाबर

बाबर १२ वर्षकी उम्रमें अपने पिताके मरनेपर फरगनाकी गद्दीपर बैठा। उसने पानीपतकी रणभूमिमें इब्राहीम लोदीको पराजित किया। कार्त्तिक, संवत् १५८४ (नवम्बर, सन् १५२७ ई०) में राणा सांगा बाबरसे युद्ध करनेके लिए उद्यत हो गये। सरदारोंने बाबरसे कहा—"आप पंजाबमें जाकर विश्राम कीजिये।" उसने उत्तरमें कहा—"हमारी विजयकी प्रसिद्धि फैल गयी है। इस कार्यको देखकर लोग कहेंगे कि जब तलवार चलानेका समय आया तो सरदारोंको आगे करके आप चला गया। महापुरुषोंके नामपर कलंक लगानेसे मर जाना कहीं अच्छा है।" जब राजपूतोंके साथ कई दिनोंतक युद्ध करते-करते उसकी सेना व्याकुल हो गयी तो उसने मदिरापात्र तोड़ दिये और मदिरा सर्वथा त्याग दी। उस समय उसने अपने सैनिकोंके सामने प्रभावशाली भाषण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करते हुए कहा—"तुम देखते हो, हम कौन हैं और कहाँ खड़े हैं। तुमने इतना कष्ट सहकर और प्राणोंको खतरेमें डालकर यह देश फतह किया है जिसकी कामना सभी बादशाह करते हैं। हे वीर पुरुषो, तुम्हारे हृदय क्यों घटते जाते हैं। जन-संख्या न्यून हो जाय, कोई चिन्ता नहीं; परन्तु हृदयोंका घटना आश्चर्यजनक है। परमात्मा न करे, यदि कार्य कुछ भी विपरीत हुआ तो ठहरनेके लिए न भूमि है और न आकाश। अन्तको मरना है, फिर मरनेसे क्या डरना? तलवार मारकर मरना सहस्र जीवनोंसे उत्तम है। अब कुरान तुम्हारे सामने है, यह जाने और तुम जानो।" सेनाको उत्साह आ गया और वह मरने-मारनेके लिए उद्यत हो गयी।

बाबरने दिल्ली और आगरा ले लिया, परन्तु शीघ्र ही संवत् १५८७ (सन् १५३० ई०) में वह सदाके लिए संसारसे प्रस्थान कर गया।

हुमायूँ

बाबरकी मृत्युके उपरान्त उसका पुत्र हुमायूँ दिल्लीके सिंहासनपर बैठा। दूसरा पुत्र कामरान काबुलका शासक हुआ। आर्यावर्तके अफगान इन मुगलोंसे बहुत घृणा करते थे। वे सब इस नवीन वंशके विरुद्ध हो गये। बंगालका अफगान शासक शेरखाँ उनका नेता था। दस वर्षपर्यन्त हुमायूँ उनके साथ लड़ता रहा और काबुलकी ओरसे कोई सहायता न मिलनेके कारण विवश हो उसे इधर-उधर दौड़ना पड़ा। संवत् १५९९ (सन् १५४२ ई०) में शेरखाँ दिल्लीका बादशाह बन बैठा। दो वर्ष बाद कालिञ्जरके दुर्गपर आक्रमण करते हुए शेरखाँ मारा गया। कुछ वर्ष उसके पुत्रने राज्य किया। उसके पौत्रके समय बंगाल, पंजाब और मालवा स्वतन्त्र हो गये। उधर हुमायूँ फारससे सहायता लेकर आया और संवत् १६१२ (सन् १५५६ ई०) में उसने पानीपतकी भूमिमें अफगानोंको पराजित किया। हुमायूँने काबुलका राज्य भी वापिस ले लिया था। कुछ मास राज्य करके वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

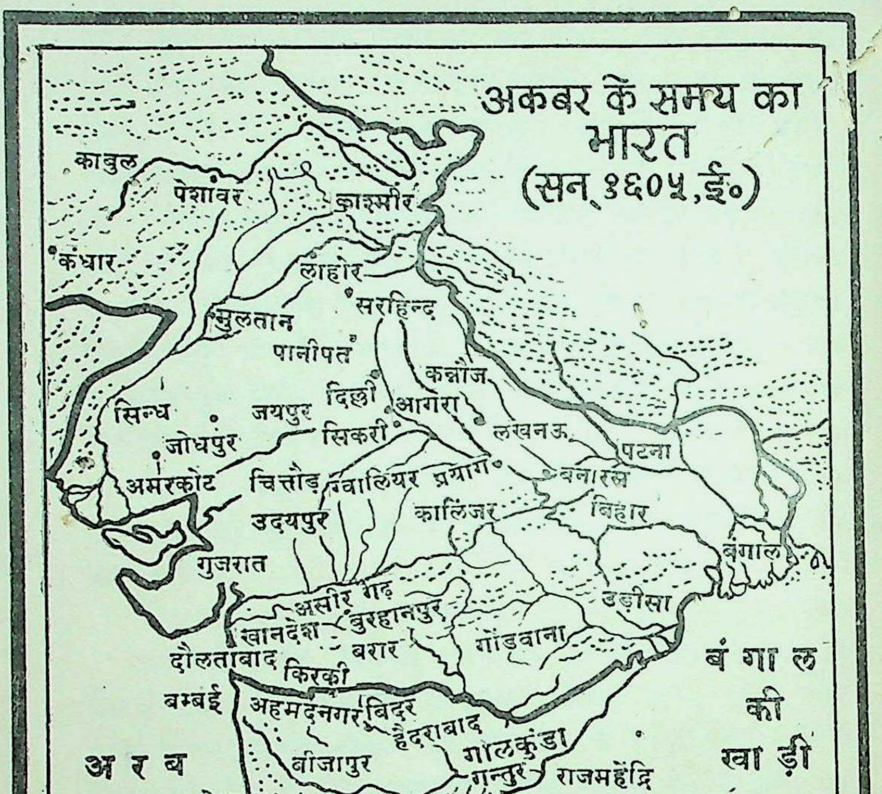

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महलकी सीढ़ीसे गिरकर परलोकवासी हुआ और अकबर सिंहासनपर विराजमान हुआ।

अकबर

अशोकके अनन्तर अकबर ही पहिला बादशाह हुआ जिसने इस देशमें देशी राज्य स्थापित किया। यदि अकबर न होता तो मुगलोंका भी इस देशके इतिहासपर कोई विशेष प्रभाव न पड़ता और मुगल भी पहिलेके कई वंशोंके सदृश आते और चले जाते। अकबरने मुगल-शासनको एक सुव्यवस्थित राज्यका पद दे दिया। अकबर प्रथम व्यक्ति था जिसने आर्यों या मुसलमानोंकी संख्याका खयाल न कर राज्य करनेका निश्चय किया। उसने धर्मको दूसरा स्थान देकर राजनीतिसे काम लेना प्रारम्भ कर दिया। वह सर्वथा निरक्षर था, पर बुद्धिमान् और स्वभावतः राजनीतिकुशल था। उसने अपने राज्यको दृढ़ करनेके लिए आर्योंके मस्तिष्कसे पूर्ण लाभ उठाया। राजपूतोंके साथ सम्बन्ध करके उसने मानसिंह जैसे वीर पुरुषोंसे युद्ध-विजयमें सहायता ली। उसने भूमिकरकी व्यवस्था की जिसका सबसे बड़ा अफसर टोडरमल बनाया गया। यद्यपि अकबर जन्मसे मुसलमान था फिर भी वह ब्राह्मणोंका बड़ा मान करता था। सूर्य देवताकी पूजा करता था। गृहमें हवन कराता था और यह जानकर प्रसन्न होता था कि गत जन्ममें मेरा ब्राह्मण होना सिद्ध किया गया है।

प्रयागके एक ब्राह्मणने इस उद्देश्यसे बड़ा भारी यज्ञ किया था कि मैं आगामी जन्ममें देशका राजा बनूँ। उस ब्राह्मणकी मृत्यु और अकबरकी उत्पत्तिमें थोड़ा अन्तर निकला। यह भी प्रश्न उठाया गया कि उस ब्राह्मणने म्लेच्छके गृहमें क्यों जन्म लिया? इसका उत्तर यह था कि उस यज्ञके स्थानपर कुछ अस्थियाँ पड़ी थीं, इसलिए उसमें यह दोष रह गया।

महाभारतमें कहा गया है कि राजाके लिए सबसे दृढ़ दुर्ग प्रजाका हृदय होता है। साथ ही हमें यह भी स्मरण रखना चाहिये कि शुद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आर्यजातीय विचारसे अकबर कोई बड़ा राजा न था। आर्यजातिके प्रतिनिधि तो महाराणा प्रताप थे जो आमरण अकबरके साथ लड़ते रहे। आर्योंकी जातीयताको अकबरने दृढ़ नहीं किया, प्रत्युत उसे अत्यन्त निर्बल कर दिया।

अकबर जब सिंहासनपर बैठा उस समय मुगलराज्य केवल दिल्ली और आगरातक सीमित था। सिंहासनारूढ़ होते समय अकबर १३ वर्षका था, अतः बैरामखाँ उसका रक्षक बनाया गया। चार वर्ष-पर्यन्त तो बैरामखाँका प्रभाव बना रहा, परन्तु वह बहुत गर्व करता था, अतः उसके शत्रु अधिक हो गये। अन्तमें एक दिन आखेटके बहाने अकबरने उसे राज्यसे बाहर निकाल दिया। बैरामखाँने विद्रोह किया, किन्तु वह पराजित हुआ। उसने काबा जानेका निश्चय किया, किन्तु मार्गमें एक अफगानने उसे मार डाला !

पहले पहल अकबरने जयपुरको विजित करके उसके राजाकी कन्याके साथ विवाह किया। फिर जोधपुरको अधीन किया और जोधपुरकी एक कन्यासे अपने पुत्र सलीमका विवाह करा दिया। जयपुरनरेशके पुत्रको पंजाबका शासक नियत किया। राजा मानसिंह सेनापति बनाये गये। उन्होंने पहिले काबुलको और फिर उड़ीसाको जीता। इन आर्य राजाओंकी सहायतासे अकबरने पंजाबसे बिहारतकके मुसलमान शासकोंको अपने अधीन किया। संवत् १६३३ (सन् १५७६ ई०) में बंगाल अफगानोंसे जीतकर मुगलराज्यका प्रान्त बना लिया गया। मानसिंह वहाँका शासक नियुक्त हुआ। उसने मालवाको संवत् १६२८ (सन् १५७१ ई०) में और उससे एक वर्ष पीछे गुजरातको अपने अधीन किया। सं० १६४३ (सन् १५८६ ई०)में काश्मीर, सं० १६५१ (सन् १५९४ ई०) में कन्दहार और संवत् १६४९ (सन् १५९२ ई०) में सिन्धको जीता। अकबर दक्षिणमें बहुत सफल न हुआ। संवत् १६४१ (सन् १५८४ ई०) से लेकर १२ वर्षपर्यन्त अहमद-नगरकी रानी चाँदबीबीके विरुद्ध मुगल सेना लड़ती रही। चाँदबीबीकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७७ सम्राट् जहाँगीर

CC-0 Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्राट् शाहजहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वीरता तथा बुद्धिमत्ता विख्यात है। उसने फारसी-हब्शी दोनों सम्प्रदायोंको मिला लिया और बीजापुर तथा अन्य मुसलमान रियासतोंसे मित्रता उत्पन्न करके युद्ध किया। संवत् १६५६ (सन् १५९९ ई०) में अकबरने स्वयं सेना लेकर आक्रमण किया, फिर भी अहमदनगर अधीन न हुआ। तब अकबरने खानदेशपर अधिकार कर लिया और दक्षिण-विजयका काम अपने उत्तराधिकारियोंके लिए छोड़ दिया। अकबरने दिल्लीसे हटकर आगरामें राजधानी बनायी। वह संवत् १६६२ (सन् १६०५ ई०) में मर गया।

जहाँगीर

संवत् १६६२ (सन् १६०५ ई०) में जहाँगीर सिंहासनपर बैठा। उसने २२ वर्ष राज्य किया। उसका प्रायः समस्त राज्यकाल अपने पुत्रों द्वारा किये गये विद्रोहोंको मिटानेमें व्यय हुआ। उसमें राजनीतिक योग्यता न थी। अकबरकी मृत्युके बाद ही उसके राज्यमें परिवर्तन आरम्भ हो गया। अकबर राज्यका निर्माता था। पुत्र जहाँगीर विषयी था। उसका जीवन और नीति एक स्त्रीके प्रेममें ही पायी जाती है।

मिर्जा गयास किसी कारणसे ईरान छोड़कर भारतवर्ष आ रहा था। मार्गमें उसके एक पुत्री उत्पन्न हुई। वह इतना निर्धन था कि उसका पालन न कर सकता था, अतः वह उसे मार्गमें छोड़कर आगे चल पड़ा। एक काफलाने उस कन्याको उठा लिया और उसकी माताको दूध पिलानेपर नौकर रख लिया। मिर्जा गयास अकबरके दरबारमें किसी पदपर नियुक्त हो गया। वह कन्या मेहरुन्निसा सौन्दर्यमें अद्वितीय थी। एक बार जब वह उद्यानमें खेलती थी तो राजपुत्रने उसे देखा। राजपुत्रने दो कपोत उसे पकड़ाये। एक कपोत उसके हाथसे छूट गया। राजपुत्रने पूछा वह किस प्रकार उड़ गया। मेहरुन्निसाने दूसरा कपोत भी उड़ा दिया और कहा—'इस प्रकार'। जब अकबरको जहाँगीरके प्रेमका वृत्तान्त विदित हुआ तो उसने कन्याका विवाह शेर अफगानसे कराके उसके पतिको बंगालका शासक नियुक्त कर दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब जहाँगीर सिंहासनपर बैठा तो उसका प्रेम न भूल सका। उसने शेर अफगानका वध कराके मेहरुन्निसासे विवाह कर लिया और उसका नाम नूरजहाँ रखा।

जहाँगीर स्वयं कहा करता था कि मैंने एक प्याला शराबके लिए अपना राज्य नूरजहाँके हाथ बेंच दिया है। उसकी अपनी कोई नीति न थी। नूरजहाँ ही वास्तवमें राज्य करती थी। नूरजहाँ अपने पहिले पुत्र शहर्यारके लिए राजसिंहासन प्राप्त करना चाहती थी। परिणाम यह हुआ कि शाहजहाँ पितासे पृथक् हो गया। नूरजहाँका मकबरा जहाँगीरके मकबरेके समीप लाहौरमें एक टूटे मकानमें है। जहाँगीर संवत् १६८५ (सन् १६२८ ई०) में इस संसारसे चल बसा। उसके उपरान्त उसका पुत्र शाहजहाँ सिंहासनका स्वामी हुआ।

शाहजहाँ

जब शाहजहाँ राजगद्दीपर बैठा तो उसने नूरजहाँको अपने अधीन करके शहर्यार आदिका वध करा दिया। शाहजहाँ अपनी प्रजाके साथ न्यायका बर्ताव करता था। उसने कई उत्तम भवन बनवाये। उत्तर भारतमें ताजमहल उसका स्मारक है। उसने करोड़ों रुपये व्यय करके 'तख्त-ताऊस' बनवाया जिसमें संसारका सबसे बड़ा हीरा 'कोहेनूर*' जड़ा गया। शाहजहाँने संवत् १६९२ (सन् १६३६ ई०) में अहमद-नगरको एलिचपुर सहित मुगल राज्यके अन्तर्गत कर लिया। इसके कुछ वर्ष उपरान्त उसने बेदर राज्य भी जीत लिया।

जैसे जहाँगीरने राज्यपर मस्तीका रंग चढ़ा दिया था वैसे ही

* यह हीरा अत्यन्त प्राचीन कालसे (कहा जाता है कि कौरवों और पाण्डवोंके समयसे) दिल्लीके राजाके पास चला आता है। इब्राहीम लोदीसे वह मुगलोंके पास पहुँचा। फिर 'तख्त-ताऊस' के साथ नादिरशाह उसे भी लूटकर गजनी ले गया। जब शाहशुजा भागकर पंजाबमें आया तो रणजीत सिंहने कोहेनूरको अपने अधिकारमें कर लिया। पंजाबपर अंग्रेजोंका अधिकार हुआ तो यह हीरा लंदन भेज दिया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शाहजहाँने अपने शासन-कालमें जशनका रंग चढ़ा दिया। सेना तथा दरबार इस रंगसे रँग गये।

संवत् १७१५ (सन् १६५८ ई०) में शाहजहाँ रोगग्रस्त हुआ। उसके चारों पुत्रोंके बीच राजगद्दीके लिए संग्राम आरम्भ हुआ। शाहजहाँका बड़ा बेटा दाराशिकोह था। धर्मकी दृष्टिसे वह आर्य-सा हो गया था। यदि शाहजहाँके इच्छानुसार उसका बड़ा पुत्र दाराशिकोह गद्दीको सुशोभित करता तो राज्यपर अकर्मण्यताका रंग चढ़ जाता और फिर वही आर्य-ब्रह्मवाद—उपनिषदोंके राजर्षियोंका भाव—भारतवर्षकी राजगद्दीपर शासन करता। राजपूत राजा जयसिंह और जसवन्तसिंह भी उसके सहायक थे। औरंगजेबने मुसलमान सरदारों और सेनासे धर्मके नामपर अनुरोध किया। उसने संग्राममें दाराशिकोहपर विजय पायी। उसने अपने पिताको कैद कर दाराशिकोहका वध किया। एक वर्ष संग्रामके उपरान्त शुजा आराकानकी ओर भाग गया और उधर ही उसका प्राणान्त हुआ। औरंगजेबने चौथे भाई मुरादको कैद करके उसे कारावासमें ही मरवा डाला।

औरंगजेब

औरंगजेबने ४९ वर्ष अर्थात् संवत् १७६४ तक शासन किया। उसके राज्यमें मुगल-साम्राज्य उन्नतिके शिखरपर पहुँचकर अवनत होने लगा था। उसके जीवनकी बड़ी कामना दक्षिणके मुसलमानी राजाओंको अपने अधीन करनेकी थी। बीस वर्षपर्यन्त उसने अपने सेनापति बीजापुर और गोलकुण्डाको पराजित करनेके लिए भेजे, परन्तु वे सफल न हुए। पचीस वर्षके पश्चात् औरंगजेब अपनी हार्दिक इच्छा पूर्ण करनेके निमित्त स्वयं सेना लेकर निकला। संवत् १७४२ (सन् १६८५ ई०) में उसने दक्षिणपर आक्रमण किया और पाँच वर्षपर्यन्त संग्राम करनेके उपरान्त गोलकुण्डा और बीजापुरको मुगल-राज्यमें मिला लिया।

इन दो मुसलमान राज्योंको बलहीन करके औरंगजेबने वस्तुतः बड़ी भारी राजनीतिक भूल की। उसने दक्षिणमें आर्योंको उठनेका अवसर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिया। आर्य इतने बलवान् हो गये कि उसके शेष बीस वर्ष उनसे युद्ध करनेमें ही बीत गये। मराठे सैनिक शाही सेनाके पीछे-पीछे बढ़ आते थे। यदि उनसे युद्ध करनेके लिए थोड़ी सेना भेजी जाती तो वे उसे काट डालते, यदि बड़ी सेना जाती तो वे गायब हो जाते। प्रायः औरंगजेबके सैनिक मराठोंसे जा मिलते थे और उपहासमें उनके साथ बादशाहकी दीर्घायुके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करते थे, क्योंकि उसका जीवन उनके लिए अत्यन्त लाभकारी था। जब बीस वर्षके उपरान्त औरंगजेब वृद्ध तथा निर्बल हो गया और उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया तो उसकी सेना वेतनके लिए झगड़ने लगीं। संवत् १७६३ (सन् १७०६ ई०) में सेनामें इतनी हलचल मच गयी कि औरंगजेबने सेनाको पृथक् कर दिया और मराठोंसे संधि कर ली। इससे मराठोंकी शक्ति बहुत बढ़ गयी। अन्तको औरंगजेबने बड़ी निराशामें अहमदनगरमें प्राण-त्याग दिये। उसके अन्तिम शब्द उसकी असफलता तथा व्याकुलता प्रकट करते हैं। औरंगजेबने मुसलमानोंके धार्मिक उत्साहसे लाभ उठाकर सिंहासन प्राप्त किया था, इसलिए उसे अपने जीवनमें धार्मिक नीतिपर बड़ा बल देना पड़ा। अपने मुसलमान साथियोंको प्रसन्न करनेके लिए उसने आर्योंपर पुनः कर (जजिया) लगा दिया जिससे समस्त राजपूत-राज्य उसके विरुद्ध हो गये। पंजाबमें सिख लोग एक सैनिक जातिके रूपमें संघटित हो गये। उधर दक्षिणमें मराठोंकी एक बड़ी शक्ति स्थापित हो गयी। करके सम्बन्धमें आर्योंके प्रतिनिधिगण औरंगजेबकी राजसभामें उपस्थित हुए। सहस्रों मनुष्योंने बादशाहका मार्ग रोक लिया। उसने महावतको हाथी आगे बढ़ानेकी आज्ञा दी जिससे अनेक मनुष्य पददलित हो गये। औरंगजेबकी इस क्रूरताकी बात भारतवर्षके कोने-कोनेमें पहुँच गयी और बहुतसी अत्युक्तिपूर्ण कथाएँ प्रसिद्ध हो गयीं—यथा, बादशाह एक मन यज्ञोपवीत उतारकर भोजन करता है, इत्यादि। सतनामी सम्प्रदायके लोग राजविद्रोही हुए और बड़ी क्रूरताके साथ नष्ट किये गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा प्रकरण

राजपूतोंसे युद्ध

हमने मेवाड़के इतिहासकी शृंखला अकबरकी उत्पत्तिके कालतक लाकर छोड़ दी थी, क्योंकि राजपूतोंकी वीरता तथा उनके प्रसिद्ध कार्योंको भली भाँति समझनेके लिए आवश्यक था कि पहिले मुगल-साम्राज्यका कुछ वृत्तान्त लिखा जाता। अकबरने राज्यभार सँभालते ही राजपूतानेकी ओर मुख किया। उसने मारवाड़पर आक्रमण किया। हम पहिले कह आये हैं कि राजा बिहारीमल और उसके पुत्र राजा भगवान्-दासने अकबरको कर देना स्वीकार कर लिया और अपनी कन्याका विवाह भी अकबरके साथ कर दिया।

वह देश बड़ा भाग्यवान् है जहाँ राज्यशक्ति लोगोंके हाथमें हो और बादशाह उस शक्तिका केवल बाह्य चिह्न हो। पर एशिया और विशेषकर भारतवर्षमें बादशाह ही सर्वस्व था, लोग कुछ न थे। देशका भाग्य केवल एक व्यक्तिकी योग्यतापर निर्भर था। उदयसिंह अत्यन्त निर्बल-हृदय और अयोग्य पुरुष था। उसकी अपेक्षा अकबर बड़ा बुद्धिमान् और वीर था। उदयसिंहका क्या दोष ? वह भाग्यहीन जीवनके आरम्भकाल-में पर्वतोंमें छिपता हुआ प्राणोंके रक्षणार्थ इधर-उधर भागा फिरता था। उसके लिए राजकर्तव्य समझना कठिन काम था। चित्तौड़का दुर्भाग्य निःसन्देह उसके सिरपर मढ़ा जा सकता है। अकबरने चित्तौड़पर आक्रमण किया तो राणा उदयसिंह प्राणोंकी रक्षा करता हुआ वहाँसे भाग गया। परन्तु चित्तौड़में रक्षा करनेवालोंकी कमी न थी। चन्द्रवत ठाकुर साईं (साही) दासने सूर्यद्वारपर बड़े साहस तथा पराक्रमके साथ मुगलसेनासे युद्ध किया। वहाँ अभीतक उसका स्मारक विद्यमान है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईश्वरदास राठोर, कर्मचन्द कच्छवाह ओर झलौर एवं ग्वालियरके रईस चित्तौड़की रक्षामें लड़ते हुए मारे गये। अपने देशकी रक्षा करनेवाले शूर-वीरोंमें जयमल और फत्ताके नाम आर्यावर्तके इतिहासमें सर्वदा तारोंके सदृश चमकते रहेंगे। चन्द्रवत ठाकुरके मर जानेपर सेनाकी बाग फत्ताने सँभाली। फत्ता लेकवाका ठाकुर था। उसकी उम्र केवल १६ वर्षकी थी। उसका पिता पहिले युद्धमें मर चुका था। फत्ताकी माता वीर राजपूतनी थी। उसने फत्ताको आज्ञा दी—'पुत्र, बाणवस्त्र धारण कर रणक्षेत्रमें मरनेके लिए उद्यत हो जाओ।' इस भयसे कि कहीं उसका चित्त अपनी स्त्रीकी ओर न जाय, माताने स्वयं घोड़ेपर चढ़कर और उसकी स्त्रीको साथ बिठाकर युद्धमें प्रवेश किया। हाथमें तीर-कमान ले, दोनोंने चित्तौड़की रक्षामें लड़ते हुए अपने प्राण त्याग दिये। राजपूत भयरहित होकर टूट पड़े। उसी समय जयमलसिंहको, जो उस समय मेवाड़की सेनाका सेनापति था, एक गोली लगी। जयमलने ज्यों ही दूसरी गोलीका निशाना बनकर अपनी मृत्यु निश्चित जानी, त्योंही अपनी सेनाको लड़नेकी आज्ञा दी। आठ सहस्र राजपूतोंने बाण तथा अस्त्र धारण कर लिये, पान मुखमें धर दुर्गका द्वार खोल शत्रुओंपर जा पड़े। सहस्रोंका वध किया और स्वयं रणक्षेत्रमें वीरोंके समान मरे। इस रक्तपातके उपरान्त अकबर चित्तौड़में प्रविष्ट हुआ। अकबर कोपानलसे इतना प्रज्वलित था कि उसने चित्तौड़के बड़े-नड़े स्मारकों तथा भवनोंको गिरा दिया। इस प्रकार आर्यजातिका अन्तिम दुर्ग अकबरके हाथमें आया।

राणा उदयसिंहने अरवली पर्वतमें आश्रय लिया। फिर उसने उदयपुर नगर बसाया जो अभीतक मेवाड़की राजधानी बना हुआ है। चार वर्षके अनन्तर वह परलोकको प्रस्थान कर गया। उसने अपने स्थानपर बड़े पुत्रके बदले जगमलको ही बैठाना निश्चित किया। जब सिंहासनपर बैठनेका समय आया और सब ठाकुर एकत्र हुए तो झालावाड़ने चन्द्रवत ठाकुरसे कहा कि यह तो बड़ा अन्यान्य है कि बड़े पुत्रका अधिकार मारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाय। सब ठाकुर प्रतापके पक्षमें हो गये। जब जगमल गद्दीपर बैठने लगा तो चन्द्रवतने उसे बाहुसे पकड़कर यह कहते हुए पीछे हटा दिया कि "महाराज, आप चूक गये, वह स्थान तो आपके भाईका है।" यह कह उसने प्रतापको सिंहासनपर बिठा दिया।

राणा प्रताप

राणा प्रताप बिना किसी सामानके गद्दीपर आरूढ़ हुए। उनके चित्तमें बड़े संकल्प थे। वे चित्तौड़को जीतकर पुनः उसी पदपर लाना चाहते थे जो उसे पहिले प्राप्त था। राणा सांगाका वृत्तान्त पढ़कर उन्हें यह भी विचार होता था कि कोई समय ऐसा अवश्य आयगा जब मुझे दिल्ली पहुँचनेका अवसर मिलेगा!

अकबर बहुत आलस्यशील न था। उसने मारवाड़, अम्बर और बीकानेरके राजपूतोंको अपना सहायक बनाकर मेवाड़का शत्रु बना लिया। प्रतापने उन सबके साथ विवाह आदि बन्द कर दिये और अपनी कन्याएँ अपने ठाकुरोंमें ही देनेकी रीति जारी की। यद्यपि अम्बर और मारवाड़का राज्य बढ़ गया और मेवाड़का राज्य बहुत बलहीन हो गया, तो भी सत्यकी सर्वदा जीत होती है। बादमें यही प्रसिद्ध राजा जयसिंह तथा बख्तसिंह बड़ी विनयसे प्रार्थना करते थे कि हम फिर राजपूत बना लिये जायँ और हमारे साथ विवाहका सम्बन्ध प्रचलित किया जाय।

प्रतापकी प्रतिज्ञा

प्रतापने प्रतिज्ञा की कि अपनी राजपूती प्रतिष्ठाको स्थिर रखते हुए अपने देशकी रक्षा करूँगा। उन्होंने इस प्रतिज्ञाका अक्षरशः पालन किया। २५ वर्षपर्यन्त वे मुगल-साम्राज्य और उसके समस्त सहायकोंके विरुद्ध लड़ते रहे। कभी वे एक स्थानसे दूसरे स्थानतक दौड़ते और छिपते फिरते, कभी राजसेनाका नाश करते थे। उन्होंने अपने कार्योंसे सिद्ध कर दिखाया कि बापा रावलका कुल किसी मनुष्यके सामने सिर नहीं नीचा करेगा। उनके महान् कार्य प्रत्येक घाटीके अन्दर और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रत्येक सच्चे राजपूतके हृदयमें अंकित हैं। ठाकुर जगमलकी सन्तान, फत्ताके वंशज और चन्द्रवत-कुलके राजपूत सर्वदा उनके लिए प्राण देनेको उद्यत रहे। सहस्रों राजपूत प्रतापके कष्टोंका वृत्तान्त सुनकर उनके पास जा पहुँचे और जंगल तथा मैदानमें उनका साथ देते रहे।

चित्तौड़का ध्वंस हो जानेपर प्रतापने सुखके सब सामान त्याग दिये। सोने-चाँदीके पात्र अलग रख दिये। पत्तोंपर खाना और तृणादिपर सोना आरम्भ किया। तात्पर्य यह कि उन्होंने प्रत्येक सांसारिक सुखका त्याग कर दिया❀। उन्होंने सब लोगोंको समभूमिको छोड़कर पर्वतोंपर जाकर बसनेकी आज्ञा दी।

राजा मानसिंह

अकबरने प्रतापके विरुद्ध युद्ध जारी रखनेके लिए अजमेरमें आकर डेरे लगाये। वह राजपूतानेकी रियासतोंको प्रतापके विरुद्ध करनेकी चेष्टा करने लगा। अम्बरकी गद्दीपर उस समय राजा मानसिंह थे। वे बड़े वीर पुरुष थे। अकबरका आधा राज्य उन्हींके द्वारा विजित हुआ था। राजा मानसिंह सोलापुरपर विजय प्राप्त करके लौट रहे थे, कोमलमीरमें उन्होंने प्रतापसे मिलना चाहा। जब भोजन रखा गया तो प्रताप सिरमें दर्द होनेका बहाना कर भोजन करने न आये। प्रतापके पुत्र अमरने राजा मानसिंहसे भोजन आरम्भ करनेकी प्रार्थना की। राजा मानसिंह इस अपमानसे जल उठे। राणा प्रतापने कहला भेजा कि मैं उस राजपूतके साथ भोजन नहीं कर सकता जिसने अपनी पुत्री 'तुर्क' को दी है। राजा मानसिंहने 'अन्नदेवता' का निरादर न किया, दो-चार दाने अपनी पगड़ीमें रख लिये और कहा कि हमने आपका मान रखनेके लिए ही अपनी कन्याएँ तुर्कको दीं और अपनी प्रतिष्ठाको कलंकित किया। यदि आप विपत्ति ही बुलाना चाहते हैं तो यही सही। आप

❀ ये सब बातें अभी अभीतक किसी न किसी रूपमें प्रचलित रही हैं। उदयपुरके राणा सोने-चाँदीके पात्रोंमें भोजन करते हुए भी नीचे पत्ते रख लेते और अपनी शय्याके नीचे तृण रख लेते रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस देशमें न रह सकेंगे। फिर घोड़ेपर चढ़ वे यह कहते हुए चले गये कि मेरा नाम मानसिंह नहीं, यदि मैं आपका गर्व न तोड़ूँ। प्रतापने कहा—"मैं आपसे मिलनेके लिए तैयार रहूँगा।" राजा मानसिंहके चले जानेपर वह भूमि धोयी गयी और वहाँ गंगाजल छिड़का गया! जिन ठाकुरोंने राजा मानसे भेंट की थी उन्होंने जाकर स्नान किया और वस्त्र बदले।

हल्दीघाटीका युद्ध

यह सब समाचार अकबरके कानोंतक पहुँच गया। इसका परिणाम हल्दीघाटीका भयंकर युद्ध हुआ। युवराज सलीम सेना लेकर प्रतापसे लड़ने आया। उसके साथ राजा मानसिंह और महावतखाँ थे। महावतखाँ राजपूत था, पर मुसलमान हो गया था। प्रताप अपने बाईस सहस्र वीर राजपूत लेकर हल्दीघाटीमें आ डटे। श्रावण सुदी ७, संवत् १६३२ का दिन भारतवर्षके इतिहासमें वीरताके लिए चिर-प्रसिद्ध रहेगा। जब राजपूत मुगल सेनासे युद्ध करने लगे तो राणा प्रताप राजा मानसिंहके देखते हुए सलीमके सामने जा पहुँचे। हाथमें हथियार लिये और प्रसिद्ध घोड़े चेतकपर चढ़े हुए उन्होंने सलीमपर आक्रमण किया। महावत मारा गया। हौदा लोहेका था, इससे सलीम बच गया, किन्तु उसका भयभीत हाथी फिर वहाँ खड़ा न रह सका। रणक्षेत्रसे भाग गया। बड़ा घोर संग्राम हुआ। प्रतापको सात आघात लगे। वे अपना छत्र धारण किये रहते थे, इसलिए तत्काल पहचाने जा सकते थे। वे तीन बार घेरे गये और बड़ी कठिनतासे निकले। अन्तिम बार झाला ठाकुरने अपने स्वामीको बचानेके लिए छत्र छीन लिया और अपने प्राणोंकी आँहुति दे दी। इस प्रकार प्रतापकी रक्षा हुई। मुगल तोपखाना बड़ा स्थिर था। राजपूत उसके सामने टिक न सके। केवल आठ सहस्र पुरुष जीवित बचे। प्रताप चेतकपर चढ़कर बाहर निकले। चेतक पर्वत तथा नदियाँ नाँघता जा रहा था। उसके पीछे दो मुगल अश्वारोही लगे हुए थे। चेतकके शरीरसे भी रक्तस्राव

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो रहा था। एक आरोही अत्यन्त निकट आ पहुँचा। उसने पुकारकर कहा—"हो, नील घोड़ारा सवार हो!" प्रतापने फिरकर देखा तो अपने भाई सक्तापर नजर पड़ी। सक्ता व्यक्तिगत शत्रुताके कारण मुगलोंसे जा मिला था, परन्तु भाईको एकाकी दौड़ते देखकर उसके हृदयमें प्रेमका स्रोत लहलहा आया और वह प्रतापका पीछा करनेवालोंको मारकर भाईसे जा मिला। दोनों भाई परस्पर मिले। चेतकने तत्काल गिरकर अपने प्राण त्याग दिये। उस स्थानपर चेतकका स्मारक बनाया गया जो अब भी वर्तमान है।

वर्षाकाल आ गया था अतः सलीम पीछे हटा। परन्तु वर्षाकालके व्यतीत हो जानेपर फिर आ उपस्थित हुआ। प्रतापने कोमलमीर और चोन्द नामक स्थानोंमें युद्ध किया, परन्तु उन्हें पीछे हटना पड़ा। शत्रुसेनाने चारों ओरसे प्रतापको घेर लिया, फिर भी वे एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जा पहुँचते थे। एक समय झपटकर उन्होंने फरीदखाँकी सेनाको काट डाला। फिर दूसरा वर्षाकाल आया तो प्रतापको विश्राम मिला।

इसी प्रकार कई वर्ष बीत गये। प्रत्येक वर्ष प्रतापके साथियों तथा युद्धकी सामग्रीमें कमी होती गयी। यवनोंके बीच दौड़ते हुए उन्हें अपने बाल-बच्चोंकी भी चिन्ता लगी रहती थी। अन्तको अकबरने भी उनके साहस और वीरताको मान लिया। खानखानाने तो यह लिखकर भेजा—"संसारमें सब कुछ परिवर्तित हो जाता है। देश तथा धन चले जाते हैं, किन्तु अच्छा नाम सदा स्थिर रहता है। पत्ता (प्रताप) ने धन और देश त्याग दिया, किन्तु अपना सिर नहीं झुकाया। भारतवर्षके समस्त राजाओंमें केवल उसने अपनी जातिका मान स्थित रखा है।"

एक समय प्रतापमें भी निर्बलता आ गयी थी। घटना केवल यह प्रकट करती है कि आखिर राणा प्रताप भी तो मनुष्य ही थे। मुगल-सेना इस प्रकार पीछा कर रही थी कि पाँच बार पका हुआ खाना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छोड़ना पड़ा। एक दिन उनकी स्त्रीने जंगली जौकी रोटियाँ पकायीं और एक-एक सब बच्चोंको दीं। बच्चोंने आधी खा ली और आधी दूसरे समयके लिए रख छोड़ी। प्रताप लेटे हुए अपनी दशापर सोच रहे थे कि उन्होंने एक आर्तनाद सुना—उनकी नन्हींसी बालिकाकी आधी रोटी बिल्ली उठाकर ले गयी थी। पाषाणहृदयको हिला देनेवाले छोटे बच्चेके इस नादने उस वीर पुरुषको भी, जिसने अपने सहस्रों सम्बन्धियोंको कटते-मरते देखा था, विचलित कर दिया और उसने नैराश्यकी दशामें एक पत्र लिखा। अकबरको पत्र पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उसने वह पत्र पृथ्वीराजको दिखलाया। पृथ्वीराज बीकानेरके राजाका कनिष्ठ भ्राता था और अकबरके मन्त्रियोंमेंसे था।

पृथ्वीराजका पत्र

यह पुरुष बड़ा वीर राजपूत था और हृदयसे प्रतापका यश चाहता था। उसने अकबरसे कहा, यह कृत्रिम पत्र है, क्योंकि प्रताप इस प्रकारका पत्र लिखनेवाले मनुष्य नहीं। अन्तको अकबरसे आज्ञा लेकर पृथ्वीराजने प्रतापको एक पत्र लिखा। उस पत्रसे दो अभिप्राय निकल सकते थे। पृथ्वीराजने लिखा—"आर्योंकी आशाएँ प्रतापपर लगी हुई हैं, किन्तु राणा उनको निराश करता है। प्रतापके सिवा अकबरने सबको एकसा कर दिया है। हमारे रईसोंने अपनी वीरताको त्याग दिया है, हमारी स्त्रियोंने अपनी पवित्रताको बेच डाला है। अकबरने सबको मोल ले लिया है। एकमात्र प्रतापको कोई लालच देकर विचलित नहीं कर सका। अकबरने अन्य राजाओंका मान नौ दिनके मेलेमें दूषित किया है, केवल हमीरका कुल इस अपमानसे बचा है। लोग विस्मित हैं कि प्रतापको कहाँसे सहायता मिलती है। प्रताप, तुमने अपनी वीरता तथा तलवारसे क्षत्रियमानको रखा है। यही दशा सर्वदा नहीं रहेगी। एक दिन समस्त राजपूतजाति प्रतापके चरण चूमेगी। सबके नेत्र प्रतापपर लगे हैं। केवल प्रताप ही सारे भारत-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्षमें राजपूत-प्रतिष्ठाको स्थिर रखने और उसे पुनः उन्नतिके शिखरपर पहुँचानेका मान प्राप्त करेंगे ।”

भामासाहकी स्वामिभक्ति

इस पत्रमें सहस्रों मनुष्योंकी सेनाका बल था । राणा प्रताप फिर युद्धके लिए कटिबद्ध हो गये, परन्तु अपने अन्दर पर्याप्त शक्ति न पाकर उन्होंने उदयपुर और अरावली छोड़कर सुदूर सिन्ध प्रान्तमें राज्य स्थापित करनेका निश्चय किया । उनके लिए प्राणतक देनेवाले साथी उनके साथ जानेके लिए उद्यत हो गये । जब वे मरुस्थलके समीप पहुँचे तो उनके मन्त्री भामासाहने अपने पूर्वजोंकी एकत्र की हुई सम्पत्ति प्रतापके चरणोंमें रख दी जिससे २५ सहस्र सैनिक १२ वर्ष पर्यन्त रखे जा सकते थे । प्रताप अपने संकल्पसे विरत हो तुरन्त लौट पड़े । आते ही शाहबाजकी सेनाको देवर-स्थानपर धर दबाया और कोमलमीर लेकर अब्दुल्लाकी सेनाको काट डाला । इसी प्रकार बत्तीस और स्थानोंको ले लिया । संक्षेपतः, एक ही बारमें प्रतापने मेवाड़को पुनः ले लिया । राजा मानसिंहसे बदला लेनेकी इच्छा कर उन्होंने अम्बरपर आक्रमण किया और मालपुरामें लूट-मार की ।

कहा जाता है कि खानखानाके प्रभावसे अकबरका हृदय बहुत करुणामय हो गया और उसके हृदयमें इस साहसी राजपूतके लिए इतनी प्रतिष्ठा उत्पन्न हो गयी कि उसने अब इन्हें छेड़ना अनुचित समझा । यद्यपि प्रतापके शेष वर्ष सुखसे व्यतीत हुए, परन्तु वे चित्तौड़को लेनेके लिए सर्वदा व्याकुल रहे ।

प्रतापका मृत्युदृश्य बड़ा हृदयग्राही था । जब प्रतापका अन्तिम समय निकट आया तो उनके समस्त विश्वसनीय सरदार बड़े सत्कार-पूर्वक उनके सम्मुख उपस्थित हुए । प्रतापने दीर्घ निःश्वास लिया । सोलम्बरा ठाकुरने पूछा—“महाराजको क्या कष्ट है ?” प्रतापने बड़े गम्भीर भावसे कहा—“क्या मेरे अनन्तर मेरा देश शत्रुओंके अधिकारमें चला जायगा ? क्या इन सुन्दर कुटियोंके स्थानपर, जो मुझे राजमन्दिरों-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से भी अधिक प्रिय हैं, रमणीय प्रासाद खड़े होंगे ? क्या राजपूत अपनी वीरता छोड़कर आलसी तथा विषयासक्त हो जायँगे ? शोक ! क्या राजपूती स्वतन्त्रता धूलिमें मिल जायेगी ?" यह सुनकर सबने प्रतिज्ञा की—"हम कदापि ऐसा न होने देंगे। इस प्रकार आश्वासन पाकर प्रतापकी आत्माने शान्तिपूर्वक इस नश्वर शरीरका त्याग किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवाँ प्रकरण

राणा प्रतापके पश्चात्

राणा अमरसिंह

संवत् १६५४ (सन् १५९७ ई०) में राणा अमरसिंह सिंहासनपर बैठे। इसके बाद अकबर आठ वर्षतक राज्य करता रहा। उसने राणाको न छेड़ा। इस कालमें अमरसिंहने अपने राज्यमें बड़े-बड़े परिवर्तन किये। परन्तु जैसा कि प्रतापको भय था, वे शीघ्र ही कामासक्त हो गये और जब संवत् १६६६ (सन् १६०९) में जहाँगीरने मेवाड़को अधीन करनेका निश्चय किया तो उन्हें बड़ी व्याकुलता हुई। सोलुम्बरा (सलूमर) के चन्द्रवत (चूंडावत) ठाकुरने प्रतापकी प्रतिज्ञाका स्मरण करके राजगृहमें प्रवेश किया और राणा अमरको बाहुसे पकड़कर उठाते हुए कहा—'आरूढ़ हो।' राणा पहिले तो क्रुद्ध हुए, परन्तु जब ठाकुरोंको तैयार देखा तो विवश होकर घोड़ेपर सवार हो गये। घोड़ेपर चढ़ना था कि राजपूती रक्तने जोश मारा। राणाने सबसे क्षमा-याचना की और सोलुम्बराके अभिमुख हो बोले—'बढ़े चलो'। देवर-स्थानपर शाही सेनासे युद्ध करके उसे पराजित किया। थोड़े कालके लिए सन्धि हो गयी। अगले वर्ष फिर एक संग्राम रणपुर(रानापुर)की भूमिपर हुआ जिसमें शाही सेना सर्वथा नष्ट हो गयी।

जहाँगीरने चित्तौड़की गद्दीपर समरको बिठाना चाहा। सात वर्षके उपरान्त उसने चित्तौड़ अपने भतीजेको अर्पण कर दिया और स्वयं लौटकर जहाँगीरके पास चला गया। जहाँगीरने उसे धिक्कारा तो उसने आत्मघात कर लिया।

इन पराजयोंसे दुःखित होकर जहाँगीर सेना लेकर स्वयं अजमेर पहुँचा। उसने अपने पुत्र परवेजको लड़नेके लिए भेजा। राणा पहिली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विजयसे प्रसन्न होकर खमनोरमें शाही सेनासे जा भिड़े। शाही सेना पराजित हुई और वह भागकर अजमेर लौट आयी। प्रत्येक युद्ध राजपूतोंको कुछ निर्बल करता जाता था। उनके बड़े-बड़े शूर-वीर लड़ाईमें काम आये। युवराज खुर्रम(शाहजहाँ)ने बड़ी सेना सहित अवधीपुरपर आक्रमण किया। राणाकी सेना अत्यल्प रह गयी थी, इसलिए उन्हें सन्धिके लिए प्रार्थना करनी पड़ी, परन्तु उन्होंने मुगल बादशाहको कर देना स्वीकार नहीं किया। सब ठाकुरोंको एकत्र करके उन्होंने अपने पुत्रको राजतिलक लगाया।

राणा करणसिंह

संवत् १६७८ (सन् १६२१ ई०) में करणसिंह राणा हुए। राणाका भाई भीम-मुगल सभामें रहने लगा। राजपूत शाहजहाँके सहायक थे। जब शाहजहाँ अपने भ्राता परवेजका वध करके राजविद्रोही हो गया और जहाँगीरने उसके विरुद्ध सेना भेजी तो शाहजहाँ दौड़कर उदयपुरकी शरण आया। उसने सदा उनके व्यवहार तथा मित्रताको स्मरण रखा।

जगतसिंह व राजसिंह

संवत् १६८५ (सन् १६२८ ई०) में राणा जगतसिंह गद्दीपर बैठे। इसके थोड़े समयके उपरान्त जहाँगीरकी मृत्यु हो गयी। शाहजहाँ दक्षिणसे उदयपुर आया और वहाँपर सबसे पूर्व बादशाह अंगीकार किया गया। राणा जगतसिंहने जनताके लाभके लिए बहुतसे भवनादि बनाये। संवत् १७११ (सन् १६५४ ई०) में राणा राजसिंह राजसिंहासनपर बैठे। वे बड़े वीर पुरुष थे। उनके अतिरिक्त उस समय जयपुरके राजा जयसिंह और मारवाड़के राजा जसवन्तसिंह भी बड़े वीर पुरुष थे।

पाँच वर्ष बाद जब शाहजहाँ ज्वरग्रस्त हुआ तो उसने दाराशिकोहको उत्तराधिकारी बनाया। इसपर उसके शेष तीनों पुत्र सिंहासनपर अधिकार करनेके लिए उद्यत हो गये। राजपूतोंकी सहानुभूति दाराशिकोहके साथ थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जोधपुरके राजा जसवन्तसिंह

राजा जयसिंह बंगालमें शुजासे लड़नेके लिए भेजे गये और जसवन्तसिंह औरंगजेबके विरुद्ध दक्षिण भेजे गये। औरंगजेब बहुत बलवान् था, इसलिए जसवन्तसिंह राजपूतोंकी तथा शाही सेना लेकर औरंगजेबकी ओर बढ़े। फतहाबाद स्थानपर औरंगजेब भी अपनी सेना लिये आ पहुँचा। जसवन्तसिंहने विलम्ब करनेमें बड़ा प्रमाद किया। मुराद कुछ सेना सहित औरंगजेबसे आ मिला। उधर औरंगजेबने सारी मुसलमान-सेनाको अपनी ओर कर लिया। युद्धके समय सारी मुगल-सेना औरंगजेबसे जा मिली। जसवन्तसिंहके पास केवल तीस सहस्र राजपूत रह गये। राजपूत बड़ी वीरतासे लड़े और पन्द्रह सहस्र रणक्षेत्रमें काम आये।

जसवन्तसिंह जब लौटकर जोधपुर पहुँचे तो रानीने द्वार बन्द कर दिये, क्योंकि वे रणभूमिसे भागकर गये थे। औरंगजेबने जसवन्तसिंहको कहला भेजा कि आपका दोष क्षमा किया गया, अब आप शुजाके विरुद्ध मेरे साथ मिल जायँ। जसवन्तसिंहने यह बात शुजाको बतला दी और दाराशिकोहकी सम्मतिसे अपने राजपूत लेकर औरंगजेबकी ओर पहुँचे। इधर दाराशिकोह विलम्ब करता रहा। औरंगजेब इतनेमें शुजाको पराजित कर दाराशिकोहकी ओर बढ़ा। उसने जसवन्तसिंहको क्षमाका पत्र लिखकर सर्वथा पृथक् रखना चाहा। यदि दाराशिकोहमें बल होता तो वह उस समय औरंगजेबको दबा लेता, परन्तु दुर्भाग्यवश उसमें यह गुण न थे, इसलिए औरंगजेबने सिंहासनपर अधिकार कर लिया। उसने जसवन्तसिंहको दक्षिणमें शिवाजीके विरुद्ध भेजा। जसवन्तसिंहने शिवाजीसे मिलकर शाइस्ताखाँकी दुर्गति करवायी। औरंगजेबने उन्हें बुलाकर जयपुराधीश राजा जयसिंहको उधर भेजा।

जयपुरके राजा जयसिंह

जयसिंह शिवाजीसे मित्रता करके उन्हें दिल्ली ले आये, परन्तु जब औरंगजेबने प्रतिज्ञाके विपरीत करना चाहा तो जयसिंहने शिवाजीको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निकल भागनेमें सहायता दी। जयसिंह बड़े गर्वसे अपने दोनों हाथोंमें दो पात्र लेकर कहा करते थे—'एक पात्र महाराष्ट्रका राज्य है, दूसरा मुगल-राज्य। मैं जब चाहूँ दोनोंको तोड़ सकता हूँ।' औरंगजेबने इन बातोंसे जलकर उन्हें विष दिलवाकर मरवा डाला।

उधर जसवन्तसिंहको और किसी प्रकार वश होते न देखकर बादशाहने उन्हें अफगानोंके विरुद्ध काबुल भेजा। जसवन्तसिंह मित्रताके छलमें आ गये, रानी और बड़े पुत्र पृथ्वीसिंहको दिल्लीदरबारमें छोड़कर अपने राजपूतोंको साथ ले काबुल पहुँचे। एक दिन औरंगजेबने पृथ्वीसिंहके दोनों हाथ पकड़कर कहा—"राठौर, तुम अपने पिताके सदृश ही दृढ़ भुजाओंवाले हो, कहो, अब क्या कर सकते हो।" पृथ्वीसिंहने उत्तर दिया—"यदि बादशाह किसी मनुष्यपर अपना हाथ रखें तो उसकी सब आशाएँ पूर्ण हो जाती हैं। मेरे दोनों हाथ आपने पकड़ लिये हैं; मैं ऐसा समझता हूँ कि मैं संसारको जीत लूँगा।" औरंगजेब बहुत प्रसन्न हुआ और उसने पारितोषिकके रूपमें एक वस्त्र दिया। भीतरसे जला कि यह तो एक और जसवन्तसिंह है। वस्त्र धारण करते ही पृथ्वीसिंह ज्वरसे पीड़ित हुआ और बड़ी पीड़ा एवं कष्टसे उसने प्राण त्याग दिये। यह कु-समाचार सुननेके उपरान्त जसवन्तसिंहके दो और पुत्र मृत्युको प्राप्त हुए। इस दुर्घटनासे संवत् १७३७ (सन् १६८० ई०) में जसवन्तसिंह स्वयं इस संसारसे प्रस्थान कर गये।

जबतक यह राजपूत जीवित रहा, औरंगजेबको कभी भी सुखकी निद्रा प्राप्त नहीं हुई। इसी प्रकारकी क्रियाओं तथा कुचेष्टाओंसे औरंगजेब अपने शत्रुओंसे मुक्ति प्राप्त किया करता था।

जसवन्तसिंहकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र अजितसिंह उत्पन्न हुआ। अब रानी अपने राजपूतों सहित घर जानेको उद्यत हुई। जब दिल्ली पहुँची तो औरंगजेबने कहा कि बालकको दरबारमें छोड़ जाओ और राजपूतोंसे कहा कि यदि तुम ऐसा करोगे तो मारवाड़ तुम्हें बाँट दिया जावेगी। वे नेत्र लाल करके दरबारसे निकल आये। उनके

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वासस्थानके इर्द-गिर्द राजरक्षक खड़े हो गये। एक मिठाईके टोकरेमें उन्होंने अजितसिंहको वहाँसे निकलवा दिया और स्वयं मरने-मारनेपर कटिबद्ध हो गये।

दुर्गादास राठौर

उन राजपूतोंमें एक दुर्गादास राठौर था। वीर पुरुषोंका यह समूह तीर-कमान लेकर मुगल-सेनापर टूट पड़ा। समस्त स्त्रियोंने मकानके अन्दर बारूद भरकर अग्नि लगा दी और पुरुषोंने दिल्लीके बाजारोंको मुगलोंके रक्तसे रंजित कर दिया। ७ श्रावण, संवत् १७२६ (२३ जुलाई सन् १६७९) इस वीरताके लिए राजपूत इतिहासमें सदा स्मरण रहेगा। बालक अजितको एक मुसलमान बचाकर बाहर ले आया जहाँ दुर्गादास और कुछ सरदार, जो बच गये थे, उससे आ मिले। उन्होंने आबूकी शरण ली। यद्यपि जोधपुरमें कई झगड़े हुए, परन्तु अजितके नामपर सब राठौर एकत्र हो गये और वह गद्दीपर बिठा दिया गया।

इसपर औरंगजेबने सेना लेकर मारवाड़पर आक्रमण किया। राजधानीको लूटा, मन्दिरोंको तोड़ा, उनके स्थानपर मसजिदें बनवायी गयीं। दुर्गादासने अजितसिंहको राणा राजसिंहकी रक्षामें भेज दिया। मेवाड़ और मारवाड़ अपने शत्रुसे युद्ध करनेके लिए मिल गये। राणा राजसिंहसे औरंगजेब बहुत जला हुआ था। औरंगजेबने रूपनगरकी राजपुत्री चंचलकुमारीको विवाहमें लेनेके लिए कुछ सेना भेजी। इस राजपूत देवीने राणा राजसिंहको एक ब्राह्मण द्वारा पत्र भेजा कि क्या राजहंसिनी एक गिद्धके साथ ब्याही जायगी? यदि आप मेरी रक्षा न करेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूँगी। इसपर राणा सेना लेकर पहुँच गये। उन्होंने राजसेनाको घेरकर उसे नष्ट कर डाला और फिर राजकन्याको निकालकर बाहर ले आये। जब औरंगजेबने आर्योंपर कर (जजिया) लगाया तो राणा राजसिंहने उसे निम्नलिखित पत्र लिखा—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"यह बात सर्वथा स्पष्ट है कि मैं शासक तथा निर्धन प्रजाका हितैषी हूँ। इस हार्दिक परोपकारिताके विश्वासपर ही प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे इस लेखको दत्तचित्त होकर पढ़ेंगे और जिन बातोंकी ओर आपका ध्यान आकर्षित किया गया है उनका पूरा विचार रखेंगे, क्योंकि यह मानवजातिके हितके लिए है। मुझे विदित हुआ है कि मुझ जैसे हितैषीका शासन नष्ट करनेके लिए आपने अमित धन नष्ट किया है और इस बहानेसे आपने रुपया एकत्र करनेका एक नया साधन निकाला है और आर्योंपर कर लगाया है। यह ऐसा मार्ग है जिसपर चलनेका परिणाम नाशकारी ही हो सकता है। आपके पूर्वजोंने इस मार्गको भयानक समझकर इसको सर्वथा त्याग दिया था। कठोर नीतिसे कदापि उन्होंने यहाँ सफलता प्राप्त नहीं की। साधुशीलता तथा सहयोगने उनके लिए वे बातें भी सम्भव कर दीं जो आजतक असम्भव समझी जाती थीं। उन्होंने आर्यावर्तके उन दुर्जेय दुर्गोंपर भी विजय प्राप्त की जिनको विजित करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य था।

"महाराज, आपके शासनकालमें आपका अधिकार बहुतसे स्थानोंसे उठ गया है, और अभीतक क्रूरता तथा दुष्टता जारी ही है, अतएव निःसन्देह और स्थान भी हाथसे निकल जायँगे। आपकी प्रजा नाशको प्राप्त हो रही है, निर्धनताने वास कर लिया है, देश निर्जन होता जा रहा है, दुर्भिक्षोंसे लोग पीड़ित हैं। जब बादशाहोंको ही धनका दुःख हो तो प्रजाका क्या कहना है? आपके राज्यमें आर्यों, मुसलमानों तथा सैनिकोंकी भी बड़ी दुर्दशा हो रही है और वे अत्यन्त व्याकुल हैं। आर्योंको तो भोजनका भी कष्ट है और वे उपवास करते हैं। अपनी दुर्दशापर रक्तपान कर दोनों हाथोंसे सिर पीटते हैं।

"जो बादशाह ऐसी दुरवस्थाग्रस्त प्रजापर एक और भारी कर लगा दे उसके राज्यको स्थान कहाँ? पूर्वसे पश्चिमतक आपकी दुष्टता और पापकी कथाएँ सुनाई देती हैं। प्रत्येक मनुष्य यही कहता है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बादशाहने द्वेषसे ब्राह्मणों, संन्यासियों और योगियोंपर बलात् कर लगाया है, जो अत्यन्त कठोरतासे वसूल किया जाता है। क्या आप तैमूर-वंशके मानको अपनी राजशक्तिके घमण्डमें अवमर्दित करनेके लिए उद्यत हैं? यदि पवित्र कुरानपर आपका विश्वास है तो वहाँ भी एक दृष्टि डाल लें। उसमें परमात्माने अपने आपको रब्ब-उल-मुसलीम* नहीं, बल्कि रब्ब-उल-आल्मीन† कहा है। उसके समीप आर्य तथा मुसलमान दोनों तुल्य हैं। रंग तथा रूपका अन्तर केवल प्रकृतिके गुण हैं, इसमें अधिक कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं। परमात्मा सबका एक है। मसजिदोंमें जिसके नाम बलिदान दिया जाता है, मन्दिरोंमें उसीके नामपर घण्टे तथा घड़ियाल बजते हैं। दूसरे धर्मोंमें हस्तक्षेप करना ईश्वरेच्छाके सर्वथा विरुद्ध है। जो व्यक्ति ऐसा करता है वह दूसरे शब्दोंमें ईश्वरेच्छाके प्रतिकूल कार्य करता है। अन्तमें मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि आपका आर्योंपर कर लगाना अत्यन्त दुष्ट, मनुष्यत्वसे विपरीत तथा बुद्धिशून्य कार्य है।

यदि आपका बलात् दूसरोंके धर्मनियमोंको पदाक्रान्त करनेका ही विचार है और आप राज्य तथा देशके पक्षमें कोई विचार सुननेके लिए भी उद्यत नहीं, तो मनुष्यत्व यह है कि पहिले रामसिंहसे कर प्राप्त करें जिसे आर्य अपना पेशवा समझते हैं। तत्पश्चात् अपने प्राचीन सेवक पत्र-लेखकसे प्राप्त करें। हम सर्वकाल सेवा करनेके लिए उद्यत हैं। मक्खियों तथा चीटियोंके समान छोटासा जीवन व्यतीत करनेवाले निर्धनोंको दुःखित करनेमें कौनसी वीरता है? आश्चर्यकी बात है कि आजतक आपको आपके मन्त्रियों तथा उपदेशकोंने भी कोई बुद्धिमत्ताकी बात नहीं सिखलायी।

आपका सेवक,
राजसिंह।"

---

* मुसलमानोंका परमात्मा। † संसारका परमात्मा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गादास और औरंगजेब

मेवाड़ तथा मारवाड़के राजपूत शाही सेनासे युद्ध करनेके लिए तैयार हो गये। शाही सेनाके सेनापति तवरखाँ और युवराज अकबर थे। मेवाड़की सेना राणाके पुत्र भीमके और मारवाड़की सेना दुर्गादासके अधीन थी। १४ आषाढ़, संवत् १७३७ (२८ जून, सन् १६८० ई०) को नाडोल-स्थानमें घोर संग्राम हुआ जिसमें भीम मारा गया। दुर्गादासकी वीरता देखकर राजपुत्र अकबर चकित हुआ। उसने अपने सेनापतिसे कहा कि इन लोगोंके विरुद्ध, जो अपने देश तथा जातिके लिए प्राण त्याग रहे हैं, युद्ध करना पाप है। उसने दुर्गादासको बुला भेजा। यद्यपि अनेक ठाकुर विरुद्ध थे, परन्तु दुर्गादास राजपुत्रसे जा मिला। परस्पर सन्धि हो गयी। युवराज अकबर दिल्लीके सिंहासनपर अधिकार प्राप्त करनेके लिए उद्यत हो गया। जब औरंगजेबने यह समाचार अजमेरमें सुना तो वह बहुत व्याकुल हुआ और शोकमें अपनी दाढ़ी उखाड़ने लगा। अन्तको उसे एक उपाय सूझा जिससे उसने सारे द्रोहको तोड़ डाला। युवराज अकबर तथा तवरखाँ राजपूतोंकी सहायतासे अजमेरकी ओर बढ़े। युवराज सब कुछ अपने सेनापतिके अर्पण करके स्वयं विषयासक्त हो गया। औरंगजेबने लोभ देकर तवरखाँको अपनी ओर कर लिया। तवरखाँने एक पत्र दुर्गादासको लिख दिया कि मैं दोनों समूहोंके मध्यमें पुलके समान था। पिता और पुत्र एक हो गये हैं और पुल नहीं रहा। कुछ कालके बाद औरंगजेबने प्रतिज्ञाओंको भंग करके उसे मरवा डाला। यह समाचार सुनते ही राजपूत लौटे। दूसरे दिन उन्हें सब कपट विदित हो गया। दुर्गादास अपने सवारोंको साथ लेकर अकबरके पास पहुँचा। उसने बड़ी वीरतासे स्वयं उसकी रक्षा कर उसे दक्षिणतक पहुँचा दिया। उधर औरंगजेबने लूटमार तथा संग्राम जारी रखा। दुर्गादासके नामसे वह सदा जलता रहा। शिवाजीकी अपेक्षा वह दुर्गादाससे अधिक घृणा करता था। दुर्गादास उस कालका बड़ा बुद्धिमान् तथा

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वीर पुरुष था । मारवाड़ राज्य केवल उसके साहस और बुद्धिमत्तासे बचा रहा । दक्षिणसे लौटकर उसने अजमेरके शासक सेफीखाँको पराजित किया और निरन्तर राजसेनासे युद्ध करता रहा । राजपूत भी बदला लेनेके लिए मसजिदोंको दूषित करते और कुरानको जलाते रहे ।

मुगल-सत्ताका पतन

मराठोंके मध्यमें युवराज अकबरकी विद्यमानता औरंगजेबके लिए बड़े भारी भयका कारण थी । इसलिए उसने राजपूतोंके साथ संवत् १७३८ (सन् १६८१ ई०) में सन्धि कर ली, ताकि वह अपनी कुल सेना स्वयं दक्षिणमें ले जा सके । औरंगजेबके मरते ही राजपूताना स्वतन्त्र हो गया । राजपूतोंने औरंगजेबके साथ इतना युद्ध करके मराठोंको दक्षिणमें अपना बल दृढ़ करनेका अवसर दिया । इस कालमें औरंगजेबसे दुःखित होकर जिन आर्योंने आर्यत्वरक्षाकी चेष्टा की थी उनमें आर्यावर्तके क्षत्रिय—जसवन्तसिंह, राजसिंह, दुर्गादास और जयसिंहकी गणना आदरके साथ की जानी चाहिये । औरंगजेबकी मृत्युके उपरान्त जो मुगल बादशाह दिल्लीकी गद्दीपर बैठे वे नाममात्रके बादशाह थे । औरंगजेबने जितना बड़ा भवन बनाया उसकी नींव उतनी दृढ़ बनानेकी चेष्टा न की, अतः उसके जीवनकालमें ही वह गिरने लग गया था और उसके मरनेपर बिलकुल गिर गया । उसके अयोग्य उत्तराधिकारी उसे किञ्चिन्मात्र भी न सँभाल सके ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठाँ प्रकरण

मुगल-साम्राज्यकी अवनति

औरंगजेबके उत्तराधिकारी

औरंगजेबके अनन्तर बहादुरशाह गद्दीपर बैठा। संवत् १७६७ (सन् १७१० ई०) में वह पंजाबमें सिखोंसे लड़ने गया और संवत् १७६९ (सन् १७१२ ई०) में लाहौरमें मर गया। उसका पुत्र जहाँदारशाह सिंहासनपर बैठा, परन्तु राज्य उसका अमात्य जि-उल्-फिकारखाँ करता था। उसका भतीजा फरुखसैर द्रोही हो गया और जहाँदारशाह और मन्त्रीका वध करके गद्दीपर बैठ गया। फरुखसैरके सहायक दो सैयद भ्राता, हुसेनअली और अब्दुल्ला थे। उसके राज्यकी बड़ी घटना सिखोंके विरुद्ध युद्ध और उनका नाश है।

सैयदोंने संवत् १७७६ (सन् १७१९० ई०) में फरुखसैरको सिंहासनसे उतारकर मरवा डाला और एक-एक करके तीन पुत्रोंको सिंहासनपर बिठाया। वे कुछ मासमें इन्तकाल कर गये और अन्तको संवत् १७७७ (सन् १७२०) में मुहम्मदशाह गद्दीपर बैठा। उसके राज्यमें दोनों सैयद भ्राताओंका वध हुआ।

नादिरशाहका आक्रमण

निजामुलमुल्कने हैदराबादमें और मन्त्रीने अवधमें अपने पृथक्-पृथक् राज्य स्थापित किये। मराठोंने मालवा और उड़ीसापर अधिकार कर लिया और वंग देशसे चौथ लेना आरम्भ किया। फाल्गुन, सं० १७९५ (मार्च सन् १७३९ ई०) में नादिरशाहने दिल्लीपर आक्रमण करके बड़ी लूट-मार की जिसमें वह तख्तताउस आदि लूटकर साथ ले गया। अहमदशाह अब्दालीने संवत् १८०४ (सन् १७४७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ई०) में पहिला आक्रमण किया। सरहिन्दमें उसकी पराजय हुई। अगले वर्ष मुहम्मदशाह मर गया और उसका पुत्र अहमदशाह राजसिंहासनपर बैठा। उसके राज्यमें दो बार रोहेलोंने आक्रमण किया। दूसरी बार मराठोंकी सहायतासे वह आक्रमण रोका गया। संवत् १८११ (सन् १७५४ ई०) में अहमदशाह अब्दालीने दूसरा आक्रमण किया और पंजाबको अपने राज्यमें शामिल कर लिया। संवत् १८११ (सन् १७५४ ई०) में अहमदशाहको उतारकर आलमगीर सिंहासनपर बैठ गया। इसके दो वर्ष पश्चात् अहमदशाह अब्दालीने तीसरा आक्रमण दिल्लीपर करके वहाँ बड़ी लूट-मार की। तत्पश्चात् मराठोंने उत्तर भारत विजित कर दिल्लीपर अधिकार कर लिया। संवत् १८१७ (सन् १७६० ई०) में अहमदशाहने चौथा आक्रमण किया और पानीपतकी भूमिमें मराठोंसे घोर युद्ध हुआ। मन्त्री गाज्युद्दीनने आलमगीरको मरवाकर शाहआलमको गद्दीपर बिठाया। शाहआलम देश-निकालेकी दशामें था कि बक्सरके युद्धके उपरान्त उसने बंगाल, बिहार और उड़ीसाकी दीवानी अंग्रेजोंको दे दी।

संवत् १८२८ (सन् १७७१ ई०) में वह मराठोंके हाथमें पड़ गया जिन्होंने उसे दिल्ली बुला लिया। संवत् १८६० (सन् १८०३ ई०) तक वह उनके पास बन्दीके समान रहा। उस समय मराठोंका शासन था। इसके पश्चात् वह तीन वर्षपर्यन्त अंग्रेजोंके हाथमें रहा। इस कालमें अंग्रेजोंने दिल्लीको जीत लिया।

संवत् १८६३ (सन् १८०६ ई०) से संवत् १८९४ (सन् १८३७ ई०) तक अकबर सानी नाममात्रका बादशाह रहा और तदनन्तर संवत् १८९४ (सन् १८३७ ई०) से संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) तक मुहम्मद बहादुरशाह जफर बादशाह रहा। गदरके उपरान्त वह रंगूनमें निर्वासित कर दिया गया। पाँच वर्ष पश्चात् उसका वहीं प्राणान्त हुआ। उसके दो पुत्र और एक पौत्र गोलीसे उड़ा दिये गये। इस प्रकार-बब्बर कुलकी समाप्ति हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हम पहिले कह आये हैं कि पृथ्वीराजके कालसे लेकर औरंगजेबकी मृत्युतक आर्य अपनी स्वतन्त्रताके लिए निरन्तर युद्ध करते रहे। उस समय प्रायः अपनी रक्षाके लिए ही युद्ध होता रहा। आर्य राजाओंमें अभी आक्रमण करनेकी शक्ति न थी। हम आगे चलकर वर्णन करेंगे कि इन आर्योंमें दो शक्तियाँ ऐसी उत्पन्न हुईं जिन्होंने आक्रमण करके देशमें पुनः अपना राज्य स्थापित कर लिया। इसमें सन्देह नहीं कि यदि उस समय एक तीसरी शक्ति भी उत्पन्न न हो गयी होती, जिसका वर्णन उनके बाद आयगा, तो आर्यावर्त पुनः आर्योंके अधिकारमें आ गया होता।

राज्यकी निर्बलताका मूल

राज्यकी निर्बलताका सबसे बड़ा कारण उसका अव्यवस्थित होना है। वह राज्य अत्यन्त बलहीन तथा निरर्थक होता है जिसकी रचना किसी विशेष नियमपर न हो और जहाँ लोकमतका आदर न हो। राज्यमें इस नियमका भी होना आवश्यक है कि बादशाहकी मृत्युके बाद प्रथम उत्तराधिकारी किसे होना चाहिये। मुगल इत्यादि वंशोंका आधिपत्य वास्तवमें राज्य नहीं कहा जा सकता। वह एक प्रकारका निष्ठुर शासनमात्र था। जब बादशाहकी मृत्यु हो जाती थी तो जिसकी इच्छा होती थी वह उत्तराधिकारी बन बैठता था। हम देखते हैं कि जब कोई व्यक्ति राजगद्दीका स्वामी हो जाता था तो प्रायः वह अपने सम्बन्धियोंका वध करा देता था ताकि कोई दूसरा अधिकारी उत्पन्न न हो। इस प्रकारका निष्ठुर शासन कभी स्थायी नहीं हो सकता। मुगल-साम्राज्यमें यह दोष पाया जाता था। पंजाबके सिख-राज्यमें भी यह दोष था। जब ऐसे निर्बल राज्यके मुकाबलेमें एक दृढ़ व्यवस्थावाला राज्य विद्यमान हो तो यह राज्य उसकी छायामें दब जाता है।

औरंगजेबके समयमें ही अवनति

यद्यपि यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि औरंगजेबने अपना राज्य बहुत बढ़ा लिया था, परन्तु वास्तवमें उसके सिंहासनपर आसीन होते ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुगल-साम्राज्यकी अवनति होने लगी। उसकी नीतिमें ही उसके पतनका बीज विद्यमान था। उसने अपने राज्यको दृढ़ करने तथा उसके विस्तारकी चेष्टामें ही उसकी जड़ खोद डाली। एक ओर तो राज्य दृढ़ करनेके लिए वह उसे प्रबल मुसलमानी राज्य बनाना चाहता था और दूसरी ओर उसे दक्षिणतक विस्तृत करनेके लिए उसे मुसलमान राजाओंको नष्ट करनेकी आवश्यकता पड़ी। दोनोंका परिणाम राज्यके प्रतिकूल हुआ। आर्योंके विरुद्ध बलप्रयोग करना उसके लिए आवश्यक था, क्योंकि उसने दाराशिकोहके विरुद्ध यह कहा था कि इसके बादशाह बननेमें धर्मका भय है। राजा जसवन्तसिंह जैसे आर्य-राजाओंने दाराकी सहायता की थी। औरंगजेबने अपनी नीतिसे राजाके साथ मित्रता कर ली और उन्हें काबुल भेजकर मरवा डाला। उसने आर्योंपर कर लगाया जिसके कारण 'सतनामी' सम्प्रदायने विद्रोह किया। शाही सेनाको पीछे हटना पड़ा। गुरु तेगबहादुर और सम्भाजीकी बलि होनेपर पंजाबके सिखों और महाराष्ट्रके आर्योंमें नया जीवन उत्पन्न हो गया।

दक्षिणके मुसलमान राज्योंका विनाश

औरंगजेबकी दूसरी बड़ी कामना यह थी कि समस्त देशमें मेरा राज्य स्थापित हो। इसके लिए उसने सालों गोलकुण्डा तथा बीजापुरके मुसलमानी राज्योंपर आक्रमण किये। बादशाह स्वयं सेनापति होता था, क्योंकि उसे अपने सरदारोंपर विश्वास न था। गोलकुण्डाका शासक अबुलहसन तानाशाह बड़ा भद्र पुरुष था। औरंगजेबने उसे छेड़नेके लिए अपना एक सरदार भेजा ताकि वह उससे धनोपार्जन करे। तानाशाहने बहुत कुछ दे दिया। बिना किसी कारणके शाही सेनाने वहाँ घेरा डाल दिया। कोई सरदार बादशाहसे प्रसन्न न था। उन सबपर भीरुता तथा अयोग्यता आदिका दोष लगाकर बादशाहने उन्हें पदच्युत कर दिया। कोई सच्चे मनसे लड़ना न चाहता था। वर्षों संग्राम होता रहा। बादशाह अखबार-नवीसों(समाचार-लेखकों)पर विश्वास करता था। एक रात राजसेना दुर्गपर चढ़ी, ऊपरसे आक्रमण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुआ, सारे सैनिक मारे गये। बादशाह विजयका आनन्द मना रहा था, जब समाचार मिला कि सब कार्य उलट गया। अखबारनवीसोंने इस रहस्यका वृत्तान्त बताकर बादशाहको निश्चय करा दिया कि उधर एक कुत्ता जागता था, उसीने दुर्गकी सेनाको जगा दिया।

एक दिन बहुत वर्षा हुई। दुर्गकी सेना बाहर निकली और औरंगजेबके कई सरदारोंको पकड़ ले गयी। अबुलहसनने उनको दुर्गमें रखा, अनाजका ढेर दिखाया और यह कहा कि मैं क्षतिपूर्तिके साथ-साथ आप लोगोंको अनाज भी दूँगा, यदि आप लोग मुझे ही यहाँका शासक स्वीकार कर वापस लौट जायँ। उसने बादशाहको पत्र लिखा कि मैं सब कुछ करनेको उद्यत हूँ, यह उपहार अंगीकार कीजिये। मुझे ही यहाँका शासक मानिये। यदि आप स्वीकार न करें तो, सुना है कि आपके पास अनाजकी कमी है, यही स्वीकार कर लें। बादशाह चुप हो रहे। लोग कहते थे कि अनाज तो अंगीकार कर लेते ताकि भूखों न मरते।*

इस प्रकार कई चेष्टाएँ की गयीं, पर कुछ सफलता न हुई। अन्तमें औरंगजेबके एक कुटिल उपायसे तानाशाहके सरदार उसके साथ मिल गये और उन्होंने शाही सेनाका प्रवेश करा दिया। तानाशाह साहसपूर्वक बैठा था, समय हो गया था, उसने आज्ञा दी—'भोजन लाओ।' विजेताओंने प्रश्न किया—'क्या यह भोजनका समय है?' उत्तर मिला, 'हाँ, इसी समय भोजन किया करता हूँ।' फिर प्रश्न किया गया—'क्या इस दुःखमें भोजन करनेका विचार है?' उसने बड़ी गम्भीरतासे उत्तर दिया—'यह सब परमात्माका दिया है।

* लेनपूलके अनुसार औरंगजेबने यह उत्तर दिया—"अबुलहसनको हाथ जोड़कर मेरे सामने आना चाहिये, अन्यथा उसे बँधे हुए आना पड़ेगा। तब मैं देखूँगा कि उसके साथ कितना अनुग्रह कर सकता हूँ।" (मिडीवल इण्डिया, पृ० ३९८)—सम्पादक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह जीवन तपस्वियोंके सदृश व्यतीत किया, राज्य भी देख लिया, आगे जो परमात्मा दिखायेगा, आनन्द-पूर्वक देख लूँगा।'

मुगलसेनाकी अधोगति

बाबरकी सेना, जिसने दिल्लीका राज्य लिया, बड़ी प्रबल थी। उसकी तुलनामें औरंगजेबकी सेना कुछ ही पुश्तोंमें घोर अधोगतिको प्राप्त हो गयी। छोटेसे छोटे सेनापतिके साथ सेना ऐसी प्रतीत होती थी मानों कोई बारात हो। युवराज तथा बादशाहकी सेनाका तो कहना ही क्या? कैम्प और पालकियाँ साथ रहती थीं। सबसे प्रथम हाथी, उसके पीछे बाजे, नकारे आदि। हाथी हौदोंसे सजे रहते, सूँड़ोंमें सुवर्ण शृंखलाएँ, सोनेके झोल, सुवर्णकी ढालें, रेशमी रस्से बँधे रहते और ऊपर सजे हुए महावत झूमते-झामते चले आते थे। उनके पीछे इसी प्रकारकी सजी हुई सहस्रों साँड़नियाँ, उनके पीछे अरबी, रूमी, तातारी, फरंगी बाजे, फिर जलवाहकोंका समूह रहता था जो अर्कोंसे छिड़काव करता एवं भूमिको साफ करता जाता था। उसके पीछे सिंहों तथा चीतोंकी गाड़ियाँ होती थीं जिनके साथ सहस्रों आखेटक सजे हुए रहते थे। तत्पश्चात् युवराज तथा सेनापति आदि चलते थे। प्रातःसे सायंकालतक इस 'बारात'की समाप्ति न होती थी। प्रातःसे तैयारी होती थी और दिनभरमें दो-चार मील चल पाते थे, फिर सब लोग ठहर जाते थे।

यह सेना थी जिसे साथ लेकर औरंगजेब बीस वर्ष पर्यन्त मरहठोंको अधीन करनेकी चेष्टा करता रहा। मराठा सैनिक जिस ओरसे आक्रमण करते थे, सेनाको उधर चलनेकी आज्ञा होती थी, किन्तु मराठोंका कुछ पता न लगता था। इतनेमें वे सेनाकी दूसरी ओरसे आक्रमण करते थे। औरंगजेबके निजी सैनिक उससे उपहास करते थे और मराठोंको देखकर प्रसन्न होते थे। अन्तको औरंगजेबने निर्णय किया कि मराठोंके सब दुर्ग नष्ट कर दिये जायँ। पाँच वर्षपर्यन्त उसने यत्न किया। परिणाम यह हुआ कि मराठा-सेना दुर्गोंसे निकल-निकलकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैदानोंमें फैल गयी और उसने खानदेश, बरार और गुजरातपर अधिकार कर लिया। अपनी मृत्युसे दो वर्ष पूर्व सेनाको असफल देखकर औरंगजेबने मराठोंसे सन्धि करनेका विचार किया। उसने साहूसे मराठोंको पत्र लिखवाया कि वे युद्ध त्याग दें। इसी नैराश्यकी दशामें उसने अहमदनगरमें प्राण त्याग दिये।

औरंगजेबके पुत्र बहादुरशाहने साहूको उसके पितामह शिवाजीकी जागीर दे दी और स्वतन्त्र कर दिया। बहादुरशाह पाँच वर्ष बाद लाहौरमें मृत्युको प्राप्त हुआ। फिर फरुखसैर सिंहासनपर बैठा। उसके पीछे तीन लड़के एक-एक करके गद्दीपर बैठे। वे सब शीघ्र ही कालकवलित हुए। अन्तको मुहम्मदशाह राजगद्दीपर बैठा। उसके राज्यकालमें नादिरशाहने दिल्लीपर आक्रमण किया और बड़ी लूट-मार की। वह शाहजहाँका बनवाया तख्तताऊस अपने साथ ले गया। काबुल, पंजाब आदि मुगल साम्राज्यसे निकालकर अपने साथ मिला लिये। वह कोहनूर हीरा भी, जो कौरवोंके कालसे दिल्लीपतिके मुकुटमें लगा चला आता था, अपने साथ ले गया। मुगल-साम्राज्यका दीपक उसके साथ शान्त हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवाँ प्रकरण

हरिवर्षीय जातियोंका भारतमें आगमन

वास्को डी-गामा कालीकट पहुँचा

हरिवर्षीय (यूरोपीय) जातियोंके भारतवर्षमें प्रवेश करनेकी विवेचना करनेके लिए हरिवर्ष तथा एशियाके सम्बन्धोंका न्यूनाधिक विचार करना आवश्यक है। इन सम्बन्धोंमें उनके प्रवेशका इतिहास पाया जाता है। इनका आरम्भ इस्लामकी उत्पत्तिके समय होता है। इस्लामकी एक तरंग एशियाके देशोंमें फैली। दूसरी मिस्र, सूदान, मुराकोसे होती हुई स्पेनतक पहुँची। अब्दुलतारक समुद्रसे पार होकर पर्वतपर पहुँचा जो उसके नामसे जबुलुलतारक कहा जाता है। इस्लामका स्पेनपर अधिकार हो गया। सात सौ वर्ष इस्लामका शासन स्पेनपर रहा। इतने कालके बाद स्पेन इस दासत्वसे स्वतन्त्र हुआ। स्पेनवालों(पुर्तगाल उसके साथ था)के हृदय मुसलमानोंसे जलते थे। उन्होंने मुसलमानोंके सामने दो शर्तें रखीं—या तो वे स्पेन छोड़कर चले जायँ या ईसाई हो जायँ, अन्यथा वे जीवित न रहने दिये जायँगे। यहीं तक नहीं, घृणाकी अग्नि उनके हृदयोंमें इतने वेगसे प्रज्वलित होती थी कि वे मूर लोगोंका, जिन्होंने उन्हें दासत्वमें रखा और जुल्म किये, संसारसे नाम मिटा देना चाहते थे। वे उनका पीछा करते हुए पश्चिम अफ्रीकाके तीरपर चल पड़े। उनका पीछा करनेमें पुर्तगालवालोंको पोत चलानेका अनुराग बढ़ता गया, यहाँतक कि पोत चलाते हुए वे अफ्रीकाके उत्तरतटतक जा पहुँचे और फिर वहाँसे लौटकर पूर्वतटके साथ-साथ चल पड़े। एक पुर्तगीज पोतवाहक, वास्को-डी-गामा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोजम्बीक पहुँचा। वहाँ उसे एक भारतीय नाविक मिला जो उसे भारतवर्षमें कालीकट ले आया।

भारतके साथ व्यापार

जहाँ-जहाँ पुर्तगीज मुसलमानोंका पीछा करते जाते थे वहाँ वहाँ न केवल वे उनके साथ विवाद तथा संग्राम करते थे, किन्तु व्यापार भी उनके हाथसे ले लेना चाहते थे। जब पुर्तगालवालोंको भारतवर्षकी ओर समुद्रका मार्ग मिल गया तो पूर्व देशोंका सारा व्यापार उनके हाथमें आ गया और लिस्बन सारे हरिवर्ष(यूरोप)में अत्यन्त धनाढ्य नगर बन गया।

प्राचीन कालमें आर्यावर्तके साथ हरिवर्षका व्यापार बहुत परिमित था और वह सब स्थलमार्गसे हुआ करता था। वह व्यापार एशियाई-कोचकके मार्ग या इधर मिस्रके मार्गसे होता था। इटलीका नगर वेनिस उस समय व्यापारका केन्द्रस्थान था। कुस्तुनतुनियापर मुगलोंका अधिकार हो जानेसे स्थलमार्ग प्रायः बन्द हो गये और हरिवर्षके देशोंमें समुद्रमार्गका अन्वेषण करनेकी प्रबल इच्छा उत्पन्न हो गयी। कोलम्बसने इसी यत्नमें "वेस्ट इण्डीज" नामक टापुओंका अन्वेषण किया। उस समय तीन बड़े आविष्कारोंने, जो हरिवर्षके पादरी चीनसे ले गये थे, उनकी बड़ी सहायता की—एक तो कुतुबनुमा (कम्पास) था जिसने समुद्रमें चलना अत्यन्त सरल कर दिया, दूसरा बारूद जिससे युद्धके अत्युत्तम अस्त्र बनाये गये और तीसरा मुद्रणकला जिसने पुस्तकोंको सुलभ बना दिया।

हरिवर्षकी अन्य जातियाँ

कालीकटमें भी पुर्तगीज व्यापारी मुसलमानोंसे सर्वदा युद्ध करते रहते थे। कालीकटके निर्बल राजाको उनका सँभालना बड़ा कठिन था। वे अपने बलके विश्वासपर व्यापार बढ़ाते गये। स्पेन और पुर्तगालवाले संसारमें सबसे अधिक फैल गये। आश्चर्यकी बात है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो जाति शताब्दियोंके उपरान्त दासावस्थासे जागी उसके अन्दर इतना उत्साह उत्पन्न हो गया कि वह प्रत्येक बातमें अन्य जातियोंसे बढ़ गयी। उस कालमें हालैण्ड तथा इंग्लैण्ड स्पेनके शत्रु थे। उन दोनोंने स्पेनका व्यापार बलात् लेनेके लिए बाहर देशोंमें जाकर उनका व्यापार हरण करना चाहा। स्पेनके पोतोंको लूटनेसे आंग्ल-व्यापारियोंको भारतके धनका ज्ञान हुआ। अब आंग्लस्थानके व्यापारियोंने कम्पनियाँ बनाकर भारतका मार्ग ढूँढ़ना आरम्भ किया। अनेक पोत डूब गये, किन्तु उन्होंने अपना संकल्प न छोड़ा। कम्पनीके पश्चात् कम्पनी बनती गयी। जहाँगीरके राज्यकालमें आंग्ल व्यापारी भी भारतमें आ पहुँचे। इसके उपरान्त फ्रांसने भी अपने पोत भेजे और दोनों जातियोंने उत्तर भारतके तटपर अपने कारखाने स्थापित किये। एक आंग्ल वैद्य हैमिलटनने शाहजहाँकी पुत्रीकी चिकित्सा करके अपनी कम्पनीके लिए विशेष अधिकार प्राप्त किये। पीछे बार्टनने फरुखसैरकी चिकित्सा की और आत्मलाभकी कुछ भी चिन्ता न करके बंगालमें अपने व्यापारियोंका कर माफ करवा लिया।

कहा जाता है कि आंग्ल वणिकोंका भारतपर राजनीतिक अधिकार प्राप्त करनेका विचार न था। वे अपने व्यापारके मार्गसे जा रहे थे और उन्हें यों ही मार्गमें पड़ा हुआ शिकार मिल गया। यह कथन सर्वथा असत्य है। यह असम्भव था कि जो आंग्ल पुरुष या फ्रेंच अपने-अपने देशोंमें थोड़ी-थोड़ीसी भूमिके लिए इतने संग्राम कर चुके थे, वे एक रक्षाहीन, शासकोंसे शून्य देशको देखकर उसपर दाँत न गड़ाते, विशेषकर जब उन्होंने अपने नेत्रोंसे यह स्पष्ट देख लिया कि किस प्रकार साधारण पुरुष भी थोड़ेसे मनुष्य एकत्र कर राजा बन बैठते थे। अभी औरंगजेब जैसा बलवान् राजा दिल्लीमें राज्य करता था, परन्तु उसे दक्षिणमें व्यस्त देखकर आंग्ल-व्यापारियोंकी यह इच्छा हुई कि हम थोड़ीसी सेना मँगवाकर वंग देशपर अधिकार प्राप्त कर लें। इस प्रकार आंग्ल-स्थानसे पोत भेजे गये जिनमेंसे कई मार्गमें डूब गये। जो पहुँचे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्हें कुछ सफलता न हुई। औरंगजेबने उन्हें वंग देशसे निकल जानेकी आज्ञा दी। अन्तको सूरतके अंग्रेजोंने बादशाहसे विनयपूर्वक प्रार्थना की और उनका दोष क्षमा करवाया। यह कैसे सम्भव था कि वह कम्पनी पुनः अपने शुभ अवसरकी प्रतीक्षा न करती?

क्या यह चमत्कार था?

एक योग्य ऐतिहासिक भारतवर्षपर आंग्लस्थानके प्रभुत्वको बड़ा चमत्कार कहता है। एक अर्थमें यह सत्य है कि किस प्रकार एक छोटेसे देशके व्यापारियोंकी कम्पनीने इतने बड़े देशपर अपना राज्य स्थापित कर लिया। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि इसमें कोई बड़ी कठिनाई न थी। लोगोंकी अवस्था इतनी गिर गयी थी कि उनके अन्दर कोई राजनीतिक भाव विद्यमान न था। लोग राजसत्ताको ऐन्द्रजालिककी माया समझकर इसमें बड़ा इन्द्रजाल समझते थे और उनके विचारसे इसमें प्रवेश करना सन्मार्गसे बाहर जाना था। यदि कोई व्यक्ति बलसे, चतुराईसे या छल-कपटसे किसी प्रान्तपर अधिकार प्राप्त कर लेता था तो वही राजा मान लिया जाता था।

हैदरअली एक फकीरका पौत्र था। उसने मैसूरके राजाके झगड़ोंसे लाभ उठाकर राज्यपर अधिकार कर लिया। इससे पूर्व जफरखाँ जैसे साधारण पुरुषने, जो एक ब्राह्मणका दास था, कितना बड़ा राज्य बना लिया! साधारण नवाब स्वतन्त्र होकर बादशाह बन रहे थे। इस अवस्थामें आंग्ल व्यापारियोंका, जिनमें योग्यता, स्वदेशप्रीति तथा प्रबन्धकी कुशलता विद्यमान थी, देशपर अधिकार प्राप्त कर लेना कोई बड़े आश्चर्यकी बात न थी।

भारतके शासनकी निर्बलता

पाण्डिचेरीके शासक डूप्लेने भारतके राजाओंकी निर्बलताका मूल कारण जान लिया था। उन राजाओं और नवाबोंके अन्दर विघ्न डलवाकर दलबन्दी कर लेना बड़ा सुगम कार्य था। प्रत्येक प्रान्तमें शासकके

१४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विरुद्ध अनेक पार्टियाँ (दल) थीं और कई अधिकारी थे। थोड़ी-सी आशा दिलानेमें कई अधिकारी उत्पन्न किये जा सकते थे। उनमें किसीको अपने हाथमें कर राज्यपर अपना अधिकार कर लेना एक प्रकारका अमोघ अस्त्र था जिसकी सहायतासे देश बिना किसी युद्ध या कष्टके विजित किया जा सकता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीय खण्ड

मराठा साम्राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिला प्रकरण

मराठोंकी जाग्रति

दो शक्तियोंका जन्म

मुगल साम्राज्यके स्थानपर भारतवर्षमें कई राज्य स्थापित हो गये। दक्षिणमें मराठा और पंजाबमें सिख—दो बड़ी शक्तियाँ थीं। इनके अतिरिक्त हैदराबादमें निजाम, अवधमें नवाब वजीर, वंग देशमें सूबेदार बड़े शक्तिशाली थे। हमने इनमेंसे केवल दो साम्राज्योंका इतिहास लिखना क्यों उचित समझा, इसका कारण केवल यह है कि मराठा-साम्राज्य और सिख-राज्य हिन्दू जातिकी विशेष जाग्रतिके फल थे और निजाम, अवध और वंग देशके राज्य केवल मुगल-साम्राज्यके पतनसे उद्भूत हुए थे। पहिली दो शक्तियोंने परिश्रम तथा त्यागसे मुगल-शासनको निर्बल किया था, दूसरोंने केवल उसे बलहीन पाकर लाभ उठा लिया। इनके अतिरिक्त मैसूरमें हैदरअलीने अपनी कार्यचतुरतासे अपने आपको आर्य राजाके स्थानपर स्थित कर लिया। यद्यपि हैदरअलीकी उन्नतिका संक्षिप्त वृत्तान्त लिखना अत्यन्त मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद है, तो भी भारतके इतिहाससे उसका अधिक सम्बन्ध नहीं, क्योंकि उसकी उन्नतिके साथ वहाँके देशी जीवनका कुछ भी सम्बन्ध न था। हैदरअलीने मैसूर-राज्यको हस्तगत कर भारतके इतिहासमें बहुत कुछ भाग लिया; इसका संक्षिप्त वर्णन यथास्थान आयगा। आंग्ल जाति उन्नति करते-करते जब एक राजनीतिक शक्तिके रूपमें परिणत हो गयी तो उसे भारतमें अपना राज्य स्थापित करनेके लिए केवल इन्हीं दो बड़ी शक्तियोंके साथ संग्राम करना पड़ा। बंगालपर अधिकार प्राप्त कर लेनेके अनन्तर ४० वर्ष पर्यन्त तो मराठोंके साथ उनका युद्ध चला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तत्पश्चात् उत्तर भारतपर अधिकार प्राप्त करनेके लिए सिखोंसे युद्ध करना पड़ा। इसलिए यह बात स्पष्ट करनेकी कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि अंग्रेजोंके राजनीतिक क्षेत्रमें पद रखनेके पूर्व देशका बड़ा भाग राष्ट्रके शासनमें आ चुका था और सौ वर्षपर्यन्त जो युद्ध होते रहे वे केवल इस कारण कि आंग्ल जाति भारतवर्षका राज्य प्राप्त करना चाहती थी, इसलिए नहीं, जैसा प्रायः कहा जाता है, कि भारतमें सदैव प्रबन्धकी त्रुटि तथा विद्रोह रहा है। ब्रिटिश शासनके समाप्त होते-होते भी राजपूताना और नेपालकी कतिपय राजपूत-रियासतोंको छोड़कर, जिन्होंने मुगल-कालके बाद भारतके इतिहासमें बहुत कम भाग लिया है, कई बड़ी-बड़ी रियासतें—यथा ग्वालियर, इन्दौर, बड़ोदा, कोल्हापुर, धार, काश्मीर, पटियाला, नाभा, जीन्द और कपूरथला—मराठा तथा सिख-राज्यकी सत्ताकी द्योतक रहीं हैं। एक निजामकी रियासत ऐसी है जो अंग्रेजोंके साथ मित्रता रखनेके कारण स्थिर बनी रही और दूसरी मैसूरकी रियासत है जिसे अंग्रेजोंने टीपूकी मृत्युके उपरान्त प्राचीन आर्य राजाके कुलको अर्पित कर दिया।

इस दृष्टिसे भी केवल मराठा-साम्राज्य तथा सिख-साम्राज्यके इतिहासमें ही जातिका वास्तविक इतिहास विद्यमान है। हम इन्हीं दोनोंका वृत्तान्त यहाँपर लिखेंगे।

जब मुसलमान आक्रामक आर्यावर्तकी भिन्न-भिन्न दिशाओंमें आक्रमण कर रहे थे उस समय समस्त देशमें धार्मिक जीवन उत्पन्न हो रहा था। वही धार्मिक तरंग महाराष्ट्रपर अपना प्रभाव डाल रही थी। मराठा-साम्राज्य उसी धार्मिक तरंगसे उत्पन्न हुआ। यह बात शिवाजीके गुरु महात्मा रामदासके जीवनसे स्पष्ट हो जाती है।

शिवाजीके गुरु स्वामी रामदास

रामदास सतारा जिलेके जाम्ब नामक एक ग्राममें संवत् १६६३ (सन् १६०६ ई०) में किसी ब्राह्मणके घर उत्पन्न हुए। १२ वर्षकी उम्रमें जब उनका विवाह निश्चित हुआ तो उन्होंने गृहका त्याग ही कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया। उन्होंने १२ वर्षपर्यन्त तप किया और शास्त्रोंका अध्ययन किया। २४ वर्षकी उम्रमें तीर्थयात्रा आरम्भ की। द्वारका, पुरी, रामेश्वरतक भ्रमण कर एक बार घर आकर माताके दर्शन किये और फिर प्रस्थान कर दिया। इस यात्रामें उन्होंने आर्योंकी करुणाजनक दशा देखी और उसके सुधारका भार अपने ऊपर लिया। उन्होंने यह अनुभव किया कि परमात्माकी यही इच्छा है कि मैं अपना जीवन देशको अर्पण करूँ। उन्होंने लोगोंको पहिले यह बतलाना प्रारम्भ किया कि भारतका गत काल कितना गौरवयुक्त था और आज वह किस अवस्थाको पहुँच गया है। उनके बहुतसे शिष्य हो गये। उन्हें उन्होंने महाराष्ट्र तथा अन्य स्थानोंमें भेज दिया। यात्रासे लौटकर वे शिवाजीसे मिले और उनपर उन्होंने प्रभाव डालना प्रारम्भ किया। शिवाजीके कथनानुसार उन्होंने उनके पास रहना भी स्वीकार कर लिया। वे बीस वर्षपर्यन्त शिवाजीको शिक्षा देते रहे। वे जनतामें केवल राजनीतिक भावोंको ही नहीं, प्रत्युत उनके सामाजिक तथा धार्मिक भावोंको भी जगाते रहे।

यदि यह काम न किया जाता तो शिवाजी अकेले कुछ न कर सकते। शिवाजीको अपने काममें दूसरोंसे सहायताकी आवश्यकता थी। यदि वे तैयार न होते तो शिवाजीका काम अधूरा रह जाता।

स्वामी रामदासने महाराष्ट्रमें वह जातीय तरंग उत्पन्न की जिसने लोगोंमें आत्मसम्मान तथा आत्मरक्षाके भावोंको जाग्रत किया। उनकी सफलताका अनुमान इसीसे हो सकता है कि जब मुगल सेनाओंने मैदानों और दुर्गोंपर अधिकार कर लिया और सम्भाजी अपने पुत्रके साथ दिल्लीमें कैद था उस समय एक भी मराठा ऐसा नहीं निकला जो अपने देशका द्रोही सिद्ध हुआ हो या शत्रुके साथ मिल गया हो। देशका प्रबन्ध ऐसा चलता रहा जैसे कोई असाधारण बात हुई ही नहीं।

"जो मराठे हैं उन सबोंको मिला दो, महाराष्ट्रीय धर्मकी नींव डालो। उस धर्मके लिए मरनेपर तत्पर रहो। धर्मके शत्रुओंको मारते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाओ। मरना तो है ही और मर भी रहे हो, इस प्रकार मरते-मारते अपना देश शत्रुसे पुनः ले लो"—ये ही स्वामी रामदासके मुख्य उपदेश थे।

शिवाजीपर उनकी माता तथा रक्षक दादोजीको छोड़कर स्वामी रामदासका प्रभाव सबसे अधिक पड़ा। उनसे सम्मति लेनेके लिए शिवाजीके प्रायः जानेसे यह प्रमाणित होता है कि उन्होंने जो कार्य आरम्भ किया वह आत्मलाभके लिए न था, परन्तु देश तथा समाज-सेवाके लिए था। शिवाजीका झण्डा स्वामी रामदासकी सम्मतिके अनुसार गेरुए रंगका बना और अभिवादन करनेकी विधि 'जौहर'की जगह 'राम-राम' कहनेकी चलायी गयी। बड़े-बड़े अधिकारोंके नाम संस्कृतमें कर दिये गये।* शिवाजीने एक समय अपना समग्र राज्य स्वामी रामदासको अर्पित कर दिया। स्वामी रामदासने उसे लौटा दिया और आज्ञा दी कि सर्वसाधारणके लाभके लिए राज्यका उपयोग करो। जब शिवाजीने मन्दिरके लिए कुछ भूमि देनी चाही तो स्वामीजीने कहा—"यदि मुझे कुछ भूमि देते हो तो उसमेंसे दो जो अभीतक दूसरोंके अधिकारमें है" अर्थात् उन्हें यह बताया कि अभी स्वतन्त्रताका काम बहुत शेष है।

शाहजी

अहमदनगर रियासतमें सबसे बड़ा मराठा सरदार यादवराव था जो देवगढ़के राजाकी सन्तानसे था। वीरबल ग्रामके पटेल प्रसिद्ध भोंसले-कुलके थे। शाहजी मालोजी भोंसलेका बड़ा चतुर पुत्र था। होलीके समय जब इन दोनों कुलोंके अतिरिक्त और बहुतसे दूसरे लोग एकत्र थे, यादवरावकी कन्या और शाहजी परस्पर रंग खेल रहे थे। यादवरावने हँसीमें कन्यासे कहा, "पुत्री, तुम्हारा विवाह इस बालकसे कर दूँ?"

* शिवाजीने एक 'राजकोश' तैयार कराया था जिसमें फारसी-अरबीके प्रचलित शब्दोंके संस्कृत प्रतिशब्द दिये गये थे।—सं०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर अन्य लोगोंसे कहा, "क्या उत्तम जोड़ी है।" मालोजीने इसे एक प्रकारसे विवाहका निश्चय समझ लिया और इसके पूर्ण किये जानेपर जोर दिया। अन्तको पाँच वर्ष बाद संवत् १६६१ (सन् १६०४ ई०) में जीजाबाई और शाहजीका विवाह हो गया।

शाहजी अपनेको उदयपुरके वंशमें बतलाते थे। जब मलिक अम्बर अहमदनगरमें मुगलोंके विरुद्ध लड़ रहा था तो शाहजी और लखोजी यादवराव अहमदनगरके बादशाहके सहायक थे। संवत् १६७७ (सन् १६२० ई०) के युद्धमें उन्होंने बड़ी वीरता दिखायी। संवत् १६८६ (सन् १६२९ ई०) में खानजहाँ लोदीको पराजित करके शाहजी शाहजहाँकी ओर चले गये और बादशाहने उन्हें पाँच सहस्र सेनाका मनसबदार बनाया, परन्तु संवत् १६८८ (सन् १६३१ ई०) में वे फिर अहमदनगर लौट आये। यहाँ उस समय बड़ी हलचल मची हुई थी। उन्होंने अपने इच्छानुसार एक व्यक्तिको सिंहासनपर बैठाया और स्वतन्त्र होकर कोंकण और उसके समीपवर्ती प्रान्तपर अपना अधिकार कर लिया। मुगल बादशाहने २५ सहस्र सेना शाहजीके विरुद्ध भेजी। चार वर्षके उपरान्त शाहजीको अधीन होना पड़ा। उन्होंने संवत् १६९४ (सन् १६३७ ई०) में शाहजहाँकी सम्मतिसे बीजापुरके राजाका आश्रय लिया। वहाँसे वे करनाटक भेजे गये जहाँपर उन्होंने एक राज्यकी नींव डाली जिसका शासक उनका पुत्र सम्भोजी हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा प्रकरण

छत्रपति शिवाजी

शिवाजीकी बाल्यावस्था

शिवाजी शाहजीके पुत्र थे। उनका जन्म संवत् १६८४ (सन् १६२७ ई०) में हुआ। जब शाहजी करनाटककी लड़ाईमें गये तो शिवाजी और उनकी माता जीजाबाई पूना चली गयीं, जो शाहजीकी जागीर थी। उसका प्रबन्ध दादोजी कोण्डदेव करता था। उस समय शाहजहाँने दक्षिणमें भी टोडरमलकी कर-सम्बन्धी नीति प्रचलित की। राज्यकर उपजका लगभग चौथा भाग था। इसी नियमानुसार दादोजी-ने अपनी जागीरमें चौथ प्राप्त करना आरम्भ किया। उसने शिवाजीका पालन समुचित रूपसे किया। शिवाजीको पढ़ना-लिखना नहीं आता था। वे बड़े कुशल अश्वारोही और तीर चलानेमें निपुण थे। उन्हें महा-भारत, रामायण और भागवतका पूर्ण ज्ञान था। वीर-कथाएँ सुननेकी उन्हें बड़ी लालसा थी। १६ वर्षकी वयसमें ही उन्हें स्वतन्त्र राजा बननेकी लालसा उत्पन्न हो गयी। वे मावली लोगोंसे बहुत स्नेह करते थे। कहते थे कि यद्यपि मावली स्थूल और दुर्बुद्धि प्रतीत होते हैं, परन्तु बड़े शूर-वीर होते हैं और प्राणोंको त्यागनेपर उद्यत रहते हैं। शनैः-शनैः वे लोग भी उनसे बहुत प्रेम करने लगे। वे भिन्न-भिन्न पर्वतोंपर उनके साथ आखेट करने जाते थे। इस प्रकार उन्हें समूचे प्रान्तका ज्ञान हो गया। इन्हीं मावली लोगोंमेंसे उनके सैनिक तथा सहायक उत्पन्न हुए।

शिवाजीकी उन्नति

मुसलमान बादशाह दुर्गोंकी ओर बहुत ध्यान न देते थे। संवत् १७०३ (सन् १६४६ ई०) में शिवाजीने तोरणके दुर्गपीलसे पत्रव्यव-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हार करके वह दुर्ग खाली करा लिया और उसपर स्वयं अधिकार कर लिया। उधर बीजापुरको लिख भेजा कि मैंने रियासतके लाभके लिए ऐसा किया है। संयोगसे उस दुर्गमें एक बड़ा कोष मिल गया जिससे उन्होंने अस्त्र-शस्त्र खरीद लिये और तीन मील दूरस्थ पर्वतपर रायगढ़ दुर्ग बनवाया। इसपर बीजापुर राज्यने शाहजीको करनाटकमें तंग करना आरम्भ किया। शाहजीने कहा कि शिवाजीने सब कुछ बिना मेरी सम्मतिके किया है। इतनेमें दादोजीका अन्तिम काल आ पहुँचा। पहिले वह सदा शिवाजीको रोकता रहता था, परन्तु मरते समय उसने कहा— "पुत्र, अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिए जो कुछ बन पड़े, करो। ब्राह्मण, गौ और कृषकोंकी रक्षा करना परमधर्म है।" दादोजीकी मृत्युपर शिवाजी जागीरके स्वामी बन गये। उन्होंने अपने पिताको कर देना अस्वीकार किया। इधर मुसलमान दुर्गपालको कुछ देकर शिवाजीने सिंहगढ़का दुर्ग ले लिया। उस समय पुरन्दरका दुर्गपाल मर गया और उसके तीनों पुत्रोंमें परस्पर झगड़ा हो गया। शिवाजीसे उन्होंने निर्णय कर देने लिए प्रार्थना की, पर शिवाजीने उनसे सन्धि करके पुरन्दरके दुर्गपर भी अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् उन्होंने मावली लोगोंकी सेना तैयार करना आरम्भ कर दिया और अपना अभिप्राय प्रकट करनेके लिए कई ब्राह्मण कोंकण भेजे। शिवाजीको जब यह सूचना मिली कि कल्याणके शासकने बड़ा धनकोष बीजापुरको भेजा है तो उन्होंने अपने सैनिक ले जाकर उसे लूट लिया और कोष साथियोंमें बाँट दिया। इसके अनन्तर सात दुर्ग और ले लिये। उनके एक साथी आबाजी सुबन्धुने कल्याणके शासकको कैद करके तीन और दुर्गोंपर अधिकार कर लिया। शिवाजीने आबाजीको वहाँका शासक बना दिया।

शाहजी कैद किये गये

जब इन घटनाओंकी सूचना बीजापुर दरबारमें पहुँची तो मुहम्मद आदिलशाहने बाजी घोरपड़े द्वारा शाहजीको करनाटकसे बुलवाया और एक तंग कोठरीमें कैद कर दिया। उसमें केवल एक छिद्र इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शर्तपर रखा कि सब दुर्ग वापिस करा दो अन्यथा यह छिद्र भी बन्द कर दिया जायगा। शिवाजी तो पिताकी मृत्युके भयसे यह सब माननेको उद्यत हो गये, किन्तु उनकी धर्मपत्नी सूयाबाईने उन्हें एक उपाय बताया जिसने उन्हें इस अपमानसे बचा लिया। उपाय यह था कि शाहजहाँसे पत्रव्यवहार किया जाय। इस प्रकार शिवाजीने अपने पिताको मृत्युसे बचा लिया, परन्तु फिर भी शाहजीको चार वर्ष-पर्यन्त बीजापुरमें ही नजरबन्द रहना पड़ा। इस कालमें संवत् १७१० (सन् १६५३ ई०) तक शिवाजी चुपचाप ही रहे।

शाहजी शिवाजीके कार्योंमें प्रायः भाग न लेते थे, परन्तु जब उन्हें मुक्ति मिली तो उन्होंने शिवाजीको लिखा—"यदि मेरे पुत्र हो तो बाजी घोरपड़ेसे बदला लो।" शिवाजीने इस आज्ञाका भली भाँति पालन किया।

अपने पिताके मुक्त होनेपर शिवाजीने कोंकणमें अपना राज्य विस्तृत करना आरम्भ किया। उन्होंने जोलीके आर्य राजाको भी पराजित किया।

इस समय गोलकुण्डासे औरंगजेबकी शत्रुता हो गयी। गोलकुण्डाका मन्त्री मीरजुमला अप्रसन्न होकर औरंगजेबसे जा मिला। इन्हीं दिनों बीजापुरका बादशाह मुहम्मद आदिलशाह मर गया और औरंगजेबने बीजापुरपर बिना किसी कारणके आक्रमण कर दिया। परन्तु शाहजहाँकी बीमारीकी खबर सुनकर औरंगजेबका ध्यान उधर खिंच गया। जब औरंगजेब, मुराद और दाराशिकोह परस्पर युद्ध कर रहे थे, शिवाजीने मुगल-राज्यके जूनियरनगर और अहमदनगरपर आक्रमण करके उन्हें लूट लिया। औरंगजेबके सफल हो जानेपर शिवाजीने अपराध क्षमा करानेके लिए उसे पत्र लिखा और प्रार्थना की कि मुझे कोंकण दे दिया जाय। औरंगजेबने बीजापुरको दबावमें रखनेके लिए शिवाजीको आशा-जनक उत्तर दिया। शिवाजीने सात सौ पठानोंको, जिनको बीजापुरने दरबारसे हटा दिया था, अपने यहाँ भरती कर लिया और कोंकणपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजय प्राप्त करनेकी तैयारी कर दी। बीजापुरने बहुत तंग आकर शिवाजीको दबाना आवश्यक समझा और एक बड़ी सेना देकर अफजल खाँको इस कार्यके लिए भेजा।

अफजल खाँका वध

उस समय शिवाजी प्रतापगढ़में थे। सेनाके पहुँचनेपर उन्होंने अफ-जल खाँको प्रशंसापत्र भेजना आरम्भ किया जिसमें अपने पिछले कामोंपर उन्होंने पश्चात्ताप भी प्रकट किया। अफजल खाँने भी सन्धि करना अंगीकार कर लिया और एक ब्राह्मण दूत पन्तजी गोपीनाथको शिवाजीके पास भेजा। दिनभर इधर-उधरकी बातें करके शिवाजीने रातको उसे रख लिया। आधी रातको शिवाजी उसके पास गये और कहा—"जो कुछ मैंने किया है, अपने लिए नहीं, प्रत्युत आर्यजाति और धर्मकी रक्षाके लिए किया है, क्योंकि देवी भवानीने मुझे धर्मके शत्रुओंका नाश करने-की आज्ञा दी है। आप ब्राह्मण हैं, आपका कर्तव्य है कि आप मेरी सहायता करें।" साथ ही उसे जागीर देनेकी भी उन्होंने प्रतिज्ञा की। गोपीनाथने भवानीकी शपथ खाकर कहा कि मैं सब प्रकारसे आपकी सहायता करूँगा। अन्तमें शिवाजीके साथ अफजल खाँको एकाकी मिलानेकी राय हुई। गोपीनाथने लौटकर अफजल खाँको इस बातपर राजी कर लिया। अफजल खाँ अपनी सेना भी साथ लाया। गोपीनाथने इस विचारसे कि शिवाजी भयभीत न हो जायँ, सेनाको पीछे खड़ा करा दिया। शिवाजीने इसे धर्मका काम समझकर उसके लिए तैयारी की। हाथ-मुख धोकर उन्होंने अपनी माताके चरणोंपर गिरकर आशी-र्वाद लिया। कवच धारण कर बिच्छू और बाघनख हाथोंमें ले लिये और तैयार हो दुर्गसे उतरे। अफजल खाँ और शिवाजी दोनों एकाकी मिले। शिवाजीने उसपर छुरीका वार किया। अफजल खाँने भी अपनी तलवार चलायी, किन्तु शिवाजीके कवचपर उसका कुछ प्रभाव न हुआ। शिवाजीके साथी छिपे हुए थे, वे झट आ पहुँचे और अफजल खाँका सिर काटकर दुर्गमें ले गये और सेनाको पीछे हटा दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मराठा ऐतिहासिकोंका मत

ऊपरका कथन एक ओरका है। मराठा ऐतिहासिकोंने इसके विपरीत यह सिद्ध किया है कि अफजल खाँका निश्चय अकेले मिलकर शिवाजीको कैद कर लेनेका था, इसीलिए वह मिलनेपर राजी हुआ था। मिलनेके समय अफजल खाँने जब यह चेष्टा की तो शिवाजीने, जो सदा अपने पास छुरी रखा करते थे, उसकी समाप्ति कर दी। जो हो, इस घटनाके बाद शिवाजीका बल तथा प्रसिद्धि बहुत बढ़ गयी। कोष, हाथी और घोड़े भी उनके हाथ आये। बीजापुरमें जब यह खबर पहुँची तो दुगुनी सेना भेजनेका निश्चय किया गया। शिवाजीके सैनिक रसद-रसानीका सामान लूट लेते थे और मार्गमें आग लगाकर सब कुछ नष्ट कर देते थे अथवा जब शत्रु सुखसे सोते तो उनपर जा पड़ते थे।

पनाला दुर्गका घेरा

अन्तमें बीजापुरकी सेनाने पनाला दुर्गपर घेरा डाल दिया और चार मासतक पड़ी रही। शिवाजीको दुर्गमें बन्द हो जानेका बड़ा दुःख था। अन्तको उन्होंने चतुरतासे काम लिया। एक दिन शरणमें आना स्वीकार कर लिया। जब सीदी जोहर और फाजिल मुहम्मद खाँ (अफजलका पुत्र) रात्रिको सो रहे थे, शिवाजी अपने चुने हुए मावली लेकर निकल गये और देशपाण्डेको कुछ मावली देकर मार्गमें खड़ा कर दिया जिसमें वह शत्रुओंको तबतक रोक रखे जबतक पाँच तोपोंका शब्द न सुनाई दे। यही शिवाजीके पहुँचनेका चिह्न था। फाजिल खाँ जागनेपर पीछा करनेके लिए गया, किन्तु देशपाण्डे और मावलियोंने अपने कर्तव्यपर अपने प्राण न्योछावर कर दिये। जबतक तोपोंका शब्द न सुनाई दिया, उन्होंने शत्रुको मार्गमें रोक रखा। आधेसे कुछ अधिक आदमी वहाँ काम आये। देशपाण्डे स्वयं मारा गया, किन्तु उसने मरते समय तोपोंका शब्द सुन लिया था जिससे उसने शान्तिपूर्वक प्राण दिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह घटना संवत् १७१७ (सन् १६६० ई०) में हुई। शिवाजीने आर्योंको प्रसन्न करनेके लिए प्रतापगढ़में देवीका मन्दिर बनवाया। साथ ही, शत्रुसेनासे भी युद्ध करते रहे। बादशाहने सीदी जौहरको बुला लिया। उस समय देशमुख तथा बाजी घोरपड़े दोनों बादशाहकी सहायता करनेको उद्यत हो गये।

जब शिवाजीको यह विदित हुआ तो वे मधोलपर अकस्मात् जा पहुँचे और घोरपड़ेको, जो उनके पिताका बैरी था, परिवार सहित मारकर लौट आये। इसपर शाहजी करनाटकसे शिवाजीसे मिलने आये। शिवाजीने बड़ी प्रतिष्ठासे अपने पिताका स्वागत किया और जब शाहजी पुनः बीजापुर गये तो बीजापुरसे शिवाजीकी सन्धि हो गयी।

शाइस्ता खाँकी पराजय

इधरसे हटकर शिवाजीने मुगल-राज्यकी ओर ध्यान दिया। उनका एक सेनापति नेताजी औरंगाबादतक लूट-मार कर वापिस चला गया। औरंगजेबने दक्षिणके शासक शाइस्ता खाँको शिवाजीपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। शाइस्ता खाँने सेना लेकर प्रस्थान किया। चाकण नामक दुर्ग लेनेमें उसके एक सहस्र मनुष्य काम आये। वहाँसे वह पूना पहुँचा और दादोजीके मकानमें जाकर ठहरा। उसने आज्ञा दी कि कोई सशस्त्र मरहठा पूनामें प्रवेश न करे। शिवाजीने अपने एक मराठे मित्रसे शाइस्ता खाँकी नौकरी कबूल करायी। उसने विवाहके बहाने नगरमें ढोल बजाने तथा बारातियोंको साथ ले जानेकी आज्ञा प्राप्त की। जब पूनामें यह बारात जा रही थी तो शिवाजी अपने कुछ चुने हुए मावलियों सहित नगरमें प्रविष्ट हो गये। रातको एकाएक दादोजीके मकानपर जाकर आक्रमण कर दिया। शाइस्ता खाँका पुत्र मारा गया। शाइस्ता खाँकी आँख खुली तो वह एक खिड़कीसे कूदकर भागा, पर तलवारसे उसकी एक उँगली कट गयी। शिवाजी अपने साथियों सहित सिंहगढ़ पहुँच गये। दूसरे दिन मुगल सेना सिंहगढ़की ओर बढ़ी। मार्गमें नेताजी अकस्मात् उनपर आ पड़ा। सब अश्वारोही भाग गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह पहला ही अवसर था कि मुगल-सैनिक मराठोंके आगे भाग खड़े हुए। इसके बाद शाइस्ता खाँ बंग देशका शासक बना दिया गया।

फिर शिवाजीने सूरत नगर लूटा और बहुत माल लेकर दुर्गमें प्रवेश किया। साथ ही शिवाजीकी जलशक्ति भी अधिक बलवती होती गयी। उन्होंने मक्काकी ओर जानेवाले एक पोतको जा पकड़ा और बहुत धन लेकर छोड़ दिया। संवत् १७२१ (सन् १६६४ ई०) में शिवाजीने रायगढ़में राजाका पद ग्रहण किया और अपने नामकी मुद्रा प्रचलित की।

राजा जयसिंहसे सन्धि

इसी समय औरंगजेबने दिलेर खाँ और राजा जयसिंहको बड़ी सेना देकर शिवाजीके विरुद्ध भेजा। शिवाजीने इस सम्बन्धमें रायगढ़में सबसे परामर्श किया। दिलेर खाँने पुरन्दरके दुर्गको घेर लिया और जयसिंहने पूनाकी ओर प्रस्थान किया। शिवाजीसे जयसिंहने प्रतिज्ञा की कि यदि तुम बादशाहका आधिपत्य मान लोगे तो तुम्हारा सम्मान और देश बढ़ा दिया जायगा। पुरन्दरमें सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर भी हो गये। इसपर शिवाजी राजा जयसिंहकी सहायताके लिए बीजापुर पहुँचे। उन्होंने युद्धमें बड़ी वीरता दिखलायी। औरंगजेब बड़ा प्रसन्न हुआ और उन्हें पत्र लिखकर दरबारमें मिलनेके लिए बुलाया। जयसिंहके कहनेपर शिवाजीने दिल्लीके लिए प्रस्थान किया, किन्तु जानेसे पूर्व वे अपने स्थानपर मूरदत्रिमूल, आबाजी और अन्नाजीको नियुक्त कर गये।

शिवाजीको कैद करनेका व्यर्थ प्रयत्न

दिल्लीमें जयसिंहका पुत्र रामसिंह तथा कुछ और मनुष्य उनके स्वागतके लिए आये, परन्तु राजसभामें उनकी कुछ प्रतिष्ठा न हुई। इसपर उन्हें बड़ा क्रोध आया। औरंगजेबने उनके मकानपर रक्षक बैठा दिये और उनके साथियोंको लौट जानेकी आज्ञा दे दी। शिवाजीने यह हाल देखा तो रोगका बहाना किया, फिर अच्छे होनेपर ब्राह्मणोंको दान-पुण्य किया। मिठाईके जो टोकरे आये थे उनमें आप और अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुत्रको बिठाकर नगरके बाहर पहुँच गये। वहाँ घोड़े तैयार थे, शीघ्र ही मथुरा जा पहुँचे। यहाँ उनके साथी प्रतीक्षा कर रहे थे। औरंगजेबको देरमें सूचना मिली। अब पीछा करना व्यर्थ था। इसमें रामसिंहने अपने पिताकी प्रतिज्ञाका विचार करके शिवाजीकी सब प्रकारसे सहायता की। नौ मास अनन्तर शिवाजी संवत् १७२३ (सन् १६६६ ई०) में रायगढ़में प्रविष्ट हुए। लौटते ही उन्होंने अपने सब दुर्ग पुनः ले लिये और मुगल-सेनाको निकाल दिया।

क्या शिवाजी डाकू थे ?

मुसलमानोंका विचार था, और कई आंग्ल ऐतिहासिकोंने भी इस विचारका अनुकरण किया है, कि शिवाजी डाकू थे। यही आक्षेप वीर बन्दापर भी किया जाता है। मुसलमान शासकोंका पूर्ण अधिकार था कि वे जो अपशब्द चाहें अपने शत्रुओंके लिए प्रयुक्त करें। परन्तु जब दीर्घकाल व्यतीत हो जाता है, तब इतिहास लिखनेवाले निष्पक्ष भावसे सब घटनाओंका निरूपण कर सकते हैं। केवल यही एक विचार करनेकी बात है कि अपने कालमें शिवाजीकी क्या स्थिति थी। इस देशमें प्रजाको लूट-मारकर किसी प्रकारका राज्य स्थापित करनेकी रीति न थी। यवन (मुसलमान) आक्रामकोंने केवल आर्यावर्तमें ही नहीं, किन्तु अन्य देशोंमें भी राज्य जमानेकी यही एक विधि उचित समझी थी। आर्यावर्तमें इसी विधिका उपयोग किया गया। परिणाम यह हुआ कि न केवल बाह्य आक्रामकोंने, बल्कि यहाँके लोगोंने भी इसी विधिपर कार्य करके राज्य स्थापित कर लिये। यह आर्योंकी ओरसे इस्लामी आक्रमणोंका प्रतिकार था। जिस प्रकार इस्लामकी टक्कर लगनेसे धार्मिक उत्थान हुआ उसी प्रकार आक्रमणोंकी प्रतिक्रियासे इन रियासतोंकी उत्पत्ति हुई।

दादोजीका उपदेश

शिवाजी बाल्यावस्थासे अपनी माताके पास ही रहते थे। उनकी मातासे देवीने एक रात स्वप्नमें कहा—"तुम्हारा पुत्र बड़ा भारी राजा होगा और गो तथा ब्राह्मणकी रक्षा करेगा।" शिवाजीका रक्षक दादोजी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। जब शिवाजीने दुर्गोंको लेना आरम्भ किया तो बीजापुरके बादशाहने दादोजीसे उत्तर माँगा। दादोजीने सारा भार अपने सिरसे टाल दिया। परन्तु जब दादोजी मृत्युशय्यापर था, तो उसने शिवाजीको बुलाया और कहा—"मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ सबको जाना है। तुझे भी इस नदीसे पार उतरना है और बड़े कामोंको पूर्ण करना है। तू अकेला है, तूने संसार अभी देखा नहीं है, अतः कुछ उपदेश करता हूँ—धर्म तथा ज्ञानपर स्थित रहना, गौ तथा ब्राह्मणका मान रखना, सैनिकोंको प्राणोंसे प्रिय समझना, ठाकुरद्वारोंकी रक्षाको कर्तव्य समझना और, सबसे बढ़कर, जिस क्षेत्रमें पद रखा है उससे पीछे न हटना।" स्वामी रामदासने शिवाजीको एक वाक्यमें उपदेश किया—"सबको एकत्र करके महाराष्ट्रके धर्मका कल्याण करो।"

क्या शिवाजी धोखेबाज थे?

अफजल खाँके वधसे शिवाजीपर यह दोष लगाया गया है कि उन्होंने शत्रुके साथ बर्तावमें धोखेसे काम लिया। मराठा ऐतिहासिकोंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि अफजल खाँकी ओरसे भी वैसा ही विचार था, इसलिए जो कुछ शिवाजीने किया वह उचित था। परन्तु एक और बातका हमें सर्वदा स्मरण रखना चाहिये। वह यह कि इतिहासमें सदाचार विचित्र प्रकारका होता है। इतिहासमें सदाचारकी कसौटी केवल 'सफलता' है। इसके लिए अनेक साधन साधारण सदाचारके विपरीत बर्ते जाते हैं। उनकी आवश्यकता इसलिए होती है कि यदि दोनों पक्ष एक ही प्रकारका सदाचार रखते हों तब तो पूर्ण न्यायसे काम लेना चाहिये। परन्तु जब एक पक्ष सदाचारको मानता है और दूसरा पक्ष किसी प्रकारका सदाचार नहीं मानता तो उस समय धार्मिक रीतियोंपर चलनेकी कोई आवश्यकता नहीं होती। प्रथम इस्लामी आक्रामकोंके समयमें राजपूत अपने धर्मका अनुसरण करते हुए छलसे कैद किये गये। इस नीतिसे उन्होंने अपने देश तथा जातिका अहित किया। शिवाजी अपनी जाति तथा धर्मकी रक्षाके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए उन लोगोंके विरुद्ध युद्ध कर रहे थे जिन्होंने अपनी विजयोंमें किसी धार्मिक नीतिकी ओर ध्यान नहीं दिया था। अतः शिवाजीका आचरण दोषयुक्त नहीं कहा जा सकता।

शिवाजीकी नीति

शिवाजीने सेनाको भली भाँति संघटित किया था। सबको नियमपूर्वक वेतन देते थे। किसी सरदारको जागीर देना न चाहते थे कि कहीं वह अधिक बलवान् होकर एक और शत्रु न बन जाय। उन्होंने राज्यशासनके लिए एक सभा स्थापित की जिसमें आठ व्यक्ति थे। वे अष्टप्रधान कहे जाते थे। धार्मिक दृष्टिसे उन्होंने मुसलमानोंकी मसजिदों तथा मकबरोंका सदा मान किया। उनका राज्य-प्रबन्ध प्राचीन शास्त्रानुसार था।

फिर संग्रामकी तैयारी

संवत् १७२७ (सन् १६७० ई०) में शिवाजी फिर संग्रामके लिए तैयार हो गये। उनके वीर सेनापति तानाजीने सिंहगढ़ दुर्ग जीत लिया। तानाजी उसमें मारा गया। इसपर शिवाजीने शोकातुर होकर कहा—"गढ़ तो आया, लेकिन सिंह गया।" उनका भाई शिवाजी वहाँका दुर्गपाल बनाया गया। थोड़े ही दिनोंमें कल्याण प्रदेश भी हाथ आ गया। उधर १८० जहाजोंका बेड़ा समुद्रमें फिरता था। वर्षा ऋतु समाप्त होनेपर शिवाजीने सूरतको पुनः लूटा। उनके सेनापति प्रतापरावने खानदेशपर आक्रमण किया और बड़े-बड़े नगरोंसे चौथ प्राप्त की। जसवन्तसिंह शिवाजीकी उन्नतिपर हृदयसे प्रसन्न थे। अन्तको औरंगजेबने महावतखाँको दक्षिण भेजा। चाकणके समीप शिवाजीकी सेनाने मुगल-सेनापर बड़ी भारी विजय प्राप्त की और कई अफसर कैद कर लिये। उधर पुर्तगीजोंसे चौथ प्राप्त करनेके लिए सेना भेजी। औरंगजेबने अब खानजहाँको दक्षिण भेजा और महावत खाँको वापस बुला लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस समय बीजापुरका शासक मर गया और वहाँके राज्यमें अराजकता-सी फैल गयी। शिवाजीने इससे लाभ उठाकर हुबली नगर लूटा। बहुत धन हाथ लगा। फिर उन्होंने सताराके दुर्गपर अधिकार कर लिया। पनाला भी फिर हाथमें आ गया। शिवाजीका सेनापति प्रताप-राव वीरतासे लड़ता हुआ रणक्षेत्रमें काम आया।

संवत् १७३१ (सन् १६७४ ई०) में शिवाजीने राजगद्दीपर बैठनेका उत्सव मनाया। उस समय आठों मन्त्रियोंके नाम संस्कृतमें रखे गये। शिवाजीने अपने आपको सुवर्णसे तौलकर वह सुवर्ण ब्राह्मणोंको दे दिया।

इसके अनन्तर मुगल-सेनासे प्रायः युद्ध होता ही रहा। इधर बीजापुर और गोलकुण्डाके साथ मुगलोंका युद्ध चल रहा था। शिवाजी सेना लेकर हैदराबाद गये और वहाँ उन्होंने कुतबशाहके साथ मित्रता की। वहाँसे दक्षिणमें जाकर उन्होंने जिञ्जीके दुर्गपर अधिकार कर लिया। उसी समय उनके एक ब्राह्मण अफसरने बेलोर दुर्ग अधिगत कर लिया। शिवाजीने लौटते समय बिलारी दुर्गपर भी अपना झण्डा खड़ा कर दिया। दिलेर खाँ बीजापुरके साथ युद्ध कर रहा था। बीजापुरके बादशाहने शिवाजीसे सहायता माँगी। शिवाजीने मुगलोंपर आक्रमण किया और आसपासके सभी ग्राम उजाड़ डाले। अपने पुत्र सम्भाजीको एक ब्राह्मण-कन्याके साथ अनुचित व्यवहार करनेपर शिवाजीने कैद कर दिया था। जब उसे कारावाससे मुक्त किया तो वह दिलेर खाँसे जा मिला। दिलेर खाँ उसे पिताके विरुद्ध लड़नेके लिए सहायता देना चाहता था, किन्तु औरंगजेबकी इच्छा उसे कैद करनेकी थी, इसलिए दिलेर खाँने उसे लौट जानेकी आज्ञा दे दी। अन्तको पिता-पुत्रमें सन्धि हो गयी। तत्पश्चात् शीघ्र ही संवत् १७३६ (सन् १६७९ ई०) में शिवाजी इस लोकसे प्रस्थान कर गये। महाराष्ट्रमें शिवाजी अवतार समझे जाते हैं। वे पण्डितोंकी बड़ी प्रतिष्ठा करते थे। वे बालकोंको अपने घरपर पढ़ाते थे और पाठकों तथा पाठशालाओंका समस्त व्यय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्यकी औरसे मिलता था। उन्होंने संस्कृत विद्याकी बड़ी उन्नति की। स्थान-स्थानपर रामायण तथा महाभारतकी कथा सुनायी जाती थी और लोगोंके अन्दर जातीय भाव भरा जाता था। मराठा-राज्यकी उन्नतिके कारण शिवाजीके कार्य थे। उनसे राष्ट्रीय भावोंका प्रादुर्भाव हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण

सम्भाजी

शिवाजीके दो पुत्र थे, सम्भाजी एक स्त्रीसे और राजाराम दूसरी स्त्रीसे। शिवाजीकी मृत्युके उपरान्त सम्भाजी राजगद्दीपर बैठा। उसने अष्टप्रधानोंको हटा दिया और अपने भाई राजारामको कैद कर दिया। वह बड़ा नीच तथा विषयासक्त पुरुष था। जातियोंके इतिहासमें बहुधा अयोग्य नेताओंकी मृत्यु देशके लाभके लिए हो जाती है। यदि सम्भाजी बहुत दिनोंतक जीवित रहता तो न जाने महाराष्ट्रको किस गड्ढेमें गिरा देता। महाराष्ट्रका सौभाग्य था कि वह शीघ्र पकड़ा गया और औरंगजेबके पास लाया गया। औरंगजेबके हृदयमें शत्रुके लिए लेशमात्र भी दया न थी, परन्तु उसकी इच्छा यह थी कि सम्भाजी मारा न जाय, पर सम्भाजी इस अपमानसे मर जाना अच्छा समझता था। औरंगजेबने कहला भेजा कि तुम मुसलमान हो जाओ तो छोड़ दिये जाओगे। सम्भाजीने कहा, बादशाहसे जाकर कहो कि यदि वह मुझे अपनी कन्या दे दे तो मुसलमान हो जाऊँगा। साथ ही, उसने पैगम्बरको भी अपशब्द कहे। औरंगजेब बड़ा कुपित हुआ और आज्ञा दी कि तपा हुआ लाल लोहा उसकी आँखोंमें फेरा जाय, उसकी जिह्वा काटी जाय और उसका सिर अलग कर दिया जाय। इस प्रकार सम्भाजी तोलापुरके कैम्पमें बड़े कष्टके साथ मारा गया।

मराठोंमें नवजीवनका संचार

सम्भाजीका वध मराठा जातिके लिए बड़ा हितकर सिद्ध हुआ। उनमें एक नया जीवन उत्पन्न हो गया। शिवाजीके पुत्रके वधका बदला लेनेके लिए मराठे उद्यत हो गये। इस प्रकार जो पुरुष जीवनमें इतना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हानिकारक था उसकी मृत्यु जातिके लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुई। उधर बीजापुर और गोलकुण्डा जीत लेनेके बाद औरंगजेबने सब आर्योंको नौकरीसे हटा दिया और वे काम भी जो केवल आर्य ही कर सकते थे, मुसलमानोंको दे दिये। परिणाम यह हुआ कि समस्त दक्षिणमें औरंगजेबके विरुद्ध एक प्रबल क्षोभ उत्पन्न हो गया। वहाँकी रियासतोंके मराठा सैनिकों और दूसरे जागीरदारोंने अपने मराठा भाइयोंसे मिलकर गोरिला-युद्ध* करना प्रारम्भ कर दिया।

सम्भाजीकी मृत्युपर बहुतसे प्रतिष्ठित मराठा एकत्र हुए और उन्होंने सम्भाजीके पुत्र शिवाजीको राज्यका स्वामी अंगीकार किया। वे औरंगजेबकी शक्तिका अनुमान कर लड़नेके लिए कटिबद्ध हो गये। उनमें प्रह्लाद नीराजी बड़ा बुद्धिमान् पुरुष था। सम्भाजीकी स्त्री और पुत्र शिवाजी रायगढ़में थे। राजाराम एक दुर्गसे दूसरेमें भागा-भागा फिरता था। मुगल-सेनाने रायगढ़पर आक्रमण किया और कुछ ही महीनोंमें दुर्ग ले लिया। शिवाजी उनके हाथोंमें आ गया। माता और पुत्र दोनों औरंगजेबके कैम्पमें बन्द किये गये। पनाला भी जीता गया। अब राजाराम कुछ साथियों सहित जिञ्जी चला गया। वहाँ नये मन्त्री आदि नियत किये गये। सबने मिलकर प्रह्लादको प्रतिनिधिका पद दिया। यह पद-विशेष उसीके लिए निश्चित हुआ और राजाराम नियमपूर्वक राजगद्दीपर बैठाया गया। उसके नामसे प्रसिद्ध आर्योंको उन प्रान्तोंकी जागीरें दी गयीं जो उस समय मुगलोंके अधिकारमें थे। औरंगजेबने यह समाचार सुनते ही जुल्फिकारको उधर भेजा। इधर प्रह्लादने सन्ताजी सेनापति और धनाजी जादवको महाराष्ट्रमें मुगलोंके विरुद्ध भेजा। जुल्फिकार आक्रमणके लिए और सेना माँगता था, परन्तु औरंगजेब अधिक सेना न भेज सकता था, क्योंकि महाराष्ट्रमें भी मराठा सरदार सन्ताजीसे मिल रहे थे। रामचन्द्रपन्त महाराष्ट्रमें प्रतिनिधिका काम करता था। उसकी राजधानी सतारा थी। उसने चौथ

* इसीको मराठीमें 'गनीमी कावा' कहते हैं।—सं०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा सरदेशमुखीके अतिरिक्त सेनाके निमित्त वास-दानेके लिए कर लेना आरम्भ कर दिया और एक अच्छी सेना एकत्र कर ली। यह मराठा-सेना डोंगर लोगोंकी थी। उनके सेनापतियोंको रामचन्द्रने नये-नये पद दिये। सन्ताजी, धनाजी और परशुरामने राजगढ़, पनाला और बुर्च आदि दुर्ग पुनः ले लिये और गोदावरी जिलेमें मुगल-सेनापर धावा किया। आखिर औरंगजेबने जिञ्जीको लेनेका निश्चय किया। वह स्वयं सेना लेकर पश्चिमकी ओर चला और युवराज कामबख़्शको आगे भेजा। जुल्फिकारखाँ पदसे हटाये जानेपर बहुत क्रुद्ध हुआ। मराठोंने इस अवसरको शुभ जान उसे अपनी ओर कर लिया। वह बराबर युवराजके उपायोंको व्यर्थ करनेमें लगा रहा। औरंगजेबने भीमा नदीपर ब्रह्मा-पुरीमें अपनी छावनी रखी और कई वर्षोंतक वह उसे युद्धकालकी राज-धानी बनाये रहा। यहीं पुर्तगीजों और अंग्रेजोंने औरंगजेबसे क्षमा माँगकर अपना पीछा छुड़ाया था।

जिञ्जीपर आक्रमण करनेमें बहुत समय लग गया। ऊपरसे सन्ताजी बीस सहस्र सेना लेकर आ पहुँचा। उसने आते ही कावीपाक क्षेत्रमें अलीमर्दान सेनापतिको पराजित कर कैद कर लिया और मुगलोंके भोजन आदिके प्रबन्धका सम्बन्ध तोड़कर मुगल-सेनाको घेर लिया। इधर बादशाहकी बीमारीका समाचार प्रसिद्ध करके उसने युवराज काम-बख्शको भी अपनी ओर कर लिया। अन्तको मुगलोंकी ओरसे सन्धिके लिए प्रार्थना हुई। उसे स्वीकार कर मराठोंने सेनाको वापस जाने दिया। औरंगजेबने फिर जुल्फिकारखाँको सेना देकर जिञ्जीपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। इधर मुगल-सेना सन्ताजीके विरुद्ध चल पड़ी। सन्ताजी पर्वतोंकी ओर भाग गया। जब मुगल-सेना विश्राम करने लगी तो उसने पुनः आकर सेनाको काट डाला। यह आक्रमण बहुत दिन तक रहा। आखिर संवत् १७५५ (सन् १६९८ ई०) में जुल्फि-कारखाँको मालूम हुआ कि बादशाह मेरा अपमान करनेको उद्यत है। उसने राजारामसे सलाह की। राजाराम अपने साथियों सहित निकल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर बेलोर जा पहुँचा और ज़ुल्फिकारखाँ जिञ्जीमें प्रविष्ट हो गया। प्रह्लाद इससे थोड़े दिन पहिले मर गया था। अब सन्ताजी और धनाजी-की परस्पर लड़ाई हो गयी। प्रह्लाद सदैव पारस्परिक द्वेषको दबाये रखता था। अब उसके स्थानपर कोई बुद्धिमान् पुरुष न था। आधी मराठा-सेना सन्ताजीके साथ करनाटक चली गयी और आधी सतारामें राजारामके पास रही। अब सतारा राजधानी हो गया। सन्ताजीको नदीके तटपर एकाकी पाकर उसके किसी शत्रुने उसका वध कर दिया। वह उसका सिर औरंगजेबके कैम्पमें ले गया जिसपर उसे बड़ा पारितोषिक मिला।

राजाराम अपनी सारी सेना लेकर महाराष्ट्र, नन्देर, खानदेश और बरारमें चौथ तथा सरदेशमुखी प्राप्त करने चला और दौरा समाप्त करके खण्डेरावको बलगानामें, नीमाजी सिन्धियाको खानदेशमें, पुरसाजी भोसलेको बरारमें और हैबतरावको गंगाथरीमें कर वसूल करनेके लिए नियत किया। लौटते समय ज़ुलनामें मुगलसेनाने उसपर आक्रमण किया। औरंगजेबने ज़ुल्फिकारखाँको रणभूमिमें छोड़कर स्वयं मराठा दुर्गोंको विजित करना प्रारम्भ किया। सताराको घेरकर कतिपय मासोंमें उसपर अधिकार कर लिया। संवत् १७५७ (सन् १७०० ई०) में राजाराम महीनेभर व्याधिग्रस्त रहकर, सतारापर अधिकार होनेके एक मास पूर्व ही, इस लोकसे प्रस्थान कर गया।

उसके दो पुत्र थे। बड़ा शिवाजी दस वर्षका ताराबाईसे था। ताराबाईने राज्यकी बागडोर अपने हाथमें ले ली और परशुरामको प्रतिनिधि नियत किया।

औरंगजेबकी विवशता

मुगल-सेनाके साथ मराठा-सेनाका युद्ध बहुत ही विचित्र है। मराठोंके पास कम्बल और जीनके सिवा कुछ सामान न होता था। रातको जब सोते थे, घोड़ेकी बागडोर हाथमें रखते थे। लगातार चार वर्षतक औरंगजेब मराठा कोटोंपर अधिकार करनेमें लगा रहा। दुर्ग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तो उसके अधिकारमें आ गये, किन्तु मराठोंने मैदानोंमें सर्वत्र अपनी चौथकी वसूली प्रारम्भ कर दी, यहाँतक कि संवत् १७६२ (सन् १७०५ ई०) में नर्मदाको लाँघकर मालवामें जा पहुचे। गुजरातमें सेनापतियोंको पराजित किया, बरार और खानदेशको अधीन किया। जुल्फिकारखाँ और गाजीउद्दीन उनके पीछे गये, किन्तु ये सब युद्ध कृत्रिम थे। औरंगजेबने दुःखित होकर सन्धिके लिए प्रार्थनापत्र भेजे। वह यहाँतक विवश हो गया कि दक्षिणके प्रबन्धके लिए मराठोंको दसवाँ भाग चौथके रूपमें तथा सरदेशमुखी देनेपर राजी हो गया। मराठोंके अधिकार दिन-प्रतिदिन बढ़ते गये। औरंगजेबकी सेना करनाटककी ओर चली तो रामचन्द्र पन्तने पनाला और पवनगढ़ ले लिये और परशुरामने बसन्तगढ़ और सतारा। सताराका दुर्ग एक ब्राह्मण अन्नाजी पन्तकी निपुणतासे लिया। वह किसी प्रकार मुगलोंकी सेनामें चला गया, उन्हें गाना तथा कथाएँ सुनाकर बड़ा प्रसन्न करता रहा। उसने दुर्गमें रहकर अपना विश्वास तथा मान बढ़ा लिया। एक समय उन्हें गाफिल पाकर कुछ मावली सैनिक अन्दर ले गया और सब मुगलोंका वध करके दुर्गपर अधिकार कर लिया।

औरंगजेबने जुल्फिकारखाँको पुनः सिंहगढ़की ओर भेजा। इधर मराठोंने अहमदनगरके पास मुगल-सेनापर आक्रमण किया और ऐसी पराजय दी कि बादशाह बड़ी कठिनतासे प्राण बचाकर भागा। मराठा सेना अधिक पीछा न कर सकी। इस भाँति अन्तिम बार परास्त होकर औरंगजेब अहमदनगर पहुँचा और वहीं उसने प्राण-त्याग किया। जुल्फिकारखाँ तत्काल महाराष्ट्र छोड़कर अहमदनगर आ पहुँचा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा प्रकरण

शाहू

औरंगजेबके मरते ही बहादुरशाहने शाहूको छोड़ दिया। शाहूने महाराष्ट्रकी ओर प्रस्थान किया। सेना उसके इर्द-गिर्द एकत्र होने लगी। ताराबाईने धनाजी जादव और प्रतिनिधिको अपनी ओर करके उसके विरुद्ध युद्धके लिए भेजा। थोड़े ही युद्धके उपरान्त शाहूको सबने राजा स्वीकार कर लिया और वह सतारामें सिंहासनपर बैठाया गया। उसने अपने मन्त्री नियत किये। कोल्हापुरसे लौटते समय धनाजी मर गया। ताराबाई युद्ध करती रही, परन्तु संवत् १७६९ (सन् १७१२ ई०) में उसका पुत्र मर गया। रामचन्द्रने कोल्हापुरमें राजारामके दूसरे पुत्र सम्भाजीको गद्दीपर बैठा दिया, पर विवाद चलता ही रहा। शाहू राजाने अपने सद्भाव तथा सदाचारसे दूसरे मन्त्रियोंको अपनी ओर कर लिया। धनाजी जादवके पदपर उसका पुत्र चन्द्रसेन जादव सेनापति हुआ। जब वह सेना लेकर चौथ तथा सरदेशमुखी प्राप्त करनेके लिए मुगल जिलोंमें गया उस समय राजाकी ओरसे बालाजी विश्वनाथ नामक ब्राह्मण, जो धनाजीका सहायक था और युद्धमें ताराबाईके साथ आया था, उसके साथ था। सेनापति उससे द्वेष करने लगा जिसपर बालाजी विश्वनाथको प्राणोंकी रक्षाके लिए वहाँसे भागना पड़ा। जादवके सैनिकोंने उसका पीछा किया। दो मराठा सरदारोंने कुछ और पुरुषोंको एकत्र करके उसके और उसके दो पुत्रोंके प्राणोंकी रक्षा की और उन्हें पाण्डुगढ़ दुर्गमें पहुँचा दिया। सेनापतिने शाहूसे बालाजीको राजविद्रोही कहकर वापिस माँगा। शाहूने हैबतराव-को अहमदनगरसे सतारा बुला भेजा। जादवने उससे युद्ध किया,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किन्तु पराजित होकर कोल्हापुरकी ओर चला गया। वहाँसे दक्षिणके नये सूबेदार निजामुल्मुल्कके पास गया। उसने राजा शाहूके विरुद्ध अपनी सेना उसके साथ कर दी। शाहूने बालाजी विश्वनाथको सेनाका नायक बनाकर हैबतरावकी सहायताके लिए भेजा। एक-दो हलकी लड़ाइयोंके पश्चात् परस्पर सन्धि हो गयी। जब वर्षाकाल आरम्भ हुआ तो निजामकी सेना औरंगाबाद लौट गयी। मराठोंने पुनः अपनी लूट-मार आरम्भ कर दी। उनमें कई मराठा सरदार कोल्हापुरके थे और कई किसी पक्षसे सम्बन्ध न रखते थे। कोल्हापुर-पक्षके एक व्यक्ति धुमाजीने पूनाके समीप हंवीमें एक गढ़ी तैयार कर ली और चौथ लेने लगा। शाहूकी ओरसे बालाजी विश्वनाथ उससे युद्ध करने गया, परन्तु मिलनेके बहानेसे अपने पुत्रों सहित कैद कर लिया गया। शाहूको उन्हें छुड़ानेके लिए बहुत मूल्य देना पड़ा।

सैयदोंसे मराठोंकी सन्धि

उधर सैयदोंके सेनापति अंग्रियाने कई दुर्गोंपर अधिकार कर लिया। जब वह शाहूकी सेनाको पराजित करके सताराकी ओर आ रहा था उस समय शाहूने बालाजीको उससे किसी प्रकार मित्रता करनेके लिए भेजा। बालाजी अंग्रियाको पहिलेसे जानता था। उसने उसके साथ बड़ी लाभदायक सन्धि की। यह सन्धि शाहूके लिए इतनी लाभदायक थी कि सैयद उससे अप्रसन्न हो गया। अंग्रियाने बालाजीकी सहायतासे सैयदपर आक्रमण कर दिया। अन्तको उसे वह सन्धि स्वीकार करनी पड़ी।

बालाजी विश्वनाथ प्रथम पेशवा

इस वृहत् कार्यके अनन्तर शाहू इतना प्रसन्न हुआ कि उसने संवत् १७७० (सन् १७१३ ई०) में बालाजी विश्वनाथको मुख्य प्रधान अर्थात् पेशवा बना दिया। अब बालाजीने धुमाजीको दबानेका निश्चय किया, परन्तु पन्त सचिव उसके पास कैद थे। उसकी माताने पहले पन्तसचिवको मुक्त करानेके लिए बालाजीसे प्रार्थना की। बालाजीने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐसा ही किया। इसपर उसकी माता इतनी प्रसन्न हुई कि उसने पूना जिलेके अधिकार बालाजी विश्वनाथको दे दिये और पुरन्दर कोट भी उन्हें वासके लिए दिया। शाहू राजाने भी पूना बालाजीको जागीरके तौरपर दिया। तदनन्तर बालाजीने गढ़ी गिराकर धुमाजीको कैद कर दिया।

उस समय वस्तुतः मराठा-राज्यका प्रबन्ध बालाजीके हाथमें आ गया। उसने बड़ी बुद्धिमत्तासे शिवाजीकी वास्तविक विधिपर मराठा-राज्यको दृढ़ करना प्रारम्भ किया। उसने महाराष्ट्रमें नवजीवन फूँक दिया। उधर मुगल-दरबार झगड़ोंसे बलहीन हो रहा था। फरुखसैरके समयमें दोनों सैयद भाई बड़े बलवान् थे। फरुखसैरने हुसेनअलीको दक्षिणका सूबेदार बनाकर दिल्लीसे निकालना चाहा और दाऊदखाँ गुजरातके सूबेदारको लिख भेजा कि उसका विरोध करे। दोनोंमें संग्राम हुआ जिसमें दाऊदखाँ मारा गया।

शंकरजी मल्हार

हुसेनअलीका मन्त्री एक मराठा ब्राह्मण शंकरजी मल्हार था। यह व्यक्ति राजारामके समय सचिव था, परन्तु सांसारिक झंझट छोड़कर काशी चला गया था। वहाँसे दुःखित होकर लौट आया और हुसेनअलीके यहाँ नौकर हो गया। उसने किसी प्रकार हुसेनअलीको मराठा-राज्यसे मित्रता करनेके लिए राजी किया और स्वयं दूत बनकर सतारा पहुँचा। इस मित्रताके सन्धिपत्रसे मराठा राज्यको दक्षिणके कुछ प्रान्तों (बीजापुर, हैदराबादको मिला करके), मैसूर, त्रिचनापली और तन्जोरकी रियासतोंपर चौथ तथा सरदेशमुखीका अधिकार दिया गया। इसके बदलेमें मराठा-राज्यने उन प्रान्तोंकी लूट-मारसे सब प्रकारसे रक्षा करने और दिल्ली बादशाहकी सेवा करनेके लिए पन्द्रह सहस्र सेना तैयार रखनेकी प्रतिज्ञा की।

फरुखसैरने इस सन्धिपत्रको स्वीकार नहीं किया। इसपर हुसेनअलीने सेना लेकर दिल्लीपर आक्रमण किया। वह बालाजी विश्वनाथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
और खण्डेरावको मराठा-सेना सहित अपनी सहायताके लिए लाया। दिल्ली पहुँचकर फरुखसैरको कैद करके उसने उसका वध कर दिया।

बालाजी विश्वनाथ अपनी सेनाके साथ दिल्लीमें रहा। सैयद भाइयों-ने दो युवराजोंको सिंहासनपर बिठाकर हटा दिया और फिर मुहम्मद-शाहको राजगद्दीपर बैठाया। आखिर सैयदोंने वह सन्धिपत्र स्वीकार करा लिया। शाहूकी माता तथा सारे परिवारको छोड़ दिया और उनका वेतन और समस्त व्यय पूरा-पूरा दे दिया। इस प्रकार संवत् १७७७ (सन् १७२० ई०) में बालाजी विश्वनाथ मुगल-दरबारसे महाराष्ट्रान्त-र्गत स्वराज्य तथा शेष समस्त दक्षिणकी चौथ वा सरदेशमुखीका अधि-कार स्वीकार करवाकर बड़े सफलतापूर्वक सतारा लौट आया। मराठों-का कथन है कि उस समय उन्होंने बरारको विजित कर लिया और मालवा तथा गुजरातमें भी चौथका अधिकार प्राप्त कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवाँ प्रकरण

द्वितीय पेशवा बाजीराव

दिल्लीसे वापस आनेपर बालाजी विश्वनाथ थोड़े दिन जीवित रहकर मर गया। उसके पदपर उसका बड़ा पुत्र बाजीराव पेशवा नियत किया गया।

बालापुरका संग्राम

दिल्लीमें झगड़े बढ़ते गये। सैयद भाइयोंके विरुद्ध एक दल उत्पन्न हुआ। निजामुल्मुल्कने मालवाके शासनसे दक्षिणपर अधिकार प्राप्त करना चाहा। हुसेनअली अपने भतीजे आलम अलीखाँको शंकरजी मल्हारके सुपुर्द कर गया था। आलम अलीखाँ और मराठोंने निजामुल्-मुल्कसे युद्ध किया। बालापुरमें घोर संग्राम हुआ जिसमें मराठे बड़ी वीरतासे लड़े और शंकरजी कैद किया गया। निजामुल्मुल्कने दक्षिणपर अधिकार कर लिया। इस संग्राममें धुमाजी गायकवाड़ और उसके पुत्रोंने बड़ी वीरता दिखलायी। (बड़ोदाके वर्तमान गायकवाड़ धुमाजीके ही वंशज हैं।) दिल्लीसे हुसेनअली बड़ी सेना लेकर निजा-मुल्मुल्ककी ओर आया, परन्तु तीन तुरानी मुगलोंने हुसेनअलीको मारनेका षड्यन्त्र किया। एकने हुसेनअलीका वध कर दिया और स्वयं भी मारा गया। शेष दोने बादशाहको सैयदोंसे विमुक्त प्रसिद्ध किया और वे दिल्लीकी ओर चल पड़े। उधरसे अब्दुल्ला अपने भाईका बदला लेनेके लिए निकला। युद्धमें अब्दुल्ला पकड़ा गया। बादशाहकी मुक्तिपर दिल्लीमें कई दिनोंतक आनन्द तथा उत्सव मनाया गया। उन दो तुरानियोंमेंसे एक सआदतखाँ था। वह अवधका सूबेदार बनाया गया और उसकी सन्तान बहुत दिनोंतक वहाँ शासन करती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
रही। निज़ामुल्मुल्क दक्षिणका वाइसराय और मन्त्री बनाया गया। वह दिल्लीमें कुछ कालतक रहा। परन्तु उसका स्वभाव बड़ा कठोर था, इससे उसके बहुत शत्रु हो गये और वह संवत् १७८० (सन् १७२३ ई०) में दक्षिणके शासनके निमित्त लौट आया। मराठोंके साथ उसका सम्बन्ध दृढ़ हो गया। वह आमरण दक्षिणमें शासन करता रहा। यहाँ उसका सबसे बड़ा सहायक बाजीराव पेशवा था।

सिन्धिया और होलकर

बाजीरावने पेशवा होते ही मराठा राज्य बढ़ानेका यत्न किया। उसने तत्काल मालवाकी ओर अपना ध्यान फेरा। जब दिल्लीमें झगड़े हो रहे थे, उसने कई बार सेना भेजी। अन्तमें संवत् १७८१ (सन् १७२४ ई०) में वह स्वयं नर्मदा नदीको पार कर मालवामें प्रविष्ट हुआ और बुरहानपुरके सूबेदारको पराजित किया। इस संग्राममें दो अफसरोंने बड़ी वीरता दिखलायी। एक मल्हारजी होलकर जो मराठा-सरदार था और होमल ग्रामका निवासी था, दूसरा राणोजी सिन्धिया था। सिन्धिया ब्राह्मणी-वंशके समयसे प्रसिद्ध सरदार चले आते हैं और अपने आपको राजपूत कहते हैं। औरंगजेबने शाहूका विवाह एक सिन्धिया सरदारकी कन्यासे कराया था। किन्तु यह स्त्री शीघ्र ही मर गयी। राणोजी सतारासे १५ मीलकी दूरीपर एक ग्रामका रहनेवाला था और निर्धन होनेके कारण साधारण भार-वाहकके तौरपर भरती हुआ था। वह पहिले बालाजी और फिर बाजीरावके साथ भी रहा। बाजीरावने उसकी योग्यता देखकर उसे एक पद दे दिया। इनके अतिरिक्त विश्वासराव नामक एक और वीर व्यक्ति था जिसने मालवामें लूट-मार करके धारपर अधिकार कर लिया, किन्तु गिरिधर वीरके आनेपर उसे दुर्गसे निकलना पड़ा। शूर-वीर राजा गिरिधरने, जो बादशाहकी ओरसे मालवाका सूबेदार था, दस वर्षतक मालवापर मराठोंका अधिकार न होने दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पेशवा तथा प्रतिनिधिमें विरोध

मराठा नेताओंमें बाजीराव मानसिक योग्यता तथा वीरतामें सबसे बढ़कर था। उसके सम्मुख पहिली कठिनाई यह आयी कि श्रीपतराव प्रतिनिधि उससे द्वेष करता था और राज्य बढ़ानेके उपायोंका घोर विरोध करता था। उसकी यह सम्मति थी कि पहिले करनाटक अधीन किया जाय। निजामुल्मुल्क उनमें परस्पर वैर उत्पन्न करनेका यत्न करता रहता था, किन्तु बाजीराव बड़ा दूरदर्शी था। उसने देख लिया कि मराठोंको विजयके लिए बाहर ले जानेसे महाराष्ट्रमें शान्ति रहेगी और वे एक व्यक्तिके प्रभावमें आकर मराठा-राज्य बढ़ानेमें विशेष सहायक होंगे। यह बात हृदयमें गुप्त रख उसने राजाके सामने उसके पूर्वजोंके उदाहरण उपस्थित किये और बताया कि इस समय मुगलोंकी अत्यन्त निर्बल अवस्था है। आलस्य तथा झगड़ोंसे उनका राज्य अधोगतिको प्राप्त हो रहा है। मराठोंके अन्दर पर्याप्त बल तथा उत्साह विद्यमान है। इस प्रकार राजाके सामने उसने प्रभावशाली व्याख्यान देते हुए उसे इस प्रकार समाप्त किया—"अब हमारे लिए यह शुभ अवसर है कि हम इन विदेशियोंको अपने देशसे निकालकर मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करें। आपके उत्साह तथा सौभाग्यसे मराठोंका झण्डा कृष्णासे अटकतक फहरायगा।" शाहूपर इस व्याख्यानका बड़ा प्रभाव पड़ा और वह बोल उठा—"निःसन्देह तुम इसे हिमालयपर जा गाड़ोगे। तुम योग्य पिताके योग्य पुत्र हो।" बाजीरावने मुगल-साम्राज्यकी ओर निर्देश करके कहा—"हमें इस समय सूखे वृक्षके तनेको काटना चाहिये, शाखाएँ स्वयं गिर जायँगी।"

गुजरातका संग्राम

जब निजामुल्मुल्क दिल्लीसे दक्षिण चला तो बादशाह बड़ा नाराज हुआ। उसने हैदराबादके सूबेदार मुबारजखाँको दक्षिणसे निकाल देनेकी आज्ञा दी। लड़ाईमें मुबारजखाँ मारा गया। निजामुल्मुल्कने उसका सिर काटकर दिल्ली भेज दिया और साथमें मुबारकबादीका एक पत्र

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी भेजा। निजामुल्मुल्कने हैदराबादपर भी अधिकार कर लिया। बादशाहने निजामुल्मुल्कसे मालवा और गुजरातका शासन छीनकर एक स्थानपर राजा गिरिधरराय और दूसरे स्थानपर सरबलन्दखाँको सूबेदार नियत कर दिया। निजामुल्मुल्कके नायब हमीदखाँने बिना युद्धके गुजरात सुपुर्द कर देना अनुचित समझा, इसलिए उसने राजा शाहूके एक अफसर कुन्ताजीको सहायताके लिए बुला भेजा। कुन्ताजी चौथकी प्रतिज्ञा कराकर तत्काल पहुँच गया। उसकी सहायतासे हमीदखाँने सरबलन्दके नायब शुजाइतखाँको पराजित किया, परन्तु शुजाइतखाँका भाई रुस्तमअली पेलाजी गायकवाड़की सहायता लेकर आ रहा था। पेलाजी चौथका वचन लेकर हमीदखाँसे मिल गया और संग्राममें रुस्तम अलीकी पराजय हुई। उसने अपने हाथों खञ्जरसे अपनी हत्या कर डाली।

मालवाकी चौथ और निजामपर आक्रमण

अब पेलाजी और कुन्ताजीके बीच चौथके विषयमें युद्ध हुआ, किन्तु वर्षाकाल आनेपर वे पृथक् हो गये। तत्पश्चात् सरबलन्दखाँ स्वयं सेना लेकर गुजरातकी ओर बढ़ा। हमीदखाँने मराठोंकी सहायतासे एक बार उसे पराजित किया, परन्तु फिर युद्ध करनेका साहस न कर मराठोंके साथ मिल गया। जब कुन्ताजी और पेलाजी गुजरातमें चौथ प्राप्त कर रहे थे, बाजीराव सेना लेकर मालवामें राजा गिरिधरके विरोध करनेपर भी चौथ प्राप्त करनेमें सफल हो गया और उसने पवार, होलकर और सिन्धियाको चौथ तथा सरदेशमुखी प्राप्त करनेके पत्र दे दिये, जिसमेंसे आधा भाग उनको अपनी सेनाका वेतन देनेके लिए दिया जाता था। संवत् १७८३ (सन् १७२६ ई०) में बाजीराव फतहसिंह भोसलेको साथ लेकर करनाटक गया और उसने वहाँसे चौथ ली। इससे निजामुल्मुल्कको दिल्लीके राज्यके सम्बन्धमें मराठोंसे बड़ा भय उत्पन्न हुआ। उसने मराठा-दरबारमें विभेदकी नीतिसे काम लेना चाहा और प्रतिनिधि भेजकर शाहूसे हैदराबादपरसे चौथ आदि हटवा ली। इसके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपकारमें प्रतिनिधिको बरारमें एक जागीर दे दी। जब बाजीराव करनाटकसे लौटा तो उसे यह अच्छा न लगा। उसके और प्रतिनिधिके बीच बड़ा झगड़ा उत्पन्न हो गया। निजामुल्मल्कने कोल्हापुरके राजा सम्भाजीको उत्तेजित कर शाहूके राज्यको निर्बल करना चाहा। राजा शाहू उससे सर्वथा घृणा करने लग गया और प्रतिनिधिको छोड़कर पूर्णतया बाजीरावको ही अपना सबसे बड़ा सहायक समझने लगा। उसने बाजीरावको निजामपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दे दी। बाजीराव बुरहानपुर लेनेके लिए बढ़ा। जब निजामुल्मुल्क सेना लेकर उधर आया तो बाजीरावने पहिलेसे ही गुजरातमें पहुँचकर सरबलन्दखाँसे चौथ माँगी। निजाम अपना भ्रम जानकर पूनाकी ओर चला। बाजीरावने उसे एक स्थानमें घेरकर सारी घास इत्यादिमें अग्नि लगा दी और सामान, रसद इत्यादि रोक दी। निजामको यहाँसे निकलनेमें बड़ा कष्ट हुआ और उसे कोल्हापुरकी ओरसे कोई सहायता न मिली, इसलिए विवश होकर उसे पेशवासे सन्धि करनी पड़ी। निजामने चौथका शेष और कई दुर्ग देनेकी प्रतिज्ञा की, परन्तु सम्भाजीको शाहूको देना अस्वीकार कर दिया। इसके पश्चात् बाजीराव और निजाम प्रथम बार मिले। बाजीरावका भ्राता चिमणाजी गुजरातमें विद्यमान था।

सरबलन्दखाँने गुजरातको मराठोंकी लूट-मारसे बचानेका बड़ा यत्न किया, किन्तु वह कृतकार्य न हो सका। इसलिए उसने चौथ और सरदेशमुखी देना स्वीकार कर लिया ताकि देशमें शान्ति रहे।

सम्भाजीने लौटकर कुछ लूट-मार आरम्भ की। इसपर प्रतिनिधिने राजाको प्रसन्न करनेके लिए उसे पराजय दी और उसकी माता ताराबाई आदिको कैद कर लिया। इसके उपरान्त दोनों पक्षोंमें सन्धि हो गयी।

बाजीराव और निजाम

निजामको अब भी सन्तोष न हुआ। उसने सेनापति त्र्यम्बक दबारेको बाजीरावके विरुद्ध कर लिया। सेनापति गुजरातमें सेना एकत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करने लगा। बाजीराव भी युद्ध करनेको उद्यत हो गया। यद्यपि उसकी सेना थोड़ी थी, किन्तु उसने निजामकी सेनाको सेनापतिसे मिलनेका अवसर न देकर पहिले ही आक्रमण कर दिया। बड़ोदाके पास इस युद्धमें सेनापति मारा गया और बाजीरावको पूर्ण विजय प्राप्त हुई। बाजीराव अब निजामसे बदला लेनेके लिए तैयार हुआ, परन्तु निजामने चतुरतासे उसका मुख मुगल-राज्यकी ओर फेर दिया और उसके साथ सन्धि करके दिल्ली-दरबारके विरुद्ध सहायता देनेको उद्यत हो गया।

मालवामें संग्राम करनेके बाद राजा गिरिधर मारा गया और चिमणाजीने देशपर अधिकार कर लिया। अब बाजीरावने स्वयं सेना लेकर मालवामें प्रवेश किया और चिमणाजीको सतारा-दरबारमें रहनेके लिए भेज दिया।

गायकवाड़

गुजरातमें सरबलन्दखाँके स्थानमें जोधपुरके राजाका शासन स्थापित हुआ। पेलाजी गायकवाड़ बराबर युद्ध करता रहा, अन्तमें राजाने मिल-कर विचार करनेके बहाने उसे बुला भेजा और उसका वध करवा दिया। पेलाजी बड़ा लोकप्रिय था। उसके वधपर भील और कोल लोग सबके सब उठ खड़े हुए। इतनेमें उसका भाई महादजी गायकवाड़ आ पहुँचा और उसने उन लोगोंकी सहायतासे बड़ोदापर अधिकार कर लिया। संवत् १७९० (सन् १७३३ ई०) से गायकवाड़का शासन गुजरातमें स्थापित हो गया। पेलाजीके बड़े पुत्र दोमाजीने जोधपुरपर आक्रमण कर दिया और अभयसिंहको गुजरात छोड़कर अपने देशकी रक्षाके लिए जाना पड़ा।

राजा छत्रसाल

मालवामें मुहम्मदखाँ शासक नियुक्त होकर आया था। उसने आते ही बुन्देलखण्डमें प्रवेश किया। राजा छत्रसालने बाजीरावसे सहा-यता माँगी। बाजीरावने मुहम्मदखाँको एक कोटमें घेर लिया जहाँसे उसने बड़ी कठिनतासे प्राणोंकी रक्षा की। छत्रसाल इतना प्रसन्न हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि उसने झाँसीका दुर्ग तथा प्रान्त पेशवाको दे दिया। मुहम्मदखाँकी जगह राजा जयसिंहके कहनेपर बादशाहने मालवाकी चौथ एवं सरदेशमुखी बाजीरावको दे दी।

राघोजी भोंसले

संवत् १७९२ (सन् १७३५ ई०) में बाजीराव होलकर और सिन्धियाको मालवामें छोड़कर सतारा लौटा। सताराका राज्य पीछे कोंकणमें अंग्रिया और सैयदोंके साथ झगड़ोंमें लगा रहा और बाजीरावकी अनुपस्थितिमें ही राघोजी भोंसलेने कुछ शर्त्तें स्वीकार करके बरारका राज्य राजा शाहूसे प्राप्त कर लिया। राजा शाहू राघोजीसे अत्यन्त प्रसन्न था। उसने उसका विवाह अपनी एक सालीसे कराया था।

मल्हारराव होलकर मराठा सेनाओंको आगरातक ले गया। वजीरखाँ उनको रोकनेकी बड़ी तैयारी कर रहा था, किन्तु सफल न हुआ। अन्तमें उसका भाई मुजफ्फर खाँ लड़नेके लिए गया। थोड़ी दूर जाकर वह दिल्ली लौट आया। होलकर पेशवाके लिए बराबर रुपया प्राप्त करता रहा। बाजीरावने सेनाके लिए बहुत ऋण ले लिया था। उसे अब रुपयेकी बहुत आवश्यकता थी। बाजीरावने राजा जयसिंह द्वारा मालवा और गुजरातकी चौथ एवं सरदेशमुखी स्वीकार करानी चाही, परन्तु सन्धिपत्रमें मराठोंकी माँग इतनी बढ़ गयी कि बादशाह उनसे दुःखित हो गया। वजीरखाँ दोरानने राजपूत रियासतोंसे कर वसूल करनेका अधिकार मराठोंको दे दिया ताकि उनमें परस्पर शत्रुता उत्पन्न हो जाय और शेष अधिकारोंमेंसे केवल दक्षिणपर सरदेशमुखीका अधिकार स्वीकार किया। ऐसा करनेका अभिप्राय निजामुल्मुल्कको भयभीत करना था। जब बाजीरावको निराशा हो गयी तो वह सेना लेकर मथुरातक बढ़ आया। इधर जब खाँ दोरान शाही सेना लेकर निकला तो बाजीराव आगरासे चालीस मीलपर यमुनाके तटपर जम गया।

होलकर और जादवने दोआबको लूटना आरम्भ किया। इसपर सआदतखाँने मराठोंको यमुनाके पार भगा दिया और अपनी विजयका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बड़ा लम्बा-चौड़ा पत्र बादशाहको भेजा। जब बाजीरावने यह समाचार अपने वकीलसे सुना तो कहा—"मैं बादशाहपर यह सत्य प्रकट कर दूँगा कि अपनी मराठा-सेनाके साथ मैं दिल्लीपर आग बरसानेके लिए विद्यमान हूँ।"

जब सआदतखाँ दौरानसे आ मिला तो बाजीराव सेना लिये दिल्लीके समीप आ पहुँचा और कुछ हाथी और ऊँट नगरसे बाहर जाते पकड़ लिये।

नगरसे मुजफ्फर खाँ और राजा शिवशिंह सेना लेकर बाहर निकले। होलकर और सिन्धिया उनपर टूट पड़े और उनकी सेनाको काट डाला। जब खाँ दौरानकी सेना आयी तो बाजीराव ग्वालियरकी ओर हट आया।

खाँ दौरान आरम्भसे ही निजामुल्मुल्कको सहायताके लिए बुला रहा था, किन्तु बाजीरावको दक्षिण आना आवश्यक था, इसलिए वह खाँ दौरानसे मालवाका राज्य तथा तेरह लाख रुपयेकी प्रतिज्ञा लेकर सतारा लौट आया।

निजामकी पराजय

निजाम अपना अवसर देख रहा था। बादशाहने उसे मालवा और गुजरात इसलिए देना स्वीकार किया कि वह मराठोंको उन प्रान्तोंसे निकाल दे। निजाम सेना एकत्र करके नर्मदा पार हुआ। बाजीराव भी जितनी सेना एकत्र कर सकता था लेकर युद्ध करनेके लिए पहुँचा। दोनों सेनाएँ भोपालके समीप एकत्र हुईं। निजामने दुर्गके निकट मोर्चा जमाया। एक ओर सरोवर था, दूसरी ओर नदी। मराठा सेनाने उसे चारों ओरसे घेर लिया और रसद व सामानका पहुँचना बन्द कर दिया। बाजीरावने बड़े गर्वसे अपने भाईको लिखा—"वृद्ध तथा अनुभवी निजाम ऐसा फँस गया है कि वह अब दिल्लीमें सर्वथा नष्ट हो जायगा।" दिल्ली और दक्षिण दोनों ओरसे निजामको सहायता आ रही थी। बाजीरावने बरारके भोंसले और राजा शाहूको लिखा कि किसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकारसे दक्षिणकी सहायताको रोक दे। उसने अपने भाईको लिखा कि ताप्तीपर सभी मराठोंको एकत्र करो, हम इस बड़े यत्नसे दक्षिणके स्वामी बन जायँगे।

निजामने सब सामान भोपालमें छोड़कर चले जाना चाहा। मराठा सेना सिरपर थी। एक दिनमें तीन मीलसे अधिक चल न सकता था। आखिर निजामने दराई सराय-स्थानमें संधिपत्र अपने हाथसे लिखा जिसके द्वारा मालवा, नर्मदा और चम्बलके मध्यके समस्त प्रान्तके शासन और व्ययके लिए पचास लाख रुपया बाजीरावको दिलानेकी प्रतिज्ञा की।

नादिरशाहका आक्रमण

इधर मराठा सेना पुर्तगीजोंके विरुद्ध निरन्तर युद्ध कर रही थी जिसका परिणाम यह हुआ कि चिमणाजीने सालसिट और बसीन पुर्तगीजोंके अधिकारसे ले लिये। उधर राघोजी भोंसलेने कटक जीत लिया और अपनी सेना प्रयागतक लूटनेके लिए भेजी। बाजीराव इन कार्योंसे अत्यन्त असन्तुष्ट हुआ और राघोजीको दण्ड देनेके लिए बरारकी ओर चला कि इतनेमें नादिरशाहके आक्रमणका समाचार पहुँचा। नसीराबादमें बाजीरावने सुना कि खाँ दोरान मर गया है, बादशाह और सआदत खाँ बन्दीगृहमें हैं, दिल्लीमें हत्याकाण्ड तथा लूट-मार मच रही है। उस समय पेशवाने लिखा था—"हमारा और राघोजीका घरका विवाद व्यर्थ है। पुर्तगीजोंके साथ भी कोई संग्राम नहीं। इस समय आर्यावर्तमें केवल एक शत्रु है, आर्यों और मुसलमानोंको मिल जाना चाहिये। मैं अपने मराठोंको नर्मदासे चम्बलतक फैला दूँगा।" होलकर और सिन्धिया बसीनकी विजयके उपरान्त बाजीरावसे जा मिले, परन्तु विदित हुआ कि नादिरशाह मुहम्मदशाहको सिंहासनपर बैठाकर लौट गया। निजामने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण न की। बाजीराव चाहता था कि सेना लेकर निजामपर आक्रमण करे किन्तु अब उसकी कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गयी थीं। उसके विरुद्ध एक द्वेषी दल विद्यमान था और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोषमें रुपया भी न था। निजामकी अनुपस्थितिसे लाभ उठाकर उसने दक्षिणकी ओर सेना भेजी। निजामका पुत्र नासिरजंग युद्धके लिए तैयार था इसलिए विशेष लाभ नहीं हुआ। इतनेमें बाजीराव बुन्देलखण्डके राजा जगतदेव और उसके भाई हरदेवसे मित्रताका संधिपत्र बना रहा था। बुन्देलखन्डके राजपूत बाजीरावके साथ भारतवर्षको विजित करनेपर सर्वप्रकार तैयार हो गये।

बाजीरावने भरतपुरकी जाट रियासतके साथ भी मित्रता कर ली। इसी प्रकारकी संधि बाजीरावने राघोजी भोंसलेके साथ करनाटक और वंगदेशपर विजय प्राप्त करनेके लिए की। वह बहुतेरी तैयारियाँ कर रहा था कि आखिर संवत् १७९७ (सन् १७४० ई०) में उसे मृत्युने आ दबाया।

बाजीरावके गुण

शिवाजीके उपरान्त बाजीरावको ही मराठा-साम्राज्यका प्रवर्तक समझना चाहिये। उसकी बड़ी इच्छा थी कि समस्त आर्योंको मिलाकर आर्यावर्तमें पुनः स्वराज्यका झण्डा खड़ा करूँ। वह सिविल पॉलिसीमें बड़ा दक्ष और रणभूमिमें बड़ा शूरवीर था। मराठा-साम्राज्यके विस्तारका चक्र बाजीरावने स्वयं अपने हाथसे खींचा। साधारण जीवनमें वह बड़ा सरल था। निजामने मिलनेके पूर्व एक चित्रकारको उसका चित्र खींचनेके लिए भेजा। बाजीराव सैनिकके वस्त्र धारण किये अश्वारूढ़ था। एड़ी और रस्सियाँ खुर्जीमें रखी थीं और हाथोंमें बाजरेका सिहा मल रहा था ताकि इसके दाने निकालकर खावे। संसारके इतिहासमें ऐसे व्यक्ति बहुत कम पाये जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठाँ प्रकरण

तृतीय पेशवा बालाजी बाजीराव

बाजीरावके दो पुत्र थे—एक बालाजी बाजीराव, जो पेशवा बनाया गया और दूसरा रघुनाथराव।

यद्यपि राघोजी भोंसलेने बालाजी बाजीरावका विरोध किया परन्तु वह करनाटकमें नवाबके विरुद्ध युद्धमें लगा हुआ था, जिसका एक परिणाम यह हुआ कि उसने त्रिचनापलीपर अधिकार कर लिया, और वहाँके शासक चन्दासाहबको कैद करके सतारा भेज दिया जहाँ वह सात वर्ष कैद रहा। पेशवा और उसके चाचा चिमणाजीने राजा जयसिंह और निजामद्वारा दिल्ली दरबारसे अपनी शर्त्तें स्वीकार करानेपर जोर दिया। बादशाहने १९ लाख रुपये उन्हें दिये। मालवाके राज्यका कुछ निर्णय नहीं हुआ था कि चिमणाजी मर गया। राजा शाहूने पुर्तगीजोंका प्रान्त, जिसे चिमणाजीने विजित किया था, पेशवाको जागीरमें दे दिया।

वंगदेशपर आक्रमण

जब राघोजी भोंसले करनाटकमें विजय प्राप्त कर रहा था, उसका बड़ा सेनापति भास्कर पन्त बिहार तथा वंगदेशमें वहाँके शासक अलीवर्दीखाँके साथ युद्ध करता था। अलीवर्दीखाँको उसने इतना दुःख दिया कि उसने पेशवाको सहायताके लिए लिखा। उधरसे बादशाहने पेशवाको वंगदेशकी चौथ और मालवाका राज्य इस शर्त्तपर देनेको लिखा कि आप वंगदेशको मराठोंके आक्रमणसे सुरक्षित रखें। इसपर पेशवा सेना लेकर संवत् १८०० (सन् १७४३ ई०) में वंगदेशपर चढ़ा। अलीवर्दीखाँने चौथ देनेकी प्रतिज्ञा कर ली। राघोजी भोंसले करनाटकसे पेशवाके साथ युद्ध करनेके लिए आया परन्तु पराजित होकर पीछे हट गया। तब पेशवा मालवामें राज्य सँभालनेके लिए चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राघोजी भोंसले पराजित होकर प्रत्यक्षमें मिथ्या प्रशंसामय पत्र लिखता रहा, किन्तु साथ ही सेना लेकर सताराको आ रहा था। अब उसने अनुभव किया कि बाजीरावकी नीति ठीक थी। उसका निश्चय था कि मराठा सरदारोंको पेशवाका विरोधी बनाकर परस्पर विवाद उत्पन्न कर दे। पेशवाने सतारा पहुँचनेपर वंगदेशकी चौथ राघोजीको देकर उससे संधि कर ली।

भोंसले द्वारा उड़ीसापर आक्रमण

दूसरे वर्ष भास्कर पन्त सेना लिये वंगदेशमें जा धमका। अली-वर्दीखाँने उसे मिलनेके लिए राजी कर लिया। उसने बीस अफसरों सहित उसे प्रीतिभोजके लिए बुलाया और कपटसे सबका वध कर डाला। अगले वर्ष राघोजीने उड़ीसापर आक्रमण करके उसका कुछ भाग अपने अधि-कारमें कर लिया।

संवत् १८०७ (सन् १७५० ई०) में दो बड़ी घटनाएँ हुईं। भारतवर्षपर अहमदशाह अबदालीने पहिला आक्रमण किया और दक्षिण-में निजामुल्मुल्ककी मृत्यु हुई।

शाहूकी मृत्यु

निजामकी मृत्युके उपरान्त उसके पुत्रोंमें झगड़ा होनेसे दो पक्ष बन गये। उन लोगोंने हरिवर्षीय व्यापारियोंको अपने झगड़ेमें मिला लिया। एक वर्ष पश्चात् राजा शाहू मर गया। उसने शिवाजी सानीके पुत्रको अपना दत्तकपुत्र बना लिया। पेशवाने राजारामको गद्दीपर बैठा दिया। पेशवा सब बातोंका निर्णय करनेके लिए पूना आ गया। उस समयसे मराठा राज्यकी राजधानी पूना समझनी चाहिये। आठ मन्त्री निश्चित किये गये। राघोजी भोंसलेको वरारकी सनद मिली। मालवा सिन्धिया और होलकरमें विभक्त किया गया। पवारको धारका प्रान्त दिया गया।

ताराबाईका तथा रोहेलोंका विद्रोह

हैदराबादके युद्धमें पेशवाने निजामके बड़े पुत्र गाजीउद्दीनका साथ दिया और सेना लेकर उसकी सहायतामें पहुँचा। उसकी अनुपस्थितिमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजारामकी वृद्धा माता ताराबाईने धुमाजी गायकवाड़के साथ विद्रोह किया, ताकि पेशवाके हाथसे शक्ति छीन लें। इसपर पेशवाको इसके निर्णयके लिए लौट आना पड़ा। उधर दक्षिण पहुँचनेपर सलाबतजंगकी सेनासे युद्ध हुआ। फ्रेंच अफसर बूसीने मराठा सैनिकोंपर, जब वे चन्द्र-ग्रहणके समय पूजामें लगे हुए थे, आक्रमण कर दिया, अतः उन्हें भागना पड़ा, परन्तु बहुत हानि न हुई। जब यह संग्राम हो रहा था तो राघो-जीने गवालगढ़, नरनाला आदि अनेक दुर्गोंपर अधिकार कर लिया और गोदावरी तथा वेनगंगाके बीचसे मुगलोंको निकालकर अपने थाने स्थापित कर दिये। इसी समय रोहेलोंने दिल्ली दरबारसे विद्रोह कर दिया। ये ग्वालोंकी जातिसे थे। अली मुहम्मद अहीरको एक अफगानने दत्तकपुत्र बनाकर रोहेला नाम दिया था। उसने मुरादाबादका शासन प्राप्त करके धीरे-धीरे एक स्वतन्त्र रियासत बना ली। उसके द्रोहपर वजीर सफदर-जंगने सिन्धिया तथा भरतपुरके राजा सूरजमलको पर्याप्त पारितोषिक देनेकी प्रतिज्ञा करके सहायताके लिए बुलाया। उनकी सहायतासे रोहेले दबा दिये गये। जब होलकर और सिन्धिया इधर कार्यव्यस्त थे, पेशवाने उन्हें सलाबतजंगके विरुद्ध बुला भेजा कि आप दिल्लीसे गाजीउद्दीनको लेकर दक्षिण आवें। गाजीउद्दीन अभीतक दिल्लीमें था। मराठोंने रोहेलोंसे ५० लाख रुपयोंका प्रतिज्ञापत्र लिखवाकर उनका देश खाली कर दिया। वजीर सफदरखाँको अहमदशाह अबदालीके आक्रमणके कारण पुनः दिल्ली जाना पड़ा। गाजीउद्दीन औरंगाबाद आ पहुँचा। पेशवाको गाजी-उद्दीनसे बड़े लाभकी आशा थी, किन्तु वह विष देकर मारा गया। सलाबतजंगने बरारके पश्चिमी जिलोंको मराठोंको अर्पित करके संधि कर ली। मराठा सेनाएँ अपने प्रान्तोंको लौट गयीं। दूसरे वर्ष संवत् १८११ (सन् १७५४ ई०) में बालाजी बाजीराव सेना लेकर करनाटक गया। समस्त ग्रामों तथा नगरोंसे अपना कर प्राप्त किया, और बहुतसा धन एकत्र करके लौट आया। फिर वह संवत् १८१२ (सन् १७५५ ई०) में गुजरात गया और अहमदाबाद मराठोंके हस्तगत हुआ। तत्पश्चात्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पेशवा और धुमाजीमें गुजरातकी आधी-आधी आय बाँट लेनेका निर्णय किया गया। रघुनाथराव राजपूत रियासतोंसे कर प्राप्त करता था।

दिल्लीमें गाजीउद्दीनका पुत्र मीर शहाबुद्दीन बलवान् हो गया, यहाँ तक कि वजीर सफदरखाँको लखनऊ जाना पड़ा। इन विवादोंमें सिन्धिया और होलकर मीर शहाबुद्दीनके सहायक थे। वे दिल्लीके कार्योंमें अधिक भाग लेते रहे।

संवत् १८१२ (सन् १७५६ ई०) में रघुनाथरावने सेना लेकर दिल्लीकी ओर और प्रथम पेशवा बालाजी विश्वनाथके भाई चिमणाजी अप्पाके पुत्र सदाशिवराव भाऊने दक्षिणकी ओर प्रस्थान किया। मैसूरके राजाने २६ लाख रुपयेकी प्रतिज्ञा की जिसमेंसे पाँच लाख दिया गया। नञ्जीराजका अफसर हैदरअली बड़ा चतुर था। उसके कथनपर शेष रुपया बन्द कर दिया गया। इधर पेशवा बम्बईके अंग्रेजोंके साथ अनेक बातोंके निर्णयमें लगा रहा। रघुनाथराव लौटते समय कुछ रुपया न लाया जिसपर सदाशिवराव भाऊने उससे कारण पूछा। रघुनाथरावने उत्तर दिया—"आगे जब कोई काम आ पड़ेगा तो तुम स्वयं जाना।" इस प्रकार परस्पर विवाद आरम्भ हो गया जिससे सर्वसाधारणमें बड़ी अपकीर्ति हुई।

उदगेरका युद्ध

अगले वर्ष देशका प्रबन्ध रघुनाथरावके सुपुर्द करके बालाजी बाजीराव स्वयं क्षेत्रमें निकला। उसके एक ब्राह्मण प्रतिनिधिने अहमदनगरके मुसलमान दुर्गाध्यक्षको कुछ रिश्वत देकर दुर्ग ले लिया, जिसपर सलाबतजंग और उसके भाई निजामअलीकी सेनाएँ मराठोंसे लड़नेके लिए निकलीं। इधर सदाशिवराव और पेशवा सेना लेकर आये। उदगेरस्थानपर घोर संग्राम हुआ जिसमें मुगलसेनाकी बहुत हानि हुई। निजामअली संधि करना चाहता था परन्तु सदाशिवने उसके आत्मसमर्पण करनेपर जोर दिया। अन्तको निजामअलीने अपनी मोहर उसके पास यह दर्शानेके लिए भेज दी कि वह जो चाहे उससे लिखवा ले। संधिपत्रसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दौलताबाद, असीरगढ़ तथा बीजापुरके कोट मराठोंको मिल गये और अहमदनगरपर उनका अधिकार स्वीकार किया गया। इन प्रान्तोंसे ६२ लाखकी वार्षिक आय थी। इससे निजामका राज्य अत्यन्त परिमित हो गया और मराठोंने दक्षिणके अधिकांश भागपर अधिकार कर लिया। मराठोंके लिए यह बड़े आनंदका समय था परन्तु एक घटनासे ही उनका सारा आनंद शोकसागरमें परिवर्तित हो गया।

अहमदशाहका आक्रमण

संवत् १८६१ (सन् १८०४ ई०) में मीर शहाबुद्दीनने मुहम्मद-शाहकी जगह आलमगीरको सिंहासनपर बैठाया, और युवराजको साथ लेकर मुलतान और लवपुर (लाहौर) वापिस लेनेके लिए चला, जिसे अहमदशाह अबदाली जीतकर अपने राज्यके अन्तर्गत कर गया था। अह-मदशाह अबदाली मीर मनुको सूबेदार बना गया था। वह शीघ्र ही मर गया परन्तु उसकी विधवा स्त्री शासन करती रही। मीर शहाबुद्दीनने उसकी कन्याके साथ विवाह करके विधवाको दिल्ली भेज दिया और अदीना बेगको सूबेदार नियत कर दिया। अहमदशाहने दिल्लीपर पुनः आक्रमण किया। मीर शहाबुद्दीनने क्षमाकी याचना की और उसे क्षमा प्रदान की गयी। अहमदशाह दिल्ली और मथुराको लूटकर अपने पुत्र तैमूरशाहको पंजाबका शासक और दिल्लीमें नजीबुद्दौला रोहेलाको मीर बख्शी नियत कर गया। मीर शहाबुद्दीनने नजीब रोहेलाको उस पदसे हटाना चाहा क्योंकि बादशाह उसकी ओर था इसलिए मीर शहाबुद्दीनने रघुनाथरावकी सहायतासे दिल्लीपर अधिकार कर लिया। नजीब रोहेला होलकरकी सहायतासे भागकर उसकी रियासतमें चला गया। रघुनाथराव कुछ कालतक दिल्लीमें रहा, फिर अदीना बेगने उसे पंजाब लेनेके लिए बुला भेजा।

रघुनाथराव प्रसन्नतापूर्वक उधर गया। उसने सरहिन्दमें अबदालीके शासकको पराजित किया। संवत् १८१५ (सन् १७५८ ई०) में उसने लवपुर (लहौर) में प्रवेश किया। अदीना बेगको वहाँका शासक बना-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर और शाबाजीको उसका उपकारी बनाकर पोहार लौट गया। यह एक गौरवमय कार्य था पर इसमें रघुनाथरावने कुछ धन प्राप्त करनेके बदले बड़ा ऋण उठा लिया था। इसके अनन्तर सिन्धिया और होलकर बुन्देला राजाओंकी सहायतासे शुजाउद्दौला, वजीर अवध और रोहेलोंके साथ युद्ध करते रहे। उन्हें सूचना मिली कि अहमदशाह अबदाली क्रोधसे भरा हुआ पंजाब लेनेके लिए आ रहा है। यद्यपि रोहेलोंने मराठोंके साथ मित्रताका सन्धिपत्र लिख दिया था पर वे और नवाब वजीर अहमदशाहके साथ गुप्त पत्र-व्यवहार करते रहे। मीर शहाबुद्दीनने अबदालीके आनेका समाचार सुनकर आलमगीरका वध करा दिया और उसके स्थानपर शाहजहाँको राजसिंहासनपर बैठाया। आलमगीरका पुत्र शाह-आलम दौड़कर शुजाउद्दौलाके पास जा पहुँचा। शहाबुद्दीनने स्वयं भरत-पुरके जाट राजाका आश्रय लिया।

पानीपतका युद्ध

लाहौरके मराठा अफसरको अबदालीने सिन्धिया और होलकरकी सहायता पहुँचनेसे पूर्व ही पराजित कर दिया। अबदाली यमुना पार कर उतर आया। सिन्धिया और होलकर पीछे हट गये। सिन्धियाकी पराजय हुई जिसमें उसकी एक तिहाई सेना काम आयी। पेशवाको यह समाचार उस समय विदित हुआ जब निजामअलीके साथ सन्धिपत्र लिखा जा चुका था। सदाशिवराव और पेशवाका पुत्र विश्वासराव बीस सहस्र सवार, दशसहस्र पैदल और इब्राहीम खाँ गारदीका तोपखाना, जो कि दक्षिणमें बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ था, लेकर दिल्लीकी ओर चले। सारे मराठा सरदारोंको महाराष्ट्रकी राष्ट्रीय ध्वजाके नीचे एकत्र होनेकी आज्ञा हुई। होलकर, सिन्धिया, गायकवाड़, पवारके अतिरिक्त राजपूत रियासतोंने अपनी-अपनी सेनाएँ भेजीं। राजा सूरजमल भी मिल गया। एक बार पुनः पानीपतकी भूमिपर आर्य मुसलमानोंसे युद्ध करनेके लिए एकत्र हुए। सदाशिवराव भाऊकी मूर्खता और दम्भने सब काम बिगाड़ दिया। सूरजमल तथा होलकरकी सम्मति थी कि अबलाएँ, बालक तथा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुपयोगी तोपखाना इत्यादि सब झाँसी या भरतपुरके दुर्गमें छोड़ दिये जायँ। मराठों और जाटोंकी सेना मिलकर अबदालीकी सब सामग्री, रसद आदि नष्ट करना आरम्भ कर दें। इस प्रकार पीड़ा पहुँचा करके उसे लौटा दें। सदाशिवराव भाऊ होलकरसे अप्रसन्न था, अतः उसने उसकी सम्मतिपर ध्यान ही नहीं दिया।

प्रथम तोपखानेकी सहायतासे दिल्लीका कोट लिया। भाऊको इतनी प्रसन्नता हुई कि उसने विश्वासरावको दिल्लीके सिंहासनपर बैठा दिया। यमुना नदी चढ़ी हुई थी। अतएव कुछ काल भाऊको दिल्लीमें रहना पड़ा। इस समय रुपयेकी आवश्यकता हुई। भाऊ दो करोड़ रुपया दक्षिणसे लाया था, तीन करोड़ अन्य सहायकोंसे मिला था। इसपर भी भाऊने राजमहलोंके चाँदी-सोनेके भूषण उतारकर बेचना आरम्भ किया और सिंहासनको तोड़कर बेच दिया। इस निरर्थक कार्यपर होलकर और सूरजमल बहुत असन्तुष्ट हुए। जाट राजा अपनी सेना लेकर चला गया। शीघ्र ही सारी राजपूत सेनाएँ भी लौट गयीं। इस प्रकार जब आर्यकैम्पमें विद्वेष बढ़ रहा था, अहमदशाह अब्दालीने नजीब रोहेला द्वारा शुजाउद्दौलाको अपने साथ मिला लिया। शुजाउद्दौला मराठोंसे बिगाड़ नहीं चाहता था, वह उन्हें सब बातोंकी सूचना निरन्तर देता रहा।

अन्तको दोनों सेनाएँ शीतकालके आरम्भमें पानीपतके क्षेत्रमें एकत्र हुईं। दो मास पर्यन्त संग्राम होता रहा। नजीब रोहेला तथा नवाब वजीर अहमदशाहसे संग्राम बन्द करनेका आग्रह करते थे। परन्तु वह बुद्धिमान था और मराठोंकी दुर्बलता, जो दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी, देख रहा था। अन्तको मराठे स्थिर संग्राम करनेपर आरूढ़ हुए। भाऊने नवाब वजीरको, जो सन्धि करनेके उपाय सोच रहा था, लिख भेजा कि अब प्याला सर्वथा भर गया है, एक बूँदके लिए भी स्थान नहीं। नवाब वजीर यह समाचार अबदालीके पास ले गया। एक ओरसे 'हर, हर' दूसरी ओरसे 'दीन, दीन'के शब्द सुनाई देने लगे। एक बार तो अफगान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेना व्याकुल हो गयी और भागने लगी। अहमदशाहने कहा "मित्रो, कहाँ भागते हो, हमारा घर बहुत दूर है।"

मराठोंकी पराजय

दिनके दो बजे विश्वासरावको बड़ा कठोर आघात लगा और वह मर गया। सदाशिवराव भाऊ हाथीसे घोड़ेपर आ गया और युद्धमें जा घुसा, फिर उसका पता न लगा। यह दशा देखकर होलकर रणभूमिसे हट गया। उसके पश्चात् गायकवाड़ गया। इस प्रकार मराठोंने मैदान खाली कर दिया। अफगानोंने सबको काट डाला। जो अबलाएँ तथा बालक पानीपतके नगरमें दौड़ते थे उनको पकड़कर दास बनाया और बन्दियोंको एकत्रकर तलवारके घाट उतारा। जो भागकर भरतपुर पहुँचे सूरजमलने उनसे अत्युत्तम व्यवहार किया। लगभग दो लाख मराठे इस युद्धमें काम आये। अत्यल्प बचकर लौटे। जो बचे उनमेंसे एक बालाजी जनार्दन उर्फ नाना फड़नवीस था।

साहूकारोंका एक दूत पत्र लेकर पेशवाके पास पहुँचा जिसमें लिखा था—"दो मोती टूट गये हैं। २७ मोहरें लुप्त हो गयी हैं। चाँदी और ताँबेकी कोई गिनती नहीं।" समस्त महाराष्ट्रमें उदासी फैल गयी। प्रत्येक गृहमें रोना पीटना मच गया। पेशवाको इतना शोक हुआ कि वह शीघ्र ही मर गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवाँ प्रकरण

चौथा पेशवा माधवराव

निजामकी चेष्टा

संवत् १८१८ (सन् १७६१ ई०) में माधवराव १७ वर्षकी उम्रमें चौथा पेशवा बना। निजामअलीने मराठा राज्यको शक्तिहीन पाकर खोये हुए प्रान्तोंको पुनः लेनेका निश्चय किया। वह सेना लेकर महाराष्ट्रपर चढ़ आया। जब पूनाके समीप पहुँचा तो रघुनाथराव उर्फ राघोबाने उसको पत्र भेजना आरम्भ किया। वह आधा प्रान्त लेकर प्रसन्न हो गया और लौट गया। लौटनेपर उसने अपने भाई सलाबतजंगको कैद करके उसका वध करा दिया और स्वयं निजाम बन गया।

पारस्परिक फूट

इसके उपरान्त माधवरावने कुछ अधिकार अपने हाथमें लेना चाहा जिसपर राघोबा तथा सखाराम बापूने असन्तुष्ट होकर त्यागपत्र दे दिये। माधवरावने अपने मामा त्र्यम्बकरावको दीवान और बालाजी जनार्दनको मन्त्री चुन लिया। राघोबा मराठा राज्यके नाशका बीज अपने साथ लाया था। आर्यावर्तके नाशके लिए महाभारत-कालसे दुर्योधन उत्पन्न होते चले आये हैं। आर्यजातिका जो रोग प्राचीन कालसे चला आता है वह है अपने भाईयोंकी बढ़ती देखकर द्वेष करना। द्वेषका विष इतना बलवान् है कि उसके लिए स्त्रियों और पुरुषोंने अपने मित्रों, सम्बन्धियों, यहाँतक कि अपनी जातिमात्रका वध करा दिया। मराठा-इतिहासके एक-एक पदपर द्वेषकी दुर्गन्धि आती है। राजपूत इतिहासमें भी यह पाया जाता है और सिख इतिहास भी इससे शून्य नहीं। संसारकी किसी जातिमें भी यह रोग इतना नहीं पाया जाता। यों तो पारस्परिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वेष न्यूनाधिक मात्रामें सबमें पाया जाता है, किन्तु भारतवर्षमें यह जातीय रोग हो गया है। महाभारत-कालसे स्त्रियोंने इस रोगकी वृद्धिमें अधिक भाग लिया है। राघोबाकी स्त्री और पेशवाकी मातामें बड़ी शत्रुता थी। आर्योंके प्रत्येक गृहमें राघोबा और उसके भाईकी स्त्रियाँ विद्यमान हैं। कौन कह सकता है कि कबतक यह नाशका क्रम जारी रहेगा ?

काका-भतीजा

त्र्यम्बकरावके दीवान बननेसे राघोबा जल उठा। उसने निजाम-अलीके पास पहुँचकर सहायताके लिए प्रार्थना की। वहाँसे सेना लेकर वह भतीजेके विरुद्ध चला। कुछ मराठे भी उसके साथ मिल गये। अहमदनगर और पूनाके मध्य आधे मार्गपर माधवरावकी सेनाकी पराजय हुई। निजामअली और बरारसे जानोजा भोंसले सेना लिये आ रहे थे। माधवरावने राज्यको बचानेका उपाय यही सोचा कि चाचाको किसी प्रकारसे प्रसन्न करे। उसने अपने आपको उसके हाथमें डाल दिया। राघोबाने इस सहायताके प्रत्युपकारमें समस्त विजित दुर्ग निजामको लौटा देनेकी प्रतिज्ञा की थी किन्तु सन्धि हो जानेपर केवल दौलताबाद ही दिया। राघोबाने सखाराम बापू तथा नीलकण्ठ महादेवको अपना विशेष मन्त्री नियुक्त किया। इसी प्रकार और अफसरोंको अपने इच्छानुसार चुनकर अपने पुत्रको प्रतिनिधिका पद दिया। इन सब परिवर्तनोंसे इतनी अशान्ति फैली कि जानोजी भोंसले निजामकी सहायतासे राजगद्दी लेनेके लिए उद्यत हो गया। माधवरावने चाचाकी पूर्ण सहायता की। सिन्धिया और होलकर सेना लेकर बरारपर चढ़ आये, और वहाँसे रुपया लेकर निजामकी रियासतकी ओर बढ़े। उधर निजामने पूनापर आक्रमण किया और राघोबा हैदराबादपर चढ़ा। पूनामें भी लूट-मार हुई। राघोबा कुछ माल लूटकर लौट आया और भोंसलेके साथ निजामवाले जिले देकर गुप्त मित्रता कर ली। राघोबाने निजामकी सेनापर आक्रमण किया और बड़ी वीरतासे युद्ध किया। माधवरावने इस अवसरपर बड़ी वीरता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिखलायी। निजामके दस सहस्र मनुष्य मारे गये। मराठोंकी भी बहुत हानि हुई। इसके पश्चात् निजामके साथ नया शर्त्तनामा लिखकर सन्धि हो गयी। युद्धके उपरान्त माधवरावने जानोजी भोंसलेको उसके कपटपूर्ण व्यवहारके लिए बहुत फटकारा।

नाना फड़नवीस

इस समय अर्थात् संवत् १८२० (सन् १७६३ ई०) में पेशवाके फर्दनवीसका पद बालाजी जनार्दनको दिया गया जो कि इतिहासमें नाना फड़नवीसके नामसे प्रसिद्ध चला आता है। इस समय मराठा राज्यका ध्यान करनाटककी ओर था। उधर मैसूरमें हैदरअली अपना बल बढ़ा रहा था।

हैदरअली

हैदरअली अत्यन्त निर्धन माता-पिताका पुत्र था। इसका पितामह बड़ा दरिद्र था। इसका पिता एक साधारण सैनिक था। हैदरअली अपनी योग्यतासे नञ्जीराज मैसूरके दीवानका बड़ा अफसर बन गया। उसने छलसे अपने स्वामीका स्थान स्वयं ले लिया। मराठोंकी अनुपस्थितिसे लाभ उठाकर उसने करनाटकमें विजय प्राप्त करना आरम्भ कर दिया। माधवराव पेशवा स्वयं सेना लेकर उसके विरुद्ध गया और उसने बड़ी वीरतासे हैदरअलीको नीचा दिखाया। धारवारका दुर्ग भी जीत लिया। इससे वर्धाके उत्तरमें सारा देश उसके अधिकारमें आ गया। इस विजयके उपरान्त पेशवा लौट आया और उसने सेनाकी बाग राघोबाको सौंप दी। राघोबाके पहुँचनेपर हैदरअलीने सन्धिके लिए प्रार्थना की और मुरारराव घोरपड़ेका समस्त देश लौटा दिया। हैदरअलीने ३२ लाख रुपया पेशवाको देनेकी प्रतिज्ञा की।

माधवराव सदा अपने चाचाका आदर तथा सम्मान करता था, यद्यपि उसकी माता उससे कहती थी कि राघोबाको कारावासमें रखो। इधर राघोबाकी धर्मपत्नी अपने पतिसे सदा माधवरावके विरुद्ध बातें कहती रहती थीं। माधवराव अपनी निर्बलता भली भाँति जानता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। राघोबा निजाम और जानोजी दोनोंको अपना सहायक बना सकता था।

इसलिए एक शत्रुको निर्बल करनेकेलिए पहिले माधवरावने निजामसे मित्रता करके जानोजी भोंसलेसे अपना देश वापिस लेना चाहा। जब निजाम और मराठा सेनाने बरारपर आक्रमण किया तो जानोजीने सब जिले लौटा दिये। उनका कुछ भाग निजामको दिया गया ताकि मित्रता स्थिर रहे। निजाम मराठोंको हैदरअलीके विरुद्ध करके उसे दबाना चाहता था।

अंग्रेज-निजाम सन्धि

हैदरअलीके अतिरिक्त उस समय अंग्रेज भी अपना बल बढ़ानेकी चिन्तामें थे। उन्होंने मुगल बादशाहसे कुछ उत्तरीय भाग दानमें ले लिया और मद्रास कौंसलने राजिन्दरीपर अधिकार कर लिया! निजामने उन्हें धमकाया कि मैं स्वयं तुम्हें नष्ट कर डालूँगा और मराठों तथा हैदरअलीको तुमपर आक्रमण करनेके लिए उत्तेजित करूँगा। मद्रास कौंसिलने भयभीत होकर हैदरअलीसे सहयोग करना चाहा किन्तु उसने स्पष्ट अस्वीकृति दे दी। फिर उन्होंने निजामसे मित्रता करनेकी चेष्टा की और कहा कि हम हैदरअलीको दबाने तथा मराठोंका बल रोकनेमें तुम्हारी सहायता करेंगे। निजाम प्रसन्न हो गया, और सात लाख रुपया वार्षिक और कुछ सामरिक सहायताके लिए उसने चार जिले अंग्रेजोंको दे दिये। जब माधवरावको यह सूचना मिली तो उसने बिना निजामकी प्रतीक्षाके कृष्णा नदी पार करके सीरा, उस्काना तथा मुदगिरिपर अधिकार कर लिया और हैदरअलीसे ३० लाख रुपया प्राप्त करके लौट गया। (इन वृत्तान्तोंका संक्षिप्त वर्णन एक पृथक् अध्यायमें होगा।) राघोबा सेना लेकर उत्तरकी ओर गया परन्तु मल्हारराव होलकरकी मृत्युने उसके सारे निश्चयोंपर पानी फेर दिया।

अहिल्याबाई

मल्हाररावका पुत्र खण्डेराव पहिले मर चुका था। उसका पौत्र सिंहासनपर बैठा किन्तु वह भी शीघ्र ही मर गया। इस बालककी माता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अहिल्याबाईने गंगाधर सेवन्तकी इच्छाके विरुद्ध राज्यकी बाग अपने हाथमें ली और एक बड़े योग्य मराठा तुकोजी होलकरको अपना दत्तक-पुत्र बनाकर सेनापति बना दिया। जबतक जीवित रही उसने योग्य शासकके सदृश शासन किया। अहिल्याबाईका शासनकाल मालवामें बहुत विख्यात है।

राघोबाने गोहडके रानाको अधीन करना चाहा परन्तु फिर तीन लाख रुपया लेकर उसे छोड़ दिया।

राघोबाका दिखाऊ विराग

राघोबा अपनी स्त्रीके कहनेपर महाराष्ट्रका राज्य दो भागोंमें विभक्त करना चाहता था। माधवरावने अपने चाचाको सँभालनेकी अन्तिम चेष्टा करनेका निश्चय किया। उसने स्वयं मिलकर उसे समझाया कि मैं आपको राज्यमें पूर्ण भाग देनेके लिए तैयार हूँ, और यदि आपको अच्छा न लगे तो देशमें जहाँ चाहें जागीर ले लें और सुखसे जीवन व्यतीत करें। राघोबाने उत्तर दिया, 'नहीं नहीं, मैं काशी जाकर रहूँगा और राज्यसे कोई सम्बन्ध न रखूँगा।' माधवरावने कहा, यह सर्वोत्तम उपाय है। राघोबाने अहमदनगर इत्यादि अपने दुर्ग माधवरावको अर्पण कर दिये और कहा कि मैं केवल अपने सैनिकोंके वेतनका तथा अपने कुटुम्बका उचित प्रबन्ध चाहता हूँ। माधवरावने पचीस लाख रुपया तीन मासके भीतर देनेकी प्रतिज्ञा की और गोदावरीके तटपर एक जागीर उसके कुटुम्बके लिए निश्चित कर दी जिससे १२ लाख रुपयेकी वार्षिक आय थी। यद्यपि उस समय राघोबाने यह सब मान लिया परन्तु वह किसी अवसरकी प्रतीक्षामें था।

उस समय माधवरावकी सहायताके लिए अंग्रेज और मुहम्मदअली एक ओर और निजाम तथा हैदरअली दूसरी ओरसे इच्छुक थे। बम्बई कौंसिलने मास्टनको इस मतलबसे पूना भेजा कि वह मराठा दरबारमें अपना सम्बन्ध स्थापित करके मराठोंको निजाम आदिके साथ मिलानेसे रोक रखे।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राघोबाका विद्रोह

उस समय राघोबाने जानोजी धुमाजी गायकवाड़ और होलकरके दीवान गंगाधरकी सहायतासे सेना एकत्र करके विद्रोह किया। माधवराव सेना लेकर पहुँचा और राघोबाको कैद करके पूना ले आया और वहाँ महलोंमें रक्षकोंके अधीन रखा। अब उसे जानोजीको सँभालनेका विचार आया, इसलिए उसने निजाम और हैदरअलीके साथ सहयोग करना चाहा, ताकि बंगदेशके अंग्रेज भयसे जानोजीके साथ न मिलें। निजाम और माधवरावकी सेनाएँ बरारकी ओर चलीं। जानोजीने पुरातन मराठा विधिपर युद्ध आरम्भ किया। माधवराव नागपुर पहुँचा। जानोजी इधर उधर होकर पूना जा पहुँचा और लूटना प्रारम्भ किया। आखिर जानोजीका भाई मोदाजी उसके विरुद्ध विद्रोह करने लगा। उससे भयभीत होकर जानोजीने पेशवासे सन्धि कर ली। उसने जिले पेशवाको लौटा दिये और प्रतिज्ञा की कि पेशवाकी सहायताके लिए मैं बराबर एक सेना तैयार रखूँगा।

हैदरअलीसे युद्ध

पेशवाने विशाजी किशनके साथ रामचन्द्र गणेश, तुकोजी होलकर और महादजी सिन्धियाको दिल्लीकी ओर भेजा और हैदरअलीकी ओर स्वयं ध्यान दिया। हैदरअलीने कर देनेसे इनकार कर दिया था इसलिए माधवरावने जाकर कई दुर्ग विजित किये। नन्दीगुलके लेनेमें कुछ मास व्यतीत हुए और एक आक्रमणमें पेशवाका भाई नारायणराव आहत हुआ। हैदरअली इतना डरता था कि बीस कोस तक माधवरावके समीप न आता था। माधवराव अस्वस्थ हो गया और वह त्र्यम्बकको सेनापति बनाकर स्वयं पूना चला गया। हैदरअली श्रीरंगपट्टममें अपनी तोपें और सामान छोड़कर भाग गया। मराठा सेना बंगलोर पहुँची और हैदरअलीने श्रीरंगपट्टममें डेरे जमाये। सन्धिपत्रके अनुसार अंग्रेजोंको बारबार सहायताके लिए लिखता रहा परन्तु अंग्रेजोंकी ओरसे उसे कोई सहायता न

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिली। अन्तको हैदरअलीने सन्धिकी इच्छा प्रकट की और संवत् १८२९ (सन् १७७२ ई०)में सन्धिपत्र लिखा गया, जिससे हैदरअलीने ३६ लाख रुपया व्यय और १४ लाख वार्षिक कर देना स्वीकार किया।

इधर अहमदशाह अब्दालीने शाहआलमको सिंहासनका स्वामी स्वीकार किया। शाहआलम उस समय अंग्रेजोंके साथ युद्धमें लगा हुआ था। शुजाउद्दौला मन्त्री नियुक्त हुआ और नजीब रोहेला धनिक नायक बनाया गया। शुजाउद्दौला अवधसे बनारस और बुन्देलखण्ड गया। वहाँसे चलकर उसने झाँसीका दुर्ग ले लिया। बंगालका नवाब मीर कासिम भागकर उसके पास आ गया। इसलिए नवाब वजीरको मराठोंका पीछा छोकर इधर आना पड़ा।

दिल्लीपर आक्रमण—माधवरावकी मृत्यु

मराठा सेनाएँ संवत् १८२७ (सन् १७७० ई०) में दिल्ली राज्यमें प्रविष्ट हुईं। पहिले उन्होंने राजपूत रियासतोंसे दस लाख रुपया कर प्राप्त किया। भरतपुरमें सूरजमलकी मृत्युके उपरान्त उसके पुत्रोंमें विवाद हो गया था। मराठोंने भरतपुरसे भी दस लाख रुपया प्राप्त किया। नजीबुद्दौला उनके विरुद्ध आते हुए डरा। उसने उनसे मित्रताके लिए पत्र-व्यवहार करना आरम्भ किया। यद्यपि शेष सब अफसर बदला लेना चाहते थे परन्तु विशाजी किशन उसके द्वारा शाहआलमको अपने हाथमें लाना चाहता था। नजीब रोहेला मराठोंके लिए यह सेवा करके मर गया। उसके स्थानपर उसका पुत्र जाबताखाँ नियत हो गया। मराठोंने रुहेलखण्डपर आक्रमण करके समस्त देश जीत लिया। अटावाका दुर्ग उनके हाथमें आ गया। इसके पश्चात् वे कोरा पहुँचे और शुजाउद्दौलासे माँग पेश करने लगे जिसमें अंग्रेजोंको भी अपने सम्बन्धमें कुछ भय उत्पन्न हो गया। बंगाल कौंसिल शाहआलमको अपने पास रखनेके लिए बहुत जोर देती रही, किन्तु शाहआलम विशाजी विशनके कैम्पमें चला आया और उसके साथ दिल्लीमें प्रविष्ट होकर संवत् १८२८ (सन् १७७१ ई०) में सिंहासनपर बिठाया गया। मराठा लोग अब दिल्लीके स्वामी थे और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बादशाह उनके हाथमें था। अब उन्होंने जाबताखाँसे बदला लेना चाहा। महादजी सिन्धिया और मुगल सेनापति नजफखाँ सेना लेकर रुहेलखन्डपर चढ़े और जाबताखाँका प्रान्त जा लूटा। रोहेलोंने नवाब वजीरको चालीस लाख रुपया देना स्वीकार करके मराठोंके विरुद्ध सहायताके लिए मित्रता उत्पन्न की। मराठा सेना दिल्ली वापिस आ गयी। इस प्रकार पानीपतके संग्रामके दस वर्ष अनन्तर मराठा सेनाओंने फिर वही प्रभुत्व प्राप्त करके दिल्लीपर भी अपना अधिकार कर लिया। किन्तु उसी समय मराठा राज्य-पर एक और बड़ी भारी विपत्ति आयी। माधवरावका देहान्त हो गया। मराठा ऐतिहासिकोंका कथन है कि इस घटनासे "वह जड़ जो वृक्षकी फैली हुई शाखाओंको जीवन दे रही थी, कट गयी।" मराठा राज्यके लिए इस समय माधवरावकी मृत्यु पानीपतके युद्धसे बढ़कर हानिकारक सिद्ध हुई।

माधवरावका उच्च आचार

माधवराव मराठा पेशवाओंमें सबसे बढ़कर उच्च आचरणका व्यक्ति था। वह बलवानोंसे निर्धनों तथा बलहीनोंकी सदैव रक्षा करता था। सबपर उसकी समदृष्टि थी। उसने महाराष्ट्रमें बेगार सर्वथा बन्द कर दी थी, और जब एक समय उसे गुप्तचरों द्वारा विदित हुआ कि मेरी आज्ञा-का उल्लंघन किया गया है तो उसने बड़ा कठोर दण्ड दिया। वह कृषकों-को अफसरोंकी क्रूरतासे बचाता था। कोई कृषक सीधा उसके पास जाकर शिकायत कर सकता था।

उसकी वार्षिक आय दस करोड़ रुपया थी। फौजदारी मामलोंका विचार पटेल तथा सूबेदार किया करते थे। दीवानीमें पंचायतों द्वारा निर्णय होता था।

रामशास्त्री

समस्त बातोंमें रामशास्त्री उसकी सहायता करते थे। रामशास्त्री महाराष्ट्रमें बड़े भद्र, शुद्धमति और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए हैं। वे न्याया-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धीश थे और उनके निर्णय अभीतक महाराष्ट्रमें प्रमाण माने जाते हैं। जब माधवरावने अधिकार अपने हाथमें लिये, रामशास्त्रीने उसे धर्म तथा न्यायकी शिक्षा देनेमें बड़ा परिश्रम किया। उनके सम्बन्धमें एक बड़ी मनोरञ्जक बात कही जाती है। एक समय कुछ मनुष्योंके संगसे माधवरावको योगाभ्यास करनेकी बड़ी लालसा उत्पन्न हुई। शास्त्रीजीने युवक पेशवाको रोकना उचित न समझा। एक दिन जब वह उसके पास गये तो माधवराव समाधि लगाये बैठा था। शास्त्रीजी लौट गये। दूसरे दिन उन्होंने बनारस जाकर रहनेका विचार प्रगट किया। पेशवाने कारण पूछा और साथ ही कहा कि मैं योगमें निमग्न था अतएव मिल न सका। योग करना अत्यन्त पवित्र काम है। शास्त्रीजीने उत्तर दिया, यह सर्व सत्य है। योग ब्राह्मणोंका धर्म है परन्तु फिर राज-पाट त्याग देना चाहिये। जब राज्यका कार्य आरम्भ किया है तो प्रजाके सुखका ध्यान प्रथम कर्तव्य है, नहीं तो राजगद्दी छोड़कर उसी ओर लग जाओ। माधवरावने अपना दोष स्वीकार कर लिया और अपना पथ बदल दिया।

राघोबाका पत्र-व्यवहार

माधवरावकी मृत्युपर मराठा-साम्राज्यमें असहयोगका बीज अशान्ति उत्पन्न कर रहा था। माधवराव अभी अस्वस्थ था कि राघोबाने स्वयं पेशवा बननेके लिए हैदरअली तथा निजामअलीके साथ पत्र-व्यवहार करना आरम्भ किया। यह पत्र-व्यवहार प्रकट हो गया। इसपर कई मनुष्य, जो उसमें सम्मिलित थे, कैद किये गये। राघोबापर अधिक कठोरता की जाती, परन्तु माधवरावने बुद्धिमत्तासे अथवा मूर्खतासे देख लिया कि राघोबाके बिना पीछे निर्वाह कठिन था। उसने राघोबाको पास बुलाकर अपने भाई नारायणरावके साथ सन्धि करायी और एक प्रकारसे दोनोंको समझाया कि मराठा राज्यकी रक्षा तथा उसके लाभको दृष्टिमें रखकर दोनों परस्पर एकता और प्रेमका बर्ताव करें। उसने

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावोबाके मित्र सखाराम बापूको बुलाकर दीवान बना दिया। राज-सम्बन्धी बातोंमें नाना फड़नवीस और युद्धसम्बन्धी कार्योंमें मोरोबा फड़नवीस उसके मन्त्री नियुक्त हुए। अपने भाईका हाथ अपने चाचा राघोबाके हाथमें देकर माधवराव इस लोकसे प्रस्थान कर गया और मराठा-राज्यका भाग्य-सूर्य्य भी उसके साथ अस्त हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आठवाँ प्रकरण

मैसूर राज्यका संक्षिप्त आरम्भिक वृत्तान्त

संवत् १५८१ (सन् १५२४ ई०)में कामराजने, जो यादव राजपूत जातिसे था और हाथावामें शासन करता था, हाथावासे अपनी राजधानी मैसूरमें परिवर्तित कर ली। विजयनगरके नाशपर मैसूरका बल बढ़ने लगा।

राजा कान्तिदेव

संवत् १६२८ (सन् १५७१ ई०) में यहाँके राजा हीरा कामराजने श्रीरंगपट्टमको विजित किया। संवत् १६९५ (सन् १६३८ ई०) में मैसूरका सबसे प्रसिद्ध राजा कान्तिदेव राजसिंहासनपर बैठा। उसके गुण अभीतक भाट लोग गाते हैं और उसके विषयमें मैसूरके जनसाधारणमें बहुत-सी कथाएँ फैली हुई हैं। उसकी पाषाण-शय्या मैसूरके प्रासादोंमें पायी जाती है।

उसका उत्तराधिकारी दूध देवराज हुआ जिसके समयमें मैसूर राज्य बन गया। उसके राज्यकालमें मैसूरने त्रिचनापलीसे कर लेना प्रारम्भ किया। उसने मदुरापर आक्रमण किया और मराठोंको एक बड़े युद्धमें पराजित किया।

उसके पश्चात् चकदेवराजके दूत औरंगजेबके पास संवत् १७५७ (सन् १७०० ई०) में गये। औरंगजेबने उनका स्वागत किया, उसने मिलकर आनन्द प्रकट किया और राजाको सिंहासनपर बैठनेका अधिकार दिया। चकदेवकी सन्तान अत्यन्त निर्बल तथा अयोग्य निकली। उसके पौत्र दूध किशनराजके कालमें मराठोंने संवत् १७८१ (सन् १७२४ ई०) में नवाब करनोल और नवाब कदापाके साथ मिलकर मैसूरपर आक्रमण किया और उसे रुपया देकर उन्हें पीछे हटना पड़ा। दो वर्ष उपरान्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मराठोंने पुनः आक्रमण किया और बहुत-सा धन प्राप्त किया। जब राजा दिन प्रतिदिन निर्बल होते गये तो राज्य मन्त्रिकुलके हाथ चला गया। मन्त्री दलबाई कहलाते थे और राजकुलकी एक शाखासे थे। संवत् १७९२ (सन् १७३६ ई०) में देवराज मन्त्री बड़ा शूरवीर तथा योग्य व्यक्ति था। उसने करनाटकके दोस्त अली नवाबको पराजित किया। देवराजने जीवनके अन्तिम दिनोंमें सारे अधिकार अपने भाई नंजीराजको अर्पण कर दिये। जब करनाटकमें अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियोंका युद्ध हो रहा था तो मैसूरकी सेना भी उसमें भाग लेती रही। जब नंजीराज देवनालीपर आक्रमण कर रहा था तो उसकी सेनामें हैदरअली भरती हुआ और उसने ऐसा उपाय बताया जिससे नंजी उस आक्रमणमें सफल हुआ। हैदरअलीसे वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसे थोड़ीसी सेनाका स्वामी बनाकर एक दुर्गमें अफसर नियुक्त कर दिया।

हैदरअलीका पिता फतर मुहम्मद सीराके नवाबके यहाँ नायक था। हैदरअली सात वर्षका था कि उसका पिता मर गया। वह लिखना-पढ़ना नहीं जानता था। युवावस्था उसने आखेट आदि करनेमें व्यतीत की थी। इसके कुछ काल पश्चात् वह सेनामें भरती हुआ।

संवत् १८०८ (सन् १७५१ ई०) में हैदरअली फ्रान्सीसियोंकी सहायतासे त्रिचनापलीमें अंग्रेजोंके विरुद्ध लड़ता रहा। उसके दूसरे वर्ष वह दन्दीगुलका दुर्गाध्यक्ष बनाया गया। उसी समयसे वह अपनी वृद्धिके उपाय सोचने लगा। उसने अपना एक ब्राह्मण प्रतिनिधि खण्डेराव मैसूर दरबारमें नियत कर दिया जो उसे सब बातोंसे सूचित करता था।

संवत् १८१५ (सन् १७५८ ई०) में देवराज मर गया और मैसूरकी सेनाने वेतनके लिए विद्रोह कर दिया। हैदरअली उस समय मैसूर पहुँचा और उसने विद्रोहको शान्त किया। इससे उसका बल और भी बढ़ गया। उसने अपने अधीन एक सेना श्रीरंगपट्टममें रख दी और जब मराठोंने उसपर आक्रमण किया तो उसने उनको पराजित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया। उसकी प्रतिष्ठा अब बहुत अधिक हो गयी। अब वह अपने सहायक नंजीराजके विरुद्ध हो गया। उसे हटाकर खण्डेरावको दीवान बना दिया। खण्ड़ेरावने राजाके साथ मिलकर हैदरअलीके विरुद्ध विद्रोह किया। उसमें हैदरअलीने बड़ी निपुणतासे उन्हें पराजित कर स्वयं मैसूर-पर अधिकार कर लिया और राजाको वेतन देकर अपनी अधीनतामें रख लिया। वास्तविक शासकको अपने हाथमें कठपुतली बनाकर रखनेकी नीति उस समय भारतवर्षमें साधारण बात हो गयी थी। अंग्रेजोंने भी यही नीति अपने लाभके लिए उपयुक्त समझी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ खण्ड

सिख-राज्यकी उन्नति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिला प्रकरण

सिख-सम्प्रदायकी स्थापना

स्वतन्त्र राज्योंका आविर्भाव

जब मुगल-साम्राज्यकी अवनति आरम्भ हुई तो न केवल मराठा तथा सिख-राज्य खड़े हो गये, बल्कि आर्यावर्तमें और भी कई राज्य करनेवाले वंश उत्पन्न हो गये। उनमेंसे निजाम, वजीर-अवध और वंग देशके सूबेदार, जो मुगलोंकी ओरसे शासक थे, दिल्लीको अशक्त देखकर स्वतन्त्र हो गये। उनके अतिरिक्त इस समय कई ऐसे चतुर शूर-वीर निकले जिन्होंने समय पाकर अपना-अपना राज्य स्थापित कर लिया। हैदरअली और चूड़ामणि यह दो बड़े उदाहरण हैं। चूड़ामणिकी स्थापित की गयी भरतपुरकी जाट-रियासत बड़ी शक्तिशाली थी। लेकिन इन वीर पुरुषोंका उद्देश्य प्रभुत्वका आनन्द उठानेके सिवा और कुछ न था। वे देशगत विचारोंके परिचायक न थे।

केवल मराठा-राज्य और सिख-राज्य ही लोगोंके मनोगत भावों और विचारोंके परिणाम थे। इन दोनों राज्योंके मूल उस नये धार्मिक जीवनमें पाये जाते हैं जो उस समय भारतवर्षमें स्थल-स्थलपर दिखलाई देता है। उन्होंने मुगलोंकी निर्बलतासे लाभ ही नहीं उठाया, किन्तु उनको क्षीण करनेका भार भी अपने ऊपर लिया। इसी कारण हमने मराठा-राज्यकी उन्नतिके उपरान्त सिख-राज्यकी उन्नतिका वृत्तान्त लिखना उचित समझा है। हम सिख-राज्यको आर्य जातिके जीवनका पुनरुत्थान समझते हैं। हमें यह बात एक चमत्कारसे कम नहीं प्रतीत होती कि आक्रमणोंका वह प्रचण्ड प्रवाह, जो आठ सौ वर्षपर्यन्त पश्चिमोत्तरसे भारतवर्षमें आता रहा, सिखोंके बलसे केवल रुका ही नहीं, बल्कि उलटी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिशामें बहने लगा। राजा जयपालके असफल आक्रमणके अनन्तर प्रथम बार सिख-सेनाने न केवल पेशावर और सीमान्तको विजित कर पंजाबमें मिलाया, परन्तु अपने राज्यको काबुल तथा गजनीतक फैलानेकी चेष्टा की। जिस प्रकार तैमूरलंगका नाम आर्योंके लिए भयानक प्रतीत होता था उसी प्रकार हरिसिंहका नाम गजनीमें पठान बालकोंको डरानेके लिए लिया जाने लगा।

यह विचार करना भी ठीक नहीं कि सिख-राज्यका शासन केवल एक धार्मिक सम्प्रदायके लोगोंपर था। महाराज रणजीतसिंहके बड़े-बड़े सेनापति तथा मन्त्री भिन्न-भिन्न वर्णोंके आर्य थे, जिन्होंने बड़े त्याग तथा पराक्रमसे सिख-राज्यको सुव्यवस्थित किया।

इस नये प्रश्नसे कि सिख हिन्दू (आर्य) हैं या नहीं, हमारा कुछ सम्बन्ध नहीं, परन्तु इतना कह देना आवश्यक है कि यह प्रश्न कुछ ही वर्षोंसे उठाया गया है। महाराज रणजीतसिंहके कालमें इसका किसीको विचारतक न था। हमारे विचारमें हिन्दू (आर्य) देशवाचक (हिन्दके अधिवासी हिन्दू) शब्द है। इसका किसी धार्मिक सिद्धान्तसे कोई सम्बन्ध नहीं, यहाँतक कि बौद्ध और जैन, जिन्होंने वेदोंतककी अवमानना की है, आजतक हिन्दू (आर्य) समझे जा रहे हैं। उनके विवाह, अन्त्येष्टि संस्कार आदि सब कार्य आर्यविधिके अनुसार होते हैं। महावीर और बुद्धने नये धार्मिक तत्त्वका प्रचार किया, परन्तु समाजके संघटनको वैसा ही रहने दिया। उनके प्रचारका प्रयोजन आत्माओंका कल्याण था। ठीक इसी प्रकार सिख गुरुओंने भी नये धार्मिक तत्त्वोंका प्रचार किया और रीति-रिवाजमें प्रवेश करना व्यर्थ समझा। सिखोंका अपनेको एक पृथक् समाज बनानेका यत्न करना भी आजकल नवीन बात है। इसका परिणाम क्या होगा, कुछ नहीं कहा जा सकता।

आर्य शब्द समस्त आर्यावर्तके वासियोंके लिए प्रयुक्त किया जाता है, केवल उनका नाम हिन्दू होना चाहिये। हमारा विचार है कि आर्यावर्तके मुसलमानोंने अपना आदि स्थान अरब समझकर अपने नाम और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जातिको अरबके साथ न मिला दिया होता और केवल पैगम्बरपर विश्वास करते और अपना नाम तथा जाति न परिवर्तित करते, तो निःसन्देह वे भी आर्य कहलाते।

गुरु नानकदेव

पंजाबमें धर्मपरिवर्तनका काम गुरु नानकदेवसे आरम्भ हुआ। गुरु नानक १८ कार्त्तिक, संवत् १५२६ (४ नवंबर सन् १४६९ ई०) को लाहौरके समीप एक ग्राममें उत्पन्न हुए। इनके पिता कालू धान्यका व्यापार करते थे। बाल्यावस्थासे नानककी रुचि धर्मकी ओर थी। उन्होंने आर्यों तथा मुसलमानोंके धर्मकी भली भाँति सरीक्षा की, परन्तु सन्तोष न हुआ। अन्तको इस आत्मिक युद्धसे विरक्त होकर उन्होंने गृहत्याग किया। आर्यावर्तके भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें और आर्यावर्तसे बाहर भी भ्रमण किया, तप भी किया। अन्तको निर्णय किया कि शान्ति इन विवादोंमें नहीं, किन्तु ईश्वरकी भक्ति तथा मनको वशमें करनेमें ही पायी जाती है।

साधुका जीवन छोड़कर फिर गृहमें प्रविष्ट हुए और शेष आयु एक अकालपुरुषकी भक्ति तथा प्रेमके प्रचारमें व्यतीत की। आवागमन और मुक्तिके सम्बन्धमें गुरु नानकका सिद्धान्त आर्योंका ही था, परन्तु इसके साथ आर्योंके भीतर जो भ्रम और मिथ्यावाद फैल गया था उसका उन्होंने जोरोंके साथ खण्डन किया। जो लोग उनके उपदेशको मानते थे वे शिष्य या 'सिख' कहलाते थे।

गुरु अंगद

संवत् १५९६ (सन् १५३९ ई०) में गुरु अंगद गद्दीपर बैठे। गुरु अंगदका पहिला नाम 'लहना' था और वह गुरु नानककी सेवाका काम करते थे। गुरु अंगदने गुरु नानककी वाणियों तथा जीवन-घटनाओंको एकत्र किया और धर्मप्रचार भी करते रहे। संवत् १६०९ (सन् १५५२ ई०) में गोन्दवालके समीप खण्डूर साहबमें उनका देहान्त हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुरु अमरदास

गुरु अंगदके पश्चात् अमरदास भल्ला गुरु बने। वे भी प्रचार करते रहे; यहाँतक कि अकबर बादशाहने बुलाकर गुरु अमरदासका उपदेश सुना। गुरु अमरदासने उदासी साधुओंको, जिनकी नींव गुरु नानकके पुत्र श्रीचन्द्रने डाली थी, सिखोंसे पृथक् कहा। संवत् १६३० (सन् १५७३ ई०) में गुरु अमरदासका देहान्त हुआ। संगतके कुछ मनुष्य गोन्दवाल आ रहे थे। लाहौरमें एक चना बेचनेवाले बालकने उनसे पूछा—"कहाँ जा रहे हो?" उन्होंने उत्तर दिया—"गुरुके दर्शनार्थ।" वह भी संगतके साथ चल दिया। गुरु अमरदासको अपनी कन्याके लिए वरकी आवश्यकता थी। उनकी स्त्रीने रामदासको देखकर कहा कि ऐसा बालक मिल जाय तो अच्छा है। गुरुने कहा—'अस्तु, फिर यही सही।' रामदास गुरुका जमाता बन गया और उनके पश्चात् गद्दीपर बैठा।

गुरु रामदास

गुरु रामदास सोढ़ी जातिके थे। इनको अकबरने वह भूमि दी जहाँ उन्होंने अमृतसरका सर बनवाया। सात वर्षके उपरान्त वह भी इस लोकसे प्रस्थान कर गये। लाहौरको इस गुरुका अभिमान है जिनकी सन्तानसे गुरु अर्जुन, गुरु हरगोविन्द, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्दसिंह तथा उनके पुत्र उत्पन्न हुए। उन सबके प्राण धर्म और देशपर अर्पित हुए।

गुरु अर्जुन

संवत् १६३८ (सन् १५८१ ई०) में गुरु रामदासके पुत्र अर्जुन गद्दीपर बैठे। गुरु अर्जुनने अमृतसरको सिखोंका तीर्थ बनाया और पूर्व गुरुओंके शब्दोंको एकत्र करके ग्रन्थके रूपमें लिखवाया। आपने सिखोंसे नियमपूर्वक 'कार' भेंट लेनेकी रीति प्रचलित की और सर्वत्र अपने प्रतिनिधि कार संग्रह करने तथा धर्म-प्रचारके लिए भेजे। गुरु अर्जुनके कालमें सिखोंकी बहुत उन्नति हुई और एक संघटित राज्य स्थापित होने लगा। गुरु अर्जुनने जहाँगीरके पुत्र खुसरोकी सहायता की जिससे बाद-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शाह असन्तुष्ट था। इसके अतिरिक्त लाहौरके नवाबके मन्त्री मालचन्दुने अपनी कन्या गुरु अर्जुनके पुत्रको देनी चाही, परन्तु गुरु अर्जुनने अस्वीकार किया। चन्दुने गुरु अर्जुनको किसी विधिसे लाहौर बुलवाकर कैद करवा दिया। गुरु अर्जुन एक दिन रावी नदीमें स्नानार्थ गये और लौटकर न आये। रावी उस समय दुर्गके समीप ही बहती थी।

गुरु हरगोविन्द

गुरु अर्जुनकी मृत्युके समय उनके पुत्र हरगोविन्द ग्यारह वर्षके थे, इसलिए उनके चाचा पृथ्वीचन्दने गुरु बननेका यत्न किया। कुछ सिख इनके साथ हो गये, परन्तु सर्वसाधारण सिखोंने गुरु हरगोविन्दसिंहको गद्दीपर बैठा दिया। गुरु हरगोविन्दने अपने कर्तव्योंमें सर्वथा परिवर्तन कर दिया और अपने सिखोंको शस्त्र धारण करवा दिया। उन्होंने लाहौरके नवाबके विरुद्ध कई बार लड़ाई की। स्वयं आखेट करना आरम्भ कर दिया और सारा समय भजन-कीर्तनमें व्यतीत करनेके बदले कैम्पके जीवनको उत्तम माना। उन्होंने चोरी आदि करनेवाले अपराधियोंको अपने मतमें सम्मिलित होनेकी आज्ञा दे दी। गुरु हरगोविन्दसिंहके पास आठ घोड़े, तीन सौ अश्वारोही और साठ सरकोंवाले अंगरक्षक (बाडीगार्ड) थे।

वे अपने साथियोंको लेकर जहाँगीरके कैम्पके साथ काश्मीरतक गये। गुरु हरगोविन्दके स्वतन्त्र स्वभाव तथा कुछ रुपयेके झगड़ेके कारण जहाँगीर असन्तुष्ट हो गया और और उन्हें ग्वालियरके कोटमें कैद कर दिया। वहाँ गुरु हरगोविन्दने बन्दियोंमें प्रचार करना आरम्भ कर दिया। गुरुके सहस्रों शिष्य ग्वालियर जाते और उन दीवारोंको चूमते थे जिनके अन्दर उनके गुरु बन्द थे। अन्तको बादशाहने उन्हें मुक्त कर दिया। इस परिवर्तित नीतिके सम्बन्धमें एक कथा है। आरम्भसे ही गुरुके सामने गद्दीपर बैठते समय एक सेली और एक तलवार उपस्थित की जाती थी कि इन दोनोंमें वह जो चाहे चुन ले। पहिले चार गुरुओंने केवल सेलीको हाथमें लिया। गुरु हरगोविन्दने सेलीके बदले तलवारको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ले लिया और तलवारसे काम करना आरम्भ किया। शाहजहाँके कालमें गुरु हरगोविन्दने लाहौरके नवाबके साथ युद्ध आरम्भ कर दिया। एक सिख तुर्किस्तानसे कुछ घोड़े ला रहा था। उन्हें लाहौरके नवाबने छीन लिया और एक घोड़ा काजीको उपहार दिया। गुरु हरगोविन्दने वह घोड़ा मोल लेनेके बहाने काजीसे ले लिया। इसके अतिरिक्त काजीकी कन्या गुरुके साथ चली आयी। इसपर सात सहस्र शाही सेना अमृतसर पहुँची। गुरुने केवल पाँच सहस्र सिखोंसे युद्ध करके शाही सेनाको पराजित किया। एक और समयपर एक सिख नवाबके दो घोड़े उड़ा लाया। शाही सेना भेजी गयी। उसका नेता मारा गया और सैनिक भाग निकले। गुरु हरगोविन्दने छः-सात बार शाही सेनासे युद्ध किया और कई बार परास्त होकर भी उन्हें इधर-उधर निकल जाना पड़ा।

गुरु हरगोविन्द अब भटिण्डाके वनोंमें अपना समय व्यतीत करने लगे। जब लौटे तो नवाबने गुरुके कूका भाई पेन्देखाँको बदला लेनेके लिए भेजा। गुरु हरगोविन्दने अपने हाथसे उसका वध किया। जब एक और मुसलमान तलवार लेकर बढ़ा तो गुरुने अपनी रक्षा करके उसपर वार किया और कहा—'इस प्रकार तलवारका प्रयोग किया जाता है।' वह सैनिक गत-प्राण हो गुरु हरगोविन्दके चरणोंमें गिर पड़ा।

गुरु हरगोविन्दने अपने शिष्योंके हृदयोंमें अद्भुत प्रेम तथा त्यागका भाव उत्पन्न कर दिया था। जब संवत् १७०२ (सन् १६४५ ई०) में गुरु हरगोविन्दका देहान्त हो गया तो एक राजपूत शिष्य जलती चितापर चढ़ गया और अग्निमें भस्मीभूत होता हुआ अपने गुरुके चरणोंमें जा मिला। एक जाटने भी ऐसा ही किया और कितने शिष्य भस्मीभूत होनेको तैयार थे, पर गुरु हररायने उनको रोक लिया।

गुरु हरराय

हरगोविन्दके पुत्रकी मृत्यु हो गयी थी, इसलिए उनके पौत्र हरराय गद्दीपर बैठे। गुरु अर्जुनने धन एकत्र करना आरम्भ किया था। गुरु हरगोविन्दने उससे सांग्रामिक शक्ति उत्पन्न कर ली। इस प्रकार सिख धार्मिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्प्रदायसे राजनीतिक शक्तिमें परिवर्तित हो गये। गुरु हररायने दारा-शिकोहकी उस समय सहायता की जब वह औरंगजेबके साथ युद्ध कर रहा था। और कोई बड़ी घटना उनके समयमें नहीं हुई। गुरु हररायने प्रेम और सफलतासे अपना धर्म फैलाया। संवत् १७१८ (सन् १६६१ ई०) में उनका देहान्त हो गया।

गुरु हरकिशन

गुरु हररायके दो पुत्र थे। रामराय और हरकिशन। हरकिशनकी अवस्था सात वर्षकी थी। हररायने हरकिशनको उत्तराधिकारी चुना। परन्तु दोनों भाइयोंके लिए दो पक्ष हो गये। औरंगजेब न्यायाध्यक्ष बनाया गया। उसने हरकिशनकी योग्यतासे प्रसन्न होकर उन्हें गुरु अंगीकार किया। अभी वे दिल्लीमें ही थे कि शीतलासे पीड़ित होकर संवत् १७२१ (सन् १६६४ ई०) में मर गये। गुरु हरकिशनने मरते समय कहा कि मेरा उत्तराधिकारी गोन्दवालके समीप बुकाला ग्राममें रहता है। यहाँपर गुरु हरगोविन्दके सुपुत्र तेगबहादुरने पटनेमें चिरकाल रहनेके उपरान्त लौटकर वास किया था।

गुरु तेगबहादुर

अब गुरु तेगबहादुरने गद्दीको सुशोभित किया। रामरायके विद्रोहसे उन्हें दिल्लीमें उपस्थित होना पड़ा। औरंगजेब उन्हें बलवान् समझकर दबाना चाहता था, किन्तु जयपुरके राजा जयसिंहने औरंगजेबको समझाया कि वे साधुशील व्यक्ति हैं। कुछ समयके लिए तेगबहादुर जयसिंहके साथ वंग देश तथा आसामको गये। वहाँ उन्होंने कामरूपके राजाको अपना शिष्य बनाया। पंजाब लौटनेपर वे सिखोंकी अवस्थाके अनुसार अपने धर्मप्रचारमें प्रवृत्त हो गये। पर रामराय औरंगजेबसे यही कहता रहा कि वे अपने पिता हरगोविन्दका अनुकरण करके राजनीतिक बलकी स्थापना करनेमें लगे हुए हैं। यहाँतक तो सत्य है कि पंजाबमें उस समय गुरुको आर्योंका रक्षक समझते थे। कहा जाता है कि काश्मीरके ब्राह्मण गुरुके पास आये और प्रार्थना की कि आप धर्मकी रक्षा करें। गुरु तेग-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहादुर अपने पुत्र गोविन्दको अपना उत्तराधिकारी बनाकर पाँच सौ साथियोंके साथ दिल्लीकी ओर चल पड़े। उधर औरंगजेबने उनको पकड़नेकी आज्ञा दे दी थी। जब आगराके समीप गुरु तेगबहादुर कैद किये गये तो केवल एक शिष्य मोतीदास उनके साथ था। औरंगजेबने अपने काजीको उनके पास भेजकर उनको अपने धर्ममें लानेका यत्न किया, परन्तु असफल हुआ। आखिर संवत् १७३२ (सन् १६७५ ई०) में मोतीदासको आरेसे चिरवा दिया और गुरु तेगबहादुरका वध करा दिया। गुरु तेगबहादुरके दो सिख, जो पिता पुत्र थे, किसी प्रकार दिल्ली कोटसे अपने गुरुका शव निकाल लानेके लिए गये। पिताने अपना शरीर आप काटकर गुरुके शरीरके स्थानपर रख दिया कि शत्रुओंको शीघ्र पता न लग सके। पुत्र अपने गुरुके पवित्र शरीरको किस साहस और वीरतासे निकालकर लाया, यह एक अत्यन्त विलक्षण तथा उत्साह दिलानेवाली कथा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा प्रकरण

गुरु गोविन्दसिंह

नैनादेवीपर यज्ञानुष्ठान

गुरु तेगबहादुरके बाद गुरु गोविन्दसिंह गद्दीपर बैठे। उन्होंने आर्योंकी रक्षा और मुगल-राज्यको गिरानेकी प्रतिज्ञा कर ली। वे अल्प-वयस्क थे। उन्होंने कई वर्षतक स्वयं अनुभव प्राप्त करनेके लिए पुस्तकोंका अध्ययन किया और शेष काल सिखोंको एकत्र करनेमें लगाया। जब यह काम कर चुके तो फिर अपनी प्रतिज्ञाकी ओर ध्यान दिया। कहते हैं, उन्होंने नैनादेवीके पर्वतपर एक बड़ा यज्ञ किया जिसमें काशीसे ब्राह्मण भी बुलाये। यह यज्ञ एक वर्षपर्यन्त रहा। सहस्रों सिख चारों दिशाओंसे आकर एकत्र हुए। यज्ञकी समाप्तिपर गुरुने सिखोंसे कहा कि युद्धकी देवी बलिदान माँगती है। पाँच सिख एक-एक करके क्षेत्रमें निकले। गुरुने उनको पृथक्-पृथक् खेमेमें ले जाकर एक-एक बकरेको काट दिया। यह उसी प्रकारका यज्ञ था जिससे अग्नि-कुल राजपूत उत्पन्न किये गये थे। यज्ञकी समाप्तिपर गुरुने 'खालसा' को उत्पन्न किया। सब जातपाँतके भेदोंको अलग रखकर ऐसे मनुष्य एकत्र किये जो धर्मकी रक्षाके लिए प्राण देनेपर उद्यत हों। उन पाँच शिष्योंको अपने हाथसे अमृत पिलाकर उनके हाथोंसे स्वयं अमृत पान किया। इस प्रकार इस रीतिकी नींव डाली कि खालसा बनानेके लिए पाँच खालसोंसे अमृत पीना आवश्यक है। उनके नाम 'सिंह' में परिवर्तित कर दिये। बाल कटवानेका निषेध किया। उनके लिए कतिपय चिह्न निश्चित किये और 'वाह गुरुकी फतह' अपना सांग्रामिक नारा बनाया। इस प्रकार सिख सिंह बन गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुरु गोविन्दकी वीरता

आर्योंकी रक्षाके लिए इन नये प्रकारके राजपूतोंको गुरु गोविन्दसिंहने उत्पन्न किया। उन्होंने तीन स्थलोंपर अपना सैनिक वास बनाकर अपना बल बढ़ाया—एक नाहन, दूसरा आनन्दपुर और तीसरा चमकोर। परन्तु इसके पहले कि वे मुगलोंसे युद्ध करते, उनके लिए कोई न कोई पहाड़ी दुर्ग अधिकारमें लाना आवश्यक था, इसलिए गुरु गोविन्दने पंजाबके पहाड़ी राजाओंके विवादोंमें भाग लेना आरम्भ किया। कोह्लोरका राजा भीमचन्द मुगलसेनासे युद्ध कर रहा था। गुरु गोविन्द-सिंह उसके सहायक हो गये और मुसलमान-सेनाको पराजित करनेमें बड़ी वीरता दिखलायी। इसका असर यह हुआ कि दूसरे पहाड़ी राजाओंने भी कर देना बन्द कर दिया। इसपर एक मुगलसेना गुरु गोविन्द तथा उन राजाओंके विरुद्ध भेजी गयी। इस सेनाको भी गुरु गोविन्दके साहससे परास्त होना पड़ा। अब गुरुने अपनेको राजा घोषित किया। इससे पर्वतीय राजा भयभीत हुए और उन्होंने गुरुके विरुद्ध मुगल बादशाहसे सहायता माँगी। औरंगजेबने सरहिन्द और लाहौरके सूबेदारोंको गुरु गोविन्दके विरुद्ध भेजा। मुगलसेनाने गुरुको आनन्द-पुरमें जा घेरा। उनके साथी व्याकुल हुए और मैदान छोड़ने लगे। उनकी संख्या दिन-प्रतिदिन न्यून होती गयी। उनकी स्त्री तथा दो पुत्र भागे जा रहे थे कि मार्गमें उन्हें एक मनुष्य गंगू ब्राह्मणने पकड़वाकर सर-हिन्दके सूबेदारके सुपुर्द कर दिया।

वीर बालकोंका सत्याग्रह

वहाँ उन दोनों वीर बालकोंसे मुसलमान होनेके लिए कहा गया। उन्होंने स्पष्ट रूपसे अस्वीकार किया। इसपर उन्हें सरहिन्दके दुर्गकी दीवारोंपर खड़ा करके जीवित चुनवा दिया गया। गुरु गोविन्द शेष साथियोंके साथ भागकर चमकोरके दुर्गमें आ गये। यहाँपर बादशाही सेनाने आ घेरा और दूत भेजे कि गुरु अपने आपको अर्पण कर दें। परन्तु गुरुके पुत्र अजितसिंहने उन्हें धमकाकर लौटा दिया और वह स्वयं तल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वार लेकर क्षेत्रमें निकला। वह बड़ी बहादुरीसे लड़ता हुआ वीरगतिको प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त दूसरा पुत्र भी क्षेत्रमें काम आया। यहाँतक कि गुरुका प्रत्येक साथी वीरोत्साहमें वहीं कटकर मर गया। अन्तको गुरु गोविन्दसिंह स्वयं रात्रिको मुसलमानोंकेसे वस्त्र धारण कर निकल गये और एक दो मुसलमानोंकी सहायतासे भटिण्डा जा पहुँचे। उनके भागे हुए सिंहोंका समूह व्याकुल होकर लौट आया। उसका उस शाही सेनासे मुक्तसरकी भूमिपर युद्ध हुआ जो गुरुका पीछा कर रही थी। सिख योद्धा सबके सब कट मरे। एक मरते हुए सिखकी प्रार्थनापर गुरुने उन सबका पूर्व-दोष क्षमा किया और उस स्थानका नाम मुक्तसर रख दिया।

तदनन्तर बादशाही सेना लौट गयी और गुरु गोविन्दने दमदमामें कुछ काल रहकर दसवीं बादशाहीका ग्रन्थ बनाया। एक बार औरंगजेबने गुरुको बुला भेजा, परन्तु गुरु गोविन्दसिंहने जाना अस्वीकार किया और कहा—'अपनी क्रूरताओंका ध्यान करो। अब भी खालसा उनका बदला लेगे।' दक्षिणसे गुरुने बन्दाको अपना सांग्रामिक उत्तराधिकारी बनाकर पंजाब भेजा और स्वयं थोड़े दिन पश्चात् संवत् १७६५ (सन् १७०८ ई०) में अकस्मात् एक पठानके हाथसे मारे गये।

दस गुरुओंका महत्त्व

ये दस गुरु संसारके धार्मिक इतिहासमें अद्वितीय नेता हुए हैं। पंजाबके क्षत्रियोंके गुण उनके द्वारा देशमें प्रकट हुए। इससे सिद्ध होता है कि पंजाबके क्षत्रिय राजपूत जातिसे हैं और यद्यपि काम प्रायः वैश्योंका करते हैं, परन्तु उनमें इतनी योग्यता विद्यमान है कि समयपर धार्मिक नेता बनकर भी अपने धर्मकी रक्षा कर सकें। यद्यपि गुरु हरगोविन्दसिंह और गुरु तेगबहादुरने आर्योंकी रक्षाके लिए तन-मन अर्पण किया और प्रायः गुरु हरगोविन्दसिंहका भी यही विचार था, परन्तु जब खालसा पन्थमें बल आया तो उनका विचार यह हो गया कि जिस प्रकारसे हो, पंजाबमें और अनन्तर दिल्लीमें खालसा राज्य स्थापित हो। इसका अर्थ यह था कि इस्लामकी निष्ठुरताका अन्त तो अवश्य हो, इसके साथ आर्या-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्तका राज्य खालसाके हाथमें होना चाहिये। यह क्रिया जाति या देशके लिए न रही, बल्कि यह साम्प्रदायिक हो गयी। इसमें सिक्खोंका दोष न था। उस कालके लोग इतना ही समझते थे। राजपूत राजपूतोंका राज्य चाहते थे, मराठे मराठोंका, सिख सिखोंका और मुसलमान मुसलमानोंका।

बन्दावीर कौन था ?

'पोन्छ' प्रान्तका रहनेवाला नारायणदास नामक एक व्यक्ति था। उसे आखेटका बड़ा शौक था, इसलिए अनुमानसे कहा जा सकता है कि वह क्षत्रिय रहा होगा। एक दिन आखेट करके वह एक हरिणी लाया। जब उसका उदर फाड़ा तो उसमेंसे एक बच्चा निकला। उसके हृदयमें दयाका संचार हो गया। उसने न केवल आखेट करना छोड़ दिया, किन्तु गार्हस्थ्यका त्याग कर वैराग्य धारण कर लिया। उसका नाम लक्ष्मणदास हो गया। लक्ष्मण वैरागी दक्षिणमें जाकर रहने लगा। साधारण पुरुषोंका विचार था कि उसने भूत वशमें कर रखे हैं और वह बड़ा शक्तिशाली सिद्ध है।

बन्दाका पराक्रम

गुरु गोविन्दसिंह अपने चारों पुत्रों तथा अपने समस्त सिखोंके समाप्त हो जानेपर निराश होकर दक्षिणकी ओर चले गये। वे लक्ष्मण वैरागीसे जाकर मिले। वह उनके आनेपर प्रतिष्ठासे हाथ बाँधकर खड़ा हो गया और बोला—"मैं आपका बन्दा हूँ"। इससे 'बन्दा' नाम प्रसिद्ध हुआ। गुरु गोविन्दसिंहने उसे धर्म तथा जातिकी रक्षा करनेके लिए पंजाब भेजा। सिखोंने उसे अपना नेता स्वीकार किया। उसने आते ही सरहिन्दका दुर्ग विजित करके वहाँके शासकका वध किया और सम्पूर्ण सेनाको काट डाला। सरहिन्दका वह कोट गिरा दिया जहाँ गुरुके बालक दबाये गये थे और बहुत-सी मसजिदें जला दीं। उसने सरमोरके एक दुर्गपर अधिकार कर लिया। जबतक बहादुरशाहको यह सूचना मिले तबतक वह मराठोंके साथ सन्धि कर चुका था। वह सीधा पंजाबकी ओर आया। बन्दा वहाँसे निकलकर जम्मू जा पहुँचा। उसने पंजाबके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़े-बड़े भागोंसे कर प्राप्त करना आरम्भ किया। बहादुरशाह लाहौर पहुँचकर संवत् १७६९ (सन् १७१२ ई०) में मर गया।

बन्दाकी सफलताका रहस्य

बन्दाकी सफलताका रहस्य यह था कि मुसलमान-सेनाओंमें भी यह बात फैल गयी कि बन्दा बड़ा सिद्ध पुरुष है। उसके भूत उसके शत्रुका वध कर देते हैं। जब एक अफसर, जो उसके साथ युद्ध करने गया था, उसके तीरका निशाना बना तो कोई और अफसर उसके सामने न जाता था। बन्दा अपनी सेना लिये इधर-उधर फिरता था और देशपर विजय प्राप्त करता एवं मुसलमानोंको लूटता था।

बन्दाकी नीति

बन्दाने अपनी सफलता देखकर उचित समझा कि अपने कामपर राजनीतिक रंग चढ़ाये। उसने सांग्रामिक नारा 'वाह गुरुकी फतह' को 'जय धर्म' में परिवर्तित कर दिया। इससे तथा एक-दो और बातोंसे सिख-सेनामें कुछ अशान्ति फैल गयी।

बन्दाकी अपूर्व दृढ़ता

इधर फरुखसैर दिल्लीके राजसिंहासनपर बैठा। वह बड़ा चतुर बादशाह था। उसने अपनी चतुरतासे सिखोंमें विभेद उत्पन्न करनेका बड़ा प्रयत्न किया। गुरु गोविन्दसिंहकी स्त्री माता सुन्दरी दिल्लीमें रहा करती थी। बादशाहने उसका आदर-मान करना आरम्भ किया। उसने मातासे एक पत्र अपने सिखोंके नाम लिखवाया कि बन्दा गुरु बनना चाहता है, तुम उसका साथ न दो। सिखोंने वह पत्र बन्दाको सुनाया और कहा कि तुम 'पौहल' (अमृत) ले लो। बन्दाका उत्तर स्पष्ट था, उसने कहा कि मैंने पौहल गुरु गोविन्दसिंहसे न ली और न उन्होंने मुझसे कहा। अब मैं कैसे सिख बनूँगा ? माताका एक और पत्र आया। जिस समय बन्दा लाहौरपर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहा था, पाँच सहस्र सिख उसका साथ छोड़कर लाहौरके नवाबके पास जा नौकर हुए। लिखा है कि सिपाहीका आठ आना और हवलदारका एक रुपया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मासिक वेतन निश्चित हुआ। बन्दाने उनसे बहुतेरा कहा कि तुम इस प्रकार देशके साथ शत्रुता न करो, एक बार लाहौरपर अधिकार करके पंजाबमें अपना राज्य कायम कर लो, फिर यदि तुममें बल हो तो उसे निकाल सकते हो। 'तत खालसा' ने एक न मानी। जब बन्दाने आक्रमण किया तो बागवानपुरा (शालामार) के युद्धमें वे सिख बन्दाके विरुद्ध लड़नेके लिए आगे बढ़े। बन्दाकी सेनाका साहस टूट गया और उनको लौटना पड़ा। बन्दाने गुरदासपुरके कोटमें आश्रय लिया। बादशाही सेनाने दुर्गको एक वर्षपर्यन्त घेर रखा। जब बन्दाके पास भोजनकी सामग्री सर्वथा समाप्त हो गयी और घोड़े आदि भी खानेको न रहे तो विवश होकर उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा। बन्दा और उसके साथी कैद होकर दिल्ली पहुँचे। प्रतिदिन सौ मनुष्योंका वध किया जाता था। सिख पहिले मरनेके लिए दौड़-दौड़कर आगे जाते थे। अन्तमें बन्दा बादशाहके सम्मुख लाया गया। उसका पुत्र उसके चरणोंमें डाला गया और बन्दाको आज्ञा हुई कि तुम अपने हाथसे अपने पुत्रका वध करो। उसने साफ अस्वीकार किया। आखिर उसके पुत्रका कलेजा निकालकर उसके टुकड़े बन्दाके मुखपर फेंके गये। पश्चात् तपे हुए लोहेसे बन्दाके शरीरके टुकड़े किये गये, किन्तु बन्दाने आहतक न की और उसकी आत्मा इस नश्वर शरीरसे निकल गयी। इसके पश्चात् फरुखसैरने सिखोंका सर्वनाश करनेका बड़ा प्रयत्न किया। प्रत्येक सिखके सिरका मूल्य दस रुपये रख दिया। जो कोई किसी सिखका सिर काट लाता था वह धन प्राप्त करता था। बहुत मारे गये, बहुतोंने बाल कटवाकर आर्योंमें सम्मिलित हो जाना उचित समझा। शेष जो बचे वे पर्वतोंमें भाग गये।

बन्दा आर्य-जातिका सच्चा सेवक था

बन्दाकी समाप्तिपर सिखोंकी भी समाप्ति हो गयी। तीस वर्षपर्यन्त सिख छिपे रहे। नादिरशाहके आक्रमणके समय सिख घोड़ोंपर दिखाई देने लगे। उन्होंने फिर लूट-मार कर अपना राज्य स्थापित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना आरम्भ किया। मुगल-साम्राज्यका पतन हो गया। पंजाबमें खालसाने अपना राज्य स्थापित कर लिया। इसमें किसीको इन्कार नहीं कि खालसाने बड़े संकट उठाकर और सहस्रों मनुष्योंका बलिदान देकर निर्बल तथा पीड़ित आर्योंकी रक्षा की, परन्तु उनकी आभ्यन्तरिक इच्छा यह थी कि हम पंजाबमें अपना राज्य स्थापित करें। वे अपने बलिदानोंसे इसमें सफल हुए, किन्तु जो महापुरुष सफलताकी अन्तिम सीढ़ीपर पहुँचकर अपने विचारमें असफल रहा वह बन्दा वीर था। वह क्रूर तथा दयाहीन पुरुषोंके राज्यका विध्वंस करके उन लोगोंका राज्य स्थापित करना चाहता था जिनपर अत्याचार होते रहे। पंजाबके आर्य पीड़ित हो चुके थे। बन्दा आर्य जातिका बड़ा वीर और सच्चा हितैषी था। यही नाम पंजाबके राजनीतिक इतिहासमें अधिक प्रतिष्ठाके योग्य है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण

सिखोंकी राजनीतिक सत्ताका प्रारम्भ

मिसलोंका प्रारम्भ

जब नादिरशाहने दिल्लीपर आक्रमण किया तो सिख उस समय अश्वारोही बने दिखाई देने लगे थे। इस कालके भीतर मिसलोंकी स्थापनाका बीज बोया गया। जहाँ कहीं कोई सिख नेता होता था वह एक विशेष स्थानपर अपना 'डेरा' लगा देता था। जो सिख अपना घोड़ा तथा तलवार लाता, वह उसके डेरेका मेम्बर हो जाता था और वे एकत्र होकर लूट-मारका कार्य आरम्भ कर देते थे। इस प्रकार राजकोष और धनाढ्योंको लूटकर उन लोगोंने अपनी मिसलोंकी नींव डाली। इनके विशेष-विशेष नेता सुप्रसिद्ध हो गये।

जब मुगल-राज्य बहुत क्षीण हो गया तो सिख सरदारोंने अमृतसरमें दिवालीके समय एकत्र होकर देशके कार्योंपर विचार करना आरम्भ कर दिया। यदि कहीं कोई सिख पकड़ा जाता था तो वह मारने-मरनेपर तैयार रहता था, किन्तु अपना धर्म त्यागनेके लिए कभी उद्यत न था। जब नादिरशाह आया तो उसने पंजाबमें सिखोंको अश्वारोहियोंकी दशामें फिरते देखा। जब उसने एक समूहसे पूछा—'तुम्हारे घर कहाँ हैं', तो उत्तर मिला 'घोड़ेकी पीठपर।' यह सुन उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हीं सिखोंने नादिरशाहके सैनिकोंको और उन धनी पुरुषोंको लूटा जो नादिर-शाहके आक्रमणके कारण पर्वतोंको भागे जा रहे थे। उस समय उन्होंने रावीके तटपर ढलीवाल स्थानपर एक साधारण दुर्ग बना लिया और लोगोंसे कर प्राप्त करते ऐम्नाबादतक आ पहुँचे। एक बार तो उन्होंने सैनिकोंको मारकर भगा दिया, किन्तु जब पर्याप्त सेना आ पहुँची तो वे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैद कर लाहौर लाये गये और सबका वध किया गया। उनका स्मारक लाहौरमें शहीदगंजके नामसे अबतक प्रसिद्ध है। उसी स्थानपर भाई तारासिंहकी समाधि भी है जिसको मुसलमान बनानेका यत्न किया गया था, परन्तु जिसने अपने शरीरका एक भाग काटे जानेपर भी धर्म न छोड़ा।

जस्सासिंह कलाल

अहमदशाहके प्रथम आक्रमणके समय अर्थात् संवत् १८०५ (सन् १७४८ ई०) में जस्सासिंह कलाल नामक एक नेताने प्रसिद्ध किया कि खालसा-हृदय पुनः जाग्रत हुआ है। अमृतसरके समीप रामरोनी कोटपर उसने खालसाका झण्डा खड़ा किया। लाहौरका सूबेदार मीर मनु उसके विरुद्ध सेना लेकर गया और उसने रामरोनी कोट ले लिया। संवत् १८०९ (सन् १७५२ ई०) में अहमदशाह अब्दालीका पुनरागमन हुआ। उसने पंजाबको अपने राज्यमें मिला लिया और मीर मनुको अपनी ओरसे शासक रहने दिया। उस समय खालसाने फिर उठकर अमृतसर और पर्वतोंका मध्यवर्ती प्रान्त अपने अधिकारमें कर लिया। अदीना बेग उनके विरुद्ध सेना लेकर चला और दिवालीके दिन उन्हें पराजित किया। अदीना बेग उनसे मित्रता रखना चाहता था अतएव उसने न केवल नाममात्रका कर लेकर उन्हें छोड़ दिया बल्कि उनके एक नेता जस्सासिंह तरखानको और सिखों सहित अपनी सेनामें ले लिया।

लाहौरपर सिखोंका अधिकार

जब मीर शहाबुद्दीनने मीर मनुकी कन्यासे विवाह करके पंजाब ले लिया तो उसने अदीना बेगको शासक नियत किया। संवत् १८१२ (सन् १७५५ ई०) में अहमदशाहने फिर आक्रमण किया। वह अपने पुत्र तैमूरको शासक बनाकर छोड़ गया। तैमूरने प्रथम कार्य यह किया कि जस्सासिंह कलालके विरुद्ध,- जिसने रामरोनी कोटपर पुनः अपना शासन स्थापित कर लिया था, सेना भेजी और सब दुर्ग तथा ग्राम नष्ट कर डाले। इसपर समस्त दिशाओंसे सिख एकत्र हुए। लाहौर उनसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भर गया। तैमूर दुःखित होकर लाहौर छोड़कर चनाबकी ओर चला गया। जस्सासिंहने लाहौरपर अधिकार करके अपने नामकी मुद्रा प्रचलित की। मुद्रापर यह वाक्य लिखा गया—"खालसाकी कृपासे जस्सासिंह कलालने अहमदका देश जीतकर इसे प्रचलित किया।"

लुधियानाका युद्ध

तीन वर्षके पश्चात् जब अदीना बेगने राघोबाको अपनी सहायताके लिए बुलाया तो सिख लाहौर छोड़कर भाग गये। अहमदशाह फिर आया और उसने मराठोंको पानीपतके मैदानमें पराजित किया। अहमद-शाहके लौट जानेपर सिख नेताओंने भिन्न-भिन्न स्थानोंमें दुर्ग बनाना आरम्भ किया। चड़तसिंहने एक दुर्ग गुजराँवालामें बनाया। जब दुर्रानीका सूबेदार उससे युद्ध करनेको आया तो सिख समस्त दिशाओंसे एकत्र हो गये। उन्होंने उसे भगा दिया। उसका सब सामान लूट लिया। उसी वर्ष सब सिख अमृतसरमें एकत्र हुए। उन्होंने मालेर-कोटलाको जीत लिया और जण्डियालापर अधिकार कर लिया। संवत् १८१९ (सन् १७६२ ई०) में अब्दाली फिर आया और उसने सिखोंको लुधियानाके समीप पराजित किया। इस युद्धमें पन्द्रह-बीस हजार सिख मारे गये। अहमदशाह आलासिंहकी वीरतापर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे पटियालाका राजा बना दिया। लौटते समय उसने काबली-मल नामक एक आर्यको लाहौरका शासक नियुक्त किया, किन्तु जाते-जाते अमृतसरका मन्दिर गिराता गया। तालाबमें गौओंका वध किया। मसजिदोंके शिखरपर सिखोंके सिर रखे और उनके रक्तसे मसजिदोंको पवित्र किया।

सिखोंमें उत्तेजनाका प्रसार

इस क्रूरतासे सिख लोग अधिक उत्तेजित हुए। समस्त पंजाबमें भयावनी आग भभक उठी। सिखोंकी संख्यामें दिन-प्रतिदिन वृद्धि होने लगी। लोगोंको विश्वास हो गया कि सिख-जाति धर्मकी रक्षाके लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्पन्न हुई है। प्रायः पंजाबके जाट और राजपूत सिखोंमें मिलने लगे। उन्होंने एकत्र होकर पहिले कसूरपर अधिकार किया। मालेरकोटलाके खाँका वध किया और चालीस हजार खालसाने सरहिन्दपर आक्रमण करके वहाँके शासकको नीचा दिखाया। इस प्रकार शतद्रु नदी(सतलज)-से यमुनातकका समस्त प्रान्त सिखोंके अधिकारमें आ गया। सिख फिर सहारनपुर होते हुए दिल्लीकी ओर बढ़े। उन्होंने भरतपुरके जाटोंके साथ मिलकर दिल्लीको जा घेरा। अहमदशाहके पुनः आनेपर सिख वहाँसे लौट आये। अहमदशाह घरके कलहके कारण शीघ्र लौटा जा रहा था कि सिखोंने उसका पीछा किया और उसकी सम्पत्ति लूट ली। काबलीमलको लाहौरसे निकालकर उन्होंने झेलमतकका प्रान्त अपने अधिकारमें कर लिया। मसजिदें गिरा दीं और उनकी नींवोंको अफगानोंके हाथोंसे सूअरके रक्तसे धुलवाया। फिर संवत् १८२१ (सन् १७६४ ई०) में सिखोंका गुरुमता अमृतसरमें हुआ। वहाँपर खालसाका राज्य प्रसिद्ध किया गया और नयी मुद्रा प्रचलित की गयी जिसपर 'देग' 'तेग' और 'फतह' ये तीन शब्द थे।

सिख-राज्यकी बारह मिसलें

इसके उपरान्त दो वर्ष शान्तिसे बीते। इन दो वर्षोंमें सब स्थानोंसे खालसाने अमृतसरमें दिवालीके समय एकत्र होकर फिर गुरुमता किया। वे दरबार साहबके सम्मुख अपने सब द्वेषों तथा विवादोंको भुला देते थे और गुरुवाणी सुनकर सब बातोंका सर्वसम्मतिसे निर्णय करते थे। इस गुरुमतासे समस्त विजित देशके राज्यप्रबन्धका निर्णय किया गया। समस्त देश १२ बड़े नेताओंमें विभक्त किया गया। कुछ कालके उपरान्त उन्होंने थोड़ा-थोड़ा भाग अपने साथियोंको दिया। ये १२ प्रान्त १२ मिसलें कहलाते थे। इनके नाम तथा विभाग इस प्रकार थे—

(१) मिसल भंगिया (इनके० नेता भंग पीते थे), लाहौर—अमृतसरसे झेलमतककी यह सबसे बड़ी मिसल थी।

(२) निशानी मिसल जो निशान उठाकर ले जाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) शहीदी या निहंग मिसल, जो शहीदोंकी सन्तान थे। इन दोनों मिसलोंके स्थान करनाल और फिरोजपुरके मध्यमें थे।

(४) रामगढ़िया मिसल (रामरोनी दुर्गसे), अमृतसरके समीपस्थ देश, पर्वतकी ओर।

(५) तकिया मिसल, लाहौरके दक्षिणमें रावीके तटपर।

(६) आहलूवालया, व्यासके दक्षिणोत्तर तटके साथ।

(७) गनहैया मिसल, अमृतसर तथा पर्वतोंके मध्यका प्रान्त।

(८) सिंहपुरी मिसल, व्यासके पूर्वकी ओर और सतलजके मध्य जहाँ दोनों नदियाँ मिलती हैं।

(९) शकरचुकिया मिसल, भंगी मिसलके दक्षिणमें चनाव और रावीके मध्य।

(१०) ढेलीवाल मिसल, सतलजके ऊपर दाहिने तटपर।

(११) करोड़सिंहिया वा पंचगढ़िया, जालन्धर दोआबमें।

(१२) फुलकिया मिसल, आलासिंहकी मिसल, भटिण्डा और सोनामके मध्य और सरहिन्द तथा दिल्लीके मध्यमें।

सब खालसा इन मिसलोंमेंसे किसी न किसीके अधीन हो गया, परन्तु एक सम्प्रदाय उन अकालियोंका रह गया जो सांसारिक शक्तिके अधीन होना स्वीकार न करते थे। उनका प्रत्येक मनुष्य स्वतन्त्र था।

ये मिसलें एक प्रकारका संघ-राज्य (कॉनूफेडरेसी) थीं और ये इसी प्रकार चलती रहीं जबतक महाराज रणजीतसिंहने उनको एक साम्राज्यमें न मिला लिया।

एक समय अहमदशाह अब्दालीने उपहार-स्वरूप कुछ वस्त्र अमृतसरके सिख भाइयोंको भेजे। जब उन भाइयोंने, जो बहुत ही सादा तथा निर्धनोचित वस्त्र धारण किये हुए थे, भेंट लेनेसे इनकार किया तो अहमदशाहके दूत विस्मित हुए। जब उन्होंने आग्रह किया कि बादशाह इसे लौटा ले जानेपर अप्रसन्न होगा तो भाइयोंने कहा—'अच्छा, रणबियोंको दे दो।' जब यह समाचार अहमदशाहको सुनाया गया तो उसने कहा—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"इस जातिसे बादशाहीकी गन्ध आती है।" अब्दालीने अपने जीवन-कालमें ही अपनी यह भविष्यद्वाणी पूरी होती देख ली।

संवत् १८२४ (सन् १७६७ ई०) में अन्तिम बार अहमदशाहने भारतवर्षपर आक्रमण किया। वह सतलजतक पहुँचा, किन्तु उसकी सेना विद्रोह करके लौट गयी, अतएव उसे भी लौटना पड़ा। अभी वह अटक पहुँचा था कि शकरचुकिया मिसलने रोहतासका कोट जीत लिया। भंगी मिसलने रावलपिण्डीतकका देश अपने अधिकारमें कर लिया। वहाँसे उनका सरदार हरिसिंह मुलतानकी ओर बढ़ा। मुलतानके निकट सिन्धके मुसलमानोंने इस भयसे कि नादिरशाह उन्हें गजनी न ले जाय, सिन्धसे चलकर बहावलपुरमें एक रियासत बना ली थी। उनके सरदार मुबारक खाँने हरिसिंहसे मिलकर पाकपटन नगरतक अपनी सीमा निश्चित कर ली। इसके अनन्तर हरिसिंह डेरागाजीखाँकी ओर बढ़ा। हरिसिंहके पश्चात् झण्डासिंह उनका सरदार हुआ। उसके समयमें भंगी मिसल उन्नतिके शिखरपर पहुँच गयी थी। उसने जम्मूके राजपूत राजा रणजीत देव और कसूरके मुसलमान शासकको अपना करद बनाया और मुसलमान शासकके दुर्गपर भी अधिकार कर लिया।

अगले वर्ष जम्मूकी रियासतका एक और अधिकारी उत्पन्न हुआ। उसने शकरचुकिया सरदार चढ़तसिंह और गनहैया सरदार जयसिंहसे सहायता माँगी। वहाँ चढ़तसिंह गोली लगनेसे मर गया। जयसिंहने उसके उपरान्त जस्सासिंह आह्लूवालयाके साथ मिलकर, जिसने पर्वतीय राजाओंको अपने अधीन कर लिया था, युद्ध करके भगा दिया। जब कांगड़ाका मुसलमान शासक मर गया तो जयसिंह कांगड़ाके कोटका स्वामी बन बैठा। उसने और पर्वतीय राजाओंको अपने अधीन कर लिया। मुलतान भंगी मिसलके अधिकारमें रहा और वह कालाबागसे आगेतक कर प्राप्त करती रही। परन्तु जब संवत् १८३४ (सन् १७७७ ई०) में तैमूरशाह आया तो उसने सुगमतया मुलतानपर अधिकार कर लिया, क्योंकि उस समय भंगी मिसलका सरदार दूसरी मिसलोंके साथ झगड़ों-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में लगा हुआ था। संवत् १८५० (सन् १७९३ ई०) तक सुलतान उसके अधिकारमें रहा। फुलकियाके सरदार अमरसिंहने सरसा तथा फतहाबादको विजित कर अपनी सीमा बीकानेर और बहावलपुरतक फैला ली। जींद और कैथलके सरदार उसके करदाता थे।

करोड़सिंहिया सरदार बघेलसिंह जमुनापर नजीबुद्दौलाको दबा रहा था कि दिल्लीसे बादशाही सेनाने दोनोंके विरुद्ध प्रस्थान किया और करनाल पुनः ले लिया। अमरसिंह और बघेलसिंह मुगल-सेनाके साथ सन्धि की धुनमें लगे हुए थे। जब लाहौरसे सिख सेना उनकी सहायतामें पहुँची तो मुगल-सेना तत्काल दिल्ली लौट गयी।

नजीब रोहेलाका पुत्र जाब्ताखाँ सिखोंको बहुत चाहता था और सिखोंकी सहायतासे दिल्लीमें अपना राज्य स्थापित करना चाहता था। यहाँतक कहा जाता है कि उसने विधिपूर्वक 'पौहल' (अमृत) लेकर अपना नाम धर्मसिंह रख लिया था।

जस्सासिंह तरखान रामगढ़ियाने पंजाबसे निकलकर हिस्सारके समीप आ डेरा डाला और वहाँसे कर प्राप्त करता दिल्लीतक चला गया। उसके पश्चात् फुलकिया तथा करोड़सिंहिया सरदार गंगापार होकर रुहेलखण्डसे भी कर प्राप्त करते रहे। महादजी सिन्धियाके साथ, जो दिल्लीका शासक था, उनका समझौता हो गया कि दो-तिहाई विजय सिन्धिया और एक तिहाई सिखोंकी होगी। इसका प्रयोजन स्पष्टतया अवधको विजित करना था।

महासिंह

पंजाबमें उस समय जयसिंह गनहैया बड़ा बलवान् सरदार था। उसने चढ़तसिंहके पुत्र महासिंहको अपनी रक्षामें रखा। महासिंह भी बड़ा शूर-वीर था। उसने पहिले रसूलनगरको मुसलमानोंसे जीता। अन्तमें संवत् १८४२ (सन् १७८५ ई०) में उसने जयसिंहका खयाल न करके जम्मूके कार्योंमें शामिल होकर बहुत-सा रुपया प्राप्त किया। जयसिंह इतना अप्रसन्न हुआ कि दोनोंमें युद्ध होने लगा। महासिंहने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जस्सासिंह तरखान रामगढ़िया और राजा संसारचन्द(जयसिंहके शत्रु)-को अपनी सहायतामें बुलाया । गनहैया सिसलकी पराजय हुई । संसार-चन्दने काँगड़ाके कोटपर कब्जा किया और जस्सासिंहने अपने देशको सम्हाल लिया । महासिंह अब पंजाबमें बड़ा बलवान् प्रसिद्ध हो गया । जयसिंहका पुत्र गुरुबख्शसिंह युद्धमें मारा गया । उसकी विधवा स्त्रीने अपनी कन्या महासिंहके पुत्रको विवाहमें देना स्वीकार कर लिया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा प्रकरण

महाराज रणजीतसिंह

संवत् १८४८ (सन् १७९१ ई०) में गुजरातका भंगी सरदार गुज्जरसिंह मर गया तो महासिंहने गुजरातपर आक्रमण कर दिया, परन्तु बीमार होकर वह २७ वर्षकी उम्रमें मर गया। महासिंहके पुत्र रणजीतसिंह राज्यके उत्तराधिकारी हुए।

काबुलका शासक शाहज़मान

संवत् १८५० (सन् १७९३ ई०) में शाहज़मान काबुलके सिंहासनपर बैठा। उसके हृदयमें भारतवर्षमें राज्य स्थापित करनेकी बड़ी कामना थी। संवत् १८५२ (सन् १७९५ ई०) में वह हसन अब्दाल तक आया, किन्तु उसे पीछे लौटना पड़ा। गुलाम मुहम्मद रोहेला पंजाबसे चलकर उससे जा मिला। अवधके वजीर आसिफुद्दौलाने भी, प्रत्यक्षमें तो गुलाम मुहम्मदके विरुद्ध किन्तु वस्तुतः उसे यह दर्शानेके लिए कि समस्त मुसलमान उसकी सहायताके लिए प्रत्येक समय कटिबद्ध हैं, अपने दूत शाहजमानके पास भेजे। अंग्रेजोंने भी उस समय दिल्लीपर आँखें लगा रखी थीं। उन्हें इतना भय लगा कि उन्होंने फारसमें एक विशेष मिशन भेजा कि वह अफगानिस्तानपर आक्रमण करे ताकि शाहजमान दिल्ली न आ सके। अंग्रेजोंके सौभाग्यसे पंजाबमें सिखबल ऐसा दृढ़ हो गया कि किसी अफगानका भारतपर आक्रमण करना असम्भव हो गया। इससे अंग्रेजोंको इधरका भय जाता रहा। संवत् १८५५ (सन् १७९८ ई०) में शाहज़मान पुनः आया और लाहौरमें बिना किसी विरोधके प्रविष्ट हो गया। सिख लोग चुपचाप अलग रहे, परन्तु उसके भाई महमूदने फारससे सहायता लेकर उसकी अनुपस्थितिमें कुछ ऐसा बखेड़ा कर दिया था कि शाहज़मानको लौट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाना पड़ा। वह इस बार रणजीतसिंहके व्यवहारसे बहुत प्रसन्न हुआ। लौटते समय उसकी कुछ तोपें झेलम नदीमें डूब गयीं। उसने रणजीतसिंहसे कहा कि यदि तुम इन्हें निकालकर पहुँचा दोगे तो तुम्हें पारितोषिक मिलेगा। रणजीतसिंह लाहौरपर आँख लगाये हुए थे। उन्होंने तोपें निकलवाकर पहुँचा दीं, और शाहज़मानने उन्हें लाहौर दे दिया। उस कालसे सिखोंका इतिहास इस महापुरुषका इतिहास हो जाता है।

महाराज रणजीतसिंहकी उन्नति

रणजीतसिंहका प्रथम कार्य भंगी मिसलसे लाहौरका अधिकार लेना था। यह उन्होंने तत्काल ही गनहैया मिसलकी सहायतासे प्राप्त कर लिया। यद्यपि कसूरखाँका निजामुद्दीन पहले भंगियोंका पक्ष करता था, किन्तु अब उसने रणजीतसिंहका करदाता होना स्वीकार कर लिया। रणजीतसिंह तरनतारन गये और वहाँ फतहसिंह आह्लूवालयाके साथ मित्रता करके परस्पर पगड़ियाँ परिवर्तित कीं। उसकी सहायतासे अगले वर्ष रणजीतसिंहने अमृतसरपर अधिकार किया। संवत् १८६१ (सन् १८०४ ई०) में राजा संसारचन्दने होशियारपुर तथा बिजवाड़ापर अधिकार किया। रणजीतसिंहने युद्ध करके उसे पीछे हटा दिया। उसके पश्चात् संसारचन्द्र गोरखोंके साथ युद्ध करने लगा।

जब शाहज़मान लौटा तो उसके भाई महमूदने उसकी आँखें निकलवाकर उसका वध करवा डाला। महमूदको उसका दूसरा भाई शाहशुजा संवत् १८६० (सन् १८०३ ई०) में गद्दीसे उतारकर स्वयं सिंहासनपर बैठ गया। उस कालसे दुर्रानी राज्य निर्बल होता गया। रणजीतसिंह इससे लाभ उठानेके लिए उद्यत थे। संवत् १८६१ (सन् १८०४ ई०) में रणजीतसिंहने झंग, साहिवाल और मुलतानके मुसलमान शासकोंसे कर और उपहार इत्यादि लिये, लौटकर लाहौरमें होली मनायी और फिर स्नानार्थ हरिद्वार गये।

संवत् १८६२ (सन् १८०५ ई०) में होलकर और अमीर खाँ रणजीतसिंहके पास इस प्रयोजनसे पहुँचे कि अफगान, सिख तथा मराठा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिलकर अंग्रेजोंको दिल्लीसे निकालें जिसे उन्होंने एक वर्ष पूर्व जीत लिया था। उस समय अमृतसरमें सिख मिसलोंका गुरुमता किया गया, किन्तु सभी सरदार अपनी स्वार्थसिद्धिमें लगे हुए थे। सबको अपना बल स्थापित करने तथा राज्य बढ़ानेकी चिन्ता थी। उनमें एकता करके किसी शत्रुके विरुद्ध युद्ध करनेका उत्साह समाप्त हो चुका था, इसलिए होलकर और अमीर खाँकी आशा पूर्ण न हुई। उन्हें निराश लौटना पड़ा। इस गुरुमतासे स्पष्ट प्रकट होता था कि वह पुराना उत्साह, जिसने सिखोंके सरदारोंका एक दल बनाया था, अब दूर हो चुका था। अब एक ऐसे मनुष्यकी आवश्यकता थी जो प्राचीन संघ-राज्यके स्थानपर एक साम्राज्य स्थापित करे। वह पुरुष रणजीतसिंह थे जो पहिलेसे ही क्षेत्रमें उतर चुके थे। अगले वर्ष नाभा तथा पटियालाके झगड़ेका निर्णय करनेके लिए रणजीतसिंह बुलाये गये। सतलज पार करके पहिले तो उन्होंने मुसलमानोंसे लुधियाना लिया और भागसिंह जींदके सरदारके सुपुर्द किया। फिर पटियालासे कुछ तोपखाना और कोष उपहारमें लेकर लौट गये। लौटनेपर संसारचन्दने उन्हें सहायताके लिए बुला भेजा। संसारचन्दने बिलासपुरके राजाको अपना शत्रु बना लिया था। उसने गोरखोंको सहायता दी और उनके सेनापति अमरसिंहने कांगड़ाके दुर्गपर अधिकार कर लिया। रणजीतसिंह एकाएक उनको नहीं निकाल सकते थे, अतएव लौट आये।

महाराज रणजीतसिंहकी दिग्विजय—अंग्रेजोंसे सन्धि

संवत् १८६४ (सन् १८०७ ई०) में रणजीतसिंहने पठानोंसे कसूर जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। इसके अनन्तर मुलतानपर आक्रमण किया। यद्यपि उन्होंने नगरपर अधिकार कर लिया, किन्तु दुर्गवालोंने सामना किया। उनसे कुछ कर लेकर उन्होंने छोड़ दिया। पटियालाकी रानीके बुलानेपर रणजीतसिंह अपने सेनापति मोहकमचन्दको साथ लेकर शीतद्रु नदी पार हुए। रानीके झगड़ेका निर्णय करके उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नारायणगढ़पर अधिकार किया। इस समरमें दिल्लीवाला सरदार तारासिंह मारा गया। रणजीतसिंहने उसका दोआबका प्रान्त ले लेनेका निश्चय किया। तारासिंहकी विधवा स्त्री राहोंके दुर्गपर बड़ी वीरतासे लड़ी। रणजीतसिंहकी विजयों और निश्चयोंसे भयभीत होकर पटियाला, जींद आदिने एक डेपुटेशन (प्रतिनिधिमण्डल) दिल्लीमें अंग्रेजी गवर्नमेण्टके पास भेजा ताकि वह रणजीतसिंहके विरुद्ध उनसे एकता तथा मित्रता करे। यह समाचार सुनकर रणजीतसिंहने उन रियासतोंमें अपने दूत मित्रता करनेके लिए भेजे। उधरसे सिख रियासतोंका डेपुटेशन अंग्रेजोंसे सन्तोषजनक उत्तर न पाकर लौट आया। कारण यह था अंग्रेजी सरकारको उस समय भारतवर्षपर नेपोलियन तथा रूम-(टर्की)के आक्रमणका भय था, इसलिए वहरणजीतसिंहसे मित्रता करना चाहती थी। तदनुसार मेटकाफ उक्त प्रयोजनसे भेजा गया। रणजीतसिंह मेटकाफसे कसूरमें मिले, परन्तु उन्हें फ्रांसके विरुद्ध अंग्रेजोंसे मित्रता करनेकी कोई आवश्यकता प्रतीत न हुई। उन्होंने इस बातपर वार्तालाप समाप्त कर दिया और सतलज पार करके फरीदकोट तथा अम्बाला जीत लिये। इधर मालेरकोटला और थानेसरसे कर लेकर पटियालाके राजासे मित्रता कर ली। मेटकाफ इस कार्यवाहीपर अप्रसन्न हुआ। उसके कहनेपर अंग्रेजोंकी सेना रणजीतसिंहको रोकनेके लिए भेजी गयी। अकस्मात् इस समय यूरोपसे समाचार आया कि नेपोलियनने भारतवर्ष आक्रमण करनेका विचार त्याग दिया है। इसलिए अंग्रेजोंको अब रणजीतसिंहकी मित्रताकी कुछ परवा न रही। अब उन्होंने सतलज-पारकी रियासतोंके साथ सन्धि करनी चाही। उस समय रियासतोंके अनुभवी सरदार एकत्र हुए और विचार करने लगे कि हम किसकी ओर हों। उनमेंसे एक बुद्धिमान् सरदार बोला कि 'रणजीतसिंह हैं हैजा, अंग्रेज हैं तपेदिक। वह तो तत्काल भक्षण कर जायगा। अंग्रेजोंके साथ कुछ काल तो जीवित रहेंगे।' इसपर निर्णय हुआ कि अंग्रेजोंके साथ मित्रता की जाय। अंग्रेज रणजीतसिंहको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सतलजकी ओर रखना चाहते थे। संवत् १८६६ (सन् १८०९ ई०) में डेविड आकटरलनीने प्रसिद्ध किया कि सतलजके उधरकी रियासतें अंग्रेजोंकी रक्षामें हैं और वे रणजीतसिंहके प्रतिरोधके लिए, यदि वे उनपर आक्रमण करें, तैयार हैं। रणजीतसिंहने इस शर्तको स्वीकार करना ही उचित समझा। अमृतसरमें सन्धिपत्र लिखा गया। उससे सतलजके दक्षिण विजित प्रान्तको छोड़कर सतलज नदी सीमा निश्चित हो गयी, यद्यपि उसके पश्चात् बहुत दिनतक रणजीतसिंह सिन्धिया और होलकरके साथ दूतों द्वारा पत्र-व्यवहार करते रहे कि वे सब मिलकर अंग्रेजोंसे युद्ध करें। साथ ही, वे एक तरहसे सरहिन्दकी सिख-रियासतोंको इस विद्रोहमें मिलानेके लिए भी यत्न करते रहे किन्तु उन यत्नोंका कुछ परिणाम न निकला। अब शनैः-शनैः परस्पर मित्रता हो गयी और अंग्रेज सेनापति रणजीतसिंहके पुत्र खड्गसिंहके विवाहपर अतिथिके समान बुलाया गया।

रणजीतसिंहके लिए अपना साम्राज्य बढ़ानेकी अब एक ही दिशा रह गयी और उधर उन्होंने तत्काल रुख किया, किन्तु उन्होंने पहिले फलौर तथा गोविन्दगढ़(अमृतसर)के दुर्ग अच्छी तरह दृढ़ कर लिये।

काँगड़ामें राजा संसारचन्द और गोरखा सेनापति अमरसिंहका युद्ध हो रहा था। दोनोंने रणजीतसिंहकी सहायता चाही। अन्तको रणजीतसिंह संसारचन्दकी सहायताके बहाने दुर्गमें प्रविष्ट हुए और उन्होंने उसपर अधिकार कर लिया। गोरखा सेनापतिको पीछे हटना पड़ा। उसने बड़े क्रोधमें अंग्रेजोंसे प्रार्थना की कि हम और आप मिलकर पंजाबपर आक्रमण करें, परन्तु उसका कुछ फल न हुआ, बल्कि तीन वर्ष उपरान्त संवत् १८७१ (सन् १८१४ ई०) में अंग्रेजों तथा नेपालमें युद्ध आरम्भ हो गया।

रणजीतसिंहका विवाह गनहैया मिसलकी मताब कौरके साथ हुआ था। उससे बहुत दिनतक कोई सन्तान न हुई। संवत् १८६४ (सन् १८०७ ई०) में यह प्रसिद्ध किया गया कि वह गर्भवती है। पीछे उससे 'शेरसिंह और तारासिंह नामक दो पुत्रोंका उत्पन्न होना प्रकट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया गया, परन्तु सबको सन्देह था कि ये वास्तविक पुत्र नहीं हैं। उन बालकोंकी नानी सदा कौर अंग्रेजोंके साथ मिलकर अपने हाथमें बल रखना चाहती थी। इस कारण रणजीतसिंहने संवत् १८७७ (सन् १८२० ई०) में शेरसिंहको अपना पुत्र स्वीकार किया और सदा कौरको कैद करके शेरसिंहको उस मिसलका सरदार बना दिया। रणजीतसिंहका दूसरा विवाह तकिया मिसलके सरदार खजानसिंहकी कन्याके साथ हुआ था। उस विवाहसे संवत् १८५९ (सन् १८०२ ई०) खड़कसिंह उत्पन्न हुआ। उसका विवाह छोटी उम्रमें कर दिया गया। संवत् १८७८ (सन् १८२१ ई०) में खड़कसिंहका पुत्र नौनिहालसिंह उत्पन्न हुआ। इस प्रकार अब रणजीतसिंहने सिख मिसलोंको विवाह द्वारा तथा विजित कर अपने साथ मिला लिया और वे पंजाबके स्वामी बन गये। तत्पश्चात् उनका ध्यान मुलतान, काश्मीर तथा पेशावरकी ओर गया। उन्हें इन तीन प्रान्तोंको विजय करके पंजाबके साथ मिलानेमें कई वर्ष लगे।

मुलतानपर आक्रमण-कोहेनूर हीरा

इस समय संवत् १८६७ (सन् १८१० ई०) में शाह शुजाको उसके भाई महमूदने राज्यसे भगा दिया और फतह खाँको अपना मन्त्री बनाया। शाह शुजा भागकर सहायताकी खोजमें पंजाब आया। रणजीतसिंह उस समय वजीराबादमें थे। वहाँसे चलकर साहीवाल स्थानपर शाह शुजासे उनकी भेंट हुई, किन्तु परिणाम कुछ न हुआ। शाह शुजाने अटक होते हुए पेशावरपर अपना अधिकार जमा लिया। शाह शुजा अभी पंजाबमें ही था कि रणजीतसिंहने उसके नामसे पुनः मुलतानपर आक्रमण किया। यद्यपि वह 'भंगी तोप' साथ ले गये थे, परन्तु सफलता न हुई और लगभग दो लाख रुपया लेकर लौट आये। शाह शुजाको पेशावारसे वजीरके भाईने निकाल दिया और अटकके शासकने उसे कैद कर रखा, फिर काश्मीर भेज दिया। इसके पश्चात् मोहकमचन्दने पंजाबके मुसलमान खानों, भम्बड़ तथा रजोड़ीके राजाओंको पराधीन किया। रणजीतसिंहने ख्युड़ामें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुना कि महमूदशाह अटक पार हुआ है। वे उससे रावलपिण्डी जाकर मिले, परन्तु उसका विचार अपने भाईका पीछा करने तथा काश्मीरके शासकको शुजाको आश्रय देनेके कारण दण्ड देनेका था। इसी वर्ष अन्धा शाहज़मान भी काबुलसे प्रस्थान कर पंजाबकी ओर चला आया। अगले वर्ष वजीर फतह खाँ काश्मीरके विरुद्ध सेना लेकर आया, क्योंकि काश्मीरके राजाने महमूदशाहकी आज्ञाका उल्लंघन किया था। फतह खाँने रणजीत-सिंहकी सहायतासे काश्मीरपर आक्रमण करना चाहा, इसलिए मोहकम-चन्द सिख सेना लेकर चला। दोनों पक्ष काश्मीरपर अधिकार जमानेका विचार करते थे, परन्तु फतह खाँने काश्मीर ले लिया और अपने भाई मुहम्मद अजीमको वहाँका शासक बना दिया। मोहकमचन्दको केवल इतना लाभ हुआ कि शाह शुजा उसको सौंप दिया गया। अटकके शासकने वजीरकी विजयसे भयभीत होकर दुर्ग मोहकमचन्दको समर्पित कर दिया, जिसपर अटकमें फतह खाँ और उसके भाई दोस्त मुहम्मद खाँका सिखोंके साथ युद्ध हुआ। मोहकमचन्दने दोनों भाइयोंको पराजित किया।

शाह शुजाके पास कोहेनूर हीरा था। रणजीतसिंहकी उसको लेनेको बड़ी इच्छा थी। कई प्रकारसे यत्न किया गया और मित्रता-को स्थिर करनेके बहाने पगड़ियाँ परिवर्तित की गयीं। वह हीरा शुजाकी पगड़ीमें था। अतः अब वह रणजीतसिंहके हाथमें आ गया। 'कोहनूर'के सम्बन्धमें यह लोकोक्ति है कि रणजीतसिंहसे किसीने पूछा कि इसका मूल्य क्या है? उन्होंने उत्तर दिया "पाँच जूते"। आंग्ल सेनाने लाहौरमें प्रवेश किया तो लारेन्सको 'कोहेनूर' प्राप्त करनेकी बड़ी चिन्ता थी। जब दो-तीन दिनतक न मिला तो वह बड़ा चिन्तित हुआ। नौकरने बताया कि उसने एक पत्थरसा उठाकर एक स्थानपर रख दिया है। वह उसे उठाकर ले आया तब लारेन्सको शान्ति हुई।

शाह शुजाको रणजीतसिंहपर कुछ सन्देह हो गया और वह भागकर अंग्रेजोंके पास लुधियाना चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संवत् १८७१ (सन् १८१४ ई०) में रणजीतसिंहने काश्मीरपर आक्रमण किया। मोहकमचन्द इस बार रोगग्रस्त था। वहाँके पठान शासकने मुकाबला किया। शरद् ऋतु आ गयी थी, अतः रणजीतसिंहको लौटना पड़ा। अगले दो-तीन वर्ष महाराजको पंजाब और काश्मीरके मुसलमान और आर्य-सरदारोंको अधीन करनेमें लगे।

काश्मीर-विजय

संवत् १८७५ (सन् १८१८ ई०) खड़कसिंह सेना लेकर मुलतान-पर चढ़ा। पाँच वर्ष पूर्व खड़कसिंहने जम्मूपर विजय प्राप्त की थी। मुलतान नगरपर अधिकार हो गया, किन्तु दुर्ग बाकी था। साधुसिंह अकाली अपने साथी लेकर दुर्गपर चढ़ गया और उसपर अधिकार कर लिया। मुजफ्फर खाँ शासक और उसके पुत्र मारे गये। उसी समय फतह खाँ काबुलमें मारा गया और उसका भाई मुहम्मद अजीम खाँ अपने भाईका स्थान लेनेके लिए काश्मीरसे चला गया। रणजीतसिंहको यह शुभ अवसर प्रतीत हुआ। दीवानचन्द ब्राह्मणके अधीन सेनाने काश्मीरकी ओर प्रस्थान किया। दीवानचन्दकी वीरतासे मुलतान विजित हुआ था, अब उसीकी वीरता तथा पराक्रमसे काश्मीर भी बिना किसी रक्तपातके ले लिया गया।

पेशावरपर रणजीतसिंहका अधिकार

कुछ मास अनन्तर रणजीतसिंह स्वयं डेरा-जातपर सेना लेकर चढ़े। डेरा-गाजीखाँको जीता और संवत् १८७८ (सन् १८२१ ई०) में डेरा-इस्माइलखाँको भी अधीन किया। इसपर मुहम्मद अजीम खाँ काबुलसे सेना लेकर चला। रणजीतसिंह भी पेशावरकी ओर बढ़े। पेशावरके शासक यारमुहम्मद खाँने कुछ उत्तम घोड़े उपहारमें देकर रणजीतसिंहको वापिस किया। मुहम्मद अजीमखाँ इस कार्यसे बहुत असन्तुष्ट हुआ। रणजीतसिंह अंग्रेजोंके साथ सीमाके झगड़ेका निर्णय करके पुनः पेशावरको चल पड़े। अटक नदीको घोड़ोंपर पार किया। यह बात समस्त आर्य-जातिमें उनके पराक्रमका प्रमाण समझी जाती है। मुहम्मद अजीमने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जहादके नामपर बीस सहस्र खटक और यूसफ जई पठान एकत्र कर लिये थे। नौशहर नामक स्थानपर दोनों सेनाएँ एकत्र हुईं। इस समय फूलासिंह अकाली अपने अकालियोंको लेकर गाजियोंपर जा पड़ा और स्वयं रणक्षेत्रमें मारा गया। वह दिन रणजीतसिंहकी अलौकिक वीरतासे सिखोंके हाथ रहा। यद्यपि अफगान दूसरे दिन लड़नेको तैयार थे, पर वजीर भाग गया। महाराज रणजीतसिंहने संवत् १८८० (सन् १८२३ ई०) में पेशावरपर अधिकार कर लिया। मुहम्मद अजीम वापिस पहुँचकर मर गया और काबुलमें झगड़ा आरम्भ हो गया। अन्तमें फतह खाँके भाई दोस्तमुहम्मदने काबुलपर अधिकार कर लिया।

इस समयतक रणजीतसिंहने अपना राज्य खूब विस्तृत कर लिया था। उन्होंने मुलतान, काश्मीर और पेशावरको जीतकर अभीष्ट पूरा किया। अब इनकी इच्छा सिन्धको पराजित करनेकी थी, किन्तु सिन्धपर अंग्रेजोंकी भी आँख थी। अतः दोनोंकी नीतिने यहाँ आकर टक्कर खायी।

गुलाबसिंह तथा ध्यानसिंह

संवत् १८३७ (सन् १७८० ई०) में गुलाबसिंह तथा ध्यानसिंह महाराजकी सेवामें उपस्थित हुए। ये दोनों भाई जम्मूके प्राचीन राजा रणजीतदेवकी जातिसे थे। ध्यानसिंहने अपने सदाचारसे महाराजके दरबारमें बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। गुलाबसिंह जम्मूकी ओर रहता और सिख-सेना द्वारा राजपूतोंपर अपना अधिकार जमाता रहा। शीघ्र ही उसको राजाका पद मिल गया। राजा गुलाबसिंहने लद्दाखतक अपना शासन विस्तृत कर लिया। दरबारमें राजा ध्यानसिंहके अतिरिक्त फकीर अजीजुद्दीन बड़ा मन्त्री था और प्रत्येक बातमें महाराज उससे सम्मति लेते थे। मुलतानका सूबेदार दिवान सावनमल बनाया गया। पेशावरका प्रान्त हरिसिंह नलवाको दिया गया और काश्मीरकी सूबेदारीपर मोहकमचन्दके कुलसे मोतीराम नियुक्त हुआ। पुरानी मिसलोंके सरदारोंमें केवल फतहसिंह आहलूवालया सर्वदा महाराजके साथ रहा। देसासिंह मजीठिया अमृतसर तथा दोआबा जालन्धरका शासक बनाया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेज यात्री मूरक्राफ्ट

उसी समय अंग्रेज यात्री मूरक्राफ्ट महाराजके दरबारमें आया। महाराजने उसका यथोचित सत्कार किया। जब उसने अंग्रेजोंके साथ व्यापार खोलनेके लिए कहा तो महाराजने यह कहकर टाल दिया कि इससे सरकारकी आयमें बहुत अन्तर आ जायगा। उसी समय भरतपुरके जाट राजाने अपने लाहौरके जाट भाईसे अंग्रेजोंके विरुद्ध लड़नेके लिए सहायता माँगी। रणजीतसिंह यों ही टालते रहे। जब भरतपुरका दुर्ग लेकर लार्ड कम्बरमीयर लुधियाना पहुँचा तो रणजीतसिंहने अपने दूत सत्कारादिके लिए भेजे। आंग्ल सेनापतिकी इच्छा उनका दुर्ग देखनेकी थी, पर महाराजने साफ इन्कार कर दिया।

इस समय सतलजके उधरके तीन नगरोंके सम्बन्धमें परस्पर झगड़ा हुआ और अन्तको यह निर्णय हुआ कि आनन्दपुर और दूनी तो महाराजके पास रहें और फिरोजपुर अंग्रेजोंके हाथमें।

राजा ध्यानसिंहका पुत्र हीरासिंह बड़ा चतुर था। महाराज उससे बड़े प्रसन्न थे। उन्होंने उसका विवाह राजा संसारचन्दकी कन्याके साथ कराना चाहा। रानी और संसारचन्द अंग्रेजोंके पास भाग गये, किन्तु उसी कुलकी एक और कन्यासे विवाह बड़ी धूमधामके साथ किया गया।

सैयद अहमदशाह

संवत् १८८४ (सन् १८२७ ई०) पेशावरमें बड़ा भय उत्पन्न हुआ। दिल्लीका सैयद अहमदशाह मक्का-मदीनासे लौटकर पैगम्बरीका दावेदार बन बैठा। वह अपने कुछ अनुयायी लेकर पेशावरमें जा पहुँचा। वहाँ उसने काफिरोंके विरुद्ध जहादके सिद्धान्तका प्रचार करके बड़ा बल उत्पन्न कर लिया। बुधसिंह सन्धावाल के साथ युद्धमें यद्यपि अहमदशाह हार गया, किन्तु सिख उसका पीछा न कर सके जिससे उसका दिल और बढ़ गया। फिर रणजीतसिंहके शासक यार मुहम्मद और उसके भाई सुलतान मुहम्मदको पराजित कर सैयद और उसके गाजियोंने पेशावरपर अधिकार कर लिया। राजा शेरसिंह सेना लेकर उसके मुकाबलेपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
गया। सैयद पेशावरसे भागकर काश्मीर जा पहुँचा और वहाँ एक युद्धमें मारा गया।

अंग्रेजोंसे सम्बन्ध

रणजीतसिंहकी शक्ति इस समय उन्नतिपर थी। अंग्रेजोंको विदित हुआ कि रूस महाराजसे मित्रता करना चाहता है। उन्होंने भी मित्रताकी इच्छा प्रकट की। लार्ड विलियम बेण्टिकने शिमला जाकर महाराजके पास मिलनेके लिए दूत भेजे। आखिर रोपड़ नामक स्थानपर गवर्नर-जेनरल महाराजसे मिला और उनमें दृढ़ तथा स्थिर मित्रताका सन्धिपत्र लिखा गया।

ब्रिटिश दूत मिस्टर बरन

इससे थोड़े दिन पहले आंग्लस्थानके बादशाहकी ओरसे घोड़े उपहार देनेके लिए मिस्टर बरन सिन्ध तथा रावी नदीके मार्ग महाराजकी सेवामें उपस्थित हुआ। उसका प्रयोजन यह देखना भी था कि इस मार्ग द्वारा पंजाबसे व्यापार हो सकता है या नहीं। अंग्रेजी सरकारने सिन्ध नदी द्वारा व्यापार करनेकी आज्ञा चाही। उधर कप्तान वैड महाराजके पास उसी प्रयोजनके लिए भेजा गया। रणजीतसिंह स्वयम् सिन्धपर हाथ मारना चाहते थे। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि हम अंग्रेजोंके साथ मिलकर सिन्धपर आक्रमण करनेके लिए तैयार हैं। अन्तको उन्होंने व्यापार खोलना स्वीकार कर लिया, किन्तु साथ ही यह भी कह दिया कि इससे हमारे राज्य-विस्तारके क्रममें बहुत विघ्न पड़ेगा।

सिन्धके अमीर अंग्रेजी दूतके आनेपर व्याकुल हुए। उन्होंने शाह शुजासे सम्बन्ध करना चाहा। शुजाने रणजीतसिंहसे कहा कि यदि आप मेरी सहायता करें तो मैं फिर बादशाह हो सकता हूँ। महाराजने बड़ी कड़ी शर्तें पेश कीं। उनमेंसे दो यह थीं—

(१) समस्त अफगानिस्तानके अन्दर गोवध बन्द कर दिया जाय, और

(२) सोमनाथके मन्दिरके द्वार गजनीसे वापिस लाकर वहाँ लगा दिये जायँ। अन्तको यह शर्तें रह गयीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शाह शुजा पुनः काबुल लेनेकी चिन्तामें था। इसलिए महाराजको पेशावरपर अधिकार दृढ़ करनेकी चिन्ता हुई। संवत् १८९१ (सन् १८३४ ई०) में हरिसिंह नलवा और युवराज नौनिहालसिंह सेना लेकर पेशावर पहुँचे। उन्होंने सुलतान मुहम्मदको हटाकर शासन अपने हाथमें ले लिया। हरिसिंह उसके उपरान्त सीमाप्रान्तके पठानोंको वशमें करनेपर कटिबद्ध हो गया। उसने बन्नू, टांक, हजारापर कई बार आक्रमण किया।

रणजीतसिंहकी दृष्टि सिन्धपर लगी थी। शिकारपुर लेनेके लिए उन्होंने अनेक उपाय किये। उन्होंने हर तरहसे यत्न किया कि अंग्रेज हमारे काममें दखल न दें; पर यह कैसे हो सकता था? अंग्रेजोंने कप्तान बरनको अमीरोंकी ओर व्यापार खोलनेके बहाने भेजा, परन्तु उनका विचार उनके साथ दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करनेका था। उधर महाराजसे कह दिया कि यदि आप शिकारपुरपर आक्रमण करेंगे तो हमारे व्यापारमें विघ्न पड़ जायगा, इसलिए हम आपका विरोध करेंगे। रणजीतसिंहके सरदार कहते थे कि आप अंग्रेजोंकी चिन्ता न करें, परन्तु उन्होंने उत्तर दिया—"मराठोंके दो लाख भाले किधर गये?" फिर भी थोड़े ही कालमें रहजानके दुर्गपर उन्होंने अपना अधिकार जमा लिया।

दोस्तमुहम्मदकी पराजय

संवत् १८९२ (सन् १८३५ ई०) में दोस्तमुहम्मद खाँ शाह शुजाको पराजित करके बिलकुल निःशंक हो गया और सिखोंसे पेशावर लेनेका विचार करने लगा। उसने अंग्रेजोंसे सहायताके लिए प्रार्थना की, परन्तु अंग्रेजोंने इतनी दूरकी मित्रता उचित न समझी। खैबर दर्राके पास दोस्तमुहम्मद खाँकी सेनाको रणजीतसिंहके सिखोंने घेर लिया। दूसरे दिन दो तोपें वहाँ छोड़कर दोस्तमुहम्मद पीछे हट गया। इससे दोस्तमुहम्मदका बहुत अधिक अपमान हुआ। उसने दूसरी बार अंग्रेजोंसे सहायता माँगी। रणजीतसिंहने इस चेष्टासे भयभीत होकर दोस्तमुहम्मदसे सन्धि करनी चाही, किन्तु वह अपने कलंकका टीका धोना चाहता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जमरूदका युद्ध

हरिसिंह जमरूदमें सेना लिये विद्यमान था। वैशाख, संवत् १८९३ (एप्रिल, सन् १८३६ ई०) में जमरूदका युद्ध हुआ। अफगान उसमें सफल न हो सके। इस युद्धमें हरिसिंह जख्मी होकर मर गया। सिखों-को आते देख पठान काबुल लौट गये। महाराज अपने सेनापति हरिसिंह नल्वाकी मृत्युका समाचार सुनकर रो पड़े, किन्तु युद्धके लिए तत्काल तैयार हो गये। रामनगरसे केवल छः दिनमें तोपें जमरूद पहुँचायी गयीं। ध्यानसिंह वहाँ पहुँचा और उसने अपने हाथोंसे दुर्गकी नींव रखनेमें कुलीके सदृश काम किया। अब अंग्रेजोंने अपने आपको बीचमें डालकर सन्धि करानी चाही। इस परकार्य-चर्चाका परिणाम सर्वथा विभिन्न हुआ। अंग्रेजोंको रूस तथा फारससे भय हो गया। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि काबुलके सिंहासनपर अपने दोस्त शाह शुजाको बैठावें। इस आक्रमणका बड़ा भयानक परिणाम हुआ। संवत् १८९४ (सन् १८३७ ई०) में नौनिहालसिंहका विवाह शामसिंह अटारीवालाकी कन्याके साथ बड़ी धूमधामसे हुआ।

जब अंग्रेजोंने शाह शुजाको सिंहासनपर बैठानेका दृढ़ निश्चय कर लिया तो रणजीतसिंहको बड़ा क्रोध हुआ। उनका स्वास्थ्य उस समय बिगड़ रहा था अतः वे कुछ कर नहीं सकते थे। अंग्रेजी सेनाने कन्द-हारको जीत लिया। रणजीतसिंहके चित्तमें बहुतसी आकांक्षाएँ थीं किन्तु इसी समय उन्हें मृत्युने आ दबाया, और संवत् १८९६ (सन् १८३९ ई०) में यह 'पञ्जाब-केसरी' इस लोकसे प्रस्थान कर गया।

शिवाजी तथा रणजीतसिंहके काममें समानता

इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि १९वीं सदीके पूर्वार्द्धमें रणजीतसिंह भारतवर्षके एक बड़े व्यक्ति थे। उनका वही स्थान था जो १७वीं शता-ब्दीके अन्तमें शिवाजीका था। दोनों पढ़ने लिखनेसे अनभिज्ञ थे। परन्तु दोनोंके अन्दर एक ही प्रकारके भाव काम करते थे। आर्यधर्मके सिद्धान्तों-पर दोनोंका एक ही तरहका विश्वास था। दोनोंने दशहरेके उपरान्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजयके लिए निकलनेकी रीति प्रचलित की। दोनोंने बलके बिखरे हुए टुकड़ोंको एकत्र करके साम्राज्यकी नींव डाली। रणजीतसिंहको भी वैसी ही सफलता प्राप्त हुई। रणजीतसिंहके आदमी धार्मिक उत्साहसे भरे हुए थे। शाह शुजासे प्रतिज्ञापत्र, गो-रक्षा तथा सोमनाथ-मन्दिरके लिए प्रयत्न और कोहेनूर हीरा लौटा लेना उपर्युक्त कथनकी पुष्टि करता है।

पाश्चात्य ढंगपर सेनाका संघटन

आंग्ल सेनाको अत्यन्त नियम-बद्ध देखकर रणजीतसिंहको बड़ी लालसा हुई कि हमारे सिखोंमें भी वही संघटन आ जावे। इस प्रयोजनके लिए उन्होंने एलाई, वैण्टोरा, कोर्ट, आदित्वेला—इन चार फ्रेंच अफसरोंको नौकर रखा। उन्हें अपने प्रयोजनमें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। वे अपने तोपचियोंको लुधियानेमें तोप चलाना सिखलाना चाहते थे। उनका अंग्रेजी बन्दूकें और गोले बनाना सीखनेका स्वयं बड़ा विचार था। वे पश्चिमीय युद्ध-विधिका अनुकरण करना चाहते थे। उन्होंने कई विद्यार्थियोंको लुधियानेमें डाक्टरी तथा अंग्रेजी सीखनेके लिए भेजा, ताकि वे पलटनोंमें काम आ सकें। विद्याशून्य होनेपर भी वे दिन-रात राजनीतिक कार्योंपर विचार करते रहते थे। अगर कभी अर्द्धरात्रिको भी उन्हें कोई विचार आता तो उसी समय मन्त्रीको बुलाकर उसे लिखवा देते थे ताकि भूल न जाय।

रणजीतसिंह अपने आपको सदैव खालसाका सेवक कहते थे। सब राज्य खालसाका था। रणजीतसिंहका घरेलू आचार बहुत अच्छा न था। उन्हें मदिरापान करनेका व्यसन था। परन्तु उस समाजका विचार करके जिसमें रणजीतसिंह पैदा हुए थे, यह दोष बड़ा नहीं समझा जा सकता।

रणजीतसिंहको अपने राज्यका बहुत ध्यान रहता था। अंग्रेजोंको वे सदा भयकी दृष्टिसे देखते थे। यदि वे युवक होते या अंग्रेजोंके दिल्ली आनेसे पूर्व उन्होंने अपना साम्राज्य बना लिया होता तो वे अवश्यमेव अंग्रेजोंका मुकाबला करते। परन्तु जिन परिस्थितियोंके अन्दर उन्हें काम करना पड़ा उनसे वे विवश थे। जब कप्तान वेडने उन्हें भारतका मान-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
चित्र दिखाया और बताया कि लालरंग आंग्लराज्यका चिह्न है तो उन्होंने दीर्घ श्वास लेकर कहा—"यह सब लाल हो जायगा।" इस महापुरुषकी आत्मा उन्हें भविष्यकी बातें बता रही थी, पर प्रश्न यह है कि वे करते तो क्या करते ?

रणजीतसिंहके जीवनका उद्देश्य

केवल एक बात वे कर सकते थे जिसके कदाचित् वे योग्य न थे—वे अपना समय अपने राज्यको दृढ़ बनानेमें लगाते। उस कालमें कोई ऐसा नीतिज्ञ उत्पन्न करनेका यत्न करते जो उनके अनन्तर उनके निर्माण किये हुए भवनकी रक्षा कर सकता। परन्तु वे तो विजय प्राप्त कर राज्यकी वृद्धि करना जानते थे। उन्हें नागरिक-प्रवन्धमें रुचि न थी। वे समझते थे कि जितना समय हम इन बातोंके सोचनेमें लगावें उतनेमें हम एक और प्रान्त क्यों न विजित कर लें। उनके जीवनका एक ही उद्देश्य था—देश-विजय करके साम्राज्य बनाना। यदि 'खालसा' का सौभाग्य होता तो रणजीतसिंहके पश्चात् कोई ऐसा व्यक्ति आगे आ जाता जो इस भवनको दृढ़ करता। परन्तु इसके सर्वथैव विरुद्ध हुआ। रणजीतसिंहके मर जानेपर जिन मनुष्योंके हाथोंमें राज्यकी बागडोर आयी वे उसके विनाशपर तुले बैठे थे। जब आक्रामक सिरपर हो तो भवनके गिरनेमें देर कैसे लग सकती थी ? अंग्रेजोंका सौभाग्य था कि जिस समय रणजीतसिंह लाहौरमें अपना राज्य बनाने बैठे उस समय अंग्रेजी राज्य दिल्ली तक फैल गया। जब वे सिखोंकी छोटी छोटी मिसलोंको अपने अधिकारमें करके बलसंचय कर रहे थे, उन्हींमेंसे फुलकिया रियासतोंको अंग्रेजोंने अपनी रक्षामें ले लिया। यदि कुछ वर्ष और अंग्रेजोंको देर होती तो फुलकिया रियासतें रणजीतसिंहके राज्यका भाग हो जातीं। वे बजाय इसके कि रणजीतसिंहके विरुद्ध होकर अंग्रेजोंको पंजाबमें आनेका अवसर देतीं, उसी साम्राज्यका भाग होकर उसे सुदृढ़ करतीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पञ्चम खण्ड (प्रथम भाग)

अंग्रेजोंकी बल-वृद्धि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिला प्रकरण

दक्षिणमें फ्रांसीसी और अंग्रेज

डूप्ले

डूप्ले ही प्रथम व्यक्ति था जिसे भारतमें राजनीतिक सत्ता स्थापित करनेका विचार सूझा। इसके पूर्व अंग्रेज लोग यत्न करके पचास वर्षके लिए निश्चेष्ट हो गये थे और अपने व्यापारमें लग गये थे। अब उन्हें दूसरा अवसर दक्षिणमें मिला जब कि डूप्ले फ्रांसीसी गवर्नर था। उसने दक्षिणमें फ्रांसीसी राज्य स्थापित करनेका उपाय सोच लिया।

इतिहासका नया क्रम

संवत् १८०० (सन् १७४३ ई०) में हरिवर्षीय जातियोंमेंसे केवल अंग्रेज और फ्रांसीसी ही उज्ज्वल भविष्यकी आशामें बैठे हुए थे। उनके पारस्परिक संग्रामसे भारतवर्षके इतिहासमें एक नया क्रम आरम्भ होता है। उनका संग्राम शुरू होनेके समय दक्षिणमें निजामने हैदराबादका स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था, करनाटकपर निजामका एक नायब शासन करता था जो अरकाटका नवाब कहलाता था। त्रिचनापलीमें एक आर्य राजा था। तञ्जोरमें शिवाजीकी सन्तान राज्य करती थी और मैसूरमें आर्यजातिकी रियासत थी। इनके अतिरिक्त छोटे-छोटे किलोंपर विजयनगरके विनाशके पश्चात् नायक लोगोंने अपना अधिकार जमा लिया था।

डूप्लेकी कार्यपटुता

हरिवर्षीय व्यापारी उस समय तक अपने आपको प्रजाके सदृश समझते थे। जब संवत् १८०० (सन् १७४३ ई०) में हरिवर्षमें आंग्लस्थान तथा फ्रांसमें युद्ध प्रारम्भ हुआ, और मद्रासके अंग्रेज गव-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
नरने पाण्डिचेरीकी फ्रांसीसी बस्तीपर आक्रमण करनेकी तैयारी की, तब वहाँके गवर्नर डूप्लेने करनाटकके नवाबसे प्रार्थना की कि अंग्रेजोंको इस प्रकार झगड़ा करनेसे रोक दें। अंग्रेज गवर्नरने बिना किसी प्रकारकी आपत्तिके नवाबकी आज्ञा मान ली और जहाजोंके कप्तानको आक्रमण करनेसे रोक दिया। संवत् १८०२ (सन् १७४५ ई०) तक यह दशा रही कि कारोमण्डल तटपरके समस्त मनुष्योंपर, चाहे वे किसी देशके हों, बादशाहका ही शासन था। परन्तु उस वर्ष फ्रांसीसियोंने अपनी सामुद्रिक शक्ति तथा सैनिक शक्ति अंग्रेजोंसे अधिक देखकर मद्रासपर आक्रमण करनेकी तैयारी कर दी। मद्रासके गवर्नरने अपना दूत नवाबके पास इसलिए भेजा कि अब वह फ्रांसीसियोंको इस विचारसे रोके। गवर्नरने वह दूत बिना किसी उपहारके भेजा था जिससे नवाब कुपित हो गया। उधर डूप्लेके मनुष्य उपहार लिये हुए नवाबकी सेवामें उपस्थित हुए। उस समय नवाबसे मूर्खता यह हुई कि उसने उपहारोंके लोभमें आकर फ्रांसीसियोंको न रोका। यह मौन उसके लिए बहुत बुरा सिद्ध हुआ। जब फ्रांसीसी सेना मद्रासमें थी और मद्रासकी अभी विजय नहीं हुई थी कि नवाबके दूत पहुँचे। उन्होंने डूप्लेसे बिना आज्ञाके युद्ध करनेका कारण पूछा और कहा कि यदि तुम युद्ध बन्द नहीं करोगे तो नवाबी सेना तत्काल पहुँचेगी। डूप्ले बड़ा बुद्धिमान् पुरुष था। वह ऐसे मौकोंको सँभालना अच्छी तरह जानता था। उसने नवाबको उत्तर दिया कि यह आक्रमण आपके ही लाभके उद्देश्यसे किया गया है। मद्रास लेकर मैं आपको अर्पण कर दूँगा और उसे पुनः लेनेके लिए अंग्रेज बहुतसा धन आपकी भेंट करेंगे।

नवाबके कुछ निश्चय करनेके पूर्व ही मद्रास फ्रांसीसियोंके हाथ आ गया। यह समाचार सुनकर उसने अपने पुत्र महफूजखाँको दस हजार सेना सहित मद्रासको खाली कराने और उसपर अधिकार करनेके लिए भेजा। वह सेना लेकर कई सप्ताह तक पड़ा रहा किन्तु डूप्लेने उसे मद्रास अर्पण करनेसे इन्कार कर दिया। अन्तमें नवाबने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मद्रासपर आक्रमण कर फ्रांसीसियोंको निकाल देनेकी आज्ञा भेजी। महफूजखाँने आक्रमण करके जलमार्गको सर्वथा काट देना चाहा।

नवाबी सेनासे युद्ध

फ्रांसीसी अफसरके सामने अब दो ही मार्ग थे, या तो वह सामना करता या मद्रास दे देता। दूसरे दिन उसने अपने मनुष्योंको तोपें सामने करनेकी आज्ञा दी। भारतवासियोंको उस समय तक हरिवर्षीय तोपोंका कुछ भी ज्ञान न था। भारतीय सैनिक पन्द्रह-पन्द्रह मिनटके पश्चात् तोप दागते, फिर शत्रुके वारकी प्रतीक्षा करते थे। हरिवर्षमें तोप चलानेकी विद्या उन्नति कर चुकी थी। वे मिनटमें पाँच छः बार तोप दाग देते थे। जब नवाबकी सेनापर निरन्तर गोले पड़ने लगे तो वह व्याकुल हो गयी और कुछ ही मिनटोंके भीतर भाग खड़ी हुई। थोड़ी दूरीपर जाकर महफूजखाँने अपनी सेनाको ठहराया और ओयार नदीके तटपर मोर्चा बाँधा। उसके विचारमें यह दौड़धूप केवल व्याकुलताके कारण हुई थी। डूप्लेने सौ फ्रांसीसी और सात सौ भारतीय सैनिकोंको सामना करनेके लिए भेजा। जब नवाबकी सेनाकी ओरसे तोप चली तो फ्रांसीसियोंकी पलटनने धावा करके नवाबकी सेनाको पराजित कर दिया। इस युद्धसे भारतवर्षके इतिहासमें एक नये युगका आरम्भ हुआ। हरिवर्षीय जातियाँ जो अब तक व्यापारकी ही धुनमें लगी हुई थीं, राजनीतिक कार्योंमें भी भाग लेनेके लिए उद्यत हो गयीं और भारतके नवाब और राजा भी उनकी सहायता पानेके इच्छुक होने लगे।

अंग्रेजोंने फोर्ट डेविडमें जाकर आश्रय लिया। क्लाइव नामक एक क्लार्क भी उनके साथ था। दो वर्ष पश्चात् इंग्लैंड और फ्रांसमें सन्धि हो जानेपर मद्रास अंग्रेजोंको वापस मिल गया परन्तु दक्षिण भारतमें फ्रांसीसी जातिका सिक्का जम गया, और करनाटकमें तो प्रत्येक कार्यमें उनकी चर्चा होने लगी। डूप्लेने अपना राजनीतिक बल बढ़ानेका ढंग भी सोच लिया। यह उसकी नीति थी जो अंग्रेजोंने उससे सीखी और उसी-पर उसका प्रयोग करना आरम्भ किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निजामकी मृत्युपर गद्दीके लिए झगड़ा

संवत् १८०५ (सन् १७४८ ई०) में निजामुल्मुल्कका देहान्त हो गया। उसके छः पुत्र थे। सिंहासनके लिए उनमें परस्पर विवाद होना अनिवार्य था। एक ओर तो मराठे सबसे ज्येष्ठ पुत्र गाजीउद्दीनकी ओर होकर अपने बलकी वृद्धि चाहते थे, दूसरी ओर दूप्ले अपनी नीतिके अनुसार फ्रांसीसी बल बढ़ानेकी चिन्तामें था। निजामुल्मुल्कके अनन्तर उसका पुत्र नासिरजंग सिंहासनपर बैठ गया। दूप्लेने उसके भतीजे मुजफ्फरजंगका पक्ष लेकर रामदास नामक एक ब्राह्मणको हैदराबादमें अपना प्रतिनिधि बनाया। उसने नासिरजङ्गकी सेनामें अविश्वास फैलाकर उसका वध करवा डाला। दूप्लेकी चाल काम कर गयी और मुजफ्फरजङ्गने सिंहासनपर अधिकार कर लिया। उसके द्वारा करनाटकका नवाब भी दूप्लेका मित्र बन गया। कुछ कालके अनन्तर मुजफ्फरखाँ एक युद्धमें मारा गया और उसके स्थानपर संवत् १८०८ (सन् १७५१ ई०) में सलाबतजङ्ग राजगद्दीपर बैठाया गया। फ्रांसीसी अफसर बूसी उसके साथ रहने लगा और मराठोंके विरुद्ध लड़ता रहा। दूप्लेका प्रयत्न सफल हुआ। अंग्रेजोंको भी दूप्लेकी नीति देखकर चिन्ता बनी हुई थी, क्योंकि वह अपने सहायकोंको ही हैदराबाद तथा करनाटकका शासक बनाना चाहता था।

अंग्रेजोंने भी फ्रांसीसियोंके शत्रुओंके साथ होकर सहायता करना आरम्भ कर दिया। दूप्लेने चाँदा साहबको करनाटकका नवाब बनाया था। अंग्रेज मुहम्मदअलीके समर्थक थे। मुहम्मदअलीने अपने आपको नवाब प्रसिद्ध कर त्रिचनापलीपर अधिकार कर लिया। उसके विरुद्ध एक फ्रांसीसी सेनाने जाकर त्रिचनापलीको घेर लिया।

राबर्ट क्लाइव

क्लाइव नामक एक नवयुवक अंग्रेजने, जो घरसे भागकर भारतमें आया था और मद्रासमें किरानीका काम करता था, कुछ सेना लेकर अरकाटमें देशी सेनाको, जो फ्रांसीसियोंकी अध्यक्षतामें थी, पराजित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके अरकाटपर अधिकार कर लिया। इसपर मुरारी घोरपड़ेने कहा कि क्लाइवने यह सिद्ध कर दिखाया है कि अंग्रेज भी युद्ध करना जानते हैं। उसके उपरान्त क्लाइव फोर्ट डेविड पहुँचकर त्रिचनापलीके लिए सेना एकत्र करने लगा। परन्तु इतने कालमें नवाबके पुत्र आसफिया साहबने मद्रास तकके ग्राम जला दिये जिससे अंग्रेज अपनी रक्षाके लिए चिन्तित हो गये और त्रिचनापली न जा सके। इतनेमें वङ्गदेशसे भी अंग्रेजी सिपाही पहुँच गये और क्लाइव चार सौ अंग्रेजी और तेरह सौ देशी सिपाही लेकर चल पड़ा। कावेरी पाकपर आसफिया साहब और फ्रांसीसी सेना युद्धके लिए तैयार थी। जब क्लाइवकी सेना पहुँची तो फ्रांसीसी सेनाकी ओरसे गोलाबारी आरम्भ हुई। क्लाइव बड़े कष्टमें था। शत्रुकी मोर्चेबन्दी सुदृढ़ थी। इसी युद्धपर दोनोंके भाग्यका निर्णय अवलम्बित था। क्लाइवने संकटके समयमें बड़ी वीरता दिखायी और कावेरीपाकपर विजय प्राप्त की। इस विजयसे क्लाइवने अंग्रेजोंकी वीरताका महत्त्व दक्षिणमें स्थापित कर दिया। इसके उपरान्त करनाटकमें अंग्रेजोंकी शक्ति बढ़ गयी। उनका सहायक मुहम्मदअली करनाटकका नवाब बनाया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा प्रकरण

बंगालमें अंग्रेज

कावेरीपाकके युद्धके बाद बंगालमें अंग्रेजोंको डूप्लेकी नीति काममें लानेका अवसर मिला। जिस व्यक्तिने दक्षिणमें अंग्रेजोंका प्रभुत्व जमाया था उसीने बंगालमें भी अंग्रेजोंको एक राजनीतिक शक्ति बना दिया। वहाँ भी एक ही युद्धने अंग्रेजोंके भविष्यका निर्णय कर दिया। आश्चर्यकी बात है कि भारतवर्षमें किस प्रकार केवल एक युद्धपर ही सारा भविष्य अवलम्बित रहा है।

मुर्शिदकुलीखाँ

बंगालमें वह अवसर किस प्रकार आया—यह समझनेके लिए वंगदेशका थोड़ा वृत्तान्त जानना आवश्यक है। औरंगजेबकी मृत्युके समय मुर्शिदकुलीखाँ वंगदेशका शासक था। यह जन्मसे तो ब्राह्मण था किन्तु दासकी दशामें फारसमें पला था। इसने बड़ी योग्यतासे अपने प्रान्तका प्रबन्ध किया और ढाकाकी जगह मुर्शिदाबादमें अपनी राजधानी बनायी। मुर्शिदाबाद कासिमबाजारके समीप है। यहाँ डच, अंग्रेज तथा फ्रांसीसियोंकी कोठियाँ थीं। अंग्रेजोंने फोर्ट विलियम बनानेकी ओर ध्यान दिया। मुगल अफसर अधिकसे अधिक कर उनसे प्राप्त करते रहे। औरंगजेबके अनन्तर मुगलसाम्राज्यका पतन हो गया। मुगलशासकोंको यह ध्यान ही न रहा कि कहाँ क्या हो रहा है, इसलिए अंग्रेजोंको दुर्ग बढ़ाने, वहाँ शस्त्र एकत्र करने तथा सैनिक रखनेमें किसी प्रकारकी बाधा न हुई।

अंग्रेजोंको विशेष अधिकार मिले

संवत् १७७० (सन् १७१२ ई०) में कलकत्तेकी कौंसिलने अपने दूत मुगल दरबारमें भेजे। उनमें एक डाक्टर विलियम हैमिल्टन था। फरुखसैर बादशाह किसी ऐसे रोगसे पीड़ित था जिसकी चिकित्सा देशी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वैद्य करनेमें असमर्थ थे। इस रोगके कारण एक राजपूत कन्यासे विवाह करनेमें बाधा पड़ती थी। हैमिल्टनने उसकी चिकित्सा करके उसे नीरोग कर दिया। उससे जब पारितोषिक माँगनेके लिए कहा गया तो उसने स्वकीय लाभका विचार न कर अंग्रेजोंके लिए बंगदेशमें अधिकार माँगे। बादशाहने आज्ञा दे दी और उनको पहलेके सब अधिकार पुनः दे दिये गये। कौंसिलके प्रधानको आज्ञा मिल गयी कि जिस मालपर वह चाहे कर न लगाया जाय् बल्कि उसकी जाँच ही न की जाय। कलकत्तेके समीप उनको ३८ ग्राम नाममात्रका कर देनेपर दे दिये गये और मुर्शिदाबादकी टकसाल उनके सुपुर्द कर दी गयी।

इसके दस वर्ष उपरान्त कलकत्ता अत्यन्त सुन्दर तथा समृद्धिशाली नगर बन गया। व्यापार बहुत बढ़ गया। बंगदेशके धनी यहाँ भवन बनाकर निवास करने लगे! मुर्शिदकुलीखाँके शासन-कालमें प्रबन्ध ठीक रहनेसे कलकत्तेके व्यापारमें भी बड़ी सहायता मिली।

अलीवर्दीखाँ

मुर्शिदकुलीखाँ संवत् १७८२ (सन् १७२५ ई०) में मर गया। उसका दामाद शुजाउद्दीन १४ वर्ष पर्यन्त शासन करता रहा। संवत् १७९६ (सन् १७३९ ई०) में उसका पुत्र सरफराजखाँ सिंहासनपर बैठा। यह बड़ा व्यभिचारी था। धनी तथा प्रतिष्ठित पुरुष उससे अप्रसन्न हो गये। अलीवर्दीखाँ, जो नवाबके घरका एक नौकर था, बढ़ते-बढ़ते बिहारका गवर्नर हो गया था। उसने इस अवसरसे लाभ उठाकर आक्रमण कर दिया। वहाँका सेठकुल भी उसकी ओर हो गया, सेना भी उससे मिल गयी। उसने तोपोंमें केवल बारूद भरकर चलाना आरम्भ किया। युद्धके उपरान्त अलीवर्दीखाँ संवत् १७९८ (सन् १७४१ ई०) में बंगालका नवाब स्वीकार किया गया। उसका सारा समय मराठोंसे युद्धमें व्यतीत हुआ। प्रत्येक वर्ष मराठा सेना आक्रमण करनेके लिए तैयार रहती थी। कई बार उसने मुकाबला किया, परन्तु जब संवत् १८०७ (सन् १७५० ई०) में उड़ीसा मराठोंके हाथ आ गया तो अली-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वर्दीखाँने उनसे सन्धि कर ली जिसके अनुसार कटक मराठोंको मिल गया और बंगाल तथा बिहारके लिए १२ लाख वार्षिक कर देना निश्चय हुआ।

इस समय अंग्रेजोंको भी मराठोंका भय उत्पन्न हुआ। उन्होंने अपनी रक्षाके लिए कलकत्तेके इर्दगिर्द एक खाई खोदनेकी आज्ञा अलीवर्दीखाँसे प्राप्त की परन्तु तीन मील खाई खोदनेके बाद यह काम बन्द कर दिया गया। अभीतक यह खाई मराठोंके नामसे प्रसिद्ध है। अलीवर्दीखाँ संवत् १८१२ (सन् १७५५ ई०) में मर गया।

सिराजुद्दौला बंगालका नवाब

उसके स्थानपर उसका दौहित्र सिराजुद्दौला* सिंहासनपर बैठा। सिराजुद्दौला उस समय १८ वर्षका बालक था। वह बहुत ही सुन्दर था और उसका नाना अलीवर्दीखाँ उसे ऐसे प्रेमपूर्ण पत्र लिखा करता था जो प्रणयात्मक कहे जा सकते हैं। उसकी बाल्यावस्था बड़े लाड़प्यारमें व्यतीत हुई। उसे न कुछ शिक्षा दी गयी और न किसी कष्टका उसने अनुभव ही प्राप्त किया। किसीके साथ क्रूरता तथा कठोरता दिखलानेका कोई चिह्न उसमें विद्यमान न था। अंग्रेज ऐतिहासिकोंने यों ही उसे निष्ठुर तथा बुरा प्रसिद्ध कर रखा है।

कलकत्तेपर आक्रमण

मरते समय नवाबने सिराजुद्दौलाको कलकत्तेके अंग्रेजोंसे सावधान रहनेके लिए सचेत कर दिया था। वस्तुतः उसके हृदयमें अंग्रेजोंका खटका भी बना हुआ था। अंग्रेजोंने अलीवर्दीखाँकी मृत्युसे लाभ उठाकर दुर्गको और दृढ़ करना आरम्भ कर दिया और साथ ही उन मनुष्योंको, जिन्होंने सिराजुद्दौलाके विरुद्ध द्रोह किया था, आश्रय दिया। इससे अप्रसन्न होकर उसने अपने दूत कलकत्ता कौंसिलके पास भेजे। कौंसिलने उनकी कुछ परवा न की। इसपर नवाबने कासिमबाजारकी कोठी जब्त करनेकी आज्ञा दी और कलकत्तेपर आक्रमण करके पाँच दिनमें अपना

---

* इसका वास्तविक नाम चिरागुद्दौला था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिकार जमा लिया। कलकत्तेके सभी अंग्रेज नावोंपर बैठकर भाग गये। कौंसिलका एक सदस्य, मिस्टर हालविल भी नावपर भागनेके लिए तैयार था पर किसी औरने वह नाव ले ली और वह बेचारा वहीं रह गया।

अंग्रेजोंने फिल्टामें जाकर आश्रय लिया और वहाँ मद्राससे सहायताकी प्रतीक्षा करने लगे। यह घटना ५ आषाढ़ (१९ जून) को हुई। इसकी सूचना ३१ आषाढ़ (१५ जुलाई) को मद्रास पहुँची। वहाँसे क्लाइवने, जो इङ्गलैण्डसे होकर पुनः आ गया था, सेना लेकर वंगदेशकी ओर प्रस्थान किया।

ब्लैकहोलकी पोल

यहाँपर 'ब्लैकहोल' (कालकोठरी) की घटनापर कुछ प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है, इसलिए नहीं कि सचमुच १८ फुट लम्बी चौड़ी कोई बन्द कोठरी थी जिसमें सख्त गरमीकी रातमें १४६ अंग्रेज बन्द कर दिये गये, और प्याससे तड़प तड़प कर २३ के सिवा शेष सब मर गये, बल्कि इसलिए कि किस प्रकार यह कपोलकल्पित मिथ्या घटना फैलायी गयी और क्यों प्रत्येक अंग्रेज (ऐतिहासिक) इसको बराबर लिखता चला आता है। यदि युद्धके समय नवाबके ज्ञानके बिना, जैसा कि सब लेखक मानते हैं, यह घटना हो गयी होती तो कोई आश्चर्यजनक बात न थी। परन्तु सत्य बात तो यह है कि घटना हालविलकी कपोलकल्पना मात्र है। उसका इस घटनाके गढ़नेका उद्देश्य नवाबकी अप्रतिष्ठासे बढ़कर अपने त्याग तथा धीरताका सिक्का इङ्गलैण्डके लोगोंके हृदयोंपर बैठाना था। हालविल और उसके दो साथियोंको नवाबने कुछ दिनोंके बाद छोड़ दिया।

इस कल्पनाका आधार एक पत्र है जिसे हालविलने आठ मास बाद जहाजमें सफर करते हुए लिखकर अपने एक मित्रको इङ्गलैण्ड भेजा था। उसने वह पत्र समाचारपत्रोंमें छपवा दिया जिससे कुछ कालके लिए इङ्गलैण्डमें जोश फैल गया। इस पत्रके पढ़नेसे ही विदित होता है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जहाजमें और काम न होनेपर किस प्रकार इस आदमीने अपनी कल्पना-शक्तिको दौड़ाकर एक छोटासा उपन्यास तैयार किया। ऐसी छोटी छोटी बातोंका—यथा अमुक व्यक्ति वहाँपर था, अमुकका मुख इधर था इत्यादि—आठ मासके उपरान्त स्मरण रखना असम्भवसा प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित बातोंपर ध्यान देनेसे असत्य सर्वथा स्पष्ट हो जाता है—

(१) फिल्टामें जब उसने ऐसी घटनाका वर्णन अंग्रेजोंसे किया तो किसीने उसकी बातपर विश्वास न किया।

(२) बंगाल कौंसिलके संचालक-वर्ग (बोर्ड आफ डायरेक्टरों) के साथ पत्रव्यवहारमें इस घटनाकी ओर संकेत तक नहीं है, यद्यपि और सब बातोंका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

(३) क्लाइवने बंगाल पहुँचकर नवाबके साथ जो पत्रव्यवहार किया उसमें कहीं इस घटनाका नामतक नहीं है। यदि इतनी बड़ी क्रूरता हुई होती तो क्या क्लाइव उसकी शिकायत नवाबसे न करता?

(४) उस कालके भारतीय ऐतिहासिकों—गुलामहुसैन आदिने—शेष सब वृत्तान्तोंको सविस्तर लिखा है परन्तु इस घटनाकी ओर इशारा तक नहीं पाया जाता। यह भी स्मरण रहे कि गुलामहुसैन सदैव नवाबके विरुद्ध और अंग्रेजोंके पक्षमें लिखा करता था।

(५) उस कमरेका जो विस्तार दिया गया है उसमें इतने मनुष्यों-का प्रविष्ट होना ही गणितकी दृष्टिसे असम्भव है।

(६) कौंसिलकी एक बैठकमें यह विचार प्रकट किया गया है कि 'हालिवल' बड़ा झूठा पुरुष है। इसने देशी लोगोंके विरुद्ध कई कथन ऐसे प्रसिद्ध किये हैं जिनका कोई आधार नहीं।

घटना निराधार तथा असत्य है

इन प्रमाणोंके आधारपर, जिनके लिए हमने स्वयं अन्वेषण किया है, हम यह कहनेको तैयार हैं कि 'ब्लैकहोल' की घटना सर्वथैव निराधार तथा असत्य है। यह केवल नवाबको कलंकित करनेके लिए गढ़ी गयी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि अंग्रेज ऐतिहासिक निष्कपट एवं निष्पक्ष हैं तो उन्हें इसका वर्णन इतिहासग्रन्थोंसे निकाल देना चाहिये। ऐतिहासिक बातोंपर पक्षपातका रंग चढ़ाना और बात है, पर सदाके लिए एक ऐतिहासिक झूठ गढ़ लेना दूसरी बात है। आश्चर्य तो यह है कि जहाँ सभी ऐतिहासिक इस घटना-पर बड़ा जोर देते हैं, वहाँ संवत् १७४६ (सन् १६८९ ई०) के उस यत्नपर, जिसके द्वारा अंग्रेज युद्ध कर बंगालमें बल प्राप्त करना चाहते थे, जरा भी प्रकाश नहीं डालते, क्योंकि यदि उसका वर्णन करें तो कदाचित् बंगालकी विजयके लिए 'ब्लैकहोल' की घटनाका बहाना बहुत भद्दा प्रतीत हो।

दूसरे वर्षके आरम्भमें क्लाइव सेना लिए हुगलीके तटपर जा पहुँचा। नवाब थोड़ीसी सेना छोड़कर लौट गया था। उसके अफसरने कलकत्ता क्लाइवको अर्पित कर दिया। यहाँसे अवकाश पाकर क्लाइवने हुगलीपर आक्रमण किया। इतनेमें नवाब भी अपनी सेना लेकर कलकत्ता आ पहुँचा किन्तु परस्पर सन्धि हो गयी। नवाबने पुराने अधिकार अंग्रेजोंको दे दिये और कलकत्तेमें जितनी क्षति हुई थी उसकी पूर्त्ति करनेकी प्रतिज्ञा की।

उस समय इंग्लैण्ड तथा फ्रांसके मध्य युद्ध आरम्भ हो गया था। क्लाइवने भी फ्रांसीसियोंकी निकटस्थ बस्ती चन्दननगरपर आक्रमण कर दिया। इस स्थलपर उसने अपने दक्षिण-भारतके अनुभवसे लाभ उठाना चाहा। नवाबने चन्दननगरकी रक्षाके लिए सेना भेजी पर क्लाइवने उसके सेनापतिको रिश्वत देकर चुप करा दिया, जिससे नवाबका हृदय खिन्न हो गया।

क्लाइवका गुप्त प्रयत्न—अमीचन्दका प्रतिज्ञापत्र

इस अनुभवहीन नवाबकी दशा देखकर चित्तमें दया आती है। एक ओर उसे अफगानोंके आक्रमणका भय था, दूसरी ओर मराठोंका; और इधर अंग्रेजोंके साथ युद्ध हो ही रहा था। उसकी अपनी सेना भी उससे विमुख हो गयी थी। कोई उसे सम्मतिसे भी सहायता देनेको उद्यत न था। उसके मुकाबलेपर क्लाइव था, जो केवल युद्धमें कुशल और अनुभवी ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
न था वरन उसे अपना प्रयोजन सिद्ध करनेके लिए कुछ भी करनेमें संकोच न था। जब नवाबने कासिमबाजारकी कोठी जब्त की थी तो उसने वहाँके अंग्रेजोंको मुर्शिदाबादमें बन्द कर रखा था। उनमें वारेन हेस्टिंग्ज नामका एक लेखक भी था। उसने उक्त समय वहाँके सरदारोंसे मिलने तथा नवाबके विरुद्ध भड़कानेमें लगाया। उसे सब आन्तरिक झगड़ोंका भी ज्ञान था। उसने सब बातोंसे क्लाइवको सावधान कर दिया। क्लाइव उसी समयसे चुपके-चुपके सब बड़े-बड़े दरबारियोंको अपनी ओर लानेके प्रयत्नमें लग गया, और जब युद्धका समय आया तो मुर्शिदाबादमें कोई भी ऐसा धनाढ्य तथा गण्य पुरुष न था जो नवाबके विरुद्ध न हो, और जिसने क्लाइवको सहायता देनेकी प्रतिज्ञा न की हो। तीन मासके भीतर ही भीतर वजीर, राजा दौलतराम, सेनापति मीर जाफर, जिसने सिराजुद्दौलाकी फूफूसे विवाह किया था, और सेठकुल सब क्लाइवके साथ एक प्रतिज्ञापत्रमें सम्मिलित हो गये। वह प्रतिज्ञापत्र अमीचन्द नामक व्यक्ति द्वारा तैयार किया गया। उसमें अमीचन्दको दो लाख रुपये देनेका वचन दिया गया था परन्तु क्लाइवने दो पत्रोंपर प्रतिज्ञा लिखवायी। एक पत्रमें दो लाख रुपयेकी बात न थी। इस प्रतिज्ञापत्रके अनुसार मीर जाफरको सिंहासनपर बैठानेका निर्णय हुआ था। जब सब कार्य निश्चित हो चुका और कौंसिलने प्रतिज्ञापत्र स्वीकार कर लिया तो क्लाइवने नवाबको लिख भेजा कि मैं सेना लेकर मुर्शिदाबादकी ओर आ रहा हूँ। नवाबने घबराकर अपनी सेनाको प्लासीके विस्तृत क्षेत्रमें एकत्र होनेकी आज्ञा दी।

सेनाके अफसर तो अंग्रेजोंसे मिले हुए थे। सिपाहियोंने जानेसे इनकार कर दिया। नवाबने उनको बहुतसा धन देकर किसी प्रकार युद्ध-क्षेत्रमें भेजा।

जब क्लाइव कतवा पहुँचा उस समय तक उसे मीर जाफरकी ओर से कोई चिह्न दृष्टिगोचर न हुआ। वह अब घबराया कि कहीं मैं धोखेमें न आ जाऊँ। अकेला मुकाबला करना सम्भव न था। उस समय उसने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोष्ठी (कौंसिल) करके इस बातका निर्णय करना चाहा। लगभग सबकी सम्मति यही थी कि इस समय आगे बढ़कर लड़ना उपयुक्त नहीं, केवल आयरकूट इस सम्मतिके विपरीत था। अन्तमें क्लाइव भी इसी परिणामपर पहुँचा कि लौट जानेसे भविष्यमें बल बढ़ानेका कोई अवसर न रहेगा और अपयश भी बहुत होगा। यह सोचकर उसने तत्काल युद्ध करनेका विचार कर लिया और तैयारीकी आज्ञा दे दी। परन्तु साथ ही उसने मीर जाफरको कहला भेजा कि यदि तुम न मिलोगे तो नवाबसे फिर सन्धि कर ली जायगी।

प्लासीका युद्ध

दोनों ओरकी सेनाएँ आ डटीं। पचास सहस्र सेना तो राजा दौलतराम, यार लुत्फ़खाँ और मीर जाफरके अधीन थी जो क्लाइवके साथ मिले हुए थे। नवाबके साथ केवल पाँच सहस्र अश्वारोही और सात सहस्र प्यादे थे जिनके अफसर मीर मदन खाँ और मोहनलाल थे। उनमें मीर मदन अकेला निष्कपट था। इनके अतिरिक्त चन्दननगरसे आये हुए फ्रांसीसी सिपाही सेण्ट फ्रांसिसके अधीन नवाबके लिए लड़ने और मरनेको तैयार थे।

मीर जाफरका स्वामिद्रोह—सिराजुद्दौलाका वध

फ्रांसीसी सैनिकोंने गोलाबारीसे युद्ध प्रारम्भ किया, परन्तु थोड़ी देर बाद चुप हो गये। उधर अँग्रेजोंने भी गोलाबारी बन्द कर दी जिसपर मीर मदन उनकी ओर बढ़ा, परन्तु आगेसे गोलियोंकी बौछार हुई और वह जख्मी होकर गिर पड़ा। अब सिराजुद्दौलाने मीर जाफरको बुलाकर उससे विनयपूर्वक प्रार्थना की कि आप शुद्ध भावसे लड़ें। बेचारेने अपनी पगड़ी उतारकर उसके चरणोंपर डाल दी। उसने कहा—"जाफर, मेरी लाज तेरे हाथमें है।" इधर तो जाफरने अपनी छातीपर हाथ रखकर सिरको झुका दिया और कहा कि मैं आज्ञाका पालन करूँगा, परन्तु तत्काल उधर क्लाइवको कहला भेजा कि अब समय आ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
गया है। फिर नवाबने राजा दौलतरामको बुलाया। उसने नवाबको उपदेश दिया कि इस समय आपके लिए आत्म-रक्षा आवश्यक है। इसलिए आपको चाहिये कि सेनाको सेनापतियोंपर छोड़कर स्वयं पीछे हट जाँय। नवाबने यह उपदेश मान लिया और दो हजार सवारोंके साथ ऊँटपर बैठकर मुर्शिदाबाद चला गया। फिर क्या था? कुछ फ्रांसीसी सिपाहियोंने नाममात्रको सामना किया। प्लासीका युद्ध क्लाइवने जीता। इसमें केवल छः अंग्रेज और १६ सिपाही काम आये। नवाब नावपर सवार होकर भागलपुरमें फ्रांसीसियोंके पास जा रहा था। मार्गमें राज-महल जाते-जाते नाविक थक गये और नवाब एक उद्यानमें विश्राम करता हुआ पकड़ा गया। जब हथकड़ी लगाये मीर जाफरके सामने लाया गया तो सिराजुद्दौलाने रोते और काँपते-काँपते उससे प्राणरक्षाके लिए प्रार्थना की। यह दृश्य बड़ा ही हृदयग्राही था। मीर जाफरकी आज्ञासे उसके पुत्र मीरनने रात्रिको बंग देशके अन्तिम नवाब सिराजुद्दौलाका खंजरसे अन्त कर दिया। इस सारे खेलमें केवल नवाब ही एक पुरुष था जिसने किसीको धोखा नहीं दिया और सच्चे हृदयसे अपने देशको बचानेका यत्न किया।

मीर जाफर सिंहासनपर बैठा। इसे इतना समझनेकी बुद्धि न थी कि सिंहासनका वास्तविक स्वामी कौन है। नवाब होते ही उसे एक करोड़ रुपया कम्पनीको, ५० लाख कलकत्तेके अंग्रेजोंको, २० लाख देशी सैनिकों और १० लाख आरमीनियोंके लिए देने पड़े। कौंसिलके मेम्बरोंमें मिस्टर ड्रेक (गवर्नर) को दो लाख अस्सी हजार, क्लाइवको दो लाख और विशेष भेंट सोलह लाख, मिस्टर बेकर, मिस्टर वाट्स, मेजर कलपेट्रिक—प्रत्येकको दो लाख चालीस हजार, मिस्टर वाट्सको विशेष भेंट आठ लाख, सेनाके लिए कोई दो करोड़से ऊपर रुपया दिया गया। इसके अतिरिक्त चौबीस परगनाकी जमींदारीके अधिकार अंग्रेजोंको दिये गये। अमीचन्दको दूसरा प्रतिज्ञापत्र दिखाया गया। वह रुपया न मिलनेसे पागल हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियोंका युद्ध

अब हमें फिर थोड़े समयके लिए दक्षिणमें आना पड़ता है। जब इँग्लैण्ड और फ्रांसका युद्ध आरम्भ हुआ तो फ्रांससे संवत् १८१५ (सन् १७५८ ई०) में दक्षिण भारतसे अंग्रेजोंको निकाल देनेके लिए कौण्ट लैलीको सेना देकर भेजा गया। वह अत्यन्त ही तीक्ष्ण स्वभावका पुरुष था। वह दूसरोंकी सम्मतिपर किंचिन्मात्र ध्यान नहीं देता था। उसने आकर फोर्ट डेविड ले लिया। पहले ही कह चुके हैं कि हैदराबादमें बूसीकी बड़ी धाक थी। उसने कई वर्षोंतक हैदराबादके नवाबको अपने हाथमें रखा। उसके समयमें उत्तरी सरकार नामक इलाकेके फ्रांसीसी अफसरने अत्युत्तम प्रबन्ध किया था। कौण्ट लैलीने आते ही बूसीको हैदराबादसे वापस बुला लिया और उत्तरी सरकारका प्रबन्ध एक और अनुभवहीन फ्रांसीसी अफसरके हाथमें दे दिया। उसकी मूर्खताका पहिला परिणाम यह हुआ कि वहाँका देशी शासक राजा आनन्दराज विद्रोही हो गया और उसने वेशपटमपर अधिकार कर लिया। उसने कलकत्तेके अंग्रेजोंसे इसलिए पत्रव्यवहार शुरू किया कि वे उत्तरी सरकारपर अधिकार कर लें। इसपर कलकत्तेसे मेजर फोर्ड सेना सहित भेजा गया। राजा आनन्दराजकी सहायतासे उसने कान्दोरमें फ्रांसीसियोंको परास्त किया। वहाँसे फ्रांसीसी सेना मछलीपटम गयी। कुछ वर्ष पूर्व मछलीपटम फ्रांसीसियोंके अधिकारमें आ गया था और अंग्रेज वहाँसे निकाल दिये गये थे। फोर्डने मछलीपटमपर आक्रमण किया। उस समय फ्रांसीसी जेनरल कान्फलांको बहुत सुविधाएँ प्राप्त थीं। यदि उसके स्थानपर फोर्ड जैसा कोई योग्य पुरुष होता तो सब अंग्रेजी सेना नष्ट हो जाती। परन्तु कान्फलां अपने मकानमें बैठकर मैदानमें आज्ञाएँ भेजता रहा। यह न तो शूरवीर था और न इसे बुद्धि थी। फोर्डने इंग्लैण्डके लिए 'शुमाली सरकार' के जिले प्राप्त किये। युद्धका दूसरा परिणाम यह हुआ कि सलाबतजंगने अंग्रेजोंके साथ सन्धि कर ली, जिससे न केवल उसने फ्रांसीसियोंको अपने दरबारसे निकाल दिया, बल्कि यह आज्ञा दी कि मेरे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
राज्यमें कोई फ्रांसीसी बस्ती न बसायी जाय। यह निश्चय करके फोर्ड बंगालको लौट गया, परन्तु अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंके मध्य युद्ध होता ही रहा।

कौण्ट लैलीकी पराजय

आयरकूटने कौण्ट लैलीको बन्देवाश युद्धक्षेत्रमें पराजित करके पाण्डिचेरीको घेर लिया। संवत् १८०८ (सन् १७५१ ई०) में इंग्लैण्डमें और फ्रांसमें परस्पर सन्धि हो जानेपर भारतमें भी, दोनों जातियोंमें सन्धि हो गयी और पाण्डिचेरी फ्रांसीसियोंको दे दिया गया।

अंग्रेजोंके विरुद्ध विद्रोह

फोर्डके कलकत्ता पहुँचनेपर वहाँ एक और झगड़ा तैयार था। मीर जाफरके सिंहासनपर बैठनेके कुछ कालके अनन्तर यह विदित हो गया कि इसने धोखेबाजी करके अपने लिए दासत्व खरीद लिया है। विशेषकर उसका पुत्र मीरन अंग्रेजोंकी बढ़ती हुई शक्तिसे बहुत जलता था। प्लासी-युद्धके पश्चात् सब व्यापार अंग्रेजोंके हाथ आ गया। डच व्यापारियोंकी बड़ी हानि हुई। उन लोगोंने दुःखित होकर नवाबके साथ साजिश की कि यदि नवाब अंग्रेजोंको निकालनेपर उद्यत हो तो हम अपनी सेना सहित उसकी सहायता करेंगे। यह निश्चय करके डच लोगोंने अपनी सेना पूर्वीय द्वीपोंसे मँगायी। उधर क्लाइव सब बातें ताड़ गया। उसके पास कुछ सेना न थी, क्योंकि सारी सेना मद्रास चली गयी थी, फिर भी वह तैयारी करने लगा। इतनेमें फोर्ड अपनी सेना लेकर लौट आया। बुडेरापर संग्राम करके उसने डच-सेनाको पराजित किया। डच-बस्तीको युद्धका सब व्यय देना पड़ा।

शाह आलमका बंगालपर आक्रमण

इसके बाद क्लाइव इंग्लैण्ड चला गया। उसके जानेपर शाह आलमने, जो अब पिताके मारे जानेपर दिल्लीका बादशाह बन गया था, बंगालपर आक्रमण कर दिया। पूर्णिया और तिर्हुतके मुसलमान नवाब जो अंग्रेजी राज्यसे दुःखित हुए थे उसके साथ मिल गये। इनके अति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रिक्त मराठा-सेना भी शाह आलमके साथ थी। बंगालपर आक्रमण करके अपने राज्यको बढ़ाना ही उनका वास्तविक उद्देश्य था। प्लासीके युद्धके पूर्व भी मराठे बंगालको जीतनेका विचार कर रहे थे। इस सम्बन्धमें बरारके राजाने क्लाइवको एक पत्र भी लिखा था।

शाह आलमके विरुद्ध मीरन सेना लेकर चला, परन्तु वह (मीरन) मनसे युद्ध करनेको तैयार न था। उसने बादशाहसे पत्रव्यवहार करना आरम्भ कर दिया और लगभग यह निश्चय हो गया था कि दोनों सेनाएँ मिलकर अंग्रेजोंके विरुद्ध काम करें कि अकस्मात् रातको बिजली गिरनेसे मीरनका देहान्त हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण

मीर कासिम

मीर कासिमकी प्रतिज्ञा

मीरनकी मृत्युसे एक और नयी समस्या उपस्थित हो गयी। मीर जाफरके दूसरे पुत्र बहुत छोटे थे, परन्तु उसका दामाद मीर कासिम बड़ा चतुर तथा दूरदर्शी पुरुष था। उसे अब आत्मोन्नतिका अच्छा अवसर मिला। उसके हृदयमें और भी बड़ी-बड़ी महत्त्वाकांक्षाएँ थीं। सम्पूर्ण राज्य अंग्रेजी कम्पनीके हाथमें जाते देख उसने प्रतिज्ञा कर ली कि जिस प्रकार हो, एक बार राज्य हाथमें लेकर मैं बंगालको अंग्रेजोंके शासनसे मुक्त करूँगा। मीर कासिम मीर जाफरकी ओरसे नये गवर्नरको बधाई देनेके लिए चला। कलकत्ता-कौंसिल मीर जाफरके उपरान्त उसके उत्तराधिकारीके विषयपर विचार कर रही थी। मीर कासिमको अपने प्रयत्नमें सफल होनेका समय मिल गया। उसने बातों ही बातोंमें जान लिया कि कौंसिलके सभी सभासद रुपया लेकर मेरी सहायता करनेको तैयार हैं।

मीर जाफरकी पदच्युति

अन्तमें यह निश्चय हुआ कि मीर जाफरको हटाकर उसके स्थानमें मीर कासिम सिंहासनपर बैठाया जाय। इसके बदलेमें बर्दवान, मेदनीपुर तथा चटगाँवके जिले कम्पनीको मिलें और कौंसिलके सभासदोंको निम्नलिखित रकमें दी जायँ—गवर्नर वैनस्टार्टको पचास लाख; हालिवेलको दो लाख सत्तर हजार; मिस्टर समर और मेकग्वायर प्रत्येकको ढाई लाख; केलाडको दो लाख; कलिंग, स्मिथ तथा यार्क प्रत्येकको एक लाख तीस हजार। गवर्नर यह निर्णय सुनानेके लिए मीर जाफरके पास पहुँचा। मीर जाफर उसकी अपेक्षा और भी अधिक रुपया देनेपर तैयार था, परन्तु यह प्रतिज्ञापत्र लिखा जा चुका था इसलिए विवश हो मीर जाफरको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिंहासनपरसे उतरना पड़ा। उसका मकान सिपाहियोंने घेर लिया। उसने अन्तमें यह प्रार्थना की कि मैं मीर कासिमके सुपुर्द न किया जाऊँ, बल्कि मुझे कलकत्तेमें रहनेके लिए मकान दिया जाय। यह स्वीकार किया गया और मीर जाफर तीन वर्ष उपरान्त कलकत्तेमें आकर रहने लगा। तत्पश्चात् मीर कासिमने शाह आलमसे सन्धि करके संवत् १८०८ (सन् १७५१ ई०) में उसे लौटा दिया। मीर कासिम दृढ़ विचारका मनुष्य था और वह विशेष प्रयोजनके लिए ही सिंहासनपर बैठा था। अंग्रेज सर्वदा रुपयेके लिए तंग करते रहते थे। थोड़े दिनोंमें वह उनसे बड़ी घृणा करने लगा। जिन मेम्बरोंने रिश्वत ली थी वे वापिस चले गये थे और उनके स्थानपर जो नये मेम्बर आये थे वे भी उसी प्रकार नवाबका रुपया लूटना चाहते थे। उसे कौंसिलपर कुछ विश्वास न रहा था।

मीर कासिमने सब बातें देख ली थीं और वह भी अपनी ओरसे युद्धकी धुनमें लगा हुआ था। प्रथम तो उसने अपनी राजधानी मुँगेरमें हटा ली। यहाँ एक बड़ा भारी किला विद्यमान था। जाते ही उसने दुर्गको अधिक दृढ़ करना आरम्भ कर दिया और शीघ्र ही अंग्रेजोंको उनका रुपया देकर उसने अपना प्रबन्ध ऐसी उत्तम रीतिसे किया कि उसकी अच्छी आय होने लगी। इसके अतिरिक्त उसने जब देखा कि आंग्ले सेनाका बल उसके संघटनपर निर्भर है तो झट उसने अपने यहाँ फ्रांसीसी अफसर नियत कर दिये। अंग्रेजी ढंगकी तोपें ढालनेके लिए एक कारखाना खोला गया।

कौंसिलका व्यापारिक अन्धेर

उधर कौंसिलके सभासदोंने रुपया प्राप्त करनेकी एक विचित्र विधि निकाली। सरकार ही देशके व्यापार तथा व्यवसायोंकी रक्षक होती है। परन्तु यदि स्वयं सरकार लूटनेपर तैयार हो जाय तो व्यापार तथा व्यवसायका फूलना-फलना सम्भव नहीं। कौंसिलने एक ऐक्ट पास किया कि जिस मालपर अंग्रेजी पास हो उसपर नदीमें कोई कर न लिया जाय और बिना पासके मालपर भारी कर लगाया जाय। जिस नावपर अंग्रेजी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
झण्डा होता था या वर्दी धारण किये सिपाही विद्यमान होते थे उस नावकी जाँच नहीं हो सकती थी। इससे कम्पनीके नौकरोंने लाखों तथा करोड़ों रुपये कमाये। उन्होंने झण्डा तथा पास देनेका अधिकार दूसरोंके हाथ बेचना शुरू किया। देशमें तबाही तथा अशान्ति फैल गयी। जहाँ कहीं नवाबके मालके अफसर कर लेनेका यत्न करते थे, अंग्रेज प्रतिनिधि उनको पकड़कर कैद कर देते थे जिससे सारा देशी व्यापार नष्ट हो गया। बहुतसे जिले विनष्ट हो गये, नवाबकी आय कुछ न रही।

मीर कासिमका विरोध

मीर कासिम इसके विरुद्ध शिकायतें भेजता था, किन्तु वहाँ कौन सुनता था? यद्यपि गवर्नर वैनस्टार्ट अपनी ओरसे बुराई कम करनेका यत्न करता था, परन्तु सर्वसम्मतिके आगे उसका कुछ वश नहीं चल सकता था। अन्तमें वह नवाबसे मुँगेरमें आकर मिला और बहुत वाद-विवादके उपरान्त निश्चय हुआ कि अंग्रेज केवल नौ प्रतिशत कर दें और देशी व्यापारी पचीस प्रतिशत, पासपर अंग्रेज प्रतिनिधि तथा नवाबके अफसरके हस्ताक्षर होने चाहिये। नवाब इसके सर्वथा विरुद्ध था, परन्तु विवश हो उसे मानना ही पड़ा। जब यह प्रतिज्ञापत्र कौंसिलमें पहुँचा तो उसके सदस्योंने इसको माननेसे इनकार कर दिया और इसपर झगड़ते रहे कि अंग्रेजी व्यापार बिना करके होना चाहिये। मीर कासिमने यह देखकर कि इससे मेरी प्रजा सर्वथा नष्ट हो जायगी, कर लेना ही बन्द कर दिया और व्यापारका द्वार सबके लिए उन्मुक्त कर दिया।

मीर जाफरसे पुनः बातचीत

इसपर कौंसिलने मीर कासिमके साथ युद्ध किया। कौंसिलका एक सभासद मिस्टर ऐलिस उस समय पटनेका प्रतिनिधि नियत होकर गया था। उसने कुछ आंग्ल सेना मँगाकर प्रातःकाल ही पटना नगरपर अधिकार कर लिया। नवाबने यह समाचार सुनकर सेना भेजी। संवत् १८२० (सन् १७६३ ई०) में एक युद्ध हुआ। उसमें तीन सौ अंग्रेज तथा दो हजार देशी सिपाही मारे गये और शेषने अपने शस्त्र नवाबकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेनाके सुपुर्द कर दिये। नवाबने इस घटनाकी सूचना कलकत्ते भेजी। कलकत्ता कौंसिलने अब मीर जाफरसे फिर सम्बन्ध स्थापित करना आरम्भ कर दिया। वह बूढ़ा अपने देशको बेचनेपर तैयार था। उसने प्रतिज्ञा की कि अंग्रेजोंके सिवा सबपर पहले ही जैसा कर लगा दूँगा; तीस लाख युद्धका व्यय, बीस लाख सेनाको और साढ़े बारह लाख नौकर-समूहको दूँगा। कौंसिलके सदस्योंको भी बहुतसा धन दूँगा। मीर कासिमकी सेना बहुत बलवती थी, उसके कोषमें रुपया भी था। परन्तु आंग्ल सेनाका सेनापति बड़ा योग्य था। युद्धका निर्णय केवल नेतापर ही अवलम्बित रहता है। आर्यावर्तके देशी नेता अंग्रेजोंके समान योग्य न थे। मीर कासिमके अफसर मुहम्मद तकी खाँने कतवा क्षेत्रमें जॉन एडम-के अधीन अंग्रेजी सेनाका सामना किया। बड़ा घोर संग्राम हुआ। अंग्रेज हारने पर ही थे कि अकस्मात् मुहम्मद तकी खाँ गोलीसे मारा गया और अंग्रेजोंकी जीत हो गयी। जॉन ऐडम मीर जाफरको लेकर मुर्शिदाबादमें प्रविष्ट हुआ।

मीर कासिमकी हार

इसके पश्चात् घरियाके रणस्थलमें दूसरा युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेजी सेनाकी बड़ी हानि हुई। परन्तु जॉन ऐडमके धैर्य, बुद्धिमत्ता, कुशलता तथा मीर कासिमके सेनापति शेरअली खाँकी निर्बलतासे अंग्रेजी सेनाकी जीत हुई। देशी सेना हटकर एक स्थान अन्धवा नालापर फिर एकत्र हुई। यहाँ मीर कासिमका सैन्य-संचालन इतना उत्तम था कि किसी ओरसे आक्रमण न हो सकता था। ऐडम तीन सप्ताहतक प्रतीक्षा करता रहा और शत्रुके वारोंका प्रायः उत्तर भी देता रहा। परन्तु एक सिपाही रातको भागकर ऐडमके पास जा पहुँचा। उसने नालेकी दलदल पार करनेका मार्ग बता दिया। वह उन्हें एक पर्वतपर ले गया जहाँसे आक्र-मण हो सकता था। प्रातःकाल होते ही एकाएक बन्दूकोंका चलना आरम्भ हो गया। कासिमकी सेनामें हलचल पड़ गयी। सिपाहियोंने भागना आरम्भ किया। पीछेकी ओर मीर कासिमने सेना खड़ी कर दी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कि जो सिपाही भागकर पीछे हटे उसे गोलियोंसे मार दिया जाय। इस प्रकार दोनों ओरसे अग्निकी वर्षा होने लगी। मीर कासिमके बहुतसे सिपाही मारे गये, जो बचे उन्होंने शस्त्र डाल दिये। २१ भाद्रपद-(६ सितम्बर) को ऐडमने मुँगेरपर अधिकार कर लिया और मीर कासिम अपने शेष साथियोंको लेकर अवधकी ओर भाग गया।

इसमें कुछ सन्देह नहीं कि बंगालका भाग्य इस युद्धपर निर्भर था। यदि ऐडम जैसा योग्य अंग्रेज सेनापति न होता तो क्लाइवकी की हुई विजय और सभी कार्योंपर पानी फिर जाता और बंगाल फिर पुराने नवाबी शासनमें चला जाता। मीर कासिमकी यदि कोई भूल थी तो यह कि वह स्वयं रणक्षेत्रमें मुकाबलेपर नहीं गया। उसकी विद्यमानता सिपाहियोंके हृदयोंपर विशेष प्रभाव डालती और उसके अफसरोंमें परस्पर द्वेष न उत्पन्न होने पाता।

अवधका नवाब

संवत् १७७९ (सन् १७२२ ई०) में सआदत खाँ नामक एक खुरासानी व्यापारी, जो दिल्ली-दरबारमें बड़े पदपर पहुँच गया था, अवधका नवाब वजीर नियत हुआ। जैसे निजाम दक्षिणमें और मुर्शिदकुली खाँ बंगालमें स्वतन्त्र हो गया था वैसे ही सआदत खाँने अवधमें स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया। उसके स्थानमें उसका भतीजा सफदरजंग संवत् १७९६ (सन् १७३९ ई०) में और उसके १७ वर्ष बाद उसकी मृत्युपर शुजाउद्दौला नवाब हुआ। लगभग उसी समय सिराजुद्दौला बंगालमें गद्दीपर बैठा था।

नवाब वजीर और मीर कासिम

आरम्भसे ही बंगालकी घटनाएँ उसे अपनी ओर आकर्षित करती रहीं, परन्तु उसे अपने झगड़ेका निर्णय करना था। जब अंग्रेज तथा मीर कासिम लड़ रहे थे तो शुजाउद्दौला अपने लिए अवसर देख रहा था। उसने सेना तैयार करना आरम्भ कर दिया था। अन्धवा नालाके युद्धके पश्चात् यह प्रकट हो गया कि उसे बंगाल आदिपर अधिकार प्राप्त करनेके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए अंग्रेजोंके साथ लड़ना पड़ेगा। मीर कासिमने अपना कोष मुँगेरसे निकालकर रोहतासगढ़में भेज दिया था। नवाब वजीरको यदि किसी और बातके लिए नहीं तो कोषके लिए मीर कासिमका सत्कार करना चाहिये था। जब मीर कासिम भागकर कर्मनासा पहुँचा तो उसे शुजा-उद्दौलाका पत्र मिला, जिसमें उसने सहायता तथा रक्षाके लिए प्रतिज्ञा की थी। इसपर मीर कासिम अवध चला। उसी समय शाह आलम दिल्लीसे भागकर लखनऊ पहुँचा और नवाब वजीरसे दिल्लीपर अधिकार प्राप्त करनेके लिए सहायता माँगी। शुजाउद्दौलाने शाह आलमका आदर-पूर्वक स्वागत किया और उसे जैसे-तैसे शाह नवाब वजीरके साथ इला-हाबादकी चढ़ाईपर साथ होनेके लिए राजी किया। जब नवाब वजीर बादशाहको साथ लिये इलाहाबाद पहुँचा तो वहाँपर मीर कासिम पहलेसे ही पहुँच चुका था। नवाब वजीर दस हजार सिपाही लेकर मीर कासिम से उसके कैम्पमें मिलने गया। वहाँ उसने पहले पहल सुन्दर वर्दियाँ धारण किये, यूरोपीय ढंगपर कवायद सिखायी हुई मीर कासिमकी सेना देखी। उसके चित्तपर बड़ा प्रभाव पड़ा। यद्यपि पहले वह मीर जाफरके पत्र तथा अन्य कई कारणोंसे घबराया हुआ था, परन्तु अब उसने मीर कासिमकी विद्यमानतासे लाभ उठानेका विचार कर लिया। मीर कासिम बड़ा योग्य पुरुष था। उसने नवाब वजीरको समझाया कि किस प्रकार यह नये व्यापारियोंकी जाति कुछ वर्षोंके भीतर ही साधारण व्यापारियोंके स्थानपर बंगालमें शासक हो गयी है। यदि वह रोकी न गयी तो उसका अगला कदम बनारसके राजा और फिर नवाब वजीरके देशकी ओर पड़ेगा। इसलिए उसे पहिले बंगालमें ही रोकनेका प्रबन्ध करना चाहिये। परन्तु पूर्व इसके कि नवाब वजीर यह विचार स्थिर करे कि उसे बुन्देल-खण्डके राजाको, जिसने दिल्लीकी अशान्त दशा देखकर बुन्देलखण्डमें स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था और नवाब वजीरका प्रान्त जीत लिया था, दण्ड देना है, मीर कासिमने उस कठिनाईको हल कर दिया और कहा कि मैं अकेला उसका फैसला कर आता हूँ। मीर कासिमने अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सुशिक्षित सेनाके साथ बुन्देलखण्डपर आक्रमण किया और सुगमतासे राजपूतोंको परास्त कर उन्हें नवाब वजीरके देशसे भगा दिया। अब नवाब वजीर भी तैयार हो गया। एक प्रतिज्ञापत्र लिखा गया जिसमें मीर कासिमने सेनाके लिए ११ लाख रुपया मासिक देनेकी और बंगालकी सूबेदारी प्राप्त करनेपर बादशाहको वार्षिक कर देने तथा नवाब वजीरके लिए सेना सुसज्जित रखनेकी प्रतिज्ञा की; अंग्रेजोंके पराजित होनेपर उनके तथा मीर जाफरके कोषको परस्पर बाँटनेका भी निश्चय हुआ। ये सेनाएँ संवत् १८२० के २३ फाल्गुन(७ मार्च, सन् १७६४ ई०)को बनारस पहुँचीं और नावोंका पुल बाँधकर गंगाको पार किया।

अंग्रेजी सेनामें असन्तोष

इधर आंग्ल सेना बड़ी कठिनाईमें पड़ी हुई थी। अन्धवा नालाकी विजयके पश्चात् ऐडमका स्वास्थ्य बिगड़ गया और वह कलकत्ते जाकर मर गया। उसके स्थानपर कप्तान नाकिसकी नियुक्ति हुई। वह भी अस्वस्थ था अतएव उसे भी लौटना पड़ा। उसके बदले जेनरल नंगने सेनाको सँभाला। उसका पद अस्थायी था, इसलिए वह अपने सिरपर कोई भार लेनेके लिए तैयार न था। साथ ही मीर जाफरने उसे यह विश्वास दिला दिया था कि नवाब वजीर मीर कासिमकी सहायता नहीं करेगा। मीर जाफरके कथनानुसार न कर जब उधरसे तैयारीकी सूचना आयी तो उसने भी सेना बढ़ायी, परन्तु उसकी सेना उस समय विचित्र दशामें थी। मीर जाफरके नवाब होनेसे धनाढ्य पुरुष हृदयसे अप्रसन्न थे। उन्हें मीर कासिम जैसे नवाबके लिए सहानुभूति थी। उन्होंने सेनाको बहकाना आरम्भ किया। सेना स्वयं भी असन्तुष्ट थी। यूरोपीय सेनामें अंग्रेजोंके अतिरिक्त बहुतसे फ्रांसीसी तथा जर्मन सिपाही भी थे। युद्ध आरम्भ करते समय बहुतसा रुपया देनेकी प्रतिज्ञा की गयी थी। परन्तु जब मीर जाफर सिंहासनपर बैठ गया तो वह रकम कलकत्ता कौंसिलने लेकर अपने पास रख ली। इससे यूरोपीय सेनाके सिपाहियोंमें विद्रोह फैल गया। उन्होंने न केवल आज्ञा माननेसे इनकार कर दिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बल्कि मिस्टर सीरा नामक एक व्यक्तिको नेता चुनकर शत्रुके साथ जा मिलनेका विचार कर लिया। इसपर जेनरल नंग बड़ी कठिनाईमें पड़ गया। अन्तमें उसने प्रतिज्ञा की कि मैं रुपया लेकर बराबर-बराबर बाँट दूँगा, परन्तु हरिवर्षीय सैनिक फिर भी न मानते थे। आखिर बड़ी कठिनाईसे आंग्ल सैनिकोंको अपनी ओर किया और उनको भेजकर दूसरोंको अपनी ओर लानेका यत्न किया। विद्रोही सिपाहियोंको यह डर दिखलाया गया कि तुम शत्रुके देशमें मार डाले जाओगे; किन्तु फिर भी एक सौ सत्तर सिपाही कर्मनासा पार करके नवाब वजीरसे जा मिले। इनमें तीन अंग्रेजोंके सिवा सभी फ्रांसीसी थे।

देशी पलटनोंमें बगावत

जब मीर जाफरसे रुपया लेकर सेनामें वितरण किया गया तो देशी सैनिकोंको हरिवर्षीय सैनिकोंका छठाँ अंश मिला। इसपर समस्त देशी पलटनोंमें बगावत हो गयी। भय इतना बढ़ गया कि उनके तथा हरिवर्षीय सेनाके मध्य युद्ध हो गया। अन्तमें वे पलटनें नवाब वजीरसे मिलनेके लिए नदीकी ओर चलीं गयीं, परन्तु जेनरल नंग उनके पीछे गया और उसने विनयपूर्वक तथा नम्र भावसे प्रार्थना करके उनको भी सन्तुष्ट किया और उन्हें हरिवर्षीय सैनिकोंका आधा भाग देनेकी प्रतिज्ञा करके लौटा लाया। यदि इस समय नवाब वजीरकी सेना कहीं समीप होती तो यहाँ फिर पहिला शासन हो जाता। जेनरल नंगके यह विद्रोह शान्त कर चुकनेपर नया अफसर मेजर कारंक आ गया।

पटनाका युद्ध

मेजर कारंक अफसरों तथा सिपाहियोंपर विश्वास न करता था और न वे उसे चाहते थे। कई दिन उसने आलस्यमें ही व्यतीत किये। अन्तमें वह बक्सर पहुँचकर शत्रुकी प्रतीक्षा करने लगा। जब कलकत्ता कौंसिलको इसकी सूचना मिली तो उसने तत्काल बढ़कर शत्रुपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। उसने लिख दिया कि कर्मनासापर पुल बाँधनेकी आज्ञा दी गयी है और जब पर्याप्त सामान एकत्र हो जायगा तो मैं चल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पहुँगा। कलकत्तासे शीघ्र बढ़नेकी पुनः आज्ञा हुई। इसपर उसने लिखा कि युद्धकी कौंसिल लड़ाईकी सम्मति नहीं देती। यह निश्चय हुआ कि सामान और रसद पर्याप्त है और शत्रु बक्सरकी ओर आ रहा है, इसलिए पीछे पटना हट आना चाहिये। यहाँ पहुँचकर उसने अपने आपको सुरक्षित कर लिया। उधरसे नवाब वजीर सेना लिये बढ़ रहा था। अन्तमें २० वैशाख(३ मई)को नगरपर आक्रमण हुआ। सायंकालतक युद्ध होता रहा। यद्यपि नवाब वजीरने उस समय बड़ी वीरता दिखलायी, पर नगर न ले सका। वह अपनी तोपें लेकर पीछे हट आया। वहाँ तीन सप्ताह और सेनाएँ पड़ी रहीं। वर्षाकाल आरम्भ हो जानेपर ६ ज्येष्ठ सं० १६९१ (२० मई, सन् १६३४) को नवाब वजीर बक्सर आ गया।

मेजर मनरो—बक्सरका युद्ध

दैवयोगसे इंग्लैण्डसे १४ आषाढ़(२८ जून)को किसी और कारणवश मेजर कारंकको नौकरीसे हटा देनेकी आज्ञा आयी। कलकत्ता कौंसिल इस आज्ञापर बहुत प्रसन्न हुई। कारंकके स्थानपर मेजर मनरो अफसर बनाया गया। वह कारंकके सर्वथा विपरीत स्वभावका था। मनरोके पहुँचते ही एक कठिनाई तो उसे यह हुई कि एक देशी पलटन बागी हो गयी। उसे शान्त करनेके लिए छपरासे देशी पलटनें पहुँचीं। उन्होंने बागी पलटनको कैद कर लिया। मनरोने २४ नेताओंको तोपके मुँहपर उड़ानेकी आज्ञा दी। सब देशी तथा हरिवर्षीय सेना एकत्र थी। ज्योंही चार मनुष्योंको तोपके साथ बाँधने लगे त्योंही उनके दूसरे चार साथी आगे बढ़े और अपने आपको उस प्रतिष्ठाके लिए प्रस्तुत किया। वे शीघ्र ही उड़ा दिये गये, पर उनके बलिदानका इतना प्रभाव पड़ा कि सभी सैनिकोंकी आँखोंसे अश्रुधारा बह निकली। अब दूसरे देशी पदाधिकारियोंने आकर मनरोसे कहा कि हमारे मनुष्य अब ऐसा न होने देंगे। मनरोके लिए यह कठिन समस्या उपस्थित हो गयी। उसने तत्काल हरिवर्षीय सैनिकोंको तोपें तैयार करने और देशी पलटनोंको शस्त्र डालनेकी आज्ञा दी। उन्होंने यह आज्ञा मान ली। इस प्रकार शेष मनुष्य भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उड़ा दिये गये। इसके पश्चात् सब ओरसे सेनाएँ एकत्र कर मनरो ५ कार्त्तिक(२२ अक्टूबर)को बक्सर पहुँचा। पटनाके युद्धमें मीर कासिमने कुछ निर्बलता दिखायी थी, इसलिए नवाब वजीरने उससे सम्बन्धविच्छेद करनेका विचार कर लिया। जब मीर कासिमका कोष समाप्त हो गया तो उसने बहुतसे सिपाही हटा दिये। उसकी समस्त सेना नवाब वजीरने शनैः-शनैः अपनी ओर कर ली थी। मीर कासिम वहाँसे रुहेलखण्ड पहुँचा। अन्तमें दिल्लीमें वह अत्यन्त निर्धनताकी दशामें मरा। अब मनरोका सामना अकेले नवाब वजीरसे था। नवाब वजीर खाइयोंके पीछे सुरक्षित था; परन्तु जब उसने मनरोकी सेना देखी तो दो दिन प्रतीक्षा करके स्वयं रणभूमिमें निकल पड़ा और युद्ध करनेके लिए तैयार हो गया। ६ कार्त्तिक(२३ अक्तूबर)को बक्सरका युद्ध हुआ। नवाब वजीरकी वीरतामें कोई सन्देह नहीं किया जा सकता, परन्तु उसके दो बड़े अफसरों—शुजा कुली खाँ और बेनी बहादुर—की भूलसे विजयलक्ष्मी अंग्रेजोंपर प्रसन्न हुई। और-और युद्धोंकी तरह इस युद्धमें भी वही बात देखी गयी कि पहली बार आक्रमण करके भारतीय सेना शत्रुपर विजय प्राप्त करनेमें कुछ कसर नहीं छोड़ती, परन्तु सफल न होने-पर उसका चित्त स्थिर नहीं रहता। न केवल सैनिक अधिक समय-तक युद्ध करनेका साहस नहीं रखते, प्रत्युत उनके अफसर भी हिम्मत हार जाते हैं।

बंगालकी दीवानी अंग्रेजोंको मिली

इस विजयके उपरान्त नवाब वजीर और शाह आलमने अंग्रेजी कैम्पमें आकर सन्धिके लिए प्रार्थना की। उस समय क्लाइव पुनः गवर्नर होकर कलकत्ता आ गया था। इन सब बातोंका निर्णय स्वयं करने-के लिए वह सीधे इलाहाबाद आया। सन्धिके अनुसार नवाब वजीरने ५० लाख रुपया युद्धव्यय दे दिया। शाह आलमने इलाहाबाद और कोरा अपने लिए रखे। बंगाल, बिहार तथा उड़ीसाकी दीवानी अंग्रेजोंको मिली। इसके बदलेमें अंग्रेजोंने ३० लाख रुपया वार्षिक बादशाहको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
और ६० लाख रुपया वार्षिक नवाबको, जो नाममात्रके लिए बंगालका नवाब रहा, और देना स्वीकार किया। इस प्रकार बंगालमें द्वैध शासन-प्रणाली(डबल गवर्नमेण्ट)का आरम्भ हो गया। इसके अनुसार अंग्रेज सेना रखते और बंगालसे कर एकत्र करते थे, पर कर वसूल करनेका काम देशी अफसरोंके हाथमें था। अभियोगोंका निर्णय नवाबके अधिकारमें रखा गया था।

क्लाइवने अंग्रेजी कम्पनीको बंगालका भूमिकर दिलाकर एक प्रकारसे राजनीतिक शक्ति बना दिया। इसी समयसे भारतवर्षमें कम्पनीका शासन आरम्भ होता है।

कम्पनीके नौकरोंका वेतन बहुत ही कम था, परन्तु वे व्यापार अथवा रिश्वत द्वारा वेतनसे सौ-दो सौ गुना प्राप्त करते थे। क्लाइवने इस दोषको दूर करनेके लिए वेतन बहुत बढ़ा दिया और उनको व्यक्तिगत व्यापार करनेकी मनाही कर दी। इससे नौकरोंमें बड़ी अशान्ति फैली, यहाँतक कि एक समय दो सौ सैनिक अफसरोंने बगावत कर दी। कम्पनीके नौकरोंकी वेतनवृद्धि लवणके ठेकेकी आयसे पूरी की गयी।

क्लाइव दो वर्ष रहकर लौट गया, परन्तु उसके पश्चात् यह कुप्रथा ज्योंकी त्यों बनी रही।

बंगालका दुर्भिक्ष

संवत् १८२६ (सन् १७६९ ई०) में बंगालका सबसे बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा। यह भारतका प्रथम दुर्भिक्ष था जिसके करुणात्मक वृत्तान्त लिखे हुए पाये जाते हैं। समस्त देश उजाड़ हो गया। तिहाईसे अधिक मनुष्य भूखों मर गये और मुर्शिदाबाद जैसा बड़ा नगर खँडहर बन गया।

वारेन हेस्टिंग्ज

दुर्भिक्षके कुछ काल पश्चात् संवत् १८२८ (सन् १७७१ ई०) में वारेन हेस्टिंग्ज बंगालका गवर्नर नियत होकर आया। वह कौंसिलका मेम्बर रह चुका था और भारतवर्षकी परिस्थितियोंसे भली भाँति परिचित था। वह कासिमबाजार कोठीके लेखकसे बढ़ते-बढ़ते कौंसिलका मेम्बर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बना और इस अनुभव तथा योग्यताके कारण गवर्नर बनाया गया। वह इंग्लैण्डसे विशेष आदेश लेकर आया था—वह यह कि प्रान्तका समस्त प्रबन्ध वह अपने हाथमें ले। इसके अनुसार उसने मुर्शिदाबादसे कोष कलकत्तामें ला रखा और सब जिलोंमें अंग्रेज कर-संग्राहक (कलेक्टर) नियत किये। साथ ही उसने न्यायाधिकार भी अपने हाथमें ले लिया। कलेक्टरोंको मुकद्दमोंका निर्णय करनेके लिए कचहरियाँ लगानेकी आज्ञा दे दी। नवाब नाममात्रका रह गया। द्वैध शासनकी समाप्ति हुई। इस प्रकार यद्यपि क्लाइव ही वह व्यक्ति था जिसने भारतमें अंग्रेजी राज्यका श्रीगणेश किया, पर हेस्टिंग्जने प्रबन्ध तथा अदालतें खोल करके अंग्रेजी शासनकी नींव भारतवर्षमें दृढ़ कर दी।

जब वारेन हेस्टिंग्ज अंग्रेजी राज्यकी जड़ जमा रहा था उस समय मराठे इस नयी बलाको ध्यानपूर्वक देख रहे थे। सौभाग्यसे अंग्रेजोंको कदम जमानेके लिए पहिले वही भाग मिला जहाँ लोगोंमें राजनीतिक जीवन शेष नहीं रह गया था। जब उनका मुकाबला कुछ जीवन रखनेवाले भागसे हुआ उस समय भारतवर्षका सबसे धनाढ्य भाग उनके अधिकारमें आ चुका था। उसकी आयसे वे सेनाएँ रखने योग्य हो गये थे जो देशके अन्य भागोंके भाइयोंके साथ युद्ध करनेके लिए तत्पर थीं। जब धन और जन दोनों पर्याप्त मिल गये तो युद्ध करनेमें अंग्रेजोंको कोई कठिनता न रही। इसके अतिरिक्त उनके युद्धके शस्त्र भी अत्युत्तम थे और उनके अफसर अधिक युद्ध-कुशल, अधिक स्वजातिप्रेमी तथा कूटनीतिज्ञ होते थे। इस दशामें उनका मराठोंपर विजय प्राप्त करना कोई आश्चर्यजनक बात न थी।

दिल्लीमें मराठा सेनाएँ

मराठे तो क्लाइवके कालमें ही बंगालकी विजय करनेकी तैयारी कर रहे थे, परन्तु अंग्रेजोंके सौभाग्यसे अहमदशाह अब्दालीका आक्रमण हुआ जिसमें मराठे पराजित हुए और उनके लाखों मनुष्य काम आये। मराठोंको सँभलते-सँभलते दस वर्ष लग गये। तबतक अंग्रेजोंकी सत्ता अवधमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
स्थापित हो गयी, बंगाल तथा बिहारपर उनका अच्छी तरह अधिकार हो गया और नवाब वजीर एक बार युद्ध करके उनके अधीन हो गया। इन सब बातोंके होते हुए भी जब वारेन हेस्टिंग्ज भारतमें आया तो मराठा सेनाएँ फिर दिल्लीमें आ गयीं, क्योंकि शाह आलम बादशाह उस समय इलाहाबादमें था। उन्होंने पहिले शाह आलमको अंग्रेजोंके हाथसे निकालना चाहा जिसमें भावी युद्धमें वे उसके नामका लाभ न उठा सकें। मराठोंने बूढ़े नजीब रोहेल्लाको इस कामके लिए नियत किया। अंग्रेज सब प्रकारसे शाह आलमको नम्रतासे समझाते तथा प्रार्थना करते, पर मराठे अपने प्रयत्नमें सफल हो गये और शाह आलम दिल्लीमें मराठोंके पास चला गया।

वारेन हेस्टिंग्जने आते ही देख लिया कि अब शाह आलमको कर देना शत्रुओंके हाथमें रुपये देना है। उसने तत्काल तीस लाख रुपया देना बन्द कर दिया। केवल यही नहीं, बल्कि नवाब वजीरको अपनी ओर बुलानेके लिए शाह आलमके जिले कोरा तथा इलाहाबाद उसको देकर पचास लाख रुपये ले लिये।

नाना फड़नवीस

अब दोनों ओरसे युद्धकी तैयारियाँ आरम्भ हो गयीं। मराठोंका शिरोमणि उस समय नाना फड़नवीस था। वारेन हेस्टिंग्जका सारा समय नाना फड़नवीसकी नीति-सम्बन्धी चालोंका मुकाबला करनेमें व्यतीत हुआ। यही मराठों तथा अंग्रेजोंके प्रथम दशवर्षीय समरका पहिला युद्ध था और यही हेस्टिंग्जके शासनकालकी मुख्य घटना है। इस युद्धका परिणाम मराठोंके लिए सन्तोषजनक हुआ। उत्तरीय भारतमें उनकी शक्ति मानी गयी।

इसके अनन्तर लगभग बीस वर्ष शान्ति रही और फिर दूसरा युद्ध आरम्भ हुआ जिसमें मराठोंका बल टूट गया और आर्यावर्तका राज्य अंग्रेजोंके हाथ आ गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

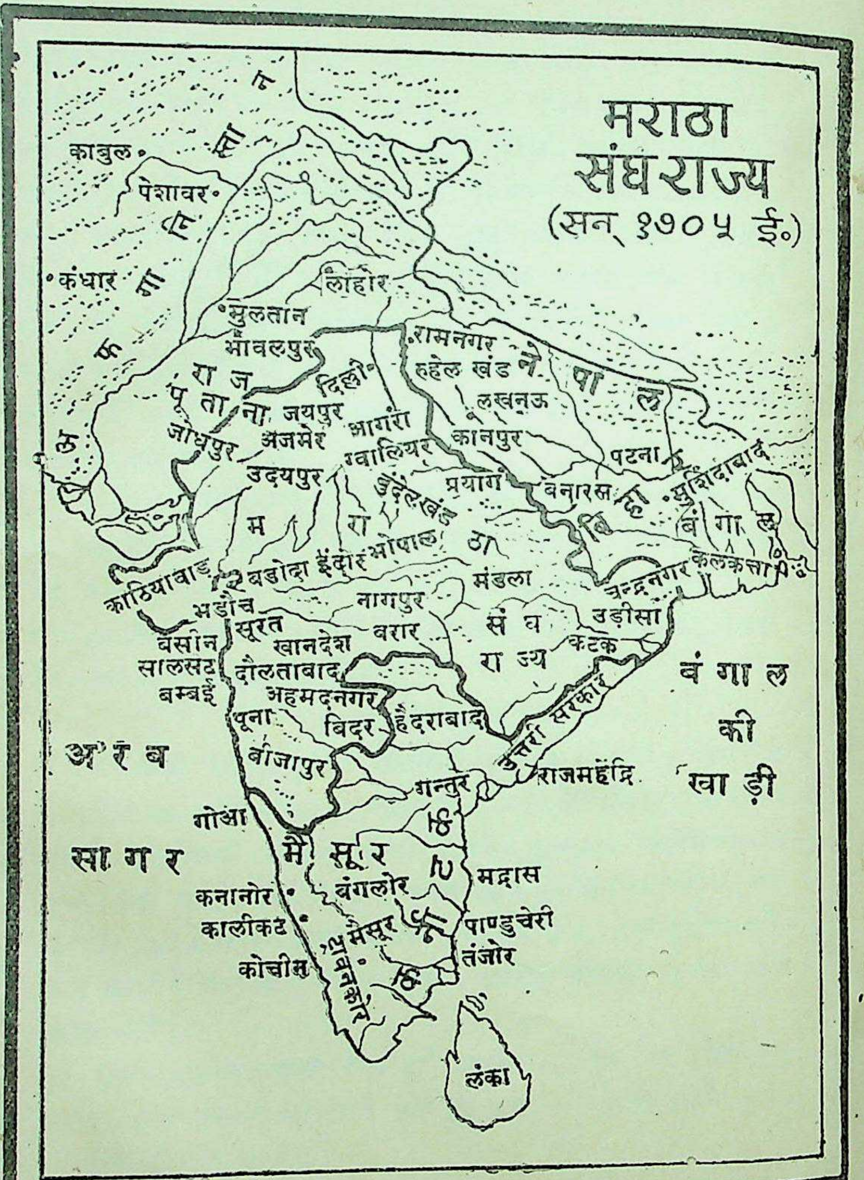

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा प्रकरण

मराठों तथा अंग्रेजोंका संग्राम

संग्रामके दो भाग

बालाजी बाजीराव पेशवाके हृदयमें मुगलोंको निकालकर दिल्लीमें अपना राज्य स्थापित करनेकी बड़ी प्रबल इच्छा थी, परन्तु उसकी चेष्टा पानीपतके युद्धमें असफल हुई। फिर दस वर्ष बाद वह अपने विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेको ही था कि उधरसे अंग्रेजोंने भी बंगालमें पदार्पण करके राज्यके लिए हाथ-पाँव मारना आरम्भ किया। अब इन दो शक्तियोंमें संग्राम होना आरम्भ हुआ। यह संग्राम निरन्तर तीस वर्ष चलता रहा। इसके दो भाग हैं। पहला भाग दशवर्षीय युद्ध है जिसमें एक ओर नाना फड़नवीस और दूसरी ओर वारेन हेस्टिंग्ज था। यह काल सलबईके सन्धिपत्रके साथ समाप्त होता है जिससे मराठा साम्राज्यका शासनक्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया। इसके उपरान्त बीस वर्षतक दिल्लीका शासन वस्तुतः मराठोंके हाथमें रहा। उस समय भारतवर्षके सभी राजा उनका दम भरते थे। ऐसी प्रत्यक्ष सफलतापर भी नाना फड़नवीसकी नीति असफल समझनी चाहिये, क्योंकि उसने अंग्रेजोंको आर्यावर्तसे निकालनेके लिए जो बड़ी साजिश की वह सफल न हुई। यद्यपि अंग्रेजोंको इस युद्धके उपरान्त कोई देश न मिला, परन्तु उनका बल बहुत बढ़ गया, क्योंकि सभी राजाओंने देख लिया कि सब मिलकर भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकते।

अंग्रेजोंकी बलवृद्धिके अर्थ स्पष्ट थे। फिर एक और संग्राम होनेकी दृढ़ आशंका थी क्योंकि उन्होंने निश्चय कर लिया था कि हम भारतमें सबसे बड़ी शक्ति बनकर रहेंगे। प्रतीक्षा अंग्रेजोंके लिए हितकर थी। सबसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़ी बात यह थी, कि व्यक्तिगत राज्य होनेके कारण सम्भव था कि मराठोंका राज्य ऐसे उत्तराधिकारियोंके हाथमें आ जाता जो अपने पूर्वजोंके अनुभव तथा बुद्धिमत्तासे सर्वथा अनभिज्ञ हों। अंग्रेजी शासनकी बाग-डोरका स्वभावतः इंग्लैण्डके सबसे योग्य चुने हुए मनुष्योंके हाथमें होना आवश्यक था।

संघ-राज्यकी निर्बलता—मराठोंका पारस्परिक द्वेष

इसके अतिरिक्त मराठासंघके भीतर निर्बलताका बीज विद्यमान था। संसारके इतिहासमें सर्वत्र यही पाया गया है कि 'सम्मिलित राज्य' (कॉन्फिडरेसी) अति निर्बल राज्य होता है। इसके भिन्न-भिन्न भाग स्वकीय लाभको सम्मुख रखकर सदैव युद्धके लिए तत्पर रहते हैं। अमरीकाने ठीक उसी कालसे इस प्रकारके राज्यको थोड़े ही समयमें सदोष पाकर उसे तत्काल संघ-राज्य(फेडरल)में परिवर्तित कर दिया। इन दोनोंमें भेद यह होता है कि फेडरल गवर्नमेण्ट(संघ-राज्य)में सन्धि-विग्रह तथा सेनाका अधिकार एक ऐसे संघटनके हाथमें होता है जो सम्मेलन(कॉन्फेडरेसी)से पृथक् और उससे बलवान् होता है। वह 'सम्मेलन'के भिन्न-भिन्न सदस्योंको इकट्ठा रख सकता है, चाहे यह संघटन सेनेट या और किसी नामसे पुकारा जाता हो। मराठा राज्यमें जाति-भेदके कारण झगड़ा होता था, यह कहना सर्वथा भ्रमात्मक है। वर्ण-भेदका इससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं। यदि यह ठीक होता तो सिन्धिया, होलकर इत्यादि सब मिलकर पेशवाके विरुद्ध होते जो ब्राह्मण था; पर ऐसा नहीं हुआ। वे पेशवासे शत्रुता करते ही थे, साथ-साथ एक दूसरेपर हमला करके अपना-अपना राज्य बढ़ानेकी ताकमें भी रहा करते थे। यथार्थ तो यह है कि शिवाजीकी मृत्युके उपरान्त औरंगजेबसे जो दीर्घकालव्यापी युद्ध हुआ उसमें भिन्न-भिन्न मराठा सरदारोंने, राजारामके मुख्य राज्यसे पृथक्, अपने-अपने लिए भिन्न-भिन्न राज्य बना लिये। राजारामका प्रभुत्व ये नाममात्रको, और वस्तुतः बाध्य होकर, मानते थे। इन सरदारोंने मराठा राज्यका खूब विस्तार किया इसमें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्देह नहीं, पर इससे उसमें निर्बलता भी आ गयी। यदि इन मराठा रियासतोंका एक बलवती विदेशी जातिके साथ मुकाबला न होता तो यह निर्बलता प्रकट न होती और कदाचित् कुछ कालके अनन्तर सर्वथा लुप्त भी हो जाती, परन्तु यह युद्ध आरम्भ हो जानेके कारण इनमें कोई ऐसी रियासत उत्पन्न न हो सकी जो सांग्रामिक बलमें असाधारण होकर इन सबको अपने साथ मिला सके। यदि मराठा रियासतोंमें कोई एक, चाहे वह सिन्धिया होता अथवा पेशवा, दूसरोंके मुकाबले अधिक बलवान् हो जाता तो वह सभी रियासतोंको एकत्र करके सम्मिलित शक्तिसे शत्रुका सामना कर सकता, परन्तु यह अभी होने न पाया था कि अंग्रेज क्षेत्रमें आ उपस्थित हुए। प्रत्येक मराठा रियासत अपने आपको किसी अन्य रियासतसे न्यून न समझती थी और थोड़ीसी बातपर परस्पर लड़ने-भिड़नेपर उद्यत हो जाती थी। इस अवस्थामें उक्त रियासतोंको एक दूसरेसे पृथक् करके जीत लेना साधारण बात थी। वारेन हेस्टिंगजको इस नीतिमें सफलता न हुई, क्योंकि उसके मुकाबलेमें नाना फड़नवीस तथा महादजी सिन्धिया जैसे दो बड़े नीतिज्ञ और बलवान् मराठा थे। उन्होंने मराठोंके भिन्न-भिन्न भागोंको अपनी योग्यतासे परस्पर सम्बद्ध रखा, परन्तु जब वे मर गये और उनकी योग्यताका कोई मनुष्य उत्पन्न न हुआ तो उनमें विश्रृंखलता आ गयी।

लार्ड वेलेजलीकी नीति

लार्ड वेलेजलीने अपनी प्रसिद्ध 'सहायक सेना-नीति' (सब्सीडिअरी सिस्टम) चलाकर इस दोषसे विशेष लाभ उठाया। इस विधिके अनुसार जब अंग्रेजी गवर्नमेण्ट किसी रियासतसे मित्रता करती थी तो उस रियासतसे सांग्रामिक बल तत्काल हर लिया जाता था। उस नवाब अथवा राजाको देश-रक्षाका काम अंग्रेजी सरकारके सुपुर्द कर देना पड़ता था और उसे अपने देशमें आंग्ल सेना (सहायक सेना) रखनी पड़ती थी। इस सेनाका वेतन वह देता था, परन्तु वह अंग्रेजोंके अधीन होती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इससे यह स्पष्ट है कि यद्यपि वह राजा या नवाब अपनी रियासतका स्वामी था और विग्रह तथा सन्धिका जिम्मेदार था, किन्तु सेना न होनेसे वह अंग्रेजी राज्यके विरुद्ध कुछ न कर सकता था और उसे अपनी रक्षाके लिए सर्वदा उसके आश्रित रहना पड़ता था। भारतवर्ष जैसे देशमें, जहाँ अनेक प्रकारकी रियासतें विद्यमान हों, केवल इसी प्रकारका राज्य स्थायी हो सकता था। प्राचीन कालके महाराजाधिराज सम्भवतः इसी प्रकारकी शासनप्रणालीका अनुसरण करते थे। यदि दिल्लीमें मराठोंका राज्य भली भाँति स्थापित हो जाता तो वे शेष मराठों तथा अन्य रियासतोंसे इसी प्रकारका सम्बन्ध स्थापित कर ले सकते थे, परन्तु उनके भाग्यमें ऐसा नहीं था। मराठा रियासतें पृथक्-पृथक् थीं और अपना लाभ स्वतन्त्र रूपसे सोचती थीं। लार्ड वेलेजली आते ही किसी न किसी मराठा रियासतके साथ अपनी सहायक सेना(सब्सीडिअरी)की नीतिसे सम्बन्ध स्थापित करनेका यत्न करने लगा। वह इसी घातमें था कि पेशवा घरेलू कलहसे डरकर भागा और उसने अंग्रेजोंका आश्रय लिया। उसने वेलेजलीकी नयी नीति स्वीकार कर ली।

नारायणराव पाँचवाँ पेशवा

संवत् १८३० (सन् १७७३ ई०) में नारायणराव पेशवा हुआ। यह बड़ा होनहार बालक था। अपने-बेगाने सब उससे प्रेम करते थे। माधवराव कहा करता था कि यह बालक बड़ा साहसी सैनिक होगा। नारायणराव एक बार बाल्यावस्थामें ही पेशवाके साथ एक छोटे पर्वतपर बैठकर हाथीका युद्ध देख रहा था। दैवयोगसे हाथी वेगमें आकर दर्शकोंकी ओर दौड़ा। सब लोग भयभीत होकर भागने लगे। प्राण संकटमें होनेके कारण वे पेशवाके लिए मान आदिके नियम भी भूल गये। नारायणराव भी उठकर सबके साथ भागने लगा। माधवरावने उसे पकड़ लिया और कहा—'भाई, संसार तुम्हारे विषयमें क्या कहेगा ?' नारायणराव साहसपूर्वक तत्काल बैठ गया। एक मराठा रिसालदार जयाजीरावने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपना खंजर लेकर हाथीपर वार किया जिससे उसकी सूँड़ ऐसी जख्मी हुई कि वह भाग गया।

कुछ दिन नारायणराव तथा राघोबा स्नेहपूर्वक रहे, परन्तु राघोबाकी स्त्रीका हृदय द्वेषसे जल रहा था। वह भला कब चैन लेने देती? राघोबाने द्रोह करना आरम्भ किया जिससे वह फिर संरक्षणमें रख लिया गया। यद्यपि सखाराम बापू दीवान था, परन्तु अधिकार नाना फड़नवीसके हाथमें आता-जाता था।

नारायणरावका वध

उस समय बरारमें गृहकलह उपस्थित था। जानोजी भोंसलेने माधवराव पेशवासे अनुमति प्राप्त कर मोदाजीके पुत्रको दत्तक बना लिया था, परन्तु जब वह बालक सिंहासनपर बैठा तो मोदाजी और साबाजी दोनों भाइयोंमें रक्षक बननेके लिए विवाद आरम्भ हो गया। मोदाजी राघोबाका सहायक था। पेशवाने साबाजीको रक्षक स्वीकार कर लिया। अभी दोनों पक्ष मुकाबलेकी तैयारी कर ही रहे थे कि नारायणराव पेशवाकी पूनामें हत्या की गयी। १४ भाद्रपद (३० अगस्त) को सेनामें कुछ हलचल मच गयी थी जिसका कारण वेतनका झगड़ा बताया गया। नारायणराव मध्याह्नके समय कमरेमें विश्राम कर रहा था। महलोंमें शोर सुनकर वह चौंक उठा। सोमीरसिंह तथा मुहम्मद यूसुफ कुछ सैनिक लिये पीछेके मार्गसे प्रविष्ट हुए। नारायणराव उठकर राघोबाके कमरेकी ओर दौड़ा। घातक उसके पीछे दौड़े आ रहे थे। उसने राघोबासे प्रार्थना की कि मुझे बचा लो। राघोबाने घातकोंसे साधारणतया कहा कि इसे छोड़ दो। इसपर सोमीरसिंहने कहा—'मैं जब यहाँतक आ पहुँचा हूँ तो इसको छोड़कर स्वयं अपना विनाश क्यों मोल लूँ? तुम यहाँसे भाग जाओ, अन्यथा तुम भी मारे जाओगे।' राघोबा उसको छोड़कर ऊपर भागा। नारायणराव उसके पीछे जा रहा था कि राघोबाके एक नौकरने उसकी टाँग पकड़कर नीचे खींच लिया। इतनेमें नारायणरावका एक नौकर चम्पाजी आ पहुँचा और अपने स्वामीको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बचानेके लिए दौड़ा। नारायणराव उसकी ओर बढ़ा। उसने अपनी भुजाएँ उसके गलेमें डाल दीं। सोमीरसिंह तथा राघोबाके नौकरोंने दोनोंको मार डाला।

जब भीतर यह कोलाहल हो रहा था, बाहर विद्रोही लोग महलोंको सब ओरसे घेरे हुए थे। सारे नगरमें हलचल मच गयी। गलियोंमें आदमी इधर-उधर दौड़ने लगे। सखाराम बापू कोतवालके पास दौड़कर गया। उसने सब लोगोंको समझाकर वापस भेजा।

राघोबापर वधका दोषारोपण

वधका सन्देह स्पष्टतः राघोबापर था। वह सारे विद्रोहका प्रवर्तक समझा जाता था। रामशास्त्रीने पूछताछ आरम्भ की। इतनेमें राघोबा पेशवा स्वीकार किया गया। छः सप्ताहके अनन्तर रामशास्त्री राघोबाके पास पहुँचे। उन्होंने उसपर अपने भतीजे नारायणरावके वधका दोषारोपण किया। राघोबाने शास्त्रीके सामने मान लिया कि मैंने नारायणरावको कैद करनेके लिए उन मनुष्योंको आज्ञा दी थी। जाँचसे विदित हुआ कि उसकी दुष्टा स्त्री आनन्दीबाईने आज्ञा-पत्रमें 'धरा' शब्दके 'ध'-को 'मा' बना दिया था।❀

राघोबाने रामशास्त्रीसे इस पापका प्रायश्चित्त पूछा। शास्त्रीने उत्तर दिया—"अपने जीवनका बलिदान करो तब यह पाप मिटेगा, अन्यथा न तो तुम और न तुम्हारा शासन ही कभी फलीभूत होगा। जबतक तुम इस राज्यके स्वामी रहोगे तबतक मैं तुम्हारे ऐसे हत्यारेका कभी अन्न ग्रहण न करूँगा और न कभी पूनामें ही पदार्पण करूँगा।" रामशास्त्रीने अपना वचन पूरा किया। वे काशी चले गये।

राघोबाके पेशवा-पदपर स्थिर हो जानेपर हैदरअली और निजाम-अली उसकी निर्बलतासे लाभ उठानेके लिए युद्ध करनेपर कटिबद्ध हो

❀ मराठीमें 'धरा'का अर्थ 'पकड़ो' और 'मारा'का अर्थ 'मारो' होता है।—सं०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गये और पेशवाई सेना तथा उसका अध्यक्ष देसाजी किशन दिल्लीको सिन्धियाके सुपुर्द करके पूना लौट गये ।

मराठे शाह आलमको दिल्लीमें बहुत तंग किया करते थे । उसका मन्त्री नजफ खाँ मुकाबला करनेके लिए तैयार हो गया । अन्तमें एक युद्ध हुआ जिसमें मराठोंने मुगलोंको परास्त कर पेशवाको अपना सेनाध्यक्ष नियत करने और कोरा तथा इलाहाबादके दोनों जिले मराठोंको दे देनेपर बादशाहको मजबूर किया । इसका अभिप्राय अंग्रेजोंसे विरोध ठानना था । इसपर अंग्रेजोंने वे जिले शुजाउद्दौलाको दे दिये और स्वयं युद्धके लिए तैयारी करने लगे । इसी अवस्थामें उस समय नारायणरावके वधका समाचार सुनकर पेशवाई सेना पूना चली आयी ।

आंग्ल प्रतिनिधि मिस्टर मास्टिन

पूना-दरबारके ये सारे विवाद अंग्रेजोंसे छिपे न थे । माधवरावके शासनकालमें बम्बई-कौंसिलने अधिकारिवर्गकी आज्ञासे मिस्टर मास्टिन-को अपना प्रतिनिधि बनाकर पूना भेजा था । वहाँ उसकी विद्यमानताका प्रत्यक्ष उद्देश्य तो यह था कि अंग्रेजी कम्पनीके लिए व्यापारसम्बन्धी अधिकार प्राप्त करे, परन्तु वास्तवमें बम्बई-कौंसिल भी मद्रास तथा बंगाल-कौंसिलके सदृश राजनीतिक बल प्राप्त करना चाहती थी और उसका पहिला उद्देश्य यह था कि किसी उचित अवसरसे लाभ उठाकर सालसिट तथा बसीन अपने अधिकारमें कर ले । यह अवसर भी अब हाथ आ गया ।

राघोबाका विरोधी नाना फड़नवीस

पूनामें यद्यपि राघोबा पेशवा माना गया, परन्तु जितने सच्चे मराठे थे वे उसे अपने भतीजेका घातक समझकर हृदयसे घृणा करते थे । शीघ्र ही एक बलवान् पक्ष उसका विरोधी बन गया । संयोग ऐसा हुआ कि नारायणरावकी स्त्री गर्भवती थी । विरोधी दलने, जिसका नेता नाना फड़-नवीस था, उसकी स्त्री गंगाबाईकी आशापर राघोबाको पेशवाईसे वंचित करनेका निश्चय कर लिया । गंगाबाई एक दुर्गमें सुरक्षित रखी गयी और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उसके साथ कई और गर्भवती ब्राह्मण-स्त्रियाँ भी रखी गयीं जिसमें गंगाबाईके यदि कन्या उत्पन्न हो तो वह किसी अन्य बालकसे परिवर्तित कर ली जाय।

राघोबा, जिसने अपने भतीजेका वध कराके पेशवाई प्राप्त की थी, उस पदपर स्थिर रहनेके लिए सब कुछ करनेको उद्यत था। जब वह उस संकटमयी अवस्थामें था उस समय अंग्रेज प्रतिनिधि मिस्टर मास्टिनने आंग्ल सेनाकी सहायतासे उसे पेशवाईपर बनाये रखनेकी आशा दिलायी और राघोबाने भी मीर जाफरके समान तत्काल यह प्रस्ताव मान लिया।

राघोबाकी कठिनाइयोंकी वृद्धि

अभी यह बताना आवश्यक है कि उस 'ब्राह्मण मीर जाफर'को पेशवा बननेके अनन्तर किन-किन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। सबसे पूर्व तो उसे निजाम तथा हैदरअलीके मुकाबलेपर जाना पड़ा। निजामअलीके साथ बेदरके क्षेत्रमें तीन सप्ताहतक युद्ध होता रहा जिसमें मराठे जीतते रहे। अन्तमें निजामने सन्धिके लिए प्रार्थना की और बीस लाख वार्षिकका प्रान्त देना स्वीकार कर लिया। उसके पश्चात् निजाम राघोबाके पास चला आया। उसने उसकी बड़ी प्रशंसा की और अपने आपको राघोबा जैसे बड़े आदमीका करदाता बनानेमें अपना सौभाग्य बतलाया। उसने सर्वदा राघोबाकी मित्रताके लिए इच्छा प्रकट की। राघोबाने इस स्वागतसे प्रसन्न होकर उसका समस्त प्रान्त उसे लौटा दिया। इसके उपरान्त राघोबा हैदरअलीके विरुद्ध खड़ा हुआ, परन्तु उसे उसी समय अपने विरोधी पक्ष तथा उसकी तैयारियोंकी सूचना मिल गयी, इसलिए हैदरअलीसे कुछ लाख रुपयेका वचन लेकर उसने उससे सन्धि कर ली और पूना लौट गया। उधर सेना लिये त्र्यम्बकराव मामा, हरिपन्त फड़के और साबाजी भोंसले उसके मुकाबलेके लिए आ रहे थे। त्र्यम्बकराव मामा शीघ्रतापूर्वक अकेला आगे बढ़ आया और काशीग्राममें संग्राम हुआ। त्र्यम्बकराव जख्मी होकर कैद हो गया। इस हारसे पूनामें घबराहट फैल गयी। नये वजीर इस समय किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माधवराव पेशवा बनाया गया

उनका एक कष्ट तो माधवराव नारायणके उत्पन्न होनेसे मिट गया। वह पेशवा बना लिया गया। यह भी उनका सौभाग्य था कि राघोबाने सिन्धिया तथा होलकरकी ओर जानेका विचार कर लिया। राघोबाके अनेक मराठा सैनिक एकत्र हो गये थे, किन्तु उसके पास इतना रुपया न था कि उनको वेतन तथा भोजन-व्यय दे सके। इस प्रयोजनके लिए वह सिन्धिया, होलकर, तथा अंग्रेजोंके साथ पत्रव्यवहार कर रहा था। अन्ततः उसने उनकी ओर स्वयं जानेका विचार कर लिया। इन्दौर पहुँचनेपर सिन्धिया और होलकरने राघोबाका आदरपूर्वक स्वागत किया। यद्यपि सिन्धिया और होलकर राघोबाके साथ न हुए, परन्तु उन्होंने कुछ सेना उसकी सहायताके लिए दे दी। उस सेनाको साथ लेकर राघोबा लौट आया और बम्बई-कौंसिलको अपना मित्र बनानेका उपाय सोचने लगा। उसे बरार तथा गुजरातकी ओरसे एक-न-एक पार्टी अर्थात् मोदाजी भोंसले अथवा गोविन्दरावके साथ मिलनेकी पूर्ण आशा थी।

अंग्रेजोंके साथ समझौता

इन्दौर जानेके समय उसने बम्बई-कौंसिलसे सन्धिके नियमके अनुसार सहायता माँगनेके लिए अपना एक प्रतिनिधि पूनामें मास्टिनके पास भेजा। राघोबाने सूरतके प्रतिनिधि द्वारा सन्धिके नियमोंका निर्णय करना चाहा। बम्बई-कौंसिल अपनी सेनाकी सहायतासे राघोबाको पूनाकी गद्दीपर बिठानेके लिए तैयार हो गयी। समझौता यह हुआ कि वह सालसिट तथा बसीन कम्पनीको दे दे और सूरत तथा भड़ोचमें लगान अंग्रेजोंके सुपुर्द कर दे। राघोबाने सालसिट तथा बसीन देनेसे इन्कार किया, किन्तु उनके बराबर गुजरातमें स्थान देनेपर तैयार हो गया और युद्धव्यय भी अपने ऊपर ले लिया।

इधर यह उपाय हो रहा था, उधर बम्बईमें समाचार मिला कि पुर्तगीज सालसिट और बसीनको मराठोंसे वापस लेनेके लिए एक बड़ी सेना भेजनेकी तैयारी कर रहे हैं। इस समाचारके पहुँचनेपर मराठा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्यको निर्बल पाकर बम्बई-कौंसिलने अपनी सेना किला थानापर भेज दी और थोड़े दिनोंमें सम्पूर्ण सालसिटपर अपना अधिकार जमा लिया।

राघोबा गुजरातमें

उधर नाना फड़नवीसने सिन्धिया तथा होलकरको राघोबाके विरुद्ध करके अपनी ओर मिला लिया। राघोबा यह समाचार सुनकर गुजरातकी ओर भागा और बड़ोदामें जा पहुँचा। वह अपनी गर्भवती स्त्रीको धार दुर्गमें छोड़ गया। यहाँ उसका पुत्र बाजीराव उत्पन्न हुआ जो अन्तिम पेशवा था। राघोबा गोविन्दरावकी सहायताकी आशापर बड़ोदा आया। गोविन्दरावने अपने चाचा खण्डेरावकी सहायतासे उस समय अपने भाई फतहसिंहको बड़ोदामें घेर रखा था। इन दोनों भाइयोंके झगड़ोंका भी पूनासे सम्बन्ध था। धुमाजी गायकवाड़ने माधवरावके विरुद्ध राघोबाकी सहायता की थी और उसका पुत्र गोविन्दराव राघोबाके साथ कारावासमें रह चुका था। जब धुमाजी मर गया तो उसके दूसरे पुत्र सयाजीको, जो दूसरी स्त्रीसे था, उसका स्थान पूनाकी ओरसे दिया गया; परन्तु उसके बुद्धिहीन होनेके कारण उसका भ्राता फतहसिंह राज्य करता था। जब राघोबा पेशवा बना तो उसने गोविन्दरावको गायकवाड़का वारिस मान लिया। इसलिए गोविन्दराव मोदाजी भोंसलेके समान ही राघोबाका सहायक था। बड़ोदा पहुँचकर राघोबाने सूरतके प्रतिनिधि द्वारा पुनः पत्रव्यवहार आरम्भ किया। प्रतिज्ञापत्रकी कई प्रतियाँ एक दूसरेको दिखानेमें बहुत समय लग गया। अन्तमें शर्तोंका निर्णय हो गया। राघोबाने सालसिट और बसीनके अतिरिक्त चार जिले और देना स्वीकार किया। सूरतसे प्राप्य गायकवाड़का लगान कम्पनीको दिलाने और युद्धका सारा व्यय अपने ऊपर लेनेकी प्रतिज्ञा की और खर्चके लिए अपने समस्त जवाहरात कम्पनीके पास बन्धक रखे। ये जवाहरात राय देशाजी किशन दिल्लीसे लाया था और उसने राघोबाको बतौर पेशवाके भेट किये थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राघोबा सूरतमें

राघोबा बड़ोदामें था कि उधरसे पूनाकी सेना लेकर हरिपन्त फड़के रवाना हुआ। सिन्धिया तथा होलकरकी सेना भी मिल गयी और फतहसिंहकी सहायतासे राघोबाको ऐसी हार खानी पड़ी कि वह एक हजार सवारोंके साथ भागता हुआ सूरत जा पहुँचा। एक मेम्बर, मिस्टर ड्रेपर, ऐसी अवस्थामें प्रतिज्ञापत्रके बड़ा विरुद्ध था, परन्तु २२ फाल्गुन, संवत् १८३१ (६ मार्च, सन् १७७५ ई०) को सूरतमें राघोबाने प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। वहाँ आंग्ल सेना तथा तोपखाना कर्नल केटिंगके अधीन पहुँच गया था।

जब बम्बई-कौंसिल मद्रास तथा बंगालका अनुकरण करके मराठा राज्यमें दखल देकर,अपना बल बढ़ानेकी चिन्ता कर रही थी, तभी इंग्लैण्डमें संवत् १८३० (सन् १७७३ ई०) में एक नया ऐक्ट पास हुआ जिससे बंगालका गवर्नर शेष सभी आंग्ल प्रान्तोंका गवर्नर-जेनरल बनाया गया और प्रत्येक सन्धि तथा विग्रहके विषयमें उसकी स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक कर दिया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवाँ प्रकरण

पहिला गवर्नर-जेनरल

वारेन हेस्टिंग्ज

वारेन हेस्टिंग्ज पहिला गवर्नर-जेनरल नियत हुआ। बम्बई-कौंसिलको यह सूचना मिल गयी थी। जब विवादके समय यह प्रश्न उठा तो उसने कह दिया कि कौंसिलको नियमपूर्वक कोई सूचना नहीं मिली है। इसलिए कौंसिल इस समयतक प्रतिज्ञापत्र आदि लिखनेमें सर्वथा स्वतन्त्र है। जब बंगालसे पहिला पत्र आया तो अंग्रेज सालसिटपर अधिकार जमा रहे थे। बम्बई-कौंसिलने जान-बूझकर उसके उत्तरमें विलम्ब कर दिया। इतनेमें वारेन हेस्टिंग्जका गुस्सेसे भरा हुआ इस आशयका दूसरा पत्र पहुँचा कि तुमने बिना गवर्नर-जेनरलकी आज्ञाके मराठोंसे युद्ध क्यों आरम्भ कर दिया है? इसमें राघोबासे प्रतिज्ञापत्र लिखाना अत्यन्त अनुचित बतलाया गया था। इस कोपका कारण यह था कि वारेन हेस्टिंग्जको पूना-सरकारके साथ पुराने प्रतिज्ञापत्रका लिहाज था। जब उसे यह विश्वास हुआ कि मराठा-सरकार एक बड़ी बलवती शक्ति देशके अन्दर विद्यमान है और अंग्रेजोंको आगे बढ़नेके लिए मराठोंके साथ मुकाबला करना पड़ेगा, तो उसने पूना-सरकारको हाथमें लानेका एक उपाय सोच लिया। वह उपाय यह था कि बरारके राजाके साथ बंगाल-कौंसिलकी मित्रता करके अपनी सहायतासे बरारके राजाको पूनामें राजा बनाया जाय। वारेन हेस्टिंग्जकी सम्मतिपर कार्य करनेसे क्लाइव बंगालमें बहुत सफल हुआ था। अब उसे स्वाभाविकतया यह खयाल था कि पूना-राज्यमें इस प्रकारका परिवर्तन उपस्थित कर देनेके लिए हम स्वयं योग्य हैं, विशेषकर जब कि बंगाल प्रान्तकी आय हमारे हाथमें आ गयी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है; परन्तु उसे भय था कि बम्बई-कौंसिल व्यर्थ इसमें दखल देकर कहीं मेरे रचे हुए षड्यन्त्रको विफल न कर दे।

बरारमें दोनों भाई, साबाजी तथा मोदाजी परस्पर युद्ध कर रहे थे। संग्राममें मोदाजी पराजित हो गया और जब साबाजीने मोदाजीको पकड़नेके लिए हाथी आगे बढ़ाया तो मोदाजीने पिस्तौल चलाकर साबाजी-की वहीं पूर्णाहुति कर दी। इसके अनन्तर मोदाजी बिना विरोधके बरारका प्रतिनिधि हो गया। उसका पुत्र राघोजी पहले ही बरारका राजा हो चुका था।

वारेन हेस्टिंग्ज समझता था कि मोदाजी भोंसले बननेके कारण महा-राष्ट्रके राज्यको प्राप्त करनेका इच्छुक अवश्य होगा। मोदाजी पूना-दरबारसे बड़ा अप्रसन्न था, इसलिए वारेन हेस्टिंग्जने मोदाजीसे मित्रता करके अपने निश्चयपर कार्य करना प्रारम्भ किया। दिवाकर पण्डित नामक एक ब्राह्मण मोदाजीका दीवान था। उसके एक सम्बन्धीको वारेन हेस्टिंग्जने अपने यहाँ नौकर रख लिया और उसके द्वारा पत्रव्यवहार करना आरम्भ कर दिया। यही कारण था जिससे वारेन हेस्टिंग्ज बम्बई-कौंसिलके हस्तक्षेपको रोकना चाहता था। उसने राघोबाके साथ मित्रताको भयानक तथा अनुचित ठहराया और अपनी ओरसे एक प्रतिनिधि, मिस्टर ओप्टनको पूना भेजा।

बम्बई-कौंसिलकी सहायता

बम्बई-कौंसिलको मास्टिन द्वारा पूनाके सब वृत्तान्त विदित हो चुके थे और वह ऐसे अच्छे अवसरको छोड़नेके लिए कभी उद्यत न थी। कौंसिलने गवर्नर-जेनरलके पत्रोंकी ओर कुछ ध्यान न दिया। सेनाने राघोबाको पूनाकी गद्दीपर बैठानेके लिए आक्रमण कर दिया। कर्नल केटिंग सेनाध्यक्ष था। सूरतसे प्रस्थान करते ही केटिंगने एक बड़ी भूल यह की कि फतहसिंह गायकवाड़को अपने साथ मिलानेके लिए पत्रव्यव-हार करना प्रारम्भ कर दिया। फतहसिंहने ये सब बातें आरम्भसे ही हरिपन्तको बता दीं, किन्तु पत्रव्यवहार जारी रखा। आखिर केटिंगने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिस्टर लूई बाण्डु नामक अपने दूतको फतहसिंहके पास भेजा। फतह-सिंहका वकील उसे सबसे पहिले हरिपन्तके कैम्पमें ले गया जिसपर उसे बड़ा विस्मय हुआ और दूसरे दिन यह कहकर उसे एक तम्बूमें बैठा दिया कि अभी फतहसिंह आता है। वह दिनभर वहाँ प्रतीक्षा ही करता रहा। आखिर संध्यामें उसे बुलाकर एक पालकीमें कैदीकी नाईं बैठाकर हरिपन्तकी सेनाके साथ कर दिया।

आरासका युद्ध

केटिंग आंग्ल सेना तथा राघोबाकी सेना लेकर पूनाकी ओर बढ़ा। मार्गमें मराठा सेनाने दो स्थानोंपर मुकाबला किया। आखिर आरास-स्थानपर संग्राम हुआ जिसमें कदाचित् प्रथम बार आंग्ल सेना पीठ दिखा कर भाग खड़ी हुई। देशी सेनाने भी उसका अनुसरण किया।

फतहसिंहसे सन्धि

केटिंग वहाँसे हटकर भड़ोच पहुँचा। वहाँ उसने अपनी सेनाको विश्राम दिया। यह जानकर कि हरिपन्त नर्मदा-तटपर है, वह उसके पीछे चला, किन्तु हरिपन्त बिना युद्ध किये वहाँसे चला गया। केटिंग वहाँसे उन दो भाइयोंकी ओर आया। यहाँ गोविन्दरावके बार-बार कहनेपर पहिले उसने बड़ोदाकी ओर रुख किया। गोविन्दराव बड़ोदापर अधिकार प्राप्त करना चाहता था। इसपर फतहसिंह भी डरके मारे सन्धि करनेपर राजी हो गया।

राघोबाने गोविन्दरावको दस लाखकी जागीर दक्षिणमें देनेकी प्रतिज्ञा की। फतहसिंहने इसके प्रतिफलमें कुछ सेना और रुपया, भड़ोचका अपना भाग तथा कई ग्राम अंग्रेजोंको देकर सन्धि कर ली।

गवर्नर-जेनरलका प्रतिनिधि

इतनेमें गवर्नर-जेनरलका प्रतिनिधि कर्नल ओप्टन पुरन्दर आ पहुँचा और उसने बंगाल-कौंसिलकी ओरसे पूना-सरकारके साथ वार्त्तालाप आरम्भ किया। बम्बई-कौंसिलने इसे बड़ा अपमानजनक समझा और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसका विरोध करके अपना प्रतिनिधि कलकत्ता भेजा और अपनी सेना सूरत भेज दी।

पुरन्दरका प्रतिज्ञापत्र

पुरन्दरमें ओप्टन तथा नाना फड़नवीसके मध्यमें वार्तालापका क्रम आरम्भ हुआ। नाना फड़नवीस इस बातपर जोर देता था कि राघोबा मेरे सुपुर्द कर दिया जाय। जब ओप्टनने सालसिट तथा बसीन रखनेके लिए कहा तो मराठा सरकारका उत्तर यह था कि जब गवर्नरने सारे युद्धको अनुचित कहा है तो तुम इससे क्यों लाभ प्राप्त करना चाहते हो? अस्तु। लम्बे-चौड़े प्रश्नोत्तरोंके उपरान्त यह निश्चय हुआ कि अंग्रेज राघोबा-को सहायता न दें, पूना सरकार निर्वाहके लिए उसे एक जागीर दे और अंग्रेज युद्धव्ययके बदले १२ लाख रुपया दें। सालसिटको वापस करना अथवा न करना गवर्नर-जेनरलके न्याय तथा विचारपर छोड़ दिया गया। फतहसिंहके प्रान्तके विषयमें यह निर्णय हुआ कि यदि पूना-सरकार यह सिद्ध कर दे कि फतहसिंहको यह प्रान्त बिना सरकारकी स्वीकृतिके देनेका कोई अधिकार न था तो अंग्रेज अपना दावा छोड़ देंगे। यह पुरन्दरका प्रतिज्ञापत्र कहलाता है। इसपर संवत् १८३२ के फाल्गुन(फरवरी, सन् १७७६ ई०) में हस्ताक्षर किये गये।

बम्बई-कौंसिलका विरुद्ध भाव

जब बम्बई-कौंसिलमें प्रतिज्ञापत्रका प्रतिरूप पहुँचा तो उसे अत्यन्त दुःख हुआ। इंग्लैण्ड भेजनेके लिए उसने प्रत्येक भागपर अपने आक्षेप लिखे और स्पष्ट रूपसे कह दिया कि इससे कुल प्रतिष्ठा धूलमें मिला दी गयी है। उधर जब राघोबाको पता लगा तो उसने कम्पनीसे वादेपर वादा करना शुरू किया, यहाँतक कि वह समस्त मराठा देश(सिन्धिया, होलकर इत्यादि)की आयका १०वाँ भाग अंग्रेजोंको देनेपर तैयार हो गया और १५ लाख रुपयेका माल प्रतिवर्ष खरीदनेकी प्रतिज्ञा की। उसे इस बातका विस्मय था कि क्यों बम्बई-कौंसिल बंगाल-कौंसिलसे इतना डरती है। बम्बई-कौंसिलने प्रतिज्ञापत्रकी शर्तोंको पूरा करनेसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनकार कर दिया और उनके पूरा होनेमें यथाशक्ति विघ्न भी डाले। राघोबा सूरतमें सुरक्षित रखा गया। यद्यपि कर्नल ओप्टन इसके विरुद्ध कहता रहा, परन्तु कौंसिलने एक न सुनी और अपनी सेना भी सूरतमें एकत्र कर दी। इसपर मराठा सरकारने कर्नल ओप्टनका ध्यान इस काररवाईकी ओर दिलाया और यह धमकी दी कि अंग्रेजोंको भी हैदरअलीके सदृश सन्धि करनी पड़ेगी। इसपर कर्नलको बहुत लज्जित होना पड़ा।

यह प्रश्न अभी इसी दशामें था कि लण्डनके डाइरेक्टरों(प्रवर्त्तकों)-का एक पत्र बम्बईमें प्राप्त हुआ। उसमें उन्होंने राघोबाके साथ सूरत-वाले प्रतिज्ञापत्रको पसन्द किया और सब प्रकारसे उसे पूरा करनेकी इच्छा प्रकट की। इस पत्रकी प्राप्तिपर बम्बई-कौंसिलकी बन आयी और यद्यपि वह समझती थी कि अधिकारिवर्गको पुरन्दरके प्रतिज्ञापत्रका कुछ ज्ञान नहीं, फिर भी उसके सदस्य अपनी विधिपर कार्य करनेके लिए कटिबद्ध हो गये।

झूठा दावेदार

उसी समय पूना-सरकारके सामने एक झूठे दावेदारके साथ मुकाबलेकी कठिनाई उपस्थित हुई। एक कन्नौजी ब्राह्मणने पानीपतके युद्धके उपरान्त अपने आपको सदाशिवराव भाऊ प्रसिद्ध किया, परन्तु वह कैद कर दिया गया। अब इन झगड़ोंको देखकर उसके दुर्गपालने उसे मुक्त कर दिया। उसने बहुतसे मराठोंको एकत्र करके कोंकणपर कब्जा करना आरम्भ कर दिया। यहाँ उसे विशेष सफलता हुई, किन्तु सिन्धियाकी सेनाने राज-पामीपर उसे हराकर भगा दिया। पहिले तो वह बम्बई पहुँचकर कोलाबा राघोजी अंग्रियाके पास गया, यद्यपि बम्बई-कौंसिल अपने यहाँ लानेके लिए बड़ा यत्न करती रही। राघोजीने उसे पूना भेज दिया जहाँ वह मार डाला गया।

पूनामें फ्रांसीसी

पूना-सरकारने यह शिकायत भी ओप्टनसे की, परन्तु उसकी कुछ न चलती थी। आखिर बंगाल-कौंसिलने उसे वापस बुला लिया और उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थानपर बम्बई-कौंसिलने फिर मिस्टर मास्टिनको पूना भेजा। नाना फड़नवीस इस कारवाईसे जल गया। उसने स्पष्ट कह दिया कि सारी शरारत इस पुरुषने उठायी है और अब इसके पूनामें पुनः प्रवेश करनेका अर्थ केवल प्रतिज्ञापत्रको भंग करना है। मास्टिनने आते ही प्रतिज्ञापत्रकी शर्तोंके सम्बन्धमें झगड़ा आरम्भ कर दिया। उस समय इंग्लैण्ड और फ्रांसमें युद्धकी तैयारी थी। एक जहाज द्वारा कई फ्रांसीसी पूनामें आ पहुँचे जिनमेंसे एक व्यक्ति सेण्ट ल्यूबनने अपने आपको बादशाह द्वारा प्रेषित प्रकट किया। नाना फड़नवीसने उसका आदरपूर्वक स्वागत किया। किसी फ्रांसीसीका वहाँ विद्यमान होना अंग्रेजोंके लिए असह्य था। मास्टिनने इसके विरुद्ध शिकायत आरम्भ की। नाना फड़नवीस भी यही चाहता था। उसने सेण्ट ल्यूबनको बड़ी प्रतिष्ठाके साथ दरबारमें रख लिया। सेण्ट ल्यूबन शीघ्र ही फ्रांस चला गया जिसमें वहाँकी सरकारको मराठा सरकारकी सहायताके लिए तैयार कर सके। पेशवा अभी बच्चा था। नाना फड़नवीस ही गवर्नमेण्टका सब काम चलाता था। उस समय नाना फड़नवीस ही एक व्यक्ति था जो परिस्थितिको ठीक-ठीक समझता था।

नाना फड़नवीसके वैरी

जब नाना फड़नवीस अंग्रेजोंके साथ उलझनमें पड़ा हुआ था तब पूनामें उसके कई वैरी उत्पन्न हो गये। उस पक्षका नेता उसका चचेरा भाई मोरोबा था। वैर भारतकी हड्डियोंमें विषम ज्वरके कीटाणुकी तरह प्रविष्ट हो गया है। द्वेष सब जगह होता है, परन्तु हमारे यहाँ इतना अधिक है कि हम अपने भाईका नाश अवश्य कर देंगे, चाहे उससे हम दोनोंका विरोधी लाभ उठावे। इस पक्षने राघोबाके साथ गुप्त पत्रव्यवहार आरम्भ कर दिया। सखाराम बापू भी उसकी ओर झुक रहा था। आखिर उन लोगोंने बम्बई-कौंसिलको भी पत्र लिख दिया कि हम सब प्रकारसे तुम्हारी सहायता करेंगे। बम्बई-कौंसिल अब फिर अपने पुराने निश्चयपर तैयार हो गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने बंगाल-कौंसिलको एक पत्रमें सब वृत्तान्त लिखकर सैनिक सहायताके लिए प्रार्थना की। गवर्नर-जेनरलको पूनामें फ्रांसीसियोंकी विद्यमानता मालूम हुई तो उसने कर्नल लैजलीके अधीन थोड़ीसी सेना स्थलमार्गसे बम्बई भेजनेके लिए शीघ्र आज्ञा दे दी। हेस्टिंग्जकी इस बातका इंग्लैण्डमें बड़ा उपहास हुआ। कौंसिलमें बड़ा विरोध हुआ कि फौज जहाज द्वारा सुगमतापूर्वक क्यों न भेजी गयी।

सन्धिका प्रयत्न

परन्तु वारेन हेस्टिंग्जने सारी जिम्मेवारी अपने ऊपर ली और इसका रहस्य न खोला। स्थलमार्गसे सेना भेजनेका उसका यह विशेष उद्देश्य था कि वह मार्गमें मोदाजी भोंसलेके साथ सन्धि भी स्थिर कर ले। मोदाजीके विषयमें वारेन हेस्टिंग्जका कुछ ऊँचा विचार था। वह समझता था कि मोदाजी वंगसेनाकी सहायतासे सुगमतया पूना या सतारामें राजा बनाया जा सकता है। इस संकल्पसे उसने पहिले ईलियटको दूतके तौरपर सन्धि आदिके लिए बरार भेजा।

दुर्भाग्यसे वह वहाँ पहुँचते ही मर गया। वारेन हेस्टिंग्ज वही ऐक्य कर्नल लैजली द्वारा फिर स्थिर करना चाहता था। इस सेनाके लिए उसने सिन्धिया तथा होलकरसे आज्ञा माँगी। बहाना यह किया कि वह सेना फ्रांसीसी आक्रमण रोकनेके लिए बम्बई भेजी गयी है। इतनेमें पूनामें राज्यक्रान्ति शुरू हो गयी। होलकरकी सहायतासे मोरोबा फड़नवीसकी पार्टीने शासन अपने हाथमें कर लिया और नाना फड़नवीसको भागकर पुरन्दरके दुर्गमें आश्रय लेना पड़ा। उस समय हरिपन्त और सिन्धिया हैदरअलीके विरुद्ध युद्ध कर रहे थे। ये दोनों नाना फड़नवीसके साथ थे।

हैदरअलीने राघोबाके साथ मैत्रीके विचारसे करनाटकमें युद्ध आरम्भ कर दिया था और कई दुर्गोंपर उसका अधिकार भी हो गया था। हरिपन्तके आनेपर वह डर गया और सन्धि चाहने लगा।

हरिपन्तको लौटना अभिप्रेत था, पर उसने यह भेद खुलने न दिया और हैदरअलीसे एक अच्छी रकम लेकर सन्धि की। फिर पूना वापस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आकर सारा राज्यप्रबन्ध नाना फड़नवीसके हाथमें कर दिया और मोरोबाको अहमदनगरमें कैद कर दिया। सखाराम बापू भी वृद्ध होनेके बहाने पृथक् कर दिया गया।

मोरोबाके पक्षको परास्त देखकर बम्बई-कौंसिलने मराठा-सरकारके साथ पत्रव्यवहार करना उचित समझा और पूछा कि आप पुरन्दरके प्रतिज्ञापत्रको स्वीकार करनेको तैयार हैं या नहीं। उत्तरमें नाना फड़नवीसने स्पष्ट रूपसे कहला भेजा कि यदि अंग्रेज अपनी ओरसे शर्तें पूरी करेंगे तो हम भी प्रतिज्ञापत्रके अनुसार आचरण करेंगे। जिस समय मास्टिन मोरोबाकी पार्टीके साथ मेल-मिलाप करके बम्बई-कौंसिलको मौखिक रूपसे सब वृत्तान्तोंसे अवगत करानेके लिए स्वयं बम्बई गया उसी समय इंग्लैण्ड और फ्रांसके मध्य युद्ध छिड़ जानेका समाचार आया।

मिस्टर मास्टिनकी नयी तजवीज यह थी कि बम्बई-कौंसिल माधवराव नारायणको पेशवा स्वीकार करे और उसके बाल्यकालतक शासन राघोबाके हाथमें रहे। बम्बई-कौंसिलने यह तजवीज स्वीकार करके तैयारी आरम्भ कर दी।

बम्बई-कौंसिलका दूसरा अभिक्रम

इस समय पहिली बार गवर्नर-जेनरलने मोदाजीके विषयमें अपना विचार बम्बई-कौंसिलको लिखा, परन्तु कौंसिलने यह कहकर कि राघोबाका अधिकार बहुत अधिक है, उस तजवीजकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। कर्नल अजीर्टन सेनाध्यक्ष बनाया गया। कौंसिलका खयाल था कि बहुतेरे मनुष्य केवल रुपया एकत्र करनेके आशयसे भारत आते हैं, चाहे वह रुपया भले साधनसे मिले या बुरे। कौंसिलने सब बातोंका निर्णय करनेके लिए एक कमेटी नियत की जिसका प्रधान मिस्टर कारनक था, जो बंगालके संग्राममें लड़ता रहा था। मास्टिन भी इसी कमेटीका सदस्य था। राघोबाके साथ लगभग पुरानी शर्तोंपर प्रतिज्ञापत्र लिखा गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाना फड़नवीसकी तदबीर

उनका शत्रु नाना फड़नवीस भी असाधारण नीतिपटु था। वह अंग्रेजोंके विचारों तथा कार्योंको भली भाँति समझता था। वह कहा करता था कि आंग्ल शक्ति हमारे मार्गमें कण्टकके सदृश है। जबतक उसकी समाप्ति न होगी, देशमें शान्ति कदापि न होगी। अब उसने प्रतिज्ञा कर ली कि मैं इसे नष्ट करके ही छोड़ूँगा। पहिले तो उसने अपनी सब तदबीरोंमें महादजी सिन्धियाको साथ मिलाया और फिर उसकी सम्मतिसे भारतवर्षकी समस्त देशी शक्तियोंको मिलाकर सब ओरसे अंग्रेजोंपर आक्रमण करनेकी तैयारी आरम्भ की। साथ ही लैजली-की सेनाके मार्गमें सब प्रकारके विघ्न उत्पन्न करनेके लिए मराठा अफसरों तथा बुन्देलखण्डके राजपूतोंको गुप्त आज्ञापत्र भेजे।

अंग्रेजोंसे हैदरअलीका असन्तोष

कपट-प्रबन्धको पूर्ण सफल बनानेके लिए नाना फड़नवीसके दूत सब देशी रियासतोंके पास पहुँचे। जब ये दूत नाना फड़नवीसका पत्र लिये हैदरअलीके पास पहुँचे तो उस समय वह स्वयं अंग्रेजोंसे जला बैठा था। हरिवर्षसे युद्धका समाचार आनेपर मद्रास-कौंसिलने अपनी सेना पाण्डि-चेरीके विरुद्ध भेजी। जब पाण्डिचेरीपर अधिकार हो गया तो उसने फ्रांसीसी बस्ती माहीको भी जीतनेका विचार कर लिया। माही हैदर-अलीके प्रान्तमें था और उसकी रक्षा करना अपना कर्तव्य समझकर हैदरअलीने इसके विरुद्ध मद्रास-कौंसिलको लिखा, परन्तु जब माहीपर भी अधिकार हो चुका तो उसने मिस्टर गिरेको दूत बनाकर हैदरअली-के पास भेजा। बहुत वार्त्तालापके अनन्तर हैदरअलीने मिस्टर गिरेको स्पष्टतः बता दिया कि अंग्रेज प्रतिज्ञापत्र लिखते हैं और जब चाहते हैं उसे तोड़ देते हैं, उनके शब्दोंका कोई विश्वास नहीं। इसी अवस्थामें नाना फड़नवीसके दूत उसके पास आ पहुँचे। इनके साथ मिलनेके लिए वह तत्काल उद्यत हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैदरअलीने निजामको भी मिला लिया

आरम्भसे ही फ्रांसीसियोंके साथ हैदरअलीकी मैत्री थी। उस समय लैली (एक फ्रांसीसी अफसर), जो कुछ फ्रांसीसी सिपाहियोंके साथ निजामके पास था, हैदरअलीके पास आ गया। केवल यही नहीं, हैदरअलीने निजामअलीको भी, जो प्रायः अंग्रेजोंके साथ मित्रता रखता था, अपने साथ इस कपट-प्रबन्धमें मिला लिया। निजामअलीका एक भाई बसालतजंग अदूनीका जागीरदार था। मद्रास-कौंसिल गन्तूरका जिला प्राप्त करनेके लिए उसके साथ मैत्री करना चाहती थी। बसालतजंग गन्तूर देनेपर राजी हो गया। निजामअली बसालतजंगसे डरता था। इस प्रतिज्ञापत्रसे उसके हृदयमें बहुत चिन्ता हुई। उसे यह भय हुआ कि कहीं अंग्रेज़ उसकी सहायता करके उसे हैदराबादके सिंहासनपर न ला बिठायें। इस भयका कारण यह था कि मद्रास-कौंसिल सदा निजामसे अपने यहाँसे फ्रांसीसी सेना हटा देनेके लिए कहती रही थी। फ्रांस और इंग्लैण्डमें परस्पर युद्ध आरम्भ होनेपर उसने बसालतजंगको आशाएँ दिलाना आरम्भ किया। हैदरअली भी अंग्रेजोंके गन्तूरपर अधिकार करनेके विरुद्ध था और जब आंग्ल सेना अधिकार करनेके लिए आयी तो वह अपनी सेना लेकर मुकाबलेके लिए तैयार हो गया।

शाह आलम और मोदाजी भी सम्मिलित

नाना फड़नवीसने शाह आलमके पास दूत भेजकर उसे भी इस कपट-प्रबन्धमें मिला लिया और उससे निजाम तथा हैदरअलीको पत्र लिखवाये कि वे हृदयसे उसकी सहायता करें। उधर उसने डच लोगों और फ्रांसीसियोंके साथ अंग्रेजोंके विरुद्ध पत्रव्यवहार किया। मोदाजी भोंसलेपर जोर डालकर उसको भी साजिशमें मिला लिया। इस प्रकार उस समय भारतके समस्त बड़े-बड़े देशी राजे अंग्रेजोंके विरुद्ध एकत्र हो गये। सबका विचार यह था कि अंग्रेजी बलका नाश कर दिया जाय। किसीको यह पता न था और न इसका निर्णय किया गया कि इसके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपरान्त उनको क्या लाभ होगा और क्या करना होगा। केवल विनाश-के उद्देश्यसे साजिशका सफल होना बहुत कठिन था।

नाना फड़नवीसके मुकाबलेपर उसका शत्रु बड़ा अनुभवी तथा भारतवासियोंके स्वभावसे भली भाँति अभिज्ञ था। यह सम्भव है कि यदि उस समय वारेन हेस्टिंग्ज गवर्नर-जेनरल न होता तो आंग्ल राज्यकी समाप्ति हो गयी होती।

संघटनकी निर्बलता

संवत् १९१२ (सन् १८५६ ई०) की हलचलसे पूर्व ही एक बड़े संघटनका जन्म हुआ जिसमें आर्यों तथा मुसलमानोंने एक होकर अपने आपको बचानेका यत्न किया। वारेन हेस्टिंग्ज साजिशकी निर्बलताको तत्काल ताड़ गया। निर्बलता यह थी कि उनमेंसे निजाम केवल खास शिकायतके कारण सम्मिलित हुआ था। जब वारेन हेस्टिंग्जने बसालत-जंगके साथ मद्रास-कौंसिलका प्रतिज्ञापत्र भंग कर दिया तो निजाम-अलीका असन्तोष दूर हो गया और उसने अंग्रेजोंके विरुद्ध कोई कार्य न किया। मोदाजी भोंसले भी केवल पूना सरकारके दबावसे सम्मिलित हुआ था और अन्दरसे सब समाचार वारेन हेस्टिंग्जको देता रहा। मोदाजीका दीवान दिवाकर वारेन हेस्टिंग्जके हाथमें था। इसी दबावके भयसे उसने बीस सहस्र सेना बंगालकी विजय करनेके लिए भेजी। बंगालकी रक्षाके लिए एक सिपाही भी विद्यमान न था। यह सेना केवल पूना सरकारको दिखानेके लिए भेजी गयी थी। एक वर्षपर्यन्त वह सीमापर बेकार पड़ी रही। मोदाजी वारेन हेस्टिंग्जको पुराने सम्बन्धोंके कारण अपना सच्चा मित्र तथा हितैषी समझता था।

वारेन हेस्टिंग्जकी कारखाई—वारेन हेस्टिंग्जपर दोषारोपण

इस प्रकार वारेन हेस्टिंग्जने एकको उसकी शिकायत दूर करके और दूसरेको मित्रता निबाहनेको प्रेरित करके आपसमें फूट डाल दी। एक और तीसरा, फतहसिंह गायकवाड़ अपने बचावके लिए साजिशसे निकलकर अंग्रेजोंके साथ हो गया। यह इस प्रकार हुआ। आंग्ल सेनाने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहिले गुजरातपर आक्रमण कर दिया। पूनासे कोई सहायता फतहसिंह-को न पहुँची। वह इतना भयभीत हुआ कि अंग्रेजोंके साथ मैत्री करने-पर मजबूर हो गया। शेष रहे सिन्धिया और होलकर। इनकी रियासतें मध्यभारतमें थीं। उधर गोहडका राना सिन्धियाका शत्रु विद्यमान था, क्योंकि थोड़े समय पहले मराठोंने उससे कर प्राप्त किया था। हेस्टिंग्जने उसके साथ मित्रता करके उसके व्ययसे सिन्धियाके देशपर आक्रमण करनेके लिए आंग्ल सेना भेजी। केवल नाना फड़नवीस और हैदरअली दो ही रह गये जिन्होंने अपनी साजिशको अन्ततक पूरा करनेका यत्न किया। फ्रांस भी इस संघटनमें मिला हुआ था, परन्तु फ्रांसीसी नौ-सेनापतिने अन्तिम समयमें रुपया लेकर विश्वासघात किया। इस बड़े संघटनको तोड़नेके लिए वारेन हेस्टिंग्जको रुपयेकी बड़ी आवश्यकता थी। यह रुपया उसने राजा चेतसिंह और अवधकी बेगमसे बलात् प्राप्त किया। ये दो बड़े दोष थे जो वारेन हेस्टिंग्जपर बर्क तथा उसके मित्रों द्वारा लगाये गये। लार्ड सभामें उनका सविस्तर वर्णन सुनकर कई स्त्रियाँ, जो मुकदमा सुनने आयी थीं, रोते-रोते बेसुध हो गयीं। यह मुकदमा सात वर्ष चलता रहा। अन्तमें वारेन हेस्टिंग्ज इन दोषोंसे बरी कर दिया गया।

इस साजिशको पूर्ण करनेके लिए महाराष्ट्र तथा करनाटकमें युद्ध हुआ। इसके संक्षिप्त वर्णनसे ज्ञात होगा कि उस समय उन दोनों पक्षोंमें आंग्ल बल विनष्ट होनेके समीप पहुँच गया था। यदि मोदाजी भोंसले बंगालमें अपना कर्तव्य पूरा करता तो बंगालपर भी विजय प्राप्त हो गयी होती और अंग्रेजोंकी सारी आशाओंपर पानी फिर जाता, परन्तु जैसे फ्रांसीसी नौ-सेनापतिके हैदरके साथ विश्वासघातने वैसे ही नाना फड़नवीसके साथ मोदाजी और उसके दीवान दिवाकर पण्डितके विश्वासघातने आंग्ल बलको भारतवर्षमें बचा लिया।

बम्बईसे आक्रमण

जब बम्बईकी सेनाने पूनाकी ओर प्रस्थान किया तो राघोबाके नाम-पर एक विज्ञपन निकालकर सर्वत्र बँटवाया गया। उधर नाना फड़न-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वीसके प्रतिनिधि भी हर जगह यह प्रचार करते थे कि राघोबा अपने भतीजेका घातक है और अब वह पूनामें आंग्ल सत्ता स्थापित करनेके लिए सेना ला रहा है। मिस्टर मास्टिन ज्वरपीड़ित होकर बम्बई चला गया और वहाँ जाकर मर गया। कर्नल ऐगर्टन और मिस्टर कारनकमें परस्पर छोटी-छोटी बातोंमें भी अनबन हो जाती थी और उनकी गति भी बहुत शिथिल थी। उधर नाना फड़नवीस और महादजी सिन्धिया-ने भी अपनी सेना एकत्र कर ली। महादजी सिन्धिया, तुकोजी होलकर और हरिपन्त फड़के सेनाके तीन बड़े अफसर थे। उन्होंने अपनी थोड़ी-सी सेना आंग्ल सेनासे छेड़छाड़ करनेके लिए आगे भेज दी। जब आंग्ल सेना तलेगाँवमें पहुँची तो उसे विदित हुआ कि वह ग्राम और उससे आगेका मार्ग नानाकी आज्ञासे भस्मीभूत कर दिया गया है जिसमें आंग्ल सेनाको सामान-रसद न मिल सके। उसके साथ असबाब ले जानेके लिए उन्नीस हजार तो बैल ही थे। यह परिस्थिति देखकर और राघोबाकी सम्मति प्रतिकूल होनेपर सेनाने पीछे हटनेका विचार कर लिया।

बड़गाँवकी सन्धि

जब आंग्ल सेना पीछे हटने लगी तो मराठा सेनाने उसका पीछा करना आरम्भ कर दिया। वह साथ ही साथ गोलाबारी भी करती जाती थी। २८ पौष, संवत् १८३५ (१२ जनवरी, सन् १७७९ ई०) को प्रातः-काल दिन निकलनेपर आंग्ल सेनाने अपने आपको मराठा सेनासे परि-वेष्टित पाया। मराठा सेनाने पीछेसे आक्रमण किया, परन्तु आंग्ल सेना तोपोंसे मुकाबला करती पीछे हटती गयी और बड़गाँवमें जाकर विश्राम लिया। बहुतसा सामान आदि मराठोंके हाथ लगा। दूसरे दिन मराठों-ने ग्रामपर गोलाबारी आरम्भ की। पन्द्रह अंग्रेजी अफसरोंके मारे जानेसे शेष सब निराश हो गये। देशी सैनिकोंने भागना आरम्भ कर दिया। इस दशामें पीछे हटना असम्भव था और युद्ध करना उससे भी अधिक कठिन। इसलिए कमेटीने सेक्रेटरी फार्मरको सन्धिकी प्रार्थना करनेके लिए भेजा। मराठा सेनाने ये शर्तें सामने रखीं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१) राघोबा वापस दिया जाय,

(२) समस्त प्रान्त, जो अंग्रेजोंने लिया है, लौटा दिया जाय, और

(३) कम्पनी सूरत तथा भड़ोचमें लगान लेना छोड़ दे।

मिस्टर फार्मरने उत्तर दिया कि मैं बिना गवर्नर-जेनरलकी स्वीकृति-के कोई नया सन्धिपत्र नहीं लिख सकता। इसपर महादजीने कहा—"तुमने कर्नल ओप्टनके किये हुए सन्धिपत्रको तोड़नेका अधिकार कहाँसे लिया था ?"

बम्बई-कौंसिलकी निराशा

इसके अनन्तर मिस्टर हौलम नामक एक और दूत महादजीके पास गया। स्पष्टतया उसे सब शर्तोंको स्वीकार करनेका अधिकार दिया गया, परन्तु मिस्टर कारनककी हार्दिक इच्छा महादजीको भ्रममें डालकर लाभ उठानेकी थी। यही नहीं, महादजीके किसी विशेष नौकरको ४१ हजार रुपया रिश्वत दी गयी जिसमें वह उसे अंग्रेजोंसे सन्धि करनेके लिए प्रेरित करे। अनन्तः यह निश्चय हुआ कि समस्त देश मराठोंको लौटा दिया जाय, जैसा कि संवत् १८३० (सन् १७७३ ई०) से पूर्व था। कमेटीने एक आज्ञापत्र बंगालके सेनाध्यक्ष कर्नल लैजलीको लौट जानेके लिए लिख भेजा। राघोबाने भी सिन्धियाके पास स्वयं आकर प्रतिज्ञा करके आश्रय लिया। इस प्रतिज्ञापर स्थिर रहनेके लिए आंग्ल सेनाने फार्मर तथा लेफ्टिनेण्ट स्टूवर्टको जमानतपर मराठोंके सुपुर्द किया ; इस प्रकार आंग्ल सेना छुटकारा पाकर लौट गयी। घाटसे गुजरते ही कर्नल लैजलीको उसके विपरीत दूसरा आज्ञापत्र भेज दिया। बम्बई लौटने-पर कारनक, ऐगर्टन और कर्नल काकबर्न तथा और भी अनेक सेनापति कम्पनीकी नौकरीसे हटाये गये। अब बम्बई-कौंसिल किंकर्तव्यविमूढ़ तथा निराश हो गयी। उसको बहकानेवाला मिस्टर मास्टिन मर चुका था। उसके सब उपायोंका परिणाम बड़ा शोकजनक हुआ। सब बातों-के मूलमें भूल यह थी कि मास्टिनने कौंसिलके मनमें झूठे तथा असम्भव विचार बैठा दिये थे। उसने विश्वास दिलाया था कि राघोबाके जानेपर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूनाके लोग उसके सत्कारके लिए उठ खड़े होंगे और नाना फड़नवीससे लोग इतने अप्रसन्न हैं कि मराठा लोग आंग्ल सेनाकी सहायता करनेपर उद्यत हो जायँगे, परन्तु उसने मराठोंके आचार-व्यवहार तथा मानसिक वृत्तिको नहीं समझा था। यद्यपि उनमें दलबन्दियाँ हो गयी थीं, किन्तु अभी वे इतने न गिरे थे। आंग्ल सेना पूनासे १८ मीलकी दूरीतक जा पहुँची। एक भी सहायक न उठा, अतः उसे यह अपमान सहना पड़ा। बम्बई-कौंसिलका प्रधान हौरनबी भी धृतिशील व्यक्ति था। उसने पिछली घटनापर विशेष जोर न देकर भविष्यपर तत्काल ध्यान दिया। उसने पूना कहला भेजा कि मैं बड़गाँवके सन्धिपत्रपर कार्य करनेके लिए तैयार नहीं। उधर उसने कौंसिलमें यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि किसी प्रकार सिन्धिया अपनी ओर लाया जाय। इसके लिए यह निश्चय किया गया कि सिन्धियाकी कृपाके बदले उसे भड़ोच दे दिया जाय। उसने अपनी सेनाको नये सिरेसे शिक्षा देना भी आरम्भ कर दिया।

उधरसे अब बंगालकी सेना भी आ रही थी। हमने लिखा है कि वारेन हेस्टिंग्जने विशेष प्रयोजनवश स्थलमार्गसे सेना भेजी थी। परन्तु लैजलीको मार्गमें इतनी रुकावटें हुईं कि वह आगे न बढ़ सका। बुन्देलखण्डके राजपूत सेनाके अफसरोंको मार डालते थे और घास काटनेवालोंको पकड़ लेते थे। इसपर लैजली उनके झगड़ोंका निर्णय करनेके लिए बहुत समयतक वहीं पड़ा रहा। अन्तमें गवर्नर-जेनरलने उसे वापस बुलाकर कर्नल गोडर्डको उसके स्थानपर नियुक्त किया। इस समाचारके पहुँचनेके पूर्व ही लैजली मर गया। कर्नल गोडर्डने शीघ्र यात्रा करके नर्मदाको पार किया। अब यहाँ उसे मोदाजीके साथ सन्धि करके ससैन्य उसे पूना ले जाना था। उसने मिस्टर वाटरस्टोनको मोदाजीके पास भेजा। मोदाजीने उसका बड़े प्रेमसे सत्कार किया और सब वृत्तान्त कह सुनाया। यद्यपि उसकी बड़ी इच्छा थी कि मेरा वंश सतारा राजधानीमें राज्य करे, परन्तु पूना सरकार उस समय बड़ी बलशालिनी थी, इसलिए वह इसके लिए किसी और अवसरकी प्रतीक्षा करना चाहता था। उसी समय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोदाजीपर पूनासे षड्यन्त्रमें सम्मिलित होनेके लिए दबाव डाला जा रहा था। इन परिस्थितियोंमें यद्यपि वह स्पष्टतः किसी सन्धिके लिए तैयार न हुआ, परन्तु उसने गवर्नर-जेनरलसे मैत्री स्थापित करनेके लिए दृढ़ निश्चय कर लिया। वहाँसे गोडर्ड आगे चला तो उसे बम्बईकी युद्ध-सम्बन्धी कमेटीके परस्पर विरोधी भावोंके दो पत्र मिले। उसने शीघ्र पहुँचनेका विचार कर लिया। उसके पहुँचनेपर मिस्टर हौरनबीकी जानमें जान आ गयी।

अब यह निश्चय हुआ कि प्रकट रूपसे तो पूना-सरकारके साथ पुरन्दरके सन्धिपत्रके आधारपर सम्बन्ध आरम्भ किया जाय, पर भीतरसे सिन्धियाको पृथक् करनेका यत्न किया जाय। यदि ये दोनों न हो सकें तो फतहसिंह गायकवाड़के साथ मित्रता कर ली जाय। सिन्धियाने रक्षक नियत करके झगड़ेके मूल राघोबाको बुन्देलखण्डमें जागीर देकर भेज दिया। राघोबाके साथी भी साथ थे। उसने अपने साथियोंकी सहायतासे सिन्धियाके सिपाहियोंके साथ मुकाबला किया और भागकर फिर अंग्रेजोंके पास भड़ोच आ पहुँचा।

गायकवाड़से मित्रता

जेनरल गोडर्डको दोनों स्थलोंपर सफलता हुई। अब उसने फतहसिंह गायकवाड़को अपने साथ मिलाना चाहा। संवत् १८३६ के १७ पौष (पहली जनवरी, सन् १७८० ई०) को उसने सेना लेकर गुजरातपर चढ़ाई की। फतहसिंह बहुत दिनोंतक कुछ उत्तर न देकर पूनासे सहायताकी प्रतीक्षा करता रहा। एक मासके भीतर आंग्ल सेनाने बहुतसे नगर तथा दुर्ग ले लिये। फतहसिंहको अब भय हुआ और वह पूनासे निराश होकर अंग्रेजोंके साथ मित्रता करनेपर उद्यत हो गया। पेशवाको कर देना बन्द करके उसने तीन सहस्र सेना द्वारा अंग्रेजोंको सहायता देना भी स्वीकार कर लिया। इस प्रकार 'मराठा संघ' का एक स्तम्भ टूट गया और गायकवाड़ अंग्रेजोंके पक्षमें आ गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आंग्ल सेनाने अहमदाबादका दुर्ग ले लिया। अब सिन्धिया तथा होलकर सेना लेकर फतहसिंहकी सहायताके लिए चले, परन्तु अब समय व्यतीत हो चुका था। उनके विलम्बका कारण यह था कि राघोबाके भागनेपर नाना फड़नवीस और सिन्धियामें कुछ परस्पर वैमनस्य हो गया। नाना फड़नवीस सिन्धियापर दोषारोपण करता था कि तुमने मेरे साथ अधिक रक्षकदल न भेजा। जब सिन्धियाकी सेना नर्मदा पार करके बड़ोदाके पास पहुँची तो सिन्धियाने जनरल गोडर्डके साथ इस विचारसे फिर पत्रव्यवहार आरम्भ किया कि वे राघोबाको लौटा देंगे। उसने उन दोनों अंग्रेजोंको, जो जमानतमें उसके साथ थे, मुक्त कर दिया। वे अंग्रेजी कैम्पमें जा मिले, परन्तु जनरल गोडर्डने उत्तर दिया कि राघोबापर मैं कुछ भी दबाव नहीं डाल सकता।

अभीतक सिन्धियाको यह ज्ञात न था कि यह भावी युद्ध राघोबाके नामपर नहीं, बल्कि अंग्रेज स्वयं अपनी बदनामीको धोनेके लिए कर रहे हैं। गोडर्ड यह चाहता था कि सिन्धिया और होलकर मिलकर पहिले आक्रमण करें, परन्तु उन्होंने केवल उसकी सेनाको काममें लगाये रखा और कोई युद्ध न किया। बम्बई-कौंसिल गोडर्डपर अप्रसन्नता प्रकट करने लगी कि वह व्यर्थ कालयापन कर रहा है, पर वह विवश था। अन्तमें जब मराठोंने उसके भोजन आदिकी सामग्री नष्ट करना आरम्भ किया तो गोडर्डको नर्मदाके पास एक और स्थान ढूँढ़ना पड़ा।

ग्वालियरके दुर्गपर अंग्रेजोंका अधिकार

हेस्टिंग्जने राना गोहडकी, जिसके साथ गवर्नर-जेनरलने मराठोंके विरुद्ध मित्रता की थी, सहायतासे सिन्धियाकी रियासतपर आक्रमण करनेके लिए कप्तान पोपहमके अधीन कुछ सेना भेजी। कप्तान सफलताके साथ ग्वालियरके दुर्गके पास जा उपस्थित हुआ। एक रात सीढ़ियाँ लगाकर सिपाही ऊपर चढ़ गये और संवत् १८३७ के १७ श्रावण (४ अगस्त, सन् १७८० ई०) को उन्होंने बिना युद्ध किये ही दुर्गपर अधिकार कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इधर मराठा सेना युद्धमें लगी हुई थी और हैदरअली, मोदाजी आदि शेष मित्रोंकी प्रतीक्षा कर रही थी। हैदरअलीने आंग्ल सेनाके एक बड़े भागको कैद कर लिया जिसपर गवर्नर-जेनरलने आयरकूटको सेना देकर मद्रास भेजा। उधर उसने मराठोंके साथ मैत्री करके हैदरअलीके विरुद्ध सन्धि करनेकी चेष्टा करनेके लिए गोडर्डको लिखा।

हैदरअलीके साथ युद्ध

जब हैदरअलीने अंग्रेजोंके साथ युद्ध आरम्भ किया तो उसने उनके विरुद्ध एक बड़ा विज्ञापन छापकर बाँटा जिसमें आर्य और मुसलिम दोनोंको एक होकर यत्न करनेके लिए प्रार्थना की गयी थी। इस विज्ञापनका प्रभाव यह हुआ कि सभी मसजिदों और मन्दिरोंमें काजियों तथा ब्राह्मणोंने हैदरअलीकी सफलताके लिए प्रार्थनाएँ कीं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस युद्धमें दक्षिणके लोगोंकी सहानुभूति हैदरअलीके साथ थी। हैदरअली सेना लेकर कांजीवरम् पहुँचा। कर्नल बेली उसके मुकाबले-पर आ रहा था। हैदरअलीने वन्देवाशको घेर लिया। उधर सेनापति मनरोने कर्नल बेलीको अपने साथ मिलनेके लिए आज्ञा दी। मेल होना असम्भव था। जब हैदरअलीको कर्नल बेलीके प्रस्थानका पता लगा तो वह घेरा उठाकर उसको रोकनेके लिए चला और कहने लगा—'अन्ततः मैंने उसको आ लिया।' कर्नल बेलीको हैदरअलीके आगे शस्त्र डालने पड़े। जब बेली अपने बचावके लिए युद्ध कर रहा था उस समय मनरो यों ही स्वप्नमें समय टालता रहा।

सर आयरकूट

अब हैदरअलीने बड़ी भूल की कि मद्रासको छोड़कर वन्देवाशके मुहासरे(घेरे)की ओर चला गया। मद्रास सर्वथा खाली था। उसे यह ध्यान न हुआ कि मद्रासकी विजयमें वन्देवाशकी विजय भी सम्मिलित है। जब वह उधर गया तो मद्रास-कौंसिलकी दुःखभरी प्रार्थना बंगाल पहुँची। वहाँसे आयरकूट सेना लेकर चला। मद्रास पहुँचनेपर वहाँकी दुर्दशा देखकर वह विस्मित रह गया। कितने दिन तो उसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वहाँका प्रबन्ध ठीक करनेमें लगे। आयरकूटने सेना लेकर पाण्डिचेरीकी ओर प्रस्थान किया। वह वृद्ध हो चुका था, उसके अन्दर पहिला उत्साह न था, इसलिए मुकाबलेके भयसे पीछे हटता गया। अन्ततः गाडालवरमें वह इस प्रकार घिर गया कि हैदरअलीकी सेनाने उसकी समस्त भोजन-सामग्री बन्द कर दी। उसके सिपाहियोंने ग्राममें गड़े हुए अनाजको निकालकर कुछ दिन व्यतीत किये। यहाँतक नौबत पहुँची कि कहींसे भोजन मिलनेकी आशा न रही। समुद्रमें खाद्य-सामग्रीसे भरे हुए जहाज आये थे, परन्तु वहाँ फ्रांसीसी बेड़ा उसको रोकनेके लिए कटिबद्ध था।

जब आयरकूटको कोई मार्ग सूझ न पड़ा तो उसने फ्रांसीसी नौ-सेनापतिको सन्देश भेजा। हैदरअली उसे फ्रांसीसी जातिकी प्रतिष्ठाके नामपर जोर देता रहा कि तुम अपने स्थानपर दो दिन स्थिर रहो। फ्रांस-के लिए इंग्लैण्डसे बदला लेनेका यह शुभ अवसर था। मद्रासकी सेना नष्ट हो चुकी थी। बंगालकी घिरी हुई समस्त सेना शस्त्र डालनेको उद्यत थी कि अकस्मात् नौ-सेनापतिने वहाँसे अपना बेड़ा हटा लिया और आंग्ल सेनाके लिए सामग्रीके जहाज पहुँच गये। ठीक-ठीक हेतु ज्ञात नहीं कि फ्रांसीसी नौ-सेनापतिने ऐसा क्यों किया। केवल एक बात सम्भव प्रतीत होती है कि उसने अपने लिए कुछ बड़ी रिश्वत लेकर अपनी जातिके शत्रुओंको बचा दिया।

आयरकूटके लिए अब हैदरअलीके साथ युद्ध करनेके सिवा और कोई उपाय न था। इस युद्धमें जो कि पोर्टोनवो स्थानपर हुआ, आंग्लसेनाने हैदरअलीको पराजित किया। इस विजयसे अंग्रेजोंके पैर करनाटकमें पुनः जम गये।

जेनरल गोडर्ड

जेनरल गोडर्डको मद्रासके कष्टोंके पश्चात् पूना-सरकारसे सन्धि करनेके लिए यत्न करने और यदि वह स्वीकार न करे तो पूर्ण दल-बलके साथ सामना करके तत्काल निर्णय करनेका आदेश हुआ। उस समय सिन्धिया अपनी रियासतकी रक्षाके लिए मध्यभारतकी ओर चला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया था। कोंकणमें आंग्ल सेनाने कुछ मास घेरा डालकर बसीनके दुर्गपर भी अधिकार कर लिया। युद्धमें प्रसिद्ध मराठा जेनरल रामचन्द्र पन्त काम आया।

गोडर्डने नाना फड़नवीसको सन्धिके लिए लिखा और हैदरके विरुद्ध मित्रता स्थापित करनेका प्रस्ताव भी किया। नाना फड़नवीसने स्पष्ट उत्तर दिया कि मैं ऐसी कोई सन्धि नहीं करूँगा जिसमें मेरा मित्र हैदरअली शामिल न होगा।

मराठोंके हाथ गोडर्डकी पराजय

इसपर गोडर्ड पूनापर आक्रमण करनेके विचारसे बोरघाटतक आया। नाना फड़नवीसने पेशवाको पुरन्दरके दुर्गमें भेज दिया और स्वयं हरिपन्त फड़के और तुकोजी होलकरके साथ घाटकी ओर बढ़ा। उसने परशुराम भाऊको सेना देकर कोंकण भेजा। परशुरामने कप्तान मेकीकी सेनापर, जो कि भोजनसामग्री लिये जा रही थी, ऐसा आक्रमण किया कि वह बड़ी कठिनतासे विनष्ट होते-होते बची। जेनरल गोडर्डके लिए आगे बढ़ना असम्भव हो गया। अन्तमें उसने बम्बई-कौंसिलसे सम्मति लेकर लौटनेका निश्चय किया। कुछ और सेना कर्नल बर्डनके अधीन नपोयलसे भोजनसामग्री ला रही थी। उसपर भी परशुरामने आक्रमण किया और समस्त पशु अपने अधिकारमें कर लिये। गोडर्ड अब लौट भी न सकता था। उसने बम्बईसे सहायतार्थ प्रार्थना की, परन्तु अब तुकोजी होलकर भी परशुरामके साथ जा मिला। एक ओरसे हरिपन्त सेना लिये आ रहा था। उसने पीछेसे आते ही खेमे, बारूद और दो सहस्र गोले, तोप इत्यादि सामान गोडर्डसे छीन लिया। अब गोडर्ड अपनी सेना लिये आगे-आगे भागता था और मराठा सेना तीनों ओरसे पीछे-पीछे आक्रमण करती जाती थी। यदि वह कहीं ठहर जाता तो मराठा सेना भी वहाँ ठहर जाती। नपोयल पहुँचनेतक गोडर्डके पाँच सौके लगभग मनुष्य मरे जिनमें १६ अंग्रेज अफसर थे। वहाँतक पहुँचकर मराठा सेनाएँ लौट आयीं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मराठा लोग गोडर्डकी इस वापसीको अपनी बड़ी भारी विजय समझते हैं, यद्यपि उनकी भी पर्याप्त हानि हुई। मराठोंने कोंकणके दुर्गोंको दृढ़ कर लिया। कुछ सेना गुजरात भेजी, शेष सैनिक अपने घर चले गये। बम्बईकी परिस्थिति कुछ अच्छी न थी, इसलिए गवर्नर-जेनरलने सिन्धियाके विरुद्ध कर्नल कामकके अधीन और सेना भेजी। सिन्धिया भली भाँति सेनाका सामना करता रहा, परन्तु बहुत दिनोंतक युद्ध चलनेसे उसका देश नष्ट होने लगा। वह युद्ध जारी रखनेसे ऊब गया। अन्तमें उसने संवत् १७३८ के २७ आश्विन (१३ अक्टूबर, सन् १७८१ ई०) को आंग्ल सेनाके साथ सन्धि कर ली। सिन्धियाने अंग्रेजों और मराठोंमें सन्धि करानेका निश्चय किया। जब इधर सिन्धिया सन्धि करानेपर राजी हो गया तो उधर वारेन हेस्टिंग्जने मोदाजीसे हैदरअलीके विरुद्ध सहायताके लिए प्रार्थना की। मोदाजी भी द्रोहमें सम्मिलित था। उसने अपने प्रतिज्ञानुसार तीस सहस्र सैनिक अपने पुत्र चिमणाजीके अधीन कटक भेजे। वह सेना एक वर्षतक वहाँ ही पड़ी रही। अब चिमणाजीने कहला भेजा कि ५० लाख रुपया लेकर मैं अपनी सेना हैदरअलीके विरुद्ध ले जानेपर उद्यत हूँ। निजामअलीपर इस समाचारका बहुत प्रभाव पड़ा। वह हैदरअलीसे सर्वथा पृथक् रहा। उधर नाना फड़नवीसकी ओरसे मोदाजीको धमकियाँ आ रही थीं कि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो अन्यथा पूना सरकारकी ओरसे तुमपर आक्रमण किया जायगा। उनसे परेशान होकर मोदाजीने पूना-सरकार और अंग्रेजोंमें सन्धि करानेका यत्न आरम्भ किया।

सालबाईकी सन्धि

अन्ततः गवर्नर-जेनरलके प्रतिनिधि ऐण्डर्सन और पूना-सरकारकी ओरसे महादजी सिन्धियाके मध्य संवत् १८३९ के २३ ज्येष्ठ (६ जून, सन् १७८२ ई०) को सालबाईमें सन्धि हुई। इसका आधार पुरन्दरका सन्धिपत्र था। इस सन्धिपत्रकी स्वीकृति देनेमें नाना फड़नवीस हैदरअलीसे सम्मति लेनेके विचारसे विलम्ब करता रहा, उसकी सम्मतिके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिना वह सन्धि करनेको कदापि तैयार न था। इतनेमें समाचार आया कि हैदरअली ६५ वर्षकी आयुमें परलोकवासी हो गया। इसपर नाना फड़नवीसने संवत् १८३९ के फाल्गुन (फरवरी, सन् १७८३ ई०) में उस सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। इस सन्धिपत्रके अनुसार राघोबाको गोदावरीपर जागीर दी गयी।

हैदरअलीकी मृत्युके उपरान्त उसके पुत्र टीपूने युद्ध जारी रखा। सन्धिके लिए मद्रास-कौंसिलके सविनय प्रार्थना करनेपर और उसके दूतों-के साथ दुर्व्यवहार करनेके उपरान्त टीपूने मंगलोरका सन्धिपत्र स्वीकार किया। सिन्धियाके शीघ्र सन्धि करनेका एक और कारण यह था कि उस समय नजफ खाँ, जो मराठोंके दक्षिण जानेके पश्चात् दिल्लीमें शासन करता था, मर गया था। नजफ़ खाँकी मृत्यु होनेपर उसके पुत्र अफरास्याब खाँ और एक सम्बन्धी मिर्जा शफीके मध्य झगड़ा हुआ जिसमें शफी मारा गया।

दिल्लीमें महादजीका शासन

अब महादजीको दिल्ली खाली पाकर वहाँ अपना शासन जमानेका अवसर मिल गया। यह भी लिख देना आवश्यक है कि गवर्नर-जेनरलने गुप्त रीतिसे अपनी अनुमति प्रकट कर दी कि दिल्ली-सम्बन्धी बातोंमें मैं किसी प्रकारका हस्तक्षेप न करूँगा, वहाँ सिन्धियाको सब कुछ करनेका अधिकार होगा। अफरास्याब खाँने सहायताके लिए सिन्धियाको बुला भेजा, परन्तु शीघ्र ही शफीके भाईने अफ़रास्याबका वध कर डाला। अब महादजी वास्तविक रूपसे दिल्लीमें स्वतन्त्र हो गया। उसने पेशवा-के लिए प्रतिनिधिका पद प्राप्त करके स्वयं दिल्लीमें राज्य करना आरम्भ किया। बादशाहने महादजीको सेनाध्यक्ष नियत करके दिल्ली तथा आगरा उसे दे दिया। सिन्धियाने साठ सहस्र रुपया राजकुलके व्ययके लिए देना स्वीकार किया। इस प्रकार मराठोंका प्रथम युद्ध समाप्त हुआ।

युद्धका प्रभाव

युद्धकी समाप्तिपर यद्यपि अंग्रेजोंकी दशा युद्धके पूर्वकीसी ही रही, परन्तु देशमें उनकी योग्यताका सिक्का जम गया, क्योंकि सभी रियासतें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकत्र होकर भी उनको न निकाल सकीं। मराठा साम्राज्य युद्धके अनन्तर अपनी उन्नतिके शिखरपर चढ़ गया। इधर नाना फड़नवीस दक्षिणमें निज़ाम तथा टीपूसे चौथ प्राप्त कर रहा था, उधर महादजी सिन्धिया दिल्लीका अधिपति बना हुआ था। उसने बंगालपर मराठा चौथका पुराना दावा किया। उस समय हेस्टिंग्जके स्थानपर मैक्फर्सन गवर्नर-जेनरल था। उसने इस माँगपर भोंसलेजीको सिन्धियाके विरुद्ध करना चाहा, क्योंकि बंगालकी चौथपर भोंसलेजीका अधिकार था। अब वह अंग्रेजोंका मित्र था, अतएव सिन्धियाको मौन रह जाना पड़ा।

मराठोंकी अवनति

इसके अगले बीस वर्षोंमें अंग्रेजी सरकारकी शक्ति योग्य तथा अनुभवी अफसरोंके आनेसे बढ़ती ही गयी। 'मराठा-संघ' स्वाभाविक निर्बलताओंके कारण टुकड़े-टुकड़े होने लगा। संघके पाँच सदस्योंमेंसे दो पृथक् हो गये थे। अब शेष तीनोंके अन्दर एक दूसरेसे द्वेष होना आरम्भ हुआ जिससे मराठा साम्राज्यकी समाप्ति ही हो गयी। सिन्धिया और होलकर दोनों उत्तर भारतकी ओर थे। सिन्धियाने दिल्लीमें अपना अधिकार जमा लिया था। होलकर सदैव उससे दिलसे वैर करता था। सिन्धिया राजपूत राजाओंसे कर लेनेपर कटिबद्ध हुआ। इसमें उसे जयपुर तथा जोधपुरके विरुद्ध युद्ध भी करना पड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठा प्रकरण

मराठा साम्राज्यका अन्त

टीपूसे युद्ध—टीपूके विरुद्ध तीन शक्तियाँ

जब सिन्धिया राजपूतोंसे झगड़ रहा था तब पूना-सरकार हैदरअली-के पुत्र टीपूके साथ युद्ध करनेमें लगी हुई थी। टीपू अपने पिताके सर्वथा विपरीत चलता था। उसे अपने बलका बड़ा गर्व था। टीपूने नरगोंध-के देसाईसे अत्यन्त अधिक कर प्राप्त करना चाहा। देसाईने पूना सर-कारसे शिकायत की। नाना फड़नवीसने टीपूको लिखा कि तुम्हें साधारण कर लेनेका अधिकार है। टीपूने देसाईके परिवारका वध करवा दिया और उसकी कन्या अपने महलोंमें भेज दी। उसने आर्योंको पकड़कर बलपूर्वक सुन्नत करके मुसलमान बनाना आरम्भ किया जिससे एक बार दो सहस्र ब्राह्मणोंने मरना स्वीकार कर लिया।* इसपर हरिपन्त मराठा

*कुछ विद्वानोंकी रायमें टीपू न तो उतना अत्याचारी था जितना कि वह प्रायः प्रकट किया जाता है और न उसे हिन्दुओंसे विशेष द्रोह ही था। श्री सम्पूर्णानन्द अपनी पुस्तक 'भारतके देशी राष्ट्र' में लिखते हैं—

"उसकी (टीपूकी) योग्यताका हमको (अंग्रेजोंको) अनुभव हो गया है—उसके पास विश्वासपात्र और परामर्श देनेवाले हैं, पर मन्त्री एक भी नहीं है और वह अपने शासनके समस्त ब्योरेका निरीक्षण और नियन्त्रण स्वयं करता है। वह बिना बाहरी दिखावेके अपने गौरवको सँभालता है। उसके राज्यके कृषकोंकी रक्षा होती है और उनका परिश्रम प्रोत्साहित और पुरस्कृत होता है। गत युद्धके पहले टीपूकी प्रजा—विशेषतः मालाबारी प्रजा—के प्रति क्रूरता और अत्याचारके समाचार बहुत फैल रहे थे, वह निर्मूल नहीं थे, पर इनके अत्युक्तिपूर्ण होनेका यही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेना लेकर पहुँचा। निजाम भी मराठोंके साथ मिल गया। यह देख टीपूने सन्धिके लिए प्रार्थना की। उसने बदामी, कटोर तथा नरगोध-के अतिरिक्त ४५ लाख रुपया देना स्वीकार किया। इसके बाद फ्रांसके साथ सम्बन्ध स्थापित करके वह अपना सैनिक बल बढ़ानेमें लग गया। इससे सबके हृदयमें भयका संचार हो गया। इसी समय बसा-लतजंगके मर जानेपर लार्ड कार्नवालिसने प्रतिज्ञानुसार निजामसे गन्तूर-का जिला माँगा। निजामने जिला दे दिया, किन्तु इसी सन्धिपत्रके आधारपर टीपूके विरुद्ध अंग्रेजोंकी सहायता भी माँगी। अंग्रेजोंको टीपूके फ्रांसके साथ सम्बन्धसे भय उत्पन्न हो गया था। इसलिए मराठों, अंग्रेजों तथा निजामने मिलकर टीपूको अपमानित करनेका विचार कर लिया। मराठा, मुगल तथा आंग्ल सेनाने मिलकर टीपूकी रियासतपर आक्रमण किया। टीपू एक वर्षतक लड़ता रहा, आखिर श्रीरंगपट्टमको आंग्ल सेनाके हाथ पड़ते देखकर संवत् १८४८ (सन् १७९१ ई०) में उसने सन्धि कर ली और तीन करोड़ रुपया और आधा देश तीनों शक्तियों-के सुपुर्द कर दिया। उन्होंने आपसमें यह धन बराबर-बराबर बाँट लिया।

गुलाम कादिर

सिन्धियाको राजपूतोंके साथ संग्राममें बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। एक

पर्याप्त प्रमाण है कि युद्धके कालमें उसके पैतृक राज्यसे एक भी प्रतिष्ठित सुशील या प्रभावशाली व्यक्ति उसके पक्षका परित्याग करके हमसे आकर न मिला।" (मेजर-जेनरल सर जान मैलकम लिखित 'दि पोलिटिकल हिस्ट्री आफ इण्डिया', भाग २)

अभी थोड़े ही दिन हुए, श्री शंकराचार्यके शृंगेरी-मठके कई ताम्र-पत्र और अन्य ऐतिहासिक पत्र प्रकाशित हुए हैं। उनसे प्रतीत होता है कि टीपू उक्त मठकी सब प्रकारसे सहायता करता था और तत्कालीन मठाधीशसे विजयके लिए आशीर्वाद माँगता था। ऐसे मनुष्यको अत्या-चारी और हिन्दुओंका शत्रु बताना सत्यकी हत्या करना है—सं०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय शाही सेना भी राजपूतोंके साथ मिल गयी। महादजीने एक पत्र नाना फड़नवीसको सहायताके लिए लिखा। उसमें उसने बताया कि मैं सब कुछ मराठा साम्राज्यके लिए कर रहा हूँ। मेरे सेवा-कार्योंकी ओर ध्यान देकर तुम अपने हृदयमें मेरे प्रति द्वेषभाव न रखो। इसी समय गुलाम कादिर रोहेलाने दिल्लीपर अधिकार करके शाह आलम-की आँखें निकलवा डालीं और उसके परिवारका वध कर डाला। इसपर राजपूतोंके साथ करका निर्णय करके सिन्धियाको सेना लेकर दिल्ली आना पड़ा। गुलाम कादिर भागा, किन्तु पकड़ा जाकर मारा गया। सिन्धिया-ने नेत्रहीन बादशाहको पुनः सिंहासनपर बैठाया। दिल्लीके सभी झगड़ों-का निर्णय करके सिन्धिया बादशाहकी ओरसे अपनेको पेशवाका प्रति-निधि कहलाकर और महाराजाधिराज आदिकी उपाधियाँ तथा बहुमूल्य वस्त्र लेकर पूना चला। नाना फड़नवीसको कुछ सन्देह था, परन्तु महादजी उससे इतने प्रेम और आदरसे मिला कि वह सन्तुष्ट हो गया। पूनामें बड़े समारोहके साथ सभा की गयी जिसमें अल्पवयस्क पेशवा राजवस्त्र धारण कर सिंहासनपर बैठा। उसने जागीरदारोंसे उप-हार स्वीकार किये और मुगल बादशाहकी यह आज्ञा सुनायी गयी कि उसने सारे राज्यके अन्दर गोवध बन्द कर दिया है।

अब सिन्धियाने पूनामें रहकर पेशवाको अपने हाथमें लाना चाहा। जब नाना फड़नवीसने देखा कि पेशवा मेरे विरुद्ध हो रहा है तो उसने जाकर बड़े दुःखके साथ अपना त्यागपत्र दे दिया और बनारस जानेकी इच्छा प्रकट की। पेशवाने क्षमा माँगी और कहा कि आगे ऐसी बात न होगी जिससे अप्रसन्नताका अवसर मिले।

सिन्धियाकी मृत्यु

सिन्धियाकी अनुपस्थितिमें उसकी सेना और होलकरकी सेनामें लड़ाई हो गयी। सिन्धियाकी सेनाको विजय प्राप्त हुई और पेशवाकी आज्ञासे युद्ध बन्द किया गया। यद्यपि सिन्धिया अपने आपको पेशवा-का तुच्छ नौकर तथा साधारण पटेल कहता था, किन्तु पूनामें यहं भाव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वत्र फैला हुआ था कि वह सबको निकालकर अपने हाथमें अधिकार लाना चाहता है, जैसा कि उसने दिल्लीमें किया है ; पर शीघ्र ही महादजी सिन्धिया ज्वरपीड़ित होकर संवत् १८५० (सन् १७९३ ई०) में इस लोकसे चल बसा ।

महादजीके विचार

इसमें कोई सन्देह नहीं कि महादजी अपने समयका प्रसिद्ध पुरुष था । यद्यपि अपनी आयुके अन्तिम भागमें उसे अपनी बलवृद्धिकी प्रबल इच्छा हो गयी थी, तथापि वह उस बलको मराठा साम्राज्यको दृढ़ बनानेमें लगाना चाहता था । उसने फ्रांसीसी अफसर दी बाटनके अधीन हरिवर्षीय रीतिसे कवायद करनेवाली एक बड़ी सेना तैयार कर ली थी । उस समय उसके जीवनकी यही सबसे बड़ी इच्छा थी कि जैसे हो, अंग्रेजोंसे देशकी रक्षा हो । उसने यह भी देख लिया कि सम्मिलित राज्य(कान्फिडरेसी)के भिन्न-भिन्न सदस्य मिलकर भी यह न कर सकते थे ; अंग्रेजोंके मुकाबलेमें एक संयुक्त बलवान् राज्य स्थापित करना आवश्यक था जिसके शासन और भयसे अन्य मराठा रियासतें परस्पर मिल सकें । वह यह बल अपने कुलमें उत्पन्न करना चाहता था । जब वह पूना आ रहा था तो दिल्लीमें यह खबर उड़ी कि सिन्धिया बादशाहकी आज्ञाके अनुसार मराठोंकी सहायतासे बंगालसे चौथ प्राप्त करने जा रहा है । इसपर लार्ड कार्नवालिसको भी बड़ी चिन्ता हुई थी ।

सर जान शोरकी नीति

जब सिन्धिया पूनामें था तो उस समय पूना सरकारका निजामके साथ चौथके विषयमें झगड़ा हुआ । कोई दस-बारह वर्षसे निजामने कर देना बन्द किया था । परिस्थिति ऐसी होती गयी कि पूना सरकार कर माँग भी न सकी । निजाम अंग्रेजों द्वारा निर्णय कराना चाहता था । सिन्धिया इसके बहुत विरुद्ध था । उसने नाना फड़नवीससे स्पष्ट कह दिया कि अंग्रेज निजामके साथ मिलकर मराठोंसे युद्ध करनेकी तैयारी कर रहे हैं । नाना फड़नवीस सिन्धियाके बलके भयसे अंग्रेजोंके साथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिगाड़ करनेपर तैयार न था। इतनेमें लार्ड कार्नवालिस चला गया और उसके बाद सर जान शोरने न्यूट्रल पॉलिसी (उदासीनताकी नीति) धारण कर ली। उसने निजामको सहायता देनेसे इनकार कर दिया। निजामने अपनी सेनाको बढ़ाना तथा दृढ़ करना आरम्भ किया। जब मराठा दूत गोविन्दरावने निर्णयके लिए कहा तो निजामके मन्त्री मुशीरुल्मुल्कने उत्तर दिया कि अमुक-अमुक विषयोंके निर्णयके लिए नाना फड़नवीसको बुलाओ। गोविन्दरावने कहा, नाना फड़नवीस कैसे आ सकता है? मन्त्रीने कहा, हम बतावेंगे कि वह किस प्रकार उपस्थित होता है। इसपर पूनामें युद्धकी तैयारी होने लगी। मुगल बहुत ही क्षुब्ध और उत्तेजित थे। वे यहाँतक डींग मारने लगे कि पेशवाको लँगोटी धारण कराकर बनारस वापस भेज देंगे।

कुर्दलाका युद्ध

नाना फड़नवीसने समस्त मराठा सरदारोंको युद्धके लिए एकत्र किया। महाराजा सिन्धियाके स्थानपर उसके भ्रातृपुत्र आनन्दरावका लड़का दौलतराव, जो कि महादजीका दत्तक पुत्र था, जा बैठा। इसकी उम्र उस समय केवल १५ वर्षकी थी। दौलतराव और राघोजी होलकर पूनामें आ उपस्थित हुए। गोविन्दराव गायकवाड़ और राघोजी भोंसला सेना लेकर आये। यह अन्तिम अवसर था जब मराठा-संघके भिन्न-भिन्न सदस्य सेनामें एकत्र हुए। कुर्दलाके क्षेत्रमें दोनों सेनाएँ उपस्थित हुईं। युद्धके पश्चात् मुगलोंमें व्याकुलता फैल गयी, निजाम भागकर कुर्दलाके दुर्गमें प्रविष्ट हो गया। मराठा सेनाने उसे घेरकर अपने वशमें कर लिया। इसपर निजामने तीन करोड़ रुपये और बहुतसा प्रान्त तथा बरारके राजाको २९ लाख रुपये देना स्वीकार किया, परन्तु सबसे बढ़कर अपमान यह था कि उसे अपने मन्त्री मुशीरुल्मुल्कको भी समर्पित करना पड़ा। मुशीरुल्मुल्क बड़ी प्रतिष्ठाके साथ पेशवाके समक्ष लाया गया। पेशवा बड़े शोकमें डूबा हुआ था। कारण पूछनेपर उसने कहा—"मुझे खेद इस बातका है कि दोनों पक्ष मुझे गिरे हुए प्रतीत होते हैं। एकने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिना युद्धके हार मान ली, दूसरा यों ही विजय प्राप्त करनेकी डींग मार रहा है।"

माधवराव पेशवाकी मृत्यु

इस विजयके समय नाना फड़नवीसका ऐश्वर्य अपने शिखरपर था, पर एक साधारण घटनाने उसके जीवनके अन्तिम भागको कष्टमय बना दिया। नाना फड़नवीस राघोबाके पुत्रोंका रक्षक था। उनमेंसे बाजीराव बड़ा योग्य तथा प्रसन्नचित्त था। उसकी उम्र १९ वर्षकी थी। जो उससे मिलता था, प्रसन्न हो जाता था। नवयुवक पेशवाको उससे मैत्रीकी इच्छा हुई। नाना फड़नवीस आनन्दीबाईके पुत्रको भयानक समझकर पेशवाको जितना रोकता था उसका अनुराग उतना ही बढ़ता था। बाजीरावने एक पत्रमें यह लिखकर भेजा कि हम दोनों कैदी हैं। मैं दुर्गमें हूँ और तुम मन्त्रीके हाथोंमें, परन्तु हमारे हृदय स्वतन्त्र हैं और हम हृदयसे स्नेह कर सकते हैं। इस प्रकार पत्रव्यवहार आरम्भ हो गया। जब नाना फड़नवीसको इस पत्रव्यवहारका पता लगा तो वह बाजीरावका और सावधानीसे निरीक्षण करने लगा। पेशवाको यह अत्यन्त बुरा लगा और यों भी वह उदासीन ही रहता था। संवत् १८५२ (सन् १७९५ ई०) में दसहरेके दिन उसने छतसे गिरकर अपने प्राण त्याग दिये। उसने मरते समय अपनी यह इच्छा प्रकट की कि मेरे स्थानपर बाजीराव पेशवा नियत किया जाय।

बाजीराव सानी अन्तिम पेशवा

नाना फड़नवीस मराठा साम्राज्यकी चिन्तामें पेशवाकी मृत्युका शोक भी भूल गया। उसने तुकोजी होलकरसे सम्मति ली और दौलतराव तथा राघोजी भोंसलेको बुलाया। उसने उन्हें बताया कि लोग राघोबाके नामसे कितनी घृणा करते हैं और उसका अंग्रेजोंके साथ सम्बन्ध भविष्यके लिए कितना भयानक है, इसलिए उसने तजवीज की कि पेशवाकी स्त्री किसी लड़केको गोद ले। सबने इसका समर्थन किया। सिन्धियाका अफसर बालोबा तातिया इस प्रस्तावके विरुद्ध था। बाजी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावने तत्काल उसके साथ गुप्त पत्रव्यवहार आरम्भ कर दिया और उसके द्वारा दौलतरावको कुछ देश देनेका वचन देकर अपने साथ मिला लिया।

जब नाना फड़नवीसको इसका पता लगा तो उसने परशुराम भाऊको बुलाकर सम्मति ली और निश्चय किया कि सिन्धियाके आनेसे पूर्व ही बाजीरावको पेशवा बना दें। बाजीरावको परशुराम पूना ले आया। नाना फड़नवीससे मिलकर उन्होंने पिछली सब बातोंको भूल जानेकी प्रतिज्ञा की। इसपर दौलतराव सेना लेकर पूनाकी ओर आया। नाना फड़नवीसने सब कुछ परशुरामको समर्पित कर दिया और स्वयं पूनासे सतारा चला गया। वहाँ उसने राजाको अपने स्थानपर रखनेका यत्न किया, किन्तु असफल होकर वह वाई चला गया। इधर जब दौलतराव पूना आया तो उसके मन्त्री बालोबा तातियाने परशुरामके साथ द्रोह करके बाजीरावको कैद कर लिया। उसके छोटे भाई चिमणाजी अप्पाको मृत पेशवाकी स्त्रीका दत्तक पुत्र बताकर पेशवा प्रसिद्ध कर दिया। बाजीरावने कैदकी दशामें नाना फड़नवीससे पत्रव्यवहार आरम्भ किया। परशुराम भाऊ नाना फड़नवीसको पकड़ना चाहता था। इसपर नानाने भी कई दुर्ग दृढ़ करके सेना एकत्र करना आरम्भ कर दिया। तुकोजी होलकर बराबर उसका सहायक था। इसके अतिरिक्त नानाने शर्जीराव द्वारा, जिसकी कन्याके साथ दौलतराव विवाह करना चाहता था, दौलतरावको भी अपने मन्त्रीके विरुद्ध करके अपनी ओर मिला लिया। बाजीरावने शर्जीरावको दो करोड़ रुपया देकर प्रसन्न कर लिया और इस बातपर राजी किया कि वह अपनी कन्या सिन्धियाको दे दे। सिन्धिया ने अपने मन्त्री बालोबाको कैद कर लिया और बाजीराव सिंहासनपर बैठा दिया गया।

बाजीरावकी नीति

बाजीराव स्वभावसे बड़ा धोखेबाज था। सिंहासनपर बैठते ही उसने अपने आपको सिन्धिया और नाना फड़नवीससे मुक्त करनेकी चेष्टा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरम्भ कर दी। इतनेमें तुकोजी होलकरकी मृत्यु हो गयी और उसके चारों पुत्रों में झगड़ा हो गया। सबसे बड़ा काशीराव सरल प्रकृतिका पुरुष था। सिन्धियां उसकी ओर हो गया, किन्तु दूसरे दो भाई जसवन्तराव और बटोजी मल्हाररावके पक्षमें थे। युद्धमें मल्हारराव मारा गया। जसवन्तराव नागपुर भाग गया, बटोजी कोल्हापुरकी ओर भागा। इस प्रकार होलकरका देश भी सिन्धियाके अधीन हो गया और नानाका बल बहुत कम हो गया।

बाजीरावने शर्जीरावको समझाया कि जबतक नाना फड़नवीसका अधिकार है, वह तुम्हारे पथमें विघ्न डालता रहेगा। एक षड्यन्त्र रचकर सिन्धियाने नाना फड़नवीसको कैद कर लिया। उसकी तथा उसके सम्बन्धियोंकी सब सम्पत्ति लूट ली गयी। शर्जीरावने कन्याका विवाह सिन्धियासे कर दिया और स्वयं उसका मन्त्री बन गया। बाजीरावने शर्जीरावको दो करोड़ रुपया देनेका वचन दिया था। वह रकम पानेके लिए उसने अधिकार दिया कि वह पूनाके चाहे जिस व्यक्ति को लूट ले। शर्जीरावने व्यापारियों और धनाढ्योंको अनेक प्रकारके कष्ट देकर रुपया प्राप्त किया। सारे नगरमें हाहाकार मच गया। सब लोग सिन्धियाको धिक्कारने लगे। अब बाजीरावने अपने भाई अमृतरावके साथ मिलकर सिन्धियाको कैद करनेका विचार किया। अमृतरावको ज्ञात न था कि सब निष्ठुरताका वास्तविक मूल बाजीराव है। बाजीरावने सिन्धियाको बुला भेजा और धमकी देकर उससे प्रश्न किया—'तुम पेशवाके स्वामी हो या भृत्य ?' उसने विनयपूर्वक उत्तर दिया कि मैं भृत्य हूँ। तब बाजीरावने उससे कहा कि तुम्हारे नौकरोंने नगरमें उपद्रव मचा रखा है। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम यहाँसे तत्काल जमगाँव चले जाओ। उस समय अमृतरावने संकेत करके उसे कैद करनेकी आज्ञा माँगी, परन्तु बाजीरावको साहस न हुआ। उस समय उसने सिन्धियाको नहीं पकड़वाया। किन्तु बादमें उसे पकड़नेकी साजिशका भार अमृतरावके सिर मढ़ दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दौलतरावके विरुद्ध षड्यन्त्र

इधर दौलतरावकी यह दशा थी, उधर उसके विरुद्ध एक और तूफान खड़ा हो गया। महादजीके तीन स्त्रियाँ थीं। उन्होंने अपने कष्टों-के आधारपर दौलतरावके विरुद्ध एक षड्यन्त्र खड़ा कर दिया। सिन्धिया-की कुछ सेना उसके विरुद्ध हो गयी। तीनों देवियाँ पेशवाके कैम्पमें चली गयीं। साथ ही बाजीरावने निजामके साथ सिन्धियाके विरुद्ध सहा-यताके लिए सन्धि कर ली। सिन्धियाने इस अवस्थामें विवश होकर नाना फड़नवीसको कैदसे मुक्त कर दिया। बाजीरावने सिन्धियासे सन्धिकी इच्छा प्रकट की।

लार्ड वेलेजली—माण्डलिक-सम्बन्ध

सिन्धिया, बाजीराव और नाना फड़नवीसमें परस्पर शीघ्र सन्धि हो जानेका एक और कारण हुआ। वह यह कि संवत् १८५४ (सन् १७९७ ई०) में सर जॉन शोर इंग्लैण्ड वापस गया। उसके स्थानपर वेलेजली गवर्नर-जेनरल होकर आया। उसकी नीति सर जॉन शोरके सर्वथा विपरीत थी। वह निश्चय करके आया था कि सब देशी रियासतों-के साथ सब्सिडिअरी (माण्डलिक) सम्बन्ध स्थापित करूँगा, क्योंकि देशी शक्तियोंको वशमें लानेकी सरल तथा उत्तम रीति यही है कि उनकी सेना अपने हाथोंमें लेकर रियासतें अंग्रेजी सरकारकी आश्रित बना दी जायँ। इस समयतक निजामके पास फ्रांसीसी अफसर थे। टीपू सुलतानने तो खुले तौरपर नेपोलियनके साथ मित्रता कर ली थी और मैसूरमें प्रजा-तन्त्र-समिति (रिपब्लिकन क्लब) स्थापित की थी। वेलेज़लीने आते ही पहिले तो निजामको वशमें किया। निजामने फ्रांसीसी अफसर निकाल दिये और उनके स्थानपर कुछ निश्चित वार्षिक रकम देनेकी प्रतिज्ञापर आंग्ल सैनिक रखना स्वीकार कर लिया। इसके उपरान्त उसने मराठा सरकारपर जोर देना प्रारम्भ किया ताकि वे भी माण्डलिक सम्बन्ध(सब्सिडिअरी रिलेशन)में सम्मिलित हो जायँ। पूनामें उस समय विभेद तथा संग्राम चल रहे थे, परन्तु मराठे इस नीतिका अभि-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राय भली भाँति समझते थे। उन्होंने साफ इनकार कर दिया और परस्पर सन्धि कर ली। उसी समय निजाम और अंग्रेजोंकी सेनाने मिलकर टीपूपर आक्रमण किया। श्रीरंगपट्टमके अवरोधके समय टीपू सुलतान मारा गया। उसका प्रान्त अंग्रेजों, निजाम और मैसूरके पुराने राजाके कुलमें विभक्त कर दिया गया। पुराने वंशका उत्तराधिकारी, जो नाममात्रका राजा और वास्तवमें कैदी था, मैसूरके सिंहासनपर बैठा दिया गया। वेलेजलीने मराठोंको इस शर्तपर एक भाग देना चाहा कि वे माण्डलिक सम्बन्धमें आ जायँ, पर मराठोंने इसे स्वीकार नहीं किया।

बाजीरावके स्वभावकी चंचलता

इस परिस्थितिमें बाजीराव वेश बदलकर रात्रिके समय नाना फड़नवीसके पास पहुँचा, रोता हुआ उसके चरणोंपर गिर पड़ा और उससे पूना वापस चलनेकी प्रार्थना की। नाना फड़नवीसने समस्त अप्रतिष्ठा तथा कष्टपर ध्यान न देकर इस साम्राज्यको, जिसको स्थिर रखनेमें उसने अपना जीवन व्यतीत किया था, बचाना स्वीकार कर लिया; पर बाजीराव अस्थिर वृत्तिका मनुष्य था। वह सहसा नानाके विरुद्ध हो गया। नानाने जाकर उससे कहा कि मुझे अधिकारकी इच्छा नहीं है, मैं केवल इस मराठा सरकारकी बेहतरीके लिए आया हूँ जिसके लिए मैंने अपना सारा जीवन व्यतीत किया है। बाजीरावको नानापर भी अविश्वास हो गया।

नाना फड़नवीसकी मृत्यु

इधर जसवन्तराव होलकर नागपुरसे भागकर मालवामें पहुँचा। उसने अपनी सेना एकत्र करके सिन्धियाके देशपर आक्रमण कर दिया। मराठा सरकार अशान्त दशामें थी। वह व्यक्ति, जो एकता स्थापित करके उसे बचा सकता था, संसारसे ही चल बसा। नाना फड़नवीसकी मृत्यु संवत् १८५६ के २९ फाल्गुन (१३ मार्च, सन् १८०० ई०) को हुई। इसके साथ ही मराठा राज्यकी बुद्धिमत्ता और योग्यताकी समाप्ति हो गयी। नाना फड़नवीस बड़ा नीतिज्ञ तथा योग्य व्यक्ति था। वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धर्मात्मा तथा मितव्ययी था। प्रत्येक कार्य नियमित समयपर करता था। वह इस प्रकार अकेला समस्त साम्राज्यका काम दिन-रात परिश्रम करके करता रहता था कि सोचकर बुद्धि चकरा जाती है।

जसवन्तराव होलकर भारतवर्षमें अपना बल क्रमशः बढ़ा रहा था। उसने सिन्धियाकी सेनाओंको, जो उसके विरुद्ध गयी थीं, पराजित कर दिया। इस अवस्थामें दौलतरावको उत्तर भारतकी ओर भागना पड़ा। पीछे इन्दौरमें जसवन्तराव पराजित हुआ और इन्दौर सिन्धियाके हाथ आ गया। जसवन्तराव तत्काल दक्षिण चला गया। वहाँ उसने खानदेशको जा लूटा। वहाँसे सेना लेकर पूना आया। पेशवाने भी सब ओरसे सेना एकत्र की। युद्धमें केवल अपनी वीरताके कारण जसवन्तरावको विजय प्राप्त हुई। बाजीराव पूनासे भाग खड़ा हुआ। वह दौलतरावको पत्रपर पत्र भेजता रहा। होलकरकी सेना उसका पीछा कर रही थी। अंग्रेजोंसे भी वह सहायता माँग रहा था। अन्तमें बसीन पहुँचकर उसने उनके साथ सन्धि कर ली।

बसीनका सन्धिपत्र

बसीनके सन्धिपत्रसे मराठा साम्राज्यका विनाश आरम्भ होता है। उस समय यह निश्चय हो गया कि भारतवर्षमें सबसे बलवती शक्ति अंग्रेजोंकी होगी, न कि मराठोंकी। वेलेजलीने जिस दिन भारतमें पदार्पण किया उसी दिनसे उसकी यह प्रबल इच्छा थी कि मराठा सरकार भी अंग्रेजोंके साथ माण्डलिक सम्बन्ध स्थापित कर ले। उसने इस अभिप्रायसे जो कुछ हो सकता था किया, किन्तु सफलता न हुई। अब इस घरेलू झगड़ेने पेशवाको बड़ी सुगमतासे अंग्रेजोंके हाथमें डाल दिया। बाजीरावने चौबीस लाख रुपया वार्षिक देकर छः हजार आंग्ल सैनिक अपने प्रान्तमें रक्षाके लिए रखना स्वीकार कर लिया। उस समय यदि सिन्धिया उसकी सहायताको पहुँच जाता और उसे जसवन्तरावके भय, से विमुक्त कर देता तो कदाचित् बसीनका सन्धिपत्र न लिखा जाता। परन्तु दौलतराव अभी बच्चा ही था, इसलिए वह इस संकटके समयका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
महत्त्व न समझ सका। उसे जब बसीनके सन्धिपत्रका समाचार मिला तब सुध हुई, किन्तु अब क्या हो सकता था ?

बाजीराव स्वयं भी सन्धिपत्र लिखकर घबरा गया। इस बन्धनसे निकलनेके लिए उसने सब प्रकारसे यत्न किया। उसने दौलतराव और राघोजी भोंसलाको लिखा कि मुझसे भूल हो गयी है, आप लोग किसी प्रकार इसका प्रतिकार करें।

इधर जसवन्तराव होलकरने जब देखा कि बाजीराव भाग गया है तो उसने उसके छोटे भाई अमृतरावको सिंहासनपर बैठा दिया और स्वयं वहाँसे चल दिया। इतनेमें आंग्ल सेना बाजीरावको साथ लिये हुए पूना पहुँची। अमृतराव वहाँसे भाग खड़ा हुआ और शीघ्र ही उसने अंग्रेजोंसे वृत्ति लेना स्वीकार कर लिया।

जसवन्तरावका स्वार्थ

दौलतराव और राघोजी भोंसलाने युद्धके लिए तैयारी करना आरम्भ कर दिया और अंग्रेजोंको कहला भेजा कि सन्धिपत्रमें कई बातें ऐसी हैं जिनके लिए हमारी स्वीकृति आवश्यक थी। साथ ही उन्होंने जसवन्तराव होलकरको भी सम्मिलित होनेके लिए उत्तेजित करना आरम्भ किया, पर होलकरको सिन्धियाके साथ शत्रुता थी और वह चाहता था कि जब अंग्रेज और सिन्धिया लड़कर थक जायँ, तो मैं क्षेत्रमें निकलकर अपना बल स्थापित कर लूँ। उसके स्वार्थ तथा द्वेषने मराठा साम्राज्यको नष्ट कर दिया। इसपर एक ऐतिहासिक विद्वान्ने लिखा है—'आर्योंने पृथ्वीराज और जयचन्दके कालसे अबतक न तो कोई नयी बात सीखी और न अपनी पुरानी करतूत छोड़ी।' वेलेजलीने सिन्धियासे पूछा कि तुम्हारा क्या विचार है। सिन्धियाने उत्तरमें कहा कि मैं राघोजी और होलकरसे राय लेकर उत्तर दूँगा। इसपर आंग्ल सेना तत्काल सामना करनेको उद्यत हो गयी। सिन्धियाके राज्यके दो भाग थे—एक तो दक्षिणमें और दूसरा उत्तर भारतमें। दक्षिणमें मराठा साम्राज्यको बचाने और सन्धिपत्रको रद्द करनेके लिए सिन्धिया स्वयं विद्यमान था ; दूसरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और उसके प्रतिनिधि विद्यमान थे। आंग्ल सेनाने भी दो भागोंमें सिन्धियापर आक्रमण किया। दक्षिणकी ओरका आक्रमण तो वेलेजलीके भाई आर्थर वेलेजलीने किया और उत्तर भारतमें जेनरल लेक एक सेना लेकर कानपुरसे चला।

दौलतराव सिन्धियाकी पराजय

रावोजी भोंसला दौलतरावका मन्त्री था। रावोजी प्राचीन ढंगका मराठा था और युद्धकी प्राचीन मराठा विधि पसन्द करता था। उसने दौलतरावको समझाया कि जमकर संग्राम करना व्यर्थ है, अपनी पुरातन विधि ही बरतनी चाहिये। दौलतरावको अपनी सेनाकी वीरताका बड़ा घमण्ड था। उसने जेनरल वेलेजलीसे असईमें युद्ध किया। इसमें अंग्रेजी जेनरलकी वीरता तथा योग्यतासे अंग्रेजोंको विजय प्राप्त हुई।

रंजनगाँवकी सन्धि

सिन्धियाका बल भारतवर्षमें सर्वमान्य था। इधर लेकका पहिले कोयल नामक स्थानपर मराठा सेनासे सामना हुआ जिसका सेनापति एक फ्रांसीसी पेरान था। पेरान बिना युद्धके वहाँसे हट गया। लेकने अलीगढ़के दुर्गपर आक्रमण किया। अलीगढ़का दुर्ग बड़ा दृढ़ और सब प्रकारसे सुरक्षित था। लेकने जब इस दुर्गको जीत लिया तो भारतवर्षमें अंग्रेजी वीरताका सिक्का जम गया। अलीगढ़से लेक दिल्ली पहुँचा। वहाँ भी सिन्धियाकी सेनाका अफसर एक फ्रांसीसी था। लेकने उसको भी परास्त किया। इसके पश्चात् वह दिल्लीमें प्रविष्ट हुआ और वृद्ध शाहआलमको सिंहासनपर बैठाया। वहाँसे उसने आगराको प्रस्थान किया। उधरसे सिन्धियाँकी चुनी हुई सेना दिल्ली लेनेके लिए आ पहुँची। इस सेनाको महादजीके समयमें दी बाटनने तैयार किया था। अब इसका अध्यक्ष पेरान था। बिसवाड़ीपर दोनों सेनाएँ आ मिलीं। इस युद्धमें अंग्रेजोंकी बड़ी हानि हुई। कोई आठ-सौ मनुष्य मारे गये। लेक स्वयं ज़ख्मी हुआ, परन्तु विजयने सब हानि पूर्ण कर दी। सिन्धियाके बलके लिए यह अन्तिम विनाशकारी घटना थी। इसके बाद सिन्धियाके लिए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर उठना असम्भव हो गया। मराठा सेनाने इसके तीन सप्ताह उपरांत अरगाँवमें एक बार और सामना किया। बिसवाड़ीके युद्धसे मराठोंका ऐश्वर्य-सूर्य अस्त हो गया। तदनन्तर राघोजीने अंग्रेजोंके बलको स्वीकार करके सन्धि कर ली। यद्यपि सिन्धिया कुछ दिन और अड़ा रहा, परन्तु उसे भी सन्धि करनी ही पड़ी। इसे रंजनगाँवकी सन्धि कहते हैं। एक वर्ष उपरान्त यह सन्धिपत्र 'माण्डलिक सम्बन्ध' (सब्सिडिअरी सिस्टम) में परिवर्तित किया गया और आर्यावर्तमें मराठा शासनकी समाप्ति हुई, जिसको स्थापित करनेमें महादजीने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया था।

जसवन्तरावके प्रयत्न

जब अंग्रेजोंको इस प्रकार सफलता मिली तो होलकरको अपने लिए भय उत्पन्न हुआ। अब वह एक बड़े यत्नकी सफलताके लिए—अंग्रेजों-के विरोधके लिए—समस्त आर्य सैनिकोंको उठानेका प्रयत्न करने लगा। राजपूतोंसे सहायता माँगनेके लिए वह स्वयं जयपुर पहुँचा। उसने भरतपुरके जाट राजा और पंजाबके सिख राजाको भी अपने साथ मिलाने-का यत्न किया। सन्धिपत्रको तोड़ देने और इस समूहमें मिल जानेके लिए उसने सिन्धियाके पास अपना प्रतिनिधि भेजा।

सिन्धिया हृदयसे जसवन्तरावसे जला हुआ था। उसने तत्काल यह समाचार अंग्रेजोंको पहुँचा दिया। जेनरल लेकने जसवन्तरावसे उसके विचारोंके विषयमें पूछा और कहा कि तुत अपनी सेनाको पीछे हटा लो। जसवन्तरावने उत्तरमें कहा कि मेरा बहुतसा प्रान्त, जिसे अंग्रेजोंने ले लिया है, मुझे दे दिया जाय तो मैं अपनी सेना पीछे हटा लूँगा। उसके अन्तिम शब्द ये थे—"मेरा देश तथा सम्पत्ति मेरे घोड़ेकी जीन-पर है। जिस ओर मेरे वीर पुरुषोंका मुँह होगा वह देश मेरे अधिकारमें आ जायगा।"

कर्नल मानसूनकी पराजय

इसके पश्चात् वह अजमेर गया और वह नगर लेनेका यत्न करने लगा। वहाँसे वह अपनी सेनाका एक भाग जयपुरकी सीमापर छोड़कर चला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आया। जेनरल लेकने इसे युद्धका आरम्भ समझकर कर्नल मानसूनको सेनासहित होलकरके विरुद्ध भेजा। मानसून बिना सामानके होलकर-का पीछा करता द्र्रा मुकन्दर(मुकन्दर पास)से होता हुआ चम्बल नदीतक जा पहुँचा। होलकर बड़ी चतुरतासे उसे इतनी दूर ले आया था। अब होलकरने लौटकर चम्बल नदीको पार किया। पहिले तो मानसूनने युद्ध करनेका विचार किया, किन्तु पीछे उसने अपना विचार बदल लिया और लौट पड़ा। होलकरकी सेना हाथ धोकर पीछे पड़ गयी। लौटनेमें लगभग दो मास समय लग गया। कभी वह आश्रयके लिए इधर जाता था, कभी उधर। वर्षाके कारण नदियाँ अत्यन्त वेगसे बहती थीं। कई स्थानोंपर कई मनुष्य डूब गये। समग्र सामग्री, तोपें इत्यादि होलकरके हाथ आयीं और जो थोड़ेसे मनुष्य बचे उन्होंने दो मास उपरान्त आगरा पहुँचकर आश्रय लिया। यह पराजय मानसूनके लिए एक बड़ा कलंक थी।

यह कलंकका टीका मिटानेके लिए मानसूनको मराठोंके साथ लड़ने-का एक और अवसर दिया गया। होलकरकी सेना देगके दुर्गमें थी। मानसूनने आक्रमण करके उसे जीत लिया। होलकर और उसकी सारी सेना भरतपुर दुर्गमें पहुँच गयी।

भरतपुरका दुर्ग लेनेका प्रयत्न

अब लार्ड लेक अपनी सेना सहित भरतपुर पहुँचा। भरतपुरका राजा होलकरका मित्र था। भरतपुर विजित हुए बिना होलकरको विजित करना असम्भव था। भरतपुरका घेरा बहुत दिनोंतक रहा। इसमें आंग्लसेनाने दुर्ग लेनेके लिए चार बार धावा किया, परन्तु चारों बार उसे अकृतकार्य हो लौटना पड़ा। एक बार गोरोंकी ७६ नम्बरकी सेनाने आज्ञा नहीं मानी, अतः भारतीय सैनिक आगे बढ़े। मानसूनकी इस दूसरी पराजयसे मराठोंका दिल बढ़ गया। जसवन्तराव देवतुल्य समझा जाने लगा। सिन्धिया भी सेना लेकर उधर चल पड़ा। उसकी हार्दिक इच्छा होलकरके साथ मिल जानेकी थी। इसी अवसरपर भरतपुरका राजा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्धि करनेपर सहमत हो गया और अंग्रेज सिन्धिया तथा होलकरके मिलापके भयसे बच गये। होलकर वहाँसे भागकर पंजाब चला गया। उसकी इच्छा थी कि महाराज रणजीतसिंहको अपने साथ मिलाकर अंग्रेजोंसे लड़नेको तैयार करूँ, पर उसे उधरसे भी निराश होकर लौटना पड़ा।

लार्ड वेलेजलीके समयकी एक और वर्णनीय घटना करनाटकका मिलाया जाना है। जब वेलेजली मैसूरके युद्धसे निश्चिन्त हुआ उस समय अरकाटका वृद्ध नवाब मृत्युशय्यापर पड़ा था। यह पुरुष सदा अंग्रेजोंका सेवक रहा। वेलेजलीने बिचारा कि इसका राज्य मद्रास प्रान्तके अन्तर्गत कर लेना चाहिये। वह अभी श्वास ले ही रहा था कि दो अंग्रेजी अफसरोंने सेना सहित जाकर प्रासादोंको घेर लिया जिसमें धनकोष किसी औरके हाथ न चला जाय। जब उसकी मृत्यु हो गयी तो उन्होंने उसके पुत्र को कहला भेजा कि वह अपना प्रान्त अंग्रेजी सरकारको समर्पित कर दे। वह सोचने तथा अपने मन्त्रियोंकी सम्मति लेनेके लिए समय माँगता था, किन्तु उसे विवश होकर तत्काल ऐसा सन्धिपत्र लिख देना पड़ा। जब वह इस सन्धिपत्रसे फिर गया तो उसका एक सम्बन्धी दावेदार बन बैठा। उसने अंग्रेजी सरकारसे वृत्ति लेना स्वीकार करके करनाटक उसको अर्पित कर दिया। इसके अनन्तर वेलेजलीने कुर्गके राजापर एक दोषारोपण कर उसे भी सिंहासनसे उतार दिया और उसकी रियासत अपने राज्यमें मिला ली।

वेलेजलीने अपने कालमें आंग्ल राज्यको भारतवर्षमें प्रबलतम बना दिया। इससे पूर्व यह पद मराठा साम्राज्यको प्राप्त था। हेस्टिंग्जने इस विचारको क्रियारूपमें लानेका यत्न किया था और उसकी नींव भी डाल दी थी। वेलेजलीने इस कार्यक्रमको बहुत कुछ पूरा कर दिया।

लार्ड कार्नवालिसका पुनरागमन

उधर इंग्लैण्डमें अधिकारिवर्ग लार्ड वेलेजलीकी सांग्रामिक नीति (मिलिटरी पालिसी) से प्रसन्न न था। उसने संवत् १८६२ (सन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८०५ ई०) में लार्ड वेलेजलीको वापस बुला लिया और उसके स्थान-पर फिर लार्ड कार्नवालिसको भेजा। कार्नवालिसने आकर सबके पास सन्धिके पत्र भेजना आरम्भ भी कर दिया था, पर वह शीघ्र मर गया। उसके बाद जार्ज बार्लो गवर्नर-जेनरल नियुक्त हुआ। उसके शासन-कालमें अंग्रेजोंकी होलकरसे सन्धि हो गयी। होलकरने सब शर्तें मान-कर अंग्रेजोंको अधिराज स्वीकार कर लिया। इस प्रकार मराठा साम्राज्य-के सब सदस्य पृथक्-पृथक् अंग्रेजोंसे टक्कर खा गिरे और उनके साथ ही मराठा साम्राज्य स्वयमेव विनष्ट हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवाँ प्रकरण

जार्ज बार्लोसे लार्ड हार्डिंजतक

वेलोरका विद्रोह--लार्ड मिण्टो

जार्ज बार्लोके शासन-कालमें संवत् १८६३ (सन् १८०६ ई०) में वेलोरमें सिपाहियोंका विद्रोह हुआ। अंग्रेजोंने उनके वस्त्रोंमें और रहन-सहनमें कुछ परिवर्तन करना चाहा था। सिपाहियोंने अप्रसन्न होकर अफसरोंका वध कर डाला। यह विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया। संवत् १८६३ से १८६९ (सन् १८०६ ई० से सन् १८१२ ई०) तक लार्ड मिण्टो गवर्नर-जेनरल रहा। इसने कोई युद्ध नहीं किया। जो स्थान विजित हो चुके थे उन्हींको दृढ़ करनेका यत्न करता रहा। अभी नेपोलियनकी ओरसे भय बना हुआ था, इसलिए मेटकाफ राजा रणजीतसिंहके पास, एल्फिन्स्टन अफगानिस्तानको और मैलकम फारसको—ये तीन दूत भेजे गये।

लार्ड हेस्टिंग्ज

इसके बाद संवत् १८७० (सन् १८१३ ई०) में मारक्विस आफ हेस्टिंग्ज गवर्नर-जेनरल हुआ। वह नौ वर्षतक रहा। नेपालका युद्ध और मराठोंका अन्तिम युद्ध उसके शासनकालकी दो बड़ी प्रसिद्ध घटनाएँ हैं। उस समय आर्योंके दो स्वतन्त्र राज्य विद्यमान थे। वे अभीतक अंग्रेजोंके साथ नहीं मिले थे, शेष सभी रियासतोंने प्रायः 'माण्डलिक सम्बन्ध' स्वीकार कर लिया था। इनमेंसे एक तो पंजाबका सिखराज्य था, दूसरा हिमालयके पर्वतोंमें नेपालका आर्यराज्य था।

नेपालके साथ युद्ध

नेपालमें गोरखोंका राज्य था। यह कुल उदयपुरके राजकुलकी एक शाखा समझा जाता है। समरसीका एक बालक वहाँ भाग गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसने हिमालयके शिखरपर अपने कुलका शासन स्थापित किया, जैसा उसके वंशजोंके नामसे प्रकट होता है। गाँवोंकी रक्षा करना ही उसने अपना विशेष काम समझा। १८वीं शताब्दीके अन्तमें उसके वंशजोंने फैलना आरम्भ किया और नेपालपर अपना शासन सुदृढ़ करनेके बाद आगे-की ओर बढ़ने लगे। इस प्रकार बंगालपर भी प्रायः उनके आक्रमण होने लगे। अंग्रेजी सरकारको भय उत्पन्न हुआ। हेस्टिंग्जने संवत् १८७१ (सन् १८१४ ई०) में प्रथम बार उनके विरुद्ध सेना भेजी। इस सेना-को कई युद्धोंमें पराजित होना पड़ा। यह सेना गोरखोंकी हालत-से परिचित न थी इसलिए थोड़े ही सैनिक बचकर लौटे। दूसरे वर्ष आक्टरलोनी सतलजके मार्गसे पर्वतोंकी ओर बढ़ा और नेपालतक जा पहुँचा। अगले वर्ष फिर सेना लेकर पटनासे चला और उसने काटमाण्डू-तक पहुँचकर नेपाल दरबारको सन्धि करनेपर विवश किया। इस सन्धि-पत्रसे नैनीताल, मन्सूरी और शिमलापर अंग्रेजोंका अधिकार हो गया।

मराठोंका दिल फिर बढ़ने लगा

जब आंग्लसेनाको नेपालमें असफलताका सामना करना पड़ा तो मराठोंका दिल फिर बढ़ने लगा। इसकेअतिरिक्त नेपाल सरकारने भी सब राजाओंको एकत्र करके स्वतन्त्र होनेकी सम्मति दी। उसके अनुसार सिन्धिया, होलकर और बरारके राजा राघोजीने पुनः शपथ खायी कि हम पेशवाको अपना नेता मानेंगे, उनकी पताकाके नीचे मराठा राज्यकी रक्षाके लिए एकत्र होंगे। एक प्रकारसे समस्त मराठा लोग अपने आपको स्वतन्त्र करनेके लिए प्रयत्न करने लगे, परन्तु जब अंग्रेज उधर नेपाल-में सफल हो गये तो उनका विचार भी ढीला पड़ गया।

बाजीराव पेशवा अंग्रेजोंके निरीक्षणमें रहते-रहते तंग आ गया। उसके हृदयमें स्वतन्त्र रहनेकी इच्छा बढ़ने लगी। उसे हैदराबादके निजाम और गायकवाड़से बहुत कुछ बकाया लेना था। अंग्रेज रेजिडेण्ट मिस्टर एल्फिन्स्टनके हृदयमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि पेशवा जान-बूझकर उनसे हिसाबकी सफाई नहीं करता जिसमें उसे उनके साथ पत्रव्यव-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारका अवसर मिलता रहे। वह पेशवापर जोर देता था कि यह विवादास्पद विषय अंग्रेजी सरकारके समक्ष रख देना चाहिये।

त्र्यम्बकराव

गायकवाड़की ओरसे गंगाधर शास्त्री पूनामें सब हिसाब तै करनेके लिए नियुक्त हुआ। वह दिलसे अंग्रेजोंका सहायक था। कुछ काल वह पूनामें रहा, अन्ततः एक मन्दिरसे वापस आते समय मारा गया। सभी लोग इस वधका दोष त्र्यम्बकजीपर लगाते थे। त्र्यम्बकजी बाजीरावका मन्त्री था। बाजीरावके हृदयपर उसका बड़ा प्रभाव था। मिस्टर एल्फिन्स्टनने त्र्यम्बकरावको अपने सुपुर्द कर देनेपर पेशवाको मजबूर किया। त्र्यम्बक एक ऐसे कारागृहमें रखा गया जिसके सभी रक्षक अंग्रेज ही थे फिर भी वह कारागृहसे भाग निकला और पेशवाके मानसिक संकल्प और विशेष आज्ञासे कई स्थलोंपर गुप्त रीतिसे सेना एकत्र करने लगा। मिस्टर एल्फिन्स्टनको इन वृत्तान्तोंकी सूचना मिलती रही। वह पेशवासे सावधान होनेको कहता रहा। अन्तमें उसने सेना मँगाकर त्र्यम्बककी सेनाको पराजित करके नष्ट कर दिया, पूनाके चारों ओर घेरा डाल दिया और इन सब विद्रोहोंमें सहायता देनेके कारण अंग्रेजी सरकारसे नयी सन्धि करनेके लिए पेशवाको मजबूर किया।

पेशवाके साथ नयी सन्धि

इसे पूनाकी सन्धि कहते हैं और इसके अनुसार पेशवाने त्र्यम्बकजीको गंगाधरका घातक स्वीकार किया और उसे पकड़कर अंग्रेजी सरकारके सुपुर्द करने और किसी अन्य शक्तिसे पत्रव्यवहार न करनेकी प्रतिज्ञा की। गायकवाड़के साथके सभी झगड़ोंका निर्णय अंग्रेजोंके हाथमें दे दिया और भविष्यमें ३४ लाख रुपया अनिश्चित सैन्यदलके लिए अंग्रेजी सरकारको देना स्वीकार किया। यह सन्धि संवत् १८७३ (सन् १८१६ ई०) में हुई। यद्यपि पेशवाने इस सन्धिपत्रको स्वीकार कर लिया, परन्तु इस पराधीनताकी दशामें भी किसी प्रकार स्वतन्त्र बननेकी उसकी इच्छा और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी प्रबल होती गयी। इस समय उसका मन्त्री गोखले नामका एक वीर मराठा था।

इस सम्बन्धमें उसने सिन्धिया, होलकर तथा बरारके राजा और अमीर खाँसे भी पत्रव्यवहार किया। दुर्भाग्यसे उस समय राघोजी भोंसला मर गया। उसका पुत्र परशुजी बड़ा मन्दबुद्धि मनुष्य था, इसलिए मोदाजी आपासाहब उसका रक्षक नियत हुआ। थोड़े दिनोंके पश्चात् परशुजी मरा हुआ पाया गया। आपा साहब सिंहासनका स्वामी बन बैठा। इससे नागपुर राज्यमें अशान्ति फैल गयी।

पिण्डारी

गवर्नर-जेनरल हेस्टिंग्जको अब पिण्डारियोंके दलको दबानेकी चिन्ता हुई। यह लूटमार करनेवाली जाति थी। इन लोगोंके साथ पठान भी मिल गये जिनका नेता अमीरखाँ था। इसके अतिरिक्त मराठा सैनिक, जो अब बिना किसी आजीविकाके थे, बड़ी संख्यामें उनके साथ मिलते गये, यहाँतक कि उनकी संख्या आधे लाखके लगभग तक पहुँच गयी। लुटेरोंके इतने बड़े समूहकी विद्यमानता प्रत्येक राज्यके लिए भयावह होती है, इसलिए हेस्टिंग्जने सिन्धिया, भूपालके नवाब और बरारके राजासे उनका अन्त करनेके लिए सहायता माँगी। जब सिन्धियाने कुछ संकोच किया तो गवर्नरने पाँच दस्ता सेना तैयार की, ताकि वह भिन्न-भिन्न दिशाओंसे राजपूताना, मालवा और बुन्देलखण्डकी ओर बढ़कर इनका अन्त करे।

अंग्रेजोंको निकाल देनेका प्रयत्न

पूनाकी सन्धिके कुछ समय पीछे पेशवा पण्ढरपुरकी यात्राके लिए चला। पेशवाने बापू गोखलेको सब अधिकार इसलिए सौंप दिये जिसमें वह जिस उपायसे हो सके अंग्रेजोंको दक्षिणसे निकालनेका प्रबन्ध करे। एक उपाय यह था कि देशी सेना अंग्रेजोंके विरुद्ध की जाय। अन्य हरिवर्षीय अफसरोंको भी उनके विरुद्ध करनेके लिए रिश्वतें दी गयीं। इसी कार्यके लिए जसवन्तराव घोरपड़े नामक एक व्यक्ति नियत किया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इसने सब भेद एल्फिन्स्टनको बता दिया और उसे आनेवाले भयकी सूचना दे दी। उस वर्ष दसहरेके अवसरपर पेशवा पूनामें विद्यमान था। यह दिन साधारण समारोहसे मनाया गया। इसके बाद सेनाओंके समूहोंने महाराष्ट्र आदि भिन्न-भिन्न प्रान्तोंसे पूना आना आरम्भ किया। मिस्टर एल्फिन्स्टन इस रहस्यको समझता था। उसने भी आंग्लसेना पूनामें बुला भेजी।

बाजीरावका अन्तिम यत्न

पेशवाने मिस्टर एल्फिन्स्टनको आंग्लसेनाको वहाँसे वापस भेज देनेके लिए कहला भेजा, पर उसने इनकार किया। इसपर मराठा सेनाने अकस्मात् आक्रमण कर दिया। किर्कीमें युद्ध हुआ। इसमें रेजिडेन्सी लूटकर जला दी गयी। इसपर जेनरल स्मिथ सेना लिये पूना आ पहुँचा। पेशवा वहाँसे सताराकी ओर भाग गया। आंग्लसेनाका एक भाग कप्तान स्टाण्टनकी अध्यक्षतामें कारीगावाँमें घेरा गया। मराठा सेनाने बारम्बार उसपर आक्रमण किया, परन्तु उसने वीरतासे अपनी रक्षा की। जेनरल स्मिथ तथा पेशवाकी सेनाओंका घोर संग्राम हुआ। गोखले सेनापति था। जब मराठा सेना हारने लगी तो उससे पीछे हटने और फिर किसी अवसरपर सामना करनेके लिए कहा गया। बापू गोखलेने कहा—"जो कुछ होगा इसी समय निर्णय होगा।" वह तलवार हाथमें लिये शत्रुपर आ पड़ा और सैनिकोंको काटता हुआ स्वयं भी काम आया।

पेशवाके प्रभुत्वका अन्त

गवर्नर-जेनरलकी ओरसे मिस्टर एल्फिन्स्टनको कमिश्नरके अधिकार दिये गये। पेशवाका प्रान्त आंग्लप्रांतके साथ मिला लेनेका भी उसे अधिकार दिया गया। एल्फिन्स्टनने सतारामें एक घोषणा की जिसमें बाजीरावकी धोखेबाजी आदिका वर्णन करके यह घोषित किया कि अंग्रेजी सरकारने उसे हटाकर उसका देश अपने राज्यके अन्तर्गत कर लिया है, उसका कुछ भाग सताराके राजाको, जो कि शिवाजीके कुलका है, दिया जायगा और उन लोगोंको पूरा-पूरा पारितोषिक दिया जायगा जो दो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मासके भीतर अपने-अपने देशको लौट जायँगे। कुछ काल और झगड़ा बना रहा।

महीदपुरमें एक युद्ध हुआ जिसमें सिख पराजित हुए। पिण्डारियोंका बल भी घट गया। उनका नेता चेतू भाग गया। जंगलमें शेरने उसे मार डाला। इधर बाजीरावने दुःखित होकर अंग्रेजोंसे सन्धिके लिए प्रार्थना की और कानपुरसे कुछ दूरीपर बिठूरमें अंग्रेजोंका पेन्शनर बनकर रहना स्वीकार कर लिया। इस संग्रामके साथ मराठा साम्राज्यका प्रत्यक्षतः अन्त हो गया।

भारतवर्षकी शिक्षा-प्रणाली

यों तो वारेन हेस्टिंग्जके कालमें ही शिक्षाका प्रश्न आरम्भ हो गया था, पर जब भारतवर्षमें अंग्रेजोंका अधिकार बहुत विस्तृत हो गया तो उनके सामने भारतवर्षमें शिक्षा-प्रणालीका प्रश्न अनिवार्य हो गया। २० वर्षतक इस सिद्धान्तपर वाद-विवाद होता रहा। इस समय दो पक्ष थे। एक दल, जिसमें ईसाई प्रचारक थे, पाश्चात्य सभ्यता तथा आंग्ल-भाषाके पक्षमें था; दूसरा पक्ष, जिसमें सर विलियम जान्स जैसे प्रसिद्ध संस्कृतके धुरन्धर पण्डित थे, पूर्वदेशीय विद्याओंपर जोर देता था।

लार्ड एमर्स्ट

लार्ड हेस्टिंग्जके अनन्तर संवत् १८७९ से १८८४ (सन् १८२२ से १८२७ ई०) तक लार्ड एमर्स्ट गवर्नर-जेनरल रहा। उसके शासनकालमें दो बड़ी घटनाएँ हुईं। पहली घटना अंग्रेजोंका ब्रह्म देशसे युद्ध है जिसमें लगभग दो वर्षके उपरान्त संवत् १८८२ (सन् १८२५ ई०) में वहाँके राजाने आसाम, अराकान और तनासरीम अंग्रेजोंको देकर सन्धि कर ली। दूसरी घटना संवत् १८८३ (सन् १८२६ ई०) में कम्बरमियर द्वारा भरतपुर दुर्गकी विजय है। राजगद्दीपर बैठनेके सम्बन्धमें वहाँके राजाओंमें कुछ झगड़ा हो गया था। अंग्रेजोंने उस समय बीचमें पड़कर अपने पिछले कलंकको धोना चाहा। भरतपुरका दुर्ग मिट्टीका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
था, इसलिए तोपें वहाँ कुछ भी न कर सकती थीं। उसके नीचे सुरंग खोदकर एक स्थानसे बारूद द्वारा दीवारें उड़ा दी गयीं।

राममोहन राय

लार्ड एमर्स्टके शासन-कालमें राजा राममोहन राय एक सुप्रसिद्ध बंगाली हुए हैं। उन्होंने शिक्षा-सम्बन्धी विवादमें भाग लेकर ईसाई प्रचारकोंके पक्षमें गवर्नर-जेनरलको एक पत्र लिखा। उसमें उन्होंने अपने शास्त्रोंकी शिक्षाकी तीव्र आलोचना की और वाइसरायसे प्रार्थना की कि बंगालमें आंग्लशिक्षा प्रचलित करके भारतवासियोंको उससे लाभ उठानेका अवसर दिया जाय।

विलियम बेंटिंक गवर्नर-जेनरल

संवत् १८८४ (सन् १८२७ ई०) में लार्ड विलियम बेंटिंक गवर्नर-जेनरल होकर आया और संवत् १८९१ (सन् १८३४ ई०) तक रहा। विलियम बेंटिंक पहिले मद्रासका गवर्नर रह चुका था। उसके शासनकालमें वहाँ वेलोरका विद्रोह हुआ था। अब उसे अपना कलंक मिटानेकी चिन्ता थी। उसने अपने सुप्रबन्धसे आंग्लराज्यकी नींव दृढ़ की, अतएव वह सबसे योग्य गवर्नरोंमें समझा जाता है। उसने सतीकी रीति बन्द की और ठगोंको रोकनेका प्रबन्ध किया। इनके अतिरिक्त उसका काल दो बातोंके लिए प्रसिद्ध है। वह पहिला शासक था जिसने यह अनुभव किया कि भारत-सन्तानोंकी सहायताके बिना भारतवर्षको बहुत दिनोंतक अधीन रखना सम्भव नहीं, इसलिए उसने योग्य भारतीयोंको उच्च पद देकर उनकी सहायता लेना आरम्भ किया।

वर्तमान शिक्षा

उसके कालकी दूसरी बात भारतवासियोंकी शिक्षाका निर्णय है। सुप्रसिद्ध अंग्रेज साहित्यिक मेकाले शिक्षा-विभागका प्रधान नियत हुआ था। उसने बिशपकी सहायतासे अंग्रेजी शिक्षाके पक्षमें निर्णय किया। आंग्लभाषा तथा विदेशी सभ्यताकी अपेक्षा पूर्वदेशीय विद्याओंको साररहित, अनावश्यक तथा निरर्थक कहा गया। यह भी कहा गया कि समग्र धन,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो सरकारके पास शिक्षाके लिए है, पाश्चात्य विद्याओं तथा आंग्लभाषा-के प्रचारमें व्यय करना चाहिये। लार्ड विलियम बेंटिंक इससे सहमत हुआ। नदियाका अत्यन्त प्राचीन विश्वविद्यालय कलकत्ता लाकर शनैः-शनैः उसके स्थानपर अंग्रेजी पाठशालाओं तथा विश्वविद्यायकी नींव डाली गयी।

विलियम बेंटिंकके जानेपर लार्ड मेटकाफ कुछ मासतक काम करता रहा। उसके कालमें समाचारपत्रोंको लिखनेकी स्वतन्त्रता दी गयी जिसमें सरकारको सभी देशवृत्तान्तोंका पता मिलता रहे और लोग अपनी शिकायतें स्पष्ट रूपसे सरकारके सम्मुख रख सकें।

लार्ड आकलैण्ड

संवत् १८९२ (सन् १८३५ ई०) में लार्ड आक्लैण्ड गवर्नर-जेनरल नियत हुआ। उसके शासनकालमें काबुलमें अहमदशाह दुर्रानीका वंश शासन करता था। सदस्योंमें परस्पर झगड़े आरम्भ हो गये। संवत् १८९२ (सन् १८३५ ई०) में दोस्तमुहम्मदने काबुलपर अधिकार कर लिया। शाहशुजा वहाँसे भागकर पहिले रणजीतसिंह, फिर लुधियानामें अंग्रेजोंके पास रहा। लार्ड आक्लैण्डने आते ही मिस्टर बर्नको काबुल भेजा, क्योंकि उधर रूस बढ़ रहा था। दोस्तमुहम्मद किसी प्रकारके सम्बन्धके लिए उद्यत न था इसलिए लार्ड आक्लैण्डने शाहशुजाको सिंहासनपर बैठानेका विचार कर लिया। संवत् १८९५ (सन् १८३८ई०) में शाहशुजा काबुलका अमीर बना और दोस्तमुहम्मद कैद कर कलकत्ता लाया गया। दो वर्षके पश्चात् अफगान लोग उठ खड़े हुए। आंग्लसेना-को लौटना पड़ा। मार्गमें १६ सहस्र सिपाहियोंमेंसे सिर्फ एक जीवित बचा और उसीने यह समाचार सुनाया। समस्त आंग्लदेश इस समाचारसे थर्रा उठा।

लार्ड एलेनबरा

इसके बाद आक्लैण्डके स्थानपर लार्ड एलनबरा गवर्नर-जेनरल होकर आया। उसके समयमें आंग्लसेनाने काबुल पहुँचकर नगरको जला दिया,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परन्तु अपने आपको अफगानिस्तानको अधीन रखनेके अयोग्य समझकर दोस्तमुहम्मदको वहाँ स्वतन्त्र कर दिया। इस गवर्नर-जेनरलके समयमें संवत् १८९९ (सन् १८४२ ई०) में अंग्रेजी सरकारने सिन्ध अपने राज्यमें मिलानेका निश्चय कर लिया। सिन्धके अमीरोंने सामना आवश्यक समझा, इसलिए सर चार्ल्स नेपियरने उनपर आक्रमण करके बलोची सेनाको मियानीपर परास्त किया और सिन्ध अंग्रेजी राज्यमें मिला लिया गया।

लार्ड एलनबरा दो ही वर्षके बाद बुला लिया गया। उसके स्थानपर संवत् १९०० (सन् १८४३ ई०) में लार्ड हार्डिंज गवर्नर-जेनरल होकर आया। नेपोलियनके साथ युद्धमें उसकी एक बाँह कट गयी थी। उसके आनेके पूर्व ही यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि अब आर्योंकी एक और शक्तिसे अंग्रेजोंकी मुठभेड़ अवश्यम्भावी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आठवाँ प्रकरण

सिखोंका अंग्रेजोंसे युद्ध

खड्गसिंहकी राजपदप्राप्ति

रणजीतसिंहके पश्चात् उनका पुत्र खड्गसिंह सिंहासनारूढ़ हुआ और ध्यानसिंह उसका मन्त्री नियत हुआ। सिंहासनके अधिक दावेदारोंके परस्पर झगड़े आरम्भसे ही भारतवर्षमें स्वदेशी शासनके नाशके कारण हुए हैं। तदनुसार इस अवसरपर भी शेरसिंहने अपना दावा अंग्रेजोंके सम्मुख रखा, किन्तु यह दबा रहा।

खड्गसिंह मन्दबुद्धि तथा अयोग्य पुरुष था, इसलिए इसका पुत्र नौनिहालसिंह, जो पेशावरमें सेनापति था, तत्काल लाहौर आया और अपने पिताका राज्य सँभालनेका यत्न करने लगा। नौनिहालसिंह हृदयसे ध्यानसिंहके विरुद्ध था, परन्तु सुचेतसिंह नामक खड्गसिंहका एक और बैरी था इसलिए दोनों उसे नष्ट करनेके लिए मिल गये। एक दिन प्रातःकाल ध्यानसिंह, उसका भाई गुलाबसिंह और नौनिहालसिंह महाराजके विशेष कमरेमें अकस्मात् प्रविष्ट हो गये। सुचेतसिंहको जगाकर उसका वध कर डाला। खड्गसिंह पास ही बैठा रहा। यह पहिला वध था जिससे विनाशकालका भयंकर स्वरूप आरम्भ होता है। इस प्रकार धोखेसे दूसरे मनुष्यका वध कर देना अत्यन्त घृणित कार्य है। महाराज रणजीतसिंहने इस पतनको रोक रखा था और यदि उनके उत्तराधिकारी कुछ कालतक वैसे ही योग्य होते तो शायद सिख सरदार इससे मुक्त हो जाते! अब नौनिहालसिंहकी यह इच्छा थी कि किसी रीतिसे ध्यानसिंह तथा गुलाबसिंहसे लाहौर दरबारको स्वतन्त्र करूँ। इस प्रयोजनसे उसने पार्वत्य राजाओंपर आक्रमण करनेके लिए एक सेना तैयार की।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस समय अंग्रेजोंके साथ उसका कुछ झगड़ा हो गया। इसके दो कारण थे। एक तो अंग्रेज अपना व्यापार बढ़ानेके लिए सिन्धु नदी द्वारा माल ले जानेकी अनुमति चाहते थे। महाराज रणजीतसिंहके कालमें कई बार अंग्रेजोंने यह व्यापार-सम्बन्ध स्थापित करनेका प्रयत्न किया, परंतु महाराज उनकी वस्तुओंको देशमें आने न देना चाहते थे, इसलिए वे सदा एक ही आक्षेप किया करते थे कि अंग्रेज लोग गोहत्या करते हैं, और यदि उन्होंने मेरे देशमें ऐसा किया तो झगड़ा हो जायगा। वे अंग्रेजोंसे झगड़ा करना नहीं चाहते थे; परन्तु झगड़ेका वास्तविक कारण और था। नौनिहालसिंहने दोस्तमुहम्मदको अंग्रेजोंके विरुद्ध उसकाया। यह विषय अभी निर्णीत होने न पाया था कि खड़गसिंह संवत् १९०६ (सन् १८४९ ई०) में मर गया। वह पहले ही बहुत निर्बल था; अफीम अधिक खानेसे उसकी अवस्था और भी खराब हो गयी जिससे उसकी मृत्यु हुई।

नौनिहालसिंह

महाराज नौनिहालसिंह बुरी साइतमें गद्दीपर बैठा। वही दिन उसके जीवनका अन्तिम दिन सिद्ध हुआ। जब वह अभिषेक-संस्कार करके हाथीपर सवार होकर वापस आ रहा था तो दरवाजेके नीचेसे गुजरते ही दरवाजा गिरकर हाथीपर आ पड़ा। गुलाबसिंहका बड़ा पुत्र उत्तमसिंह वहीं मर गया और नौनिहालसिंह इतना जख्मी हुआ कि उसी रात्रिको इस संसारसे चल बसा। यह विचार सर्वथा असत्य है कि इसमें जम्मूके राजाओंकी कोई शरारत थी।

नौनिहालसिंहकी मृत्यु सिख राज्यके लिए वज्रपातके समान थी। इस नवयुवकने बीस वर्षकी आयुमें ही अपनेको बड़ा योग्य और चतुर सिद्ध कर दिखाया था। यह अपने पितामहके सदृश अपने राज्यको फैलाने और दृढ़ करनेका विचार करता था। इसका विवाह शामसिंह अटारीवालेकी कन्यासे हुआ था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रानी चन्दकौर

ध्यानसिंहने तीन-चार दिनतक मृत्युका समाचार छिपा रखा। इतनेमें उसने शेरसिंहको सिंहासनपर बैठानेके लिए लाहौर बुलवा लिया। शेरसिंहके रणजीतसिंहका पुत्र होनेमें सन्देह था, इसलिए कई सिख सरदार खड़कसिंहकी रानी चन्दकौरकी ओर हो गये। चन्दकौर रानी स्वीकार की गयी और शेरसिंह कौंसिलका प्रधान बनाया गया।

शेरसिंह

थोड़े कालमें शेरसिंहने ध्यानसिंहकी सहायतासे सेनाको अपनी ओर कर लिया और दुर्गपर आक्रमण कर दिया। रानी चन्दकौर सिंहासनसे उतारी गयी और शेरसिंह महाराज स्वीकार किया गया। ध्यानसिंह इसका मन्त्री बना। सेनाके प्रत्येक सिपाहीके वेतनमें एक रुपयेकी वृद्धि की गयी। सिन्धियावाला सरदार अजीतसिंह और अतरसिंह लाहौरसे भागकर अंग्रेजोंसे जा मिले। इस समय सेनाका बल बढ़ना आरम्भ हो गया। सैनिकोंने अनधिकार चेष्टा करना आरम्भ कर दिया। अंग्रेज इन सब बातोंको ध्यानपूर्वक देख रहे थे। उनके यहाँ यह चर्चा भी शुरू हो गयी कि इस अवसरपर एक सभ्य जातिकी हैसियतसे हमारा कर्तव्य है कि हम पंजाबकी विजय कर लें। यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि ये समाचार सिखोंको मिलते रहते थे। अंग्रेज अभीतक सिख सेनाके बलका ठीक-ठीक अनुमान नहीं कर सकते थे।

सिन्धियावाला सरदारोंके द्रोहका समाचार सर्वसाधारणमें प्रसिद्ध हो गया। एक सिन्धियावाला सरदार लहनासिंह मण्डीमें सेनापति था। सिख सैनिकोंको इस बातसे बड़ी घृणा थी कि दूसरे पुरुषोंका उनके कार्यमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप हो। उन्होंने लहनासिंहको अपने सैनिकोंके साथ पत्रव्यवहारका दोष लगाकर कैद कर लिया।

सिखसेना

थोड़े कालके भीतर सैनिकोंकी शिकायतें दूर हो गयीं। सिख सैनिकोंने अपने बलका अनुभव कर लिया। वे अपने आपको गुरु गोविन्दसिंह-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के खालसा प्रतिनिधि और सिख राज्यकी स्थिरताके उत्तरदायी समझने लगे। उनकी दशा इस समय ठीक वैसी थी जैसी कि आंग्लस्थानमें क्रॉमवेलके सैनिकोंकी थी, जब कि वे वहाँकी प्रतिनिधि-सभा (पार्लमेंट) के विरुद्ध अपनी शक्ति दृढ़ करनेके लिए उद्यत हो गये थे।

सीमापर सिखोंकी प्रबलता

प्रत्येक पलटनके सिपाही पाँच जमादारोंको अपना प्रतिनिधि चुनते थे। इस प्रतिनिधि-दलको पंचायत कहते थे। समस्त पलटनोंकी सब पंचायतोंको मिलाकर खालसाकी साधारण समिति बनती थी जिसमें वे सभी विषयोंका निर्णय किया करते। सिख साम्राज्यके बलका केन्द्र यद्यपि इस प्रकार निर्बल होने लगा था, परन्तु सीमापर अभीतक उन्हीं-का बल बढ़ता गया। जम्मूके डिप्टी जोरावरसिंहने अस्करदूको विजित कर चीनराज्यकी सीमान्तवर्ती चौकीको अपने अधिकारमें कर लिया। इससे सिखों तथा चीनियोंमें युद्ध छिड़ गया। इस समय नेपाल सरकार भी सिखोंसे पत्रव्यवहार करके परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना चाहती थी। उस समय आंग्लसेनापर अफगानिस्तानमें ऐसी विपत्ति पड़ी कि वह सर्वथा नष्ट हो गयी। महाराज रणजीतसिंहने आंग्लसेनाको, जो शाह-शुजाको सिंहासनपर बैठाने जाती थी, पंजाबसे गुजरनेकी आज्ञा दे दी थी। उस समय उनके हृदयमें यह इच्छा उत्पन्न हुई थी कि यदि इस युद्धमें अंग्रेजोंपर कोई विपत्ति आयगी तो हम उससे लाभ उठाकर अपना बल बढ़ायेंगे, किन्तु जब वह अवसर आया तो महाराज संसारसे ही चल बसे और उनके उत्तराधिकारी अयोग्य निकले। अब अंग्रेज उनसे काबुलसे बदला लेनेके लिए सहायता माँगने लगे, अतएव गुलाब-सिंह सहायता देकर भेजा गया।

इसी समय रानी चन्दकौरको उसकी दासियोंने इतना मारा कि उसके प्राण निकल गये। प्रायः लोगोंका यह विचार था कि यह काम महाराज शेरसिंहकी सम्मतिसे हुआ है। इसके पश्चात् अंग्रेजोंके यत्नसे सिन्धियावाला सरदारों और ध्यानसिंहमें सन्धि हो गयी। अजीतसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा अतरसिंह दोनों लाहौर वापस आ गये। अजीतसिंह महाराजका साथी बन गया। अब ध्यानसिंहका विश्वास घटने लगा। इस समय ध्यानसिंह दलीपसिंहका पक्षपाती प्रतीत हुआ। महाराज रणजीतसिंहने एक सुन्दर स्त्री जिन्दाको रानी बना लिया था। उसीसे दलीपसिंह उत्पन्न हुआ था, जिसकी उम्र इस समय पाँच वर्षकी थी।

शेरसिंहका वध

ध्यानसिंहने सिन्धियावाला सरदारोंसे भी द्रोह करना आरम्भ कर दिया। वे पहिले ही दिनसे महाराजके विरुद्ध थे। अब उन्होंने महाराजके वधका निश्चय कर लिया। शेरसिंह नदीके तटपर एक छोटेसे उद्यानमें बैठा था कि अजीतसिंह एक नयी बन्दूक उपहार देनेके लिए लाया। महाराज ज्योंही हाथ बढ़ाकर लेने लगे तत्काल उसने गोली चला दी और शेरसिंहका वहीं प्राणान्त हो गया। अजीतसिंहके साथ कई मनुष्य थे। वे ऊपर चढ़ गये और उन्होंने महाराजके साथियोंको मार डाला। अजीतसिंहके चचा लहनासिंहने उसी उद्यानके अन्दर महाराज शेरसिंहके पुत्र प्रतापसिंहको मार डाला। संक्रान्तिका दिन था और उस दिन प्रतापसिंह, जिसकी उम्र अभी १२ वर्षकी थी, ब्राह्मणों तथा साधुओंको अन्नदान दे रहा था।

इसके पश्चात् ये दोनों घातक ध्यानसिंहसे जा मिले और उसके साथ दुर्गकी ओर चले। मार्गमें जाते समय अजीतसिंह उसे पृथक् एक ओर ले गया और उसने गोलीसे उसकी समाप्ति कर दी।

इसके उपरान्त इन लोगोंने दुर्गपर अधिकार कर लिया। इन्हें इस बातका विचार न रहा कि ध्यानसिंहका पुत्र हीरासिंह अभी जीवित है और वह अपने पिताका बदला लेनेकी चेष्टा करेगा।

हीरासिंह

हीरासिंहने इस समाचारको सुनते ही सेना एकत्र की और लोगोंको भली भाँति बता दिया कि किस प्रकार सिन्धियावाला सरदारोंने उस दिन तीन बड़ी हत्याएँ कर सिख साम्राज्यको नष्ट करनेका विचार किया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
साथ ही सेनाको पारितोषिक भी देनेकी उसने प्रतिज्ञा की। सेनापर इस वक्तृताका बड़ा प्रभाव हुआ। वह तत्काल हीरासिंहके साथ दुर्ग लेनेपर उद्यत हो गयी। उसने आधी रातको दुर्गपर धावा बोल दिया। दूसरे दिन दोपहरतक दुर्गवाले सामना करते रहे। जब वे थककर हार बैठे तो सेना दुर्गपर चढ़ गयी और सिन्धियावाला सरदार अजीतसिंह, लहनासिंह, मिसिर बेलीराम और भाई गुरुमुखसिंह सबको मार डाला।

बालक दलीपसिंह राजा प्रसिद्ध किया गया और हीरासिंह उसका मन्त्री नियत हुआ। प्रत्येक सैनिकके वेतनमें ढाई रुपयेकी वृद्धि की गयी।

जल्ला पण्डित

हीरासिंह एक वर्ष तीन मासतक मन्त्री रहा। यह बड़ा योग्य तथा चतुर मनुष्य था। इसने अपने पितासे कुछ सीखा था। अपनेमें योग्यता रखते हुए भी इसे एक ब्राह्मणपर बड़ा विश्वास था। इस ब्राह्मणका नाम जल्ला पण्डित था। जल्ला पण्डित आरम्भसे हीरासिंहका रक्षक था, इसलिए हीरासिंह प्रत्येक बातमें जल्लाकी सम्मतिपर चलता था। जल्ला पण्डितके सम्मुख दो बातें थीं। एक तो वह अंग्रेजोंके इतिहाससे परिचित था। वह जानता था कि अंग्रेज पंजाबको अपने साथ मिलानेका अवश्य यत्न करेंगे, इसलिए उसे प्रत्येक कार्यमें अंग्रेजोंका प्रभाव प्रतीत होता था। वह पंजाबको अंग्रेजोंके प्रभावसे सर्वथैव सुरक्षित रखना चाहता था। इसी कारण उसने कोई बीस यूरोपियन नौकरोंको अनेक बहानोंसे उनके पदसे हटा दिया, केवल एक-दो शेष रह गये।

दूसरे उसने एक और बातका अनुभव किया कि रणजीतसिंहका कुल अब राज्य करनेके योग्य न था, इसलिए उसकी इच्छा थी कि जैसे पूनामें ब्राह्मणोंने पेशवाका पद स्थापित करके नाममात्रके राजा बना रखे थे, वैसे ही पंजाबमें एक पेशवाका पद स्थापित करके राज्य महाराष्ट्रके समान सुदृढ़ किया जाय। इस विचारकी पूर्तिके लिए उसने यह यत्न भी किया कि खालसा सेनाओंको बाहर भेजकर शनैः शनैः लाहौरमें दूसरी सेना तैयार की जाय। यदि पण्डित शान्तिसे काम लेता और चुपके-चुपके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने उद्देश्यकी पूर्तिका यत्न करता तो सफल होना सम्भव था, परन्तु पण्डितका स्वभाव तीक्ष्ण था और वह सब कुछ शीघ्रतासे करना चाहता था। ऐसे परिवर्तन शीघ्रतासे नहीं हो सकते। उसके विचार जाहिर हो गये। वह उनका शिकार बना और हीरासिंहको भी अपने साथ ले डूबा।

हीरासिंहके विरुद्ध दो दल

हीरासिंहके विरुद्ध तत्काल दो दल उत्पन्न हो गये। एक तो उसका चाचा सुचेतसिंह था जो इसलिए उससे अप्रसन्न हो गया कि वह मन्त्रित्वपर अपना अधिकार समझता था। दूसरा महाराज दलीपसिंहकी माता रानी जिन्दाका भाई जवाहरसिंह था। वह अपना बल बढ़ाना चाहता था, परन्तु हीरासिंह तथा जल्ला पण्डित उसे अयोग्य समझकर उसकी प्रतिष्ठा नहीं करते थे। पहिली बगावत सियालकोटमें हुई। यह पशौरासिंह और कश्मीरासिंह दो बालकोंकी ओरसे थी। ये अपने आपको महाराज रणजीतसिंहकी सन्तान प्रकट करते थे। कुछ सिख पलटनें उनकी ओर हो गयीं। बड़ी कठिनतासे यह बगावत दबायी गयी। इसके पश्चात् राजा सुचेतसिंह लाहौरपर चढ़ आया। उसे आशा थी कि सेनाएँ मेरे साथ मिल जायँगी, पर यह उसकी भूल थी। सेनाओंका प्रबन्ध उस समय पंचायतोंके हाथमें था। उन्होंने घरेलू झगड़ोंमें पड़ना उचित न समझा। राजा सुचेतसिंहने केवल बीस साथियोंके साथ हीरासिंहकी सेनाका सामना करते हुए बड़ी वीरतासे प्राण दिये।

तीसरा विद्रोह

इसके दो मास उपरान्त तीसरा विद्रोह हुआ। यह अतरसिंह सिन्धियावालाकी ओरसे था। अतरसिंह अपने भाइयोंकी सहायताके लिए आ रहा था। जब उसने सुना कि हीरासिंहने लाहौरका दुर्ग जीत लिया है तो वह खैरपुरकी ओर चला गया। उसने एक सुप्रसिद्ध सिख सन्त भाई बीरसिंह द्वारा ग्राममें विद्रोह कराना चाहा किन्तु सबके सब खालसा सेनामें ही भरती थे। अतरसिंह अपने आपको असफल पाकर वहाँसे अंग्रेजी इलाकेमें भाग गया। फिर उसने सेनाको हीरासिंहके विरुद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भड़कानेका यत्न किया और फिरोजपुरके समीप भाई बीरसिंहके पास आकर ठहरा। कश्मीरासिंह भी उसके साथ मिल गया।

हीरासिंहने खालसाको एकत्र कर उनको बतलाया कि सिन्धियावाला अंग्रेजोंसे मिला हुआ है। सब झगड़ेके मूल अंग्रेज हैं जो खालसा-राज्यको नष्ट करना चाहते हैं। एक बड़ी सेनाने फिरोजपुरकी ओर प्रस्थान किया। यद्यपि सिखोंने बड़ा यत्न किया कि भाई बीरसिंह वहाँसे पृथक् हो जाय, परन्तु वह वहाँ ही रहा और एक गोली लगनेसे मर गया। अतरसिंह और कश्मीरासिंह भी मारे गये।

हीरासिंहके मनमें दृढ़ विश्वास था कि यह सब झगड़ा अंग्रेजोंकी ओरसे हुआ है। इसके अनन्तर आंग्लसेना सिन्ध-विजयको चली। हीरासिंहने सिख सेनाको सीमान्तकी ओर इस भयसे भेज दिया कि कहीं अंग्रेजोंका विचार पंजाबकी ओर आनेका न हो।

हीरासिंह और जल्ला पण्डितका वध

इस समय सिख सेनाने गिलगित्तपर अधिकार कर लिया। हीरासिंहने खालसा सेनाको बाहर विजय प्राप्त करनेके लिए भेजा। खालसा अब किसीके वशमें न था। उसकी पंचायतें लाहौरसे बाहर जानेको तैयार न थीं। वे ऐसी प्रत्येक बातको बुरी दृष्टिसे देखती थीं। इतनेमें जल्ला पण्डितके विरुद्ध एक दल कायम हो गया। जवाहरसिंह रानीको भड़काता रहता था। एक बार पण्डितने रानीके विरुद्ध कुछ अनुचित शब्द कहे। वे उसके कानों तक जा पहुँचे। रानी जिन्दाको अपने पुत्रके लिए भय उत्पन्न हुआ। उसने जल्लाके विनाशका उपाय सोचा। पण्डितने एक ब्राह्मण लालसिंहको लोभ देकर अपना विश्वासपात्र बना लिया था। जिन्दा उसके साथ मिल गयी और उसके द्वारा सेनाको पण्डितके विरुद्ध करना आरम्भ किया। खालसाने हीरासिंहसे पण्डितको पृथक् करनेका बड़ा यत्न किया, किन्तु हीरासिंह पण्डितको छोड़नेपर उद्यत न हुआ। एक रात दोनों अपने प्राणोंकी रक्षाके लिए लाहौरसे भाग निकले। इधर खालसाको सूचना मिल गयी। सिख सैनिक उनके पीछे चल पड़े। नदी-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के पार थोड़ी दूरीपर जब वे थककर विश्राम कर रहे थे तो उन्हें जा पकड़ा और दोनोंका सिर काटकर लाहौर ले आये।

जवाहरसिंह

अब जवाहरसिंह मन्त्री बना और जवाहरसिंह तथा लालसिंहका काल आरम्भ हुआ जो लगभग एक वर्षतक रहा। इस कालमें पहिले सेनाने जम्मूपर आक्रमण किया। राजा गुलाबसिंहने पंचायतोंको उपहार आदि देकर सेनाको प्रसन्न करना चाहा, परन्तु अन्ततः पराधीनता स्वीकार करके वह लाहौर चला आया। कुछ काल यहाँ रहा और बहुतसा जुर्माना देकर जम्मू लौट गया।

जवाहरसिंह मन्त्री बनते ही यहाँतक विषयोपभोगमें पड़ गया कि वेश्याओंके साथ नाचा करता था। इसके समयमें पशौरासिंहने अटक दुर्गपर अधिकार करके अपने आपको महाराज प्रसिद्ध कर दिया। सरदार चतुरसिंह अटारीवाला, जिसकी कन्याके साथ दलीपसिंहका सम्बन्ध हुआ था और जो हजाराका शासक था, सेना लेकर अटककी ओर चला।

पशौरासिंहने हार स्वीकार कर ली। वह बन्दी बनाकर लाहौर भेजा गया। वहाँ जवाहरसिंहने उसे मार डाला। पहलेसे ही खालसा जवाहरसिंहसे घृणा करता था। इसने दो-तीन बार यह प्रकट किया कि मैं महाराजको साथ लेकर अंग्रेजोंके पास भाग जाऊँगा। अब सेनाका कोप अत्यन्त अधिक बढ़ गया। उसने समितिमें निर्णय किया कि जवाहरसिंहको प्राणदण्ड दिया जाय। उसे सेनाके समक्ष उपस्थित होनेकी आज्ञा हुई। वह हाथीपर चढ़कर महाराजको साथ लिये बाहर आया। खालसाने आज्ञा दी कि महाराजको हाथीसे उतारकर पृथक् किया जाय। फिर कतिपय सैनिकोंने आगे बढ़कर बन्दूकसे जवाहरसिंहको मार डाला। लालसिंह उसके स्थानपर मन्त्री और तेजसिंह सेनाध्यक्ष नियत हुआ, किन्तु वस्तुतः सर्वाधिकार सैनिकोंके हाथमें था जो राज्य-प्रबन्ध स्वयं करना चाहते थे।

—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युद्धकी तैयारी—सिख सरदारोंका स्वार्थ

जबसे पंजाबमें हलचल हुई और खालसाका बल बढ़ने लगा तभीसे अंग्रेजोंको अपने सीमाप्रान्तको अधिक दृढ़ करनेकी चिन्ता होने लगी। उन्हें यह आशा हुई कि अब पंजाबको विजित करनेका समय समीप आ रहा है। इससे पूर्व लुधियानामें थोड़ीसी आंग्लसेना थी। महाराज रणजीतसिंहके जीवनके अन्तिम वर्षमें बारह सहस्र सेना खुरासानपर आक्रमण करनेके लिए फिरोजपुरमें एकत्र की गयी थी। जब उधर युद्धका कोई भय न रहा तो इस सेनाका कुछ भाग वहीं रहने दिया गया, परन्तु जब अंग्रेजोंने सिन्धपर आक्रमण किया तो उस समय फिरोजपुरकी छावनी बदल दी गयी। अब कुछ सेना अम्बाला भेजकर उसे भी दृढ़ करनेका विचार किया गया। यह ठीक है कि अंग्रेजोंको पूर्ण अधिकार था कि जिस तरह उचित समझें अपनी छावनियोंको दृढ़ करें, पर सिख इस सेनाकी वृद्धिको अपने विरुद्ध युद्धकी तैयारी समझने लगे। अंग्रेजोंकी तैयारियाँ केवल अपनी रक्षाके लिए थीं। इसके अतिरिक्त सिखोंसे यह भी छिपा न था कि अंग्रेज सतलज नदीपर पुल बाँधनेके लिए बम्बईमें नौकाएँ तैयार कर रहे हैं। सिन्धकी सेना मुलतानपर चढ़ाई करनेके लिए तैयार हो रही थी। सब सीमान्त दुर्गोंमें गोला-बारूद इत्यादि सामान एकत्र किया जा रहा था। कई चिह्न ऐसे थे जो सिखोंको अंग्रेजोंके विचारके सूचक थे। इधर सिखोंके सरदार और नेता अपने स्वार्थके लोभमें अपने देशकी स्वतन्त्रता और धर्मका बलिदान करनेपर तैयार बैठे थे। उन्हें यह भय था कि जब कोई मनुष्य खालसा सेनामें ऐसा निकल आयेगा जो इसको वशमें करके सरदार बन सके तो तत्काल उसके हाथमें बल आ जायगा और वह सबको परे हटाकर राज्यको सँभाल लेगा। इसलिए उनके हृदयमें इच्छा उत्पन्न हुई कि किसी प्रकार खालसाकी शक्ति तोड़ी जाय। यह केवल एक विधिसे हो सकता था कि वह अंग्रेजोंसे लड़नेके लिए उसकाया जाय; इसलिए खालसाको उत्तेजना देनेके लिए वे प्रश्न करते कि क्या तुम चुपचाप बैठे देखते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहोगे और अंग्रेज रणजीतसिंहके राज्यपर अधिकार प्राप्त कर लेंगे? सिखोंका उत्तर यह होता था कि हम अपने तन, मन और धनसे गुरुकी नगरीकी रक्षा करेंगे। वे प्रतिज्ञा करते थे कि हम अंग्रेजोंको पंजाबमें कदम न रखने देंगे।

यदि अंग्रेजोंकी ओरसे खालसाको तैयारियोंके सामान दृष्टिगोचर न होते तो वह कभी इस युद्धके लिए तैयार न होता, परन्तु जब सैनिकोंको विश्वास हो गया कि अंग्रेज युद्ध करनेपर उतारू हैं तो वे महाराज रणजीतसिंहकी समाधिपर एकत्र हुए और खालसाके लिए प्राण देनेकी शपथ खाकर लाहौरसे चल पड़े। प्रस्थानसे पहले सेनाका अध्यक्ष नियत कर लेना आवश्यक था। लालसिंह तथा तेजसिंहने अपने स्वार्थके लिए सेनापति बनना स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि जबतक युद्ध होता रहे खालसा पंचायतें बन्द कर दी जायँ और हमारी आज्ञाओंका पालन पूर्ण रूपसे हो।

लालसिंहका विश्वासघात

इधर गवर्नर-जेनरल भी अम्बालामें सेनाध्यक्ष लार्ड गफसे आ मिला। सिख सेनाकी संख्या लगभग चालीस सहस्र थी। सभी सिख इस युद्धको धर्मका युद्ध समझते थे। वे स्वयं मजदूरोंका काम करते थे; स्वयं बन्दूक उठाकर सैनिकका कर्तव्यपालन करनेपर तैयार थे। खालसा सैनिक एक ही समय बैलोंको हाँकता था, ऊँट चलाता था, नौकापर असबाब लादता और उतारता था और स्वयं नदीपर पुल बाँधनेको तैयार था। इनके मुकाबलेपर वे वेतन पानेवाले सैनिक थे जो कि कवायद अच्छी कर सकते थे, किन्तु उनके हृदयमें उत्साहका लेशमात्र न था। वे वेतनके लिए लड़ते थे। फिरोजपुरमें सात सहस्र आंग्लसेना थी। यदि सिखसेना उसपर आक्रमण करती तो उसको पराजय देना कोई बड़ी बात न थी, किन्तु लालसिंह तथा तेजसिंह सिखोंको बलिदान करानेके लिए लाये थे। उन्होंने कहा कि एक छोटीसी सेनाका सामना करना वीर खालसाके लिए उपयुक्त नहीं है, उसको तो अंग्रेजोंको पराजित कर लाट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साहबको कैद करना चाहिये। इसीमें छः दिन नष्ट कर दिये गये। आंग्ल-सेना इतनेमें रुड़कीतक आ पहुँची। अब बजाय इसके कि सम्पूर्ण सिख-सेना आंग्लसेनापर आक्रमण करती लालसिंह केवल दो सहस्रका एक दस्ता लेकर आंग्लसेनापर चढ़ आया। पहलेके निर्णयानुसार वह दस्ताको वहाँ छोड़कर स्वयं पीछे भाग आया। इस प्रकार बिना नेताके सिखसेनाका एक दस्ता शत्रुदलसे लड़ने लगा। आंग्लसेना आक्रमण करती हुई आगे बढ़ने लगी। पाँच मील तक शत्रुकी ओर मुख किये हुए सिखसेना पीछे हटती आयी और शत्रुओंसे युद्ध करती रही। इसमें अंग्रेजोंके नौ सौ मनुष्य मारे गये। इस एक संग्रामसे अंग्रेजोंको सिखोंके बलका पता लग गया। गवर्नर-जेनरल हार्डिञ्जने गफके अधीन दूसरे सेनापतिके रूपमें लड़ना स्वीकार किया। तेजसिंहने फिरोजपुरवाली सेनाका ध्यान रखनेका निश्चय किया। वह चुपचाप बैठा रहा। फिरोजपुर ही प्रथम क्षेत्र था जहाँ आंग्लसेनाको अपने सदृश भारतवर्षीय कवायददाँ सेना और तोप-खानेका सामना करना पड़ा। रणजीतसिंहने अपनी सेनाको यूरोपीय कवायदकी विशेष शिक्षा दी थी।

फिरोजपुरमें अंग्रेजोंकी हार

फिरोजपुरमें दोनों ओर लगभग बराबर सेना थी। अंग्रेजोंने चारों ओरसे सिखसेनापर आक्रमण किया। चारों ओर सिखोंने उन्हें पीछे हटाया। एक सेनापतिने सेनाको पीछे हटनेकी आज्ञा देकर कहा—"भारत-वर्ष अब हाथसे गया।" आंग्लसेनामें हाहाकार मच गया। पलटनें एक दूसरीके साथ मिल गयीं और परस्पर गोली चलाने लगीं। सायंकाल हो गया। अंग्रेजोंके पास गोलाबारूद कोई सामान शेष न रहा। सम्पूर्ण सेना निराश और थककर पड़ रही। किसी ओरसे आशाकी झलक तक न दिखती थी।

तेजसिंहका देशद्रोह—गुलाबसिंहका अंग्रेजोंसे मेल

सिखसेना बड़ी निर्भय थी। सिखोंकी दश सहस्र सेना पृथक् विद्य-मान थीं। अगर तेजसिंह इस सेनाको लेकर पहुँच जाता तो निश्चयपूर्वक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेज पूर्णतः पराजित होते, परन्तु तेजसिंहकी तो यह इच्छा ही न थी। वह देखता रहा। जब लालसिंहकी सेना थककर बैठ गयी तो अपने सैनिकोंके जोर देनेपर वह फिरोजपुरसे चला और प्रातःकाल रणक्षेत्रमें जा पहुँचा। उधरसे जब अंग्रेज उठे तो उन्होंने देखा कि रणक्षेत्र शून्य है। उन्होंने समझा अब विजय प्राप्त हो गयी। उस समय तेजसिंहकी सेनाके आगमनसे धूल उड़ती दिखाई दी। तेजसिंहमें आंग्लसेनाको नष्ट करनेकी शक्ति थी। वह निश्चयपूर्वक ऐसा कर सकता था किन्तु उसने जानबूझकर ऐसा नहीं किया! उसकी तो एक ही इच्छा थी कि खालसा नष्ट हो जाय। उसने पहुँचते ही तोप चलानेकी आज्ञा दी। अंग्रेजोंके पास तो कोई सामान ही न था। जब उनकी ओरसे कोई उत्तर न मिला तो वह घोड़ा दौड़ाकर भाग निकला। इसके पीछे उसकी सेना भी शनैः शनैः चली गयी। संसारके इतिहासमें छल-कपटके अनेक उदाहरण पाये जाते हैं, किन्तु इस प्रकारके कपटका उदाहरण कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता। लार्ड गफने स्मिथको सेना देकर धर्मकोटकी ओर भेजा। स्मिथ धर्मकोटको वशमें करने के उपरान्त लुधियानाकी ओर चला। मार्गमें नजौरसिंह सेना लिये इसपर आ पड़ा और बदीवालमें इसे घेर लिया। स्मिथने कठिनतासे प्राणोंकी रक्षा की। सब सामान सिखोंके हाथ आया और कई अंग्रेज कैद भी किये गये। इससे समस्त भारतवर्षमें अंग्रेजोंके शत्रुओंका दिल बढ़ गया और लालसिंह तथा तेजसिंह अपनी करनीपर काँपने लगे। इसके अनन्तर अलीवाल स्थानपर अंग्रेजोंको थोड़ासा लाभ हुआ, जिसपर राजा गुलाबसिंहने अंग्रेजोंसे पत्रव्यवहार करना प्रारम्भ किया। गवर्नर-जेनरलने प्रसन्नतापूर्वक उसके साथ समझौता करना चाहा। उसे यह भय था कि यदि थोड़े दिन यह अवस्था रही तो सारा देश कदाचित् आंग्लशासनके विरुद्ध उठ खड़ा हो। उसने इस शर्तपर पंजाबमें सिखराज्यको अंगीकार करनेकी प्रतिज्ञा की कि सिखसेना हटा दी जाय। यह बात गुलाबसिंहकी शक्तिसे बाहर थी। अन्तमें यह निश्चय हुआ कि जब आंग्लसेना सिखोंपर आक्रमण करे तो सरकार उनकी सहा-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यतासे हाथ उठा ले और सेनाकी पराजयके उपरान्त आंग्लसेनाको नदी पार करने तथा लाहौरतक पहुँचनेमें कोई रुकावट न डाली जाय।

सुबराँवका युद्ध

इस प्रतिज्ञापत्रके अनन्तर सुबराँवका युद्ध हुआ। यदि कोई बुद्धिमान् पुरुष इस समय सिखसेनाकी ओर होता तो सिख बहुत कुछ कर दिखाते। सिख अपने शत्रुओंको देखकर सुसज्जित हुए। शामसिंह अटारीवालेके शब्द प्रत्येकके हृदयमें गूँजते थे। उसने प्रण किया कि "मैं गुरु गोविन्दसिंह तथा खालसाको प्रसन्न करनेके लिए अपने प्राणोंका सबसे पहिले बलिदान करूँगा।" यह २८ माघ, संवत् १९०२ (१० फरवरी, सन् १८४६ ई०) की घटना है।

सुबराँवमें सिख पलटनोंने स्वयं अपने लिए खन्दकें खोदीं। आत्मरक्षाके लिए दीवारें बनायी गयीं। अंग्रेज सौ तोपें आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे, इसलिए चुपचाप इन तैयारियोंको देखते रहे। नावोंका पुल एक दूसरे तटको परस्पर मिलाता था। २८ माघ (१० फरवरी) को प्रातःकाल होते ही आंग्ल सेनाने आक्रमण किया। सिखोंने बड़ी वीरतासे आक्रामकोंको पीछे हटा दिया। युद्धने बड़ा जोर पकड़ा। अंग्रेज बार-बार आक्रमण करते थे और सिख उन्हें पीछे हटाते थे। रक्तकी नदियाँ बहने लगीं। युद्ध पूरे जोरोंपर था कि तेजसिंह पुलसे पार होकर भाग गया और मध्यकी एक नौकाको नदीमें डुबाता गया जिसमें कोई सिख बचकर पीछे न आ सके; परन्तु किसी सिखने आश्रय नहीं माँगा। वे प्रत्येक स्थानपर निरन्तर सामना करते रहे। विजयी भी इनकी निर्भयता और साहसको देखकर विस्मित होते थे, विशेषकर उस समय जब कोई नवयुवक आक्रामकोंके समूहमें बढ़ता हुआ दौड़कर कट जाता था। इनके नेता वाहगुरु कहकर आंग्ल सैनिकोंको ललकारते थे और प्रमाणित करते थे कि अभी खालसा जीवित है।

ग्यारह बजेसे पूर्व कोई सिख सतलजके बायें तटपर न रहा। इस युद्धने खालसाके बलको धूलिमें मिला दिया। आंग्ल सेना वहाँसे कसूर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहुँची और तत्पश्चात् लाहौरमें प्रविष्ट हुई। सिखोंने अब गुलाबसिंह द्वारा अंग्रेजोंके साथ प्रतिज्ञापत्र लिखवानेका निश्चय किया। उन्हें यह पता नहीं था कि वह प्रहिलेसे अंग्रेजोंसे मिला हुआ है।

सन्धिकी शर्तें—राज्यके तीन टुकड़े

लाहौरमें दलीपसिंह महाराज अंगीकार किया गया। व्यास तथा सतलजके मध्यका प्रान्त दोआब जालन्धर अंग्रेजोंने अपने राज्यमें मिला लिया। युद्धके व्ययके लिए सिख दरबारको डेढ़ करोड़ रुपया देना पड़ा। गुलाबसिंह अपने आपको पंजाबसे स्वतन्त्र करनेकी चेष्टा कर रहा था, इसलिए उसने काश्मीरका प्रान्त पंजाबसे निकालकर अपनी रियासतके अन्तर्गत कर लिया और एक करोड़ रुपया इस दण्डमेंसे अंग्रेजोंको दिया। इस प्रकार महाराज रणजीतसिंहके राज्यके तीन टुकड़े कर दिये गये। लालसिंह मन्त्री और तेजसिंह सेनाध्यक्ष बनाया गया, परन्तु इन दोनोंको भय था कि कहीं फिर खालसा हमारे विरुद्ध न हो जाय, इसलिए इन्होंने प्रार्थना की कि एक आंग्ल सेना पंजाबमें रखी जाय। एक अंग्रेज अफसर वहाँ राज्य-प्रबन्धके लिए नियत हुआ। उसकी सहायताके लिए छः सिख सरदारोंकी एक सभा चुनी गयी जिसमें तेजसिंह सबसे बड़ा था। इस सन्धिपत्रसे अंग्रेजी सरकारने पंजाबके शासनका भार अपने ऊपर ले लिया और सर हेनरी लारेन्स प्रथम रेसिडेण्ट नियत हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवाँ प्रकरण

सिखोंका अन्तिम प्रयत्न—पंजाबका पतन

लाहौरमें विद्रोह

रेसिडेन्सी स्थापित हो जानेके थोड़े दिन पश्चात् लाहौरमें एक बड़ा विद्रोह हुआ। किसी गोरे सैनिकने एक बैलको तलवारसे जख्मी कर दिया। आर्य लोग एकत्र हो गये और सिपाहियोंको मारने लगे। रेसिडेण्ट लारेन्स और मेजर एडवर्ड घटनास्थलपर गये। लोग उनपर पत्थर आदि फेंकने लगे। एडवर्डके सिरमें चोट आयी। बड़ी कठिनतासे यह शान्त किया गया।

हेनरी लारेन्सने कतिपय अंग्रेज अफसरोंको शान्ति बनाये रखने और परिस्थितिकी सूचना देनेके लिए सीमाप्रान्तके कुछ स्थानोंमें रख दिया—एडवर्ड बन्नू प्रान्तमें, जार्ज लारेन्स पेशावर, एबटाबाद और हजारामें एवं निकल्सन एक अन्य प्रान्तमें नियत किये गये।

सीमाप्रान्तको छोड़कर पंजाब सर्वथा शून्य पड़ा था। ऐसा प्रतीत होता था कि न तो लारेन्सको और न गवर्नर-जेनरलको ही उस भागसे भय था, जहाँ सिखोंका जोर था। उन्होंने इस बातका अनुभव नहीं किया कि खालसा अभी आंग्ल राज्यसे सन्तुष्ट नहीं है।

खालसाका असन्तोष

दूसरे दिन खालसाको पता लग गया कि हमारे ही नेताओंने छलसे अपने साथियोंको मरवा डाला है। वे उन नेताओंको धिक्कारते थे और कहते थे—'राज्य करेगा खालसा आकी रहे न कोय।' सर हेनरी लारेन्स लाहौरमें प्रायः उन्हीं लोगोंसे मिलता था जिन्होंने अपने देशकी स्वतन्त्रता बेच दी थी। अतः खालसाके असन्तोषके सम्बन्धमें उसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई सूचना न मिली। एक वर्षके पश्चात् सर हेनरी पंजाबको सर्वथा सुरक्षित समझकर गवर्नर-जेनरलके साथ इंग्लैण्ड चला गया। सर फ्रेड्रिक करी उसके स्थानपर आया। उसे कार्य-प्रबन्धका बहुत कम अनुभव था। यद्यपि बाह्य रूपसे अशान्तिके कोई चिह्न न दिखते थे, किन्तु भीतर ही भीतर अशन्तिकी प्रबल लहरें उठ रही थीं। खालसाके वास्तविक नेता अपनी वर्तमान दशापर रो रहे थे। वे किसी अनुकूल समयकी ताकमें थे। इन समस्त नेताओंका सरदार शेरसिंह अटारीवाला था, जो कौंसिलका सदस्य भी था। वह ऊपरसे किसी प्रकार असन्तुष्ट प्रतीत न होता था। इन सरदारोंकी ओरसे सब सिख ग्रामोंमें चुपके-चुपके यह समाचार पहुँच गया कि सब लोग तैयार रहें, आवश्यकता होनेपर वे बुलाये जायँगे।

दीवान मूलराज

इस आभ्यन्तरिक तरंगका अंग्रेजोंको कुछ पता ही न लगा। सिख सरदार जिस अवसरकी प्रतीक्षा कर रहे थे वह उन्हें दीवान मूलराजके त्यागपत्रसे मिला। ऐसा सन्देह होता है कि यह अवसर उनकी ओरसे निश्चित किया गया था। रणजीतसिंहके कालमें दीवान सावनमल नामक एक बड़ा बुद्धिमान् तथा नीतिज्ञ व्यक्ति था। महाराजने उसे सूबा पंजाबका गवर्नर नियत किया था। संवत् १९०० (सन् १८४३ ई०) में उसकी मृत्युपर उसका पुत्र मूलराज उत्तराधिकारी हुआ। प्रचलित प्रथाके अनुसार उसे तीस लाख रुपया लाहौर दरबारको भेंटस्वरूप देना था, किन्तु लाहौरमें उस समय झगड़ा हो गया था। शान्ति हो जानेपर लालसिंहने भेंट माँगी, साथ ही उसकी प्राप्तिके लिए सेना भी भेज दी। मूलराजने झंगके समीप सेनाको परास्त किया और भेंट देनेसे इनकार कर दिया।

अंग्रेजी सरकारका हस्तक्षेप

अंग्रेजी सरकारने बीचमें पड़ना आवश्यक समझा। उसने मूलराजको बाध्य कियाँ कि वह केवल तीस लाख भेंट ही न दे, बल्कि अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
प्रान्तका तीसरा भाग—झंगका जिला—लाहौर दरबारके सुपुर्द कर दे और अपने पितासे एक-तिहाई अधिक कर दे। मूलराजने इन शर्तोंको पूर्ण किया, परन्तु प्रजाकी ओरसे लाहौर सभाके पास शिकायतें आयीं कि लगान बहुत बढ़ गया है। यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि मूलराजका प्रांत तो घटा दिया गया था, किन्तु कर अधिक कर दिया गया था। सर हेनरी लारेन्सने मूलराजको इन शिकायतोंको दूर करनेकी आज्ञा दी। मूलराजको इससे क्रोध आ गया। उसने कहा, सर हेनरी लारेन्सको प्रतिज्ञापत्रके अनुसार इस प्रकारका कोई अधिकार प्राप्त नहीं; परन्तु जिस बातको मूलराज जरा भी सहन न कर सका वह यह थी कि लारेन्सने यह भी आज्ञा दी कि दीवान मूलराजके निर्णयोंकी अपील लाहौर सभामें की जा सकती है। जब लारेन्स इंग्लैण्ड जानेके लिए तैयार था तो मूलराज लाहौर आया और उसने त्यागपत्र दे दिया। सर हेनरी लारेन्स प्रस्थान कर चुका था। उसके भाईने मूलराजको बहुत समझाया, परन्तु जब मूलराजने न माना तो निर्णय हुआ कि वह हिसाब आदि साफ करे। इससे दो मास पूर्व दो अंग्रेज अफसर वहाँ चार्ज लेनेके लिए चले जायँ, किन्तु यह सब बात गुप्त रखी जाय।

अन्तिम शर्त पूर्ण न हुई। यह वार्ता सर्वत्र प्रसिद्ध हो गयी। इससे दीवान मूलराजको बड़ा दुःख हुआ। मिस्टर करीने दूसरी शर्तके अनुसार दो अंग्रेजों—मिस्टर ऐगेन्यू और मिस्टर ऐण्डर्सन—को एक दस्ता सेना सहित, जो सरदार काहनसिंहके अधीन थी, मुलतान भेजा। अभी तक स्थानीय अधिकारियोंके ध्यानमें भी यह बात न थी कि सिख हमारे विरुद्ध हैं और उन्होंने एक बड़ी साजिश कर ली है।

दोनों अंग्रेज और काहनसिंह नदीके मार्गसे गये और वैशाख मासके आरम्भमें मुलतान जा पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने ईदगाहमें डेरा डाला। दूसरे दिन दीवान मूलराजसे चार्ज लेनेके लिए अंग्रेज अफसर और काहनसिंह दुर्गमें प्रविष्ट हुए। दुर्गकी तालियाँ उनको सौंप दी गयीं और उन्होंने अपने सैनिक नियत कर दिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफसरोंपर आक्रमण—जन-समूहका क्रोध

लौटते समय पूर्व दुर्गपालोंमेंसे, जो कि अब हटा दिये जा चुके थे, एकने खाईके पुलपर खड़े होकर ऐगेन्यूपर अपने नेजेका वार किया। उसने इसका उत्तर दिया और वहाँ शोरसा मच गया। पुराने दुर्गपाल एकत्र हो गये। ऐण्डर्सनपर आक्रमण करके उसे खूब मारा और अन्तमें उसे मृत समझकर छोड़ दिया। बड़ी कठिनतासे दोनों अफसर ईदगाहमें पहुँचे। ऐगेन्यूने मूलराजको इस घटनाके सम्बन्धमें पत्र लिखा और बन्नूमें एडवर्ड्जको भी खबर दे दी गयी। मूलराजका उत्तर आया कि क्या आर्य और क्या मुसलमान, सब द्रोही हो गये हैं और यह कार्य मेरी शक्तिसे बाहर है। जितनी देशी सेना लाहौरसे चली थी वह लोगोंके साथ मिल गयी, अंग्रेजोंके साथ केवल काहनसिंह तथा दस-बारह मनुष्य और रह गये। ऐगेन्यूने मूलराजके पास आदमी भेजकर तै कर लिया कि हम लोग मुलतानसे लौट जायँगे, परन्तु समूहका वेग नदीके समान होता है। सायंकाल होते ही एक बड़ा जनसमूह ईदगाहकी ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचते ही बड़ी क्रूरतासे उसने ऐगेन्यूका सिर शरीरसे पृथक् कर दिया। ऐण्डर्सनके शय्यापर विश्राम करते समय तलवारोंसे टुकड़े-टुकड़े कर डाले। यह उस अग्निकी पहिली ज्वाला थी जो भिन्न-भिन्न स्थानोंपर सुलग रही थी। जब इस दुर्घटनाका समाचार करीको मिला तो उसने पहिले तो इसे साधारण बात समझा। उसने सिख पलटनोंसे वहाँ जाकर विद्रोह शान्त करनेके लिए कहा। सिख सरदारोंने बिना आंग्ल सेनाके वहाँ जानेसे इनकार कर दिया। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि इस कार्यमें सिख सैनिकोंपर विश्वास नहीं किया जा सकता, इसलिए सिख सेना वहाँ नहीं भेजी जानी चाहिये।

लेफ्टिनेण्ट एडवर्ड्ज

तब उसने लार्ड गफको शिमलामें सूचना दी और आंग्ल सेनाको मुलतान भेजनेके लिए प्रार्थना की। लार्ड गफने अधिक गरमी पड़नेके कारण सेना भेजनेमें कुछ विलम्ब कर दिया। अब लार्ड डलहौसी गवर्नर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जेनरल था और वह इस काररवाईसे सहमत था। लेफ्टिनेण्ट एडवर्ड्‌जने समाचार पहुँचते ही पठानों तथा बलूचियोंकी एक सेना एकत्र करके डेरागाजीखाँपर अधिकार कर लिया। नवाब बहावलपुरको भी सहायता देनेपर राजी कर लिया। इस प्रकार वह अकेला अपने उत्साहसे बहुत दिनोंतक दीवान मूलराजकी सेनासे युद्ध करता रहा।

लाहौरमें षड्‌यन्त्र

इतनेमें लाहौरमें एक दुरभिसन्धिका पता लगा जिसमें रानी जिन्दा भी सम्मिलित थी। अंग्रेजोंका अधिकार होते ही रानीको, जिसने अपने भाईका बदला लेनेके लिए खालसाको बारूदके स्थानपर सर्सों भेजी थी, अपनी भूल मालूम हो गयी। उसने लालसिंह द्वारा षड्‌यन्त्र रचना शुरू कर दिया। इसलिए लालसिंह तो वृत्ति देकर आगरा भेज दिया गया और रानी शेखपुराके दुर्गमें कैद कर दी गयी। तेजसिंह मन्त्री नियत किया गया। जिन्दा वहाँसे भी षड्‌यन्त्रमें सम्मिलित रही।

जब करीको एडवर्ड्‌जकी सफलताका वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उसने अपने उत्तरदायित्वपर आंग्ल सेनाको मुलतान भेज दिया। जेनरल व्हिश उसका सेनापति था। जब यह सेना सिख-सेना सहित, जिसका नेता शेरसिंह अटारीवाला था, मुलतान पहुँची, तो उधर हजारामें सरदार शेरसिंहके पिता सुचेतसिंहने विद्रोहकी पताका खड़ी की। १९ भाद्रपद-(४ सितम्बर)को जेनरल व्हिशने मुलतान दुर्गको घेर लिया। मुलतान अधीन हो जाता, किन्तु २६ भाद्रपद(१४ सितम्बर)को शेरसिंह भी विद्रोहियोंके साथ मिल गया। तब व्हिशने अवरोध उठा लिया और तीन मासतक सहायतार्थ सेनाकी प्रतीक्षामें चुपचाप बैठा रहा।

रामनगरका युद्ध

शेरसिंह मुलतानसे निकलकर प्रत्येक स्थानपर खालसाको सचेत करता हुआ अपने पिताके साथ जा मिलनेके लिए रामनगरतक जा पहुँचा। इधर गफने सेनाकी बागडोर अपने हाथमें ले ली और वह रावी पार करके पीछे-पीछे वहाँ आ गया। ६ मार्गशीर्ष(२२ नवम्बर)के प्रातःकाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गफने शेरसिंहको पार होते देखकर बिना किसी विचारके धावा बोल दिया। शेरसिंहने गोलाबारीकी आज्ञा दी। अब लार्ड गफपर विपत्ति आ पड़ी। तोपें रेतमें फँस गयीं और आंग्ल सेनाको पीछे हटना पड़ा। एक तोप वहीं रह गयी। जेनरल हैवलाकने तोप लानेकी आज्ञा माँगी। वह सेना लेकर गया, किन्तु सिख-तोपोंकी मार बड़ी भीषण थी। वह स्वयं वहीं मारा गया और सेनाको असफल होकर लौटना पड़ा। दूसरे दिन सिख तोपें उठाकर ले गये। रामनगर-युद्धसे सिखोंका दिल बहुत बढ़ गया।

सिख अब चनाब पार हो गये। गफके मनमें एक ही विचार काम कर रहा था कि किस समय शत्रुपर पहुँचकर आक्रमण करें। उसने जेनरल थैकवैलको पार होनेकी आज्ञा दी।

सिख रात्रिके समय सो जाते थे, इसलिए थैकवैल सेनाका कुछ भाग लेकर वजीराबादसे नदी पार हुआ। गफकी आज्ञा थी कि शत्रुपर मिलते ही आक्रमण कर देना, परन्तु दिनभर अन्वेषण करनेपर भी उन्हें सेनाका कुछ पता न चला। उधरसे गफने गोलाबारी आरम्भ कर दी जिसमें सिखोंको थैकवैलका पता न लगे। जब शेरसिंहको यह वृत्तान्त विदित हुआ तो वह तो एक बार सारी सेना लेकर थैकवैलके प्रतिकूल चला, किन्तु फिर उसको यह भय हुआ कि कहीं गफ पीछेसे नदी पार न करे, इसलिए उसने सेनाका कुछ भाग वहाँ छोड़ दिया और केवल दस सहस्र सेना लेकर चला। सादुल्लापुरमें उसने थैकवैलकी सेनापर गोलाबारी आरम्भ की। जब रात हो गयी तो लौट आया। आंग्ल सेना भूमिपर लेट गयी और उसकी थोड़ीसी हानि हुई। शेरसिंह गफके आगमनसे डरता रहा—उसने आक्रमण नहीं किया। उधर गफ नदीके उसी ओर बैठ रहा।

चिलियाँवालाका युद्ध—अंग्रेजोंकी हानि

यहाँ चतुरसिंहने अटक दुर्गको घेर लिया था। जब उसने अटकको जीत लिया तो गवर्नर-जेनरलने गफको लिखा कि तत्काल शत्रुपर आक्र-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
मण कर दी। नदी पार करनेपर उसे सूचना मिली कि सिख सेना रसूलके समीप है। गफने उसी ओर प्रस्थान किया। सिख सेना चिलियाँवाला ग्रामके समीप आ गयी थी। गफकी दृष्टि उसपर पड़ी। शेरसिंह उसी दिन युद्ध करनेके लिए कटिबद्ध था। उसने तोपें चलाना आरम्भ कर दिया। उधरसे भी तोपें चलीं। कुछ कालतक गोलाबारी होती रही। इनके मध्य एक मील घना जंगल था। दुःखित होकर गफने शत्रुके तोपखानेपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। सिखोंने वीरतासे सामना किया। युद्धका विस्तृत वर्णन देना कठिन है, किन्तु इतना कहना आवश्यक है कि पंजाबका यह युद्ध बहुत ही प्रसिद्ध हुआ है। आश्चर्यकी बात यह है कि अंग्रेज भी इसे अपनी विजयोंमें गिनते हैं और सिख तो निःसन्देह इसे अपनी बड़ी विजय समझते हैं। इस स्थानपर अंग्रेजोंकी तोपें और झण्डे रह गये और उन्हें लौटना पड़ा। सायंकालको जब अंग्रेज हटकर चिलियाँवाला ग्राममें आ गये तो वे छः तोपों और फौजी झण्डोंके अतिरिक्त सारी लाशें रणभूमिमें छोड़ आये। उनकी बड़ी भारी हानि हुई। इस युद्धमें उनके १८९ अफसर और २३५७ सैनिक मारे गये अथवा जख्मी हुए। सिख ये सब वस्तुएँ अपनी विजयके प्रमाणमें लेकर रसूलको लौट गये। दो सप्ताहपर्यन्त दोनों सेनाएँ एक दूसरीसे थोड़ी दूरीपर पड़ी रहीं। गफकी समझमें न आता था कि क्या करे। वह मुलतानकी विजयकी प्रतीक्षा करता रहा। चिलियाँवाला युद्धके ८० दिन पश्चात् मुलतानकी विजय हुई। जेनरल व्हिश सेना लेकर गफकी सहायताको चला।

इधर शेरसिंह अपने पिता चतुरसिंहके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहा था। थोड़े ही दिनोंमें चतुरसिंह अपनी सेना लिये आ पहुँचा। उसके साथ अफगान-सेना भी थी जिसका सेनापति अमीर काबुलका पुत्र अकबर खाँ था। चतुरसिंहने सारी सेनाकी बागडोर अपने हाथमें ले ली। कई बार चतुरसिंहने यत्न किया कि गफको सामने लाये, परन्तु गफ अपने स्थानसे न हिला। अन्तमें वहाँसे आँख बचाकर शेरसिंहने चनाब नदीको पार कर लाहौरकी ओर मुख किया। गफने व्हिशको मार्ग रोकनेकी आज्ञा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दी। वह पहिलेसे ही तैयार बैठा था। जब सिखोंको यह विदित हुआ तो उन्होंने गुजरातमें आ डेरा जमाया।

गुजरातमें सामना

अब जेनरल व्हिशकी सेना गफके पास पहुँच गयी। वह कुंजाह होता हुआ शादीवालमें शत्रुके समक्ष आ उपस्थित हुआ। दोनों सेनाओंमें युद्धकी तैयारियाँ आरम्भ हो गयीं। आंग्ल सेनाके आक्रमणको सिखोंने बढ़-बढ़कर रोका। सैनिक गाजर-मूलीकी तरह कटने लगे। धीरे-धीरे बढ़ती हुई आंग्ल सेनाने बड़े काजरा तथा छोटे कालरासे सिखोंको पीछे हटा दिया। सिखोंके दिल अभी टूटे न थे। वे थोड़ी देर ठहरकर दूसरी बार युद्धके लिए आगे बढ़े। वे खालसाकी विजयके लिए इस युद्धको सबसे अन्तिम अवसर समझते थे और प्राणोंका मोह छोड़कर लड़ते थे।

युद्धकी समाप्ति

दोपहरके एक बजे अंग्रेज भी थककर निराश हो गये थे और सिख भी थककर पीछे हट आये। इनका हटना अंग्रेजोंको विदित हुआ तो उनका दिल बढ़ गया और उन्होंने पीछा करना आरम्भ किया। संवत् १९०४ के ३० फाल्गुन(१४ मार्च, १८४८ ई०)को सिखसेनाने शस्त्र रख दिये और युद्धकी समाप्ति हुई। इस बार नेताओंपर छलका दोषा-रोपण नहीं हो सकता था, सिख-सेना इस वीरतासे शायद ही कभी लड़ी हो। यदि इस बार सिखोंको सफलता नहीं हुई तो इसका कारण शेरसिंहकी भूल थी। उसने केवल अपनी शिथिलताके कारण उन अव-सरोंसे लाभ न उठाया जो उसे कई बार मिले।

पंजाबपर अंग्रेजोंका आधिपत्य

लार्ड डलहौसीने अब पंजाबको अंग्रेजी शासनमें मिला लेनेका निश्चय कर लिया था। प्रश्न यह था कि पंजाब किसके लिए विजित किया गया। सर हेनरी लारेन्सका उत्तर स्पष्ट था। उसने कहा, हमने पंजाब महा-राजके लिए विजित किया है जिसके हम संरक्षक हैं, परन्तु डलहौसीका विचार कुछ और ही था। वह स्वयं लाहौर आया और उसने सभाके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सभी सदस्योंसे सिंहासन शून्य करनेके प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर कराये। उसमें दलीपसिंहने अपने राज्यका अधिकार अंग्रेजी सरकारको अर्पित करनेकी प्रतिज्ञा की। केवल राजा दीनानाथने आपत्ति करनेका साहस किया। उसने कहा—"इस बालकने क्या अपराध किया है? अंग्रेज जाति इतनी उच्च हृदयवाली जाति है कि दूसरे देशोंमें युद्ध करके बादशाहोंको सिंहासनपर बैठाती है। इसका पिता तो अंग्रेजोंका मित्र था।" डलहौसीने उसे आगे बोलनेसे रोक दिया, अतः वह रोता हुआ बाहर चला गया। राजा दलीपसिंह अंग्रेजी रक्षामें पंजाबसे बाहर भेज दिया गया। इस प्रकार पंजाब आंग्ल राज्यमें मिला लिया गया।

कूकोंका आन्दोलन

यह विषय इस अध्यायमें समाप्त करनेके लिए आवश्यक प्रतीत होता है कि कूकोंका आन्दोलन खालसा इतिहासमें सम्मिलित कर दिया जाय, यद्यपि इस आन्दोलनका प्रभाव पंजाबमें बीस वर्षके बाद प्रकट हुआ। जब कोई जीवित जाति दूसरोंसे पराजित होकर परतन्त्र हो जाती है तो उसके जीवनका लाभ प्रायः यह होता है कि वह विजयी जातिको अपना शत्रु समझकर उससे अपनी स्वतन्त्रताको लौटा ले। विजेताओंके लिए यह आवश्यक होता है कि अपने सुप्रबन्ध और सुशासनसे विजित जातिको मुग्ध करके उसकी पराजयका कलंक तथा अपयश उसके हृदयसे दूर करे। जब दो-चार पीढ़ियाँ हो जाती हैं और पराजित लोगोंमें जातीय गौरवका भाव लुप्त हो जाता है तो वे विजेताओंको अपना सुहृद् तथा हितैषी समझकर उनके साथ मिलने-जुलने और उनका अनुकरण करनेमें अपनी उन्नति समझते हैं।

जिस खालसाने दो बड़े युद्धोंमें अंग्रेजोंके विरुद्ध लड़कर अपने प्राणोंका बलिदान किया था उसके लिए चुपचाप नयी परिस्थितिको स्वीकार कर लेना सर्वथा अस्वाभाविक था। यद्यपि खालसा दो बार परास्त हो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चुका था और उसके सैनिक मर चुके थे, किन्तु अभी उसमें जीवन था और एक बार फिर यत्न करनेका विचार हृदयमें उद्वेलित हो रहा था।

'कूका' नामकी उत्पत्ति

खालसाकी निर्बलताका एक कारण यह था कि खालसा-श्रेणी पंजाबमें अत्यन्त परिमित संख्यामें थी। पंजाबमें गुरुके सिख तो बहुत फैले हुए थे और वे भी जन-संख्याका एक भाग थे, परन्तु जिस खालसाकी रचना गुरु गोविन्दसिंहने देशको आक्रामकोंसे स्वतन्त्र करनेके लिए की थी वह परिमित था। इसका काम क्षत्रियोंके तुल्य लड़ना ही था। अंग्रेजोंके आगमनके समय केवल चालीस-पचास सहस्र सिख सेना खालसा कही जा सकती थी। अब यह सेना निर्बल होते-होते बहुत थोड़ी रह गयी थी। इस सेनामेंसे अनेकने दुःखित होकर अपने खालसा-कर्तव्य छोड़ दिये थे ; बहुतेरे आंग्ल सेनामें भी भरती हो गये थे। इस टूटी-फूटी तथा बिखरी हुई अवस्थासे खालसामें पुनः जीवन उत्पन्न करनेका यत्न करना कूका आन्दोलनके प्रवर्त्तकका काम था।' कूका' नाम केवल इसलिए पड़ गया कि वे रात्रिको कूकें दिया करते थे।

प्रवर्त्तक रामसिंह

गुरु रामसिंह तरखान वृत्तिका (लकड़ीका काम करनेवाला) था। उसने खालसाके साथ-साथ अंग्रेजोंसे दो युद्ध किये। युद्धके पश्चात् वह अटक दुर्गमें अपना काम करने लगा, परन्तु उसके हृदयमें खालसाके प्रेमकी अग्नि जल रही थी।

राजनीतिक समितिकी स्थापना

संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) में हजरो वालकराम नामक एक साधु थे। रामसिहने उनके दर्शन किये। फिर वह अपना काम छोड़कर दूसरे कामकी ओर प्रवृत्त हुआ। साधुने इससे पूछा—'रामसिंह, क्या कर रहे हो ? खालसा तो नष्ट हो रहा है।' इससे प्रभावित होकर उसने स्थान-स्थानपर जाकर खालसाकी एक राजनीतिक समिति बनायी जिसका आशय गुप्त था। यह समिति खालसाको एकत्र करनेके लिए केन्द्र बनी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
खालसाका इसके चारों ओर एकत्र होना आरम्भ हुआ। यह प्रायः प्रसिद्ध था कि रामसिंहके भाषणमें जादूका बल है। जिसके कानमें वह मन्त्र फूँक देता था वह उसका शिष्य बन जाता था। इन लोगोंने अंग्रेजी संस्थाके मुकाबलेपर अपनी संस्था स्थापित की। प्रत्येक जिलेमें उनका अपना नेता हुआ करता था। उनके मुकदमे आंग्ल सभाओंमें न जाते थे, बल्कि उनके नेताओं द्वारा निर्णीत होते थे। उनकी डाकका प्रबन्ध सरकारी डाकके समान था। उनके पत्र सरकारी डाकसे न जाते थे। कूके स्वयं एक ग्रामसे दूसरे ग्रामतक ले जाया करते थे। इनके अतिरिक्त दो-तीन बड़े धार्मिक सिद्धान्त भी गुरु रामसिंहने प्रचलित कर दिये—यथा किसी प्रकारका मांस न खाना, थालीमें कोई पदार्थ जूठा न छोड़ना, जो कुछ हो उसे बाँटकर खाना; इत्यादि। एक प्रकारसे ये साम्यवादके सिद्धान्त थे।

कूका संस्थाकी उन्नति

इस संस्थाने इतनी उन्नति की कि दस वर्षके भीतर दो लाख स्त्री-पुरुष इसके सदस्य हो गये। जब संवत् १९१३–१४ (सन् १८५६–५७ ई०) में अंग्रेजोंके विरुद्ध बड़ा भारी आन्दोलन हुआ तो उस समय खालसा इस नये समाजको बनानेमें लगा हुआ था। जिन सिख पलटनोंने अंग्रेजों-का साथ दिया वे सिख अवश्य थीं, किन्तु खालसाकी अनुगामिनी न थीं। कूकोंका सबसे बड़ा दोष यह था कि उन्हें अंग्रेजोंकी योग्यताका लेशमात्र भी पता न था। उन्हें यह ज्ञात न था कि जिले-जिलेके नेताओंकी सूची प्रत्येक जिलेके कार्यालयमें विद्यमान है। वे अपनी धुनमें मस्त थे। जब उन्हें अपना बल बढ़ता दिखाई दिया तो उनके कई सदस्योंने अनधिकार चेष्टा करना आरम्भ कर दिया।

संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) में इनके पाँच मनुष्य एक रातको अमृतसरमें कोई पचीस बूचड़ोंका वध कर स्वयं भाग गये। उन्हें गो-घातकोंसे बड़ी घृणा थी। कमिश्नरने आर्य धनाढ्योंको, यह समझकर कि यह उन्हींकी शरारत है, पकड़ लिया। कूकोंने गुरु रामसिंहको इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वृत्तान्तसे सूचित कर दिया। उसने कहा—"तुम्हारा धर्म है कि उन निर्दोषोंकी रक्षाके लिए अपना अपराध कबूल कर लो।" उन्होंने जाकर अपराध स्वीकार कर लिया और पाँचोंको फाँसी दी गयी। उनमेंसे दो कूकोंके नेता थे। एकका नाम झण्डासिंह था जिसकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।

युद्ध करनेका निश्चय—अंग्रेजोंके गुप्तचर

गुरु रामसिंहने अपनी राजधानी लुधियानाके समीप भैनीसाहबमें बनायी। वहाँ कूकोंका प्रतिवर्ष अधिवेशन होता था जिसमें सब बातें निर्णीत होती थीं। संवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०) में उनके वार्षिकोत्सवमें समस्त दिशाओंसे यह शब्द सुनाई दिया कि झण्डासिंहकी मृत्युका बदला लेना आवश्यक है। गुरुने बहुतेरा समझाया कि अभी समय नहीं आया, परन्तु जब उसने देखा कि लोग मेरे वशमें नहीं रहे तो उसने भी अपनी स्वीकृति दे दी। उसने सभी स्थानोंको आज्ञापत्र भेज दिये जिसमें सब एकत्र हो जायँ और युद्ध करनेके उपाय सोचने लगे। यह निश्चय हुआ कि पहिले लुधियाना जिलेके बुद्धिसिंहवाले छोटे दुर्गपर आक्रमण किया जाय। यहाँसे बन्दूकें और तलवारें लेकर रियासत मालेरकोटलापर चढ़ाई हो। मालेरकोटलाका नवाब बालक था। जब रियासतपर अधिकार हो जायगा तो इसमें खालसा एकत्र हो जायगा और दूसरी रियासतें भी इसके साथ मिल जायँगी। तब अंग्रेजोंसे युद्ध आरम्भ कर दिया जायगा। इस उत्सवमें अंग्रेजी सरकारके भेजे हुए गुप्तचर विद्यमान थे। उन्होंने तत्काल सब बातोंकी सूचना दे दी। जब दूसरे दिन कई सौ कूकोंने उस दुर्गपर आक्रमण किया तो गवर्नमेण्टने अपनी ओरसे प्रबन्ध करना आरम्भ किया। वहाँ उन्हें अधिक सफलता न हुई। कुछ लोग तो वहीं मारे गये और जो थोड़े-बहुत शस्त्र मिले उन्हें लेकर कोई सात सौ मनुष्य, जिनमें स्त्रियाँ भी थीं, मालेरकोटलाकी ओर चले।

यहाँ सरकारकी ओरसे सेना तैयार रखनेका समाचार पहुँच चुका था। उधर सरकारी सेनाएँ दिल्ली तथा जालन्धरसे चल पड़ीं। सिख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रियासतोंने इस विद्रोहका समाचार पाकर अपनी सेनाएँ अंग्रेजी सरकारकी सेवामें भेजीं। लुधियानाका डिप्टी कमिश्नर मिस्टर वैलर भी चल दिया।

इसके अतिरिक्त जहाँ-जहाँ कूका नेता विद्यमान थे वे पकड़कर देश-निर्वासित कर दिये गये। गुरु रामसिंह तथा जालिमसिंह मण्डाले भेजे गये। कई कालेपानी अथवा दूसरे स्थानोंकी जेलोंमें भेजे गये। सरकारके इस प्रबन्धका यह परिणाम हुआ कि भिन्न-भिन्न जिलोंमें जहाँ-जहाँ कूके तैयार थे वहाँ-वहाँ वे योंही बैठ रहे।

उधर मालेरकोटलामें युद्ध हुआ। छः-सात सौ मनुष्य सेनाका मुकाबला कहाँतक कर सकते थे? डिप्टी कमिश्नर पहुँचा। उसने उनको तोपसे उड़ा देनेकी आज्ञा दे दी, यद्यपि उसे ऐसा करनेका कोई अधिकार न था। साठसे अधिक मनुष्य तोपसे उड़ा दिये गये। गवर्नर-जेनरल भारतमन्त्रीको सर्वदा नये समाचारोंसे अवगत कर रहा था। उसने डिप्टी कमिश्नरको ऐसा करनेसे रोका, किन्तु आज्ञाप्राप्तिसे पूर्व ही यह कार्य हो चुका था। कूके आगे बढ़कर तोपके सामने उड़ते थे। एक अंग्रेजने, जिसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा था, कहा कि—"सारा यूरोप एक ईसापर गर्व करता है, मैंने आज कई ईसा बलिदान होते देखे हैं।"

इसके अनन्तर सरकारका ध्यान कूकोंकी ओर विशेष रूपसे आकृष्ट हुआ। उसने इस आन्दोलनका पूर्णतः दमन कर दिया। पुनरुत्थानके लिए खालसाका यह तीसरा प्रयत्न था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचम खण्ड (द्वितीय भाग)

अंग्रेजी शक्ति उन्नतिके शिखरपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिला प्रकरण

सिंहावलोकन

हम पहले ही लिख चुके हैं कि जिस समय पश्चिम-उत्तरसे मुगल सेनापतिने आकर दिल्लीमें अपने राज्यकी नीवँ डाली उसी समय यूरोपसे गोरी जातियोंने आकर देशमें व्यापार आरम्भ किया। इन जातियोंमें अंग्रेज भी थे।

राजनीतिक क्षेत्रमें अंग्रेजोंका अवतरण

पहले पहल इन्होंने अपने व्यापारके लिए कोठियाँ बनायीं। फिर कोठियोंकी रक्षाके लिए किले बनाने और सिपाही भरती करने पड़े। यहाँके राजा इतना भी न समझ सके कि ये व्यापारी इन कार्यों द्वारा राजनीतिक क्षेत्रमें कदम बढ़ा रहे हैं। हिन्दुस्तानमें राज्य-प्रबन्धका कोई दृढ़ सिलसिला विद्यमान न था। बड़े-बड़े नवाब बादशाहसे स्वतन्त्र हो चुके थे और छोटे-छोटे नवाब भी प्रायः स्वाधीन ही थे। इन सब छोटी और बड़ी रियासतोंमें परस्पर द्वेषाग्नि प्रज्वलित थी। एक भाई दूसरे भाईकी बढ़ती नहीं देख सकता था। स्वार्थ और ईर्ष्या यही दो इस देश-की बीमारीके मूल कारण चले आते हैं।

डूप्ले ही पहला विदेशी पुरुष था जिसने यह देखा कि मैं राज्यसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी-न-किसी व्यक्तिको अपने हाथमें लेकर अपनी राजनीतिक शक्ति स्थापित कर सकता हूँ। उसने देखा कि सतारा, मैसूर आदि रियासतोंमें राजा लोग केवल कठपुतलीका काम दे रहे हैं। उसने इस अवस्थासे लाभ उठानेका विचार किया।

अंग्रेजी राज्यका संस्थापक क्लाइव

क्लाइव इंग्लैण्डका एक आवारा लड़का था। वह न केवल युद्ध-विद्यामें विशारद निकला बल्कि उसने डूप्लेकी इस नीतिपर चलकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अंग्रेजोंकी शक्ति बंगाल और मद्रासमें स्थापित कर दी। भारतकी प्रजाके भीतरका राजनीतिक भाव तो सब प्रकार नष्ट हो ही चुका था, उसके नेता और राजा भी राजनीतिसे इतने अनभिज्ञ थे कि वे यह भी न समझ सकते थे कि जो आदमी हमें राजगद्दीपर बैठानेकी शक्ति रखते हैं वे हमें राजगद्दीसे उतार भी सकते हैं। इसी विषयपर एक अंग्रेज इतिहास-लेखक कहता है—"यदि हिन्दुस्तानकी प्रजा अंग्रेजी राज्यमें दुःखी है तो उसे इसके लिए मीर जाफर जैसे पुरुषोंको धन्यवाद देना चाहिये जिन्होंने केवल नवाब कहलानेके लिए अपने देशको दूसरोंके हाथ बेच डाला।" यही मीर जाफर अपमानित होने अर्थात् गद्दीसे उतारे जानेपर भी क्लाइवको अपना हार्दिक मित्र समझता था !

द्वैध शासनका परिणाम

बंगालमें नवाबके और अंग्रेजी राज्यके सम्मिलित शासनका परिणाम यह हुआ कि लोगोंके पास, जिनका देश दुनियामें सबसे धनवान् समझा जाता था, खानेके लिए कुछ भी नहीं रहा। जब एक वर्ष (सं० १८२६ वि० में) फसल न हुई तो अकालके चिह्न दिखाई देने लगे। कुल-ललनाएँ और भद्र पुरुष, जो कभी बाहर न निकले थे, भूखों मरने लगे। बंगालमें पहले पहल भयंकर दृश्य देख पड़ा। भूखसे व्याकुल व्यक्तियोंने अपने बच्चोंको बेचना और मृतकोंको खाना शुरू किया। इस भयंकर कार्यके बाद झुण्डके झुण्ड भूखे आदमी शहरोंमें आ इकट्ठे हुए जहाँ ऐसी कई प्रकारकी व्याधियाँ आ फैलीं जो अकालके साथ अवश्य आ जाती हैं। सप्ताह व्यतीत हो गये, मास व्यतीत हो गये, मुर्दोंको जलाने या गाड़नेवाला कोई न रहा। गीदड़ और मांसाहारी पक्षियोंके लिए प्रचुर भोजन-सामग्री प्रस्तुत हो गयी।

वारेन हेस्टिंग्ज, दूसरा संस्थापक

इस द्वैध शासनके बाद वारेन हेस्टिंग्ज बंगालका गवर्नर बनकर आया। हेस्टिंग्जका बचपन क्लाइवके सदृश ही विचित्र था। क्लाइवकी तरह हेस्टिंग्ज ब्रिटिश राज्यका दूसरा संस्थापक हुआ। हेस्टिंग्जके समयमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेज दूसरोंको कठ-पुतली बनाकर युद्ध नहीं करते थे, परन्तु अब वे अपने आपको राज्याधिकारी समझते थे और अपने लिए ही युद्ध करते थे। हेस्टिंग्जका समय समाप्त होनेपर यद्यपि हिन्दुस्तानमें अंग्रेजोंकी राज्य-शक्ति सबसे बड़ी नहीं थी, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तुरन्त ही वे सबसे बढ़कर शक्तिशाली हो गये।

हेस्टिंग्जका अत्याचार

हेस्टिंग्जको अपने युद्धोंके लिए धनकी आवश्यकता पड़ी। जितने दोष उसके सिर मढ़े गये वे सब इसी आवश्यकताके कारण पैदा हुए। इस अभिप्रायसे उसने अवधके नवाबके साथ एक गुप्त सन्धि की जिसके अनुसार रोहेलोंका देश छीन लेनेके लिए उसने सेनाकी सहायता दी। यह बड़ा भारी अत्याचार था, क्योंकि रोहेले अंग्रेजों और नवाबके मित्र थे और मराठोंके आक्रमण रोकनेमें उन्होंने बड़ी सहायता दी थी। इसी प्रकार धनकी आवश्यकताके कारण उसने बनारसके राजा चेतसिंहपर जो इनका बड़ा मित्र था, और अवधके नवाबकी माताओंपर भी धन और जेवर छीननेके लिए भयानक अत्याचार किया। उसकी ऐसी नीतिका भी समर्थन मेकालेने बड़े सुन्दर शब्दोंमें किया है! हेस्टिंग्जकी नीतिका उद्देश्य केवल धन प्राप्त करना था। उसकी आर्थिक अवस्था बुरी थी, इसलिए उसने बुरे या भले तरीकोंसे धन प्राप्त करनेका निश्चय कर लिया था। उसने अपने लिए यह नियम बना लिया कि जब रुपयेका अभाव हो तब उस पुरुषसे ले लेना चाहिये जिसके पास रुपया है।

संचालकोंका विचित्र आदेश

बोर्डके डाइरेक्टर (संचालक) उसे ऐसे कामोंको करनेके लिए न तो सम्मति देते थे और न मना ही करते थे। उनकी चिट्ठियोंमें राजनीति-पूर्ण आदेशका अद्भुत नमूना पाया जाता है। सब प्रकारके नैतिक उप-देश धनकी लालसामें दब जाते थे। "भली भाँति शासन करो और रुपया भेजो, साथकी रियासतोंसे न्याय और प्रेमका बर्ताव करो और रुपया भेजो, किसीपर सख्ती न करो और रुपया भेजो।" इन आदेशोंका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लार्ड विलियम बेण्टिकने वर्तमान शिक्षा-प्रणालीकी नींव रखकर अंग्रेजी राज्यको दृढ़ किया। बेण्टिक शुद्ध और सरल हृदयका पुरुष था। कहा जा सकता है कि वह हिन्दुस्तानी प्रजाको प्रेमकी दृष्टिसे देखता था। जिन-जिन बुराइयोंको उसने लोगोंमें देखा उन्हें दूर करनेका भरपूर यत्न किया।

लार्ड डलहौसी, चौथा संस्थापक

चौथा बड़ा राज्य-संस्थापक लार्ड डलहौसी था। वह अपने आपको सब प्रकारसे सन्धिपत्रोंके ऊपर समझता था। उसकी नीतिका एक ही उद्देश्य था—सारे हिन्दुस्तानको एक शासनके अधीन करना। जब कभी उसे अवसर मिला, उसने इस नीतिका प्रयोग किया। मित्रताको एक ओर रख दिया और राजाओंसे गोद लेनेका अधिकार भी छीन लिया। इस समय ब्रिटिश शक्ति अपने शिखरपर पहुँच चुकी थी। अब एक बड़ा भूकम्पसा आया जिसने उसे जड़से हिला दिया। लार्ड डलहौसीकी नीतिका पता उस नीतिसे लगता है जो सर राबर्ट ग्राण्टकों सतारा राज्य मिला लेनेके सम्बन्धमें बतायी गयी थी। जब बाजीराव पूनाकी गद्दीसे उतारा गया तो सताराकी राजधानी राजा प्रतापसिंह और उसके उत्तराधिकारियोंको, जो कि शिवाजीके वंशज थे, दी गयी। कुछ वर्ष उसका बम्बई सरकारसे रियासत-सम्बन्धी झगड़ा होता रहा। अनन्तः झगड़ा इतना बढ़ा कि वह एक रात कैद करके कहीं गुप्त स्थानमें भेज दिया गया। अब प्रश्न उस गद्दीकी मिलकियतके विषयमें था। गवर्नर-जेनरलने कहा—इस राज्यको रखना बड़ी भारी नैतिक भूल थी, क्योंकि यह ब्रिटिश राज्यके मध्यवर्ती था। इसे अंग्रेजी साम्राज्यमें मिला लेना चाहिये था। ऐसे उदाहरण हमारे समक्ष उपस्थित थे जब कि हमने कई राजाओंको सत्कारपूर्वक गद्दीपर बैठाया और पीछे उनको राज्यविहीन करके उनकी राजनीतिक सत्ता नष्ट कर डाली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

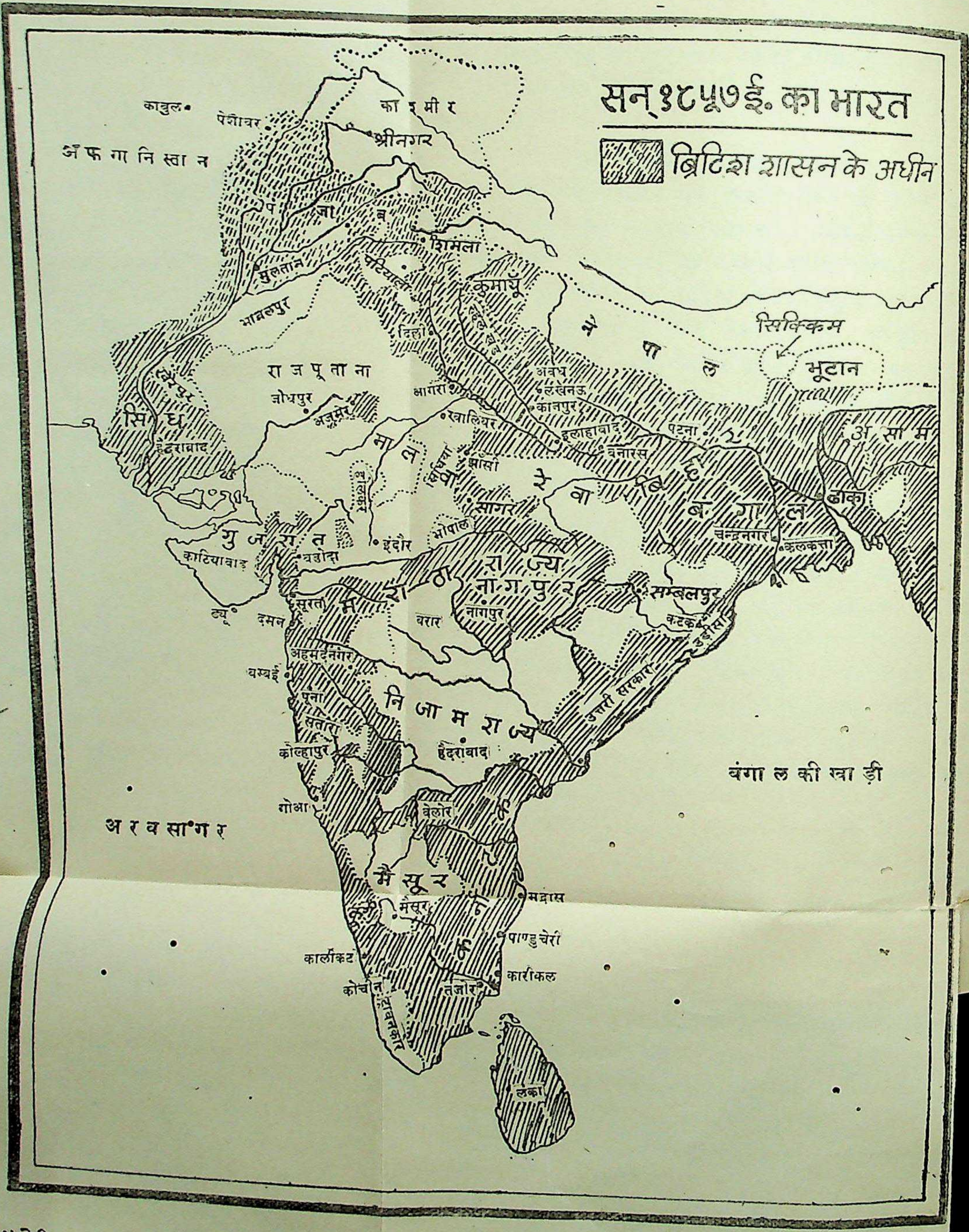

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा प्रकरण

संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) का सिपाही-विद्रोह

भयंकर अग्निका प्रज्वलन

भारतवर्षके इतिहासमें यह सबसे बड़ी अन्तिम घटना है। लार्ड डलहौसीके पंजाब अंग्रेजी राज्यमें मिला लेनेके उपरान्त भारतवर्षके और बड़े-बड़े भाग भी उसमें समाविष्ट किये गये। भारतवर्षसे लौटते समय उसके विचारमें सारा आर्यावर्त आंग्ल शासनके अधीन लानेका कार्य समाप्त हो चुका था, पर उसके जाते ही समस्त देशमें एक भयंकर अग्नि प्रज्वलित हो उठी जिसमें सहस्रों अंग्रेज तथा भारतीय भस्म हो गये।

यह राज्यक्रान्ति न थी

जिस तूफानके कारण सहस्रों प्राणी अपने सम्बन्धियोंसे वंचित किये गये हों उसके कारणों तथा परिणामोंका थोड़ासा अध्ययन करना जरूरी है। आंग्ल भाषामें इस घटनापर सैकड़ों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। सभी बातोंपर प्रकाश डालना असम्भव है। इसका संक्षिप्त वर्णन तथा तत्सम्बन्धी कतिपय सार्वजनिक विचार ही यहाँ प्रकट किये जा सकते हैं। सबसे पूर्व यह प्रश्न होता है कि इस घटनाका नाम क्या रखें। क्या यह राज्यक्रान्ति (रिवोल्यूशन) थी ? राज्यक्रान्तिका लक्षण यह है कि वह सर्वसाधारण लोगोंकी ओरसे होती है। इसके लिए दो बातोंका होना आवश्यक है—एक तो चिरकालपर्यन्त सामान्य विचारोंका प्रचार हो ; दूसरे, लोगोंको निष्ठुरताकी शिकायतें हों। दोनोंके मिल जानेसे राज्यविप्लवकी अग्नि प्रज्वलित होती है। इस अवसरपर स्वतन्त्रताके

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विचारोंका जरा भी प्रचार न हुआ था। अतः इसे राज्यक्रान्ति नहीं कह सकते।

यह सैन्यद्रोह भी न था

क्या यह सैन्यद्रोह था? इससे यह ध्वनि निकलती है मानों यह द्रोह सैनिकोंके विश्वासघातके कारण हुआ था, पर वास्तवमें विद्रोह सेनाकी ओरसे न था। इसके वास्तविक प्रवर्त्तक कुछ देशी राजा थे। सैनिकोंने विश्वास-भंग नहीं किया। जब उन्हें यह विश्वास दिलाया गया कि सरकार द्वारा हम धर्मपतित करके ईसाई बनाये जा रहे हैं तो उन्होंने अपने पुराने राजाओं एवं बादशाहोंके साथ मिलकर अपने धर्मकी रक्षा करना आवश्यक समझा। आर्यावर्तमें धार्मिक क्रूरता ही असह्य क्रूरता समझी जाती है। हरिवर्षके युद्ध अधिकतर व्यापारके करण हुए, किन्तु भारतकी बात न्यारी है। भारतवासी दूसरे सब प्रकारके दुःख सहन कर सकते हैं, किन्तु धर्मके विषयमें उन्हें अपने तन और धनकी सुधि नहीं रहती। इसलिए इसे सैन्यद्रोह कहना भी भ्रम है।

यह स्वतन्त्र होनेकी चेष्टा थी

वस्तुतः अपने आपको आंग्ल शासनसे स्वतन्त्र करनेकी यह बड़ी भारी चेष्टा थी जिसके नेता अत्याचार-पीड़ित राजा तथा नवाब थे। सैनिकोंने धार्मिक पतनके भयसे उनका साथ देना उचित समझा। इसलिए हम इसे एक बड़ा षड्यन्त्र (कान्स्पिरेसी) कह सकते हैं। इसमें कतिपय असहाय राजपुत्रोंने देशी सेनाकी सहायतासे आंग्ल राज्यको उलटना चाहा।

इस प्रकारके षड्यन्त्र व्यक्तियों तथा वंशोंके विरुद्ध ही सफल हो सकते हैं। एक पुरुष अथवा कुछ पुरुषोंको मार दिया और अपना कार्य सिद्ध हो गया, परन्तु जहाँ एक ओर एक जातिका बल हो और दूसरी ओर कुछ विशेष समूहोंका ही हो वहाँ उसका सफल होना कठिन है। भारतवासियोंका विचार था कि कुछ अंग्रेज अफसरोंको मार देनेसे उनके राज्यकी समाप्ति हो जायगी। वे अपने देशमें यही होते देखते चले आये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
थे, परन्तु अंग्रेजोंकी दशा सर्वथा भिन्न थी। कतिपय मनुष्योंके मारे जानेसे शासनप्रबन्धमें बड़ा परिवर्तन नहीं हो सकता था, क्योंकि छोटेसे छोटे अंग्रेज उनका स्थान लेकर उनका कर्तव्य उसी प्रकार पालन कर सकते थे।

एक बार संवत् १८४६ (सन् १७८९ ई०) में केवल कुछ राजाओं-ने अंग्रेजोंको निकालना चाहा, वे असफल हुए। अब उनके अत्यन्त निर्बल उत्तराधिकारियोंने देखा कि अंग्रेजोंका बल केवल देशी सेनापर निर्भर है, इसलिए उन्होंने सैनिकोंके साथ मिलकर अंग्रेजोंको निकालना चाहा। इसका परिणाम भी वही हुआ।

अंग्रेजोंको अपनी विजयपताका उत्तर भारतमें स्थापित किये अभी कुछ ही वर्ष हुए थे। वे अभी अपनी विजयके गर्वमें थे। उनके पद आगे बढ़ रहे थे। इसी समय पूर्वप्राप्त सफलताके अभिमानमें लार्ड डलहौसीने ऐसे-ऐसे काम किये जिनसे पराजित देशके मृतक लोगोंमें भी एक बार फिर उत्तेजनाकी तरंग उठी।

सतारा आदिमें अंग्रेजी राज्य—अवधकी स्थिति

सिन्ध, पंजाब और पेगूको जीतकर अंग्रेजी सरकारने अपने अधीन कर लिया। भारतवर्षके लोग इस प्रकारकी विजयोंके अभ्यस्त थे। वे जानते थे कि कोई राजा किसी आर्यजातिके साथ युद्ध कर अपने राज्यको खतरेमें डालता है और पराजित हो जानेपर उससे देश ले लेना अथवा उसे लौटा देना विजयीके कठोर तथा नम्र स्वभावपर निर्भर है; परन्तु उनकी समझमें यह बात न आ सकती थी कि जब एक राजा पराधीनता स्वीकार कर बिना किसी विरोधके राज्य कर रहा हो तो उसका राज्य क्योंकर जब्त कर लिया जा सकता है। उनके विचारमें इससे बढ़कर और कोई अन्याय और अत्याचार नहीं हो सकता था। लार्ड डलहौसीने जनताके इस विश्वासकी ओर कुछ ध्यान न दिया। या तो उसे इसके हानिकारक प्रभावोंका ज्ञान ही न था या उसने अपने बलके घमण्डमें इस विचारको पददलित करना चाहा। दैवयोगसे उसके शासनकालमें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसे बहुतसे अवसर आ गये। आर्योंमें दत्तक पुत्र लेनेका अधिकार ऐसा ही पवित्र है जैसा अपनी सन्तानके लिए दायभाग छोड़ जानेका। संवत् १९०५ (सन् १८४८ई०)में सताराका राजा निःसन्तान मर गया। उसने अपने कुलके एक व्यक्तिको गोद लिया था। यह कुल शिवाजीका कुल था। इसके तीन वर्ष पश्चात् नागपुरका राजा मर गया। उसने किसीको गोद नहीं लिया था। उसकी रानियोंकी इच्छा थी कि किसीको दत्तक पुत्र बनाकर अपने कुलका नाम स्थिर रखें। इसके एक वर्ष पूर्व झाँसीका राजा मर गया था। उसके भी कोई सन्तान न थी। तीनोंके सम्बन्धमें स्थानीय आंग्ल निवासी इस पक्षमें थे कि उनका दत्तक पुत्र बनानेका अधिकार स्वीकार किया जाय। लार्ड डलहौसीने एक न सुनी और उनकी रियासतोंको यह कहकर जब्त कर लिया कि सन्तान न होनेपर ये रियासतें बड़े सुरक्षित राज्यमें सम्मिलित की गयी हैं। अवधमें यह नीति चरम सीमातक पहुँच गयी। अवधका राज्य चिरकालसे अंग्रेजोंका विश्वासपात्र रहा था। हेस्टिंग्जके कालमें उसने अंग्रेजोंकी सहायता की थी। सबसे पूर्व अवधने लार्ड वेलेजलीका 'माण्डलिक सम्बन्ध' स्वीकार किया था। उसी समयसे अवधकी आभ्यन्तरिक अवस्था बिगड़ती गयी। नवाब वजीरका सेनासे कुछ सम्बन्ध न था। उसे कभी युद्धकी आवश्यकता भी न थी। उसकी रक्षाके लिए आंग्ल सेना बराबर विद्यमान थी। सब प्रकारकी चिन्तासे विमुक्त होकर भोग-विलासमें ही वह जीवन व्यतीत करना चाहता था। वाजिदअली शाह अन्तिम नवाब वजीर संवत् १९०३ (सन् १८४६ ई०) में सिंहासनपर बैठा। उससे पहिले जो नवाब थे उनको अंग्रेजी सरकारकी ओरसे कई बार कहा गया, पर वे अपनी बुरी आदतोंका परित्याग न करते थे। एक लेखकका कथन है कि वाजिदअली शाह सिंहासनपर बैठा तो उसे अपनी सेना अधिक बलवती करनेका विचार हुआ। वह प्रतिदिन प्रातःकाल सेनाकी कवायद देखने जाने लगा। उसने सब अफसरोंको आज्ञा दे दी कि जो विलम्ब करके आयेगा उसे जुर्माना देना होगा। एक-दो अवसरोंपर उसने स्वयं जुर्माना दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
परन्तु जब वहाँके आंग्ल निवासियोंने उसकी यह दशा देखी तो उसे बुलाकर समझाया कि जब सरकारी सेना रक्षाके लिए विद्यमान ही है तो तुम्हें इस सेनाकी क्या आवश्यकता है ? उन्होंने उसे सरकारका आज्ञापत्र दिखलाकर ऐसा करनेसे रोक दिया । इसके अनन्तर वाजिदअली विषयोपभोगमें पड़ गया । वह नाच-रंग और मद्यपानमें अपना समय बिताने लगा । नवाबकी यह दशा देखकर अफसर आदि देशको लूटकर खाने लगे। देशमें अशान्ति फैल गयी । वाजिदअली कई बार समझानेपर भी न सँभला । अन्ततः डलहौसीने वाजिदअलीको सिंहासनसे उतारकर अवधको अंग्रेजी राज्यमें सम्मिलित करनेका निश्चय कर लिया ।

पहिला रेसिडेण्ट कर्नल सुलेमानी इस बातका विरोधी था । उसके पदपर औटरेम नियत किया गया । जब औटरेमके पास अवधको सम्मिलित करनेके लिए गवर्नर-जेनरलकी आज्ञा पहुँची तो नवाबकी माताने एक और अवसर देनेके लिए प्रार्थना की । आज्ञा स्पष्ट थी । औटरेम नवाबसे मिला, उसने गवर्नर-जेनरलका आज्ञापत्र उसे देकर एक प्रतिज्ञापत्रपर, जिसमें उसे १२ लाख वार्षिक वृत्ति देनेकी शर्त लिखी थी, बिना टीका-टिप्पणीके हस्ताक्षर कर देनेको कहा । नवाबके कोपकी सीमा न रही । उसने यह कहकर प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर करनेसे साफ इनकार कर दिया कि प्रतिज्ञापत्र बराबरके लोगोंमें हुआ करता है । जब अंग्रेजी सरकारने मेरा मान तथा देश ले लिया है, तो मैं अपने लिए कुछ धन उससे न लूँगा । उसने अपनी पगड़ी उतारकर रेसिडेण्टके हाथोंपर रख दी और कहा कि इसका सब मान तथा पद समाप्त हो गया । यह शोचनीय घटना अवधभरमें फैल गयी ; पर रेसिडेण्ट बेचारा क्या कर सकता था ? लार्ड डलहौसीकी अन्तिम आज्ञा मानी गयी और घोषणा द्वारा अवध भी आंग्ल राज्यमें मिला लिया गया ।

उपाधियों और वृत्तियोंका अपहरण

जिस प्रकार ये राजा और नवाब अपने राज्यसे वंचित किये गये उसी प्रकार कई व्यक्ति उपाधियों तथा पेंशनोंसे भी वंचित कर दिये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गये। तंजौरके राजा और करनाटकके नवाब चिरकालसे नाममात्रके राजा और अंग्रेजी सरकारके वृत्तिभोगी चले आते थे। लार्ड डलहौसीने उनकी वृत्ति बन्द कर दी और उनकी उपाधियाँ भी छीन लीं। इसी प्रकारका व्यवहार गद्दीसे उतारे हुए पेशवाके साथ भी किया गया।

पेशवाकी वृत्तिका अन्त

अन्तिम पेशवा द्वितीय बाजीराव संवत् १८७४ (सन् १८१७ ई०) से बिठूरमें आठ लाख वार्षिक वृत्तिपर निर्वाह करता था। संवत् १९०७ (सन् १८५० ई०) में वह मर गया। उसने बहुतसा धन एकत्र कर लिया था। वसीयतनामा लिखकर उसने अपने दत्तक पुत्र धोंडोपन्त नाना साहबको अपना उत्तराधिकारी बनाया। धोंडोपन्तको तीन करोड़ पौण्ड दायभागमें मिले। यद्यपि आंग्ल कमिश्नरने बलपूर्वक सम्मति दी कि पेशवाकी वृत्ति स्थिर रहनी चाहिये, पर लार्ड डलहौसीने लेफ्टिनेण्ट-गवर्नरसे राय लेकर वृत्ति बन्द कर दी। इसपर नाना साहबने बड़ा लम्बा-चौड़ा आवेदनपत्र लण्डन भेजा। उसका अभिप्राय यह था कि पिताकी वृत्तिपर मेरा पूरा हक है, वह स्थिर रहनी चाहिये। अधिकारिवर्गने आवेदनपत्रपर ध्यान नहीं दिया। इधर दिल्लीके मुगल बादशाहके सम्बन्धमें एक और तजवीजपर विचार हो रहा था। वह तजवीज प्रायः प्रकट हो चुकी थी। दिल्लीके मुगलवंशको अभीतक भारतका अधिराज कहलानेका अधिकार प्राप्त था। अंग्रेज अफसरोंके मनमें यह शंका थी कि यह उपाधि अंग्रेजी सरकारके लिए भयानक है। किसी समय लोग ऐसे नेताके झण्डेके नीचे एकत्र होकर सरकारके विरुद्ध हो सकते हैं। यह विचार बल पकड़ रहा था कि आगेसे यह उपाधि सर्वथा उड़ा दी जाय और अंग्रेजी सरकार ही भारतवर्षकी सर्वोपरि शक्ति समझी जाय।

सेनाका आर्थिक असन्तोष

भारतीय सेना यद्यपि आंग्ल अधिकारियोंके नेतृत्वमें कवायद-दाँ बन गयी और सदा निष्ठा तथा भक्तिसे लड़ती रही, पर सैनिकोंके हृदयसे यह विचार कदापि दूर नहीं हुआ कि हम एक अन्य जातिके अफसरोंके अधीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लड़ रहे हैं। कई अवसरोंपर उन्होंने द्रोह किया। जब कभी उन्हें कोई शिकायत होती थी, तत्काल उन्हें यह ध्यान आ जाता था कि हमारे अंग्रेज अफसर इतने बड़े वेतन लेते हैं और हमें खानेके लिए भी कठिनतासे मिलता है।

जब देशी सेनाको अफगानिस्तान, सिन्ध और पंजाब जैसे दूरस्थ प्रान्तोंमें लड़नेके लिए जाना पड़ा तो स्वभावतः उन्हें आशा थी कि हमको भी कुछ लाभ होगा। जब उन्होंने देखा कि देश विजित कर मिला लिया गया, किन्तु हमारी दशा वैसीकी वैसी ही है तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। प्रायः सर्वत्र लोग यही करते थे कि पुराने बादशाह देश विजित कर उसका अधिकांश जागीरोंके रूपमें अपने सैनिकोंमें बाँट दिया करते थे। अंग्रेज तो उन्हें चप्पाभर भूमि भी नहीं देते। इस प्रकार सेनामें असन्तोष धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

किंवदन्तियोंका प्रभाव

एक ओर अवधके साथ अंग्रेजोंके कठोर व्यवहारकी बातें फैलायी जा रही थीं, दूसरी ओर नागपुर राज्यकी जब्तीका हृदयवेधी वर्णन किया जाता था। ऐसी अनेक अत्युक्तिपूर्ण कथाएँ पथिकों, फेरी देनेवालों, तमाशा करनेवालों और भीख माँगनेवालों द्वारा सर्वत्र पहुँच गयीं। इन्हींसे आंग्ल सरकारके विरुद्ध प्रजा-प्रकोपका बीज बोया गया। पंजाबकी विजयके उपरान्त अंग्रेजोंने सिखोंको सेनामें भरती करनेका विचार किया। अवधकी श्रेष्ठ जातिवालोंने समझा कि सेनामें नीच जातिवालोंको भरती करके हमारा मान घटाया जायगा। इसके अतिरिक्त जिस बातने सेनाको बहुत अधिक प्रभावित किया वह विशेषतः धर्मसम्बन्धी शिकायतें थीं।

आंग्ल भाषा तथा धर्मका प्रचार

उस समय अंग्रेजी पाठशालाओं द्वारा आंग्ल भाषा प्रचलित होने लगी थी। बहुतसी पाठशालाएँ ईसाइयोंकी थीं, इसलिए साथ-साथ ईसाई धर्मका भी प्रचार होने लगा था। बंगालकी सेनाके लोग उत्तम कुलोंके थे, इसलिए स्वभावसे ही वे अपने आपको आर्य धर्म और जातिका रक्षक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समझते थे। वर्तमान कालकी आंग्ल शिक्षा और सभ्यतामें पले नेताओंकी श्रेणीने अभी जन्म नहीं लिया था। सैनिकोंको संशय होने लगा कि हमने जिस जातिको अपना रक्षक तथा हितैषी समझा है वह तो धर्मको भ्रष्ट करने लगी है। उनकी आत्मा कहती थी कि विदेशी भाषा, विदेशी सभ्यता तथा विदेशी धर्मके फैल जानेसे हमारी भाषा, जाति और धर्म जीवित नहीं रह सकते।

धार्मिक विज्ञापनका वितरण

इसके लिए उनके पास कई स्पष्ट प्रमाण थे। कई सैनिक अफसर अपने सैनिकोंमें ईसाई धर्मका स्पष्ट रूपसे प्रचार करते थे। वे साफ कहते थे कि जब हमारा शरीर गवर्नमेण्टकी सेवाके लिए है तो हम अपनी आत्माकी भलाईके लिए ईसाई धर्म अवश्य फैलायेंगे। इतना ही नहीं, लार्ड डलहौसीके शासनकालमें प्रचारकोंकी ओरसे एक भाषण सर्वसाधारणमें बाँटा गया जिसमें लिखा था कि उचित यही है कि अंग्रेजी सरकारकी सारी प्रजा एक ही धर्मकी माननेवाली हो। उसमें यह भी दर्शाया गया था कि समस्त पाश्चात्य सभ्यता ईसाई धर्म फैलानेका साधन है और समग्र छोटे-मोटे मत शासकोंके धर्ममें समाविष्ट हो जायँगे।

पादरियोंकी सहायता

लोगोंमें यह प्रवाद फैल गया था कि लार्ड कैनिंग राजराजेश्वरी विक्टोरियासे किसी प्रकार भारतवासियोंको ईसाई बनानेका विशेष आदेश पाकर आया है। दैवयोगसे लार्ड कैनिंग आते ही कलकत्ताकी बाइबिल सोसायटीको, जिसका उद्देश्य बाइबिलको पूर्वदेशीय भाषाओंमें अनूदित करना था और जिसे लार्ड वेलेजलीने स्थापित किया था, तथा श्रीरामपुर और कलकत्ताके चर्च मिशनोंको चन्दे देना आरम्भ किया।

सेनामें यह अग्नि प्रचण्ड रूप धारण कर रही थी कि चर्बीवाले कारतूसोंकी बातका फैलना आरम्भ हुआ। पूर्व इसके कि इसका वर्णन किया जाय, एक और बात कह देना आवश्यक है। संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) में आंग्लजाति क्रीमियाके युद्धमें व्यस्त थी। आर्यावर्तमें

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh
चिरकालसे इस बातकी खबर थी कि अंग्रेजोंका रूसके साथ युद्ध होगा। अब भारतवर्षमें यह अफवाह फैलने लगी कि रूसने इंग्लैण्डको जीत लिया और राजमहिषी वहाँसे भाग आयी हैं। उन लोगोंके लिए यह शुभ अवसर था जो किसी विधिसे अपना बदला लेना चाहते थे।

जब अंग्रेजी सरकारने अपनी आंग्ल सेनाको क्रीमिया बुला भेजा तो यह कार्य अंग्रेजी सरकारकी निर्बलताका प्रमाण समझा गया। उसी समय अंग्रेज फारससे युद्ध करनेके लिए तैयार हुए। फारसके बादशाहने अंग्रेजों-को तंग करनेके लिए अपने दूत दिल्लीके बादशाहके पास भेजे। उसने कहला भेजा कि सभी मुसलमानोंको परस्पर एका करके अंग्रेजी शासकों-को एशियासे बाहर कर देना चाहिये। इस अभिप्रायका एक घोषणापत्र भी तैयार किया गया जिसमें मुगल-राज्यके पुनरुत्थानकी चर्चा की गयी थी।

यह जनप्रवाद सर्वत्र फैल गया कि अब अंग्रेजोंको प्लासीके युद्धके पश्चात् पूरे सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। एक सौ वर्ष ही इनका राज्यकाल था। इस प्रकारकी बातोंका सर्वसाधारणके हृदयपर विचित्र प्रभाव होता है।

इन सब बातोंको सिंहासनच्युत राजा तथा नवाब बड़े ध्यानसे देख रहे थे। अंग्रेजोंको इसका कुछ भी ज्ञान न था। उस समय 'गुप्तचर विभाग' इतना सुव्यवस्थित भी न था। आर्यों और मुसलमान सैनिकों-को केवल धर्मसम्बन्धी बातें प्रभावित कर सकती थीं। राजा और नवाब या तो आर्य थे या मुसलमान। सैनिक लोग उन्हीं धर्मोंके अनु-यायी थे। उन लोगोंने धर्मके नामपर अपील करके सेनाको सरकारके विरुद्ध करना चाहा। कोई एक वर्षतक पत्रव्यवहार होता रहा। नाना-साहब और नवाब वजीरके प्रतिनिधि परस्पर मिलते रहे। इस पत्रव्यव-हारमें सेनाके देशी अफसर शामिल थे। अन्ततः प्लासीकी तिथि सर्वत्र एक साथ उठनेके लिए निश्चित की गयी। इससे कुछ काल पहिले चर्बी-वाले कारतूसोंकी बात फैल चुकी थी। देशी पलटनोंके अन्दर पहलेसे ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक प्रकारकी बन्दूक प्रचलित थी। अब एक नये किस्मकी बन्दूक प्रचलित करनेकी तजवीज हुई। इस बन्दूकके लिए जो कारतूस बनाये गये उनमें पशुओंकी चर्बीका प्रयोग होता था। यह बात प्रायः चारों ओर फैल गयी कि यह गौ और सूअरकी चर्बी है। दमदममें, जो कलकत्तासे आठ मीलकी दूरीपर है, देशी सेना रहा करती थी। जनवरीमें एक दस्तेने किसी ब्राह्मण सैनिकसे उसके पात्रका जल माँगा। ब्राह्मणने कहा, मेरा पात्र अपवित्र हो जायगा। तब सिपाहियोंने उसे बताया कि अब सब कुछ एक हो रहा है। कारतूसोंमें गौ और सूअरकी चर्बी लगी है, सब आर्यों और मुसलमानोंको उन्हें दाँतसे काटना पड़ेगा। ब्राह्मण और भंगी सब एक हो जायँगे।

इस प्रकार अनेक कारण प्रस्तुत हो रहे थे; परन्तु इतना बड़ा आन्दोलन कदापि न होता यदि उसके पीछे किसी प्रकारका उत्तम संघटन न होता। भारत जैसे देशमें, जहाँ लोग बिना नेताके कुछ उत्साह ही नहीं दिखाते, यह आवश्यक था कि कोई उनका नेता बनकर इस कार्यका भार सिरपर उठाता। उस कालकी परिस्थितिका अध्ययन करनेसे विदित होता है कि दिल्लीके प्रासादोंमें राजपुत्रों तथा बेगमोंमें अंग्रेजोंके प्रति घृणा बढ़ रही थी। बहादुरशाहकी बेगम जमीनतमहल सदा अंग्रेजोंके विरुद्ध कोई-न-कोई उपाय सोचती ही रहती थी। इसका बड़ा कारण यह था कि अंग्रेजी सरकार स्वयं महाराजाधिराजकी उपाधि लेनेकी तजवीज कर रही थी। इस संघटनका वास्तविक निर्माता नानासाहब था। यह अन्तिम पेशवा द्वितीय बाजीरावका दत्तक पुत्र था। बाजीरावको आठ लाख वार्षिक वृत्ति मिलती थी। उसने बहुतसा धन एकत्र करके अंग्रेजी सरकारको अफगानिस्तान और पंजाबके युद्धोंमें बड़ी सहायता दी थी। उसकी मृत्युके उपरान्त सरकारने नानासाहबकी वृत्ति, यह कहकर कि तुम्हारे पास बहुत धन है, जब्त कर ली। सताराने दत्तकपुत्रकी स्वीकृतिके लिए रंगू बापूजीको और नानासाहबने अजीम अल्लाखाँ नामक एक योग्य व्यक्तिको अपीलके लिए इंग्लैण्ड भेजा। लाखों रुपये व्यय कर दोनोंको निराश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हो वापस आना पड़ा। अजीम अल्लाखाँ बड़ा नीतिज्ञ और योग्य पुरुष था। वह लौटते समय तुर्की, रूस आदि होता हुआ आया। उस समय अंग्रेजों और रूसमें युद्ध हो रहा था। अजीम अल्ला खाँके लौटनेपर नाना साहबकी सरगरमीका परिणाम यह हुआ कि अवधका वजीर अली नकी खाँ, नाना साहब और दिल्लीका शाह अंग्रेजोंके विरुद्ध षड्यन्त्रमें सम्मिलित हो गये। सैकड़ों साधु, पण्डित और मीर मौलवी भेष बदले जहाँ-तहाँ घूमकर व्याख्यान देने लगे। तमाशा करनेवाले भी अपने तमाशोंमें लोगोंको नये परिवर्तनसे अवगत कराने लगे। कारतूसोंकी बातके पश्चात् तो उनके सैकड़ों प्रतिनिधि सब सेनाओंमें फिर गये। वे उन्हें सब अवस्थाओंसे सूचित करते और देशी अफसरोंसे मिलकर गुप्त कमेटियाँ बनानेको कहते रहे। संवत् १९१४ का १७ ज्येष्ठ(सन् १८५७ ई० की ३१ वीं मई) सर्वत्र उठनेके लिए निश्चित किया गया। लोगोंके भाव दृढ़ करनेके लिए सब साधन प्रयोगमें लाये गये। ग्राममें एक स्थानसे दूसरे स्थान रोटियाँ बाँटी गयीं जिसका अर्थ लोगोंको गुप्त आन्दोलन जताना था। नाना साहबने यात्राके बहाने दिल्ली, लखनऊ आदि बड़े-बड़े नगरोंका स्वयं दौरा किया। सरकारी पुलिस और दूसरे नौकर भी कम्पनीके विरुद्ध मदद देनेको तैयार हो गये; बहुतसे जमींदार और धनाढ्य भी इसमें मिल गये।

इधर यह तूफान उठ रहा था, उधर आंग्ल सेनाके अफसरोंने उन्हीं कारतूसोंको जारी करनेकी भूल की। बारकपुरमें १९ और ३४ नम्बरकी दो पलटनें थीं। १९ नम्बरको कारतूसोंको काटनेकी आज्ञा हुई। पलटनने आज्ञाका पालन करना अस्वीकार किया। उसे हटा देनेका निर्णय हुआ।

जब यह आदेश सुनाया गया तो ३४ नम्बरमें भी हलचल मच गयी। नौकरी छोड़नेके लिए अभी दूसरे सोच ही रहे थे कि एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डेने तलवार हाथमें लेकर कहा—"उठो भाइयो, समय आ गया है।" यह कह उसने अकेले ही अपनी पलटनके तीन अंग्रेज अफसरोंका वध कर डाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरठमें अफसरोंने यह देखनेके लिए कि क्या सचमुच सिपाही कारतूसोंपर आक्षेप करते हैं, अपनी सेनापर भी परीक्षा करनी चाही। २३ वैशाख(६ मई)को रिसालाकी एक कम्पनीको कारतूसका प्रयोग करनेके लिए कहा गया। जब उसने भी कारतूसको छूनेसे इनकार किया तो अंग्रेजी तोपखानेकी विद्यमानतामें फौजी न्यायालयसे ८५ सिपाहियोंको आठसे दस वर्षतककी सजा दी गयी। उनके साथी रुक न सके। उनके लिए १७ ज्येष्ठ(३१ मई)तक ठहरना भी कठिन हो गया, विशेषकर जब मेरठ नगरमें स्त्रियाँ बहुत कटाक्ष करने लगीं कि साथी तो कारागृहमें भेजे गये हैं और तुम आनन्दपूर्वक नगरमें भ्रमण कर रहे हो। २७ वैशाख(१० मई)को रविवार था। उन्होंने कारागृहमें जाकर अपने साथियोंको विमुक्त कर दिया, बँगलों, दफ्तरों और होटलोंको जला डाला, रेलके तार काट दिये, बहुतसे अंग्रेज अफसर मार दिये; जो बचे वे इधर-उधर छिप गये। रात्रिको ही सिपाहियोंने दिल्ली पहुँचकर बादशाही झण्डा बुलन्द कर दिया। दिल्लीकी सेनाको सामने देखकर अंग्रेज अफसर विस्मित हुए। दोनों सेनाएँ मिल गयीं। उन्होंने पहिले अपने ही सेनापतिको गोलीसे मार डाला। जहाँ कहीं कोई अंग्रेज मिला, मारा गया। अब मेरठका तोपखाना भी पहुँच गया और बहादुरशाहको तोपोंकी सलामी देकर बादशाह प्रसिद्ध कर दिया। बादशाहने कहा कि मेरे पास तो कुछ नहीं है। सैनिकोंने उत्तर दिया—"हम धन-कोष लूटकर तुम्हारे पास ले आयेंगे।"

पंजाबमें जॉन लारेन्स

दिल्लीके लोगोंने गिरजे, बैंक और सरकारी यन्त्रालय नष्ट कर दिये। छावनीके अंग्रेज मारे गये। जो बचे, भेष बदलकर भाग गये। आंग्ल स्त्रियोंपर आक्रमण नहीं हुआ, यद्यपि इसके सम्बन्धमें भ्रान्त उक्तियाँ प्रसिद्ध होती रहीं। जब लार्ड कैनिंगको इस भयंकर घटनाकी सूचना मिली तो उसे इतना विस्मय हुआ कि वह इसका विश्वास ही नहीं करता था। उसने चीन जानेवाली सेनाको पीछे बुला लिया और प्रधान सेनापतिको

CC-0. Agamnigam Digital Rresevation Foundation, Chandigarh
अम्बाला कहला भेजा कि सेना लेकर दिल्ली पहुँचो। प्रधान सेनापतिके सामने बड़ी कठिनाइयाँ थीं। देशी सेना और प्रजामेंसे कोई आज्ञा मानने-के लिए तैयार न था। इस संकटके समय नाभा और जींदकी रियासतें अंग्रेजोंकी सहायताको पहुँच गयीं। उन्होंने मुगल बादशाहके भेजे हुए सरदारोंको कतल कर दिया, अपनी सेनाएँ और धन प्रधान सेनापतिकी सहायताके लिए भेजे। गरमी इतनी तीव्र थी कि प्रधान सेनापति मार्ग-में ही मर गया, किन्तु इसी समय मेरठसे अंग्रेजी तोपखाना आ गया। १७ ज्येष्ठ(३१ मई)को दिल्लीके लोगोंके साथ अंग्रेजी सेनाका युद्ध हुआ। दूसरे दिन आंग्ल सेनाके सहायतार्थ गोरखा पलटन आ पहुँची। २४ ज्येष्ठ(७ जून)को बन्दलकी सराय स्थानपर तुमुल युद्ध हुआ जिसमें सिपाही असाधारण वीरतासे लड़े। सहस्रोंने प्राण त्यागे। उनका नेता वृद्ध बादशाह था। न तो उसने कभी युद्ध देखा था और न उसमें पर्याप्त साहस ही था, इसलिए सैनिकदल दिल्ली लौट आया। दूसरे दिन पंजाबियोंकी सेना दिल्ली आ पहुँची। यहाँ यह लिख देना आव-श्यक है कि पंजाबमें जॉन लारेन्स और मौण्टगोमारी दो बड़े बुद्धिमान् अफसर विद्यमान थे। उन्होंने अपनी योग्यतासे न केवल पंजाबको कम्पनीके लिए सुरक्षित रखा, प्रत्युत सारे भारतवर्षमें उसका राज्य बचा लिया। मेरठका समाचार सुनते ही उन्होंने बड़ी चालाकीसे मियाँमीर और पंजाबकी समस्त पलटनोंसे शस्त्र ले लिये, लाहौर दुर्गसे देशी सिपा-हियोंको निकालकर अंग्रेजी सिपाही प्रविष्ट कर दिये। इसका परिणाम यह हुआ कि पंजाबकी पलटनें शान्त बैठी रहीं और लारेन्सने पंजाबी पलटनको दिल्ली भेज दिया। उस समय प्रायः समस्त भारतीय पलटनें सिपाहीदलमें सम्मिलित हो चुकी थीं। अतः केवल जालन्धर और फिरोजपुरकी पलटनें दिल्ली भेजी गयीं। पेशावरकी पलटनसे शस्त्र ले लिये गये। होतीमरदानके ५५ नम्बरके सैनिकोंने हथियार देनेसे इनकार किया। जब निकलसन आंग्ल सेना लेकर उनके पीछे गया तो वे लड़ते-मरते चले गये। बहुतेरे सीमाप्रदेशमें भाग गये, कितने ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कश्मीर रियासतमें प्राण-रक्षाके लिए गये, पर वहाँ राजाज्ञासे या तो कतल किये गये या बाहर निकलवा दिये गये। उनमेंसे एक सहस्रके लगभग तोपोंके मुँहपर उड़ाये गये। इस प्रकार पंजाबका कण्टक दूर हो जानेपर अंग्रेजी सेनाको दिल्ली भेजना सरल था।

पंजाबके इस तूफानको रोकना इस कारण भी सुगम था कि पंजाब अभी कुछ ही वर्ष पूर्व अपना बल अंग्रेजोंके साथ आजमा चुका था। इतने शीघ्र फिर पंजाबके लोग अंग्रेजोंके साथ युद्ध करनेका साहस न करते। यदि कुछ विशेष चुने हुए मनुष्य आंग्ल राज्यके विरोधी भी थे तो वे उस समय कूका आन्दोलनमें सम्मिलित हो गये थे, जो अभी गत दो वर्षसे आरम्भ हुआ था।

विद्रोहके तीन बड़े केन्द्र—बरेलीका विद्रोह

पंजाबके अतिरिक्त राजपूताना, बम्बई और मद्रासका भी इस आन्दोलनमें क्रियारूपमें कोई भाग न था। दिल्ली, कानपुर और लखनऊ इस विद्रोहके तीन बड़े केन्द्र थे। ज्येष्ठ मासमें मईके अन्त और जूनके आरम्भमें ये नगर एक दूसरेके पश्चात् उठते गये। एक ब्राह्मण सिपाही अलीगढ़ सेनामें सरकारके विरुद्ध व्याख्यान देता हुआ पकड़ा गया। उसे सारी रेजिमेण्टके सामने फाँसी दी गयी। इसका परिणाम प्रभाव और भयान होकर प्रतिकूल ही हुआ। सारा नगर अंग्रेजोंके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। इसके अनन्तर इटावा और नसीराबादमें भी यही वायु चली। रुहेलखण्डमें बरेली बड़ा भारी सैन्यावास (छावनी) था। सरदार खाँ बहादुर रुहेली मियाँ हाफिज रहमतकी सन्तानसे था। उसपर अंग्रेजी सरकारका बड़ा विश्वास था। जब उसे दिल्लीके बादशाहकी ओरसे सन्देशा पहुँचा तो उसके साथ सारा नगर उठ खड़ा हुआ। सब अंग्रेज नैनीतालकी ओर भाग गये। सूबेदार बख्तखाँ सेनापति बनाया गया और खाँ बहादुर बादशाहकी ओरसे रुहेलखण्डका सूबेदार स्वीकार किया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युक्तप्रान्तमें विद्रोह—नीलका दायित्व

बरेलीके पश्चात् शाहजहाँपुर, मुरादाबाद और बदायूँ सबने विद्रोही स्थानोंका अनुकरण किया। सिपाही, पुलिस और जनताने मिलकर रुहेल-खण्डको स्वतन्त्र कर लिया। बनारस और इलाहाबादमें भारतीय पल-टनोंके अतिरिक्त सिखोंकी रेजिमेण्टें भी विद्यमान थीं। १७ ज्येष्ठ (३१ मई)को बनारसकी बारिकोंमें आग लगा दी गयी। २० ज्येष्ठ (३ जून)को आजमगढ़में नक्कारा बजाकर सिपाही लोग उठ खड़े हुए। उन्होंने किसी अंग्रेजको कष्ट न दिया बल्कि गाड़ियोंमें बैठाकर उन्हें बनारस भेज दिया। उसी समय जेनरल नील कुछ आंग्ल सेना लेकर बनारस पहुँच गया। उसने सैनिकोंसे शस्त्र लेनेकी तजवीज की। सैनिक सामना करनेके लिए उद्यत हो गये। सिख सेना अंग्रेजोंके साथ हो गयी। अतएव बनारस भी पंजाबकी तरह दबा दिया गया। अंग्रेज सेना-पतिने सहस्रों भारतीय अबलाओं तथा मनुष्योंका वध किया और फाँसी दी। इलाहाबादमें लोगोंने उठकर जेल, रेल, तार और बैंक तोड़ दिये। लयाकतअली नामक एक व्यक्ति उनका नेता था। वह प्रतिदिन दिल्ली बादशाहके पास रिपोर्ट भेजा करता था। जेनरल नील २८ ज्येष्ठ (११जून)-को इलाहाबाद पहुँचा। दुर्ग अभी सिखोंके कारण सुरक्षित था। लयाकत अपने साथियोंको लेकर कानपुर चला गया। जेनरल नीलका रक्तपात तथा हत्याका कार्य बनारससे भी बढ़ गया, यद्यपि कानपुरमें भी अंग्रेज महि-लाओं और बच्चोंके वधकी घटना अत्यन्त शोचनीय है। इसका बहुत कुछ उत्तरदायित्व जेनरल नीलके ही सिरपर है।

कानपुर विद्रोहका केन्द्रस्थान था। आश्चर्यकी बात है कि नाना साहब तो अपने भाइयों और ताँतिया टोपी सहित आन्दोलनके उपाय सोचता था, पर अंग्रेज अफसर उसे अपना शुभचिन्तक ही समझ रहे थे।

कानपुरमें विद्रोह

जब कानपुरके सेनाध्यक्ष सर ह्यू वेलरको कानपुरमें प्रजाक्षोभका भय हुआ तो उसने नाना साहबसे रक्षाके लिए प्रार्थना की। नाना साहबने वहाँ

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने सैनिक कोषके चारों ओर एकत्र कर दिये, साथ ही उसने लखनऊ-से थोड़ी आंग्ल सेना मँगायी और दुर्गमें भोजनकी सामग्री एकत्र करा ली। नगरके लोग—आर्य, मुसलमान और सिपाही—बड़े-बड़े झुण्डोंमें एकत्र होते। उत्तेजनाका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि वेश्याएँ भी, जो नाचनेका काम करती थीं, सम्मिलित होकर सिपाहियोंको उत्ते-जित करती थीं। १० ज्येष्ठ(२४ मई)को ईदका दिन था। सर ह्यूके विचारमें प्रजाविक्षोभ अनिवार्य था, किन्तु यह दिन शान्तिसे व्यतीत हो गया। कानपुरमें २२ ज्येष्ठ(५ जून)को सेनाने विद्रोह कर दिया। तीन सहस्र सैनिक उठे और नाना साहबके कैम्पमें जा पहुँचे।

नाना साहबका नेतृत्व

सिपाहियोंने नाना साहबको अपना बादशाह अंगीकार कर लिया। सूबेदार निकासिंह सेनाका जेनरल नियत किया गया। अब नाना साहबने सर ह्यूको लिख भेजा कि दूसरे दिन तुमपर आक्रमण होगा। दुर्गपर आक्रमण हुआ। अंग्रेजोंने जहाँतक हो सका सामना किया, परन्तु कहाँ आरामसे रहना, कहाँ इतनी कठोर गरमी और तोपके गोलोंका प्रतिक्षण भय!

इधर लोगोंका उत्ताप बढ़ गया। ग्रामके लोग भी नाना साहबके झण्डेके नीचे एकत्र होने लगे। स्त्रियाँ अपने हाथोंसे सिपाहियोंको जल तथा दूध पहुँचाती थीं। जब सिपाही थक जाते थे तो हट जाते थे। ऐसा कई दिन होता रहा। नाना साहबने लोगोंकी सम्मतिके अनु-सार नगरके प्रबन्धके लिए अध्यक्ष और न्यायाधीश नियत कर दिये। ११ अषाढ़(२५ जून)को सर्वथा निराश होकर सर ह्यूने सन्धिसूचक झण्डा दिखलाया। अन्तमें निश्चय हुआ कि अंग्रेज दुर्ग और सारी सामग्री नाना साहबके अधिकारमें दे दें और सब अंग्रेज इलाहाबाद पहुँचा दिये जायँ। १३ आषाढ़(२७ जून)को अंग्रेज नावोंमें सवार होकर इलाहाबाद जानेवाले थे। घाटपर लाखों पुरुष एकत्र थे। नाना साहबकी सेना भी वहाँ विद्यमान थी। इस जनसमूहमें बनारस और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इलाहाबादके जिलोंसे नाना साहबका नाम सुनकर आये हुए सैकड़ों पुरुष भी थे। ये वे लोग थे जिनके सम्बन्धियों, बालकों या स्त्रियोंको सेनापति नीलकी आज्ञासे फाँसी दी गयी थी।

जनसमूहकी उत्तेजना

अंग्रेजोंको ले जानेके लिए विशेष नौकाएँ तैयार की गयी थीं। उनमें भोजन आदिकी सामग्री भी रखी गयी थी। अंग्रेज स्त्रियाँ और बच्चे पालकियोंमें बिठाकर वहाँ लाये गये। जब वे नावोंमें बैठे तो सहसा जनसमूहकी ओरसे 'मारो फिरंगीको' शब्दोंके साथ गोलियोंकी वर्षा होने लगी। कितने ही अंग्रेज मारे गये, कितने ही नदीमें कूद पड़े और डूब-कर मर गये। नाना साहब अपने भवनमें था। जब उसे यह समाचार मिला तो उसने तत्काल अश्वारोहीको भेजा कि अबलाओं तथा बच्चोंको कोई क्षति न पहुँचे। इस आज्ञाके पहुँचनेपर १२५ अबलाएँ और बच्चे जलमेंसे बचा लिये गये और वे एक प्रकारकी नजरबन्दीमें रखे गये।

झाँसीकी रानी लक्ष्मीबाई

इसी प्रकार २१ ज्येष्ठ(४ जून)को लोग झाँसीमें उठे। लक्ष्मी-बाईको रानी अंगीकार कर लिया और दुर्गपर अधिकार करके सौसे अधिक अंग्रेजोंको कैद कर यह निर्णय सुनाया गया कि इनका झाँसीमें कोई अधिकार न था, इसलिए सबका सिर शरीरसे पृथक् किया जाय। नवाब अवधको सिंहासनसे उतारनेके कारण लखनऊके लोग बहुत असन्तुष्ट थे। सर हेनरी लारेन्स, जो अवधका चीफ आफिसर बनाया गया था, बड़ा सज्जन था। उसने लोगोंको प्रसन्न करनेका हर तरहसे यत्न किया, पर उनमें असन्तोष बढ़ता ही गया। मौलवी अहमद शाह नामक एक बड़े नेताको पकड़कर फाँसीकी आज्ञा दी गयी। दिल्लीके समाचार आनेके पश्चात् सर हेनरी लारेन्सने आत्मरक्षार्थ सब अंग्रेजोंको कवायद सिखा-कर तैयार किया। उसने एक कमीशन नेपाल भेजकर जंगबहादुरसे सेनाकी सहायताके लिए प्रार्थना की।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अवधमें सैन्य-द्रोह

प्रतिदिन उसे यही समाचार मिलता था कि आज सिपाही लोग उठ खड़े होंगे। १६ ज्येष्ठ(३० मई)को एक आदमी यह खबर लाया कि आज सैन्यद्रोह होगा। लरेन्सने उत्तर दिया—"तुम्हारे मित्र समयके बड़े पाबन्द हैं।" यह कह ही रहा था कि तोपोंका शब्द सुनाई दिया। १७ ज्येष्ठ(३१ मई)को हेनरी लरेन्स कुछ सेना साथ लेकर युद्धके लिए गया, परन्तु यह सेना भी मार्गमें विद्रोही हो गयी और सर हेनरी-को लौटना पड़ा। तत्पश्चात् सीतापुर, फर्रुखाबाद, बहराइच और फैजा-बादमें लोग उठ खड़े हुए। अंग्रेजोंने राजा मानसिंहके दुर्गमें शरण ली। वन्दीगृह तोड़कर मौलवी अहमदशाह स्वतन्त्र कर दिया गया। सैनिकोंने अपनी एक कौंसिल चुन ली। उसने निर्णय किया कि अंग्रेज अफसरोंको उनके असबाब सहित जाने देना चाहिये। २६ ज्येष्ठ(९ जून)को फैजाबादमें पुनः वाजिदअलीका राज्य हो गया। इस तूफानमें अनेक अंग्रेज अपनी जान बचानेके लिए जहाँ-तहाँ भागते फिरते थे। ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं जहाँ कि अवधके भूमिहारोंने आतिथ्यके नियमोंसे उन्हें आश्रय दिया और सुरक्षित अंग्रेजी कैम्पमें पहुँचा दिया। देशी रियासतोंमें ग्वालियर, इन्दोर और भरतपुरके राजा विश्वासपात्र बने रहे, पर यहाँकी सेनाएँ और लोग उठ खड़े हुए। भरतपुर और बतौलीकी विश्वस्त सेनाएँ आगराका झगड़ा मिटानेके लिए भेजी गयीं, पर उन्होंने युद्ध करना अस्वीकार किया। आगराके कोतवालने अपनी पुलिसको साथ कर आगराको स्वतन्त्र कर लिया। देशी राजा इस भयसे सम्मिलित न हुए कि असफल होनेपर हमसे सब कुछ छीन लिया जायगा। इस आन्दो-लनके नेता वे ही थे जिनका कुछ छिन चुका था। यदि वे सम्मिलित न होते तो यह इतना विस्तृत रूप धारण न करता। यदि नेपाल और पंजाबकी रियासतें अंग्रेजी सरकारकी सहायता न करतीं तो इस विद्रोहको दबाना असम्भव हो जाता। सारे अन्दोलनकी सफलता या असफलताका उत्तरदायित्व दोनों प्रकारसे रियासतोंके सिरपर है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण

विद्रोह-दमन

दिल्लीपर अधिकार करनेकी चेष्टा--विद्रोहियोंमें योग्य नेताका अभाव

सैनिक लोग भिन्न-भिन्न स्थानोंसे आ-आकर दिल्लीमें एकत्र हो रहे थे। मार्गमें जो अंग्रेजी कोष उन्हें मिलता उसे लूटकर बादशाहकी सेवामें उपस्थित कर देते थे। आंग्ल सेना दिल्ली नगरके बाहर पड़ी थी। अफसर प्रतिदिन इस विषयपर राय करते थे कि किस प्रकार दिल्लीपर अधिकार किया जाय। इधर-उधरसे सिपाही निकलकर सहसा आंग्ल सेनापर आक्रमण करते और थोड़ी-बहुत मुठभेड़के पश्चात् पीछे हट जाते। कई दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये। ६ आषाढ़ (२० जून) को तुमुल युद्ध हुआ। ९ आषाढ़(२३ जून)को प्लासीका युद्ध हुआ था। उस दिन दोनों ओरसे बड़ी वीरतासे एक दूसरेपर आक्रमण हुए, पर कुछ निर्णय न हुआ। अब आंग्ल सेनाकी सहायताके लिए सेनापति चेम्बरलेनके अधीन पंजाबी सेना आ पहुँची। उधर रुहेलखण्डकी सेना बख्त खाँकी अध्यक्षतामें बादशाहकी सहायतामें पहुँच गयी। बख्त खाँके साथ पलटन, रिसाला, तोपखाना और पर्याप्त कोष था। बादशाहने सर्वसम्मतिसे बख्त खाँको सेनाध्यक्ष बनाया। १९ आषाढ़(३ जुलाई)को बख्त खाँने अंग्रेजी सेनापर आक्रमण किया। २१ आषाढ़(५ जुलाई)-को अंग्रेजोंका प्रधान सेनापति बर्नार्ड परलोक सिधारा। २५ और ३० आषाढ़(९ और १४ जुलाई)को बख्त खाँने पुनः आक्रमण किया। आंग्ल सेनाने बड़ी वीरतासे उसका सामना किया। ३० आषाढ़(१४ जुलाई)को चेम्बरलेन गोलीसे मारा गया। प्रधान सेनापतिने त्यागपत्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया और उसके स्थानपर विलसन नियत हुआ। कई बार घेरा उठानेका विचार किया गया, पर ऐसा करना बहुत हानिकारक था। यद्यपि सब तार और रेलकी लाइनें तोड़ दी गयी थीं, तथापि सर जॉन लारेन्सने दो सहस्र और सिपाही निकलसनके अधीन दिल्ली भेजे। आंग्ल सेनाका हृदय इससे दुगुना हो गया। अंग्रेजोंके अन्दर निकलसन जैसे नेताओंकी न्यूनता न थी। इधर उन ५० सहस्र सिपाहियोंको उनका हित करनेवाला एक मनुष्य भी न मिलता था। बादशाह वृद्ध था, वह स्वयं कुछ न कर सकता था। उसने बख्त खाँको जेनरल बनाया, तदनन्तर एक कमेटी बनायी। जब कुछ न हो सका तो उसने अपने हाथसे जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर इत्यादिके राजाओंके नाम इस आशयके पत्र लिखे कि यदि आप लोगोंमेंसे कोई पहुँचकर इस समय नेता बने तो मैं अपना सम्पूर्ण बल उसे समर्पित करनेको तैयार हूँ और मैं स्वयं पीछे हट जाऊँगा; परन्तु उनमेंसे किसीने उत्तरतक न दिया।

ज्यों-ज्यों काल व्यतीत होता गया सिपाही एक दूसरेपर दोषारोपण करने लगे। उन्होंने नगरके धनाढ्य पुरुषोंको लूटना भी प्रारम्भ कर दिया। नीमचकी सेना बख्त खाँकी आज्ञा न मानकर एक ग्राममें चली गयी। इसपर ९ भाद्रपद(२५ अगस्त)को निकलसन सेना लेकर उसपर जा पड़ा। देशी सैनिक बड़ी वीरतासे लड़े, पर सब कटकर मर गये। इस विजयसे आंग्ल सेनाका दिल और बढ़ गया, इधर देशी सिपाहियोंमें अशान्ति फैल गयी। अब आंग्ल सेनाने चार भागोंमें दिल्लीपर आक्रमण करनेका उपाय किया।

दिल्लीपर आक्रमण--बादशाहका आत्मसमर्पण

२९ भाद्रपद(१४ सितम्बर)को यह धावा हुआ। सिपाही लोग बड़ी वीरतासे लड़े। कितने अंग्रेज अफसर मारे गये। केवल एक-चौथाई दिल्ली उनके अधिकारमें आयी। निकलसन जख्मी होकर अस्पतालमें पड़ा था। प्रधान सेनापति इतना भयभीत हुआ कि उसने घेरा उठा लेना चाहा। जब निकलसनको यह बात ज्ञात हुई तो उस वीर सिपाही-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ने कहा—"खबरदार, पीछे न हटना। मेरे भीतर अभी शक्ति है कि मैं विलसनको जाकर गोली मार दूँ।" ऐसे समयमें अफसरोंकी कौंसिल हुई। अन्ततः यही निश्चय हुआ कि दिल्लीपर अवश्य अधिकार करना चाहिये। दूसरी ओर सिपाहियोंमें दो दल हो गये। कुछ तो दिल्लीको छोड़ना चाहते थे और कुछ इसके विरुद्ध थे। उनमें बहुमतका भी नियम न था। ऐसी दशामें आधे सिपाही दिल्ली छोड़कर चले गये, शेष सिपाहियोंने ३० भाद्रपदसे ८ आश्विन(१५ से २४ सितम्बर)तक भीषण प्रतिरोध किया। तबतक केवल तीन-चौथाई नगर अंग्रेजोंके हाथ आया। बख्त खाँने बादशाहसे प्रार्थना की कि यद्यपि नगर हाथसे जा रहा है, फिर भी हम बाहर निकलकर शत्रुका सामना कर सकते हैं, आप साथ चलें। वृद्ध बादशाह घबरा गया। उसने यह उपदेश स्वीकार न किया, प्रत्युत इलाहीबख्श नामक एक व्यक्तिका कहना मानकर उसने अपने आपको आंग्ल सेनाके सुपुर्द कर दिया। यह इलाहीबख्श आंग्ल सेनासे मिला हुआ था। बादशाहको केवल प्राणरक्षाका वचन दिया गया। इलाहीबख्शने बादशाहके दो पुत्रों और एक पौत्रको पकड़वा दिया। हॉब-सनने तीनोंको गोलीसे उड़ा दिया। दिल्लीमें इतनी लूट-मार हुई कि नादिरशाहकी लूट भी उसके सामने मात हो गयी। दिल्लीके भाग्यमें सदासे यही लिखा चला आता है।

इलाहाबादका दुर्ग सिख सेनाकी सहायतासे अंग्रेजोंके हाथ आ गया। कुछ दिन पश्चात् लार्ड कैनिंग स्वयं कलकत्तासे इलाहाबाद आ गया। भाग्यवश फारसके साथ युद्ध समाप्त हो गया था। वहाँकी सेना अध्यक्ष हैवलाकके अधीन लौटकर इलाहाबाद आ पहुँची। अब यह सारी सेना कानपुरकी ओर चली। इससे पूर्व सारा फतहपुर अनेक निवासियों सहित जला दिया गया। नाना साहब यह समाचार सुनकर स्वयं प्रतिरोधके लिए तैयार हुआ। उस समय कुछ गुप्तचर भी पकड़े गये जो अंग्रेज स्त्रियोंकी ओरसे पत्र लेकर जा रहे थे। उनका वध कर दिया गया। साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि उन अंग्रेज स्त्रियोंका भी वध कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिया जाय। कानपुरकूप ही वह स्थान है जहाँ यह नृशंस कार्य किया गया।

कानपुरपर अंग्रेजोंका अधिकार

१ श्रावण(१७ जुलाई)को हैवलाक कानपुर पहुँचा। यद्यपि नाना साहबकी सेना बड़ी वीरता ओर निर्भयतासे लड़ी तथापि क्षेत्र अंग्रेजोंके हाथ रहा। कानपुरपर अंग्रेजोंका अधिकार हो गया। नाना साहब अपना कोष आदि लेकर भाग गया। कानपुरमें अगणित पुरुष फाँसीपर लटका दिये गये। जेनरल नील भी सेना लेकर कानपुर आ पहुँचा। हैवलाकने नीलको कानपुरमें छोड़कर स्वयं लखनऊकी ओर बढ़नेका विचार किया।

आंग्ल सफलताका रहस्य

लखनऊमें नवाब वाजिदअलीका पुत्र सिंहासनपर बैठाया गया। वह अभी बच्चा था, अतः उसकी माता उसकी संरक्षिका बनायी गयी। ऐसा प्रतीत होता है कि लखनऊमें उस समय कोई योग्य पुरुष न था जो सिपाहियोंको अपने वशमें रख सकता। फिर भी कुछ सिपाहियोंने रेसिडेन्सीपर आक्रमण कर दिया, पर कोई व्यवस्था न होनेके कारण उन्हें लौटना पड़ा। इसके उपरान्त सिपाहियोंने अनेक बार डाइनामाइटसे रेसिडेन्सीको उड़ानेका यत्न किया, किन्तु पूर्ण सफलता न हुई। सर हेनरी लारेन्स मारा गया। उसके स्थानपर मेजर बैंक नियत हुआ। इसके मर जानेपर इंग्लिशकी नियुक्ती हुई। आंग्ल सेना इतनी व्यवस्थित थी कि सेनापतिका मर जाना भी कोई बात न थी। उसकी सफलताका यही रहस्य था। आंग्ल सेनाको ठीक निराशाकी दशामें जेनरल हैवालकके आगमनकी सूचना मिली, पर हैवलाकको असफल होकर कानपुर लौटना पड़ा। मार्गमें एक ग्रामके लोग खड़े हुए और उन्होंने उसका मार्ग सर्वथा रोक दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि अवधके ठाकुर और भूमिहारोंने इसे अंग्रेजोंकी पराजय समझकर लखनऊ दरबारकी अधीनता स्वीकार कर ली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हैवलाक १ भाद्रपद(१७ अगस्त)को नाना साहबकी सेनासे युद्ध करनेके लिए गया। बड़ी कठिनतासे उसने उसे परास्त किया। उसने कलकत्ता लिख भेजा कि बिना और सहायताके मैं कुछ न कर सकूँगा।

लखनऊकी विजय

४ आश्विन(२० सितम्बर)को हैवलाकने सेना लेकर प्रस्थान किया और मार्गमें जहाँ कहीं किसी भूमिहारने सामना किया उसका वध करता हुआ, ग्रामोंको जलाता लखनऊके पास जा पहुँचा। आलमबागमें पुलपर तुमुल युद्ध हुआ। संग्राममें जेनरल नील मारा गया। सिपाहियोंने हैवलाककी सेनाको भी घेर लिया। अब सब ओरसे सेनाएँ लखनऊको चलीं। नया सेनाध्यक्ष कैम्पबेल भी कलकत्तासे लखनऊ पहुँच गया। चार दिन निरन्तर भयंकर रक्तपातके पश्चात् मैदान अंग्रेजोंके हाथ रहा। ठीक विजयके समय जेनरल हैवलाक ज्वरग्रस्त होकर मर गया।

ताँतिया टोपी

इतनी बड़ी विजयके पश्चात् भी लखनऊ नगरका लेना अभी शेष था। कानपुरमें एक और बड़ा भारी शत्रु उत्पन्न हो गया। वह नाना साहबका क्लर्क ताँतिया टोपी था। ताँतिया टोपीने कानपुरकी पराजयके उपरान्त युद्ध सम्बन्धी उपाय सोचनेमें इतनी योग्यता दिखायी कि नाना साहबने उसे सेनाध्यक्ष बना दिया। जब दूसरी बार कानपुरमें पराजय हुई तो ताँतिया टोपी ग्वालियर पहुँचा। उसने वहाँकी सेनाको अपने साथ कर लिया, फिर दूसरे सैनिकोंको एकत्र करके उसने कालपीके दुर्गपर अधिकार कर लिया। कानपुरमें आंग्ल सेनाका सेनापति वण्डाम था। ताँतियाने उसे परास्त कर कानपुरको कब्जेमें कर लिया। सेनाध्यक्ष कैम्पबेल कानपुर पहुँचा। दो दिन ताँतिया कैम्पबेलके सामने डटा रहा।

२० मार्गशीर्ष(६ दिसम्बर)को ताँतियाकी सेना पराजित हुई। इसके उपरान्त कैम्पबेलने अलीगढ़, इटावा, फर्रुखाबाद और अयोध्याको विजित किया। इसमें जंगबहादुरकी नेपाली सेनाने बड़ी वीरतासे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अंग्रेजी सरकार की सहायता की। सेनाके भिन्न-भिन्न भाग अब लखनऊ आ पहुचे।

मौलवी अहमदशाह

लखनऊ नगरके अन्दर एक ही नेता काम करनेवाला था और वह फैजाबादका मौलवी अहमदशाह था। जब २ माघ(१५ जनवरी)को सूचना मिली कि आंग्ल सेना कानपुरसे चल चुकी है तो उसने कौंसिल (सभा) की। भिन्न-भिन्न सम्मतियोंके कारण कुछ निर्णय न हुआ। उसने अकेले ही अपने आदमी लेकर युद्ध आरम्भ कर दिया। वह जख्मी हो गया और बड़ी चतुरता तथा वीरतासे उसके सिपाही उसे उठा लाये। थोड़े दिन पश्चात् स्वस्थ होकर वह पुनः क्षेत्रमें आया। वह कहता था, 'यत्न करना कर्तव्य है, परिस्थिति चाहे कैसी ही हो।' अन्ततः कैम्पबेल-की सेना लौट आयी। अहमदशाहने फिर रहे-सहे मनुष्योंको एकत्र कर नगरपर धावा कर दिया। आंग्ल सेनाने उनका सामना किया। जब उनमेंसे अनेक मारे गये तो मौलवीने भागकर अपने प्राण बचाये।

लखनऊमें भी दिल्लीके सदृश लूट-मार हुई। सहस्रों जन फाँसीपर चढ़े, बेगमोंका वध हुआ और मौलवी भागकर रुहेलखण्ड जा पहुँचा। उसके सैनिक अंग्रेजी सेनाकी तोपों और कवायदबन्दीके सामने न ठहर सके। इसलिए युद्ध आरम्भ न कर उसने 'गोरिला' युद्ध-प्रणाली शुरू की। यहाँ यह भी कह देना आवश्यक है कि एक छोटेसे रईस नरपति-सिंहने भी आंग्ल सेनाका सामना किया। युद्धमें जेनरल ह्यूब मारा गया। जब सफलता न हुई तो नरपतिसिंह अपने सिपाही लेकर भाग गया।

बरेलीमें प्रवेश

आंग्ल सेना शाहजहाँपुरको जा रही थी, क्योंकि मौलवी अहमदशाह और नाना साहब वहाँ विद्यमान थे ; परन्तु जब सेना समीप पहुँची तो दोनों नेता दुर्गका विध्वंस कर बरेली चले गये। बरेलीमें अभी खाँ बहादुर खाँ राज्य करता था। आंग्ल सेना बरेलीकी ओर बढ़ी। उसने जाकर नगरको घेर लिया। वहाँके मनुष्य गाजी बननेपर तैयार हो गये और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
प्रत्येकने तोपोंके सामने दौड़-दौड़कर प्राण दिये। एक गाजी मृतकके समान पड़ा था। सेनाध्यक्ष कैम्पबेल उसके पाससे गुजरा। उसने झपटकर कैम्पबेलपर आक्रमण किया, परन्तु एक सिख-सा था जिसने गाजीका सिर काट डाला। २४ वैशाख (७ मई)को खाँ बहादुर खाँ और सब नेता बरेली निकल गये। जब अंग्रेजोंकी सेना बरेलीमें प्रविष्ट हुई तो मौलवीने शाहजहाँपुरपर अधिकार कर लिया। वहाँ थोड़ी आंग्ल सेना पड़ी थी, उसने उसे व्याकुल कर दिया। शेष नेता भी वहाँ पहुँच गये और उन्होंने सब ओरसे सिपाहियोंकी सेना एकत्र कर ली। आंग्ल सेना युद्ध करनेके लिए भेजी गयी, मौलवी उसका सामना करता हुआ अवधमें जा निकला। उस समय उसने पूनके भूमिहार जगन्नाथसिंहसे सहायता माँगी। उसने मौलवीको बुला भेजा और धोखेसे उसका सिर काटकर आंग्ल सेनामें पहुँचा दिया। इसके बदले उसे पचास सहस्र रुपया पारितोषिक मिला। लखनऊके अधीन होनेपर एक प्रकारसे इस हलचलकी समाप्ति हो गयी, पर अंग्रेजी सरकारको एक वर्षसे अधिक ताँतिया टोपी आदि नेताओंको दबानेमें लगा।

बिहारकी हलचल--कुँवरसिंहका पराक्रम

बिहार भी इस हलचलसे शून्य न था। सिपाहियोंकी सेना दानापुरमें थी, पर बड़ा नगर पटना था। वहाँके लोगोंमें भी आन्दोलनकी चर्चा बढ़ गयी। कमिश्नर टेलरने बड़ी योग्यतासे पटनाको आरम्भमें ही दबा देना चाहा। पुलिसके एक जमादार वारस अलीको पकड़कर फाँसी दी गयी और कुछ भले आदमियोंको निमन्त्रणमें बुलाकर उनमेंसे तीन मौलवियोंको पकड़ लिया। इसका फल यह हुआ कि पीर अली नामक एक पुस्तक-विक्रेताने झण्डा खड़ा करके गिरजेको जला दिया। सिखोंकी सेना तत्काल वहाँ उपस्थित हो गयी और उसने सब कोलाहल शान्त कर दिया। पीर अलीको फाँसी दी गयी। दानापुरके लोगोंने जगदीशपुरके रईस कुँवरसिंहको अपना नेता बना लिया और आराको जा घेरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वहाँ दुर्गमें थोड़ीसी अंग्रेजी और सिख सेना थी। जब पानीका अभाव हो गया तो सिखोंने २४ घण्टेके भीतर नया कुआँ खोद लिया। १३ श्रावण(२९ जुलाई)को आंग्ल सेना दानापुर पहुँची। सिपाही उसपर टूट पड़े और उन्होंने सबको मार दिया। बीबीगंजमें तुमुल युद्ध हुआ। कुँवरसिंह परास्त होकर भाग गया, आंग्ल सेनाने जगदीशपुरका विध्वंस कर दिया। जब सेना लखनऊ जा रही थी तो कुँवरसिंह अपने सिपाही लेकर उसकी ओर चल पड़ा। उतरौलिया स्थानपर मिलमैन उसके विरुद्ध भेजा गया। कुँवरसिंह पीछे हट गया। आजमगढ़में उसे और आंग्ल सेना मिली। यहाँ कुँवरसिंहने १४ चैत्र(२८ मार्च)को उसे बुरी तरह पराजित किया और स्वयं बनारसकी ओर चल पड़ा। जब आंग्ल सेना सब ओरसे आजमगढ़ आ पहुँची तो कुँवरसिंहने लौटते हुए जगदीशपुरकी ओर प्रस्थान किया। अंग्रेजी सेना उसका पीछा कर रही थी। भागीरथी नदीसे उसके सिपाही पार हो रहे थे। उसी समय कुँवरसिंहकी कलाईपर एक गोली लगी। उसने अपनी तलवारसे वह हाथ काटकर गंगामें डाल दिया और स्वयं अपने साथियों सहित ९ वैशाख(२२ अप्रैल)को जगदीशपुरमें प्रविष्ट हुआ। अंग्रेजी सेना दूसरे दिन सामना करनेके लिए आ पहुँची। यद्यपि कुँवरसिंहके सिपाही थोड़े रह गये थे और वे थे भी थके-माँदे, फिर भी वे इस वीरतासे लड़े कि आंग्ल सेनाके पाँव उखड़ गये। कुँवरसिंहके सिपाहियोंने पीछा करके सबको काट डाला। सेनापति ग्राण्ट भी मारा गया। इस बड़ी विजयके पश्चात् कुँवरसिंह अपने पुराने सिंहासनपर सज-धजसे बैठा। हाथका जख्म बड़ा खराब तथा विषैला सिद्ध हुआ। १६ वैशाख(२९ अप्रैल)-को कुँवरसिंहने परलोक गमन किया।

सारे सैन्यविद्रोहमें एक भी ऐसा आदमी नहीं था जो वीरता और समरनीतिमें कुँवरसिंहके तुल्य कहा जा सके। कुँवरसिंहके मरनेपर उसका छोटा भाई अमरसिंह भी, बड़ी वीरतासे सामना करता रहा, पर अन्तमें निराश होकर कहीं चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसीपर अधिकार

जगदीशपुरके बाद झाँसीका क्रम आता है। यहाँ लक्ष्मीबाई रानी स्वीकृत हो चुकी थी। वह बड़ी योग्य और नीतिनिपुण स्त्री थी। उसने निश्चय कर लिया था कि जबतक मैं जीवित हूँ, झाँसी नहीं दूँगी। सर ह्यू रोज झाँसीकी ओर भेजा गया। उसके साथ आंग्ल सेनाके अतिरिक्त मद्रास, बम्बई, हैदराबाद और भोपालकी देशी सेना भी थी। यह सेना ६ चैत्र(२० मार्च)को झाँसीके निकट पहुँची। मार्गमें इसे बड़ा कष्ट हुआ, क्योंकि रानीकी आज्ञासे रसद आदिके सब पदार्थ नष्ट कर दिये गये थे। मार्गमें कहीं वृक्षका पत्तातक दिखाई नहीं देता था, परन्तु सिन्धिया और टीरीके राजाने मार्गकी सब सामग्री प्रस्तुत कर दी। सैनिक, निकटस्थ भूमिहार और ताल्लुकेदार झाँसीमें एकत्र होकर सामना करनेके लिए तैयार हो गये। आंग्ल सेनाने १० चैत्र(२४ मार्च)को दुर्गपर गोलाबारी आरम्भ की। रानी स्वयं इधर-उधर जाती और सैनिकोंका उत्साह बढ़ाती थी। अन्तमें १७ चैत्र(३१ मार्च)को आंग्ल सेना दुर्गमें प्रविष्ट हो गयी। नगरमें सर्वसाधारणका वध हुआ। सारा नगर उजड़ गया। इस दुःखके समयमें ताँतिया टोपी अपने सिपाही लिये झाँसी आ पहुँचा, पर उसके सिपाहियोंने बड़ी कायरता दिखायी। रानीने जब झाँसीकी यह दशा देखी तो उसके नेत्रोंसे अश्रु-धारा बह चली। अन्तमें रात्रिको सब सरदारोंकी सम्मतिसे चुने हुए सवार ले हाथीपर चढ़कर वह वहाँसे निकल कालपीकी ओर चली। आंग्ल सेनापतिने उसका पीछा किया। ज्यों ही वह रानीके सामने आया, रानीने तलवारसे वार किया, वह जख्मी होकर भूमिपर गिर पड़ा। अल्पयुद्धके पश्चात् रानी निकल गयी और रात्रिको कालपी जा पहुँची। उसका घोड़ा सौ मीलसे अधिक दौड़ता आया था। पहुँचते ही भूमिपर गिर पड़ा और मर गया। यहाँ रानी और ताँतिया टोपीने पुनः युद्ध-की तैयारी की। आंग्ल सेनाका एक भाग बुन्देलखण्डकी ओर भेजा गया था। उसने बाँदाके नवाबको हराया जो भागकर कालपी आ गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रानी लक्ष्मीबाईकी वीरता

ह्यू रोज सेना लेकर आया। उसने ताँतिया टोपीको पराजित किया। ताँतिया टोपी परस्पर मतभेदके कारण चला गया। यमुनाके तटपर झाँसीकी रानीने युद्धवस्त्र पहने आंग्ल सैनिकोंको परास्त किया। अगले दिन शेष सेनाको एकत्र कर ह्यू रोज फिर आ गया। इस बार उसने कालपीपर अधिकार कर लिया, परन्तु राव साहब, बाँदाका नवाब और रानी तथा उनके सब साथी वहाँसे निकल गये। ताँतिया ग्वालियरसे कुछ सेना एकत्र करके गोपालपुरमें इनसे आ मिला। अब सब ग्वालियरको चल पड़े। वहाँ सिन्धिया अपनी तोपें लेकर इनके विरुद्ध आया। रानी रिसाला लेकर उसपर टूट पड़ी और उसने उसकी सेनाको भगा दिया। सिन्धिया वहाँसे भागकर आगरा पहुँचा। ग्वालियरके सब लोग, सरदार और ठाकुर पेशवाकी ओर आ गये। इस प्रकार ताँतियाने सैन्य-विद्रोहका एक और बड़ा केन्द्र-स्थान बना लिया। उधरसे ह्यू रोज सिन्धियाको साथ लिये अपनी सेनाके साथ ग्वालियर आ पहुँचा। ताँतिया टोपी आगे बढ़ा। रानी अपने युद्धवस्त्र धारण कर सामना करनेके लिए तैयार हो गयी। उसकी सहायिका दो और सखियाँ मन्दिरा और काना थीं। इनके मुकाबलेपर जेनरल स्मिथ था। जब वह आक्रमण करता तब रानी बड़ी वीरतासे उसका उत्तर देती। इस प्रकार १७ जून(३ आषाढ़)को स्मिथको पीछे हटना पड़ा। १८ जून(४ आषाढ़)को फिर उसने आक्रमण किया। रानी भी तैयार थी, किन्तु उसके पीछे ह्यू रोजकी सेना आ रही थी। रानी अपने कुछ सवार लेकर आंग्ल सेनामेंसे निकल भागी। एक अंग्रेज सिपाहीने उसकी सखीको मार डाला। वह रानीके हाथसे मारा गया। रानी निकली जा रही थी, अंग्रेज सिपाही पीछा कर रहे थे। मार्गमें एक नाला पड़ा। घोड़ा नया था, वहीं अड़ गया। इतनेमें आंग्ल सैनिक आ पहुँचे। रानी-ने तलवारसे सामना किया, किन्तु पीछेसे एक तलवार उसके सिरपर लगी। रक्तसे भरी हुई वह नीचे गिर पड़ी। एक नौकर उसे उठाकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पासकी कुटियामें ले गया। वहां बाबा गंगादास द्वारा मुँहमें जल डाले जानेपर उसकी आत्माने इस नश्वर शरीरको छोड़ दिया। रानीका शरीर उसके कथनानुसार शीघ्र ही जला दिया गया। इस प्रकार यह वीर स्त्री २३ वर्षकी उम्रमें अपने जीवनमें एक चमत्कार दिखा गयी। कोल्हापुर, जबलपुर इत्यादिमें भी शोर हुआ, पर शीघ्र ही दबा दिया गया। निजामकी मैत्रीने हैदराबादको सर्वथा सुरक्षित रखा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा प्रकरण

कम्पनीके राज्यकी समाप्ति

महारानी विक्टोरियाकी घोषणा

इसके पश्चात् १ नवम्बर, १८५८ ई० (संवत् १९१५ के १५कार्त्तिक)-को कम्पनी सरकारकी समाप्ति कर राजेश्वरी विक्टोरियाने भारतका राज्य अपने हाथमें लिया। एक बड़ा घोषणापत्र प्रकाशित कर सारे देशमें बाँटा गया जिसमें उन सबको क्षमा दी गयी जो सरकारके विरुद्ध लड़े थे। प्रतिज्ञाएँ की गयीं कि भविष्यमें किसी राजाकी रियासत जब्त नहीं की जायगी, किसीके धर्ममें हस्तक्षेप नहीं किया जायगा, सबको धर्ममें पूर्ण स्वतन्त्रता होगी, बिना किसी पक्षपातके पद दिये जायँगे, इत्यादि।

विरोधियोंका नेपाल-गमन

इधर दिनपर दिन विद्रोहका दमन होते देख नाना साहब, अवधकी बेगम आदि नेपाल पहुँचे। उनके साथ पचास-साठ सहस्र सैनिक भी थे। उन्हें आशा थी कि नेपालका आर्य राजा हमारी सहायता करेगा, पर जंगबहादुरने उन्हें आश्रय देनेसे इनकार कर दिया। नाना साहबने बड़ा कठोर पत्र लिखा और कहा कि यदि नेपालका राजा हमारे साथ हो तो जो कुछ हम जीतेंगे वह नेपालका राज्य होगा। साथ ही यह भी लिखा कि हम लौटनेकी अपेक्षा आर्योंके हाथोंसे मर जाना उत्तम समझते हैं। इसपर जंगबहादुरने आंग्ल सेनाको अपनी रियासतमें आकर उनको नष्ट करनेकी आज्ञा दे दी। बहुतसे जंगलोंमें भाग गये और वहाँ भूखों मर गये।

ताँतिया टोपीका अन्त

ताँतिया अभी लड़ता रहा। अन्तमें ८ अप्रैल, सन् १८५९ (२५ चैत्र, संवत् १९१५)को वह पकड़ा गया और उसे फाँसी दी गयी। इस प्रकार यह तूफान भारतमें आकर चला गया। इसकी असफलताका कारण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
यह है कि सात वर्ष पूर्व इन्हीं पूर्वीय सेनाओंने अंग्रेजोंके लिए पंजाबकी विजय की थी। अब बदला लेनेके लिए पंजाबियोंने भी उनके लिए विजय करा दी। इसके पश्चात् धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित हो गयी।

रियासतें सदाके लिए बच गयीं, पर साथही अंग्रेजी सरकारने सर्व-साधारणका शस्त्र रखना बन्द कर दिया। इसका एक बड़ा परिणाम यह हुआ कि आंग्लस्थान उस समय जापानकी विजय करनेके लिए जो तैयारी कर रहा था उसका उसने त्याग कर दिया। इस प्रकार जापान इस आक्रमणसे बच गया।

तूफानके पश्चात् स्वभावतः शान्ति हुई। सहस्रों दिलचले और उत्साही जन इस तूफानमें काम आये। सर्वसाधारणपर उलटा प्रभाव होना ही था। यह शान्ति अर्द्धशताब्दीतक निरन्तर बनी रही।

इस तूफानमें सहस्रों अंग्रेजोंके प्राण नष्ट हुए और कई अवसरोंपर आंग्ल राज्य खतरेमें पड़ गया। अंग्रेज जैसी बुद्धिमती जातिने इससे बड़ी शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा यह थी कि अंग्रेजोंके भारतमें रहनेसे जो भय था उसे दूर करनेकी सबसे उत्तम रीति यह समझी गयी कि एक ऐसी श्रेणी उत्पन्न की जाय जो अंग्रेजों और भारतीयोंमें पुलका काम दे सके। जातीय महासभाकी स्थापना करनेका यही कारण था।

लार्ड कैनिंगके उपरान्त लार्ड एल्गिन और फिर लार्ड लारेन्स वाइस-राय हुआ। यह सन् १८६९ ई०(संवत् १९२६)तक रहा। लार्ड नार्थ-ब्रूक सन् १८७६ ई०(संवत् १९३३)तक, लार्ड लिटन १८८० ई० (संवत् १९३७)तक और लार्ड रिपन सन् १८८४ ई०(संवत् १९४१) तक रहा। तत्पश्चात् लार्ड डफरिन, लार्ड लैन्सडौन, लार्ड एल्गिन, लार्ड कर्जन, लार्ड मिण्टो, लार्ड हार्डिंज और लार्ड चैम्सफोर्ड क्रमशः पाँच-पाँच वर्षके लिए वाइसराय रहे।

अफगानिस्थानसे युद्ध

लार्ड लिटन और रिपनके शासनकालमें अफगानिस्थानके साथ युद्ध हुआ। दोस्तमुहम्मदके मर जानेपर उसके पुत्रोंमें झगड़ा आरम्भ हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन् १८७८ ई०(संवत् १९३५)में शेरअली रूसके साथ मिल गया। उसने अंग्रेजोंके दूत अफगानिस्थानमें प्रविष्ट न होने दिये। इसपर आंग्ल सेनाने अफगानिस्थानमें प्रवेश किया। शेरअली तुर्कीस्थान भाग गया। वहाँ जाकर वह मर गया। उसके पुत्र याकूब खाँके साथ सन्धिपत्र लिखा गया। वह सिंहासनपर बैठाया गया और एक अंग्रेज अफसर काबुलमें नियत किया गया। कुछ मासके भीतर वह अफसर और उसके साथी मारे गये। इसलिए एक और युद्ध होना आवश्यक हुआ। याकूब खाँ कैद करके भारतवर्षमें लाया गया।

जो सेना भेजी गयी उसे अयूब खाँने हिरातसे सेना लाकर परास्त किया। जेनरल राबर्ट सेना लेकर वहाँ पहुँचा। उसने अयूब खाँकी सेनाको १ सितम्बर, सन् १८८० ई०(संवत् १९३७ के १६ भाद्रपद)को पराजय दी। दोस्तमुहम्मद खाँकी सन्तानोंमेंसे अब्दुलरहमानको काबुलका अमीर अंगीकार करके आंग्ल सेना लौट आयी। अब्दुलरहमान बड़ा नीतिज्ञ और बलिष्ठ अमीर हुआ है। उसके बाद उसका पुत्र अमीर हबीबुल्लाखाँ अफगानिस्थानका अमीर बना।

बर्माकी विजय

लार्ड डफरिनके समयकी प्रसिद्ध घटना बर्मा(ब्रह्म प्रदेश)की विजय है। बर्माका कुछ भाग सन् १८४६ ई०(संवत् १९०३)में लार्ड एमर्स्टके शासनकालमें सम्मिलित किया गया था। फिर सन् १८५२ ई०(संवत् १९०९)में एक और भाग पेगू अंग्रेजी राज्यमें मिला लिया गया। १८८५ ई०(संवत् १९४२)में स्वतन्त्र बर्मापर आक्रमण किया गया, माण्डलेपर अधिकार कर लिया गया और बर्माका राजा थीबा कैद कर रंगून भेज दिया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवाँ प्रकरण

ब्रिटिश साम्राज्य

ब्रिटिश साम्राज्यकी विशेषता

इससे पूर्व भी आर्यावर्तमें साम्राज्य स्थापित हुए थे। अशोकका साम्राज्य, सम्भव है, इससे अधिक विस्तीर्ण रहा हो। अकबरका तथा मुगलोंका राज्य भी बहुत विशाल तथा विस्तृत था, परन्तु ब्रिटिश राज्य न केवल विस्तारमें अधिक था, बल्कि विशेषतामें भी बढ़ा हुआ था। राज्य-की आन्तरिक सत्ता इसीसे प्रकट होती है कि इसने लोगोंके हृदयपर कितना गम्भीर प्रभाव उत्पन्न किया। प्रभाव अच्छा हो अथवा बुरा, इससे कुछ सम्बन्ध नहीं। जहाँतक अनुमानशक्ति काम कर सकती है, इससे पूर्व भारतवर्षमें ऐसा कोई राज्य न था जो इतना विस्तृत हो और साथ ही जिसने लोगोंके हृदयपर इतना गहरा प्रभाव भी उत्पन्न किया हो। कहा जा सकता है कि इसका कारण आधुनिक कालकी भिन्न-भिन्न शाखाओंकी उन्नति है। ठीक है, किन्तु फिर भी घटनाएँ हमारे सम्मुख हैं। जहाँ अशोकको अपने राज्यकी सीमा बतलानेके लिए बड़े-बड़े स्तम्भ खड़े करनेकी आवश्यकता पड़ी थी वहाँ आंग्ल राज्यकी संस्थाएँ, पाठ-शालाएँ, रेलवे, तार, डाक, औषधालय आदि लोगोंको इसका स्मरण प्रत्येक समय दिलाते रहते थे।

जातीय एकता

किसी देशका दूसरे देश द्वारा पराजित होकर उसके अधीन रहना उसके लाभके लिए नहीं होता। दासत्वमें निःसन्देह बहुत बड़े-बड़े-दोष हैं, परन्तु इसके साथ हमें यह भी मानना पड़ता है कि ब्रिटिश राज्यके समय अनेक लाभदायक प्रभाव भारतवर्षपर पड़े, चाहे वे स्पष्ट रीतिसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुए हों या अस्पष्ट रीतिसे। इनमें सबसे बड़ा प्रभाव जातीय एकता है। हमारे अन्दर इस जातीय एकताका विचार भारतवर्षके समस्त प्रान्तोंके एक शासकके अधीन होनेसे उत्पन्न हुआ। परमेश्वरके काम करनेका ढंग विचित्र होता है। जब कोई जाति इतनी छिन्न-भिन्न हो जाती है कि वह किसी उपायसे भी एक नहीं हो सकती तो उसके लिए इस अवस्था-से गुजरना आवश्यक होता है ताकि दासत्व द्वारा उसमें समानता आ जाय। जब भिन्न-भिन्न स्थानोंके कैदी एक ही कारागृहमें ठूँसे जाते हैं तब उनके दुःख तथा कष्ट सब एक हो जाते हैं। उनके अन्दर पारस्परिक सहानुभूतिका भाव बड़ा बलवान् हो जाता है। यही सहानुभूतिका सम्बन्ध जातीय एकता है। रेलोंका प्रचार होनेसे एक जगहसे दूसरी जगह जाना सुगम हो गया; परस्पर मिलकर हम एक दूसरेको भाई समझने लगे और समाचारपत्रों द्वारा एक स्थानके समाचार दूसरे स्थानको जानेसे हमारी सहानुभूतिका क्षेत्र दिन-प्रतिदिन विस्तृत होता गया। इतनेमें लार्ड डफरिनके कालमें 'नेशनल कांग्रेस' (जातीय महासभा) स्थापित की गयी। उसे स्थापित करनेका आशय कुछ भी हो, उसकी स्थापना करनेवाले चाहे जो हों, हमारा काम केवल यह देखना है कि इस राष्ट्रीय सभाने जातीयताको स्पष्ट रूप देकर सारे देशको उस राज-नीतिक एकताके सूत्रमें बाँध दिया जो इससे पूर्व इस देशमें नहीं पायी जाती थी।

बाह्य संसारसे सम्बन्ध

हमारे अन्दर जातीयता ही उत्पन्न नहीं हुई, बल्कि आंग्लराज्यके प्रभावसे हमारे नेत्र दूसरे संसारको देखनेके लिए भी खुल गये। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि लार्ड विलियम बेंटिंकके शासनकालमें जिस कमेटीने अंग्रेजी शिक्षा भारतवर्षमें प्रचलित करनेका निश्चय किया उसका विचार केवल यह था कि इस देशके पुरातन साहित्यसे लोगोंका ध्यान हटाकर उन्हें अंग्रेजी साहित्यकी ओर झुका दें। इससे उनकी जातीयताको निर्बल करके उन्हें अपने जातीय विचारोंके प्रभावमें लाना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
था, जिसका अर्थ दूसरे शब्दोंमें उन्हें देशधर्मसे पतित (डी-नेशनलाइज) करना था ; परन्तु ऐसे साधन सदा दोधारी तलवारका काम देते हैं। यह नहीं हो सकता कि जिन लोगोंको जातीयतासे गिरानेकी चेष्टा की जा रही थी उनपर अन्य विचारोंका प्रभाव सर्वथैव न हो। परिणाम यह हुआ कि उसी शिक्षा द्वारा लोगोंने उन विचारोंको जाना जो कि हरिवर्षीय जातियोंके अन्दर काम कर रहे थे।

आर्यावर्तकी उन्नतिके रुकने और उसकी अवनति होनेका एक बड़ा कारण यह था कि आर्यावर्त संसारसे असहयोग कर असहाय दशामें हो गया था। इससे भावी उन्नतिका मार्ग बन्द हो गया और भारतवर्ष अवनत होते-होते यहाँतक आ पहुँचा।

नया स्वदेशानुराग

जब दो पदार्थ परस्पर टकराते हैं तो एककी दूसरेपर क्रिया तथा प्रतिक्रिया होती है। जब इस्लामके साथ इस जातिने टक्कर खायी तो इसपर इस्लामकी क्रिया हुई और उसके मुकाबलेपर उसके अन्दरसे प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई। धार्मिक पुनरुत्थान उस रगड़का परिणाम था। लूट-मारके आधारपर राज्य स्थापित करना उसकी एक राजनीतिक प्रतिक्रिया थी जिसका उदाहरण हैदरअलीकी तथा जाट इत्यादि जातियोंकी रियासतोंमें पाया जाता है। आंग्ल राज्यके साथ टक्कर खानेसे भी दोनों प्रकारके परिणाम निकले। धार्मिक पुनरुत्थानका रूप ब्राह्मसमाज, आर्य-समाज, थियासोफी गोरक्षिणी सभा इत्यादिमें पाया जाता है ; परन्तु भारतवर्षपर सबसे अधिक प्रभाव आंग्लस्थानकी स्वदेशप्रीतिका हुआ। इंग्लैण्डका स्वदेशानुराग अद्वितीय चला आता है। इसी अनुरागके कारण भारतवर्षमें अंग्रेजी शासन स्थापित हुआ। जब कि मीरजाफर जैसे व्यक्ति स्वकीय लाभके अतिरिक्त और कुछ नहीं देख सकते थे, क्लाइव और उसके साथी सदा स्वदेशका ही लाभ अपनी आँखोंके सामने रखते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यक्तिगत राजनीतिक अधिकार

एक और नया विचार, जो अंग्रेजी राज्यके कारण इस देशमें उत्पन्न हुआ, व्यक्तिगत राजनीतिक अधिकार तथा समानताका है। इस पक्षमें यह जाति अत्यन्त पीछे पड़ी थी। यहाँके लोग राजनीतिसे बहुत घबराते थे। जिन चतुर मनुष्योंने इस निर्बलताको ताड़ लिया उन्होंने लुटेरोंके सदृश कुछ साथी एकत्र कर लूट-मार आरम्भ कर दी। लोग उनकी अधीनता स्वीकार करते गये। हैदरअली और मुजफ्फर खाँ जैसे व्यक्ति सुलतान बन गये। जिसके हाथमें बल आया वही स्वामी बन गया। लोगोंको कभी यह ध्यान न हुआ कि हमारा भी कुछ राजनीतिक अधिकार है। लार्ड रिपन प्रथम वाइसराय था जिसने बड़े-बड़े नगरोंको नगरस्वराज्य (म्युनिसिपल सेल्फ गवर्नमेण्ट) देकर राजनीतिक अधिकारोंकी नींव डाली। यह सत्य है कि क्रियारूपमें सब शक्ति अफसरोंके हाथमें ही थी, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसके द्वारा लोगोंका अधिकार स्वीकार किया गया। प्राचीन कालकी पंचायतें इन परिवर्तनोंमें नष्ट हो चुकी थीं। लार्ड मिण्टो तथा मार्लेने भारतवर्षमें कौंसिलोंको प्रचलित किया। इन कौंसिलोंके कुछ सदस्य नाममात्रके लिए जनताकी ओरसे थे। इन कौंसिलोंने कुछ बड़ी सेवा न की, किन्तु इन्हें अपना समझकर जनताकी ओर देखनेका लोगोंका स्वभाव हो गया। भारतमन्त्री मिस्टर मॉण्टेगूने शासनकी संशोधित व्यवस्था (रिफार्म्ड स्कीम) प्रचलित की जिससे कौंसिलोंको बड़ा बनाकर उनके सदस्य चुननेका लोगोंको स्पष्ट अधिकार दिया गया। यह सत्य है कि इन कौंसिलोंको भी राज्यप्रबन्ध ठीक करनेकी पर्याप्त शक्ति नहीं मिली, फिर भी इतना स्पष्ट है कि यह एक साँचा भावी शासनके लिए तैयार कर दिया गया। इसमें जीवन डालना लोगोंके जीवनपर निर्भर था। इसका सबसे बड़ा लाभ यही हुआ कि सर्वसाधारणको यह विदित हो गया कि अपने देशके शासनमें हमारा स्पष्ट हाथ होना चाहिये। राजनीतिक जागर्तिने जनान्दोलनको जन्म दिया और अन्ततोगत्वा देशको पराधीनतासे मुक्ति मिलना सम्भव हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी राज्यके दोष

इस राज्यके दोष भी बड़े-बड़े हैं। बलहीन भारतवासियोंका धन लूटना और भारतके शिल्प तथा वाणिज्यका मूल नष्ट करना इसका सबसे बड़ा भारी काम था। दिन-प्रतिदिन हमारा धन घट रहा था। हमारी स्थितिके सम्बन्धमें यह कथन सर्वथा सत्य प्रतीत होता था—"परशिल्प लिया निज अन्न दिया। परस्वर्णको ले दुर्भिक्ष लिया।" निर्धनता यहाँ-तक बढ़ गयी थी कि लाखों, नहीं-नहीं, करोड़ों मनुष्य भरपेट खानेको नहीं पाते थे। मिस्टर क्रुकका कथन है—"यहाँकी ग्रामीण स्त्रियोंमें किसीके शरीरपर भी कपड़े अथवा चादरका पाया जाना असाधारण बात है।"* लोगोंका शारीरिक बल भी घटता जा रहा था जिससे वे सुगमतया व्याधियोंमें ग्रस्त होते जाते थे। गत महायुद्धमें भी उतने मनुष्य हताहत नहीं हुए जितने यहाँ प्लेगकी भेंट हो चुके और होते जा रहे हैं। अंग्रेजोंके अधीन होनेसे हमारी शिल्पबुद्धिके प्रकाशका मार्ग रुक गया। कार्यकुशलता प्रकट करनेका मार्ग तंग हो गया या यों कहिये कि रहा ही नहीं। शक्ति काममें लानेका स्वाभाविक अवसर जाता रहा और दरिद्रता, रोग, शोक, कुचिन्ता आदिकी वृद्धि हुई जिससे हमारी बड़ी भारी मानसिक हानि हुई। विदेशी सभ्यता हमारा सर्वनाश कर रही थी। और अब भी कर रही है। पराधीनताके कारण भारतवासियोंकी देशके बाहर कोई प्रतिष्ठा नहीं रह गयी थी। वे पद-पदपर अपमानित होते और उनके साथ अत्यन्त घृणित व्यवहार होता। इन सब बातोंके लिए हमें एक ही बात स्मरण रखनी चाहिये कि विदेशी राज्य कोई दानशील सभा नहीं होती, लाभ उठानेपर उसका मूल्य देना ही पड़ता है और खूब देना पड़ता है।

---

* It is unusual to find a village woman who has any wraps at all.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठाँ प्रकरण

वर्तमान भारतवर्ष

नयी शक्तियोंका आरम्भ

सोलहवीं शताब्दीसे भारतके इतिहासका वर्तमान भाग आरम्भ हुआ, जब कि तीन नयी शक्तियाँ इस देशमें उत्पन्न हुईं—धार्मिक पुनरुत्थान, मुगल साम्राज्यकी स्थापना और हरिवर्षीय जातियोंका भारतवर्षमें आगमन। साढ़े तीन सौ वर्षपर्यन्त इन शक्तियोंने अपना काम किया। धार्मिक पुनरुत्थानसे मराठा साम्राज्य तथा सिख साम्राज्य उत्पन्न हुए जो कि अपना काल व्यतीत कर समाप्त हो गये। मुगलोंका पहिले अभ्युदय हुआ और फिर उनकी अवनति प्रारम्भ हुई। अन्तको लड़ते-भिड़ते उनकी भी समाप्ति हो गयी। हरिवर्षीय जातियोंका परस्पर संग्राम हुआ जिसमें आंग्ल जाति अधिक योग्य सिद्ध हुई और उसने अपने प्रबन्ध तथा स्वदेश-प्रीतिसे अन्य समस्त शक्तियोंको क्षेत्रमें नीचा दिखाकर इस देशपर अधिकार कर लिया। सन् १८५६ ई०(संवत् १९१३)में आर्यावर्तके राजाओं तथा भिन्न-भिन्न सम्प्रदायोंने इस बातका अनुभव किया और घायल सिंहके समान अपने आपको छुड़ानेकी चेष्टा की, परन्तु उनमें प्राण न थे, वे निःशक्त होकर शिथिल पड़ गये और अंग्रेजोंका प्रभाव समस्त देशपर जम गया। उस कालसे नया भारतवर्ष आरम्भ हुआ जिसे 'वर्तमान भारतवर्ष' कहना उचित होगा।

धार्मिक प्रतिक्रिया

अंग्रेजी शासनके स्थित होते ही वही क्रिया आरम्भ हुई जो सदैव विदेशी राज्यके अधीन हुआ करती है। आंग्ल जाति ईसाई है। उसका साहित्य ईसाई मतकी शिक्षासे भरपूर है। अपने शासनकी जड़ोंको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दृढ़ करनेके लिए उसने अपने पादरियों तथा पाठशालाओं द्वारा अपने धार्मिक विचारोंका प्रचार आरम्भ किया।

ब्राह्मसमाज तथा आर्यसमाज

सबसे पहिले बंगालमें अंग्रेजी प्रभाव शुरू हुआ। वहाँ ही पहिली धार्मिक क्रिया ब्राह्मसमाजके नामसे आरम्भ हुई। उसके प्रवर्त्तक तथा नेता अंग्रेजी सभ्यतासे इतने प्रभावित हुए कि वे उसका साक्षात् विरोध करनेसे भयभीत होते थे। डरते-डरते उन्होंने अपने जातिधर्मको बचानेका यत्न किया। इस यत्नका आधार यह था कि यदि ईसाई धर्म अथवा इस्लाम अच्छा है तो आर्य धर्ममें भी दोषोंके अतिरिक्त गुण विद्यमान हैं, अतएव अपने धर्ममें रहना ही उत्तम है। स्वामी दयानन्दने वीरता तथा रणशीलतापर आर्यसमाजकी नींव रखी। उन्होंने ईसाई तथा मुसलमान धार्मिक नेताओंको आह्वान कर कहा, आओ परीक्षा करके देखें कि कौन सा धर्म सच्चा है। उनका जीवन और सारे कार्य ही एक आह्वानके रूपमें थे। उन्होंने बलपूर्वक कहा कि प्राचीन आर्य धर्म न केवल सच्चा है और उत्तम है, बल्कि समस्त धर्मोंका आदि स्थान है। उनका मुकाबला करना कठिन हो गया। फिर उन्होंने पौराणिक पण्डितोंके साथ यह निर्णय करना चाहा कि धर्मकी आधुनिक अवस्थामें क्या-क्या दोष हैं और उन्हें कैसे दूर करना चाहिये। पौराणिक पण्डित माननेवाले न थे। वे मुकाबला भी न कर सकते थे, परन्तु विरोध अवश्य करते रहे। स्वामी दयानन्दकी क्रियाने ईसाइयोंकी उन्नतिके सामने दीवार खड़ी कर दी।

थियासोफीका प्रवेश

उसके साथ ही मैडम 'ब्लावाट्स्की' द्वारा थियासोफी भारतवर्षमें आयी। मैडमने अमरीकामें इसे आरम्भ किया था। फिर वह तथा कर्नल आल्काट अमरीकासे चलकर बम्बई पहुँचे। उन्होंने थियासोफिकल सोसाइटीको आर्यसमाजकी एक शाखा स्वीकार किया और स्वामी दयानन्दको अपना गुरु बनाकर कुछ काल काम किया। वे क़ई बातोंमें उनके विरुद्ध हो गये। मैडम ब्लावाट्स्की तथा कर्नल आल्काटने मद्रासमें जाकर उसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपना केन्द्रस्थान बनाया। उधरके कई पढ़े-लिखे मनुष्य उसे आर्य धर्मको बचानेवाली क्रिया समझकर उसमें शामिल हो गये।

संयुक्तप्रान्तमें एक ही क्रियाने जोर पकड़ा और वह गोरक्षिणी-सभा थी। यह आधी राजनीतिक, आधी धार्मिक थी। इसके कारण उस भागमें आर्यों तथा मुसलमानोंमें विवाद भी अधिक होते रहे। गत कालमें ब्राह्मसमाजके गिर जानेपर वंग देशमें स्वामी विवेकानन्दके वेदान्तका प्रचार हुआ। स्वामी विवेकानन्दके कामका बड़ा अंश यह था कि उन्होंने अमरीका आदि देशोंमें हिन्दू-धर्मके सिद्धान्तोंका प्रचार कर संसारमें यह सिद्ध कर दिया कि पश्चिमी देशोंको धार्मिक संसारमें भारतवर्षसे अभी बहुत कुछ सीखना है।

जातीय महासभा

जातीय महासभा संवत् १९४०(सन् १८८३ ई०)में स्थापित की गयी। इसके स्थापनका अभिप्राय यह था कि शिक्षितवर्गके नेता प्रतिवर्ष भारतके किसी नगरमें एकत्र होकर देशकी परिवेदनाओंको गवर्नमेण्टतक पहुँचा दें। आरम्भमें गवर्नमेण्ट इसकी वृद्धि चाहती थी, परन्तु तीन-चार वर्षके भीतर महासभा स्वतन्त्रसी होने लगी और सरकारने भी अपना प्रवाह बदल दिया। वर्षों कांग्रेसमें भारतवर्षके भिन्न-भिन्न प्रान्तोंके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध नेता तथा पुरुष एकत्र होते रहे। सरकारने उनके दुःख-निवेदनों या आवश्यकताओंपर कुछ भी ध्यान न दिया। महाराष्ट्र प्रान्तमें केवल राजनीतिक विचारोंका प्रचार था। मराठा इतिहास वहाँके लोगोंको अपनी राजनीतिका स्मरण कराता है। स्थल-स्थलपर इस प्रान्तमें राजनीतिक द्रोह भी होते रहे। अन्ततः शान्तिके कालमें राष्ट्रीय महासभाका जोर महाराष्ट्रमें अधिक रहा। इसका कारण यह था कि महाराष्ट्रमें देशका एक राजतीतिक नेता विद्यमान था। कांग्रेसके भीतर जातीय जीवन उत्पन्न करके जातिमें नवजीवन उत्पन्न करनेका आदर्श उसनेअपने जीवनका लक्ष्य बना लिया। महाराज बाल गंगाधर तिलकके जीवनका यही एक काम रहा। प्रतिवर्ष देशके किसी बड़े नगरमें उत्सव करके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
व्याख्यानों तथा प्रस्तावों द्वारा राजनीतिक जागर्ति उत्पन्न करना ही चिरकालतक जातीय महासभाका काम रहा।

भारतवर्षके भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें न कोई राजनीतिक समानता थी और न राजनीतिमें लोगोंकी विशेष रुचि ही थी। उस समय आर्यसमाजःकी देशभक्ति और त्यागशीलता बहुत बढ़ी हुई थी, कांग्रेसके कामकी विशेष सत्ता न थी। जहाँ कहीं देशमें दुर्भिक्ष हुआ अथवा भूकम्प आया या प्लेगका ही प्रकोप हुआ कि आर्यसमाजने अपने स्वयंसेवक तथा उपदेशक भेजकर पीड़ित लोगोंकी सहायता की। आर्यसमाजने स्वदेशीका थोड़ा-बहुत प्रचार भी किया, अछूत जातियोंको उठाने और उनको शिक्षा देनेका भी प्रबन्ध किया। जातीय महासभा उस समय केवल प्रस्ताव पास करके सरकारका ध्यान इस बातकी ओर दिलाती रही कि भारतवासियोंको बड़े-बड़े पद मिलने चाहिये, उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिये, पर ब्रिटिश गवर्नमेण्टने इन प्रस्तावोंको लापरवाहीसे देखा।

रूस-जापान युद्धका प्रभाव

कालने रंग बदला। जापान जैसे छोटे देशने रूस जैसे बलवान् देशको पराजित कर दिया। दोनों जातियाँ आंग्ल जातिके मुकाबलेकी थीं। दोनोंमेंसे किसीका गिर जाना अंग्रेजोंके लिए प्रसन्नताकी बात थी। अतः जहाँ रूसकी पराजयके उपरान्त अंग्रेजोंको प्रसन्नता हुई वहाँ भारतवर्षपर इस युद्धका एक बड़ा प्रभाव यह हुआ कि यहाँ लोगोंने निद्रा त्यागी। लार्ड कर्जनका काल था। उसने भारतवासियोंकी इच्छाओंकी जितनी ही उपेक्षा की उतनी ही अधिक जलन देशमें उत्पन्न हुई। परिणाम यह हुआ कि अधिक उत्तेजित दल कांग्रेससे असन्तुष्ट हो गया। इस दलवालोंने एक गुप्त तहरीककी नीवँ डाली जिसका कुछ-कुछ प्रत्यक्ष प्रचार कलकत्तामें संवत् १९६४ (सन् १९०७ ई०)में हुआ। इस आन्दोलनसे पूर्व केवल पूनामें प्लेगसे उत्पन्न हुई अशान्तिके कारण राजनीतिक हत्या हुई जिसमें रैण्ड साहब एक पिस्तौलसे मार दिया गया। सरकारने केवल सन्देहपर नातू भाइयोंको निर्वासित कर दिया और तिलक महा-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजको एक राजनीतिक अभियोगमें डेढ़ वर्षका दण्ड दिया। मारनेवाले दो भाई थे जिनके साथ एक और पुरुष था। वह सरकारी गवाह बन गया और उसने दोनों भाइयोंको पकड़वा दिया। उनका एक तीसरा भाई था। उसने अपनी मातासे आज्ञा माँगी और एक पिस्तौल भरकर न्यायालयमें चला गया। न्यायालयमें अपने भाइयोंके पकड़वानेवालेको उसने गोलीसे मार दिया। तीनोंने अपने प्राण सरकारको अर्पित कर दिये।

बंगालके नवयुवकोंका जोश

गवर्नमेण्टको सन्देह था कि तिलक महाराजका हाथ इस हत्यामें था। बंगालमें श्री अरविन्द घोषने स्पष्ट रूपसे स्वतन्त्रताका प्रचार किया। अल्प कालमें ही सारे बंगालमें जोश उत्पन्न हो गया और कई नवयुवक अपने प्राणोंपर खेलनेके लिए तैयार हो गये। कई समाचार-पत्र निकलने लगे जिन्होंने स्वतन्त्रताकी पताका उत्तोलित की। यह थोड़े दिनोंकी बात थी। गवर्नमेण्ट भी अपनी ओरसे तैयार हो रही थी। उसको तत्काल अवसर मिल गया। जिन नवयुवकोंने गुप्त समिति बनाकर अपने मनुष्य पेरिस भेजकर बम बनानेकी विधियाँ सीखी थीं वे मिस्टर किंग्सफोर्डको मारना चाहते थे। जिस बग्घीपर बम फेंका गया उसपर वह सवार न था, बमसे दो अंग्रेज महिलाएँ मारी गयीं। इस सम्बन्धमें जाँच करनेपर 'मानिकतल्ला गुप्त षड्यन्त्र' प्रकट हुआ जिसमें गोसाइँ नामक एक मनुष्य सरकारी गवाह बन गया। बहुतसे नवयुवक पकड़े गये। खुदीराम बोसको बम फेंकनेके अपराधमें फाँसी दी गयी। इस साजिशके अभियोग-में एक अद्भुत बात यह हुई कि एक नवयुवक ग्रेजुएट कन्हाईलाल दत्तने कारागृहके अन्दर पिस्तौल मँगवाकर सरकारी गवाह गोसाइँको गोलियों-से मार डाला और स्वयं हँसते हुए फाँसीपर चढ़ गया। बंगालमें इतना जोश था कि इस नवयुवकका भस्म पवित्र समझा गया।

स्वदेशी और बायकाट—लाला लाजपतरायका निर्वासन

लार्ड कर्जनने बंगालके दो भाग कर दिये। वंगभाषा बोलनेवाली जनताने समझा कि यह हमें निर्बल करनेके लिए किया गया है। इसपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बंगालमें बड़ा विक्षोभ हुआ। जब इससे कोई लाभ प्रतीत न हुआ तो लोगोंने स्वदेशी और बायकाट(बहिष्कार)का शस्त्र प्रयुक्त किया। इस पथपर चलता हुआ बंगाल तत्काल दूसरी सीढ़ीपर चढ़ गया। स्वदेशी तथा बायकाटकी तरंग उत्तर भारत और पंजाबमें भी आ फैली। पंजाबमें सरदार अजितसिंह और लाला लाजपतराय इसके नेता थे। सरदार अजितसिंह और उनके साथियोंके व्याख्यान बड़े प्रभावशाली तथा सरकारके विरुद्ध होते थे। रावलपिण्डी और लायलपुरमें भूमि-कर बढ़ानेपर लोगोंमें असन्तोष फैलने लगा जिसका प्रभाव सेनाओंपर जा पड़ा। वैशाख(मई) मास समीप आ रहा था जब कि सैन्यविप्लव हुए पचास वर्ष पूरे होनेको थे। वह विप्लव भी पलासीके युद्धके पूरे सौ वर्ष पश्चात् इसी मासमें हुआ था। कई आंग्ल समाचारपत्रोंने यह संकेत किया कि पूर्वीय देशोंके लोग विशेष समय-समाप्ति और तिथियोंसे प्रभावित होते हैं। इसलिए सम्भव है कि पंजाबमें कोई सैन्यद्रोह उत्पन्न हो। गवर्नमेण्टके सन्देहोंको उसके गुप्तचरोंने रिपोर्ट सुना-सुनाकर द्विगुणित कर दिया। उन्होंने कहा कि पंजाबमें आर्यसमाजियोंकी एक लाख सेना लाला लाजपतरायकी सहायतामें द्रोह करनेके लिए उद्यत है और आर्यसमाज विद्रोहका केन्द्र है। २८ वैशाख, संवत् १९६४(११ मई, सन् १९०७ ई०)के पूर्व ही लाला लाजपतराय और सरदार अजितसिंह बर्मा निर्वासित कर दिये गये। इसका अर्थ देशने यह समझा कि गवर्नमेण्ट साधारण राजनीतिक आन्दोलनको दबानेके लिए किसी नियमको ध्यानमें नहीं लाती। प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि यदि गवर्नमेण्ट इस प्रकार लोगोंकी इच्छाओंकी तरफसे आँख बन्द कर ले तो क्या करना चाहिये। बंगालके नवयुवक गुप्त समितियाँ बनाकर इस परिणामपर पहुँचे कि जो अफसर इस प्रकार क्रूरता करे उसको अपने प्राणोंके भयमें डाल देना चाहिये। इस रीतिपर चलते हुए उन नवयुवकोंने कितने ही देशी पुलिस अफसरोंका वध किया, कई बड़े-बड़े अंग्रेज अफसरोंपर बम चलानेका यत्न किया और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने व्ययके निमित्त धन प्राप्त करनेके लिए अनेक डाके डाले। ऐसे कार्योंके करनेसे लोगोंकी सहानुभूति उनसे हट गयी। केवल थोड़े राज्य-विद्रोहियोंका समूह रह गया। सरकारको सात वर्षतक कई मुकदमे चलाने पड़े। अन्ततः युद्धके आरम्भ हो जानेपर परिमित नवयुवकोंको कैद करके जेलोंमें नजरबन्द कर देनेसे इस समूहकी लगभग समाप्ति हो गयी।

विदेशोंमें भारतकी स्वतन्त्रताका प्रयत्न

प्रायः कोई विचार एक स्थानपर ही उत्पन्न होता है, पर जहाँ कहीं उसे उपयुक्त भूमि मिलती है वहाँ वह फूट निकलता है। लन्दनमें भारतीय विद्यार्थियोंकी पर्याप्त संख्या थी। पेरिसमें कुछ भारतीय कुटुम्ब रहते थे जो मोतियोंके व्यापारपर निर्वाह करते थे। अमरीकाकी राजधानी सानूफ्रान्सिस्कोके सपीम कैलिफोर्निया और वाशिंगटन रियासतोंमें और उसी ओर कैनेडामें कई सहस्र सिख रहते थे। वे खेती या लकड़ीके कारखानोंमें मजदूरी करते थे। भारतवर्षकी वायुका प्रभाव पहिले-पहिल आंग्लस्थानपर हुआ। लन्दनमें कई वर्षोंसे पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा रहा करते थे। वे एक मासिक पत्र 'इण्डियन सोशियॉलाजिस्ट' निकाला करते थे। इसका उद्देश्य भारतवर्षकी स्वतन्त्रताका प्रचार था। यह पत्रिका कांग्रेसकी नीति और उसके कार्यकर्ताओंपर सदा आक्षेप करती थी। लाला लाजपतरायके निर्वासनका प्रभाव लन्दनमें बहुत पड़ा। वहाँ एक बड़ी पब्लिक मीटिंग की गयी जिसमें श्री हाइण्डमैनने एक लम्बी-चौड़ी वक्तृता दी। वहाँ अगणित स्त्री-पुरुष थे जिनको सभामण्डपमें स्थान न मिला। इसपर एक और मण्डपमें सभा की गयी जिसमें उनका जीवनचरित्र सुनाया गया।

सर कर्जनका वध

लन्दनमें एक मकान लेकर श्यामजी कृष्ण वर्माने 'इण्डिया हाउस' नामक एक बोर्डिंग हाउस बनाया था जिसमें कुछ भारतीय विद्यार्थी रहा करते थे। उनमें सबसे अधिक जोशीले श्री सावरकर थे। श्री सावरकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन विद्यार्थियोंके नेता थे जो स्वतन्त्रताके इच्छुक प्रतीत होते थे। दिन-प्रतिदिन आंग्ल राज्यके विपरीत उनकी भावना बढ़ती गयी जो उस समय अपनी सीमापर आ पहुँची जब सर कर्जन वाइलीको एक जल्सेमें मदनलाल ढींगराने पिस्तौलसे मार डाला। इस वधका कारण भी यही विचार था कि सर कर्जन भारतीय विद्यार्थियोंके विरुद्ध रिपोर्ट करनेवाले विभागका अफसर समझा जाता था। मदनलालकी जेबसे एक लिखा हुआ पत्र निकला। उसमें यह लिखा था कि यदि प्रत्येक भारतवासी मेरे सदृश देशके प्रति अपने कर्तव्यका पालन करनेपर तैयार हो जाय तो देश तत्काल स्वतन्त्र हो सकता है। राज्यविप्लवकी तरंगका यह वीजमन्त्र था।

इस घटनाके अनन्तर सावरकर पेरिस चले गये। लाला हरदयाल भी वहीं विद्यमान थे। उन्होंने देशके बाहर स्वतन्त्रताके आन्दोलनका केन्द्र पेरिसमें जा बनाया। इससे चिरकाल पूर्व श्यामजी कृष्ण वर्मा भी अपना समाचारपत्र वहीं ले गये थे। वहाँ रहकर और कुछ कार्य तो वे लोग न कर सकते थे, हाँ, ब्रिटिश राज्यके प्रति उन्होंने स्वतन्त्रताके विचारको जीवित रखनेका प्रयत्न अवश्य किया। सरकारको सन्देह था कि सर कर्जनका वध सावरकरकी सम्मतिसे हुआ है। सावरकर उनकी पहुँचसे बाहर थे। उन्होंने सावरकरके बड़े भाई श्री गणेश सावरकरपर राष्ट्रीय गीतोंकी एक पुस्तक छापनेके कारण अभियोग चलाया। हाईकोर्टसे उन्हें मरणपर्यन्त कालापानीका दण्ड मिला। इस अन्यायसे असन्तुष्ट होकर कुछ मराठा युवकोंने गुप्त षड्यन्त्र किया और नासिकके प्रसिद्ध कलक्टर जैक्सनको एक थियेटरमें मार दिया। मारनेवाला युवक पकड़ा गया। उसके मकानकी तलाशीसे उसके सब मित्रोंका पता लग गया। इस अभियोगमें अनेकको फाँसी और शेषको कालापानीका दण्ड मिला।

श्री सावरकरकी गिरफ्तारी

इस अभियोगमें एक सरकारी गवाहने यह बताया कि वह पिस्तौल जिससे जैक्सनकी हत्या हुई थी, पेरिससे सावरकरने भेजी थी। कथनका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह अंश सर्वथैव गुप्त रखा गया। भारतकी पुलिस लन्दनमें गिरफ्तारीके लिए पहुँची हुई थी। सावरकरके कार्योंकी जाँच पेरिसमें हो रही थी। अभियोगके वृत्तान्त जाननेपर जब सावरकरका यह विचार हुआ कि मेरे ऊपर कोई दोष नहीं है, तो वे लन्दनके लिए चल पड़े। विक्टोरिया स्टेशनपर पहुँचते ही पुलिसने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वहाँके न्यायालयमें यह मुकदमा उपस्थित किया गया। प्रश्न यह था कि क्या भारत सरकार आंग्लस्थानसे अपराधीको कैद करके वापस मँगा सकती है? इसका निर्णय भारत सरकारके पक्षमें हुआ और श्री सावरकरको जहाजपर लेकर पुलिस भारतकी ओर चली।

मार्सेलके पोताश्रयपर जहाज तटसे कोई आध मील दूर समुद्रमें होगा कि सावरकरने अपने बचावके लिए यत्न किया। यह मनुष्यके अद्भुत साहसका उदाहरण है। सावरकर जहाजके अन्दर स्नानालयमें प्रविष्ट हुए। पोर्ट होल अर्थात् सूराखमेंसे नंगे समुद्रमें कूद गये, यद्यपि छिद्रसे निकल जाना कठिन प्रतीत होता है। जब पुलिसको सुध हुई तो वे समुद्रका बहुत-सा भाग तैर चुके थे। उनके पीछे नौका छोड़ी गयी। सावरकर तटपर पहुँच गये। फ्रेंच पुलिस सिपाहीने उन्हें पकड़ लिया और धोखेमें आकर उसने सावरकरको आंग्ल अफसरके सुपुर्द कर दिया।

अब एक बड़ा भारी अन्तरराष्ट्रीय प्रश्न उपस्थित हुआ कि अंग्रेज फ्रांसकी भूमिसे राजनीतिक अपराधीको ले सकते थे या नहीं। फ्रांसीसी राजसभाने जोर दिया कि उन्हें सावरकरको लौटा देना चाहिये। मुकदमा कई मासपर्यन्त बम्बईमें मुल्तवी किया गया। अन्ततः यह मुकदमा बम्बई हाईकोर्टमें गया। वहाँ न्यायाधीशोंने यह निर्णय किया कि यदि अपराधी फ्रांसकी भूमिपर होता तो आंग्लस्थान किसी प्रकारसे उसे पकड़ न सकता था; किन्तु जब कि फ्रांसके एक कान्स्टेबलके अज्ञानसे वह अंग्रेजी गवर्नमेण्टके अधिकारमें चला गया है तो वह किसी प्रकार उसे लौटानेपर मजबूर नहीं की जा सकती। संक्षेपतः, सावरकरको काला-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पानीका दण्ड हुआ और वे भी अपने भाईके पास उसी कारागृहमें जा पहुँचे ; परन्तु वे वहाँ अपने भाईसे मिल नहीं सकते थे।

लाला हरदयाल फिरते-फिरते सन्फ्रान्सिस्को जा पहुँचे। इस प्रान्तमें ऐसे पंजाबियोंकी पर्याप्त संख्या थी जो मजदूरी करके धन एकत्र करते थे। साथ ही अमरीकामें कई वर्ष रहनेसे उनके मन स्वतन्त्र हो गये थे। उनके अन्दर देशानुरागका भाव बड़े वेगसे काम कर रहा था। लन्दन और पेरिसमें तो राज्यविप्लवकी अग्नि शान्त हो ही रही थी, भारतमें भी वह धीमी पड़ गयी थी, किन्तु एक घटनाने उसे पुनर्जीवित कर दिया। वह घटना थी दिल्लीमें लार्ड हार्डिंजपर बम फेंका जाना।

कैनेडासे सिखोंका लौटाया जाना

सिख लोग प्रायः आंग्ल सेनामें भरती होते थे। उनकी कुछ पलटनें हांगकांग और शांघाईमें गयीं। वहाँसे कुछ सिख नौकरी छोड़कर अमरीका तथा कैनेडा जा पहुँचे। उन्हें बहुत मजदूरी मिलने लगी। थोड़े कालमें उनकी संख्या सहस्रोंतक जा पहुँची। कैनेडामें उनको रोकनेका उपाय सोचा जाने लगा। अन्तमें एक नियम बना जिससे कोई ऐसा मनुष्य कैनेडामें प्रविष्ट नहीं हो सकता जो कि सीधा एक ही जहाजमें अपने देशसे न आया हो। हांगकांगमें कलकत्ताके सभी जहाज बदल जाते हैं। सैकड़ों सिख कैनेडासे वापिस कर दिये गये। वे हांगकांगमें एकत्र होते गये। एक पुरुष बाबा गुरुदित सिंहने एक जापानी जहाज किरायेपर ले लिया और उसे कलकत्ता लाकर वहाँसे सब लोग सीधे कैनेडा पहुँचे। कैनेडाकी प्रतिनिधि-सभाने स्पष्ट कह दिया कि यहाँ किसी दशामें इतने सिख उतरने न पायँगे। वे लौटते भी न थे। बहुत झगड़ेके बाद हर्जाना लेकर सिख लौटनेपर उद्यत हो गये। कोमागातामारू जहाज कलकत्ता पहुँचा। यहाँ बजबजमें सरकारी पुलिस तथा सेनासे सिखोंकी मुठभेड़ हुई। दोनों ओरके कई आदमी मारे गये, बहुतेरे जख्मी हुए, शेष जो बचे वे प्राणोंको बचाकर भाग निकले। उनका पीछा किया गया और कई पकड़े गये। इस घटनाकी खबर अमरीका पहुँची। वहाँ लोगोंके जोशकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोई सीमा न रही। इतनेमें महायुद्ध छिड़ गया और वहाँ लोगोंने पढ़ा कि आंग्लस्थान भयमें है। भारतवर्षसे देशी सेना सहायताके लिए आ रही है। उन लोगोंने जलसे किये और निश्चय किया कि भारतवर्षमें जाकर सेनाओंको रोकें और कोलाहल मचा दें। वृद्ध तथा नवयुवक अपने काम और सम्पत्ति छोड़-छोड़कर चल पड़े। इधर सरकारको सब वृत्तान्त ज्ञात था। वह उनको रोकनेके लिए तैयार हो गयी। जहाजोंके पहुँचते ही पुलिस विद्यमान थी। बहुतेरोंको पकड़कर सीधे जेलोंमें डाल दिया, किन्तु उनमेंसे कई इधर-उधरसे बचकर निकल आये और वे पंजाबमें दौरा लगाने लगे।

दिल्लीका षड्यन्त्र—राजनीतिक अपराधियोंको दण्ड

पंजाबमें ओड्वायरका राज्य था। इससे कुछ काल पूर्व दिल्लीके षड्यन्त्रके अभियोगमें अमीरचन्द, अवधविहारी, वसन्तकुमार और बालमुकुन्दको फाँसीका दण्ड दिया जा चुका था। उनके एक पुराने मित्र दीनानाथने अपने आपको नेता बताकर एक बड़े षड्यन्त्रको प्रकट किया। सरकार इस षड्यन्त्रको दिल्ली बमकाण्डके लिए जिम्मेदार समझती थी। इसका वास्तविक प्राण एक व्यक्ति राशविहारी था। वह लाहौरमें विद्यमान था और मकानका पता लग जानेपर भी सारी पुलिसके देखते-देखते लाहौर स्टेशनसे निकल गया। उसकी गिरफ्तारीके लिए एक लाख रुपया पारितोषिक रखा गया, कदाचित् इस खयालसे कि वह बमका फेंकनेवाला था। वह वर्षभर बनारसमें रहा। जब अमरीकाके लोग आये तो उनसे मिलकर फिर पंजाबमें गदर फैलानेका प्रबन्ध किया जाने लगा। दो-तीन मासपर्यन्त कई नवयुवकोंने इधर-उधर फिरकर हाथ-पाँव मारे। उनके पीछे पुलिस फिर रही थी। भिन्न-भिन्न स्थानोंपर वे पकड़े गये। पुलिसपर आक्रमण तथा वधकी वारदतें भी हुईं जिनमें कई पुरुषोंको फाँसीका दण्ड दिया गया। लाहौर षड्यन्त्रके मुकदमे तीन-चार वर्षपर्यन्त कारागृहमें निरन्तर होते रहे, जिनमें अपराधियों और सरकारी गवाहोंकी संख्या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दिन-प्रतिदिन बढ़ती गयी। जो पुरुष अपने आपको बचाना चाहता था, कई और मनुष्योंको फँसाकर एक नया मुक़दमा खड़ा कर देता था। ये सब मुकदमे 'डिफेन्स आफ इण्डिया ऐक्ट' (भारत-रक्षा-विधान) के अन्तर्गत थे। इनके लिए कोई अपील न थी। सौसे अधिक व्यक्तियोंको फाँसी दी गयी, कितने ही आमरण कैद किये गये, कितने ही सिपाहियोंकी गोलीसे मार दिये गये।

इस समय बर्लिन भारतवर्षकी स्वतन्त्रताका केन्द्र बन गया। बंगाली, पंजाबी और दूसरे लोग एकत्र हुए। उन्होंने जर्मन गवर्नमेण्टके अधीन एक आन्दोलन कमेटी बनायी। वे जर्मन कमेटीसे सहायता लेकर अमरीकाके भारतवासियों द्वारा गदर पार्टीकी सहायता करते थे।

युद्धमें भारतकी सहायता

इस युद्धमें भारतीय सेनाने फ्रांस, तुर्की और मैसोपोटेमियामें जी तोड़कर अंग्रेज सरकारकी सहायता की। आरम्भमें, जब कि आंग्लवासी जर्मन आक्रमणसे सदा भयभीत रहते थे, भारतीय सेनाने अपने प्राण देकर पेरिसको आक्रमणसे बचा दिया। इंग्लैण्डका दावा यह था कि वह उन बलहीन तथा छोटी जातियोंकी रक्षाके लिए युद्ध कर रहा है जिन्हें जर्मनी अपने अधीन करना चाहता था। जब युद्धकी गति इंग्लैण्डके पक्षमें हुई तो उसे केवल रूसकी ओरसे आक्रमणका भय था। उस समय भारतवर्षको अपने साथ रखनेके लिए और अपने दावेको क्रियारूपमें सिद्ध करनेके लिए इंग्लैण्डने भारतवर्षको स्वराज्य देनेकी प्रतिज्ञा की। वह प्रतिज्ञा अन्तमें संशोधित व्यवस्था—माण्टेगू-चेम्सफोर्ड रिफॉर्म्ड स्कीम—में प्रकट हुई।

परन्तु इसके साथ बगावतका समूल नाश करनेके लिए रौलट जजको भेजकर कमीशन बैठानेके उपरान्त रौलट कानून पास किया गया। इसका उद्देश्य यह था कि जहाँ ब्रिटिश गवर्नमेण्ट एक हाथसे थोड़ासा टुकड़ा दे रही थी वहाँ दूसरे हाथसे नियम बनाकर लोगोंके हृदयोंसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वतन्त्रताकी इच्छाओं या विचारोंका मूल नष्ट करनेका प्रबन्ध भी कर रही थी।

रौलट ऐक्ट

रौलट ऐक्टके विरोधमें देशसे एक स्वर उठा। आर्य, मुसलमान और सिख इसके विरुद्ध उठ खड़े हुए। महात्मा गाँधी, जिन्होंने सत्याग्रहकी नीवँ रखी थी, इस विरोधके नेता बन गये। महात्मा गाँधीका पिछला जीवन इस बातकी पर्याप्त साक्षी देता था कि उनके हृदयमें किसी जाति अथवा मनुष्यसे द्वेष नहीं। महात्मा गाँधी सबसे एकसा प्रेम करते, परन्तु जहाँ कहीं अन्याय या अत्याचार होता था वहाँ वे पीड़ित जनोंकी रक्षामें अपना सर्वस्व बलिदान करनेपर उद्यत रहते थे। उन्होंने युद्धके दिनोंमें अपनी शक्तिसे अंग्रेजी सरकारकी सहायता की। उन्होंने समग्र देशसे अपील की कि वह रौलट ऐक्टके विरोधमें ६ अप्रैलको हड़ताल करे। उनकी यह आज्ञा जिस प्रकार मानी गयी उससे प्रकट हो गया कि कौन देशका मित्र और कौन शत्रु है। संसारने जाना कि भारतवर्षके राजनीतिक क्षेत्रमें एक नये महापुरुषने पद रखा है।

पंजाब सर माइकेल ओड्वायरके शासनकालकी क्रूरताओंसे दुःखित हो चुका था। युद्धके लिए बलात् भरतीने लोगोंके नाकों दम कर रखा था। बुद्धिमान् मुसलमान मन ही मन इस बातसे भी जलते थे कि गवर्नमेण्टने उदरलोलुपतामें फँसाकर मुसलमानोंको ही उनके पवित्र तीर्थोंके विरुद्ध लड़ाया है। युद्धमें यह भी दैवयोग था कि रूम (तुर्की) जर्मनीके साथ था। मुसलमानोंकी धार्मिक सहानुभूति स्वभावतः रूम और जर्मनीके साथ थी। युद्धसमाप्तिपर मित्र राज्योंने रूम राज्यको नष्ट करनेकी ठानी। रूम राज्य मुसलमानोंके लिए खिलाफतका स्थान था। मुसलमानोंके धार्मिक विश्वासोंपर यह चोट बड़ी गहरी थी। पंजाबके सिख और हिन्दू ओड्वायरके अभियोगों और अत्याचारोंसे दिलमें जलते थे, पर वे सब अपने आपको सर्वथा असहाय पाते थे। महात्मा गाँधीको अपना एक परित्राता समझकर उनकी आज्ञा माननेपर वे तैयार हो गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहमदाबादमें बलवा

माहात्मा गाँधीने रौलट ऐक्टका खुले तौरपर उल्लंघन करना प्रारम्भ किया। उनका विचार था कि मैं अत्याचारपर खड़े हुए किसी भी कानून-को तोड़नेके लिए तैयार रहूँगा। गवर्नमेण्टने महात्माजीको पकड़ना चाहा। इसपर अहमदाबादमें बलवा हुआ। उसमें कई जानें नष्ट हुईं। दूसरी ओर दिल्लीमें सहस्रों पुरुष एकत्र हो हुए। गवर्नमेण्टने अपनी सेना बुला ली। गोली चलायी गयी। समूहके कुछ मनुष्य मारे गये। लोगोंने उनको शहीद समझकर बड़ी प्रतिष्ठाके साथ जलाया अथवा दफनाया। आर्य-मुसलमानका भेद दिल्लीसे उठ गया। तबसे पंजाबमें आन्दोलनने बहुत बल पकड़ा।

सर माइकेलका हृदय अभी दमनसे सन्तुष्ट नहीं हुआ था। वह दावा करता था कि केवल मैं ही पंजाबको समझता हूँ और वशमें रख सकता हूँ और पंजाबी मेरे शासनपर मुग्ध हैं। वह कतिपय मासके लिए और यहाँ रख लिया गया। यदि वह समयपर चला जाता तो संसारको कदापि यह ज्ञात न होता कि उसने पंजाबके अन्दर अत्याचारसे कितनी भयानक सामग्री उत्पन्न कर दी थी। वह कुछ मास ठहर गया और यह आन्दोलन देखकर घबरा गया। उसने निश्चय किया कि एक बार ही मार्शल लॉसे सारे पंजाबके आन्दोलकोंकी समाप्ति कर दूँ। अमृतसर, लाहौर, गुजराँवाला इत्यादि बड़े-बड़े प्रसिद्ध जिलों और नगरोंमें मार्शल लॉ जारी कर दिया गया। सब जगहोंके अनेक सुप्रसिद्ध वकील पकड़कर कारागृहमें डाल दिये गये।

जालियाँवाला बाग

अमृतसरके दो नेता—डाक्टर सत्यपाल और डाक्टर किचलू—गिरफ्तार करके निर्वासित कर दिये गये। अमृतसरकी जनता भड़क उठी। उसकी अग्नि शान्त करनेके लिए उसपर गोली चलायी गयी। कुछ लोग मारे गये। लोगोंका समूह गिर्जा और अंग्रेज बैंकपर टूट पड़ा और तबाही मचा दी। मार्शल लॉके अफसर जेनरल डायरने उसका प्रतिकार किया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने वैशाखी मेलेके दिन एकत्र हुए लोगोंपर जालियाँवाला बागमें गोलियोंकी वर्षा आरम्भ कर दी। वहाँसे बाहर निकलनेके मार्ग बहुत ही थोड़े और बहुत ही तंग थे। हजारसे ऊपर निर्दोष पुरुष, स्त्री तथा बालक वहाँ मारे गये। इस दारुण घटनाने देशमें खलबली उत्पन्न कर दी। लोग हवाई जहाजों और तोपोंसे डर गये। मार्शल लॉ समाप्त हुआ। पण्डित मदनमोहन मालवीय और पण्डित मोतीलाल नेहरू पंजाबमें आये। सर्वत्र भ्रमण कर जाँच की। महात्मा गाँधीने आज्ञा दी कि जबतक गवर्नमेण्ट खिलाफतके अन्याय और पंजाबके अत्याचारके कलंकको न धो डाले, उससे असहयोग किया जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवाँ प्रकरण

पंजाब हत्याकाण्ड और असहयोग आन्दोलन

पंजाब हत्याकाण्डके समयतक गाँधीजीको अंग्रेजोंकी न्यायपरायणता-पर विश्वास था। युद्धके समय गुजरातके गाँवोंमें घूमकर उन्होंने रंग-रूट भरती करने तथा चन्दा एकत्र करनेमें सहायता की थी। युद्धमें भारतने अंग्रेजोंकी जो धन-जनसे सहायता की थी और मित्र राष्ट्रोंने युद्ध-के समय जो यह घोषणा की थी कि यह लड़ाई छोटे तथा कमजोर राज्यों-की रक्षा तथा आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके लिए लड़ी जा रही है, इससे भारतीयोंके हृदयमें एक आशाका संचार हुआ था। वे समझने लगे थे कि युद्ध-समाप्तिके बाद हमें अपने देशके शासनमें बहुत कुछ अधिकार मिलेगा! सन् १९१६ ई० में लखनऊ कांग्रेसके अवसरपर कांग्रेस और मुस्लिम लीगमें साम्प्रदायिक समझौता हो चुका था और उसके आधारपर कांग्रेस तथा लीगकी ओरसे एक संयुक्त माँग ब्रिटिश गवर्नमेण्टके सम्मुख पेश की गयी थी। भारत-मन्त्री माण्टेग्यूने भारतमें आकर भारतीय स्थिति-का अध्ययन किया और वाइसराय चेम्सफोर्डके साथ उन्होंने भारतीय शासनमें सुधारकी एक योजना तैयार की जो माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड-योजना-के नामसे प्रसिद्ध है। इधर लोकमान्य तिलक तथा एनी वसन्त स्वराज-सभा और होमरूल लीग स्थापित करके देशमें स्वराज्यकी भावनाका प्रचार कर रहे थे और यह भावना दिनपर दिन जोर पकड़ती जा रही थी। अतः माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड-योजनासे भारतवासी सन्तुष्ट होनेवाले नहीं थे।

रौलट कानूनका विरोध

पर ब्रिटिश गवर्नमेण्टने एक ओर तो ब्रिटिश पार्लमेण्टमें भारतीय शासन-सुधारका विधेयक पेश किया और दूसरी ओर भारतमें आतंक-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वादी क्रान्तिकारी आन्दोलनको कुचलनेके लिए रौलट कानून बनाया जैसा कि हम पिछले प्रकरणमें लिख चुके हैं। इसीके विरोधमें गाँधीजीने सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया और ब्रिटिश अधिकारियोंने उसे कुचलनेके जोशमें पंजाबमें निर्मम हत्याकाण्ड कर डाला। उसी समय तृतीय अफगान युद्ध भी अफगानिस्तानके अमीर अमानुल्लाके साथ प्रारम्भ हो गया। पंजाबमें सैनिक-शासन जारी कर दिया गया और सारा पंजाब बाहरी दुनियासे पृथक् कर दिया गया। महीनोंतक पंजाबके अत्याचारोंकी दर्दभरी कहानीकी भनक भी बाहर न पहुँच सकी। पर इसी समय वाइसरायकी कार्यकारिणी समितिके सदस्य सर शंकरन् नायरने सैनिक-शासनके विरोधमें अपने पदसे त्यागपत्र दे दिया और जब कितने ही नवयुवकोंको फाँसीकी सजाएँ दी गयीं तथा लाला हरकिशनलाल ऐसे नरम विचारके राजनीतिज्ञतकको आजीवन कारावासका दण्ड दिया गया और उनकी ४० लाखकी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी तथा हिन्दुस्तानियोंके प्रति किये गये अपमानजनक व्यवहारके समाचार छन-छनकर पंजाबसे बाहर आने लगे तो सारे देशमें क्रोधकी आग भड़क उठी और हत्याकाण्डकी जाँचकी माँग की जाने लगी। अन्तमें गवर्नमेण्टने जाँचके लिए हण्टर कमेटी नियुक्त की। कांग्रेसने प्रारम्भमें इस कमेटीके साथ सहयोग करनेका निश्चय किया, पर सैनिक-शासनके कुछ जिम्मेदार राजबन्दियोंको जाँचमें सहायता करनेकी कांग्रेसके नेताओंकी माँगके अस्वीकार कर दिये जानेके कारण बादमें उसने सहयोग करनेसे इनकार कर दिया। तदनन्तर जाँचके लिए कांग्रेस द्वारा एक पृथक् जाँच समिति नियुक्त की गयी।

अमृतसर कांग्रेसमें माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड-सुधारको अपर्याप्त तथा असन्तोष-जनक बतलाते हुए भी उसे कार्यान्वित करने तथा सरकारके साथ सहयोग करनेका निश्चय किया गया, पर जब तुर्कीके साथ मित्र राष्ट्रोंकी सन्धिकी शर्तें प्रकाशित हुईं और उनके अनुसार तुर्क साम्राज्यके अधिकतर प्रदेश मित्र राष्ट्रोंको बाँट दिये गये तो उससे भारतके मुसलमानोंको बड़ी निराशा हुई। युद्धके समय ब्रिटेनके प्रधान मन्त्रीने आश्वासन दिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
था कि तुर्कीके सुलतान और खलीफाके साथ कोई अन्याय नहीं होगा और भारतीय मुसलमानोंने भी ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी तन-मन-धनसे अपने सहधर्मी तुर्कीके विरुद्ध सहायता की। जब उनकी आशाके विरुद्ध तुर्कीका अंग-विच्छेद कर दिया गया और मुसलमानोंके पवित्र तीर्थस्थान खलीफाके हाथसे निकल गये तो भारतीय मुसलमानोंको बड़ी ठेस लगी और कितने ही मुसलमान भारत छोड़कर दूसरे मुसलिम देशोंको हिजरत कर गये। उसी समय हण्टर कमेटीकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें अंग्रेज तथा भारतीय सदस्योंमें तीव्र मतभेद हो गया। अंग्रेज सदस्योंने सैनिक-शासनका समर्थन किया और भारतीय सदस्योंकी रायमें सैनिक-शासनकी आवश्यकता न थी।

असहयोगका निश्चय

ऐसे विक्षुब्ध वातावरणमें अखिल भारतवर्षीय खिलाफत कमेटीने मुहम्मदअली-शौकतअलीके नेतृत्वमें ब्रिटिश गवर्नमेण्टके साथ असहयोगकी नीति अख्तियार की और १ अगस्त, सन् १९२० ई० से गाँधीजीके नेतृत्वमें असहयोगकी घोषणा कर दी गयी। मईमें बनारसमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी बैठक हुई और उसमें यह निश्चय हुआ कि सितम्बरके प्रारम्भमें कलकत्तामें कांग्रेसका एक विशेष अधिवेशन किया जाय जो देशकी राजनीतिक परिस्थितिपर विचार करे।

५ सितम्बरसे ९ सितम्बरतक कांग्रेसका अधिवेशन हुआ और कांग्रेसने भी असहयोगके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। इस निर्णयके अनुसार सरकारी पदवियों, अदालतों, शिक्षालयों तथा व्यवस्थापिका सभाओंके बहिष्कारका निश्चय किया गया। प्रारम्भमें कांग्रेसके कुछ प्रमुख नेताओंने भी इस प्रस्तावका विरोध किया, पर दिसम्बरमें नागपुरके वार्षिक अधिवेशनमें भी इस प्रस्तावके स्वीकृत हो जानेपर आन्दोलन तीव्र गतिसे शुरू हो गया। नागपुरमें कांग्रेसका ध्येय भी वैधानिक तरीकोंसे औपनिवेशिक स्वराज्यके स्थानपर शान्तिमय तथा उचित उपायोंसे स्वराज्य प्राप्त करना कर दिया गया और कांग्रेसका संगठन भी दृढ़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया गया। कांग्रेसका संगठन जो इसके पूर्व केवल शहरके थोड़ेसे शिक्षित लोगोंमें ही सीमित था, गाँवोंमें भी फैलकर देशव्यापी हो गया।

असहयोगका प्रस्ताव स्वीकार हो जानेपर हजारों विद्यार्थियों तथा वकीलों आदिने सरकारी संस्थाओंसे असहयोग किया और सारे देशमें कितने ही राष्ट्रीय स्कूल तथा विद्यापीठ खुल गये। मार्च, सन् १९२१ ई० में बेजवाड़ामें कांग्रेस कार्यकारिणी कमेटीकी बैठक हुई और उसमें यह निश्चय हुआ कि असहयोगके कार्यक्रमको आगे बढ़ानेके लिए तिलक-स्वराज्य-कोषमें १ करोड़ रुपया एकत्र किया जाय, १ करोड़ कांग्रेसके मेम्बर बनाये जायँ तथा सारे देशमें २० लाख चर्खे चलवाये जायँ। कार्य बड़ी तीव्र गतिसे प्रारम्भ हुआ और ३० जूनतक १ करोड़से अधिक रुपया एकत्र हो गया, चर्खे भी बड़ी संख्यामें चलने लगे तथा आधे करोड़के लगभग कांग्रेसके सदस्य हो गये।

प्रारम्भमें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा इस आन्दोलनकी खिल्ली उड़ायी गयी। तत्कालीन वाइसराय लार्ड चेम्सफोर्डने कहा था कि यह योजना सबसे मूर्खतापूर्ण योजनाओंमेंसे एक योजना है और उन्होंने आशा की थी कि भारतवर्षकी जनता इसकी उपेक्षा करेगी; पर जब आन्दोलनकी गति तीव्र होने लगी तो अधिकारियों द्वारा दमन-चक्र प्रारम्भ किया गया, सभा आदिपर रोक लगा दी गयी और राजद्रोहात्मक भाषणोंके अपराधमें गिरफ्तारियाँ की जाने लगीं। गाँधीजीके अहिंसात्मक असहयोगके प्रारम्भ कर देनेपर आतंकवादी दलके लोगोंने भी अपना कार्यक्रम स्थगित कर दिया था और देशमें जनताकी ओरसे कोई हिंसात्मक काररवाई नहीं हो रही थी, पर मद्रास प्रान्तके मलावार प्रदेशमें वहाँके मुसलमान निवासी मोपला गवर्नमेण्टकी दमन-नीतिसे उत्तेजित हो गये और उन्होंने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि सारे देशमें हिन्दू और मुसलमान कन्धेसे कन्धा मिलाकर कार्य कर रहे थे और हिन्दू-मुसलिम एकताका बहुत सुन्दर वातावरण था, पर इस प्रदेशके मुसलमानोंने धार्मिक आवेशमें कुछ हिन्दुओंको जबरदस्ती मुसल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
मान बना लिया। गवर्नमेण्टने सैनिक-शासन जारी करके मोपला विद्रोहका दमन किया।

युवराजके आगमनका बहिष्कार

ब्रिटिश अधिकारियोंने अपनी घटती हुई प्रतिष्ठाको पुनः स्थापित करनेके लिए इंग्लैण्डके राजकुमार प्रिंस आफ वेल्सको भारतमें लानेका निश्चय किया। कांग्रेसकी ओरसे यह कहा गया कि यद्यपि इंग्लैण्डके राजवंशसे हमारा कोई झगड़ा नहीं है, पर राजकुमार भारतीय नौकरशाही द्वारा अपनी प्रतिष्ठा बढ़ानेके लिए बुलाये जा रहे हैं, इसलिए उनका बहिष्कार किया जायगा। १७ नवम्बरको राजकुमारके बम्बई आनेपर सर्वत्र हड़ताल मनायी गयी और बम्बईमें उपद्रव भी हो गया जिसके फलस्वरूप गाँधीजीने पाँच दिनका अनशन किया। इस उपद्रवमें ५३ आदमी जानसे मरे और लगभग ४०० घायल हुए। राजकुमार जिन-जिन शहरोंमें गये सर्वत्र उनका जबरदस्त बहिष्कार हुआ। केवल सरकारी नौकर तथा कुछ राजभक्त लोग ही स्वागतके निमित्त उपस्थित रहते थे। शहरमें हड़ताल रहती थी और विदेशी कपड़ेकी होली जलायी जाती थी। कांग्रेस तथा खिलाफत कमेटीके स्वयंसेवकोंका संगठन भी दृढ़ हो गया था और हड़तालोंका संगठन करनेमें इन लोगोंने प्रमुख भाग लिया। दमनका रूप बहुत उग्र हो गया। मुख्य-मुख्य नेता गिरफ्तार कर लिये गये तथा सहस्रों स्वयंसेवक सत्याग्रह करनेके फलस्वरूप जेलके अन्दर बन्द कर दिये गये।

समझौतेका प्रयत्न

तत्कालीन वाइसराय लार्ड रीडिंग राजकुमारके देशव्यापी बहिष्कारसे घबड़ा-से गये और जिस दिन राजकुमार कलकत्ता पहुँचनेवाले थे उस दिन (२५ दिसम्बरको) वहाँ उनका बहिष्कार न हो, इस उद्देश्यसे उन्होंने समझौतेका हाथ बढ़ाया। कलकत्ताके अपने भाषणमें उन्होंने कहा—मैं तो परेशान हूँ और घबड़ा गया हूँ कि यह सब क्यों हो रहा है और इससे क्या लाभ। पण्डित मदनमोहन मालवीय तथा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुहम्मदअली जिनाने इस अवसरपर बीच-बिचाव करके समझौता कराने-का प्रयत्न किया। देशबन्धु दाससे जो उस समय अलीपुर जेलमें थे, इन लोगोंकी बातचीत हुई और गाँधीजीसे भी तार द्वारा परामर्श किया गया। गवर्नमेण्टने स्वीकार किया कि सत्याग्रह करनेके अपराधमें दण्डित राजबन्दी छोड़ दिये जायँगे और मार्च, १९२२ में सुधारकी योजनापर विचार करनेके लिए एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जायगा ; पर गाँधी-जीने मौलाना मुहम्मदअली तथा उनके साथी करांचीके राजबन्दियों और सरकारकी सैनिक नौकरीका बहिष्कार करनेके निमत्त फतवा जारी करने-वाले तथा उसे पढ़नेवाले मुसलमान राजबन्दियोंके, जिन्हें फतवा राज-बन्दी कहते थे, छोड़े जानेका आग्रह किया तथा विदेशी कपड़ेकी दुकानों-पर धरना देनेका अधिकार सुरक्षित रखना चाहा। कोई समझौता न हो सका और सत्याग्रह तथा गिरफ्तारी जारी रही।

दिसम्बरके अन्तमें अहमदाबादमें कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन हुआ। उस समयतक चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, लाला लाजपतराय आदि प्रमुख नेता जेलके अन्दर बन्द हो चुके थे। कांग्रेसने कार्यकारिणी तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सारे अधि-कार गाँधीजीके सुपुर्द कर दिये और व्यक्तिगत सत्याग्रहको आगे बढ़ाने तथा सामूहिक सत्याग्रह और बारदोलीमें करबन्दी आन्दोलन प्रारम्भ करनेका भी अधिकार गाँधीजीको दिया। गाँधीजीने एक वर्षके अन्दर स्वराज्य प्राप्त करनेका वचन दिया था, यदि उनका बताया हुआ कार्यक्रम पूर्णतः पूरा कर दिया जाय। गाँधीजी बारदोली पहुँचकर करबन्दी आन्दोलनकी तैयारी करने लगे। सारे देशकी आँखें बारदोलीकी ओर थीं और उत्सुकतापूर्ण नेत्रोंसे लोग स्वराज्यकी आशा लगाये बैठे थे।

चौरीचौरा-काण्ड

ऐसे अवसरपर देशके एक कोनेमें गोरखपुर जिलेके चौरीचौरा थाने-पर जनताकी भीड़ने ५ फरवरी, १९२२ ई० को वहाँके थानेदार तथा २१ सिपाहियोंको थानेमें घेरकर आग लगा दी जिसमें वे सबके सब जलकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भस्म हो गये। उसके पूर्व प्रिंस आफ वेल्सके आगमनके अवसरपर बम्बई और मद्रासमें भी दंगे हो चुके थे और कुछ जानें गयी थीं। गाँधीजीने इसे चेतावनी समझा। हिंसाके वातावरणमें सामूहिक सत्याग्रह तथा करबन्दी आन्दोलन चल नहीं सकता। १२ फरवरीको बारदोलीमें कांग्रेस कार्यकारिणीकी बैठक हुई और व्यक्तिगत तथा सामूहिक सत्याग्रह अनिश्चित कालके लिए स्थगित कर दिया गया तथा चर्खेका प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा, मादक-द्रव्य-निषेध, कांग्रेसके सदस्य बनाना, पंचायत संगठित करना, आदिका एक विधायक कार्यक्रम बनाया गया। देशके अधिकतर कार्यकर्ताओंमें, जेलके अन्दर तथा बाहर, निराशाका वातावरण छा गया और दिल्लीके अखिल भारतीय कांग्रेसके अधिवेशनमें सत्याग्रह बन्द कर देनेके कारण बड़ा विरोध हुआ।

गवर्नमेण्टने सोचा कि इस समय गाँधीजीकी लोकप्रियता कम हो रही है, यही उन्हें गिरफ्तार करनेका सबसे अच्छा अवसर है और १३ मार्चको गाँधीजी गिरफ्तार कर लिये गये। १८ मार्चको प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुकदमेमें जजने यंग इण्डियाके तीन लेखोंपर गाँधीजीको ६ वर्षके कारावासका दण्ड दे दिया और गाँधीजी जेलके अन्दर बन्द हो गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आठवाँ प्रकरण

असहयोग आन्दोलनकी असफलता

१९२० ई०के अन्तमें माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारके अनुसार कौंसिलोंका चुनाव हुआ। कांग्रेसने उसका बहिष्कार किया, पर उदार दल, जमींदार दल तथा अन्य दलके लोगोंने चुनावमें भाग लिया। यद्यपि कांग्रेसके बहिष्कारके कारण बहुत कम वोटर वोट देने गये, कहीं-कहीं वोट डालनेके बक्स बिलकुल खाली थे, फिर भी कौंसिलें बन गयीं और नये सुधारके अनुसार कार्य होने लगा।

नये सुधारका उद्घाटन करनेके लिए सम्राट्के चचा ड्यूक आफ कनाट भेजे गये और उद्घाटन करते समय सम्राट्का सन्देश पढ़ा गया जिसमें कहा गया था:—

"वर्षोंसे, अपितु पीढ़ियोंसे देश-भक्त तथा राजभक्त भारतवासी अपनी मातृभूमिके लिए जिस स्वराजका स्वप्न देखते आ रहे थे, आज साम्राज्यके अन्तर्गत उस स्वराजका पूर्वरूप आपके सम्मुख है और जो स्वतन्त्रता हमारे अन्य उपनिवेशोंको प्राप्त है उसकी ओर बढ़नेके लिए पूर्ण सुअवसर एवं सुविधा आपको मिल रही है।"

नये शासन-सुधारके अनुसार केन्द्रमें कानून बनानेके लिए ६० सदस्यों-की एक राज्य-परिषद् तथा १४५ सदस्योंकी एक व्यवस्थापिका सभा बनायी गयी। व्यवस्थापिका सभामें ४० सदस्य सरकारी अथवा सर-कार द्वारा नामजद थे, शेष चुने हुए थे तथा राज्य-परिषद्में २६ सदस्य सरकारी अथवा नामजद तथा शेष चुने हुए थे; पर इनके चुनावके लिए ५ हजार रुपये मालगुजारी अथवा इनकम-टैक्सकी एक निश्चित रकम देनेवाले बड़े-बड़े लोग ही वोटर हो सकते थे। शासनकी जिम्मे-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दारी वाइसराय तथा उनकी कार्य-कारिणी समितिके ऊपर थी। प्रान्तोंमें द्वैध शासन स्थापित किया गया था और गवर्नरकी सहायताके लिए कार्य-कारिणीके सदस्य तथा मन्त्री थे। प्रान्तीय शासनके विभागोंमें कुछ विषय, जैसे सामान्य शासन, पुलिस, जेल, नहर, अर्थ आदि संरक्षित विषय थे जो कार्य-कारिणीके सदस्योंके हाथमें थे तथा शिक्षा, स्थानीय स्वराज, सहकारिता आदि विषय हस्तान्तरित थे जो मन्त्रियोंके हाथमें रखे गये। मन्त्री धारा-सभाओंके चुने हुए सदस्योंमेंसे गवर्नर द्वारा नियुक्त किये जाते थे तथा कार्य-कारिणीके सदस्य वाइसराय द्वारा।

कांग्रेसने प्रारम्भसे ही इन सुधारोंका विरोध किया और निर्वाचनमें भी भाग नहीं लिया। जमींदार, उदार दल आदिके लोग धारा-सभाओंके लिए सदस्य चुने गये और मन्त्री भी नियुक्त हुए तथा सुधारकी योजनाको सफल बनानेके लिए इन लोगोंने गवर्नमेण्टके साथ पूरा सहयोग किया। कांग्रेसके आन्दोलनको दबानेमें भी गवर्नमेण्टको इनसे सहायता मिली। कांग्रेस आन्दोलन जिस समय तेजीपर था, उदार अथवा लिबरल दलका गवर्नमेण्टमें बड़ा सम्मान था; पर गाँधीजीकी गिरफ्तारी और सजाके बाद आन्दोलन शिथिल पड़ जानेपर गवर्नमेण्टमें इनकी पूछ कम हो गयी।

बारदोलीमें गाँधीजी जो करबन्दीका आन्दोलन प्रारम्भ करनेवाले थे वह स्थगित कर दिया गया और जून, १९२२ ई०में लखनऊमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी बैठक हुई। उस समयतक देशबन्धु चित्तरंजन दास तथा पं० मोतीलाल नेहरू आदि जेलसे छूट चुके थे। इन लोगोंका विचार हुआ कि धारा-सभाओंमें प्रवेश करना चाहिये। गाँधीजीकी अनुपस्थितिमें सामूहिक सत्याग्रह अथवा करबन्दी आन्दोलन सम्भव नहीं था। भारतीय कांग्रेस कमेटीके निश्चयके अनुसार एक समिति इस उद्देश्यसे बनायी गयी कि वह देशका भ्रमण करके जाँच करे और राजनीतिक स्थितिके सम्बन्धमें अपनी रिपोर्ट दे। धारा-सभाओंके बहिष्कारके सम्बन्धमें समितिके सदस्योंमें मतभेद था। देशबन्धु,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दास, मोतीलाल नेहरू तथा विट्ठलभाई पटेलकी राय थी कि कांग्रेस-वालोंको निर्वाचनमें भाग लेना चाहिये, क्योंकि पहले चुनावमें धारा-सभाओंमें सरकारके सहयोगियोंके पहुँच जानेसे स्वराज तथा पंजाब और खिलाफतके प्रश्नोंके सुलझानेमें बाधा पड़ी और जनताका कष्ट बढ़ा। अतः स्वराज और पंजाब तथा खिलाफतके प्रश्नपर चुनाव लड़ना चाहिये और यदि चुनावमें इतने सदस्य असहयोगियोंमेंसे चुन लिये गये कि वे गण-पूर्ति होनेसे रोक सकें तो धारा-सभाओंमें न जायँ, जिससे उनका काम रुक जाय और यदि ऐसा न हो सके तो धारा-सभाओंमें जाकर सरकारके हर एक प्रस्तावका विरोध करें और बजट पास न होने दें तथा मन्त्रिमण्डल न बनने दें। श्री राजगोपालाचारी, डा० अनसारी तथा कस्तूरी रंग आयंगर कौंसिल-बहिष्कारके पूर्वके निश्चयमें कोई परिवर्तन नहीं चाहते थे।

कौंसिल-प्रवेशकी अनुमति

इस रिपोर्टके प्रकाशित होनेके बाद देशमें दो दल हो गये, एक परि-वर्तनवादियोंका जो धारा-सभाओंमें घुसकर उसे तोड़ना चाहते थे तथा दूसरा अपरिवर्तनवादियोंका जो पूर्णतः बहिष्कारके पक्षमें थे। दिसम्बर, सन् १९२२ ई० में गयामें देशबन्धु दासके सभापतित्वमें कांग्रेसका अधि-वेशन हुआ। दोनों दलोंमें जबरदस्त वाद-विवाद हुआ, पर कौंसिल-प्रवेशका प्रस्ताव पास न हो सका। देशबन्धु दासने कांग्रेसके सभापति-पदसे त्याग-पत्र दे दिया और पण्डित मोतीलाल नेहरू तथा बिट्ठलभाई पटेलके साथ मिलकर स्वराज-पार्टीका निर्माण किया और कौंसिल-प्रवेशके लिए देशमें आन्दोलन करने लगे। सितम्बर, सन् १९२३ ई० में दिल्लीमें कांग्रेसका विशेष अधिवेशन हुआ जिसमें कौंसिल-प्रवेशकी अनुमति दे दी गयी। यह निश्चय हुआ कि वे कांग्रेस-जन जिन्हें धारा-सभाओंमें प्रवेशके सम्बन्धमें कोई धार्मिक आपत्ति नहीं है, उम्मेदवार खड़े हो सकते हैं और वोट दे सकते हैं।

दिसम्बरमें धारा-सभाओंका चुनाव हुआ। बंगाल तथा मध्यप्रान्तकी धारा-सभाओंमें स्वराज-दलका बहुमत हुआ और वहाँ मन्त्रिमण्डल न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बन सका तथा द्वैध शासन स्थगित कर दिया गया। सब अधिकार गवर्नर-के हाथमें आ गया। केन्द्रीय धारा-सभामें स्वराज-दलका बहुमत तो न हो सका, पर यह सबसे बड़ा दल था तथा राष्ट्रीय दलके सहयोगसे कभी कभी इसका बहुमत भी हो जाया करता था। कई प्रस्तावोंपर सर-कारकी हार हुई। पण्डित मोतीलाल नेहरूका यह प्रस्ताव कि उत्तरदायी सरकार स्थापित करनेके लिए योजया बनानेके निमित्त एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाय, सरकारके प्रबल विरोधके होते हुए भी पास हुआ तथा दमनकारी कानूनोंके रद्द करने, राजनीतिक बन्दियोंके छोड़ने तथा सिख सम्प्रदायकी स्थितिकी जाँच करनेके लिए एक समिति नियुक्त करनेके सम्बन्धमें भी प्रस्ताव केन्द्रीय धारा-सभामें पास हुआ। यहाँ-तक कि बजट-सम्बन्धी कई माँगें भी धारा-सभाने अस्वीकृत कर दीं और वाइसरायने उन्हें अपने विशेषाधिकारसे स्वीकार किया। इस समय सिख सम्प्रदायमें गुरुद्वारोंके सुधारके सम्बन्धमें अकाली दलके नेतृत्वमें तीव्र आन्दोलन चल रहा था। जबसे सन् १९२१ ई०में नानकानाके महन्तने सैकड़ों सिख यात्रियोंकी हत्या करके उनकी लाशोंको जलती आगमें फेंकवा दिया और उसके विरुद्ध कोई काररवाई नहीं हुई, और फिर जब गुरुके बागमें सैकड़ों सिख गिरफ्तार करके जेलोंमें बन्द कर दिये गये, सिखोंमें तीव्र असन्तोष उत्पन्न हो गया था। सिख यह समझने लगे थे कि सरकार उन महन्तोंका पक्ष ले रही है जो सिखोंमें सुधारके विरोधी हैं। कई अवसरोंपर बहादुर सिखोंने अहिंसात्मक सत्याग्रहका ऐसा उज्ज्वल उदाहरण सामने रखा जैसा कहीं इतिहासमें न मिलेगा। अन्त-में गवर्नमेण्टको झुकना पड़ा और गुरुद्वारोंके सुधारका कानून पंजाबकी धारा-सभामें पास हुआ जिससे गुरुद्वारोंका प्रबन्ध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध समितिके हाथमें आया।

जनवरी सन् १९२४ ई० में गाँधीजी जेलमें सख्त बीमार पड़े। उनकी अँतड़ीके फोड़ेमें नश्तर लगा तथा फरवरीमें वे जेलसे छोड़ दिये गये। गाँधीजीके स्वस्थ होनेपर कौंसिल-प्रवेशके प्रश्नपर उनसे तथा मोतीलाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेहरू और देशबन्धु दाससे बातचीत हुई। गाँधीजीको वे लोग कौंसिल-प्रवेशके पक्षमें न कर सके, पर स्वराज-दलवालोंको कौंसिलमें कार्य करनेकी जो अनुमति मिली थी उसे गाँधीजीने भी स्वीकार कर लिया। अपरिवर्तनवादी कांग्रेसके रचनात्मक कार्यमें लग गये और स्वराज-दलके लोग धारा-सभाओंमें सरकारका विरोध करते थे।

पर इस समय हिन्दू और मुसलमानोंका आपसका वैमनस्य अधिक बढ़ गया। असहयोग आन्दोलनके समयमें आपसका जो प्रेम था वह अतीतका सपना हो गया। उस समय कहाँ तो स्वामी श्रद्धानन्दको दिल्लीकी जुमा मसजिदमें नमाजियोंकी सभामें बोलनेका अवसर मिला और हकीम अजमल खाँको हिन्दू महासभाके मंचपर और कहाँ इस समयकी स्थिति थी कि दिल्ली, गुलबर्गा, नागपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, जबलपुर, शाहजहाँपुर और कोहाटमें साम्प्रदायिक दंगे हुए और सैकड़ों जानें गयीं। कोहाटका दंगा बड़ा ही भीषण था जिसमें कितनी ही जानें गयीं और अन्तमें चार हजार हिन्दुओंको वहाँसे स्पेशल ट्रेनके द्वारा हटाया गया। हिन्दुओंमें शुद्धि और संगठनका जोर था और मुसलमानोंमें तबलीगका।

गाँधीजीका अनशन

गाँधीजीको इन झगड़ोंसे बड़ा क्षोभ हुआ। उन्होंने कहा कि इन झगड़ों और मार-पीट, हत्या आदिकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। इसका प्रायश्चित्त करनेके लिए उन्होंने २१ दिनका अनशन आरम्भ किया। भयंकर बीमारीके पश्चात् इस प्रकार अनशन प्रारम्भ कर देनेसे देशमें बड़ी चिन्ता उत्पन्न हो गयी। प्रायः सब वर्ग और सम्प्रदायके लोगोंका ऐक्य सम्मेलन हुआ और आपसमें एकतासे रहने तथा सद्भावना बढ़ानेका निश्चय किया गया।

जिस समय गाँधीजीने असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया था, क्रान्तिकारी दलके लोगोंने अपना आतंकवादी आन्दोलन स्थगित कर दिया था और गाँधीजीको आश्वासन दिया था कि वे अहिंसात्मक उपायोंसे देश-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
को स्वतन्त्र करनेका प्रयत्न करेंगे। वे लोग शान्त रहेंगे, पर यदि सफलता न मिली तो वे अपना आन्दोलन फिरसे प्रारम्भ कर देंगे। असहयोग आन्दोलनके शिथिल होनेपर क्रान्तकारी दलने अपना संगठन प्रारम्भ कर दिया और उनके दमनके लिए सरकार भी सतर्क हो गयी। बंगालमें तीव्र दमन प्रारम्भ हुआ और संयुक्त प्रान्त तथा पंजाबमें भी आतंकवादी आन्दोलनका जोर बढ़ने लगा।

नवम्बर, सन् १९२४ ई० में अनशन समाप्त होनेके थोड़े ही दिन पश्चात् बम्बईमें एक सर्वदल सम्मेलन हुआ जिसमें बंगालमें प्रवर्तित गवर्नमेण्टकी दमन-नीतिकी, जिसका मुख्य उद्देश्य वहाँ स्वराज-दलको दबाना प्रतीत होता था, निन्दा की गयी और दमनकारी कानूनोंको रद्द करनेकी माँग की गयी। स्वराज तथा साम्प्रदायिक समझौतेकी एक योजना शीघ्र तैयार करनेके लिए सब दलके लोगोंकी एक उपसमिति बनायी गयी।

मुडीमैन समितिकी स्थापना

पण्डित मोतीलाल नेहरूने धारा-सभामें राष्ट्रीय माँगके सम्बन्धमें यह प्रस्ताव किया कि एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाय जो देशमें उत्तरदायी सरकार स्थापित करनेकी योजना बनाये। गवर्नमेण्टने इस प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया, पर अपनी ओरसे तत्कालीन गृह-सदस्य मुडीमैनकी अध्यक्षतामें एक समिति यह देखनेके लिए कि प्रान्तोंमें द्वैध शासन कहाँतक सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है और सन् १९१९ ई० की सुधार-योजनामें क्या परिवर्तनकी आवश्यकता है, नियुक्त कर दी।

उस समय इंग्लैण्डमें श्रमजीवी-दलका मन्त्रिमण्डल स्थापित हो गया था और रैमजे मैकडानल्ड प्रधान मन्त्री नियुक्त हुए थे। उनसे हिन्दुस्तानको बड़ी आशा थी, क्योंकि श्रमजीवी-दल हिन्दुस्तानकी माँगोंका समर्थक समझा जाता था, पर इसी समय कमीशनकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें भारतमें उच्च सरकारी पदोंपर भारतीयोंको रखनेकी गति बहुत ही धीमी रखी गयी थी और ब्रिटिश गवर्नमेण्टने उसे ज्योंका त्यों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वीकार कर लिया। दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंके विरुद्ध एक कानून पास हुआ जिसके अनुसार शहरोंमें ऊँचे स्थानकी अच्छी जमीन भारतीय नहीं खरीद सकते थे और ब्रिटिश गवर्नमेण्टने इस कानूनको रोकनेका कोई प्रयत्न नहीं किया। कुछ ही महीनोंके शासनके बाद श्रमजीवी-दलका मन्त्रिमण्डल समाप्त हो गया और अनुदार दल पुनः अधिकारारूढ़ हुआ।

मुडीमैन कमेटीमें मतभेद हुआ, तीन अंग्रेज तथा दो भारतीय सदस्योंकी राय थी कि द्वैध शासनमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर देना पर्याप्त है, जिससे शासन ठीक प्रकारसे चलता रहे, पर शेष चार भारतीय सदस्योंकी राय थी कि द्वैध शासन चल नहीं सकता, इसे आमूल समाप्त कर देना चाहिये, पर गवर्नमेण्ट मुडीमैन कमेटीकी बहुमत रिपोर्टके अनुसार कार्य करनेको भी तैयार न थी और जब यह रिपोर्ट धारा-सभामें विचारके लिए उपस्थित की गयी, पण्डित मोतीलाल नेहरूने संशोधन उपस्थित किया कि पार्लमेण्टमें यह घोषणा की जाय कि भारतीय शासन-विधानमें इस प्रकार परिवर्तन किया जाता है जिससे यहाँ उत्तरदायी शासन स्थापित हो तथा सब दलके लोगोंका एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाय जो अल्पसंख्यक सम्प्रदायके हितोंका ध्यान रखते हुए शासन-विधानकी एक योजना तैयार करे और इस योजनाको धारा-सभाके स्वीकार कर लेनेपर इंग्लैण्डकी पार्लमेण्ट कानूनका रूप दे दे। यह संशोधन धारा-सभामें बहुमतसे स्वीकार हुआ, पर गवर्नमेण्टने इस सम्बन्धमें कोई कारवाई नहीं की।

इस समय लार्ड बर्केनहेड भारतमन्त्री थे। उन्होंने प्रारम्भमें स्वराज-दलकी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि यह दल हिन्दुस्तानमें सबसे सुसंगठित दल है। देशबन्धु दासने उनसे समझौतेके सम्बन्धमें लिखा-पढ़ी प्रारम्भ की और बंगाल प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलनके सभापतिके पदसे उन्होंने ब्रिटिश गवर्नमेण्टके साथ सहयोगका हाथ बढ़ाया। अपनी दक्षिण भारतकी यात्रामें उन्होंने कहा था कि सन् २१ ई० में जिस समय वे लोग जेलमें थे, गाँधीजीने लार्ड रीडिंगसे समझौता करनेके सम्बन्धमें दूर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दर्शितासे काम नहीं लिया, पर जून, सन् १९२५ ई० में देशबन्धु दासका देहान्त हो गया और जब धारा-सभाके उपर्युक्त प्रस्तावके अनुसार ब्रिटिश गवर्नमेण्टने कुछ नहीं किया तो पण्डित जवाहरलालको बड़ी निराशा हुई और उन्होंने कहा कि लार्ड बर्केनहेडने देशबन्धु दासके सम्मानप्रद सहयोगके प्रस्तावको ठुकरा दिया। अब यह स्पष्ट है कि हमें अपनी स्वतन्त्रताकी लड़ाईमें अनेक विघ्न-बाधाओंका सामना करना पड़ेगा, पर हमें अपने कार्यमें आगे बढ़ते जाना चाहिये।

साम्प्रदायिकताका विष

देशमें साम्प्रदायिकताका विष भी दिनपर दिन बढ़ता जा रहा था। दिल्ली, कलकत्ता, इलाहाबाद आदि शहरोंमें हिन्दू-मुसलमानोंके बीच दंगे हुए और आपसका वैमनस्य बहुत अधिक बढ़ गया। गाँधीजीने बड़े व्यथित हृदयसे हिन्दू-मुसलिम-समस्याके सम्बन्धमें कहा कि "मैं अपनी अयोग्यताको स्वीकार करता हूँ। मैं इस बीमारीकी उपयुक्त औषधि तजवीज करनेमें अपनेको असमर्थ पाता हूँ।" सन् १९२६ई०के प्रारम्भमें नये वाइसराय लार्ड अरविन आये। उन्होंने कहा कि मैं हिन्दू-मुसलमानों तथा भारत और ब्रिटेनके बीचमें सद्भावना स्थापित करनेके लिए सतत प्रयत्न करूँगा। कलकत्ता और दिल्लीमें उन्होंने दोनों सम्प्रदायके नेताओंको एकत्र भी किया, पर कोई सफलता नहीं प्राप्त हुई। इसी समय धारा-सभामें रुपयेका मूल्य १ शिलिंग ४ पेंसके स्थानमें १ शिलिंग ६ पेंस करनेका एक कानून गवर्नमेण्टकी ओरसे पेश किया गया। कांग्रेसके प्रबल विरोध करनेपर भी यह कानून पास हो गया। इससे इंग्लैण्डका बना माल सस्ता हो गया और भारतके वस्त्र-उद्योगपर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा; इससे भारतका औद्योगिक वर्ग कांग्रेसका समर्थक हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवाँ प्रकरण

साइमन कमीशनकी नियुक्ति तथा देशव्यापी असन्तोष

ब्रिटिश गवर्नमेण्टके प्रति असन्तोष दिनपर दिन बढ़ता जा रहा था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र वसुके नेतृत्वमें सारे देशमें युवकदलका संगठन होने लगा। देशको अंग्रेजी राज्यसे पूर्ण स्वतन्त्र करनेके लिए स्वतन्त्रता-संघकी स्थापना हुई। नवयुवकोंका ऐसा विचार था कि सम्भवतः कांग्रेस औपनिवेशिक स्वराज्यसे ही सन्तुष्ट हो जाय। क्रान्तिकारी आन्दोलनकी तीव्रता बढ़ने लगी। बंगाल, संयुक्तप्रान्त तथा पंजाबमें इस दलका संगठन सुदृढ़ होने लगा। इसके साथ-साथ सन् १९२६ और २७ ई० में भी हिन्दू और मुसलमानोंका वैमनस्य अधिक बढ़ा और कितने ही साम्प्रदायिक दंगे हुए जिनमें सैकड़ों जानें गयीं।

कमीशनके बहिष्कारका निश्चय

ऐसे ही अवसरपर इंग्लैण्डकी अनुदार दलकी सरकारने सर जॉन साइमनकी अध्यक्षतामें एक कमीशनकी नियुक्ति की। सन् १९१९ ई०के शासन-विधानके अनुसार दस वर्षके पश्चात् एक जाँच कमीशनकी नियुक्ति होनेवाली थी जो इस बातकी जाँच करता कि सन् १९१९ ई० के सुधार कहाँतक सफल हुए और उनमें क्या परिवर्तनकी आवश्यकता है। साइमन कमीशनमें सब अंग्रेज सदस्य रखे गये, एक भी भारतवासी न था। इससे भारतवर्षके नरम दलके राजनीतिज्ञ भी असन्तुष्ट हुए। कांग्रेसने साइमन कमीशनके बहिष्कारका निश्चय किया और गवर्नमेण्टके कट्टर समर्थक राजभक्तोंके अतिरिक्त प्रायः सभी राजनीतिक दलोंने इसका बहिष्कार किया। अमृतसर-काण्डके पश्चात् किसी प्रश्नपर सब राजनीतिक दलोंकी इस प्रकार एकता कभी नहीं हुई थी। मद्रास कांग्रेसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अधिवेशनमें निश्चय हुआ कि ब्रिटिश गवर्नमेण्टने भारतके आत्मनिर्णयके अधिकारका बिना ध्यान किये कमीशनकी नियुक्ति की है। अतः भारतके लिए आत्म-सम्मान-युक्त मार्ग यही है कि इस कमीशनका हर अवस्थामें तथा हर प्रकारसे बहिष्कार किया जाय। तदनुसार सारे देशमें कमीशन-का बहिष्कार हुआ और उसके विरुद्ध प्रदर्शन हुए। जगह-जगहपर प्रदर्शनकारियोंके विरुद्ध पुलिस द्वारा लाठीचार्ज हुआ और देशके सम्मानित नेता लाला लाजपतराय, पण्डित जवाहरलाल नेहरू और गोविन्द-वल्लभ पन्त भी पुलिसके लाठी-प्रहारसे न बच सके।

ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी ओरसे यह घोषणा की गयी कि केन्द्रीय धारा-सभाके चुने हुए सात सदस्योंकी एक कमेटी होगी जो साइमन कमीशन-के साथ मिलकर काम करेगी। दोनोंकी संयुक्त बैठकके सामने गवाहियाँ आदि होंगी और दोनों अपनी-अपनी रिपोर्ट तैयार करेंगे। कमीशन अपनी रिपोर्ट इंग्लैण्डकी पार्लमेण्टके सम्मुख उपस्थित करेगा और भारतीय कमेटी केन्द्रीय धारा-सभाके सम्मुख। इसी प्रकार प्रान्तीय प्रश्नोंके सम्बन्धमें प्रान्तीय धारा-सभाओंकी समितियाँ कमीशनके साथ सहयोग करेंगी, पर इस घोषणासे भी भारतमें सन्तोष नहीं हुआ और केन्द्रीय धारा-सभामें लाला लाजपतरायका यह प्रस्ताव बहुमतसे स्वीकृत हुआ कि केन्द्रीय धारा-सभाको कमीशनका निर्माण और उसकी योजना पूर्णतः अस्वीकार है और वह किसी अवस्था तथा किसी भी रूपमें कमीशनके साथ सहयोग न करेगी। केन्द्रीय धारा-सभाने समिति बनाने-से इनकार कर दिया, पर गवर्नमेण्टने अपनी ओरसे धारा-सभाके सात सदस्योंकी एक कमेटी नियुक्त कर दी जिसने कमीशनके साथ सहयोग किया और प्रान्तोंकी धारा-सभाओंने, जिनमें प्रायः जमींदारदलका बहुमत था, कमीशनके साथ सहयोग करनेके लिए कमेटियाँ नियुक्त कीं।

शासनकी नेहरू-योजना

भारत-मन्त्री लार्ड बर्कनहेडने अपने एक भाषणमें यह चुनौती दी थी कि भारतवासी शासन-विधानका एक मसविदा क्यों नहीं तैयार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करते। उसपर भी विचार किया जा सकता है। अतः मद्रास कांग्रेसके निर्णयके अनुसार फरवरी-मार्च, सन् १९२८ ई०में दिल्लीमें एक सर्व-दल-सम्मेलन बुलाया गया। उसमें यह निश्चय हुआ कि पूर्णतः उत्तरदायी सरकारके आधारपर एक शासन-विधान बनाया जाय। सम्मेलनकी कई बैठकें हुईं और उनमें साम्प्रदायिक समस्यापर विचार हुआ तथा पण्डित मोतीलाल नेहरूकी अध्यक्षतामें एक कमेटी शासन-विधानका मसविदा तैयार करनेके लिए नियुक्त की गयी। अगस्तमें नेहरू-योजना तैयार हो गयी। इसके अनुसार उत्तरदायित्वपूर्ण शासनका मसविदा औपनिवेशिक स्वराज्यके ढंगपर तैयार किया गया, पर सेना और रक्षाके सम्बन्धमें वाइसराय द्वारा नियुक्त एक कमेटीके हाथमें अधिकार दिया गया था। साम्प्रदायिक प्रश्नके सम्बन्धमें तजवीज थी कि संयुक्त निर्वाचन-प्रणालीके अनुसार चुनाव हो और अल्पसंख्यकोंके लिए स्थान सुरक्षित रखे जायँ, पर सर्वदल-सम्मेलनमें इस योजनाके सम्बन्धमें एकमत न हो सका। कांग्रेसमें भी ऐसे लोगोंका जोर बढ़ रहा था जो केवल औपनिवेशिक स्वराज्यसे सन्तुष्ट नहीं थे, किन्तु पूर्ण स्वतन्त्रताके आधारपर देशका शासन-विधान तैयार करना चाहते थे।

बारदोलीमें करबन्दीका आन्दोलन

इस समय देशमें एक और महत्त्वपूर्ण घटना हुई। यह बारदोलीका करबन्दी आन्दोलन था। सूरत जिलेके बारदोली तालुकेको गाँधीजीने सन् १९२१ ई० में भी करबन्दी आन्दोलनके लिए चुना था, किन्तु चौरीचौरा-काण्डके कारण गाँधीजीने करबन्दीका आन्दोलन स्थगित कर दिया। सन् १९२८ ई०में सूरत जिलेमें बन्दोबस्त हुआ और सरकारी मालगुजारी लगभग २५ प्रतिशत बढ़ा दी गयी। बारदोलीके किसानोंने यह माँग की कि एक निष्पक्ष जाँच कमेटी नियुक्त की जाय जो वहाँकी आर्थिक स्थिति, पदार्थोंके मूल्य आदिके सम्बन्धमें जाँच करके रिपोर्ट दे कि मालगुजारी बढ़ाना उचित है या नहीं, पर गवर्नमेण्टने एक न सुनी और बढ़ी हुई मालगुजारी वसूल करना प्रारम्भ कर दिया। किसानोंने देनेसे इनकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कर दिया और सरदार वल्लभभाई पटेलके नेतृत्वमें करबन्दीका आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। गवर्नमेण्टकी ओरसे सख्तीका बर्ताव किया गया, सामानोंकी कुर्कियाँ हुई। पठान नौकर रखे गये जिन्होंने और ज्यादती की। जमीन जब्त की गयी, पर किसानोंसे मालगुजारी वसूल न की जा सकी। असन्तोष अधिक बढ़ा। धारा-सभाके कुछ सदस्योंने त्याग-पत्र दिया। केन्द्रीय धारा-सभाके अध्यक्ष सरदार विट्ठलभाई पटेलने त्याग-पत्रकी धमकी दी। अन्तमें गवर्नमेण्टने जाँचकी एक कमेटी नियुक्त की। कमेटीके अध्यक्ष जज ब्लूमफील्ड थे जिन्होंने गाँधीजीको सजा दी थी। एक तीसरे व्यक्तिने बढ़ी हुई मालगुजारी जमा कर दी थी। कमेटीका फैसला हुआ कि मालगुजारी केवल सवा छः प्रतिसैकड़ा बढ़नी चाहिये। इस प्रकार बारदोलीके किसानोंकी विजय हुई। उसी समय पटेलको करबन्दीके आन्दोलनमें उनके सफल नेतृत्वके लिए सरदारकी उपाधि मिली।

नेहरू-कमेटीकी जो योजना थी उसके सम्बन्धमें यह निश्चय हुआ था कि सर्वदल-सम्मेलनसे उसकी स्वीकृति ली जायगी, पर दिसम्बर, सन् १९२८ ई० में कलकत्तामें जो कनवेन्शन हुआ उसमें कुछ निश्चय न हो सका और कनवेन्शन स्थगित हो गया, पर कांग्रेसने यह निश्चय किया कि यदि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ३१ दिसम्बर, सन् १९२९ ई० तक नेहरू-कमेटीकी योजनाको ज्योंका त्यों मान लेती है तो कांग्रेस उसे स्वीकार कर लेगी, पर यदि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट उसे स्वीकार नहीं करती तो कांग्रेस देशमें अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलनकी तैयारी करेगी। अभीतक गाँधीजी कांग्रेससे पृथक् होकर रचनात्मक कार्यक्रममें लगे थे। कलकत्ता कांग्रेसमें वे फिर सम्मिलित हो गये और देशकी बागडोर अपने हाथमें ले ली।

अप्रैल सन् १९२९ ई० में साइमन कमीशनने भारतमें अपना कार्य समाप्त किया और इंग्लैण्ड वापस जाकर अपनी रिपोर्ट तैयार की। साइमन कमीशनके साथ-साथ कार्य करनेके लिए एक भारतीय कमेटी भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनी थी जिसमें राज्य-परिषद्के चुने हुए चार सदस्य तथा भारतीय व्यवस्थापिका सभाके नामजद किये हुए पाँच सदस्य थे। इसके सिवा गवर्नमेण्टकी ओरसे देशी राज्योंके सम्बन्धमें बटलर कमेटी तथा भारतवर्षमें शिक्षाकी प्रगतिके सम्बन्धमें जाँच करनेके लिए हारटोग कमेटी नियुक्त की गयी थी। इन कमेटियोंने भी अपनी-अपनी रिपोर्ट पार्लमेण्टको दी, पर मई, सन् १९२९ ई० में चुनावके परिणामस्वरूप इंग्लैण्डमें मजदूर दलका मन्त्रिमण्डल स्थापित हुआ तथा रैम्जे मैकडानल्ड दूसरी बार फिर मन्त्री हुए। भारतके वाइसराय लार्ड अरविन चार मासकी छुट्टी लेकर इंग्लैण्ड गये ताकि वे मन्त्रिमण्डलसे परामर्श कर सकें और कोई ऐसा उपाय निकल आये जिससे पार्लमेण्टमें सुधारकी योजना पेश होनेके पहिले भारतीय राजनीतिक दलोंका उसके लिए अधिकसे अधिक समर्थन प्राप्त हो सके।

सन् १९२८ ई० के उत्तरार्द्धमें गवर्नमेण्टकी ओरसे दो बिल धारासभामें उपस्थित किये गये थे, एक रिजर्व बैंक बिल तथा दूसरा जनसुरक्षा बिल; पर वे दोनों बिल पास न हो सके। रिजर्व बैंक बिलकी एक धाराके सम्बन्धमें गवर्नमेण्टकी हार हो जानेके कारण वह स्थगित कर दिया गया और जन-सुरक्षा बिल अध्यक्षके वोटसे गिरा दिया गया। सन् १९२९ ई० के प्रारम्भमें गवर्नमेण्टने उसे फिर पेश किया। इस समयतक सारे देशके कुछ मजदूर संघके कार्यकर्ता साम्यवादी होनेके कारण गिरफ्तार कर लिये गये और मेरठ केस प्रारम्भ हो गया था। इस समय मजदूरोंकी हड़तालें बढ़ रही थीं और गवर्नमेण्टको सन्देह हो रहा था कि साम्यवादी दलका जोर बढ़ रहा है जो हिंसात्मक क्रान्तिके द्वारा गवर्नमेण्टको पलट देना चाहता है। जन-सुरक्षा बिल विशेषतः साम्यवादियोंके दमनके लिए बनाया जा रहा था, पर धारा-सभाके अध्यक्षने इसपर विचार करनेकी अनुमति नहीं दी। इसका कारण यह बताया कि इस बिलपर धारा-सभामें स्वतन्त्र रूपसे विचार नहीं हो सकता, क्योंकि इसी तरहका एक प्रश्न न्यायालयके सामने विचाराधीन है। इस बिलके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सम्बन्धमें जो भाषण होंगे उनका प्रभाव मेरठ केसपर पड़ सकता है। अन्तमें वाइसरायको अपने विशेष अधिकारसे इस सम्बन्धमें आर्डिनेन्स बनाना पड़ा। गवर्नमेण्टकी ओरसे दमनचक्रकी गति तीव्र हो गयी और सारे देशमें कितनी ही गिरफ्तारियाँ हुई। धारा-सभामें मजदूरोंके झगड़ोंके सम्बन्धमें एक ट्रेड डिस्प्यूटस बिल भी पास हुआ। जिस समय यह बिल पास हुआ उसीके पश्चात् दो नवयुवकोंने असेम्बलीमें बम फेंका जिससे कुछ लोगोंको साधारण चोटें आयीं। ये दोनों नवयुवक—भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त—गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें आजन्म कारावासका दण्ड मिला।

औपनिवेशिक स्वराज्य-सम्बन्धी घोषणा

अक्टूबर, सन् १९२९ ई० में इंग्लैण्डसे वापस आनेपर वाइसराय लार्ड अरविनने ३१ अक्टूबरको एक घोषणा की कि भारतवर्षमें औपनिवेशिक स्वराज्य उपस्थित करना गवर्नमेण्टका उद्देश्य है और साइमन कमीशन तथा भारतीय केन्द्रीय समितिकी रिपोर्ट प्रकाशित होनेके पश्चात् ब्रिटिश गवर्नमेण्टके प्रतिनिधियों तथा भारत और देशी राज्योंके प्रतिनिधियोंका एक सम्मेलन होगा और आपसमें अधिकसे अधिक जिन प्रश्नोंपर सब एकमत हो सकेंगे उसके आधारपर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट पार्लमेण्टमें सुधारका मसविदा पेश करेगी।

इस घोषणाके पश्चात् तुरन्त ही नेताओंकी एक बैठक हुई जिसके निश्चयके अनुसार एक घोषणा प्रकाशित की गयी। इसमें ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी नेकनीयती तथा भारतीय जनमतको सन्तुष्ट करनेकी उसकी इच्छाकी प्रशंसा की गयी और यह कहा गया कि यदि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारतकी आवश्यकताओंके अनुरूप औपनिवेशिक स्वराज्यका मसविदा तैयार करे तो उसमें सहयोग दिया जा सकता है, पर देशके मुख्य राजनीतिक दलोंका सहयोग प्राप्त करनेके लिए आवश्यक है कि शान्त वातावरण उपस्थित करनेके लिए समझौतेकी नीति बरती जाय, सब राजनीतिक बन्दी छोड़ दिये जायँ और सम्मेलनमें राजनीतिक दलोंका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो तथा अखिल भारतीय कांग्रेसके प्रतिनिधियोंका बाहुल्य हो। इसके साथ-साथ यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि जो सम्मेलन बुलाया जा रहा है वह इसलिए नहीं कि वह बहस करे कि कब औपनिवेशिक स्वराज्य स्थापित होगा, बल्कि सम्मेलन औपनिवेशिक स्वराज्यका मसविदा तैयार करेगा और गवर्नमेण्टका काम भी अभीसे इस दृष्टिसे होना चाहिये कि शासन-परिषद् तथा धारा-सभामें सद्भावना हो और दोनोंमें इस प्रकारका सम्बन्ध स्थापित हो जैसा सम्बन्ध करना सम्मेलनका उद्देश्य है तथा जनताको भी यह अनुभव होने लगे कि नये युगका प्रारम्भ हो रहा है।

पर गवर्नमेण्टकी ओरसे इस प्रकारकी कोई कारवाई नहीं हुई। राजनीतिक बन्दी छोड़े नहीं गये। सन् १९१५ ई० के लाहौर षड्यन्त्र केसके तथा सन् १९१९ ई० के सैनिक-शासनके बन्दी भी अभीतक जेलमें थे। गाँधीजीको अंग्रेज मित्र बराबर तार दे रहे थे कि इंग्लैण्डकी मजदूर सरकार भारतके हितके लिए कार्य करना चाहती है। उन्हें उसके साथ सहयोग करना चाहिये। गाँधीजीने कहा कि मैं तो सहयोगके लिए प्रयत्न कर रहा हूँ। यदि वास्तवमें हृदय-परिवर्तन हो और अंग्रेज हिन्दुस्तानको स्वतन्त्र करनेके इच्छुक हों, सरकारी अफसरोंके हृदयमें सेवाका भाव हो तो मैं औपनिवेशिक स्वराज्यके शासन-विधानकी प्रतीक्षा कर सकता हूँ, पर वास्तवमें औपनिवेशिक स्वराज्यके अनुसार अभीसे कार्य होना चाहिये।

सरकारकी दोरुखी नीति

यद्यपि वाइसरायकी घोषणामें कुछ अधिक सार नहीं था, पर इतनेपर ही इंग्लैण्डकी पार्लमेण्टमें बड़ा होहल्ला मचा और अनुदार दलके सदस्योंकी ओरसे कहा जाने लगा कि भारतको बहुत अधिक अधिकार दिया जा रहा है। भारत-मन्त्री श्री बेन एक ओर भारतवासियोंसे तो कहते थे कि नीतिमें परिवर्तन किया जा रहा है, दूसरी ओर पार्लमेण्टके सदस्योंको सन्तुष्ट करनेके लिए कहते थे कि नीतिमें कोई परिवर्तन नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हुआ है। जो कुछ हो रहा है वह सन् १९१९ ई० के कानूनकी भूमिका के अनुसार ही हो रहा है।

कांग्रेसमें पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र वसुके नेतृत्वमें नवयुवकदल पूर्ण स्वतन्त्रताका पक्षपाती था और लाहौर कांग्रेस-में इसकी घोषणा कर देना चाहता था। मोतीलाल नेहरू भी भारत सरकारकी द्विमुखी नीतिसे बहुत असन्तुष्ट थे। कलकत्ता काग्रेसमें औप-निवेशिक स्वराज्य स्थापित करनेके लिए एक वर्षका जो समय दिया गया था वह भी समाप्त हो रहा था। चारों तरफ यह चर्चा होने लगी कि यदि ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी ओरसे कोई आश्वासन न मिला तो लाहौर कांग्रेसमें पूर्ण स्वतन्त्रताका प्रस्ताव पास हो जायगा।

वाइसरायने गाँधीजी तथा मोतीलाल नेहरूको दिल्लीमें बातचीतके लिए बुलाया। २३ दिसम्बरको वाइसराय भवनमें बातचीत हुई। वाइसराय दक्षिण भारतकी यात्राके लिए गये हुए थे। विशेषकर इसी वार्तालापके लिए उसी दिन वापस आये। रास्तेमें दिल्लीसे एक मीलपर रेलमार्गपर एक बम फूटा। वाइसराय और उनके दलके लोग बच गये। केवल एक नौकरको साधारण चोट आयी। इस दुर्घटनासे बचकर दिल्ली पहुँचनेके एक घण्टेके अन्दर ही नेताओंसे बातचीत हुई। वाइसरायने बहुत शान्त और प्रसन्न चित्तसे बातचीत आरम्भ की। उन्होंने पहिले राजनीतिक बन्दियोंका प्रश्न छेड़ा, पर गाँधीजीने औपनिवेशिक स्वराज्यका प्रश्न उठाया। वे इस बातका आश्वासन चाहते थे कि गोलमेज सम्मेलन-में औपनिवेशिक स्वराज्यकी योजनापर विचार होगा। वाइसराय इस प्रकारका कोई आश्वासन देनेको तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा कि गवर्न-मेण्टकी घोषणामें जो कुछ भी कहा गया है उससे अधिक जानेको वे तैयार नहीं हैं और न वे गोलमेज सम्मेलनके निमन्त्रणमें ही औपनि-वेशिक स्वराज्यका कोई वचन दे सकते हैं। अतः वार्ता भंग हो गयी और ऐसे वातावरणमें लाहौर कांग्रेसका अधिवेशन हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दसवाँ प्रकरण

सत्याग्रह आन्दोलनका सूत्रपात

पण्डित जवाहरलाल नेहरूकी अध्यक्षतामें लाहौरमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ और ३१ दिसम्बर, सन् १९२९ ई० को अर्द्ध रात्रिके पश्चात् बड़े जोश और उत्साहके वातावरणमें पूर्ण स्वतन्त्रताका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इस निश्चयके अनुसार नेहरू कमेटीकी योजना जिसके अनुसार १ सालके अन्दर औपनिवेशिक स्वराज्यकी माँग की गयी थी, रद्द कर दी गयी और कांग्रेसका ध्येय पूर्ण स्वतन्त्रता स्वीकार किया गया। धारा-सभाके सदस्योंको त्याग-पत्र देने तथा किसी भी निर्वाचनमें योग न लेनेके लिए आदेश दिया गया और अखिल भारतीय कांग्रेस समितिको अधिकार दिया गया कि आवश्यकतानुसार वह सत्याग्रह तथा करबन्दीका आन्दोलन प्रारम्भ करे।

स्वतन्त्रताकी घोषणा

२६ जनवरी, सन् १९३० ई० को कांग्रेस कार्यकारिणी समितिके निर्णयके अनुसार सारे देशमें स्थान-स्थानपर सभाएँ करके स्वतन्त्रताकी घोषणा पढ़ी गयी। जिस उत्साहके साथ यह दिवस मनाया गया उससे स्पष्ट हो गया कि जनताके हृदयमें किस प्रकार स्वतन्त्रता तथा त्यागकी भावना छिपी हुई थी। इसके साथ ही साथ २५ जनवरीको वाइसरायका एक भाषण धारा-सभामें हुआ जिससे यदि किसीके हृदयमें समझौतेकी आशा रही तो वह भी नष्ट हो गयी। वाइसरायने अपने भाषणमें कहा कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट जो सम्मेलन बुलाने जा रही है वह इस तरहका सम्मेलन नहीं है, जैसा कुछ लोग चाहते हैं कि वह बहुमतसे भारतीय शासन-विधानकी योजना तैयार कर दे और पार्लमेण्ट उसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज्योंका त्यों स्वीकार कर ले, बल्कि यह सम्मेलन इसलिए बुलाया जा रहा है कि भारतके लोगोंका मत मालूम हो जाय और ब्रिटिश गवर्नमेंण्ट पार्लमेण्टके सामने जो प्रस्ताव रखना चाहती है उसे तैयार करनेमें सुविधा मिले। तात्पर्य यह कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारतको अपना भाग्य-निर्णय करनेका अधिकार देनेको तैयार नहीं थी।

कांग्रेसकी ओरसे सत्याग्रह आन्दोलनकी तैयारी होने लगी और गाँधीजीको सत्याग्रह करनेका अधिकार दिया गया। गाँधीजीने निश्चय किया कि वे अपने साथियोंके साथ समुद्र-तटपर जाकर कानूनके विरुद्ध नमक तैयार करेंगे और इस प्रकार नमक सत्याग्रहका सूत्रपात होगा, पर सत्याग्रह प्रारम्भ करनेके पहिले गाँधीजीने वाइसरायको एक पत्र लिखा और उसे एक नवयुवक कांग्रेसीके हाथ भेजा। उस पत्रमें उन्होंने ब्रिटिश शासनकी बुराइयोंका उल्लेख करते हुए उन्हें दूर करनेका निवेदन किया। इसके साथ-साथ उस पत्रमें यह भी लिखा कि यदि वे बुराइयाँ दूर नहीं की जातीं तो ११ मार्चको वे अपने ७९ साथियोंके साथ पश्चिमी समुद्र-तटपर दाण्डीके लिए प्रस्थान करेंगे और वहाँ नमक सत्याग्रह प्रारम्भ किया जायगा।

गाँधीजीकी दाण्डीयात्रा

वाइसरायके यहाँसे कोई सन्तोष-जनक उत्तर न पानेपर गाँधीजीने दाण्डीके लिए अपनी ऐतिहासिक पैदल यात्रा प्रारम्भ की। मार्गमें स्थान-स्थानपर उनका स्वागत होता था और सभाएँ होती थीं। सैकड़ों पटेल तथा तलाटियोंने त्याग-पत्र दे दिये। गाँधीजी बराबर इस बातपर जोर देते रहे कि जबतक वे नमक कानूनको न तोड़ें तबतक कहीं सत्याग्रह प्रारम्भ न हो। गाँधीजीको दाण्डी पहुँचनेमें २४ दिन लगे। इस अवधिमें सारे देशमें उत्साहकी एक लहर फैल गयी। ६ अप्रैलको गाँधीजीके द्वारा नमक कानून तोड़नेपर सारे देशमें नमक-कानून तोड़ा जाने लगा और सत्याग्रह युद्ध प्रारम्भ हो गया। बड़े-बड़े शहरोंमें बड़ी-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़ी सभाएँ हुईं और मद्रास, पेशावर, कराची आदि कई शहरोंमें गोलियाँ चलीं ।

गवर्नमेण्टकी ओरसे दमन जोरके साथ प्रारम्भ हुआ । वाइसरायने एकके बाद दूसरे कई आर्डिनेन्स जारी किये । समाचार-पत्रोंपर बन्दिश लगा दी गयी । सन् १९१० ई० का पुराना प्रेस-सम्बन्धी कानून फिरसे जारी कर दिया गया । कई राष्ट्रीय पत्र बन्द हो गये अथवा साइक्लो-स्टाइलसे निकलने लगे । सत्याग्रही गिरफ्तार किये जाने लगे ।

गाँधीजीने अपने सत्याग्रही स्वयंसेवकोंके साथ धरसानाके नमक गोदामपर धावा करनेका निश्चय किया और ५ मईको वे गिरफ्तार करके यरवदा जेलमें बन्द कर दिये गये । उनके पश्चात् अब्बास तैयबजी तथा इमाम साहबके नेतृत्वमें नमक गोदामपर धावे हुए । वे भी गिरफ्तार कर लिये गये और पुलिसकी ओरसे स्वयंसेवकोंपर बड़ी निर्दयताके साथ लाठीचार्ज किया गया । गाँधीजीकी गिरफ्तारीपर सारे देशमें हड़ताल हुई । बम्बईकी कपड़ेकी मिलोंमें हड़ताल हो गयी और वस्त्र-व्यापारियोंने भी सात दिनकी हड़ताल की । गाँधीजीकी गिरफ्तारीका प्रभाव देशके बाहर भी पड़ा और अमरीकाके १०२ पादरियोंने इंग्लैण्डके प्रधान मन्त्रीसे अपील की कि वे भारत तथा गाँधीजीके साथ समझौता कर लें ।

कांग्रेसकी कार्यकारिणीने यह निश्चय किया कि विदेशी कपड़े और ब्रिटिश मालका बहिष्कार किया जाय । दुकानोंपर स्वयंसेवक धरना देकर विदेशी कपड़ोंकी बिक्री बन्द करा दें । विदेशी कपड़ेके लिए दुकान-दार जो आज्ञा दे चुके हैं उसे रद्द कर दें और जो माल आ चुका है उसकी बिक्री भी बन्द कर दी जाय तथा गैरकानूनी तरीकेसे नमक बनाया जाना जारी रखा जाय ।

गुजरात प्रान्तमें नमक गोदामपर सत्याग्रही स्वयंसेवकोंके बराबर धावे होते रहे और सैकड़ोंकी संख्यामें स्वयंसेवक गिरफ्तार किये गये तथा लाठीसे तितर-बितर किये गये । स्वयंसेवकोंके प्रति पुलिसके दुर्व्य-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वहारसे देशमें बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ। विदेशी संवाददाताओंने भी अपने संवादोंमें पुलिसकी मार-पीटका बड़ा करुणा-जनक वर्णन किया। धरसानाके नमक गोदामके धावेके सम्बन्धमें एक विदेशी संवाददाताने लिखा था कि अपने १८ वर्षके संवाददाताके जीवनमें २२ देशोंका उसे अनुभव था। उसने ऐसी निर्दयताका व्यवहार तथा करुणा-जनक दृश्य कभी नहीं देखा था।

जार्ज स्लोकोम्बका प्रयत्न

इंग्लैण्डके मजदूर-दलके मुख्य पत्र डेली हेरल्डके संवाददाता श्री जार्ज स्लोकोम्बने गाँधीजीसे जेलमें मुलाकात की और अपने पत्रमें लिखा कि गाँधीजीसे अब भी इन शर्तोंपर समझौता हो सकता है—(१) गोलमेज सम्मेलनके विचारणीय विषयमें स्वतन्त्रताके आधारपर भारतीय शासन-विधान तैयार करना भी सम्मिलित कर लिया जाय, (२) नमक-कर, शराब-बन्दी तथा विदेशी कपड़ेकी रोकके सम्बन्धमें गाँधीजीके लिए सन्तोषप्रद कारवाई की जाय, (३) सत्याग्रह बन्द किये जाने-पर सब राजनीतिक बन्दी छोड़ दिये जायँ तथा (४) गाँधीजीकी अन्य शर्तोंके सम्बन्धमें वाइसरायसे बादको बातचीत हो।

पर गवर्नमेण्टकी ओरसे आन्दोलनको दबानेके लिए सख्ती बढ़ने लगी। जेल और जुर्मानेकी सजाके अतिरिक्त स्वयंसेवकोंके ऊपर लाठी-चार्ज एक साधारण बात थी, फिर भी आन्दोलनकी तीव्रतामें कमी नहीं हुई। हजारों महिलाएँ स्वयंसेविकाएँ बनकर शराब तथा विदेशी कपड़ेकी दुकानोंपर धरना देने लगीं। हजारों गाँठ कपड़े बन्दरगाहोंमें पड़े रहे और व्यापारी उन्हें लेनेको तैयार नहीं थे। व्यापारियोंकी दुकानों-में जो विदेशी कपड़े पड़े थे वे सील-मुहर कर दिये गये। ज्यों-ज्यों बहिष्कारकी गति तीव्र होती गयी त्यों-त्यों गवर्नमेण्टका दमन भी तीव्र होता गया। गवर्नमेण्टने ३० जूनको, कांग्रेस कार्यकारिणी समितिको गैर-कानूनी घोषित कर दिया और बड़े नेताओंमें पण्डित मोतीलाल नेहरू बचे हुए थे वे भी गिरफ्तार कर लिये गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस समय स्लोकोम्बके प्रयत्नसे एक बार कांग्रेस और गवर्नमेण्टके बीच समझौतेकी बातचीत छिड़ी। स्लोकोम्बने सप्रू-जयकरको बीच-बचाव करनेके लिए तैयार किया। इन लोगोंने वाइसरायसे अनुमति ली और जेलमें गाँधीजी, मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल नेहरूसे जुलाई और अगस्तमें बारी-बारीसे मिले तथा फिर यरवदा जेलमें इन सब नेताओंका १४ अगस्तको सम्मेलन हुआ और जिन शर्तोंपर गवर्नमेण्टसे समझौता हो सकता था वे शर्तें सप्रू और जयकरको दी गयीं। उन लोगोंने वाइसरायसे लिखा-पढ़ी की, पर वाइसराय उन शर्तोंको माननेके लिए तैयार न थे। अतः समझौता न हो सका। इस समयतक वाइसराय अपने विशेष अधिकारसे १२ आर्डिनेन्स जारी कर चुके थे।

इधर सत्याग्रह आन्दोलनको दबानेके लिए जेल, जुर्माने, गोली और लाठीका प्रयोग किया जा रहा था, उधर यह भी अनुभव किया जा रहा था कि भारतीय राष्ट्रीय भावनाओंको दबाना सम्भव नहीं है। वाइसरायने कलकत्ताके भाषणमें कहा कि चाहे हम सत्याग्रह आन्दोलनकी कितनी ही निन्दा करें, पर हमारी यह बड़ी भारी भूल होगी यदि हम भारतीय विचारोंमें राष्ट्रीयताकी जो भावना ओत-प्रोत हो रही है, उसका ठीक प्रकारसे मूल्यांकन न करें। अतः इस नीतिके अनुसार गोलमेजकी भी तैयारी होती रही। वाइसरायने कांग्रेसके अतिरिक्त अन्य दलके नेताओंको लन्दनमें गोलमेज सम्मेलनके लिए आमन्त्रित किया और १२ नवम्बर, सन् १९३० ई०से सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें ५७ प्रतिनिधि ब्रिटिश भारतके तथा १६ देशी राज्योंके सम्मिलित हुए। १२ प्रतिनिधि इंग्लैण्डके भिन्न-भिन्न दलोंके थे। सम्मेलनमें यह सिद्धान्त स्वीकार किया गया कि भारतमें संघ-शासन स्थापित किया जाय। भिन्न-भिन्न प्रश्नोंपर विचार करनेके लिए भिन्न-भिन्न समितियाँ बना दी गयीं।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीकी घोषणा

सम्मेलनका अन्तिम अधिवेशन १९ जनवरी, सन् १९३१ ई०को हुआ। उसमें इंग्लैण्डके प्रधान मन्त्रीने यह घोषणा की कि ब्रिटिश गवर्न-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
मेण्टकी रायमें भारतके शासनकी जिम्मेदारी केन्द्रीय तथा प्रान्तीय धारा-सभाओंके हाथमें होगी। केन्द्रीय धारा-सभामें देशी राज्यों तथा प्रान्तोंके प्रतिनिधि होंगे और मन्त्रिमण्डल धारा-सभाके प्रति उत्तरदायी होंगे। केवल रक्षा तथा वैदेशिक विभाग संरक्षित विभाग होंगे तथा देशमें शान्ति, आर्थिक व्यवस्था और अल्पसंख्यकोंके अधिकारोंकी रक्षाकी विशेष जिम्मेदारी वाइसरायकी होगी और इनके सम्बन्धमें उन्हें विशेष अधिकार होगा, पर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट इस बातका ध्यान रखेगी कि विशेष अधिकारोंका प्रयोग इस प्रकार हो जिससे नये शासन-विधानके अनुसार भारतमें पूर्ण उत्तरदायी शासनकी प्रगतिमें कोई बाधा न पड़े।

इस घोषणाके पश्चात् २५ जनवरीको लार्ड अरविनने कांग्रेस कार्य-कारिणी समितिपरसे प्रतिबन्ध उठा लिया और उसके सब सदस्य जेलसे मुक्त कर दिये गये ताकि वे प्रधान मन्त्रीकी घोषणाके सम्बन्धमें स्वतन्त्र रूपसे विचार कर सकें। गाँधीजी वाइसरायसे मिले और लगभग तीन सप्ताहकी बातचीतके पश्चात् ५ मार्च, सन् ३१ ई०को गाँधी-अरविन समझौता हुआ। इस समझौतेके अनुसार सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया गया और कांग्रेस-प्रतिनिधि दूसरे गोलमेज सम्मेलनमें शामिल होंगे, यह आश्वासन दिया गया। सत्याग्रही बन्दी छोड़ दिये गये, शराब तथा विदेशी कपड़ोंकी दुकानोंपर शान्तिके साथ धरना देने तथा समुद्रतटके निवासियोंको अपने प्रयोगके लिए नमक एकत्र करनेकी स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। कांग्रेस कमेटियोंपरसे प्रतिबन्ध उठा लिये गये और कांग्रेस वैध संस्था होकर कार्य करने लगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्यारहवाँ प्रकरण

सन् १९३२ ई०का स्वतन्त्रताका आन्दोलन

गाँधी-अरविन विराम-सन्धिके थोड़े ही दिन बाद ५ वर्षकी अवधि पूर्ण हो जानेपर लार्ड अरविनका कार्यकाल समाप्त हो गया। वे इंग्लैण्ड चले गये तथा उनकी जगहपर लार्ड विलिंगडन नये वाइसराय होकर आये। सरकारी अधिकारी समझौतेसे प्रसन्न नहीं थे। वे समझते थे कि इससे सरकारकी प्रतिष्ठाको बड़ा धक्का लगा। कांग्रेसवालोंके हृदयमें बड़ा उल्लास था। सत्याग्रही बन्दियोंके छूटनेपर बड़े-बड़े प्रदर्शन किये गये। शराब और विदेशी कपड़ोंकी दुकानोंपर धरने जारी रहे और पुलिस चुपचाप देखती रहती थी। सरकारी अधिकारी समझौतेकी शर्तों-से मुँह मोड़ने लगे और स्थान-स्थानपर मतभेद पैदा हुए।

कराचीमें कांग्रेसका अधिवेशन सरदार वल्लभभाई पटेलकी अध्यक्षतामें हुआ। विराम-सन्धिको कांग्रेसने स्वीकार किया और यह निश्चय हुआ कि गोलमेज सम्मेलनमें कांग्रेसके एकमात्र प्रतिनिधि गाँधीजी रहेंगे। कांग्रेसने यह भी निश्चय किया कि कांग्रेसका पूर्ण स्वतन्त्रताका ध्येय ज्योंका त्यों कायम है और गोलमेज सम्मेलनमें कांग्रेसके प्रतिनिधि यह प्रयत्न करेंगे कि रक्षा, वैदेशिक विभाग, अर्थनीति आदिपर भी राष्ट्रका अधिकार हो तथा भारत और इंग्लैण्डके आर्थिक लेन-देनपर एक निष्पक्ष न्यायालय द्वारा जाँच हो।

भगतसिंहको फाँसी

कराची कांग्रेसके अवसरपर भगतसिंह और उनके साथी शुकदेव तथा राजगुरुकी फाँसीका समाचार मिला। इन नवयुवकोंपर लाहौरमें एक अंग्रेज पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी हत्याका अभियोग लगा था और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसमें फाँसीकी सजा हुई थी। साइमन कमीशनके आगमनके समय पुलिसकी लाठीसे लाला लाजपतरायको चोट लगी थी और उसीसे क्षुब्ध होकर थोड़े दिन पश्चात् उनकी मृत्यु हो गयी थी। इससे पंजाबके नवयुवकोंको बड़ी गहरी चोट लगी और कुछ क्रान्तिकारी नवयुवकोंने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी, जिसके नेतृत्वमें लाठीचार्ज हुआ समझा जाता था, हत्या कर डाली। इन नवयुयकोंकी प्राण-रक्षाके लिए सारे देशकी ओरसे माँग की गयी। स्वयं गाँधीजीने भी वाइसरायसे प्रार्थना की, पर उसकी कोई सुनवाई नहीं हुई और कांग्रेसके अधिवेशनके ठीक पहले उनको गुप्त रूपसे फाँसी दे दी गयी और उनकी लाशें जला दी गयीं। उस समय देशमें नवयुवकोंके हृदयमें गाँधीजीसे भी अधिक भगतसिंहके प्रति आदर था। इस घटनासे देशके नवयुवक-हृदयको बड़ी ठेस लगी।

इधर सन्धिकी शर्तोंका भी ठीक प्रकारसे पालन नहीं हो रहा था। एकके पश्चात् दूसरे प्रान्तसे गाँधीजीके पास शिकायतें आती थीं। वे नये वाइसराय तथा अन्य अधिकारियोंको लिखते थे, पर उसका कोई फल नहीं होता था। ऐसी स्थितिमें गाँधीजी गोलमेज सम्मेलनमें सम्मिलित होनेके सम्बन्धमें भी निराश हो चुके थे। कांग्रेस तथा गवर्नमेण्ट दोनोंकी ओरसे एक दूसरेके ऊपर सन्धि तोड़नेका दोषारोपण किया गया। गाँधीजीने सम्मेलनमें सम्मिलित होनेसे इनकार कर दिया और फिर संघर्षकी तैयारी होने लगी, पर अन्तमें गाँधीजी वाइसरायसे मिले और दोनोंके वार्तालापके फलस्वरूप यह तय हुआ कि गाँधी-अरविन समझौतेका पालन होगा और गाँधीजी लन्दनके लिए रवाना हुए।

दूसरा गोलमेज सम्मेलन

७ सितम्बरको गोलमेज सम्मेलनका दूसरा अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। इस समयतक इंग्लैण्डमें मजदूर-दलका मन्त्रिमण्डल भंग हो चुका था और इंग्लैण्डकी पार्लमेण्टका नया चुनाव हुआ था। उसके संयुक्त मन्त्रिमण्डलमें अनुदार दलके लोगोंका बाहुल्य था। मजदूर-दलके थोड़ेसे सदस्य मैकडानल्डके पक्षमें थे, शेष विरोधी दलमें थे। भारतके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरकारी अधिकारी पहिलेसे ही देशकी आकांक्षाओंके विरोधी थे। अब पार्लमेण्टमें अनुदार दलका बहुमत हो जानेसे उन्हें और शक्ति मिल गयी। गवर्नमेण्टकी नीतिमें परिवर्तन प्रतीत होने लगा। गोलमेज सम्मेलनमें गाँधीजीने कहा कि प्रधान मन्त्रीका जो वक्तव्य है उससे भारतकी आकांक्षाओंकी पूर्ति नहीं होती। केन्द्रमें पूर्ण उत्तरदायी शासन होना आवश्यक है और जो संरक्षण रखे जायँ वे भी भारतके हितकी दृष्टिसे रखे जायँ। साम्प्रदायिक प्रश्नके सम्बन्धमें भी भिन्न-भिन्न सम्प्रदायोंके प्रतिनिधियोंने अपनी सम्मिलित माँगें उपस्थित कीं जो मानी जानेके योग्य नहीं थीं। इस सम्बन्धमें कोई समझौता नहीं हो सका और मैकडानल्डसे समझौता करानेके लिए निवेदन किया गया। गाँधीजीको यह प्रतीत हुआ कि गवर्नमेण्ट उत्तरदायी शासन देनेको तैयार नहीं है। १ दिसम्बरको सम्मेलनका अधिवेशन समाप्त हुआ और गाँधीजी भारत वापस हो गये।

दमन-चक्रका जोर

इधर भारतमें राजनीतिक स्थिति दिनपर दिन खराब होने लगी। विशेषकर बंगालमें आतंकवादियोंसे बदला लेनेके उद्देश्यसे जनतापर अत्याचार किया गया। संयुक्त प्रान्तमें किसानोंका प्रश्न तथा पश्चिमोत्तर प्रान्तमें लाल कमीज-दलका प्रश्न, जिसका संगठन अब्दुलगफ्फार खाँके नेतृत्वमें हुआ था और जो उनके नेतृत्वमें कांग्रेसमें सम्मिलित हुआ था, विकट होता जा रहा था।

गाँधीजीके लौटनेके पूर्व ही संयुक्त प्रान्त तथा पश्चिमोत्तर प्रदेशमें दमन-चक्र प्रारम्भ हो गया था तथा श्री जवाहरलाल और अब्दुलगफ्फार खाँ गिरफ्तार हो चुके थे। बंगाल, संयुक्त प्रान्त तथा पश्चिमोत्तर प्रदेशमें बड़े कठोर आर्डिनेन्स जारी हो चुके थे। पश्चिमोत्तर प्रान्तमें गोली भी चली थी जिसमें कितने ही आदमी मरे तथा घायल हुए थे। ऐसे समयमें २८ दिसम्बरको प्रातःकाल गाँधीजी बम्बई पहुँचे और कांग्रेसकी कार्यकारिणीके सदस्योंसे मिलकर परिस्थितिका अध्ययन किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाइसरायका मिलनेसे इनकार

२९ दिसम्बरको गाँधीजीने वाइसरायसे परिस्थिति समझनेके निमित्त मिलनेके लिए प्रार्थना की। वाइसरायने सारा दोष कांग्रेसपर मढ़ते हुए इस शर्तपर मिलना स्वीकार किया कि बंगाल, संयुक्त प्रान्त तथा पश्चिमोत्तर प्रान्तका प्रश्न बातचीतमें न उठाया जाय। ऐसी स्थितिमें कांग्रेसकी कार्यकारिणी समितिने सत्याग्रह आन्दोलन फिरसे प्रारम्भ करनेका निश्चय किया, पर गाँधीजीने बिना कोई शर्त लगाये एक बार फिर भी वाइसरायसे मिलनेकी प्रार्थना की ; परन्तु वाइसरायने सत्याग्रहका प्रस्ताव पास हो जानेके कारण मिलनेसे इनकार कर दिया और सत्याग्रह आन्दोलन फिरसे प्रारम्भ हो गया।

सरकारकी ओरसे आन्दोलनके दमनके लिए पहिलेसे ही पूर्ण तैयारी हो चुकी थी। ४ जनवरीको प्रातःकाल गाँधीजी गिरफ्तार कर लिये गये और सारे देशमें कांग्रेस कमेटियाँ गैरकानूनी घोषित कर दी गयीं तथा नेताओंकी धर-पकड़ प्रारम्भ हो गयी। वाइसरायको आशा थी कि ६ सप्ताहके अन्दर ही सत्याग्रह आन्दोलन समाप्त कर दिया जायगा। एक ही साथ कई आर्डिनेन्स जारी किये गये तथा सारे देशमें गोलियाँ चलीं या लाठीचार्ज हुए। जनताकी ओरसे प्रतिरोधकी भावना तीव्र हो उठी। सरकारके लिए सब सत्याग्रहियोंको गिरफ्तार करना सम्भव नहीं था। अतः नेता और संगठन-शक्ति रखनेवाले व्यक्ति ही गिरफ्तार किये जाते थे। फिर भी संख्या लगभग एक लाखतक पहुँच गयी थी। सत्याग्रहियोंके ऊपर खूब अधिक जुर्माने किये गये और जेलोंमें भी तरह-तरहकी यातनाएँ दी गयीं।

ब्रिटिश सरकार एक ओर कांग्रेसके सत्याग्रह आन्दोलनका दमन कर रही थी और दूसरी ओर जनवरीमें ही लार्ड लोदियनकी अध्यक्षतामें एक कमेटी निर्वाचन-क्षेत्र तथा निर्वाचनकी योग्यता निर्धारित करनेके लिए भेज दी गयी। प्रधान मन्त्री मैकडानल्डने द्वितीय गोलमेज सम्मेलनमें कहा था कि यदि सब प्रतिनिधि हस्ताक्षर करके साम्प्रदायिक प्रश्नके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्बन्धमें उनसे पंचायत करनेकी माँग करें तो वे इस सम्बन्धमें अपना निर्णय दें। गाँधीजीको साम्प्रदायिक प्रश्नके सम्बन्धमें ब्रिटिश सरकारकी नियतपर सन्देह था; अतः मार्च, सन् १९३२ ई०में ही उन्होंने भारत-मन्त्री सर सेमुएल होरको लिखा कि यदि दलित-वर्गको हिन्दू-समाजसे पृथक् करनेका प्रयत्न किया गया और उन्हें पृथक् निर्वाचनका अधिकार दिया गया तो मैं आमरण अनशन करूँगा।

मैकडानल्डका साम्प्रदायिक निर्णय

यद्यपि भारतीय प्रतिनिधियोंने प्रधान मन्त्रीसे पंचायत करनेकी प्रार्थना नहीं की थी, पर १७ अगस्तको उन्होंने अपना साम्प्रदायिक निर्णय दे दिया जिसके अनुसार मुसलमानोंके साथ ईसाई, यूरोपियन तथा दलित-वर्गको भी निर्वाचनके द्वारा अपने प्रतिनिधि चुननेका अधिकार दिया गया। गाँधीजीने १८ अगस्तको प्रधान मन्त्रीको पत्र लिखा कि यदि दलित-वर्गका पृथक् निर्वाचनका अधिकार कायम रहता है तो मैं २० सितम्बरसे आमरण अनशन प्रारम्भ कर दूँगा। प्रधान मन्त्रीने उत्तर दिया कि यदि दलित-वर्गके नेता तथा अन्य हिन्दू इस सम्बन्धमें समझौता कर लें तो ब्रिटिश गवर्नमेण्ट उसके अनुसार साम्प्रदायिक निर्णयमें परिवर्तन कर देगी।

१३ सितम्बरको यह पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ और इससे सारे देशमें क्षोभ उत्पन्न हो गया। नेताओंका एक सम्मेलन तुरन्त बुलाया गया जिसमें दलित-वर्गके भी प्रमुख नेता सम्मिलित हुए और सर्व-सम्मतिसे पूना पैक्ट तैयार हुआ जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि दलित-वर्गको धारा-सभाओंमें मैकडानल्डके साम्प्रदायिक निर्णय द्वारा प्राप्त स्थानोंसे दूने स्थान दिये जायँ, पर चुनाव सम्मिलित निर्वाचनके द्वारा हो और प्रत्येक स्थानके लिए पहिलेसे दलित-वर्गके मतदाता चार उम्मीदवार चुनें और उनमेंसे एक व्यक्ति सम्मिलित निर्वाचनसे सब मतदाताओं द्वारा उस स्थानके लिए चुना जाय। ब्रिटिश गवर्नमेण्टने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भी इस निर्णयको मान लिया और इसके अनुसार साम्प्रदायिक निर्णयमें परिवर्तन कर दिया और गाँधीजीने अपना अनशन तोड़ दिया।

१७ नवम्बरसे २४ दिसम्बरतक तीसरा गोलमेज सम्मेलन हुआ, पर इसमें कांग्रेसके प्रतिनिधि तो सम्मिलित हो नहीं सकते थे। इंग्लैण्ड-के मजदूर-दलके प्रतिनिधि भी इसमें सम्मिलित नहीं हुए। अतः इस सम्मेलनका कोई विशेष मूल्य नहीं था। ब्रिटिश गवर्नमेण्टने मार्च, सन् १९३३ ई० में भारतीय शासन-सुधारके सम्बन्धमें अपने प्रस्ताव श्वेत पत्रके रूपमें प्रकाशित किये और पार्लमेण्टके दोनों भवनोंकी सम्मिलित कमेटीके सम्मुख यह मसविदा विचारके लिए उपस्थित किया गया। यद्यपि जो अधिकार दिया जा रहा था वह भारतवासियोंकी माँगकी अपेक्षा बहुत कम था; परन्तु फिर भी इंग्लैण्डमें चर्चिलके नेतृत्वमें एक दल इसका घोर विरोध कर रहा था। उसकी रायमें भारतको बहुत अधिक अधिकार दिये जा रहे थे। इस कमेटीने उन प्रस्तावोंमें संशोधन किये और पुलिस, सिविल सर्विस आदि तथा ब्रिटिश व्यापारियोंको विशेष संरक्षण देनेका निश्चय हुआ। इसके अनुसार बिलका मसविदा तैयार करके पार्लमेण्टके दोनों भवनोंमें पेश किया गया और दिसम्बर, सन् १९३५ ई० में यह अन्तिम रूपमें पास होकर कानून बन गया।

सन् १९३५ का भारत-शासन-विधान

सन् १९३५ ई० के इस कानूनके अनुसार केन्द्रमें संघ-शासन स्थापित किया गया जिसमें ११ गवर्नरके प्रान्त—बंगाल, मद्रास, बम्बई, संयुक्त प्रान्त, पंजाब, मध्यप्रान्त, बिहार, आसाम, उड़ीसा, सिन्ध तथा पश्चिमोत्तर प्रान्त तथा ६ चीफ कमिश्नरके प्रान्त—दिल्ली, ब्रिटिश बिलो-चिस्तान, अजमेर-मेरवाड़ा, कुर्ग, अण्डमान-निकोबार तथा पंथ पिपलोदा सम्मिलित थे तथा देशी राज्यके शासक एक परिपत्रपर हस्ताक्षर करके सम्मिलित हो सकते थे। देशी राज्योंमेंसे इतने राज्योंके सम्मिलित होनेपर, जिनके राज्य-परिषद्के सदस्योंकी संख्या कुल देशी राज्योंके लिए निश्चित की गयी १०४ सदस्योंकी संख्याकी आधी हो, संघ-शासन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थापित होगा, पर देशी राज्योंके परिपत्रके अनुसार युद्ध, वैदेशिक विभाग आदिका कार्य संघ-शासनके सुपुर्द करना होगा, शेषके सम्बन्धमें वे स्वतन्त्र होंगे।

केन्द्रीय शासनके प्रधान गवर्नर-जेनरल थे। उनको सलाह देनेके लिए एक मन्त्रिमण्डल स्थापित किया गया। मन्त्रियोंको नियुक्त करने तथा उन्हें पृथक् करनेका अधिकार गवर्नर-जेनरलको था। मन्त्री यदि नियुक्तिके बाद ६ महीनेके अन्दर धारा-सभाके सदस्य न हो जायँ तो उनका कार्यकाल समाप्त हो जाता। उनकी नियुक्तिके समय गवर्नर-जेनरलको यह देखना आवश्यक था कि धारा-सभाका उनपर विश्वास है, पर केन्द्रीय शासनमें द्विचक्र-शासन स्थापित किया गया। रक्षा, वैदेशिक विभाग तथा क्रिस्तान धर्म-सम्बन्धी प्रश्न पूर्णतः गवर्नर-जेनरलके हाथमें थे। इन विभागोंका प्रबन्ध तीन कौंसिलरों द्वारा होता था जिनका धारा-सभाके सम्मुख कोई उत्तरदायित्व नहीं था। इनके अतिरिक्त जिन बातोंके सम्बन्धमें गवर्नर-जेनरलका कानूनके अनुसार विशेष उत्तरदायित्व था उनके सम्बन्धमें वे मन्त्रियोंसे सलाह ले सकते थे, पर सलाहका मानना-न मानना उनके ऊपर निर्भर करता था। वे प्रश्न इस प्रकारके थे—(१) भारतवर्षके किसी भागकी शान्ति खतरेमें हो तो वहाँ शान्ति स्थापित करना, (२) भारतकी आर्थिक स्थिरताकी रक्षा करना, (३) अल्पसंख्यक सम्प्रदायोंके हितोंकी रक्षा करना, (४) सिविल सर्विसके लोगोंके हितों तथा स्वार्थोंकी रक्षा करना तथा (५) इंग्लैण्डके व्यापारको हानि पहुँचानेके निमित्त जो कार्य हों उनको रोकना, आदि। इन सब कार्योंके सम्बन्धमें गवर्नर-जेनरलको भारतमन्त्रीके आदेशके अनुसार कार्य करना था।

इस विधानके अनुसार कानून बनानेका अधिकार गवर्नर-जेनरल, केन्द्रीय धारा-सभा तथा राज्य-परिषद्को दिया गया। राज्य परिषद् एक स्थायी संस्था थी। उसके एक-तिहाई सदस्य हर तीसरे वर्ष पृथक् होते और उनके स्थानपर नये सदस्य चुने जाते। धारा-सभाका चुनाव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हर पाँचवें वर्ष होता। दोनों भवनोंका अधिवेशन बुलाने तथा अधिवेशन समाप्त करने और धारा-सभाको भंग करनेका अधिकार गवर्नर-जेनरलको था। मन्त्री तथा कौंसिलर दोनों भवनोंमें बैठ सकते थे, पर जिस भवनके सदस्य हों उसीमें उन्हें वोट देनेका अधिकार था।

राज्य-परिषद्‌में १५६ सदस्य ब्रिटिश भारतके तथा १०४ सदस्य देशी राज्योंके रखे गये थे। ब्रिटिश भारतके प्रतिनिधियोंमेंसे ६ गवर्नर-जेनरल द्वारा मनोनीत किये जाते और शेष प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा चुने जाते। देशी राज्योंके प्रतिनिधि प्रत्येक राज्यके शासक द्वारा नियुक्त किये जाते। प्रत्येक राज्यके प्रतिनिधियोंकी संख्या निर्धारित कर दी गयी थी। केन्द्रीय धारा-सभामें २५० प्रतिनिधि ब्रिटिश भारतके तथा १२५ सदस्य देशी राज्योंके थे। केन्द्रीय धारा-सभाका निर्वाचन अप्रत्यक्ष रखा गया था। हर एक प्रान्तकी धारा-सभाके सदस्य अपने-अपने सम्प्रदायके लिए सदस्य चुनते, जैसे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, यूरोपियन आदि। दोनों भवनोंसे स्वीकृत होनेके पश्चात् गवर्नर-जेनरलकी स्वीकृति प्राप्त होनेपर कोई विधेयक कानून बनता था, पर गवर्नर-जेनरलको अधिकार था कि कुछ विशेष प्रश्नोंके सम्बन्धमें वे कानूनपर विचार होना रोक दें तथा वे अपने विशेष अधिकारसे ६ महीनेके लिए आर्डिनेन्स (अध्यादेश) जारी कर सकते और स्थायी कानून भी बना सकते थे।

प्रान्तोंमें शासनके हर एक विभागका अधिकार गवर्नर तथा उसके मन्त्रिमण्डलको दिया जाता था। मन्त्रिमण्डल धारा-सभाके सम्मुख उत्तरदायी था, पर गवर्नरको गवर्नर-जेनरलकी तरह ही कुछ विशेष अधिकार दिये गये थे। निम्नलिखित बातोंके सम्बन्धमें गवर्नरका विशेष उत्तरदायित्व था—(१) शान्ति-भंगके खतरेसे प्रान्तकी रक्षा करना, (२) अल्पसंख्यक सम्प्रदायके लोगोंके हितोंकी रक्षा करना, (३) सिविल सर्विसके लोगोंके हकों और स्वार्थोंकी रक्षा करना तथा अंग्रेजोंके व्यापारको क्षति पहुँचनेसे रोकना, आदि। शान्ति-रक्षाके सम्बन्धमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
गवर्नरको विशेष अधिकार दिया गया था। पुलिसके सम्बन्धमें नियम बनाने तथा गवर्नमेण्टको पलटनेके लिए हिंसात्मक कारखाई होनेपर अपनी इच्छाके अनुसार बिना मन्त्रियोंकी सलाहके कार्य करनेका अधिकार गवर्नरको था।

प्रान्तोंमें भी धारा-सभा द्वारा पास होने तथा गवर्नरकी स्वीकृति होनेपर कानून बनता था। पंजाब, मध्यप्रदेश, सिन्ध, उड़ीसा तथा पश्चिमोत्तर प्रान्तमें धारा-सभाका एक भवन था। शेष ६ प्रान्तोंमें दो भवन, एक धारा-सभा अथवा असेम्बली तथा दूसरी कौंसिल। कौंसिल स्थायी थी और इसके एक-तिहाई सदस्य हर तीसरे वर्ष पृथक् होते थे और उनके स्थानपर नया चुनाव होता था। सदस्योंका कार्यकाल ९ वर्ष रखा गया था, पर इस अवधिके बीचमें भी धारा-सभा अथवा असेम्बलीके भंग किये जानेपर नया चुनाव हो सकता था। धारा-सभाके सदस्योंकी संख्या बंगालके लिए २५०, सयुंक्त प्रान्तके लिए २२८, मद्रासके लिए २१५, बम्बई और पंजाब १७५, बिहार १५२, मध्य-प्रदेश ११२, आसाम १०८, सिन्ध और उड़ीसा ६० तथा सीमान्त-प्रदेशके लिए ५० रखी गयी। इसके लिए बालिग मताधिकार नहीं रखा गया। भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें मतदाताओंकी योग्यतामें विभिन्नता थी, पर मतदाताओंकी कुल संख्या लगभग साढ़े तीन करोड़ हो गयी।

गवर्नरके प्रान्तोंके अतिरिक्त चीफ कमिश्नरके जो प्रान्त थे उनका शासन स्वयं गवर्नर-जेनरलके हाथमें था और वे प्रत्येक प्रान्तके लिए एक चीफ कमिश्नर नियुक्त करके उसके द्वारा शासन चलाते थे। इन प्रान्तोंके लिए कानून केन्द्रीय धारा-सभाओं द्वारा बनता था।

केन्द्रीय तथा प्रान्तीय शासनके विभाग अलग-अलग रखे गये और जो विभाग प्रान्तीय शासनके हाथमें थे उनके सम्बन्धमें उन्हें स्वतन्त्रता दी गयी। विभागोंकी तीन सूचियाँ बनायी गयीं—(१) केन्द्रीय सूची जिसके सम्बन्धमें कानून बनानेका अधिकार केन्द्रीय धारा-सभाको था, जैसे सेना,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वैदेशिक विभाग, मुद्रा, रेल, तार, डाकघर इत्यादि, (२) प्रान्तीय सूची जिसके सम्बन्धमें प्रान्तीय धारा-सभाको कानून बनानेका अधिकार था, जैसे पुलिस, जेल, न्याय-विभाग, शिक्षा आदि तथा (३) एक संयुक्त सूची थी जिसके सम्बन्धमें केन्द्रीय तथा प्रान्तीय दोनों धारा-सभाओंको कानून बनानेका अधिकार था, पर दोनों कानूनोंमें विरोध होनेपर केन्द्रीय कानून मान्य होता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारहवाँ प्रकरण

प्रान्तोंमें कांग्रेस सरकारोंकी स्थापना

सन् १९३२ ई० के प्रारम्भमें गाँधीजी तथा कांग्रेस कार्यकारिणी समितिकी गिरफ्तारीके साथ जो सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था वह लगभग एक सालतक चलता रहा, पर उसमें धीरे-धीरे शिथिलता आ गयी। आन्दोलनने बादमें गुप्त रूप धारण कर लिया। मार्च, १९३३ ई० में गवर्नमेण्टके निषेधके बावजूद कलकत्तामें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ। मनोनीत सभापति पण्डित मदनमोहन मालवीय तथा अन्य नेता मार्गमें ही गिरफ्तार कर लिये गये, फिर भी लगभग ११ सौ प्रतिनिधि कलकत्तामें एक निश्चित स्थानपर एकत्र हुए और पुलिसके लाठी-चार्जको सहन करते हुए भी सात प्रस्ताव नियमानुसार पेश किये गये और पास हुए।

इसके कुछ ही दिनोंके पश्चात् ५ मईको गाँधीजीने जेलमें आत्म-शुद्धिके लिए हरिजनोंके उद्धारके सम्बन्धमें २१ दिनोंका अनशन प्रारम्भ किया और ८ मईको गवर्नमेण्टने गाँधीजीको जेलसे मुक्त कर दिया। जेलसे मुक्त होते ही गाँधीजीने सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित करनेकी सलाह दी और स्थानापन्न राष्ट्रपति श्री अणेने आन्दोलनको स्थगित कर दिया।

जुलाई, सन् १९३३ ई० में पूनामें कांग्रेसी कार्यकर्ताओंका एक सम्मेलन हुआ। उसके निर्णयके अनुसार गाँधीजीने गवर्नमेण्टसे सम्मान-युक्त समझौता करनेके निमित्त वाइसरायसे मिलना चाहा, पर जबतक सत्याग्रह आन्दोलन बिलकुल बन्द न कर दिया जाय, वाइसरायने मिलने-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से इनकार कर दिया। ऐसी स्थितिमें गाँधीजीने सामूहिक सत्याग्रह तो स्थगित कर दिया, पर व्यक्तिगत सत्याग्रह जारी रखनेका निश्चय किया और साबरमती आश्रमको तोड़कर उसकी चल सम्पत्ति भिन्न-भिन्न संस्थाओंमें दे दी, भूमि और मकान हरिजन-संघके सुपुर्द कर दिये और स्वयं अपने साथियोंके साथ व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ किया। गाँधीजी गिरफ्तार कर लिये गये, पर दो दिनके बाद फिर छोड़ दिये गये और फिर सत्याग्रह करनेपर फिर गिरफ्तार किये गये तथा उन्हें एक वर्षकी सजा दे दी गयी।

इस बार गवर्नमेण्टने जेलमें उन्हें हरिजन-कार्य करनेकी सुविधा, जैसे पहिली बारके अनशनके बाद थी, नहीं दी और इसके लिए उन्होंने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। अन्तमें जब गाँधीजीकी स्थिति बहुत खराब हो गयी तब गवर्नमेण्टने उन्हें २३ अगस्तको जेलसे मुक्त कर दिया, पर गाँधीजीने अपने ऊपर स्वयं यह प्रतिबन्ध लगाया कि जबतक उनकी सजाकी अवधि पूरी नहीं होती तबतक वे फिर सत्याग्रह नहीं करेंगे और अपना सारा समय हरिजन-कार्यमें लगायेंगे। इस निश्चयके अनुसार नवम्बर, सन् ३३ में उन्होंने सारे देशका दौरा प्रारम्भ किया और दस महीनेके अन्दर प्रायः सभी प्रान्तोंका दौरा समाप्त किया। इस दौरेसे सारे देशमें एक बार फिर नवजीवनका संचार हुआ और हरिजन-कार्यके लिए गाँधीजीने लगभग ८ लाख रुपया एकत्र किया।

बिहारका भूकम्प

१५ जनवरी, सन् १९३४ ई० को बिहारका भीषण भूकम्प हुआ और बिहार प्रान्तका सारा उत्तरी भूभाग तहस-नहस हो गया। इस दैवी आपत्तिमें सारा देश बिहारकी सहायताके लिए अग्रसर हुआ। बिहार केन्द्रीय सहायक समितिकी स्थापना हुई और श्री राजेन्द्रप्रसादकी देख-रेखमें सहायताका कार्य प्रारम्भ हुआ। लगभग एक करोड़ रुपया एकत्र हुआ। गाँधीजी स्वयं अपना कार्य कुछ समयके लिए स्थगित करके बिहार पहुँचे और अपने आश्रमके विश्वासपात्र कार्यकर्ताओंको बिहारमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्य करनेके लिए भेजा। जवाहरलालजी अपनी वृद्धा माताकी बीमारीके कारण कुछ दिन पूर्व जेलसे मुक्त हो गये थे, वे भी तुरन्त बिहार पहुँचे और मुँगेरमें स्वयं फावड़ा लेकर मलवा हटानेमें लग गये। धीरे-धीरे सहायताका कार्य बढ़ने लगा और स्थिति सुधरने लगी, पर जवाहरलालजी कलकत्ताके एक भाषणपर फिर गिरफ्तार कर लिये गये।

स्वराज-दलको पुनः जिलानेका प्रयत्न

जुलाई, सन् १९३३ ई० के पूना सम्मेलनके बादसे कुछ नेताओंका विचार हो रहा था कि आर्डिनेन्स-राजसे उत्पन्न गतिरोधको दूर करनेके लिए धारा-सभाओंमें जाना आवश्यक है। केन्द्रीय धारा-सभाका चुनाव भी समीप आ रहा था। अतः मार्च सन् ३४ में इस विचारके नेताओं-का एक सम्मेलन दिल्लीमें हुआ और यह निश्चय किया गया कि अखिल भारतीय स्वराज-दलको पुनर्जीवित किया जाय और केन्द्रीय धारा-सभा-का चुनाव निम्नलिखित प्रश्नके ऊपर लड़ा जाय—(१) सब दमनकारी कानून रद्द किये जायँ, (२) ब्रिटिश गवर्नमेण्टके श्वेत पत्रमें प्रस्तावित सुधारके स्थानपर गाँधीजी द्वारा गोलमेज सम्मेलनमें उपस्थित की हुई राष्ट्रीय माँगके आधारपर सुधार किये जायँ। सम्मेलनने निश्चय किया कि डा० अनसारीके नेतृत्वमें एक प्रतिनिधि-मण्डल गाँधीजीसे मिले। इसी समय गाँधीजीने भी स्वतन्त्र रूपसे एक वक्तव्य तैयार किया था जिसे उन्होंने डा० अनसारी आदिसे बातचीत करनेके बाद प्रकाशित किया। गाँधीजीने कहा कि सत्याग्रहकी जिम्मेदारी उनके अतिरिक्त और कोई भी व्यक्ति लेनेके योग्य नहीं है, इसलिए इसे स्थगित कर देना चाहिये और सत्याग्रहियोंको रचनात्मक कार्यक्रममें लग जाना चाहिये।

स्वराज-दलको पुनर्जीवित करनेके लिए २,३ मईको राँचीमें एक सम्मेलन हुआ और दिल्ली सम्मेलनका प्रस्ताव स्वीकार किया गया तथा स्वराजदलका विधान तैयार किया गया। १८, १९ मईको पटनामें अखिल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भारतीय कांग्रेस कमेटीका अधिवेशन हुआ। गांधीजीके प्रस्तावके अनुसार सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया गया। धारा-सभाका चुनाव लड़नेके लिए डा० अनसारीकी अध्यक्षतामें एक पार्लमेण्टरी बोर्ड स्थापित किया गया। अक्टूबर, सन् १९३४ ई० में बम्बईमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ जिसमें इन निश्चयोंकी स्वीकृति ली गयी। पटना अधिवेशनके अवसरपर कांग्रेसके वामपक्षी नेताओंने कांग्रेस समाजवादी दलकी स्थापना की और इसकी शाखाएँ प्रान्त-प्रान्तमें स्थापित होने लगीं।

चुनावमें कांग्रेसकी सफलता

बम्बईके कांग्रेस अधिवेशनके पश्चात् केन्द्रीय धारा-सभाका चुनाव हुआ। सारे देशमें कांग्रेसकी ओर से वृहत् प्रचार किया गया। पंजाबके अतिरिक्त सभी प्रान्तोंमें कांग्रेसकी जबर्दस्त विजय हुई। बंगालमें साधारण जगहें राष्ट्रीय दलके लोगोंको मिलीं जो साम्प्रदायिक निर्णयके सम्बन्धमें कांग्रेससे मदनमोहन मालवीयके नेतृत्वमें पृथक् था, पर और सब प्रश्नोंपर कांग्रेसके साथ था। मुसलमानोंकी जगहें प्रायः कांग्रेसको नहीं मिलीं। केन्द्रीय धारा-सभामें कांग्रेस दलके ४४ सदस्य चुने गये और लगभग १२ सदस्य राष्ट्रीय दलके थे। कई प्रश्नोंपर धारा-सभामें गवर्नमेण्टकी हार हुई। भारतीय शासन-सुधारके सम्बन्धमें संयुक्त पार्लियामेण्टरी समितिकी रिपोर्ट केन्द्रीय धारा-सभामें पेश की गयी। कांग्रेस दलकी ओरसे प्रस्ताव पेश किया गया कि उसे बिलकुल अस्वीकृत कर दिया जाय। श्री जिनाने संशोधन उपस्थित किया कि साम्प्रदायिक निर्णय स्वीकार कर लिया जाय और रिपोर्टका शेष भाग अस्वीकृत कर दिया जाय। गवर्नमेण्ट और जिनाके दलके समर्थनसे साम्प्रदायिक निर्णय स्वीकृत हो गया, पर कांग्रेस दल, राष्ट्रीय दल तथा जिनाके दलके समर्थनसे प्रान्तीय-शासन तथा संघ-शासन-सम्बन्धी संयुक्त-समितिके प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिये गये। कांग्रेस और मुस्लिम लीगमें समझौता करानेके लिए इस अवसरपर प्रयत्न किया गया। राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद तथा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुस्लिम लीगके अध्यक्ष श्री जिनासे कई सप्ताहतक बातचीत हुई, पर कोई समझौता न हो सका।

शासन-सुधारके सम्बन्धमें सन् १९३५ ई० का जो विधान इंग्लैण्ड-की पार्लमेण्टमें पास हो चुका था उसके अनुसार सन् १९३७ ई० के प्रारम्भमें चुनावकी तैयारी की जाने लगी। प्रत्येक राजनीतिक दलकी ओरसे निर्वाचकोंका समर्थन प्राप्त करनेका प्रयत्न किया जाने लगा। कांग्रेसकी ओरसे एक निर्वाचन-घोषणा तैयार की गयी जिसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने अपने २२, २३ अगस्तके बम्बईके अधिवेशनमें स्वीकार किया। इस घोषणा-पत्रमें किसानों और मजदूरोंकी दरिद्रता और बेकारी तथा उनकी आर्थिक दुरवस्थापर विशेष जोर दिया गया था। सन् १९३५ ई० के शासन-विधानको स्वीकार नहीं किया गया, परन्तु धारा-सभाओंमें कार्य करके देशकी शक्ति बढ़ानेका निश्चय किया गया। ब्रिटिश साम्राज्यवादका विरोध करना और उनके कानूनों और नियमोंको समाप्त करना, मद्यनिषेध, भूमिका बोझ, लगान तथा कर कम करना, किसानोंका कर्ज कम करना तथा कम सूदपर ऋण देनेकी व्यवस्था करना, मजदूरोंका जीवनस्तर ऊँचा करना, कामके घण्टों तथा मजदूरीका नियमन करना, श्रम और पूँजीके झगड़ोंका निपटारा करना तथा वृद्धावस्था, बेकारी आदिमें मजदूरोंकी सहायता करना, हरिजनोद्धार, खद्दर तथा हाथकी कारीगरीको प्रोत्साहन देना आदि कांग्रेसकी नीति रखी गयी।

फरवरी-मार्च, सन् १९३७ ई० में प्रान्तीय धारा-सभाओंका निर्वाचन हुआ। कांग्रेसको अच्छी सफलता प्राप्त हुई। ११ प्रान्तोंमेंसे ५ प्रान्तोंमें अर्थात् मद्रास, संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त तथा उड़ीसामें कांग्रेस दलका स्पष्ट बहुमत था। संयुक्त प्रान्त और बम्बईके प्रायः आधे सदस्य कांग्रेस दलके थे। आसाम, बंगाल तथा सीमान्त-प्रदेशमें कांग्रेसका बहुमत तो नहीं हुआ, पर कांग्रेस दल अन्य सब दलोंसे बड़ा था। सिन्ध और पंजाबमें कांग्रेसके बहुत कम सदस्य निर्वाचित हुए। सारे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
देशके १५८५ स्थानोंमें ७११ कांग्रेसको प्राप्त हुए। मुसलमानोंके लिए ४२८ स्थान थे जिनमेंसे कांग्रेसकी ओरसे ५८ उम्मेदवार खड़े किये गये थे जिनमें २६ सफल हुए। इनमेंसे १९ सीमान्त-प्रदेशके थे।

मन्त्रिपद स्वीकार करनेका प्रश्न

१ अप्रैल, सन् १९३७ ई० से नया विधान प्रान्तोंमें लागू किया गया। कांग्रेसके सदस्योंके सामने सम्राट्के प्रति राजभक्तिकी शपथ लेनेका प्रश्न था। कांग्रेसकी कार्यकारिणी समितिने यह निश्चय किया कि इस शपथके लेनेसे हमारी पूर्ण स्वतन्त्रताकी माँगपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और प्रत्येक कांग्रेसजनका प्रथम कर्तव्य भारतीय जनताके प्रति है। समितिने यह निश्चय किया कि १ अप्रैलके पहले ही धारा-सभाओंके कांग्रेस-सदस्योंका सम्मेलन किया जाय और वहाँ सबसे भारतकी स्वतन्त्रता और भारतीय जनताके प्रति भक्तिकी शपथ ली जाय। इसके अनुसार १९, २० मार्चको दिल्लीमें सम्मेलन हुआ और प्रत्येक सदस्यसे इस प्रकारकी शपथ ली गयी। अब मुख्य प्रश्न प्रान्तोंमें मन्त्रिमण्डल बनानेका था। इस सम्बन्धमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने यह निश्चय किया कि उन प्रान्तोंमें जहाँ धारा-सभाओंमें कांग्रेस दल बहुमतमें है, मन्त्रिपद स्वीकार करनेकी अनुमति दी जाय यदि कांग्रेस दल इस बातसे सन्तुष्ट हो और सार्वजनिक रूपसे इसकी घोषणा कर सके कि गवर्नरने इस प्रकारका आश्वासन दिया है कि वे मन्त्रिमण्डलके वैधानिक कार्योंमें हस्तक्षेप न करेंगे और इस सम्बन्धमें अपने विशेष अधिकारका उपयोग न करेंगे। १ अप्रैलको नये विधानके विरोधमें सारे देशमें शान्तिमय हड़ताल भी की गयी।

ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी ओरसे कहा गया कि विधानके अनुसार गवर्नरको इस प्रकारका आश्वासन देनेका अधिकार नहीं है। अतः आश्वासन नहीं मिला और कांग्रेस बहुमत प्रान्तोंमें कांग्रेसने मन्त्रिपद नहीं स्वीकार किया। निदान अल्पमतके लोगोंके अस्थायी मन्त्रिमण्डल बनाये गये, पर ये मन्त्रिमण्डल तीन महीनेसे अधिक न टिक सके। अप्रैलसे जूनतक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कानूनके बड़े-बड़े विद्वानोंमें यह बहस चलती रही कि विधानके अनुसार गवर्नर इस प्रकारका आश्वासन दे सकते हैं या नहीं।

वाइसराय द्वारा अहस्तक्षेपका आश्वासन

२१ जूनको वाइसरायने यह वक्तव्य दिया कि कुछ लोगोंके मनमें गवर्नर और मन्त्रिमण्डलके सम्बन्ध तथा गवर्नर द्वारा मन्त्रिमण्डलके शासनके दैनिक कार्यमें हस्तक्षेपके सम्बन्धमें भ्रम पैदा हो गया है। कांग्रेसके नेता सचाईके साथ यह विश्वास करते हैं कि गवर्नरोंसे बिना आश्वासन प्राप्त किये मन्त्रिमण्डल स्वीकार करना बुद्धिमानी नहीं होगी, पर प्रान्तोंमें जो मन्त्रिमण्डल बने हैं उनके तीन महीनेके अनुभवसे यह मालूम होता है कि गवर्नर, मन्त्रिमण्डल तथा सरकारी नौकरोंमें सहयोगसे काम हो सकता है। कांग्रेसकी यह शंका निर्मूल है कि गवर्नर लोग चाहे आवश्यकता हो या न हो, मन्त्रिमण्डलकी नीतिमें हस्तक्षेप करेंगे और अपने विशेष अधिकारके द्वारा उनके शासनके दैनिक कार्यमें बाधा डालेंगे। शासन-विधानका यह उद्देश्य है कि मन्त्रिमण्डल अपने प्रान्तके हितके लिए गवर्नर और सरकारी नौकरोंके सहयोगसे कानूनका कार्यक्रम बनाये और उसके अनुसार कार्य करे। विधानके अनुसार मन्त्रिमण्डलके हाथमें जो अधिकार हैं उनके सम्बन्धमें गवर्नर साधारणतः मन्त्रिमण्डलकी सलाहसे काम करेंगे। कुछ परिमित क्षेत्रमें गवर्नरको जो विशेष अधिकार हैं उनके सम्बन्धमें भी गवर्नर मन्त्रियोंको अपने साथ लेकर काम करनेका प्रयत्न करेंगे। मन्त्रियोंको इनके सम्बन्धमें सलाह देनेका अधिकार होगा, पर यदि दोनोंमें मतभेद पैदा हुआ और गवर्नरको अपने विशेषाधिकारके सम्बन्धमें मन्त्रियोंकी सलाहके विरुद्ध काम करना पड़ा तो उसकी सारी जिम्मेदारी गवर्नरकी होगी। मन्त्री इस बातकी घोषणा कर सकते हैं कि उन्होंने इसके प्रतिकूल सलाह दी थी, पर गवर्नरने अपने विशेष अधिकारके अनुसार कार्य किया। मन्त्रियोंकी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। गवर्नर लोग इस बातके लिए इच्छुक हैं कि मन्त्रियोंसे संघर्षका अवसर न आये और यदि किसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बातपर विरोध हो तो गवर्नर उनकी सलाहसे कार्य करनेके लिए बाध्य होंगे।

कांग्रेस सरकारोंकी स्थापना

वाइसरायके इस वक्तव्यके बाद कांग्रेस कार्य-समितिने यह निश्चय किया कि यद्यपि यह आश्वासन पर्याप्त नहीं है, परन्तु ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है कि गवर्नरके लिए अपने विशेष अधिकारका प्रयोग करना बड़ा कठिन होगा, इसलिए कांग्रेसकी चुनाव-घोषणाके अनुसार इस विधानका विरोध करने तथा कांग्रेसके रचनात्मक कार्यक्रमको पूरा करनेके लिए जिन प्रान्तोंमें कांग्रेसका बहुमत है उन प्रान्तोंमें मन्त्रिमण्डल बनाना स्वीकार किया जाय।

इस निश्चयके अनुसार मध्य जुलाईमें बम्बई, मद्रास, संयुक्त प्रान्त, बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा सीमान्तप्रदेशमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बने और कुछ दिनोंके पश्चात् आसाममें भी कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बन गया और द्वितीय महायुद्धके छिड़नेतक वे मन्त्रिमण्डल कार्य करते रहे, पर केन्द्रीय सरकारमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। सन् १९३५ ई० के नये विधानके अनुसार केन्द्रमें संघ-शासन स्थापित होनेको था जिसमें सब प्रान्त तथा देशी राज्य सम्मिलित होते। देशी राज्योंके सम्मिलित होनेकी शर्तोंके सम्बन्धमें वाइसरायने वार्ता जारी की, पर युद्ध प्रारम्भ होनेके समयतक कुछ तय न हो सका। इसीलिए केन्द्रमें संघ-शासन नहीं स्थापित हो सका और न कोई परिवर्तन हुआ। केन्द्रीय-शासन सन् १९१९ ई० के कानूनके अनुसार ही चलता रहा, पर कांग्रेस भी सन् १९३५ ई० के कानूनके अनुसार केन्द्रमें संघ-शासन स्थापित करनेके विरुद्ध थी और जिन प्रान्तोंमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल थे वहाँकी विधान-सभाओंमें इस आशयके प्रस्ताव पास हुए कि बालिग मताधिकारके आधारपर एक संविधान-सभा बुलायी जाय जो भारतके लिए शासन-विधान बनाये और वह शासन-विधान सन् १९३५ ई० के कानूनके स्थानपर स्थापित हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संघ-शासनके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकारसे राजनीतिक बन्दियोंके छोड़नेके सम्बन्धमें भी संघर्ष था। बिहार तथा संयुक्त प्रान्तके मन्त्रि-मण्डलने इस प्रश्नपर त्यागपत्र भी दे दिया, पर समझौता हो जानेके कारण त्यागपत्र वापस हो गया ; किन्तु मुख्य प्रश्न बंगाल तथा पंजाबके राज-बन्दियोंका था जहाँ गैर-कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल थे। राजबन्दियोंने गाँधीजीको लिखा कि वे लोग अब हिंसात्मक उपायोंमें विश्वास नहीं करते ; फिर भी वे छोड़े नहीं गये। गाँधीजी स्वयं बंगाल गये और कई सप्ताहतक वहाँ रहकर गवर्नर तथा मन्त्रिमण्डलसे वार्तालाप करते रहे। अन्तमें ११ सौ राजबन्दी छूटे और साढ़े चार सौके लगभग जेलमें रह गये। उनके सम्बन्धमें यह निश्चय हुआ कि यदि व्यक्तिगत रूपसे गाँधीजी उनसे मिलकर यह आश्वासन दे सकें कि वे हिंसात्मक उपायोंका प्रयोग न करेंगे तो धीरे-धीरे वे भी छोड़े जा सकते हैं।

भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलने छोटे-मोटे सुधारके कार्य किये। काश्तकारी कानूनमें सुधार हुआ और किसानोंको जमीनके सम्बन्धमें कुछ अधिक अधिकार मिले। कर्ज-सम्बन्धी कानूनमें परि-वर्तन हुआ, बुनियादी शिक्षाकी योजना प्रारम्भ की गयी। मादक द्रव्यों-की बिक्री बन्द करनेका प्रयत्न किया गया। जेलकी हालतमें सुधार हुआ। जुलाई, सन् १९३७ ई०से अक्टूबर, सन् १९३९ ई०तक कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल कार्य करते रहे। इस समय कांग्रेसका सबसे अधिक विरोध मुस्लिम लीगकी तरफसे होने लगा और उसकी ओरसे पाकिस्तानकी माँग प्रारम्भ हुई। सितम्बर, सन् १९३९ ई० में जर्मनीने पोलैण्डपर आक्र-मण कर दिया और यूरोपमें महायुद्ध छिड़ गया। इससे भारतवर्षकी परिस्थितिमें भी महान् परिवर्तन हो गया।

——·——

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तेरहवाँ प्रकरण

द्वितीय महायुद्धका प्रारम्भ

कई वर्षोंसे यह आशंका थी कि यूरोपमें युद्ध छिड़ेगा। कांग्रेसने यह निश्चय किया था कि ऐसी स्थितिमें ब्रिटेनको भारतकी ओरसे किसी प्रकारकी सहायता नहीं दी जायेगी, पर १ सितम्बरको युद्ध छिड़ा और तीसरी सितम्बरको ब्रिटिश सरकारने भारतको भी युद्धमें सम्मिलित कर लिया ; परन्तु इस सम्बन्धमें न तो केन्द्रीय विधान-सभासे पूछा गया और न प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंसे; यद्यपि सन् १९३८ ई० में केन्द्रीय विधान-सभामें गवर्नमेण्टकी ओरसे इस बातका आश्वासन दिया गया था कि भारतीय सेना बिना विधान-सभाको सूचित किये भारतके बाहर न भेजी जायेगी, पर युद्ध प्रारम्भ होनेके कई मास पूर्व ही भारतीय सेना सिंगापुर और मिस्रमें भेज दी गयी और गवर्नमेण्टकी ओरसे यह कहा गया कि भारतकी सीमा सिंगापुर और मिस्रतक विस्तृत है।

भारतकी स्वतन्त्रताका नाम भी नहीं

युद्ध छिड़नेपर ब्रिटेनके सम्राट्, प्रधान मन्त्री, वाइसराय तथा गवर्नरों आदिके भाषण हुए और उनमें यह कहा गया कि ब्रिटेन और ब्रिटिश साम्राज्यकी स्वतन्त्रता खतरेमें है। यदि जर्मनी जीत गया तो सारा संसार गुलाम हो जायेगा और संसारकी शान्ति, सुरक्षा, न्याय और स्वतन्त्रताका अन्त हो जायेगा। वाइसरायने आशा प्रकट की कि भारतवर्ष मनुष्यमात्रकी स्वतन्त्रताके लिए शक्तिके राज्यके विरुद्ध लड़ेगा, पर इन भाषणोंमें भारतवर्षकी स्वतन्त्रताका कहीं भी जिक्र नहीं था।

वाइसरायने सर्वप्रथम गाँधीजीको युद्धके सम्बन्धमें बातचीत करनेके लिए शिमला बुलाया। गाँधीजीने यह कहा कि उन्हें कांग्रेसकी ओरसे

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh
बोलनेका कोई अधिकार नहीं है और न वे कांग्रेसकी ओरसे वाइसरायसे कोई समझौतेकी बातचीत कर सकते हैं, पर उनकी सहानुभूति पूर्णतः इंग्लैण्ड और फ्रांसके साथ है और उनका पूरा नैतिक सहयोग उन्हें प्राप्त है। ब्रिटिश गवर्नमेण्टने गाँधीजीके इस आश्वासनसे अपने प्रचार-कार्यमें काफी फायदा उठाया।

१४ सितम्बरसे कांग्रेस कार्य-समितिका अधिवेशन हुआ और एक लम्बा प्रस्ताव पास हुआ जिसमें पोलैण्डके साथ सहानुभूति प्रकट की गयी और इंग्लैण्ड तथा फ्रांसके उद्देश्यकी प्रशंसा की गयी कि वे लोकतन्त्र-की रक्षाके लिए लड़ रहे हैं, पर इसके साथ-साथ यह भी कहा गया कि जिस लोकतन्त्रकी रक्षाके लिए इंग्लैण्ड और फ्रांस पोलैण्डके साथ जर्मनी-के विरुद्ध लड़ रहे हैं उसका भारतमें सर्वथा अभाव है। इसके अतरिक्त आश्चर्य इस बातका है कि इंग्लैण्डके उपनिवेश अपनी पार्लमेण्टके द्वारा यह तय कर रहे हैं कि वे युद्धमें इंग्लैण्डका साथ देंगे या नहीं, पर भारत जबरदस्ती युद्धमें सम्मिलित कर लिया गया। प्रस्तावमें यह भी कहा गया कि ब्रिटिश सरकारके वचनों और प्रतिज्ञाओंपरसे भारतका विश्वास उठ गया है। अतः भारतके भविष्यके सम्बन्धमें ब्रिटेन अपनी नीतिको न केवल स्पष्ट कर दे, प्रत्युत उसे कार्यान्वित करना भी प्रारम्भ कर दे। जबतक यह स्थिति स्पष्ट नहीं हो जाती तबतक कार्य-समिति देशको युद्धमें ब्रिटिश सरकारके साथ पूर्णतः सहयोग करनेकी सलाह नहीं दे सकती।

कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों द्वारा पदत्याग

वाइसरायने भिन्न भिन्न दलोंके लगभग ५० व्यक्तियोंसे मुलाकात की जिनमें महात्मा गाँधी, श्री जिना आदि सम्मिलित थे। ब्रिटिश सर-कारकी सलाहसे वाइसराय इस बातके लिए तैयार थे कि वाइसरायकी कार्यकारिणी समितिके सदस्योंकी संख्या बढ़ा दी जाय और उसमें कुछ और भारतीय सम्मिलित कर लिये जायँ तथा युद्ध-समाप्तिके बाद भिन्न-भिन्न दलों एवं देशी राज्यों आदिके प्रतिनिधियोंसे परामर्श करके सन् १९३५ ई० के कानूनमें उचित संशोधन और परिवर्तन किया जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कांग्रेस स्वतन्त्रताकी घोषणा कराना चाहती थी और ब्रिटिश सरकार टालमटोल कर रही थी। २२ अक्टूबरको कांग्रेस कार्यसमितिने यह निश्चय किया कि कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल त्यागपत्र दे दें। इस निश्चयके अनुसार आठ प्रान्तोंके कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलोंने त्यागपत्र दे दिया और इन प्रान्तोंमें सन् १९३५ ई० के कानूनकी धारा ९३ के अनुसार सारा शासन गवर्नरोंके हाथोंमें आ गया और उन्होंने मन्त्रियोंके स्थानपर सिविल सर्विसके कुछ व्यक्तियोंको सलाहकार नियुक्त करके शासन चलाना प्रारम्भ कर दिया।

मुसलमानोंकी संस्था मुस्लिम लीग यद्यपि सन् १९०६ ई० में स्थापित हुई थी और सन् १९१६ ई० में कांग्रेस और मुस्लिम लीगमें शासन-सुधारोंके सम्बन्धमें समझौता हो गया था, पर सन् १९२०-२१ ई०में असहयोग आन्दोलनके समयमें मुस्लिम लीगका प्रभाव बहुत कम हो गया था और सन् ३७के चुनावके समयतक इसका प्रभाव अधिक नहीं रहा। चुनावके पश्चात् मुस्लिम लीगने यह प्रयत्न किया कि प्रान्तोंमें कांग्रेस और मुस्लिम लीगके संयुक्त मन्त्रिमण्डल स्थापित हों, पर इस सम्बन्धमें कोई समझौता न हो सका। उस समयसे कांग्रेस और मुस्लिम लीगका विरोध अधिक बढ़ने लगा और जिना मुस्लिम लीगके एक मात्र नेता हो गये। जगह-जगहपर हिन्दू-मुसलमानोंके दंगे हुए और मुसलमानोंमें मुस्लिम लीगका प्रभाव बहुत अधिक बढ़ गया। जिनाने यह आरोप लगाया कि कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलोंने अपने-अपने प्रान्तोंमें मुसलमानोंके ऊपर बड़ा अत्याचार किया है। कांग्रेसने इसका प्रतिवाद किया और स्वयं अंग्रेज गवर्नरोंने इसका खण्डन किया, पर मुसलमानोंमें इस प्रचारका असर हुआ और वे मुस्लिम लीगकी ओर बराबर झुकते गये।

लीग द्वारा 'मुक्तिदिवस'का आयोजन

कांग्रेस मन्त्रिमण्डलोंके त्यागपत्र दे देनेके पश्चात् मुस्लिम लीगने 'मुक्तिदिवस' मनाया और ईश्वरको धन्यवाद दिया कि कांग्रेसके अत्याचारोंसे मुसलमानोंकी रक्षा हुई। कांग्रेसकी तरफसे यह कहा गया कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
ये आरोप बिलकुल असत्य हैं और कांग्रेसके अध्यक्षने जिनाको लिखा कि यदि किसी निश्चित आरोपके सम्बन्धमें कहें तो कांग्रेस कार्यसमिति भारतके प्रधान न्यायाधीशसे इस सम्बन्धमें जाँच करवानेको तैयार है। जिनाने इसके उत्तरमें कहा कि कांग्रेस कार्यसमितिको विधानके अनुसार कोई अधिकार नहीं है। जिन प्रान्तोंमें अत्याचार हुए हैं वहाँके मन्त्रि-मण्डल निर्वाचकोंके सम्मुख उत्तरदायी हैं। कांग्रेस कार्यसमितिका कोई स्थान नहीं है, इसलिए यह प्रस्ताव अव्यावहारिक है। अन्तमें उन्होंने कहा कि यदि सम्राट् द्वारा नियुक्त कमीशनके जरिये जाँच करायी जाय तो वे तैयार हैं। कांग्रेस और मुस्लिम लीगका विरोध बढ़ता गया जिससे ब्रिटिश गवर्नमेण्टको सुविधा हुई। मार्च, सन् १९४० ई० में मुस्लिम लीगने लाहौरके अधिवेशनमें पाकिस्तान-सम्बन्धी यह प्रस्ताव पास किया कि जिन प्रान्तोंमें मुसलमानोंका बहुमत है उनको मिलाकर स्वतन्त्र राज्य बनाया जाय। इस प्रकार भारतवर्षके विभाजनकी माँग मुस्लिम लीगकी ओरसे प्रारम्भ की गयी।

८ अगस्त, सन् १९४० ई० को वाइसरायकी ओरसे यह वक्तव्य दिया गया कि ब्रिटिश सरकार भारतके शासनकी जिम्मेदारी किसी ऐसी शासन-प्रणालीके ऊपर नहीं छोड़ सकती जिसका कोई बड़ा और प्रमुख दल विरोध करता है और न तो ब्रिटिश सरकार ऐसे किसी दलके साथ जबरदस्ती कर सकती है। इस प्रकार मुस्लिम लीगको ब्रिटिश गवर्नमेण्ट-की ओरसे शासन-सुधारके सम्बन्धमें अड़ंगा लगानेकी छूट दे दी गयी। वाइसरायने यह भी कहा कि इस समय ब्रिटिश साम्राज्य जीवन-मरण-के युद्धमें रत है। यह समय शासन-सुधारका प्रश्न उठानेके लिए उचित नहीं है; परन्तु युद्ध समाप्त होनेपर भारतके प्रमुख दलों और समूहोंसे शासन-संविधानके सम्बन्धमें परामर्श लिया जायेगा। इसी समय वाइस-रायकी कार्य-समितिको बढ़ाने और उसमें राजनीतिक दलोंके लोगोंको सम्मिलित करनेका प्रस्ताव किया गया, परन्तु कांग्रेसने इसे स्वीकार नहीं किया। अन्तमें वाइसरायने जुलाई सन् १९४१ ई० में अपनी कार्य-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
समितिके सदस्योंकी संख्या बढ़ाकर उसमें गैर-सरकारी सदस्योंका बहुमत कर दिया और उसमें देशके कुछ प्रतिष्ठित गैर-सरकारी नेता सम्मिलित हुए।

यूरोपीय महायुद्धकी तीव्रता बढ़ती गयी और जर्मनीने रूसके अतिरिक्त यूरोपके अधिकतर देशोंपर कब्जा कर लिया और जून, सन् १९४१ ई० में रूसके ऊपर भी आक्रमण कर दिया। ४ महीनेके अन्दर जर्मनीने रूसके अधिकतर पश्चिमी और दक्षिणी भू-भागपर अधिकार कर लिया और मास्को तथा लेनिनग्राडतक पहुँच गया। पश्चिममें युद्ध वहीं रुक गया, पर पूर्वमें जापानने दिसम्बर, सन् १९४१ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया और इसमें इंग्लैण्ड भी सम्मिलित हो गया। तीन महीनेके अन्दर जापानने फिलीपाइन्स, इण्डोनेशिया, मलाया तथा बर्मा आदिको जीत लिया और पूर्वकी ओरसे भारतवर्षके ऊपर आक्रमणका भय होने लगा।

क्रिप्सका भारत-आगमन

ऐसे अवसरपर ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी ओरसे कुछ प्रस्ताव लेकर वहाँके श्रमिक-दलके एक प्रमुख नेता तथा मन्त्रिमण्डलके एक प्रमुख सदस्य सर स्टेफर्ड क्रिप्स भारत आये। ११ मार्च, सन् १९४२ ई० को ब्रिटिश सरकारकी ओरसे यह घोषणा की गयी कि ब्रिटिश सरकार तथा ब्रिटिश जनताकी यह इच्छा है कि भारतको स्वशासनका अधिकार दिया जाय और भारत भी ब्रिटिश राज्य-समूहका एक स्वतन्त्र सदस्य हो तथा युद्ध समाप्त होनेके पश्चात्, भारतका संविधान बनानेके लिए भारतके चुने हुए प्रतिनिधियोंकी एक संविधान-सभा हो जिसमें देशी राज्य भी, यदि वे चाहें तो सम्मिलित हों। संविधान-सभा जो संविधान बनायेगी उसे ब्रिटिश सरकार स्वीकार कर लेगी।

यह संविधान-परिषद् सारे भारतवर्षके लिए एक संविधान बनायेगी पर यदि आपसमें समझौता न हो सका और कुछ प्रान्तोंने अलग होना चाहा तो उन्हें अलग होनेकी स्वतन्त्रता रहेगी। जो अलग होनेवाले प्रान्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
होंगे उन्हें भी उसी प्रकार स्वतन्त्रताका अधिकार होगा जिस प्रकार और प्रान्तोंको। संविधान-परिषद्से ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी जो सन्धि होगी उसमें अल्पसंख्यकोंके हकोंकी रक्षा करनेकी जिम्मेदारी भारतीय यूनियनको लेनी पड़ेगी, इसी प्रकार जो पृथक् होनेवाले प्रान्त होंगे उनसे जो सन्धि होगी उसमें भी अल्प समुदायोंके हकोंकी रक्षा करनेकी जिम्मेदारी होगी।

संविधान-परिषद्के बनानेका तरीका यह होगा कि युद्ध समाप्त होनेके पश्चात् प्रान्तीय धारा-सभाओंका चुनाव होगा। प्रान्तीय धारा-सभाके जो सदस्य चुने जायेंगे वे अपनी संख्याका $\frac{१}{१०}$ संविधान-परिषद्के लिए चुनेंगे। प्रत्येक प्रान्तकी धारा-सभाएँ इसके लिए निर्वाचन-क्षेत्र होंगी। इस संविधान-परिषद्को भारतके लिए संविधान बनानेका अधिकार होगा।

पर युद्धके समयमें और जबतक नया संविधान नहीं बन जाता तबतक भारत-सुरक्षाकी जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकारके ऊपर रहेगी। भारतकी सैनिक, आर्थिक तथा नैतिक शक्तिके संगठनकी जिम्मेदारी भारत-सरकारकी होगी, पर वह इस कार्यके लिए भारतीयोंका सहयोग प्राप्त करेगी और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारतके विभिन्न दलके लोगोंको सलाहके लिए भारतीय शासनमें सम्मिलित करेगी। इसका अभिप्राय यह था कि केन्द्रमें जो कार्यकारिणी समिति बनी थी उसमें भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलके लोग सम्मिलित किये जायेंगे।

प्रयत्न विफल हुआ

भारतमें आनेके पश्चात सर स्टैफर्ड क्रिप्सने कांग्रेसके अध्यक्ष मौलाना अबुलकलाम आजादसे बातचीतके सिलसिलेमें कहा कि भारतीय सरकारकी शासन-समितिका वही पद होगा जो इंग्लैण्डमें मन्त्रिमण्डलको है। इससे कांग्रेसको आशा बँधी, पर अधिक स्पष्टीकरण होनेपर निश्चय हो गया कि तत्काल ब्रिटिश सरकार अपना अधिकार छोड़नेको तैयार नहीं है और शासन-समिति मन्त्रिमण्डलकी तरहकी नहीं होगी, बल्कि उसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे ही अधिकार प्राप्त होंगे जो सन् १९१९ ई० के कानूनके अनुसार उसे प्राप्त थे। अतः कांग्रेसने इस घोषणाको स्वीकार नहीं किया और समझौतेका प्रयत्न असफ़ल हो गया। मुस्लिम लीगने भी इसे स्वीकार नहीं किया। उसका कहना था कि इसमें पाकिस्तानकी माँग स्वीकार नहीं की गयी थी। सर स्टैफर्ड क्रिप्स वापस चले गये और इंग्लैण्ड पहुँचनेपर उन्होंने कांग्रेसके ऊपर यह दोषारोपण किया कि कांग्रेस युद्धके बीचमें ही संविधानमें परिवर्तन चाहती है और भारतकी सुरक्षाके सम्बन्धमें भी इस समय कोई खतरा उठाना ठीक न होगा; पर ये बातें सत्यके विपरीत थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठ खण्ड

स्वातंत्र्य आन्दोलनकी सफलता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिला प्रकरण

सन् ४२ का विराट् स्वातन्त्र्य आन्दोलन

भारतके किसी भी दलने क्रिप्सका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। यद्यपि प्रारम्भमें क्रिप्सने यह कहा था वाइसरायकी शासन-समितिको वही अधिकार होंगे जो इंग्लैण्डके मन्त्रिमण्डलको हैं और वाइसराय केवल वैधानिक शासक होंगे, पर बादमें उन्होंने कहा कि रक्षाकी जिम्मेदारी ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी होगी और शासन-समिति वाइसरायके अधीन होगी। वास्तवमें ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारतीयोंको ठोस अधिकार देनेको तैयार नहीं थी। क्रिप्स समझते थे कि ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलकी ओरसे उन्हें भारतको पूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देनेका अधिकार था, पर वार्ताके समयमें ही उन्हें लंडनसे आदेश मिला कि घोषणाके शब्दोंसे अधिक कुछ कहनेका उन्हें अधिकार नहीं है जबतक कि वाइसराय और सेनापतिकी स्वीकृति न हो। वाइसराय और सिविल सर्विसके लोग समझौतेके विरुद्ध थे, अतः क्रिप्सके समझौतेका प्रयत्न असफल हो गया।

पर भारतसे वापस जानेपर क्रिप्सने अमरीकामें जो प्रचार किया उससे उनकी नेकनीयतीपर भी सन्देह होता है। अमरीकाके लिए रेडियो-पर भाषण करते हुए उन्होंने बताया कि हम लोग भारतके प्रतिनि-धियोंको वाइसरायकी शासन-समितिमें उसी तरहका पद दे रहे थे जैसा कि अमरीकाके मन्त्रिमण्डलका है। उन्होंने यहाँतक कहा कि कांग्रेसके नेता अल्पसंख्यक सम्प्रदायोंको कुचलना चाहते हैं। कांग्रेसने गाँधीजीके इशारेपर इन प्रस्तावोंको ठुकरा दिया है तथा गाँधीजीने इन प्रस्तावोंको "एक डूबते हुए बैंकपर भविष्यकी तिथिका चेक" कहा था। इस तरहके गलत प्रचार इंग्लैण्ड तथा अमरीकामें अंग्रेजोंकी ओरसे किये गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत छोड़ो का नारा

गाँधीजीको प्रारम्भसे ही क्रिप्सकी वार्ताके ऊपर अधिक विश्वास नहीं था और वार्ताके असफल हो जानेपर उन्होंने यह विश्वास कर लिया कि भारतकी तथा इसके साथ इंग्लैण्डकी भी भलाई इसीमें है कि अंग्रेज भारतसे हट जायँ। भारत-मन्त्री श्री एमरीके एक भाषणके जवाबमें, जिसमें उन्होंने कहा था कि यदि भारतके राजनीतिक दल आपसमें मेल कर लें तो उन्हें अधिकार देनेपर विचार किया जा सकता है, गाँधीजीने कहा कि "अंग्रेज लोग भारतसे हट जायँ, और मैं इस बातका वचन देता हूँ कि कांग्रेस, मुस्लिम लीग तथा अन्य दल स्वयं अपना हित समझकर मेल कर लेंगे। गाँधीजीने यह भी कहा कि अंग्रेजोंका भारतमें रहना जापानी आक्रमणके लिए प्रोत्साहन है। अंग्रेजोंके भारत छोड़ देने और उसे स्वतत्र कर देनेसे मित्र राष्ट्रोंके पक्षका नैतिक स्तर बहुत ऊँचा हो जायगा। उन्होंने अंग्रेजोंसे अपील की कि वे एशिया और अफ्रीकाके अपने अधीनस्थ प्रदेशोंसे हट जायँ। अप्रैल, सन् १९४२ ई०से ही गाँधीजीने इस प्रकारका प्रचार प्रारम्भ किया और 'भारत छोड़ो'का नारा तीव्र गतिसे बढ़ने लगा।

युद्धमें सहयोगकी शर्त

कांग्रेस कार्य-समितिने अपने अहिंसाके पुराने सिद्धान्तोंको छोड़कर युद्धमें सक्रिय सहायता देनेका निश्चय किया था यदि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारतीयोंको स्वतन्त्र करके इस तरहका वातावरण उपस्थित करे कि भारतीय अपनी स्वतन्त्रताके लिए युद्ध कर रहे हैं, पर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट अपना अधिकार छोड़नेको तैयार न थी। अतः कांग्रेसकी कार्य-समितिने १४ जुलाईको अपने वर्धाके अधिवेशनमें यह निश्चय किया कि भारतमें ब्रिटिश शासनका तुरन्त अन्त होना चाहिये; क्योंकि गुलाम भारत न तो अपनी रक्षा कर सकता है और न संसारके विनाशकारी युद्धके ऊपर ही अपना प्रभाव डाल सकता है। अतः भारतकी स्वतन्त्रता न केवल भारतके हितकी दृष्टिसे आवश्यक है, किन्तु संसारकी रक्षा तथा नाजी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाद, फासिस्टवाद और साम्राज्यवादके विनाशके लिए भी आवश्यक है। कांग्रेसने यथाशक्ति इस बातका प्रयत्न किया है कि मित्रराष्ट्रोंको उनके युद्धमें कोई बाधा न पड़े। व्यक्तिगत सत्याग्रहका जो आन्दोलन चलाया गया वह भी प्रतिरोधका केवल प्रतीक था। वह युद्ध-प्रयत्नमें बाधाकी दृष्टिसे नहीं चलाया गया, पर अंग्रेजोंने इन सब बातोंका गलत अर्थ लगाया।

कांग्रेसके प्रतिनिधियोंने साम्प्रदायिक समस्याको सुलझानेका सब प्रकारसे प्रयत्न किया पर, यह अनुभव हुआ कि विदेशी सत्ताके मौजूद रहते हुए इसमें भी सफलता प्राप्त करना सम्भव नहीं है। ब्रिटिश गवर्नमेण्टके हटनेपर ही देशके जिम्मेदार व्यक्ति एकत्र होकर स्थायी सरकार स्थापित करेंगे जिसमें हर दलके प्रतिनिधि होंगे और यही सरकार संविधान-परिषद्की योजना बनायेगी जो भारतका भावी संविधान तैयार करेगी।

अंग्रेजी शासनका अन्त करनेका जो प्रस्ताव कांग्रेसने रखा था वह अंग्रेज तथा मित्र राष्ट्रोंको उनके युद्ध-संचालनमें बाधा डालनेके लिए अथवा जापानियोंको भारतपर आक्रमण करने या चीनपर अधिक दबाव डालनेके लिए प्रोत्साहन देनेके निमित्त न था, बल्कि भारत जापानियोंका सामना करने तथा चीनकी सहायता और रक्षाके लिए मित्र राष्ट्रोंकी सेना अपने देशमें रखनेको भी तैयार था।

कांग्रेस कार्य-समितिने प्रस्ताव स्वीकार करते हुए यह भी निश्चय किया कि यह प्रश्न भारत तथा संसारके लिए बड़े महत्त्वका है, इसलिए इस सम्बन्धमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी स्वीकृति लेना भी आवश्यक है। तदनुसार ७ और ८ अगस्तको बम्बईमें समितिकी बैठक हुई और उपर्युक्त आशयका एक लम्बा प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। प्रस्तावके अन्त में देशसे अपील की गयी थी कि देशवासियोंको गाँधीजीके नेतृत्वमें काम करते हुए जो कष्ट और आपत्तियाँ झेलनी पड़ें उनका साहस और बहादुरीके साथ सामना करें और एक सैनिककी भाँति गाँधीजीके आदेशोंका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पालन करें। इस बातका उन्हें स्मरण रखना चाहिये कि अहिंसा हमारे आन्दोलनका आधार है। ऐसा भी समय आ सकता है जब किसी प्रकार-का आदेश पहुँचना सम्भव न हो और सब कांग्रेस कमेटियोंका कार्य बन्द हो जाय। ऐसी स्थितिमें हर एक व्यक्ति साधारण सिद्धान्तों और आदेशोंके अन्दर रहते हुए स्वतन्त्र रूपसे कार्य करे।

दमनके लिए सरकारकी पूरी तैयारी

गाँधीजीका इरादा था और प्रायः सभी लोग यह समझते थे कि वे एक बार वाइसरायसे लिखा-पढ़ी कर समझौतेका प्रयत्न करेंगे। असफल होनेपर ही आन्दोलन प्रारम्भ होगा, पर गवर्नमेण्टकी ओरसे पूरी तैयारी आन्दोलन होनेके पहले ही कुचल देनेकी हो चुकी थी। ८ अगस्तको रात्रिमें भारतीय कांग्रेस-समितिने प्रस्ताव स्वीकार किया और ९ को प्रातःकाल बम्बईमें गाँधीजी, कांग्रेस कार्य-समितिके सब सदस्य तथा सारे देशके हर जिले और शहरमें कांग्रेसके नेता तथा मुख्य कार्यकर्ता गिरफ्तार करके जेलोंमें बन्द कर दिये गये। आन्दोलनका क्या रूप और क्या कार्यक्रम होगा इसको न तो कांग्रेसने और न गाँधीने निश्चय किया था। अतः जनता बिलकुल अन्धकारमें थी कि कांग्रेसका क्या कार्यक्रम है।

भारत-मन्त्री एमरीने लन्दनसे रेडियोपर भाषण करते हुए बताया कि कांग्रेस आन्दोलनके कार्यक्रममें तार तोड़ना, रेलकी पटरी उखाड़ना, हड़ताल करना आदि शामिल है।

देशमें असन्तोषकी मात्रा पहलेसेही प्रर्याप्त मात्रामें थी। नेताओंकी गिरफ्तारीसे सारी जनता क्षुब्ध हो उठी और लोगोंने समझा कि कांग्रेस-का वही कार्यक्रम है जिसका दोषारोपण गवर्नमेण्ट कांग्रेसके ऊपर कर रही है। इसका फल यह हुआ कि सारे देशमें, विशेषकर बिहार और पूर्वी तथा उत्तरी प्रदेशोंमें तार काटे जाने लगे एवं रेलकी पटरियाँ उखाड़ी जाने लगीं। स्टेशनों, डाकखानों, अदालतों और अन्य सरकारी इमारतों-पर जनताकी भीड़ने आक्रमण किये और उन्हें जलाया। थोड़े समयके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए कुछ हिस्सोंमें ऐसा प्रतीत हुआ कि अंग्रेजोंका शासन समाप्त हो गया, पर तुरन्त ही आर्डिनेन्सपर आर्डिनेन्स जारी किये गये। पुलिस और फौज आन्दोलनको कुचलनेके लिए भेजी गयी, कितनी ही जगहोंपर गोलियाँ चलीं। भारत सरकारने विधान-सभामें एक प्रश्नके उत्तरमें बतलाया कि आन्दोलनके सम्बन्धमें ५३८ बार गोली चलानी पड़ी और ९४० व्यक्ति गोलीसे मरे, १६३० घायल हुए और ६०२२९ व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। लगभग ६ सप्ताहतक आन्दोलनकी बड़ी तीव्रता थी, पर फौज और पुलिसकी सहायतासे उसे कुचलनेका प्रयत्न किया गया। संयुक्त प्रान्तमें पुलिसके १६ व्यक्ति मारे गये, ३३२ घायल हुए, १०४ रेलवे स्टेशनोंपर आक्रमण हुआ और वे तोड़े गये जिनमें १५ जला दिये गये। १६ स्टेशनोंपर गाड़ियाँ गिरीं तथा १०० स्थानोंपर रेलकी पटरियाँ उखाड़ी गयीं। सारे देशमें २५० रेलवे स्टेशन नष्ट किये गये, ५५० डाकखानोंपर आक्रमण हुआ जिनमें ५० जला दिये गये। ३५०० स्थानोंपर तार काटे गये, ७० पुलिसके थाने और ८५ और सरकारी इमारतें जलायी गयीं। फौजके ग्यारह आदमी मारे गये, ७ घायल हुए तथा पुलिसके कुल ३१ आदमी मारे गये।

फिलिप्सकी रिपोर्ट

ब्रिटेनकी सरकार तथा वहाँके समाचार-पत्रोंने भारत सरकारकी काररवाईका समर्थन किया। अमरीकामें भी अंग्रेजोंकी ओरसे कांग्रेस तथा गाँधीजीके विरुद्ध बड़ा जबरदस्त प्रचार किया गया, परन्तु लुई फिशर आदि कुछ पत्रकारोंने यहाँकी वास्तविक परिस्थितिका परिचय अमरीकी लोगोंको कराया। अमरीकाके राष्ट्रपतिके विशेष दूत श्री फिलिप्सने भी, जिन्होंने भारतीय स्थितिको ठीक तरहसे समझनेके लिए गाँधीजीसे जेलमें मिलनेके लिए वाइसरायसे अनुमति प्राप्त की थी, अपनी रिपोर्ट भारतीय स्थितिके सम्बन्धमें अमरीकाके राष्ट्रपतिको भेजी। वह रिपोर्ट किसी तरह वहाँके पत्रकारोंको मिल गयी और अमरीकाके समाचार-पत्रोंमें छपी जिससे अमरीकामें कांग्रेस पक्षका समर्थन हुआ और ब्रिटिश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
गवर्नमेण्टकी काररवाइयोंका पता चला। चर्चिल इसपर बहुत नाराज हुए। फिलिप्स अमरीका बुला लिये गये। गवर्नमेण्टकी ओरसे प्रचार किया गया कि अगस्त आन्दोलनके सम्बन्धमें जो तोड़-फोड़ तथा हिंसात्मक कारवाइयाँ हुईं उनकी सारी जिम्मेदारी कांग्रेस तथा गाँधीजीके ऊपर है। इस सम्बन्धमें एक पुस्तिका भी छापकर बाँटी गयी जिसमें गाँधीजी तथा कांग्रेसके नेताओंके भाषणों, लेखों आदिके उद्धरण देकर यह सिद्ध करनेका प्रयत्न किया गया कि इसकी जिम्मेदारी उनके ऊपर है। गाँधीजीने वाइसरायको पत्र लिखा कि वे हिंसात्मक कारवाइयोंके सदा विरुद्ध रहे हैं और ९ अगस्तके बाद देशमें जो कुछ हुआ उसकी जिम्मेदारी उनके या कांग्रेसके नेताओंके ऊपर नहीं है, बल्कि गवर्नमेण्टकी ज्यादतियोंसे ऊबकर जनता पागल हो गयी और उसने इस तरहकी कारवाई की। गाँधीजीने यह भी लिखा कि वे २१ दिनका अनशन दस फरवरीसे करने जा रहे हैं। गवर्नमेण्ट अपने आरोपोंको खुले रूपसे सिद्ध करे। लार्ड लिनलिथगोंने बड़े अभद्र शब्दोंमें इसका उत्तर दिया और इस घमण्डीने यह संकेत किया कि गाँधीजी अनशनके द्वारा मृत्यु प्राप्त करके अपने अपराधकी जिम्मेदारीसे बचना चाहते हैं।

गाँधीजीके अनशनसे भारी चिन्ता

१० फरवरीसे गाँधीजीने अनशन प्ररम्भ कर दिया और चौथे दिनसे उनकी हालत बहुत खराब होने लगी। एक समय तो उनके बचनेकी आशा न रही। सारे देशमें तहलका मच गया। चारों ओरसे गाँधीजीको तुरन्त छोड़ देनेकी माँग होने लगी। वाइसरायकी शासन-समितिसे श्री अणे, मोदी तथा नलिनी रंजन सरकारने त्यागपत्र दे दिया। तुरन्त एक सर्वदल सम्मेलन बुलाया गया और उसकी ओरसे भी माँग पेश की गयी, पर गवर्नमेण्ट टससे मस न हुई और यह भी अफवाह उड़ी कि गवर्नमेण्टने गाँधीजीकी लाशको जलानेके लिए चन्दनका भी प्रबन्ध कर लिया है। बारहवें दिन उनकी स्थिति बहुत खराब हो गयी, पर इसके बाद सुधरने लगी और अन्तमें २१ दिनका अनशन उन्होंने सफलतापूर्वक समाप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। सारे देशने सन्तोषकी साँस ली, पर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट और वाइसरायके प्रति घृणाकी भावना अधिक बढ़ गयी।

गाँधीजीके अनशनके सम्बन्धमें जो सर्वदल सम्मेलन हुआ था उसने अपना कार्य जारी रखा और मार्च, १९४३ में दिल्लीसे एक वक्तव्य प्रकाशित किया कि गवर्नमेण्ट तथा कांग्रेस दोनोंको अपनी नीतिके सम्बन्धमें पुनः विचार करना चाहिये। अनशनके समय गाँधीजीकी अन्य नेताओंसे जो बातचीत हुई उससे यह आशा हुई कि इस समझौतेकी बातचीत सफल हो सकती है। यदि गाँधीजी इस समय छोड़ दिये जायँ तो उनकी सहायतासे राजनीतिक गतिरोधको सुलझानेमें सहायता मिल सकती है और युद्धके संचालनमें भी कोई बाधा नहीं पड़ेगी। इस समझौतेपर सप्रू, जयकर, भूलाभाई देसाई, राजगोपालाचारी आदि ३५ नेताओंने हस्ताक्षर किये थे। वाइसरायने इसके जवाबमें कहा कि गाँधीजी अथवा कांग्रेसमें हृदय-परिवर्तनका कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ रहा है। उन्हें अपनी नीतिको त्याग देनेका अब भी अवसर है। उनसे मिलनेकी अनुमति नहीं दी जा सकती।

जिनासे समझौतेकी चेष्टा

श्री राजगोपालाचारी दो बार जिनासे मिले और उनसे भी समझौतेका प्रयत्न किया। जिनाने मुस्लिम लीगके दिल्लीके सम्मेलनमें कहा कि गाँधीजी अब भी मुस्लिम लीगसे समझौता करना चाहते हों तो मैं इसका स्वागत करूँगा। यह हिन्दू और मुसलमान दोनोंके लिए एक महान् दिवस होगा। गाँधीजी वाइसरायको पत्र लिखते हैं, वे मुझे सीधे क्यों नहीं लिखते। उन्हें ऐसा करनेसे कौन रोक सकता है। यद्यपि गवर्नमेण्ट बहुत मजबूत है और गवर्नमेण्टके विरुद्ध चाहे कुछ भी कहा जाय, पर मुझे विश्वास है कि यदि गाँधीजी मुझे पत्र लिखें तो गवर्नमेण्टको उसे रोकनेका साहस नहीं होगा। यदि गवर्नमेण्ट ऐसा करती है तो यह बड़ा भयावह होगा, पर गाँधीजी अथवा कांग्रेस या हिन्दू नेताओंमें नीति-परिवर्तनका कोई लक्षण मुझे नहीं दिखाई पड़ रहा है। श्री जिनाका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाषण मुस्लिम लीगके पत्र 'डान' में छपा। उसे पढ़कर गाँधीजीने जिनाको पत्र लिखकर वाइसरायके पास भेजा, पर गवर्नमेण्टने उसे जिनाके पास भेजनेसे इनकार कर दिया और इसकी सूचना जिनाको दे दी।

इसपर जिनाकी क्या प्रतिक्रिया होगी, यह जाननेके लिए सारा देश उत्सुक था। कुछ दिनोंतक चुप रहनेके बाद जिनाने कहा कि मुस्लिम लीगको ब्रिटिश गवर्नमेण्टसे संघर्षमें लाने तथा अपनेको जेलसे मुक्त करानेकी यह गाँधीजीकी चाल है। मेरे भाषणका यह आशय था कि यदि गाँधीजी ८ अगस्तके कांग्रेसके प्रस्तावको वापस ले लें और पाकिस्तानके आधारपर मुस्लिम लीगसे समझौता करनेको तैयार हों और इस तरहका पत्र यदि वे मुझे लिखें तो गवर्नमेण्टको रोकनेका साहस नहीं होगा। पर जिनाने यह नहीं सोचा कि यदि गाँधीजी ऐसा करनेको तैयार होते तो वे गवर्नमेण्टको ही लिखकर जेलसे छूट सकते थे। जिनाको लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। जो हो, समझौतेके सारे प्रयत्न विफल हुए और गाँधीजी तथा कांग्रेस-नेता जेलमें पड़े रहे।

इस बीचमें बंगाल और पंजाबके मन्त्रिमण्डल मुस्लिम लीगी अथवा उसके समर्थक हो गये थे। सिन्धमें श्री अल्लाबक्स जो एक स्वतन्त्र विचारके व्यक्ति थे और जिन्होंने सरकारी उपाधिका त्याग कर दिया था, प्रधान मन्त्रित्वसे हटा दिये गये और वहाँ भी मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल स्थापित हो गया। आसाम तथा सीमान्त प्रदेशके कांग्रेस मन्त्रिमण्डलने भी अक्टूबर, १९३९ में त्याग-पत्र दे दिया था। इन दोनों प्रान्तोंमें भी लीगी मन्त्रिमण्डल स्थापित हो गये। शेष ६ प्रान्तोंमें शासन गवर्नमेण्टके हाथमें था।

बंगालका खाद्य-संकट

इस समय देशकी खाद्यस्थिति बहुत खराब हो गयी और विशेषतः बंगालकी दशा अत्यन्त भयानक थी। हजारों आदमी देहातसे आकर कलकत्ताकी सड़कोंपर भूखसे तड़पकर मरने लगे। बंगालके इस दुर्भिक्षमें कई लाख व्यक्तियोंके प्राण गये, पर इस भयंकर स्थिति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को सुधारनेके लिए गवर्नमेण्टकी ओरसे विशेष प्रयत्न नहीं हुआ। यहाँ-तक कि लार्ड लिनलिथगोने बंगालके इस महान् संकटके समयमें वहाँ आकर बंगालियोंके प्रति सहानुभूति प्रकट करनेतकका सौजन्य नहीं दिखाया।

वाइसरायका कार्यक्रम साधारणतः ५ सालका होता था, पर युद्धके कारण लिनलिथगोका कार्यकाल २½ सालके लिए और बढ़ाया जा चुका था। इनका शासन बहुत ही अप्रिय हो चुका था, अतः अक्टूबर, सन् १९४३ ई० में इन्होंने बिदा ली और इनके स्थानपर लार्ड वैवेल जो भारतके प्रधान सेनापति थे, वाइसराय नियुक्त होकर आये। इनके आने-से कुछ लोगोंको यह आशा हुई कि इनके समयमें सम्भवतः भारतका राजनीतिक गतिरोध दूर हो और कांग्रेससे समझौता हो, पर कई महीने-तक कुछ नहीं हुआ और स्थिति ज्योंकी त्यों रही।

गाँधीजीकी पत्नीकी मृत्यु

इधर फरवरी, सन् ४४ में गाँधीजीकी धर्मपत्नी जो उनके साथ ही गिरफ्तार हुई थीं, बीमार पड़ीं और उनका देहान्त हो गया। अप्रैल-में गाँधीजी भी बीमार पड़े और उनकी स्थिति भी बहुत नाज़ुक हो गयी। ६ मईको वे मुक्त कर दिये गये। कुछ महीनेके बाद जब उनके स्वास्थ्यमें कुछ सुधार हुआ, उन्होंने श्री राजगोपालाचारीके बीचमें पड़ने-पर जिनासे मुलाकात की और समझौतेकी बातचीत की, पर इसका भी कोई फल नहीं हुआ और लार्ड वैवेलसे भी लिखा-पढ़ी करनेका कोई परिणाम नहीं निकला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा प्रकरण

ब्रिटिश सरकारसे समझौतेकी बातचीत

सन् १९४५ ई०के प्रारम्भमें गाँधीजीसे अनुमति लेकर श्री भूलाभाई देसाईने कांग्रेस-मुस्लिम लीगके समझौतेके सम्बन्धमें श्री लियाकतअली खाँसे बातचीत की और यह निश्चय हुआ कि एक अन्तःकालीन सरकार स्थापित हो जिसमें कांग्रेस और मुस्लिम लीगके बराबर-बराबर सदस्य हों। यह भी निश्चय हुआ कि यह गवर्नमेण्ट संविधानके अनुसार होगी, पर यदि मन्त्रिमण्डल कोई प्रस्ताव विधान-सभासे स्वीकार न करा सके तो गवर्नर-जेनरलके विशेष अधिकारका उपयोग नहीं किया जायगा। इस सरकारका पहिला कर्तव्य कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योंको जेलसे मुक्त करना होगा। केन्द्रीय सरकार स्थापित हो जानेपर प्रान्तोंमें गवर्नरी शासन समाप्त होगा और संयुक्त मन्त्रिमण्डल स्थापित किये जायँगे, पर इस सम्बन्धमें कोई कारवाई न हो सकी।

इधर इंग्लैण्डमें जनमत इस पक्षमें हो रहा था कि भारत और इंग्लैण्ड दोनोंके हितमें यह आवश्यक है कि भारतका राजनीतिक गतिरोध समाप्त हो। वहाँके कुछ प्रमुख व्यक्तियों तथा उदार और मजदूर-दलके समाचार-पत्रोंने इसके लिए गवर्नमेण्टके ऊपर दबाव डाला। अतः भारत-मन्त्री एमरीने लार्ड वैवेलको परामर्शके लिए लन्दन बुलाया। लगभग १० सप्ताहतक वे वहाँ परामर्श करते रहे। इसी बीचमें ७ मईको जर्मनीने आत्म-समर्पण कर दिया और यूरोपमें युद्ध समाप्त हो गया ; यद्यपि एशियामें जापानके विरुद्ध युद्ध अब भी चल रहा था। इधर चर्चिलके मन्त्रिमण्डलने २३ मईको त्याग-पत्र दे दिया और ५ जुलाईको पार्लमेण्टका दूसरा चुनाव करानेका निश्चय हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लार्ड वैवेल द्वारा नयी घोषणा

मन्त्रिमण्डलसे परामर्श करके ४ जूनको लार्ड वैवेल भारत वापस आये। १४ जूनको उन्होंने भारतमें और ऐमरीने ब्रिटिश पार्लमेण्टमें घोषणा की। लार्ड वैवेलने कहा कि ब्रिटिश गवर्नमेण्टने वर्तमान राजनीतिक स्थितिको सुधारने तथा भारतको पूर्ण स्वशासनका ध्येय प्राप्त करनेकी तरफ बढ़नेके लिए प्रस्ताव रखनेका अधिकार दिया है। इसलिए मुख्य-मुख्य नेताओंसे सलाह करके अन्तरिम सरकार स्थापित करनेका विचार है जिसमें वाइसराय तथा प्रधान सेनापतिको छोड़कर सब सदस्य भारतीय होंगे। वैदेशिक, गृह तथा अर्थ-विभाग भी पहिली बार भारतीयोंके हाथमें होंगे। वह सरकार वर्तमान कानूनके अनुसार होगी, पर वाइसराय बिना कारण अपने विशेषाधिकारका उपयोग न करेंगे। अन्तरिम सरकारमें हिन्दू तथा मुसलमानोंकी संख्या बराबर-बराबर रहेगी, पर परिगणित जाति तथा अन्य अल्प संख्यक सम्प्रदायके सदस्य इनके अतिरिक्त होंगे। हर एक दलके नेता अपनी-अपनी सूची देंगे और उसमेंसे वाइसराय सदस्योंको चुनकर सम्राट्की स्वीकृतिसे नियुक्ति करेंगे। अन्तःकालीन सरकारके सामने मुख्य कार्य जापानके विरुद्ध युद्धका संचालन करना तथा जबतक नया संविधान न बन जाय तबतक भारतीय शासन चलाना और नया संविधान बनानेके लिए समझौता करनेके लिए उपाय ढूँढ़नाहोगा।

अन्तरिम सरकार स्थापित करनेके सम्बन्धमें सलाह देनेके लिए सब प्रान्तोंके प्रधान मन्त्री, केन्द्रीय धारा-सभाके कांग्रेस, मुस्लिम लीग तथा राष्ट्रीय और यूरोपियन दलके नेता, गाँधीजी, जिना तथा मास्टर तारासिंह और परिगणित जातिके रायबहादुर शिवराज आमन्त्रित किये गये। वाइसरायने अपने वक्तव्यमें यह भी कहा था कि यदि यह प्रयत्न सफल हुआ और केन्द्रमें इस प्रकारकी शासन-समिति स्थापित हुई तो प्रान्तोंमें भी दफा ९३ हटा दी जायगी और संयुक्त मन्त्रिमण्डल स्थापित किये जायँगे। इस घोषणाके साथ ही साथ १५ जूनको कांग्रेस कार्यसमितिके सब सदस्य जेलसे छोड़ दिये गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२८ जूनसे यह सम्मेलन प्रारम्भ हुआ और तीन दिनके पश्चात् १४ जुलाईतकके लिए स्थगित कर दिया गया। वाइसरायने हर दलके लोगोंसे शासन-समितिके लिए नाम माँगे। मुस्लिम लीग और यूरोपियन दलके अतिरिक्त अन्य दलके लोगोंने नामोंकी सूची दी। इन सूचियों तथा मुस्लिम दलके लोगोंमेंसे नाम चुनकर वाइसरायने एक सूची तैयार की और उसका कुछ अंश श्री जिनाको दिखलाया। उन्होंने कहा कि मुसलमानों-का प्रतिनिधित्व अकेले मुस्लिम लीग करती है, अतः यदि कोई मुसलमान सदस्य किसी अन्य दलका लिया जाता है तो वे उसे स्वीकार नहीं करेंगे। इस प्रकार श्री जिनाके अस्वीकार कर देनेसे वह सूची किसी और दलको नहीं दिखायी गयी और १४ जुलाईको वाइसरायने घोषणा कर दी कि यह प्रयत्न असफल हो गया। असफलताकी जिम्मेवारी उन्होंने अपने ऊपर ली, पर वास्तवमें असफलताकी जिम्मेवारी जिनाके ऊपर थी।

संविधान-परिषद् बनाना स्वीकार

ब्रिटेनकी पार्लमेण्टके नये चुनावमें मजदूर-दलकी जीत हुई और १० जुलाईको मजदूर-दलकी सरकार स्थापित हुई तथा एटली प्रधान मंत्री हुए। इस चुनावमें ऐमरी जो भारत-मन्त्री थे, हार गये और लार्ड पैथिक लारेन्स भारतके मन्त्री हुए। लार्ड वैवेल परामर्शके लिए फिर लन्दन बुलाये गये। १८ सितम्बरको वापस आकर उन्होंने यह घोषणा की कि ब्रिटिश सरकारकी यह राय है कि यथाशीघ्र भारतमें एक संविधान-परिषद् बुलायी जाय। इस बीचमें भारतकी केन्द्रीय तथा प्रान्तीय धारा-सभाओंके चुनावकी घोषणा हो चुकी थी। उन्होंने यह भी कहा कि चुनावके ठीक पश्चात् धारा-सभाओंके प्रतिनिधियोंसे परामर्श किया जायगा कि वे ४२ की क्रिप्स-योजनाको स्वीकार करते हैं या अन्य कोई योजना चाहते हैं। इसके साथ-साथ देशी रियासतोंसे भी परामर्श किया जायगा कि वे किस तरह संविधान-परिषद्में भाग लेंगी। प्रान्तीय चुनावों-के बाद केन्द्रमें ऐसी शासन-समिति स्थापित जायगी जिसे भारतके मुख्य राजनीतिक दलोंका समर्थन प्राप्त हो। घोषणामें यह भी कहा गया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारतमें यथाशीघ्र स्वराज्य स्थापित करना चाहती है ; पर इस घोषणाका अर्थ यह था कि आगामी ६ महीनोंतक, जबतक नया चुनाव नहीं हो जाता तबतक, न केन्द्रमें अन्तरिम सरकार स्थापित हो सकती है और न ६ प्रान्तोंमें मन्त्रिमण्डल बन सकते हैं। कांग्रेसकी दृष्टिमें यह घोषणा असन्तोषजनक थी।

४ दिसम्बरको भारत-मन्त्रीने यह घोषणा की कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट-के हर एक दलके सदस्योंका एक गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल भारतीय स्थितिका अध्ययन करनेके लिए जायगा और भारतीयोंको विश्वास दिला-येगा कि ब्रिटिश जनताकी यह इच्छा है कि भारत यथाशीघ्र स्वराज्य प्राप्त करे। यह प्रतिनिधि-मण्डल भारतमें आया और इसने घूम-घूमकर यहाँकी स्थितिका अध्ययन किया, पर १९ फरवरी, सन् १९४६ ई०को भारत-मन्त्रीकी एक दूसरी घोषणा हुई जिसमें कहा गया कि भारतके प्रश्नका सफलतापूर्वक हल होना न केवल भारत और ब्रिटिश राज-समूहके लिए, बल्कि संसारकी शान्तिके लिए आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। इसलिए ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलकी ओरसे तीन मुख्य सदस्योंका एक प्रतिनिधि-मण्डल जिसमें भारत-मन्त्री लार्ड पेथिक लारेन्स, सर स्टैफर्ड क्रिप्स तथा ए० बी० अलेक्जेण्डर होंगे, भारत जायगा और ब्रिटिश नीति जिसकी घोषणा १९ सितम्बर, सन् ४६ को हो चुकी है, कार्यान्वित करनेके लिए वाइसरायके साथ-साथ भारतीय नेताओंसे परामर्श करेगा। २३ मार्चको यह प्रतिनिधि-मण्डल भारत आया।

आजाद हिन्द फौजका मामला

इस समयतक भारतवर्षके राजनीतिक वातावरणमें एक महान् परिवर्तन हो गया था। सन् १९४५ ई० के उत्तरार्द्धमें जापानकी परा-जयके बाद आजाद हिन्द फौजके कुछ अफसरोंपर जिनमें कर्नल शाहनवाज, कैप्टन सहगल तथा ढिल्लन थे, ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी तरफसे मुकद्दमे चलाये गये। इस सेनाका संगठन नेताजी सुभाषचन्द्र बसुने युद्ध-कालमें मलायामें किया था और वे इसके प्रधान सेनापति थे। इस सेनाका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उद्देश्य अंग्रेजोंसे लड़कर भारतको स्वतन्त्र करना था। सन् ४३ में एक बार यह सेना बर्माकी ओरसे मणिपुरतक पहुँच गयी थी और इम्फलके समीप अपना स्वतन्त्र झण्डा भी गाड़ दिया था। जापानकी पराजयके बाद इस सेनाके मुख्य अफसर गिरफ्तार हुए और उनके ऊपर दिल्लीके लाल किलेमें मुकद्दमा चलाया गया। मुकद्दमेके सम्बन्धमें इस सेनाकी बहादुरी तथा त्यागकी कथा समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित हुई जिससे सारे देशमें जोश और उत्साहकी लहर दौड़ गयी। इन लोगोंको अदालतसे आजन्म कारावासका, दण्ड मिला पर वाइसरायने सजा माफ कर दी और ये लोग मुक्त कर दिये गये। इसी समय प्रान्तीय धारा-सभाओंका चुनाव हुआ जिसमें कांग्रेस दलकी बहुत बड़ी विजय हुई और मुसलमानोंके अधिकतर स्थान मुस्लिम लीगको मिले। पंजाब, सिन्ध और बंगालमें मुस्लिम लीगकी सरकार स्थापित हुई। शेष आठ प्रान्तोंमें, जिनमें सीमान्त प्रदेश तथा आसाम भी सम्मिलित थे, कांग्रेस दलकी सरकार बनी।

ब्रिटिश मन्त्रिदल भारतमें

२३ मार्च, सन् १९४६ ई०को भारत पहुँचनेपर भारत-मन्त्री लार्ड पेथिक लारेन्सने यह घोषणा की कि हम लोग भारतीय नेताओंसे यह परामर्श करने आये हैं कि अपना शासन स्वयं सँभालनेकी भारतीयोंकी इच्छाकी पूर्तिके उपाय ढूँढ़े जायँ ताकि हम लोग गर्व और सम्मानके साथ भारतीयोंके ऊपर शासनका उत्तरदायित्व सौंप सकें।

भारतीयोंके साथ ब्रिटिश प्रतिनिधि-मण्डलकी बातचीत कई सप्ताह-तक चलती रही। अन्तमें भारत-मन्त्रीने यह प्रस्ताव किया कि कांग्रेस तथा मुस्लिम लीगके चार-चार प्रतिनिधि ब्रिटिश प्रतिनिधि-मण्डल तथा वाइसरायसे योजनाके सम्बन्धमें परामर्श करनेके लिए मिलें।

कांग्रेस तथा लीगसे बातचीत

इसके अनुसार कांग्रेस तथा मुस्लिम लीगकी ओरसे चार-चार प्रतिनिधि चुने गये और इनके साथ ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डलकी बातचीत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा पत्र-व्यवहार चलता रहा, पर कुछ तय न हो सका। अन्तमें ब्रिटिश प्रतिनिधि-मण्डलने दोनों पक्षोंकी बातें सुनकर १६ मईको अपने निश्चित प्रस्ताव उपस्थित किये। मुस्लिम लीगकी माँगके सम्बन्धमें उन्होंने कहा कि वे भारतमें राजसत्ता दो सरकारोंके सुपुर्द करनेकी सलाह ब्रिटिश सरकारको नहीं दे सकते जबतक पाकिस्तानके दोनों भाग एक दूसरेसे सात सौ मील पृथक् हैं और युद्ध तथा शान्ति दोनों समय यातायात हिन्दुस्तानसे होकर रहेगा। उन्होंने यह भी कहा मुसलमानोंको भय है कि उनकी संस्कृति तथा राजनीतिक और सामाजिक जीवन एक राज्यमें रहनेसे हिन्दुओंके बहुमतके कारण नष्ट हो जायगा, अतः हमारा प्रस्ताव है कि सारे भारतका एक संघ हो जिसमें ब्रिटिश भारत तथा देशी रियासतें शामिल हों और इसके सुपुर्द रक्षा, वैदेशिक विभाग तथा यातायात-विभाग होंगे और इन विभागोंके लिए आवश्यक धनका प्रबन्ध करनेका भी अधिकार होगा।

संघीय शासनका प्रस्ताव

संघकी केन्द्रीय सरकारमें शासन-समिति तथा विधान-सभा होगी जिसमें ब्रिटिश भारत तथा राज्योंके प्रतिनिधि होंगे, परन्तु किसी साम्प्रदायिक प्रश्नके सम्बन्धमें निर्णय दोनों सम्प्रदायोंमेंसे प्रत्येकके उपस्थित सदस्यों तथा कुल उपस्थित सदस्योंके बहुमतसे होगा।

उपर्युक्त तीन विभागोंके अतिरिक्त अन्य सब विभाग प्रान्तोंके हाथमें होंगे। देशी रियासतोंके हाथमें भी उन विभागोंके अतिरिक्त जिन्हें वे केन्द्रीय सरकारके सुपुर्द करें, सब विभाग होंगे। प्रान्तोंको समूह बनानेकी स्वतन्त्रता होगी जिन्हें शासन-समिति तथा विधान-सभा रखनेका अधिकार होगा और उनके हाथमें वे सब विभाग हो सकते हैं जिनका प्रबन्ध उस समूहके प्रान्त एक साथ करना चाहें। १० वर्षपर किसी प्रान्तकी विधान-सभाको अपने बहुमतसे संविधानमें परिवर्तन करानेका अधिकार हो, इसका उल्लेख संघ तथा समूहके संविधानमें होना चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संविधान-परिषद्‌के चुनावके लिए प्रत्येक प्रान्तकी विधान-सभा निर्वाचक-मण्डल होगी और प्रति दस लाखकी आबादीपर एक व्यक्ति चुना जायगा। प्रत्येक सम्प्रदायकी आबादीके अनुसार सदस्योंकी संख्या निर्धारित की जायगी और मुख्य सम्प्रदायोंके सदस्य पृथक् निर्वाचनके आधारपर संविधान-परिषद्‌के लिए सदस्य चुनेंगे, पर इस चुनावके लिए केवल तीन सम्प्रदाय स्वीकार किये जायँगे—मुसलमान, सिख, तथा अन्य जिसमें सिख और मुसलमानोंके अतिरिक्त सब होंगे। इस सिद्धान्तके अनुसार 'क' खण्डमें जिसमें मद्रास, बम्बई, बिहार, संयुक्त प्रान्त, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा हैं, २० मुसलमान तथा १६७ अन्य कुल १८७ सदस्य होंगे, 'ख' खण्डमें जिसमें पंजाब, सीमान्त प्रदेश तथा सिन्ध शामिल हैं, २२ मुसलमान, ४ सिख तथा ९ अन्य होंगे और 'ग' खण्डमें जिसमें बंगाल और मद्रास हैं ३६ मुसलमान तथा ३४ अन्य होंगे। इस प्रकार ब्रिटिश भारतके कुल २९२ सदस्य होंगे। देशी रियासतोंके ९३ सदस्य तथा दिल्ली, अजमेर-मेरवाड़ा, कुर्ग और ब्रिटिश बिलोचिस्तानका एक-एक सदस्य होगा। इस प्रकार कुल संख्या ३८९ होगी।

सदस्योंका निर्वाचन हो जानेपर संविधान-परिषद्‌की प्रारम्भिक बैठक होगी और नियम आदि बनाने तथा पदाधिकारियों आदिके चुनावके बाद प्रान्त भिन्न-भिन्न समूहोंमें बँट जायँगे और प्रान्त तथा समूहका संविधान बनायेंगे। इसके पश्चात् सब प्रतिनिधि मिलकर संघका केन्द्रीय संविधान बनायेंगे। संविधान बन जानेपर किसी प्रान्तकी विधान-सभाको बहुमत द्वारा समूहसे पृथक् होनेका अधिकार होगा।

संघकी संविधान-परिषद् ब्रिटिश गवर्नमेण्टसे सत्ताके हस्तान्तरणके सम्बन्धमें सन्धि करेगी।

संविधान बननेके साथ-साथ शासन-प्रबन्ध चलना भी आवश्यक है। अतः इसके लिए वाइसराय नेताओंसे परामर्श करके एक अन्तरिम सरकार स्थापित करेंगे, जिसपर सारी जनताका विश्वास हो। इस अन्तरिम सरकारके सभी विभाग भारतीय नेताओंके अधिकारमें होंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके साथ-साथ वाइसरायसे नेताओंकी बातचीत अन्तरिम सरकार स्थापित करनेके सम्बन्धमें भी चल रही थी। १६ मईकी घोषणाके सम्बन्धमें कांग्रेसकी ओरसे स्पष्टीकरण करनेके लिए कहा गया कि यूरोपियन सदस्योंको संविधान-परिषद्के निर्वाचनके लिए वोट देनेका अधिकार होगा या नहीं तथा अन्तरिम सरकारकी स्थापनाका भी प्रश्न था। पहिले १२ सदस्योंकी अन्तरिम सरकार बनानेका प्रस्ताव पेश हुआ जिसमें ५ कांग्रेस, ५ मुसलिम लीग तथा २ अल्पसंख्यक-वर्गके, पर कांग्रेस अपनी संख्याओंमेंसे एक हरिजन तथा एक राष्ट्रीय मुसलमान भी रखना चाहती थी। अतः अन्तरिम सरकारमें हिन्दुओंकी संख्या तीन होती और मुसलमानोंकी ६। कांग्रेस इसे स्वीकार करनेको तैयार नहीं थी। फिर वाइसरायने नया प्रस्ताव किया जिसमें मुस्लिम लीगके ५ और कांग्रेसके ६ जिनमें एक हरिजन तथा २ अल्पसंख्यक दल। कांग्रेसका प्रस्ताव था कि १५ सदस्योंकी अन्तरिम सरकार बने जिसमें ५ कांग्रेसके, ५ मुस्लिम लीगके तथा ५ अन्य हों। जिना इस बातपर तुले थे कि मुसलमान सदस्य केवल लीगी हों और हिन्दू तथा मुसलमानोंकी संख्या बराबर हो तथा अल्पसंख्यक लोगोंकी जगह खाली होनेपर मुस्लिम लीगके सदस्योंसे भी राय लेकर नियुक्ति हो। इस सम्बन्धमें भी समझौता नहीं हो सका और १६ जूनको वाइसरायने अन्तरिम सरकारके सदस्योंकी नामावली प्रकाशित की जिसमें संख्या १४ रखी गयी जिनमेंसे ५ मुस्लिम लीगके, ६ कांग्रेसके जिनमें एक हरिजन था। एक सिख, एक पारसी और एक ईसाईके थे। पारसी सज्जन एक सरकारी नौकर थे। इस प्रकार १६ मईकी घोषणा संविधानके सम्बन्धमें तथा १६ जूनकी घोषणा अन्तरिम सरकारके सम्बन्धमें हुई।

कांग्रेस कार्यसमितिने अपने २३ जूनके अधिवेशनमें १६ मईकी घोषणाको स्वीकार कर लिया, पर अन्तरिम सरकारमें सम्मिलित होनेको तैयार नहीं हुई। इस सम्बन्धमें कांग्रेसको आपत्ति थी कि मुस्लिम सदस्योंमें श्री अब्दुलख नस्तर ऐसे थे जो प्रान्तीय चुनावमें सीमान्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रदेशमें हार चुके थे और इनकी नियुक्ति राजनीतिक कारणसे, न कि योग्यताके आधारपर की गयी थी। दूसरे कांग्रेसकी सूचीमें शरच्चन्द्र वसुके स्थानपर हरेकृष्ण मेहताबका नाम रख दिया गया था और कोई राष्ट्रीय मुसलमान नहीं रखा गया। एक सरकारी अफसर श्री इंजीनियर-का नाम भी सूचीमें था। इसके अतिरिक्त जो परिवर्तन किया गया वह बिना कांग्रेसकी अनुमतिसे हुआ।

लीगकी चाल विफल

मुस्लिम लीगने १६ मईका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और १६ जूनकी घोषणाके बाद जिना आशा करने लगे कि अब अन्तरिम सरकार स्थापित होगी जिसमें कांग्रेस सम्मिलित न होगी। अतः भारतका शासन लीगके हाथमें रहेगा। पर कांग्रेसके द्वारा १६ मईकी घोषणा स्वीकार कर लेनेसे प्रतिनिधि-मण्डल श्री जिनाकी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकता था। २७ जूनको गवर्नमेण्टने वक्तव्य प्रकाशित किया कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनोंने संविधान परिषद्में सम्मिलित होनेकी स्वीकृति दे दी है, पर अन्तरिम सरकारके सम्बन्धमें अभीतक समझौता नहीं हो सका जिससे ऐसी सरकार अभी स्थापित नहीं हो सकी, पर इस सम्बन्धमें १६ जूनके वक्तव्यके अनुसार प्रयत्न जारी रहेगा। इसके पश्चात् २९ जूनको प्रतिनिधि-मण्डल इंग्लैण्डके लिए रवाना हो गया। श्री जिनाने पहिले इस बातका प्रयत्न किया कि बिना कांग्रेसके ही अन्तरिम सरकार बनायी जाय। जब ऐसा न हो सका तो उन्होंने कहा कि फिर संविधान-परिषद् भी स्थगित कर दी जाय, पर वह भी स्वीकार न हुआ। संविधान-परिषद्के चुनावके लिए आदेश जारी कर दिये गये और हर प्रान्तकी धारा-सभाओं द्वारा संविधान-परिषद्के लिए सदस्य चुने जाने लगे। इसपर जिना बहुत नाराज हुए और मुस्लिम लीगकी कौंसिलकी जो बैठक २९ जुलाईको हुई उसमें ब्रिटिश प्रतिनिधि-मण्डलके प्रस्तावपर दी गयी स्वीकृति वापस ले ली गयी और १६ अगस्तसे अपने उद्देश्यकी पूर्तिके लिए प्रत्यक्ष काररवाई करनेका निश्चय किया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा प्रकरण

भारतका विभाजन

मुस्लिम लीगने अपने निर्णयके अनुसार १६ अगस्तको 'प्रत्यक्ष कारर-वाई दिवस मनाया। बंगाल सरकारकी ओरसे उस दिन छुट्टी घोषित की गयी। कलकत्तामें मुसलमान स्वयं-सेवकोंने जबरदस्ती हिन्दुओंकी दूकानें बन्द करानेका प्रयत्न किया और हिन्दू-मुस्लिम दंगा प्रारम्भ हो गया। प्रारम्भमें मुसलमानोंने अधिक संख्यामें हत्याएँ कीं। फिर हिन्दुओंने बदला लिया और बहुत संख्यामें मुसलमानोंकी हत्या की। कलकत्ताके मृत व्यक्तियोंकी संख्याका अनुमान ७ हजार बताया गया। इसके अतिरिक्त सिलहट और ढाकामें भी दंगा हुआ। कलकत्तामें मुसल-मानोंकी अधिक संख्यामें मृत्यु होनेकी प्रतिक्रिया नोआखली और टिपरा-में हुई और बहुतसे हिन्दू मारे गये, उनकी स्त्रियाँ बेइज्जत की गयीं और वे मुसलमान बनाये गये।

अन्तरिम सरकार स्थापित

इधर ६ अगस्तको वाइसरायने कांग्रेसके अध्यक्षको अन्तरिम सरकार बनानेमें सहायता देनेको लिखा। मुस्लिम लीगने प्रत्यक्ष काररवाई करने-की घोषणा कर दी थी, इसलिए इस बार मुस्लिम लीगको नहीं लिखा गया। कांग्रेसने अन्तरिम सरकार बनाना स्वीकार कर लिया और मुस्लिम लीगको भी सम्मिलित होनेके लिए आमन्त्रित किया, पर जिना सहमत नहीं हुए। श्री जवाहरलाल वाइसरायसे १७ अगस्तको मिले। अन्तरिम सरकारके सदस्योंकी सूचीमें आवश्यक परिवर्तन हो गये। पारसी सदस्य श्री इंजीनियरका नाम बदल दिया गया और मुस्लिम लीगके पाँच सदस्योंके स्थानपर ५ राष्ट्रीय मुसलमानोंका नाम रखा गया। २४ अगस्तको वाइसरायने अन्तरिम सरकार स्थापित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
करनेकी घोषणा कर दी और मुस्लिम लीगकी इस सरकारमें सम्मिलित होनेके लिए एक बार फिर आमन्त्रित किया, पर मुस्लिम लीगके सदस्य नहीं सम्मिलित हुए। दो सितम्बरको अन्तरिम सरकारने कार्य-भार ले लिया।

जुलाईमें संविधान-परिषद्के लिए जो चुनाव हुआ था उसमें ग्यारह प्रान्तोंमें २१० साधारण स्थानोंमेंसे १९९ कांग्रेसको प्राप्त हुए। मुसलमानोंके लिए ७८ स्थान थे जिनमें मुस्लिम लीगको ७३, कांग्रेसको ३, बंगालकी कृषक प्रजापार्टीको एक तथा पंजाबकी यूनियनिस्ट पार्टीको एक स्थान मिला। कुल २९६ सदस्योंमें २१२ कांग्रेसके तथा ७३ मुस्लिम लीगके थे। शेष १२ मेंसे ६ कांग्रेसके समर्थक थे। जिना कांग्रेसके इस बहुमतको 'पशुबलका बहुमत' कहते थे। कांग्रेसी सदस्योंमें केवल हिन्दू या केवल कांग्रेसी ही नहीं थे, बल्कि हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, ऐंग्लो इण्डियन, हरिजन, आदिवासी आदि सब थे। इसके अतिरिक्त ऐसे भी व्यक्ति थे जो कांग्रेसके विरोधी रह चुके थे। लीग दलके सदस्योंमेंसे केवल कट्टर मुस्लिम लीगी थे। जिना अल्पसंख्यक समुदायोंमेंसे किसीको भी अपना समर्थक न बना सके और इस प्रकार मुस्लिम लीग दल संविधान-परिषद्में अकेला पड़ गया और संविधान-परिषद्में उन्हें सफलताकी कोई आशा नहीं थी।

श्री जिनाकी धमकी

जब दो सितम्बरको बिना लीगके सम्मिलित हुए अन्तरिम सरकार स्थापित हो गयी तो जिना बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने कहा कि यह मुसलमानोंकी पीठमें छुरा भोंका गया है। गवर्नमेण्टका यह कार्य बुद्धिमानीका नहीं है, इसका फल बहुत खतरनाक और भयानक होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अब सिवाय पाकिस्तानके मुसलमानोंके लिए दूसरा चारा नहीं है और यह भी धमकी दी कि सोवियत रूसकी सहायतासे मुसलमान पाकिस्तान स्थापित करनेका प्रयत्न कर सकते हैं और यदि इंग्लैण्ड, अमरीका तथा सोवियत रूससे आपसमें तनातनी हुई तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिन्दुस्तानके मुसलमान किसे सहायता देंगे, यह भी स्पष्ट है। सिन्धकी मुस्लिम लीगने प्रस्ताव पास किया कि प्रभावशाली लीगी सदस्योंका एक प्रतिनिधि-मण्डल रूस भेजा जाय और सोवियतकी सहायतासे संयुक्त राष्ट्रके सामने पाकिस्तानकी माँग रखी जाय। सिन्ध लीगके अध्यक्षने मण्डलसे कहा कि वे पेरिस जाकर रूसके वैदेशिक मन्त्री मोलोटोवसे मिलेंगे।

यद्यपि लीगकी तरफसे इस तरहकी बातें की जा रही थीं, फिर भी लार्ड वैवेलने जिनाको बातचीत करनेके लिए १५ सितम्बरको दिल्ली बुलाया। वहाँ जिना, नेहरू तथा वैवेलमें बातचीत तथा पत्र-व्यवहार हुआ। जिना और नेहरूके बीच कुछ तय न हो सका, पर जिनाने लार्ड वैवेलके सामने यह शर्तें रखीं कि अन्तरिम सरकारमें कांग्रेसके ६ मन्त्री हों जिनमें एक हरिजन हो। कांग्रेस दलके शेष मन्त्रियोंमें कोई मुसलमान न हो। किसी साम्प्रदायिक प्रश्नके सम्बन्धमें कोई भी निर्णय न हो, यदि हिन्दू या मुसलमान बहुमतसे उसके विरुद्ध हों। उपाध्यक्ष बारी-बारीसे हिन्दू या मुसलमान हो। संविधान-सम्बन्धी योजना उपयुक्त वातावरण स्थापित होनेतकके लिए स्थगित कर दी जाय।

लीग भी अन्तरिम सरकारमें

वाइसरायने अपने ४ अक्टूबरके पत्रमें इन शर्तोंमेंसे कुछको पूरी तरह और कुछको कुछ संशोधनके साथ स्वीकार किया, पर कांग्रेस द्वारा नामजद मन्त्रियोंमें मुसलमान न हो, इसे स्वीकार नहीं किया और संविधान-सम्बन्धी योजनाके सम्बन्धमें कहा कि मन्त्रिमण्डलमें सम्मिलित होनेकी आधार-शिला १६ मईकी योजनाका स्वीकार करना है. इसलिए मैं समझता हूँ कि लीगकी कौंसिल शीघ्र इस सम्बन्धमें विचार करेगी। इस बीचमें जिना और वाइसरायसे कुछ बातचीत भी हुई और १२ अक्टूबरको वाइसरायने जिनाको लिखा कि मुस्लिम लीग अपने हिस्सेके मन्त्रियोंमें किसीका नाम देनेके लिए स्वतन्त्र है और विभागोंका बँटवारा सब नामोंके आ जानेपर किया जायगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३ अक्टूबरको जिनाने वाइसरायको लिखा कि लीगकी कार्यसमिति अन्तरिम सरकार स्थापित करनेकी आपकी योजनासे सहमत नहीं है, परन्तु चूँकि अपने निर्णयके अनुसार हमें शासन-समितिमें ५ सदस्य भेजनेका अधिकार है, इसलिए समिति इस नतीजेपर पहुँचती है कि मुसलमानों तथा दूसरे सम्प्रदायोंके हितमें यह बात नहीं होगी कि केन्द्रीय शासनका पूरा भार कांग्रेसके ऊपर छोड़ दिया जाय और इसके अतिरिक्त आपको मन्त्रिमण्डलमें ऐसे मुसलमानोंको लेना होगा जिनपर मुसलमानोंको विश्वास नहीं है, जिसका नतीजा बहुत भयावह होगा। अतः इन तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कारणोंसे हमने आपके २४ अगस्तके भाषण तथा ४ और १२ अक्टूबरके पत्रके आधारपर मुस्लिम लीगके पाँच सदस्योंको शासन-समितिके लिए नामजद किया है।

इस प्रकार १३ अक्टूबरको मुस्लिम लीग भी अन्तरिम सरकारमें सम्मिलित हो गयी। मुस्लिम लीगके नामजद किये पाँच व्यक्तियोंमें एक हरिजन श्री जे० एन मण्डल थे। गाँधीजीने उसी समय कहा था कि जिनाके कथनानुसार हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं। फिर मुस्लिम लीगने एक साम्प्रदायिक संस्था होते हुए एक हरिजनको किस तरह मन्त्री बनाया। जिस तरीकेसे मुस्लिम लीग मन्त्रिमण्डलमें सम्मिलित हुई है वह साफ नहीं है। मालूम होता है कि मुस्लिम लीग अन्दरसे लड़नेके लिए मन्त्रि-मण्डलमें शामिल हुई है। वास्तवमें मुस्लिम लीगवालोंने प्रारम्भसे ही केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलमें अड़ंगा लगाना शुरू किया। लियाकत अलीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि यह मन्त्रिमण्डल-शासन वर्तमान विधानके अन्तर्गत स्थापित हुआ है, अतः सामूहिक जिम्मेदारीका प्रश्न नहीं उठता। संयुक्त सरकारमें कोई नेता या प्रधान मन्त्री नहीं है। कांग्रेस दलके अलग नेता हैं और मुस्लिम लीगके अलग।

जिस समय मुस्लिम लीगको अन्तरिम सरकारमें सम्मिलित करने-की बातचीत चल रही थी उसी समय लीगका प्रत्यक्ष कारवाईका आन्दोलन कलकत्तासे फैलकर ढाका, त्रिपुरा और नोआखली जिलेमें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहुँचा और वहाँ हिन्दुओंपर बहुत अत्याचार हुआ। बहुतसे लोग मारे गये, उनके घर लूटे और जलाये गये। जबरदस्ती हिन्दू लड़कियोंसे शादी की गयी और बहुतसे हिन्दू मुसलमान बनाये गये। मुसलमान अफसर यह सब देखते रहे और रोकनेका कोई प्रयत्न नहीं किया। कलकत्ता और पूर्वी बंगालकी घटनाओंसे बिहारके हिन्दू बहुत उत्तेजित हुए और कई जिलोंमें हिन्दुओंने मुसलमानोंपर आक्रमण किया। उनकी हत्याएँ कीं, मकान लूटे और जलाये, पर बिहार गवर्नमेण्टने इसे रोकनेके लिए तुरन्त काररवाई की। पण्डित जवाहरलाल नेहरू स्वयं बिहार पहुँचे और सख्तीके साथ दंगेको रोका। गाँधीजीने धमकी दी कि यदि बिहारके हिन्दू तुरन्त अपने पागलपनको नहीं रोकते तो वे आमरण अनशन करेंगे। इसका फल यह हुआ कि एक सप्ताहके अन्दर बिहारमें शान्ति स्थापित हो गयी, पर इस समय वातावरण इतना कलुषित हो गया था कि देशके और भी भागोंमें, जैसे बम्बई, गढ़मुक्तेश्वर आदिमें हिन्दू-मुसलमानोंके बीच दंगे हुए।

मुस्लिम लीगके अन्तरिम सरकारमें सम्मिलित होनेसे आशा की जाती थी कि वह संविधान-परिषद्में भी सम्मिलित होगी। संविधान-परिषद्की बैठक ९ दिसम्बरसे प्रारम्भ होनेवाली थी। पण्डित नेहरूने वाइसरायको २३ अक्टूबरको ही लिखा कि आपके पत्र-व्यवहारसे यह स्पष्ट था कि अन्तरिम सरकारमें सम्मिलित होनेका यह अर्थ है कि मुस्लिम लीग १६ मईकी योजनाको स्वीकार करती है और संविधान-परिषद्में सम्मिलित होगी और इस सम्बन्धमें मुस्लिम लीगकी कौंसिल अपने पहलेके निर्णयको बदलेगी। वाइसरायने नेहरूको लिखा कि जिनाने मुझे विश्वास दिलाया है कि मुस्लिम लीग अन्तरिम सरकार तथा संविधान-परिषद्में सहयोग करनेके उद्देश्यसे आ रही है; परन्तु जिनाने अपने २५ नवम्बरके वक्तव्यमें कहा कि उन्होंने वाइसरायको इस प्रकारका कोई आश्वासन नहीं दिया है। उन्होंने वाइसरायसे केवल यह कहा था कि वे इस प्रश्नको मुस्लिम लीगकी कौंसिलके सामने रख देंगे। फल यह हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि मुस्लिम लीग अन्तरिम सरकारमें शामिल हो गयी, पर संविधान-परिषद्में सम्मिलित होनेके लिए तैयार नहीं हुई।

पण्डित नेहरूने मेरठ कांग्रेसके अपने एक भाषणमें कहा कि जिस उद्देश्यसे अन्तरिम सरकार स्थापित की गयी थी उसके अनुसार वाइसराय काम नहीं कर रहे हैं। मुस्लिम लीग जबसे सरकारमें सम्मिलित हुई है, बराबर ब्रिटिश सरकारका समर्थन प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रही और राज-पक्ष(किंग्जपार्टी)की तरह काम कर रही है। स्थिति बिगड़ती जा रही है। यदि इसमें परिवर्तन न हुआ तो फिर संघर्ष करना पड़ेगा। उन्होंने यह भी कहा कि मुस्लिम लीग संविधान-परिषद्में शामिल हो या न हो, संविधान-परिषद्का कार्य चलता रहेगा।

मुस्लिम लीग अपनी बातपर अड़ी रही। इसी बीच योजनाके अर्थके सम्बन्धमें मतभेद उत्पन्न हो गया। ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ऐटलीकी विशेष प्रार्थनापर नेहरूजी लन्दन गये और बातचीत करके तुरन्त वापस आ गये। ६ दिसम्बरको ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी ओरसे यह घोषणा की गयी कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट यह चाहती है कि संविधान-परिषद्में सब दलके लोग सम्मिलित हों, परन्तु १६ मईकी योजनामें प्रान्तोंके समूहके सम्बन्धमें कुछ मतभेद पैदा हो गया है। ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डलका आशय यह था कि प्रान्तोंके जो समूह स्थापित होंगे उनमें निर्णय सब प्रतिनिधियोंके बहुमतसे होगा। मुस्लिम लीग इससे सहमत है, पर कांग्रेस उसका यह अर्थ लगाती है कि प्रान्तोंको अपना संविधान बनाने तथा समूहमें शामिल होने-न होनेकी स्वतन्त्रता है।

ब्रिटिश गवर्नमेण्टने इस सम्बन्धमें कानूनी सलाह ली है और उससे ब्रिटिश प्रतिनिधि-मण्डलकी रायका समर्थन होता है। अतः उस योजनाका यह भाग और उसका उपर्युक्त अर्थ योजनाका आवश्यक अंग है और इसे सब दलके लोगोंको मानना चाहिये। इसके अतिरिक्त यदि योजनाके अर्थके सम्बन्धमें कोई मतभेद हो तो उसका निर्णय संघ-न्यायालयसे ले लिया जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लीगका असहयोग

संविधान-परिषद्की बैठक ९ दिसम्बरसे प्रारम्भ हुई और कुछ साधारण कार्य करके २० जनवरी सन्, १९४७ ई० के लिए स्थगित हो गयी। कांग्रेसने ब्रिटिश गवर्नमेण्टके ६ दिसम्बरके वक्तव्यको स्वीकार कर लिया। कांग्रेस मतभेदके प्रश्नोंको संघ-न्यायालयके सामने ले जानेको तैयार थी, पर लीग २२ जनवरीके अधिवेशनमें भी सम्मिलित नहीं हुई और जिनाने लीगकी कार्यसमितिकी बैठक २९ जनवरीको बुलायी जिसमें निश्चय हुआ कि लीगकी आपत्तिके बावजूद संविधान-परिषद्का चुनाव और बैठक बुलाना अवैध है, अतः परिषद्को भंग कर देना चाहिये।

ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी ओरसे २० फरवरीको यह घोषणा की गयी कि जून सन्, १९४८ ई०तक ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारतका शासन भारतीयोंको सुपुर्द कर देना चाहती है, पर जिस गवर्नमेण्टको शासन सुपुर्द किया जाय वह ऐसी हो जिसके ऊपर जनताका विश्वास हो और जो शान्ति कायम रख सके। इसलिए भारतके सब दलके लोगोंको अपना मतभेद भुलाकर शासनका भार उठानेके लिए तैयार हो जाना चाहिये। पूर्ण प्रतिनिधित्वप्राप्त संविधान-परिषद् भारतके लिए १६ मईकी योजनाके अनुसार संविधान बना लेती है तो ब्रिटिश गवर्नमेण्ट पार्लमेण्टके सामने उसे स्वीकृतिके लिए रखेगी, पर यदि ऐसा न हुआ तो सरकार विचार करेगी कि भारतका शासन निश्चित तिथिको किसके सुपुर्द किया जाय—ब्रिटिश भारतमें किसी एक सरकारके सुपुर्द या कुछ क्षेत्रोंमें वहाँकी प्रान्तीय सरकारोंके सुपुर्द।

उसी समय यह भी घोषणा की गयी कि लार्ड वैवेलकी नियुक्ति केवल युद्धकालके लिए की गयी थी। अतः उन्हें अवकाश दिया जा रहा है और उनके स्थानपर लार्ड माउण्टबेटन वाइसराय नियुक्त किये जा रहे हैं जो भारतमें सत्ताका हस्तान्तरण भारतवासियोंके हाथमें करेंगे।

कांग्रेस कार्य-समितिने ब्रिटिश गवर्नमेण्टके इस वक्तव्यको स्वीकार किया और यह सुझाव रखा कि सत्ता-हस्तान्तरणके पूर्व अन्तरिम सर-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
कारको डोमिनियन सरकारके तौरपर मान लेना चाहिये। केन्द्रीय सरकार मन्त्रिमण्डलकी तरह काम करे और गवर्नर-जेनरल वैधानिक अध्यक्ष हों। कांग्रेसने १६ मई तथा ६ दिसम्बरके ब्रिटिश गवर्नमेण्टके वक्तव्योंको पूरी तरह मान लिया है और संविधान-परिषद् उसीके अनुसार कार्य कर रही है। कुछ देशी रियासतोंने भी संविधान-परिषद्में सम्मिलित होनेका निश्चय किया है। कार्यसमितिने मुस्लिम लीगको फिरसे संविधान-परिषद्में सम्मिलित होनेके लिए आमन्त्रित किया, पर मुस्लिम लीगने इस आमन्त्रणपर कोई ध्यान नहीं दिया और इस बातपर अड़ी रही कि हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तानके लिए अलग-अलग संविधान-परिषद् होनी चाहिये। वह वर्तमान संविधान-परिषद्में सम्मिलित नहीं होगी।

देशविभाजनकी योजना

मार्चमें लार्ड माउण्टबेटन नये वाइसराय होकर आये। उन्होंने स्थितिका अध्ययन किया और हर एक दलके नेताओंसे बातचीत की और एक योजना तैयार की जिसकी घोषणा ३ जून सन् १९४७ ई०को हुई। इस योजनाके अनुसार हिन्दुस्तानके विभाजनका प्रबन्ध किया गया। उसमें कहा गया कि वर्तमान संविधानका कार्य पूर्ववत् चलता रहेगा। जिन प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंका बहुमत इसमें शामिल है उन प्रान्तोंके मुसलमान सदस्य भी इसमें भाग लेंगे; परन्तु इस परिषद्का बनाया संविधान उन क्षेत्रोंमें लागू नहीं होगा जो इसको स्वीकार नहीं करते। इन क्षेत्रोंकी राय जाननेके लिए कि वे अपना विधान इस संविधान-परिषद् द्वारा बनवाना चाहते हैं अथवा दूसरी संविधान-परिषद् द्वारा, निम्नलिखित तरीका बर्ता जायगा।

पंजाब और बंगालकी धारा-सभाओंके हिन्दू बहुमत तथा मुस्लिम बहुमत क्षेत्रोंके सदस्य अलग-अलग दो-दो भागोंमें अपनी बैठक करके तय करेंगे कि वे प्रान्तका विभाजन चाहते हैं अथवा नहीं। यदि इन क्षेत्रोंमेंसे कोई भी क्षेत्र बहुमतसे विभाजनका निश्चय करता है तो उस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

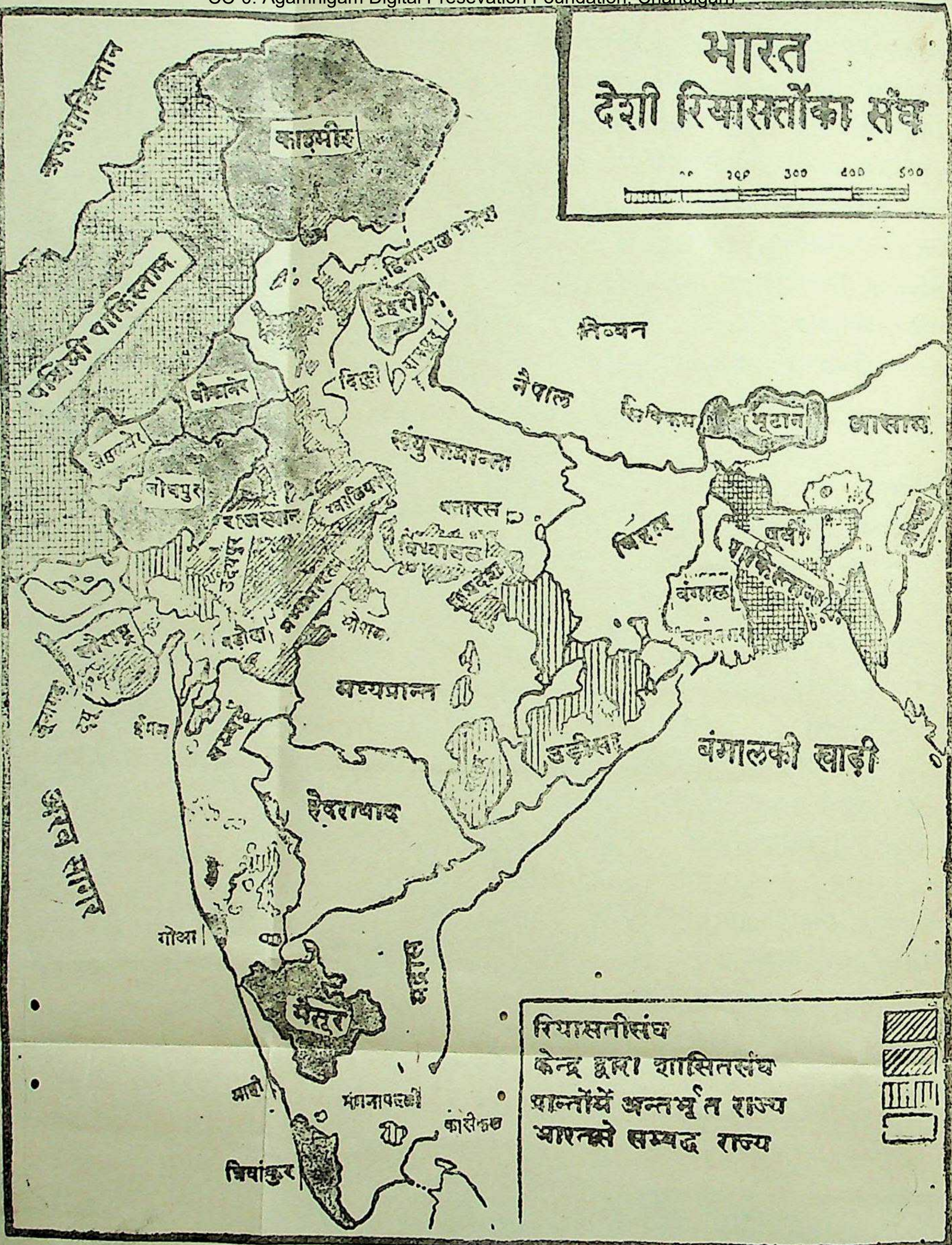

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
प्रान्तका विभाजन होगा और सीमा निर्धारित करनेके लिए एक कमीशन बनाया जायगा। ये क्षेत्र निश्चय करेंगे कि वे किस संविधान-परिषद्में सम्मिलित होंगे। इसी प्रकार सिन्ध प्रान्तकी धारा-सभाके सदस्य बहु-मतसे निश्चय करेंगे कि वे किस संविधान-परिषद्में सम्मिलित होंगे। यूरोपियन सदस्य मत नहीं देंगे। सीमा-प्रान्तमें गवर्नर-जेनरलकी देख-रेखमें सारी जनताका मत लिया जायगा कि वे किस संविधानमें भाग लेंगे। आसाममें सिलहट जिला ऐसा है जिसमें मुसलमानोंकी अधिक जनसंख्या है। वहाँ जनताके मतसे यह निश्चय किया जायगा कि वह आसामके साथ रहे या पूर्वी बंगालके साथ, यदि पूर्वी बंगाल अलग हो जाय। इस तरह यह निश्चय किया जायगा कि भिन्न-भिन्न क्षेत्र एक ही संविधान-परिषद्में रहेंगे या दो संविधान-परिषदें बनेंगी।

यदि प्रतिनिधियोंने विभाजनका निश्चय किया तो भिन्न-भिन्न क्षेत्रोंके शासन तथा राजसत्ताके हस्तान्तरण आदिके सम्बन्धमें आपसमें तथा ब्रिटिश शासनके साथ समझौता करके निश्चय किया जायगा।

२ जूनको यह घोषणा हुई और ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी ओरसे यह कहा गया कि यदि यह योजना भारतवासियोंको स्वीकार हो तो इसके अनुसार यथाशीघ्र काररवाई करके जल्दसे जल्द राजसत्ताका हस्ता-न्तरण एक या दो गवर्नमेण्टोंको कर दिया जाय। इस योजनाको कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनोंने स्वीकार कर लिया। बंगाल और पंजाबके प्रतिनिधियोंने विभाजनका निश्चय किया और मुस्लिम बहुमतवाले क्षेत्रोंने अपनी अलग संविधान-परिषद् बनानेका निश्चय किया। इसी प्रकार सिन्ध और बलोचिस्तानने भी किया तथा सीमान्त प्रदेशमें मत लिया गया। वहाँ कांग्रेस दलने मतदानका बहिष्कार किया और अल्प बहुमतसे पाकिस्तानके सम्बन्धमें निश्चय हुआ। इस प्रकार पश्चिमी पंजाब, सिन्ध, सीमान्त-प्रदेश, बिलोचिस्तान तथा पूर्वी बंगाल इन सबको मिलाकर पाकिस्तान स्थापित हुआ और शेष प्रान्त हिन्दुस्तानमें रहे। ब्रिटिश पार्लमेण्टने भारतकी स्वतन्त्रताका कानून बनाकर १५ अगस्त सन्, १९४७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ई०को हिन्दुस्तान और पाकिस्तानको अलग-अलग डोमिनियन मानकर राजसत्ताका हस्तान्तरण कर दिया।

लाखों व्यक्तियोंका निष्क्रमण

भारतवर्षका विभाजन हो जानेसे ही हिन्दू-मुस्लिम समस्याका अन्त नहीं हुआ। हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके दो राज्य बन जानेपर भी हिन्दुस्तानमें मुसलमानोंकी संख्या लगभग ४ करोड़की थी। पर १५ अगस्तके पूर्व पंजाब और सीमान्त-प्रदेशमें दंगे बड़े उग्र रूपसे हो रहे थे। विभाजनके बाद इसकी उग्रता और बढ़ गयी और मुसलमानोंने हिन्दुओं तथा सिखोंपर आक्रमण करना प्रारम्भ किया और उसी प्रकार पूर्वी बंगाल आदि सीमाके प्रदेशोंमें हिन्दुओंने मुसलमानोंके ऊपर आक्रमण किया और बहुतसी हत्याएँ हुईं तथा लाखोंकी संख्यामें हिन्दू पश्चिमी पाकिस्तानसे भागकर हिन्दुस्तानमें आये और उसी प्रकार लाखों मुसलमान हिन्दुस्तानसे भागकर पाकिस्तानमें गये। थोड़े दिनोंमें पश्चिमी पाकिस्तानमें हिन्दुओंकी संख्या नाममात्रको रह गयी। कुछ दिनोंमें पूर्वी बंगालमें भी इसी तरहकी घटनाएँ हुईं और बहुतसे हिन्दू भागकर पश्चिमी बंगालमें आये और बहुतसे मुसलमान भागकर पूर्वी बंगालमें गये और दोनों देशोंमें शरणार्थियोंकी एक जटिल समस्या उपस्थित हुई। गाँधीजीके बहुत प्रयत्न करनेपर भी यह क्रम कम न हुआ और ३० जनवरी, सन् १९४८ ई० को गाँधीजीकी हत्या एक हिन्दूके हाथसे हो गयी।

रियासतोंका प्रश्न

१५ अगस्त, सन् १९४७ ई०के स्वतन्त्रता-दिवस-सम्बन्धी प्रथम समारोहके कुछ समय पहले ही सरदार पटेलने नये रियासती विभागकी ओरसे राजाओंको जो आश्वासन दिया और २५ जुलाई, १९४७ ई०के नरेन्द्र-मण्डलके अधिवेशनमें लार्ड माउण्टबेटनने जो भाषण किया, देशी नरेशोंपर उसका अच्छा प्रभाव पड़ा। हैदराबाद, जूनागढ़ और काश्मीरको छोड़कर भार-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
तीय सीमाके भीतरकी सभी रियासतोंने भारतमें सम्मिलित होनेके घोषणापत्रों और यथास्थिति समझौतोंपर हस्ताक्षर कर दिये। स्वतन्त्रता-दिवसके बाद इन राज्योंकी प्रजामें भी अधिकार पानेकी लालसा प्रबल हो उठी और कहीं-कहीं इतनी अशान्ति फैली कि वहाँके शासकोंके लिए स्थिति सँभालना मुश्किल हो गया। दिसम्बर सन्, १९४७ ई०के मध्यमें सरदार पटेल कटक और नागपुर गये। बातचीत और समझौतेके परिणाम-स्वरूप उड़ीसा और छत्तीसगढ़की ३८ रियासतोंका उड़ीसा तथा मध्य-प्रान्तमें विलयन कर दिया गया। बादमें इसी तरहके समझौते अन्य रियासतोंके सम्बन्धमें भी हुए। परिणाम यह हुआ कि भारतकी लगभग ५८४ रियासतोंमेंसे चन्द रियासतोंको छोड़कर शेष या तो समीपवर्त्ती प्रान्तों(राज्यों)में मिल गयीं या किसी-न-किसी राज्यसंघमें अन्तर्भुक्त हो गयीं। रियासतोंके जो संघ बने उनके नाम ये हैं—सौराष्ट्र-संघ, राजस्थान-संघ, मध्यभारत-संघ, विन्ध्यप्रदेश-संघ, हिमाचलप्रदेश-संघ, पटियाला-संघ और त्रावणकोर-कोचीन-संघ। मैसूरका राज्य पृथक् इकाई-के रूपमें रहने दिया गया। कुछ रियासतें—बिलासपुर, कच्छ, भोपाल, त्रिपुरा, मणिपुर—केन्द्रीय सरकारके अधीन कर दी गयीं।

बम्बईके पश्चिमी तटपर स्थित जूनागढ़ रियासतने अचानक पाकि-स्तानमें शामिल होनेकी घोषणा कर दी, किन्तु शीघ्र ही वहाँ जन-विद्रोह हो गया और नवम्बर, सन् १९४७ ई०में वहाँके दीवानने प्रार्थना की—नवाब पहले ही पाकिस्तान भाग गया था—कि भारत सरकार वहाँका राज्य-प्रबन्ध अपने हाथमें ले ले। सरकारने प्रार्थना स्वीकार की और अस्थायी रूपसे उसपर अधिकार कर लिया। बादमें वहाँ मतगणना करायी गयी। प्रायः शत-प्रतिशत लोगोंने भारतमें सम्मिलित होनेके पक्षमें राय दी। अतः जूनागढ़ स्थायी रूपसे सौराष्ट्र-संघमें मिला लिया गया।

हैदराबादके निजामने यद्यपि जून, सन् १९४७ ई०में घोषणा की थी कि हम रियासतको स्वतन्त्र रखेंगे, हिन्दुस्तानमें शामिल न होंगे, फिर भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२९ नवम्बर, सन् १९४७ ई०को उन्होंने यथास्थिति समझौतेपर हस्ताक्षर कर दिये। शीघ्र ही उन्होंने इसकी शर्तें तोड़नी शुरू कर दीं। पाकिस्तानको २० करोड़ ऋण दे दिया, सेना बढ़ा दी और राज्यमें भारतीय मुद्राका प्रचलन बन्द कर दिया। रजाकारोंकी हरकतों और निजामके सलाहकारोंके कारनामोंसे स्थिति यहाँतक बिगड़ गयी कि अन्तिम चेतावनी देनेके बाद १३ सितम्बर, सन् १९४८ ई०को भारत सरकारको अपनी सेना वहाँ भेजनी पड़ी। पाँच ही दिनोंके भीतर निजामकी सेनाने हथियार डाल दिये और यह बड़ी रियासत भी मैसूरकी तरह भारतीय संघकी पृथक् इकाई मान ली गयी।

अब रह गया केवल काश्मीरका राज्य। इसका इरादा पहले न पाकिस्तानमें शामिल होनेका था, न भारतमें, किन्तु जब पाकिस्तानने उसकी आर्थिक नाकेबन्दी कर दी और पाकिस्तानकी सहायतासे कबायलियोंने सशस्त्र आक्रमण आरम्भ कर दिया तब भयंकर स्थिति देखकर महाराजने और प्रजाकी ओरसे शेखअब्दुल्ला तथा अन्य नेताओंने भारत सरकारसे सहायताकी प्रार्थना की। २६ अक्टूबर, सन् १९४७ ई०को सरकारने अस्थायी रूपसे काश्मीरका भारतमें शामिल होना स्वीकार कर लिया और आननफानन हवाई मार्गसे सहायता भेजी जिससे ईदके दिन श्रीनगरमें नमाज पढ़नेकी जिनाकी योजना विफल हो गयी। नेहरू सरकारने शीघ्र ही यह मामला संयुक्त राष्ट्रसंघके सामने उपस्थित कर दिया और अपनी ओरसे स्पष्ट वचन दे दिया कि काश्मीरकी जनता निष्पक्ष मतगणना द्वारा जो निर्णय करे वह भारतको मान्य होगा। पाकिस्तानकी अड़ंगेबाजी तथा कतिपय बड़े राष्ट्रोंकी पक्षपातपूर्ण नीतिके कारण यह प्रश्न अभीतक खटाईमें पड़ा हुआ है।

गणतंत्रका प्रथम निर्वाचन

इस बीच भारतीय संविधान भी बनकर तैयार हो गया और २६ जनवरी, सन् १९५० ई०को भारतमें गणराज्यकी घोषणा कर दी गयी (संविधानका संक्षेप अगले प्रकरणमें दिया गया है)। देशमें नया चुनाव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी हो गया है। मतदाताओंकी संख्या १७॥ करोड़ थी, जितनी दुनियाके अन्य किसी देशमें आजतक नहीं हुई। * गोआ, पाण्डुचेरी आदि दो-चार छोटी-छोटी बस्तियोंको छोड़कर शेष समस्त भारतमें जनताका राज्य स्थापित हो गया है। वैदेशिक मामलोंमें उसने बिलकुल स्वतन्त्र नीति अपनायी है, इसीसे आर्थिक कठिनाइयाँ दूर करनेमें कुछ बड़े-बड़े राष्ट्र उससे यथेष्ट सहयोग नहीं कर रहे हैं। फिर भी हमारे साधन महान् हैं और देशमें कर्मठ नेताओंकी भी कमी नहीं है, अतः आर्थिक स्वतन्त्रता भी हमें मिलकर रहेगी, इसमें सन्देह नहीं।

---

* लगभग ७५ राजनीतिक दलोंमें विभक्त कोई १७ हजार उम्मेदवार चुनावमें खड़े हुए थे, जिनमेंसे ४८९ लोकसभाके लिए तथा ३२७८ देशके २२ राज्योंकी विधानसभाओंके लिए चुने गये। केन्द्रमें तथा राज्योंकी २२ मेंसे १८ विधानसभाओंमें कांग्रेसको पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। शेष चार राज्योंमें भी काग्रेस दलको सबसे अधिक स्थान प्राप्त हुए, यद्यपि पूर्ण बहुमत न हो सका। इनमेंसे मद्रास, उड़ीसा, तथा त्रिवांकुर-कोचीनमें तो अन्य सदस्योंके सहयोगसे कांग्रेसी सरकारोंकी स्थापना हो गयी है किन्तु पटियाला संघमें संयुक्त दलकी सरकार बनी, जो विधिवत् काम कर रही है। गणतन्त्रके प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित होनेका गौरव डाक्टर राजेन्द्रप्रसादजीको प्राप्त हुआ। आपके प्रतिद्वन्द्वी श्री के० टी० शाह कई हजार वोटोंसे परास्त हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा प्रकरण

भारतीय संविधान

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भारतीय संविधान-सभाकी पहली बैठक ९ दिसम्बर १९४६ ई०को हुई। १५ अगस्त १९४७ ई०को भारत और पाकिस्तानके पूर्ण स्वतन्त्र हो जानेके बाद संविधान-निर्माणका कार्य नियमित रूपसे आरम्भ हुआ और २६ नवम्बर १९४९ ई०को समाप्त हो गया। संविधानकी प्रस्तावनामें ही दो बातें स्पष्ट कर दी गयी हैं—एक तो यह कि राष्ट्रका प्रभुत्व जनतामें निहित है; दूसरी यह कि भारत पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य होगा। हमारी शासन व्यवस्थाका बाह्य रूप तो संघात्मक होगा, किन्तु उसमें एकात्मक (यूनिटरी) राज्यकी विशेषताएँ भी होंगी। संघात्मक राज्यकी तरह इसमें शासनके अधिकार केन्द्रमें तथा इकाइयोंमें बँटे रहेंगे और दोनों अपने-अपने क्षेत्रोंमें स्वतन्त्र होंगे। फिर भी केन्द्र तथा राज्योंमें एक नागरिकता ही रखी गयी है। केन्द्रीय धारा-सभा(संसद्)को बहुत विस्तृत क्षेत्रमें विधि-निर्माणके अधिकार प्राप्त हैं तथा अवशिष्ट शक्तियाँ भी उसे ही प्राप्त हैं। संकटकालमें तो केन्द्रको उन विषयोंके सम्बन्धमें भी कानून बनानेका अधिकार है जो स्पष्टतः राज्योंके अधीन हैं। ऐसी स्थितिमें भारतीय शासनको हम एक तरहका "एकात्मक संघराज्य" कह सकते हैं।

संघमें कुल २७ राज्य होंगे, जिनकी तीन श्रेणियाँ होंगी। 'क' श्रेणीमें वे नौ राज्य हैं जो पहले 'प्रान्त' कहे जाते थे। इनके नाम हैं—बम्बई, मद्रास, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, आसाम और पंजाब। 'ख' श्रेणीमें पहलेके बड़े देशी राज्य या छोटे-छोटे राज्यके संघ होंगे। इनके नाम हैं—हैदराबाद, कश्मीर, मध्यभारत, मैसूर, पटियाला-संघ, राजस्थान, सौराष्ट्र, त्रावणकोर-कोचीन तथा विन्ध्यप्रदेश ❀। 'ग'

❀ १ जनवरी, १९५० से यह राज्य 'ग' श्रेणीमें रख दिया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
श्रेणी छोटे-छोटे राज्यों या पहलेके छोटे प्रान्तोंकी होगी। इनमें भी नौ राज्य रखे गये हैं। ये हैं—अजमेर, भोपाल, बिलासपुर, कुर्ग, दिल्ली, हिमाचलप्रदेश,. कच्छ, मनीपुर और त्रिपुरा। 'क' श्रेणीके राज्योंके प्रधान शासक राज्यपाल, 'ख' श्रेणीके राज्यप्रमुख और 'ग' श्रेणीके उपराज्यपाल या 'मुख्य आयुक्त' (चीफ कमिश्नर) कहे जायँगे।

संघकी कार्यपालिका शक्ति

भारतीय संघकी कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपतिमें निहित होगी। उसके कार्यकालकी अवधि पाँच वर्ष होगी। राष्ट्रपतिका निर्वाचन ऐसे निर्वाचक-मण्डल द्वारा होगा जिसमें संसद्के दोनों सदनोंके तथा राज्यकी विधान-सभाओंके निर्वाचित सदस्य होंगे। कोई भी व्यक्ति जो भारतका नागरिक हो, ३५ वर्षसे अधिक वयका हो तथा लोकसभाके लिए चुने जानेकी अर्हता रखता हो, राष्ट्रपतिपदके लिए खड़ा हो सकता है। राज्यका शासन-कार्य उसके नामपर संचालित होते हुए भी भारतका राष्ट्रपति, फ्रांसके राष्ट्रपति की तरह, राज्यका केवल वैधानिक अधिपति ही होगा—वह केवल राज्य करेगा, शासन न करेगा।

संसद्का अधिवेशन जब न हो रहा हो तब किसी परिस्थितिमें तुरन्त काररवाई आवश्यक हो जानेपर राष्ट्रपति अध्यादेशोंका प्रख्यापन कर सकेगा, किन्तु ये संसद्के अगले अधिवेशनोंमें स्वीकृतिके लिए पेश किये जायँगे और छः सप्ताहोंके भीतर उनमें पारित न होनेपर रद्द समझे जायँगे। अध्यादेश राष्ट्रपति द्वारा किसी भी समय वापस लिये जा सकते हैं।

संकटकी स्थिति उत्पन्न होनेपर राष्ट्रपतिको व्यापक अधिकार प्रदान किये गये हैं। यह स्थिति तीन तरहकी हो सकती है। प्रथम है युद्ध अथवा आंतरिक अशान्तिसे उत्पन्न स्थिति। इसकी घोषणा संसद्के दोनों सदनोंके सामने की जायगी। दो महीनोंके भीतर संसद्के दोनों भवनों द्वारा स्वीकृत न होनेपर यह रद्द हो जायगी। स्वीकृत हो जानेपर भी एक बारमें छः महीनोंसे अधिकतक यह जारी न रहेगी और कुल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीन वर्षसे अधिकतकके लिए न बढ़ायी जा सकेगी। इस समय मौलिक अधिकारोंकी रक्षाके लिए न्यायालयोंमें आवेदनपत्र देनेका व्यक्तियोंका अधिकार स्थगित कर दिया जायगा। दूसरी स्थिति वह है जब किसी राज्यमें वैधानिक ढंगसे शासन चलाना सम्भव न हो। राष्ट्रपति संकट-कालीन स्थितिकी उद्घोषणा कर उक्त राज्यके शासनके सारे अधिकार अपने हाथमें ले सकता है। ऐसी प्रत्येक उद्घोषणा संसद्के समक्ष रखी जायगी और यदि पहले ही संसद्के दोनों सदनों द्वारा अनुमोदित नहीं हो जाती तो दो महीनोंकी समाप्तिपर प्रवर्तनमें न रहेगी। अनुमोदित हो जानेपर एक बारमें यह छः मासतक लागू रहेगी, किन्तु कुल मिलाकर तीन वर्षसे अधिकके लिए न होगी। इसी तरह आर्थिक संकटकी सम्भावनाके समय भी राष्ट्रपतिको संकटकी स्थिति उद्घोषित करनेका अधिकार होगा। राष्ट्रपतिके हाथमें विशेष अधिकार दे देनेका यह आशय नहीं कि वह मनमाने तौरपर उनका दुरुपयोग करेगा।

वास्तविक कार्यपालिका शक्ति मन्त्रिमण्डलके हाथमें होगी। प्रधान मन्त्रीकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जायगी और वे ही अन्य मन्त्रियोंकी भी नियुक्ति, प्रधान मन्त्रीकी सलाहसे करेंगे। मन्त्रिमण्डल सामूहिक रूपसे लोकसभाके प्रति उत्तरदायी होगा।

लोकसभा तथा राज्यपरिषद्

संघके लिए एक संसद् होगी जो राष्ट्रपति और दो सदनों—राज्य-परिषद् तथा लोकसभा—से मिलकर बनेगी। लोकसभाके सदस्योंका चुनाव वयस्क-मताधिकारके आधारपर प्रत्यक्ष निर्वाचन-प्रणाली द्वारा होगा। कुल सदस्योंकी संख्या पाँच सौसे अधिक न होगी और निर्वाचन-क्षेत्रोंका विभाजन इस तरह किया जायगा जिससे प्रति ५ लाखसे ७॥ लाखकी आबादीके पीछे एक सदस्य निर्वाचित हो सके। लोकसभाका जीवनकाल पाँच वर्ष रहेगा, पर इसके पहिले भी उसका विघटन हो सकता है। संकटके समय इसकी अवधि पहली बार १ वर्षतक और दूसरी बार छः माहतक बढ़ायी जा सकेगी। राज्यपरिषद्में कुल २५०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सदस्य होंगे इनमेंसे १२ तो साहित्य, विज्ञान, कला आदिकी दृष्टिसे राष्ट्रपति द्वारा नामनिर्देशित होंगे तथा शेष २३८ से अनधिक प्रतिनिधि राज्योंके होंगे। परिषद्का विघटन न होगा, किन्तु प्रति दूसरे वर्षकी समाप्तिपर उसके तिहाई सदस्य निवृत्त हो जायँगे।

सर्वोच्च न्यायालय

भारतका एक सर्वोच्च न्यायालय होगा। इसमें एक प्रधान न्यायाधिपति तथा सात अन्य न्यायाधीश होंगे। प्रधान न्यायाधिपतिकी नियुक्ति राष्ट्रपति करेंगे और उसकी सलाहसे अन्य न्यायाधीशोंकी भी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा ही की जायगी। प्रधान न्यायाधिपति पद छोड़नेके बाद देशमें कहीं वकालत न कर सकेगा।

सर्वोच्च न्यायालयके कार्य तीन तरहके होंगे—(१) केन्द्र तथा राज्योंके या राज्योंके आपसके झगड़े निपटाना; (२) पुनर्विचार-सम्बन्धी कार्य; (३) भारत सरकारको वैधानिक प्रश्नोंपर सलाह देना या संविधानकी किसी धारा, उपधारा आदिका अर्थ स्पष्ट करना।

राज्यपाल तथा राज्यप्रमुख

"क" श्रेणीके प्रत्येक राज्यमें एक राज्यपाल होगा जो राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जायगा। उसका कार्यकाल पाँच वर्षका होगा। वह केन्द्र या किसी राज्यके विधान-मण्डलका सदस्य न होगा और उम्र उसकी ३५ वर्षसे अधिककी होगी। राज्यपाल ही मुख्य मन्त्रीकी तथा उसकी सलाहसे अन्य मन्त्रियोंकी नियुक्ति करेगा। विशेष स्थितियोंमें क्षमा प्रदान करने या सजा घटा देने, स्थगित कर देने आदिका अधिकार राज्यपालको होगा। वह चाहे तो किसी विधेयकपर अपनी स्वीकृति दे सकता है या उसे राष्ट्रपतिके विचारार्थ रोक ले सकता है अथवा उसे विधान-मण्डलके पुनर्विचारार्थ लौटा दे सकता है। राष्ट्रपतिकी ही तरह उसे भी यह अधिकार होगा कि जब विधान-मण्डलकी बैठक न चल रही हो तब कोई अध्यादेश जारी कर सके।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'ख' श्रेणीके राज्योंके अधिपति राजप्रमुख कहलायेंगे। इनकी नियुक्ति उन समझौतोंके आधारपर की गयी है जो भारत सरकार तथा रियासती संघोंके बीचमें हुए हैं। राज्यपालोंकी तरह इनकी सहायताके लिए भी प्रत्येक राज्यमें मन्त्रि-परिषद् या मन्त्रिमण्डल होगा। इनमेंसे कितने ही राज्योंमें अभीतक प्रातिनिधिक शासनकी शुरूआत भी नहीं हुई थी, इसलिए संविधानमें यह गुंजाइश रखी गयी है कि लगभग १० वर्ष तक इनका शासन भारत सरकारकी सामान्य देखरेखमें होगा। 'ग' श्रेणीके राज्योंका शासन उपराज्यपाल या मुख्य आयुक्तके जरिये राष्ट्रपति करेगा। संसद् इनके लिए भी मन्त्रणा-परिषद् या मन्त्रि-परिषद्की व्यवस्था कर सकती है और इनमें क्रमशः उत्तरदायी शासन प्रचलित कर सकती है।

राज्यपालकी सहायताके लिए एक मन्त्रि-परिषद् होगी जिसका प्रमुख मुख्य मन्त्री होगा। इसकी नियुक्ति राज्यपाल करेगा। अन्य मन्त्रियोंकी नियुक्ति भी राज्यपाल मुख्य मन्त्रीकी सलाहसे करेगा।

राज्यका विधान-मण्डल

प्रत्येक राज्यके लिए एक विधान-मण्डल होगा जो राज्यपाल तथा (पंजाब, बंगाल, बिहार, बम्बई, उत्तरप्रदेश, मैसूरमें) राज्यके दोनों सदनों या (अन्य राज्योंमें) एक सदनसे मिलकर बनेगा। द्विसदनात्मक पद्धति प्रयोगार्थ ग्रहण की गयी है, किन्तु संसद्को अधिकार होगा कि वह राज्यकी विधान-परिषद्की परिसमाप्ति कर दे।

विधान-सभाका चुनाव प्रौढ-मताधिकारके आधारपर किया जायगा। इसमें ६० से कम और ५०० से अधिक सदस्य न होंगे। इसका कार्यकाल भी, संसद्की तरह, पाँच वर्षका है, किन्तु संकटके समय एक बारमें एक वर्षतकके लिए इसकी अवधि बढ़ायी जा सकती है और अवधिके पूर्व इसका विघटन भी हो सकता है। कुछ जगहें परिगणित जातियों तथा आदिवासियोंके लिए सुरक्षित हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विधान-परिषद् स्थायी संस्था होगी जिसके एक तिहाई सदस्य हर दूसरे वर्ष अवकाश ग्रहण करेंगे। इसके आधे सदस्योंका निर्वाचन स्थानीय संस्थाओं, तीन वर्षकी स्थितिके स्नातकों और किसी माध्यमिक पाठशालामें तीन वर्षतक शिक्षक-रूपमें काम करनेवाले अध्यापकों द्वारा किया जायगा, एक तिहाई सदस्योंका चुनाव राज्यकी विधान-सभा द्वारा गैर-सदस्योंमेंसे किया जायगा तथा शेषकी नियुक्ति साहित्य, कला, विज्ञान आदिके क्षेत्रके प्रसिद्ध व्यक्तियोंमेंसे की जायगी। परिषद्के सदस्योंकी संख्या राज्यकी विधान-सभाके सदस्योंकी संख्याकी चौथाईसे अधिक न होगी, किन्तु ४० से कम भी न होगी।

संविधानके अनुसार भारत एक असाम्प्रदायिक राज्य माना गया है। राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी मामलोंमें सब सम्प्रदायोंके लोगों-को समान अधिकार प्राप्त होंगे और प्रतिनिधियोंका चुनाव भी संयुक्त-निर्वाचन-पद्धति द्वारा होगा। एक विशेषता यह भी है कि देवनागरी लिपिमें हिन्दी अब राज्य-भाषा घोषित कर दी गयी है, यद्यपि १५ वर्षोंतक अभी अंग्रेजी भी प्रयुक्त की जा सकती है। इसी तरह प्राचीन भारतमें प्रचलित लोकतन्त्रात्मक पंचायतोंको भी वैधानिक ढाँचेमें शामिल कर संविधानको राष्ट्रीय रूप देनेका प्रयत्न किया गया है।

प्रौढ-मताधिकारके कारण अब देशके लगभग ५० प्रतिशत लोगोंको मत देनेका हक मिलेगा, जब कि सन् १९१९ ई०के शासन-सुधारसे केवल ३ प्रतिशतको तथा सन् १९३५ ई०के शासन-विधानसे १० प्रतिशतको ही यह प्राप्त था। अत्यन्त आवश्यकता पड़नेपर संविधानमें परिवर्तन किया जा सकेगा। तरीका यह होगा कि संशोधनका प्रस्ताव संसद्के दोनों भवनोंमें अलग-अलग कुल सदस्य-संख्याके बहुमत तथा उपस्थित संख्याके कमसे कम दो तिहाई सदस्यों द्वारा स्वीकृत हो। तत्पश्चात् राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत होनेपर संविधान संशोधित समझा जायगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौलिक अधिकार

संविधान द्वारा भारतके नागरिकोंको जो मौलिक अधिकार दिये गये हैं उनमें मुख्य ये हैं—१ समानताका अधिकार; २ स्वातन्त्र्यका अधिकार; ३ धार्मिक स्वतन्त्रताका अधिकार; ४ सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकार; ५. सांस्कृतिक और शिक्षा-सम्बन्धी अधिकार; ६. वैधानिक उपचारके अधिकार। इनका आशय यह हुआ कि धर्म, जाति, जन्म आदिके कारण नागरिकोंमें किसी तरहका विभेद न किया जायगा, अस्पृश्यताकी जड़ मूलसे समाप्ति कर दी जायगी। लोग सभाएँ कर सकेंगे, स्वतन्त्र रूपसे अपने विचार प्रकट कर सकेंगे और समस्त देशमें स्वतन्त्रतापूर्वक भ्रमण कर सकेंगे। रुच्यनुसार आवास, पुनर्वास एवं सम्पत्ति अर्जन करनेका अधिकार उन्हें होगा। कोई व्यक्ति विधिविहित आधारके बिना अपनी सम्पत्तिसे वंचित्त न किया जायगा। कोई सम्पत्ति तबतक सरकारी कब्जेमें न ली जायगी जबतक कानून द्वारा उसके प्रतिकर(मुआवजे)की रकम या तत्संबंधी सिद्धान्त न निर्धारित कर दिया गया हो।

नीति-निर्देशक तत्त्व

भारतीय संविधानकी एक विशेषता यह भी है, जो आयरलैण्डको छोड़कर अन्य किसी देशके संविधानमें नहीं पायी जाती, कि इसमें राज्यके नीति-संचालनके लिए कुछ सिद्धान्त स्वीकार किये गये हैं। उनमें राज्यको ऐसी नीति अपनानेको कहा गया है जिससे (१) लोगोंको जीविकाके पर्याप्त साधन उपलब्ध हों; (२) धनका समुचित बँटवारा हो; (३) समान कामके लिए समान वेतन मिले; (४) सबको काम-रोजगार मिले; (५) श्रमिक पुरुषों और स्त्रियोंके स्वास्थ्य तथा शक्तिका और बालकोंकी सुकुमार अवस्थाका दुरुपयोग न हो; (६) १४ वर्षकी उम्रतक अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षाका आयोजन हो; (७) बेकारी, वृद्धावस्था, बीमारी आदिमें सार्वजनिक कोषसे सहायता दी जाय इत्यादि। राज्य न्याय और शासन-विभागको पृथक् करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुख बढ़ानेका प्रयत्न करेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ प्रसिद्ध घटनाओंकी सूची

विक्रमसे पूर्व

३०४५ कलियुगका प्रारम्भ

५४२ जैन धर्म-प्रवर्तक श्री महावीरका जन्म

५०० भगवान् गौतम बुद्धका जन्म (पालीग्रन्थके आधारपर तथा सिंहलद्वीपीय मतसे वि० पू० ५६५, किसी-किसीके मतसे ५१० भी)

४२० गौतम बुद्धकी मृत्यु, राजगृहमें बौद्धोंकी पहली सभा

३३० राजगृहमें बौद्धोंकी दूसरी सभा

२७० भारतपर सिकन्दरकी चढ़ाई

२६६ बैबिलनमें सिकन्दरका देहान्त

२४९–२४१ चन्द्रगुप्तके दरबारमें मेगास्थनीजका निवास

२१६ अशोकका राज्यारम्भ

२१२ अशोकका राज्याभिषेकोत्सव

१८३ पटनामें बौद्धोंकी तीसरी सभा

ईसवी सन्

७८ शालिवाहन संवत्का प्रारम्भ, बौद्धोंकी चौथी सभा

३९९ फाहियानका भारत-प्रवेश

६०६ हर्षवर्द्धनका राज्यारम्भ

६१२ हर्षवर्द्धनका राज्याभिषेकोत्सव

६३४ शिलादित्यके समय बौद्ध धर्मकी सभा

७११ सिन्धपर अबुल (मुहम्मद बीन) कासिमकी चढ़ाई

९७९ गजनीपर जयपालका आक्रमण

९९७ सुबुक्तगीनकी मृत्यु

१००८ महमूद गजनवीका छठा आक्रमण

१०२४–२५ महमूद गजनवीका सोलहवाँ आक्रमण

१३०३ पद्मिनीके लिए अलाउद्दीनका चित्तौड़पर आक्रमण

१३९८ तैमूरकी चढ़ाई

१३४७ से १५२५ बहमनी राज्य

१३८६ चैतन्यका जन्म

१५२६ पानीपतका पहिला युद्ध

१५४४ दादूका जन्म

१५५६ पानीपतका दूसरा युद्ध

१५७५ (श्रावण-शुक्ला सप्तमी) हल्दीघाटीका युद्ध

१६०६ स्वामी रामदासका जन्म

१६२७ शिवाजीका जन्म

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ई० सन्

१६३८ मैसूरके राजा कान्तिदेवका राज्याभिषेक

१६७० सिंहगढ़-विजय

१६८५ औरंगजेबका दक्षिण भारत-पर आक्रमण

१७२२ सआदत खाँ अवधका नवाब

१७२५ मुर्शिद कुली खाँकी मृत्यु

१७३८ नादिरशाहका आक्रमण

१७४१—१७५५ अलीवर्दी खाँ, बंगालका नवाब

१७४३ बंगालपर पेशवाकी चढ़ाई

१७४७ अहमदशाह अब्दालीका पहिला आक्रमण (लेनपूलके अनुसार)

१७४८ अहमदशाहका दूसरा आक्रमण

१७५६ अहमदशाहका तीसरा आक्रमण

१७५७ प्लासीकी लड़ाई

१७६० अहमदशाहका चौथा आक्रमण

१७६१ पानीपतका तीसरा युद्ध

१७६४ बक्सरका युद्ध

ई० सन्

१७६९ बंगालका दुर्भिक्ष

१७७३ रेगुलेटिंग एक्ट पास हुआ

१७७४ राघोबासे अंग्रेजोंकी सन्धि

१७७५ पुरन्धरका प्रतिज्ञा-पत्र

१७८० ग्वालियरपर अंग्रेजोंका अधिकार

१७८२ सालबाईका सन्धिपत्र

१७९३ महादजी सिन्धियाकी मृत्यु

१७९५ बाजीरावकी आत्महत्या

१७९९ नाना फड़नवीसकी मृत्यु

१८०६ वेरोलमें सिपाहियोंका विद्रोह

१८२६ कम्बरमियर द्वारा भरतपुर दुर्गकी विजय

१८४५ सुब्राँवका युद्ध

१८४८ रामनगरका युद्ध

१८४८ सिख-युद्धकी समाप्ति

१८५८ कम्पनीके राज्यकी समाप्ति

१८४६, १८५२, १८८५ बरमा-विजय

१८८३ राष्ट्रीय सभाकी स्थापना

१९०७ लाला लाजपतरायका निर्वासन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शासकोंकी सूची

[ईसवी सनके अनुसार]

गुलामवंश

१२०६-१० कुतुबुद्दीन ऐबक

१२१० आरामशाह

१२१०-३६ शमसुद्दीन अलतमश

१२३६-४० रजिया बेगम

१२४०-४२ बहराम खाँ

१२४२-४६ मसऊद

१२४६-६६ नसीरुद्दीन महमूद

१२६६-८७ गयासुद्दीन बलबन

१२८७-९० कैकुबाद

खिलजीवंश

१२९०-९५ जलालुद्दीन खिलजी

१२९५-१३१५ अलाउद्दीन खिलजी

१३१६-१९ कुतुबुद्दीन मुबारकशाह

१३२० खुसरो

तुगलकवंश

१३२२-२५ गयासुद्दीन तुगलक

१३२५-५१ मुहम्मदबीन तुगलक

१३५१-८८ फिरोजशाह तुगलक

१३८८-९० गयासुद्दीन अबूबकर

१३९०-९४ मुहम्मदशाह

१३९८ तैमूरका आक्रमण

१३९४-९८ महमूद तुगलक

१३९९-१४११ ,, ,,

१४११-१३ दौलत खाँ

सैयदवंश

१४१४-२१ खिज्र खाँ

१४२१-२३ मुबारक

१४३३-४३ मुहम्मद

१४४३-५० अलाउद्दीन

लोदीवंश

१४५०-८८ बहलोल खाँ

१४८८-१५१८ सिकन्दर लोदी

१५१८-२६ इब्राहीम लोदी

मुगल वंश

१५२३-३० बाबर

१५३०-३९ हुमायूँ

१५३९-१५५६ शेरशाहसूर इत्यादि

१५५६-१६०५ अकबर

१६०५-२७ जहाँगीर

१६२८-५९ शाहजहाँ

१६५९-१७०७ औरंगजेब

१७०७-१८५६ औरंगजेबके उत्तराधिकारी

पेशवाओंकी सूची

१७०७-२० (१) बालाजी विश्वनाथ

१७२०-४० (२) बाजीराव प्रथम

१७४०-६१ (३) बालाजी बाजीराव

१७६१-७२ (४) माधोराव

१७७२-७४ (५) नारायण राव

१७७४-९५ (६) माधोराव नारायण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७९५–१८१८ ७. बाजीराव द्वितीय

सिखगुरुओं तथा शासकोंकी सूची

१४६९–१५३५ ९. गुरु नानकका जन्म

१५३५–५२ गुरु अंगद

१५५२–७३ गुरु मरदास, भल्ला

१५७४–८० रामदास

१५८१–१६०६ गुरु अर्जुन

१६०६–४५ गुरु हरगोविन्द

१६४५–६१ गुरु हरराव

१६६१–६४ गुरु हरकिशुन

१६६४–७५ गुरु तेगबहादुर

१६७५–१७०८ गुरु गोविन्दसिंह

१७९१ सरदार गुज्जरसिंहकी मृत्यु

१८०२ खड़गसिंहका जन्म

१८२० नौनिहालसिंह

१८१४ काश्मीरपर रणजीतसिंहका अधिकार

१८३९ रणजीतसिंहकी मृत्यु

चित्तौड़के राजाओंकी सूची

७३५ बप्पा रावलका राज्याभिषेक

११९२ रावल समरसिंहका जन्म

११९२–१२०० रावल करणसिंह

१२०० रावल राहपसिंह

१२७४ राणा लक्ष्मणसिंहका राज्याभिषेक

१३००–६४ हमीरसिंह

१३६४–८२ राणा खेतसिंह

१३८२–९७ राणा लाखा

१३९८–१४१८ राणा मोकलजी

१४१८–६८ राणा कुम्भाजी

१४६८–७३ राणा उदयसिंह

१४७३ रायमलजीका राज्याभिषेक

१५०८–२९ राणा संग्रामसिंह

१५२७ राणा और बाबरका युद्ध

१५२९–३४ राणा रत्नसिंह

१५३४–३७ राणा विक्रमाजीत

१५३७–७२ राणा उदयसिंह

१५७२–९७ राणा प्रताप

१५७५ हल्दीघाटीका युद्ध

१५९७–१६२१ राणा अमरसिंह

१६२१–२८ राणा करणसिंह

१६२८–५४ राणा जगतसिंह

१६५४–८० राणा राजसिंह

१६८०–९९ राणा जयसिंह

गवर्नर-जेनरलोंकी सूची

१७७४–८५ वारन हेस्टिंग्ज

१७८६–९३ लार्ड कार्नवालिस

१७९३–९८ सर जान शोर

१७९८–१८०५ लार्ड वेलेजली

१८०५ लार्ड कार्नवालिस

१८०५–७ लार्ड जार्ज बारलो

१८०७–१३ लार्ड मिण्टो

१८१३–२३ लार्ड हेस्टिंग्ज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८२३–२७ लार्ड एमहर्स्ट
१८२८–३५ ,, विलियम बेण्टिक
१८३६ सर चार्ल्स मेटकाफ
१८३६–४२ लार्ड आकलैण्ड
१८४२–४४ ,, एलनबरो
१८४४–४८ ,, हार्डिंग
१८४८–५६ ,, डेलहौसी
१८५६–५८ ,, कैनिंग
१८५८–६२ ,, कैनिंग
१८६२–६३ ,, एलगिन
१८६४–६९ ,, सर जान लारेन्स
१८६९–७२ ,, मेयो
१८७२–७६ ,, नार्थब्रुक
१८७६–८० ,, लिटन
१८८०–८४ ,, रिपन
१८८४–८८ ,, डफरिन

१८८८–९४ ,, लैन्सडाउन
१८९४–९८ ,, एलगिन द्वितीय
१८९८–१९०४ लार्ड कर्जन
१९०४–१० लार्ड मिण्टो
१९१०–१६ ,, हार्डिंग
१९१६–२१ ,, चेम्सफोर्ड
१९२२–२६ ,, रेडिंग
१९२६–३१ ,, अरविन
१९३१–३६ ,, विलिंगडन
१९३६–४३ ,, लिनलिथगो
१९४३–४७ ,, वैवेल
१९४७–४८ ,, माउण्टबेटन

१९४८–५० श्री राजगोपालाचारी
१९५० प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज्ञान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज्ञान